

اَعُوُدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّحِيْمِ بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ وَ تَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّاهِ التَّقُواى -(القرآن) اور(آخرت كِسفركيكے) زادِراه مِها كرو(اور تجھلو) كه بِهترين زادِرا هقوىٰ (يربيزگارى) ہے-

كتاب مستطاب سعادت انتساب

زاد العباد ليوم المعاد

تاليف وترتنيب

فقيه ابل بيت آيت الله الشيخ محمد حسين الجهي مر كودها، بإكستان



مكتبة السبطين، سيثلائث ثاؤن، سرگودها، پاكستان

جمله دقوق بحق نا شر محفوظ حير

ام كتاب : زاد العباد ليوم المعاد

تاليف وترتيب: فقيه الله بيتًا آيت الله الثينج محمة حسين المجهي ،سر كودها، بإكستان

كمپوزنگ : غلام حيدر (ميكسيما كمپوزنگ سينثر ،موبائل: 5927378-0346)

طباعت : میکسیمایر نتنگ بریس ، راولپنڈی ،مو بائل: 5169622-0333

ناشر : مكتبة السبطين يسيطلا ئث نا وَن سر كودها

طبع اول : ذى الحجه لا يام الله جنورى النه الم

طبع دوم زى الحجد ١٧١٨ه بمطابق رسبر مجديع ع تيت زى الحجد ١٨١٨ عند على المجاري عندي المحاري عنديا على المحاري عنديا

تعداد : ۱۱۰۰

ملنے کے پتے

اسلامک بک سینٹر 🔹 میکسیما کمپوزنگ سینٹر

آ فس نمبر 19 'تھر ڈفلور ٔ ماسکو پلاز ہ' 44-W 'بلیوار یا اسلام آباد موہائل: 5927378 مكان نمبر C-362، كلى نمبر 12، 6/2-G اسلام آباد ـ فون: 2870105

معصوم پبلیکیشنز بلتستان

منتهوكها، علاقه كعرمنگ، سكردو بلنستان

مكتبة السبطين

سيطلا ئث نا وَن ، ٢٩٦/٩ - بي بلاك ،سر كودها

| | ∳ <u>~</u> | _4 | را | <u> </u> | |
|-------|-------------------------------------|----|---------|--|-------|
| مفخير | عنوان | | صفح نبر | عوان | |
| Ar | نما زظهر كخصوص تعشيبات | ٥ | 10 | گفتا راولین | 0 |
| ۸۴ | نما ذعصر کے مختص تعلیبات | ٥ | 14 | مقدمه | ٥ |
| ۸۵ | نمازمغرب كالعقيبات فتصه | O | ۲٦ | | |
| 44 | نما زعشاء كے تقدیمات خصہ | 0 | | ده سوره کابیان | ٥ |
| ٨٧ | سجده شکر کابیا ن | ٥ | ۲٦ | ا۔ سورہ کیلین اوراس کی فضیلت:۔ | ¢ |
| | ﴿ باب سيوم ﴾ | | ۵۳ | ۲ ـ سورهٔ رحمٰن اوراس کی فضیلت | ¢ |
| 91 | ا فا دؤ عام درا دحیهٔ صبح وشام | | ۵۷ | ۳_ سورهٔ واقعها وراس کی فضیلت | ¢ |
| 91 | ۱۱ منفتری دعائمیں P T ۸ | ٥ | 71 | ۳ ـ سورهٔ جمعها وراس کی فضیلت | ¢ |
| 91 | دعائے روز یک شنبہ(الوار) | 0 | 71- | ۵ _ سورهٔ عم بنسائلون اوراس کی فضیلت | ٥ |
| 90 | دعائے روز دوشنبہ (سوموار) | ٥ | ۵۲ | ۲ _ سورهٔ اعلیٰ اوراس کی فضیلت | 54500 |
| 47 | دعائے روزسہ شنبہ (منگل) | 0 | דד | ۷۔ سورۂ والفتمسا وراس کی فضیلت | ٥ |
| 94 | دعائے روز چہارشنبہ (بدھ) | 0 | 74 | ٨_ سورة اخلاص اوراس كى فضيلت | ¢ |
| 4.4 | دعائے روز پنج شنبہ (جمعرات) | 0 | 7.A | 9 و۱۰ _ معود تین اوران کی فضیلت | ¢ |
| 99 | دعائے روزآ دینہ(جمعہ) | 0 | | ﴿ باب دؤم | |
| •1 | دعائے روزشنبہ(ہفتہ) | 0 | | باقيات وصالحات يا ثواب كاخزانه درتعفيمات | |
| ٠٢. | (۱) حفزت ميرعليدالسلام كي دعاء صباح | O | Z1 | مشتر كەوخىصە نما زېائے پانجىگانە | |
| | (٢) حضرت امام زين العابدين الله ك | ٥ | 41 | تعقیبات ومشتر که | ٥ |
| • 1 | دعائے عافیت | | ۷٩ | تعقيبات وشصه كابيان | 1000 |
| •٨ | (٣) دعائے یستغیر | 0 | ∠9 | نمازمبح كے تعقیبات خصه كابیان | O |

| صفحتبر | عنوان | | مفخنبر | عنوان | |
|------------|----------------------------|---|--------|--|---|
| 124 | ۵) وعائے جوش کمیر | ¢ | | ﴾ <mark>باب چھارم</mark> ﴾ | |
| 192 | (٦) وعائے مكارم الاخلاق | ٥ | 111 | شب وروز کے دعیہ وا ذکار کا تذکرہ | ¢ |
| r•r | (۷) دعائے تو پہ | o | | (۱) صبح سور ہےجا گئے کے وقت کے اذکار کا | ¢ |
| r•A | (٨) وعاء يرائع طل مشكلات | 0 | 1111 | تذكره | |
| rı• | (٩) شراعداء سے بچاؤ کی دعا | 0 | | (٢) سحر خيزي اور نماز تبجد پڙھنے کی فضيلت و | ¢ |
| rır | (١٠) دعائے حضرت جمت القي | ٥ | III~ | كيفيت كاميان؟ | |
| ۳۱۳ | دعاء ويكرحفزت جحت 🕮 | ٥ | 110 | نما رجور کی کیفیت | O |
| ria | (۱۱) وعائے خاتمہ بالخیر | O | 117 | ابيناح | ¢ |
| | ﴿ باب هفتم ﴿ | | ПΑ | دن اوررات کا آغا زصدقہ سے کیاجائے | ¢ |
| ria ria | SIBLA | 0 | V. | مونے کے آ داب کا تذکر م و باب پہنچم ہ | ¢ |
| riA | (۲)نما رتج <u>د</u> | ٥ | irr | مر جب چیسه ۱ شب وروز جعه کیا ہمیت وفضیلت کا تذکرہ | ¢ |
| ria | (m) نوافل ما ه رمضان | 0 | | شب جمعہ میں پڑھی جانے والی سورتوں اور | ¢ |
| r19 | (٣) نما زاول برماه | 0 | Ira | دعا وَكِ كَا مَدْ كُره | |
| rr• | (۵) ثما زغفیلیه | ٥ | 152 | روزِ جمعه کے عمال واورا دکا بیان | ¢ |
| rrı | (٦) ثما زېډىيىت | ٥ | | ﴿ باب ششم ﴾ | |
| rrı | (٤) نماز جعفر طيارٌ | ٥ | im | چندمشهو رومشندا دعیه مبارکه کا تذکره | |
| rrr | (۸) نمازاشخاره | 0 | 161 | (۱) دعائے کمیل | ¢ |
| rrr | (٩) ثما زېدىيە دالدىن | 0 | 101 | (۲) دعائے مشلول | ¢ |
| rrr | (۱۰) نمازوسعت رزق | ٥ | IDA | (۳) دعائے عشرات | ¢ |
| rrr | (۱۱) نماز دفع عسرت تختی | ø | 170 | (۴)وعائے سات | ¢ |

| مذنبر | عنوالن | 3 | صفحنبر | يحنوال | |
|-------|---|--------|--------|--|----|
| rrr | (۴) بېركېن كىلىخ | o | rrr | (۱۲) نما زطلب حاجت | ٥ |
| ۲۳۳ | (۵) دانت کے درد کیلیج | ٥ | rro | (۱۳) نمازیمائے ازالیہ بم غم | ¢ |
| rro | (١) درد پيم كازاله كيلئ | ٥ | rra | (۱۳) نمازهلِ مهمات | ¢ |
| rro | (۷)لقوہ کے ازالہ کیلئے | 0 | rro | (۱۵) ثما زحد پر فیش | ¢ |
| rri | (۸)مرگی کے ازالہ کیلئے | 0 | rra | (١٦) نمازاستغاثة بخدا | ¢ |
| rrz | (٩)دردسينه كيلئ | ٥ | rry | (۱۷) ثما زطلب فرزند | ¢ |
| rrz | (١٠) در دِول اورا ختلاج قلب کيلئے | ٥ | rra | (۱۸) ثمازٍاعرابي | ¢ |
| rra | (١١) در دِشْكُم كَلِيْحَ | ٥ | | ﴾ باب هشت <mark>م</mark> ﴾ | |
| rra | (۱۲) در دِ کمر کیلیځ | ٥ | | چند بدنی بیاریاں اوران کا جسمانی و روحانی | ٥ |
| 149 | (۱۳)ورونا المالية | ٥ | 14 | علاج كا | |
| rrq | (١٣) بواسير كما زاله كيليخ | 0 | FFA | مختلف بيا ريول كيليغ عمومي أدعيه وأورا دكا تذكره | ¢ |
| rr* | (۱۵) تلی اور پیة کیلئے | | rtA | (۱)عمل گذرم | ¢ |
| rm | (17) گھٹنول کے درد کیلئے | ٥ | rra | (۲)عمل گوسفند و کبورت | ¢ |
| 171 | (۱۷) عرق النساء یعنی جوڑوں کے درد کیلئے | 0 | rrq | (٣) ہر بیاری کے ازالہ کے لیے عمل بالقر آن | ٥ |
| rri | (۱۸) در دِنُولِنج کیلئے | ٥ | | (سم) ہرفتم کے دردوالم کے ازالہ کی عموی | ¢ |
| rrr | (۱۹) تپ کما زاله کیلئے | 11.000 | rrq | دعا تحين | |
| rrr | (۲۰) برص وجذام کیلئے | | | بدن کی مختلف مخصوص بیار یول کیلئے مخصوص | ¢ |
| ٢٥٦٠ | (۱۱) ہوشم کی خارش اور پھوڑ ہے پھنسیوں کیلئے | | rri | ادعيموا ورا د | |
| rra | (۲۲) ٹا گلول کے درد کیلئے | | rri | (1) سرکے درد کیلئے | |
| rra | (۲۳) منیق النفس یعنی دمه کیلئے | 124 | rrr | (۲)درد شقیقہ (آ دھاسیسی کے درد) کیلئے | 33 |
| מחז | (۲۲۷)وضع حمل کی آسانی کیلئے | ø | rrr | (٣) كان كروردكيلي | ¢ |

| صفحةبمر | عنوالن | 5) | صفح فمبر | عوال | |
|-------------|---|----|----------|--|---|
| | رجب کے مقدی مہینہ کے اعمال مخصوصہ کا | o | rm'1 | (٢٥) نظر بدكيلئ | ¢ |
| ٦٢٢ | تذكره | | rr⁄2 | (٢٦) جانورول كفظر بدسے بچانے كيلئے | ¢ |
| 777 | ما ورجب کی کہلی تاریخ | ٥ | rra | (۲۷) بحروجادوسے بچاؤ کیلئے | ¢ |
| 774 | ٣ر جېکى تارىخ | 0 | 179 | (۲۸) جنات کے شرسے بچاؤ کیلئے | ¢ |
| 711 | تيره،چودهاورپيدره رجبالمرجب كاعمال | 0 | | (۲۷) شراعداءاور برقتم کی آفات و بلیات | ¢ |
| 77. | ۱۳رجبالمرجب | ٥ | ra• | سے بچاؤ کیلئے | |
| AFT | ۱۵ر جبالمر جب کا دن | ٥ | | (۲۸) سانپول، کچھوول اور دومرے حشرات | ¢ |
| 14. | ۲۵ رجبالرجب | ø | rom | الا رض کے ضرروزیاں سے بچاؤ کی دعا نمیں | |
| r ∠• | ٢٤ رجب المرجب، شب وروز كما عمال | ٥ | | (٢٩) جلنے، ڈو بنے اور مرطرح کے نقصان | ¢ |
| r2r | STBTA | ٥ | raa | ے بچاؤ کی دعا مصبح کا کا COM | |
| | 🕏 دوسري فعبل 🤄 | | רמז | (۳۰)وسعت رزق کیلیج | ¢ |
| | ما وشعبان المعظم كي فضيلت اوراس كاعمال كا | 0 | ra∠ | (٣٣)ادائے قرض کیلئے | O |
| r_a | تذكره | | raz | (۳۴۷) طلب اولا د کیلئے | ¢ |
| 724 | ما ه شعبان کے عمال مشتر کہ کابیان | 0 | roA | (۳۵)قىدى كى ربائى كىلئے | ø |
| 129 | ما وشعبان کے عمال مخصوصہ کابیان | ٥ | | ﴿ باب نهم ﴾ | |
| r_9 | شعبان کی پہلی رات | 0 | | سال کے ہا رہ مبینوں کے مخضر مگر متندا عمال و | ٥ |
| 149 | شعبان کی پہلی تاریخ | 0 | ro 9 | عبا دات | |
| r_9 | خيرى يا نچويں شعبان | 0 | ro 9 | مقدمه | ¢ |
| TAT | تير ہويں شعبان كى رات | 0 | | 🛉 فصل اول 🖣 | |
| TAT | نيمه يشعبان كارات | 0 | | رجب کے مقدی مہینہ کے اعمال مشتر کہ کا | ¢ |
| 11 | اس رات کے مخصوص اعمال | o | *** | تذكره | |

| مؤنمر | عوالن | 3 | مفخنبر | عنوان | |
|-------|--|---|--------|--|---|
| | شب ہائے قد ر یعنی شب ۱۹، ۲۱ اور ۲۳ کے | 0 | raa | پند ره شعبان کا دن | ¢ |
| rrr | مشتر كهاعمال | | raa | ما یشعبان کے آخری دنوں کے اعمال | ¢ |
| rr3 | شبهائ قدر كخصوص اعمال كالذكره | 0 | 1/19 | ما پشعبان کی آخری را ت کی دعا | ¢ |
| rro | انیسویں ما درمضان کی رات کے مخصوص اعمال | 0 | | 🛉 تيسرى فصل 🔄 | |
| rra | ا کیسویں ماہ رمضان کی رات کے مخصوص اعمال | ٥ | rar | ما ورمضان كى فضيلت والهميت كالتذكره | ¢ |
| rra | تيئسويں شب کے مخصوص اعمال | 0 | rar | ماورمضان کے مشتر کہاعمال کا تذکرہ | ¢ |
| ۲۳۲ | ماہ رمضان کے آخری عشرہ کی دعائمیں | ٥ | | (۱) کہائی ہے:۔ماہر مضان کے تمام شب وروز | ¢ |
| | ا کیسویں شب کی دعا | ٥ | ram | <u>ڪاعمال</u> | |
| ٣٣٣ | بائیسوی <mark>ں شب</mark> کی دعا | 0 | | (٢) دوسرى فتم: ماه رمضان كى ماتول كے | ¢ |
| سامام | ميرون شركارها ي | ٥ | 192 | افال کاری | |
| ۳۳۵ | چوبیسویں شب کی دعا | 0 | F+1 | (۳) تیمری تم یحری کے وقت کے اعمال | ¢ |
| ٢٣٦ | پچیبیویں شب کی دعا | 0 | | (4) چوتھی قتم :۔ماورمضان کے دنول کے | ¢ |
| mr2 | چھبیسویں شب کی دعا | 0 | ria | اعمال ا | |
| ۳۳۸ | ستائيسوين شب کی دعا | 0 | rrr | ماہ رمضان کے عمال مخصوصہ کا تذکرہ | ¢ |
| rra | ا ٹھا ئیسویں شب کی دعا | ٥ | rrr | (1) ماہ رمضان کاجیا ند د کچھ کر پڑ <u>ے صفے</u> کی وعا | ¢ |
| rr9 | انتيبوين شب کی دعا | Ф | rrı | ماہ رمضان کی پہلی رات کے اعما <mark>ل</mark> | Û |
| ra• | تیسویں شب کی دعا | 0 | r12 | ما ورمضان کے مہلے دن کے اعمال | ¢ |
| 201 | ما ورمضان کی ستائیسویں کی رات | | | تير جوي، چو دجويں اور پيدرجويں ماہ رمضان | ¢ |
| rar | ما ورمضان کی آخری رات | 0 | rri | <u>ڪاعمال</u> | |
| ror | ما ورمضان كا آخرى دن | ٥ | rrr | پندره ماه رمضان کا دن | O |

| صفحنمبر | عنوال | | صفحتمبر | عنوان | |
|-------------|--|-----|------------|--|------|
| r'A i | چوبیسویں ذی الحبرکادن | ٥ | | 🛉 فصل چهارم 🖣 | |
| MAA | پچپيوين في الحجه كادن | ٥ | rar | ما پیشوال کے اعمال کا تذکرہ | ¢ |
| MAA | آخرذي الحبركا دن | ٥ | raa | شوال کی مہلی تا ریخ کے اعمال | ¢ |
| | 🛉 فصل هفتم 🔄 | | ۳4۰ | ماه شوال کی پیچیسویں تاریخ | ¢ |
| r9+ | محرم الحرام كے اعمال كابيان | 0 | | ﴿ فصل پنجم ﴾ | |
| m9+ | پہلے محرم کی را ت | ٥ | 771 | فايقعده كم مهينه كاعمال كالذكره | ¢ |
| m91 | محرم کی کیلی تاریخ | ٥ | rir | سميارهوي ذي القعده كي تاريخ | ¢ |
| rar | تا سوعا لیعنی نویر محرم کادن | O | rır | ميكسوين (٢٣) في القعد وكاد ن | ¢ |
| rar | د سویر محرم کی را ت | ٥ | rır | ۲۵ زی القعد و کی را ہے اوراس کا دن | ¢ |
| rar | SIR | ٥ | VI | | |
| m92 | پچينوي محرم الحرام کا دن | 0 | PYY | ذى الحبير كم مقدس مهينه كے اعمال كالذكره | ¢ |
| | 🛉 فصل هشتم 🔄 | | ryy | ماوذى الحجبر كم مشتر كهاعمال كابيان | ¢ |
| 79 A | صفرالمظفر مح مهينه كحاعمال كالذكره | ٥ | r19 | ال مقدس مهينه كاعمال مخصوصه كالذكره | O |
| rgA | ببيوين صفر كادن اوراس كحاعمال | ٥ | r19 | ساتوین ذی الحجه | 0.00 |
| m99 | ا شائيسوي صفر كا دن | ٥ | 719 | آ تھویں ذی الحبہ کا دان | ¢ |
| | 🛉 فصل نهم 🖣 | | r19 | نویں ذی الحجہ کی رات | ¢ |
| ۴ | رئیج الاول کے مہینہ کے اعمال کا تذکرہ | ٥ | r2• | نویں ذی الحجه یعنی عرفه کادن | |
| ۴۰۰ | رئي الاول كى مهيلى رات | ٥ | r20 | دسویں ذی الحجبر کی رات یعنی عبیر الاسٹی کی رات | |
| ۴٠٠ | آ مھویں رہ <mark>ے</mark> الاو ل کادن | 0 | r20 | دسوی ں ذی الحج ر کا دن لیعنی عبیر الاسطیٰ کا دن | |
| ۳ | نویں رہی الاول | 100 | r27 | پندر مویں فری الحجہ کا دن | |
| r | سترجویں رہیج الاو ل کی را ت | ø | F27 | اشارجویں ذی الحجہ یعنی عید غدیر کا دن | ٥ |

| صفحةبر | عنوان | صفح ثمبر | عنوان | |
|--------|---|----------|---|---|
| الم | 🗘 افادة حديده | P*1 | ستر ہویں رئٹ الاول کا دن | ¢ |
| | ﴿ فصل اول ﴿ | | 🛉 فصل دهم 🔄 | |
| | 🗈 حضرت سيدالانبياء والمرسلين وخاتم النبيين صلى | r•r | رقع الثَّاني كے اعمال كالمّذ كرہ | ¢ |
| | الله عليه وآله وسلم كي زيارت، اس كي فضيلت | | 🛉 فصل ياز دهم 🔄 | |
| ۱۳ | اور کیفیت کابیان | 14.50 | جما دیالاولی کے عمال کا تذکرہ | ¢ |
| | عضرت رسول خداصلی الله علیه و آله وسلم ک | P. P. | چەرھويں جمادىالاوڭى كادن | ¢ |
| ۵۱۳ | مختلف زیارات اوران کی کیفیت کابیان | | 🛉 فصل دواڑ دھم 🛉 | |
| | 🚓 پیفمبراسلام صلی الله علیه و آلبه وسلم سے الوداع | h.h. | جما دی الثانیه کے اعمال کالڈ کرہ | ¢ |
| rr. | کی وعا | h.* h. | تيسري جما دى الثانيي | ¢ |
| | مديقة كبرى السية حورا وعفرت فاطمه زبراعليها | IV. | بیسویں جمادی الثانیہ کا دلتا تخمہ مہمہ اسلامی ہارہ مہینوں میں سے ہر ماہ کی | |
| | السلام كى زيارت كى فضيلت اوراس كى كيفيت | r+0 | پہلی تاریخ کے اعمال کے بیان میں | |
| rn | كابيان | | ﴿ باب دهم ﴿ | |
| rrr | 🚓 حضرت سيدة كي قبر مقدس كي تعيين كا معامله؟ | · | سر کار محد وآل محمد علیهم السلام کی زیارات مقدسه | ¢ |
| | 🛉 فصل سيوم و چهارم | r∠ | كاتذكره | |
| | و پنجم و ششم 💠 | | الم يا ب بهي باب نم ك طرح أيك مقدمه اور | |
| | ائمة بقيع يعنى حضرت امام حسن مجتبى وحضرت | | چند فصول اورا یک خاتمه پر مشمل ہے ﴾ | |
| | امام على زين العابدين وحضرت امام محمد بإقراور | | مقدمه جوآ داب سفراورآ داب زيارت يرمضمل | ¢ |
| | حضرت امام جعفر صادق عليهم السلام كى زيارات | r•∠ | ç | |
| rro | مقدسه کی فضیلت اوراس کی کیفیت کابیان | | سر کار محد و آل محمد علیهم السلام کی زیارات کے | O |
| r ro | النائماربعة كانارت كاكفيت كابيان | P+9 | آ داب | |

| صفح نمبر | عوان | | صفينمبر | عنواك | |
|----------|--|----|---------|--|---|
| | حضرت امير القليجيكي زيارات مخصوصه جومعتين | 0 | MYA | ائمہ بقیع سے الوداع کرنے کی دعا | ¢ |
| اس | اورمقر راوقات کے ساتھ مخصوص ہیں | | | حضرت رسول حداً وحضرت فاطمه زبراً او رحضرت | ¢ |
| ۳۳۳ | عیدغدر کے دن کی مخصوص زیارت | 0 | | امیر المؤمنین ٔ اور دوسرے ائمہ بھی یا دیگر ائمہ | |
| | ارئ الاول کے موقع پر حضرت امیر اللی | 0 | MYA | طاہرین کی دورے زیارت کرنے کاطریقہ؟ | |
| מאא | کی مخصو ص زیارت | | | 💠 فصل هفتم 💠 | |
| | منجد کوفه، منجد سهله ومنجد صعصعه وغيره ک | 0 | | مدینه منوره اوران کے اردگر دمیں دیگر بعض | ¢ |
| | عظمت اوران مساحد میں عبادت کرنے کی | | mr. | متبرك قبورك زمارت كابيان | |
| rar | فضيلت | | | مدینه منوره کی بعض منبرک مساحد اوران میں | ¢ |
| rar | مساحید میں داخل ہونے کی دعا | 0 | اسم | نما زپڑھنے کی فضیلت کا تذکرہ | |
| rar | م كركوف المراجعة أمانها جت | 0 | V | فمل مشتم في | |
| ۳۵۳ | مجدتها | 0 | 4. | امير المؤمنين وامام المتطين حضرت على الظيرة ك | 0 |
| | جناب مسلم بن عقيلٌ اور جناب بإني بن عروه كي | 0 | rrr | زیار ت کی فضیلت اور کیفیت کابیان | |
| raa | زیارا ت کامیان | | | حضرت امير الفيلائي زيارات دونتم کي جيں: سرت مند | 0 |
| ۲۵٦ | جناب ہائی بن عرو ڈکی زیا ر ت | ٥ | | (۱)ایک مطلقہ جو کسی خاص وقت سے مختص نہیں | |
| | 🛉 فصل نهم 🖣 | | | ہے۔(۲) دوہری مخصوصہ جو کسی خاص وقت | |
| | فامس آل عباء سيد الشبداء حضرت امام | 0 | rrr | ہے تھی ہیں۔ | |
| | حسین الگیری زیارت کی خصوصی فضیلت اور سریر | | WH.W | کیبلی زیار ت مطلقه س | O |
| ran | اس کی کیفیت کابیان جسر و سر | | ۲۳۶ | جناب امیر اللی کی دومری زیارت مطلقه ** | ¢ |
| | حضرت امام حسین النظی کی زیارت دوقتم کی ا | 0 | mrq | تنمیری زیارت مطلقه ح | |
| P 67 | مېن: مطلقها ورمخصوصه پرا | 80 | ma | چوتھی زیارت مطلقہ | |
| 109 | مهیلی زیار ت مطلقه | O | 4,4,4 | حضرت امير القليفة كلي زيارت كي وعائے الوداع | 0 |

| صفح نمبر | عنوالن | | مفخذبر | يحنوال | |
|----------|--|-----|--------------|---|---|
| 0 | ﴿ فصل دهم ﴿ | 3 | ۳۲۳ | دومرى زيارت مطلقه | ¢ |
| | حضرات امامين كاظميين عليما السلام كى زيارت | 0 | יזרים | تيمري زيارت مطلقه | ¢ |
| rqr | کی فضیلت اورای کی کیفیت کابیان | | ۵۲۳ | چوتھی زیا رہے مطلقہ | ¢ |
| 795 | اما مین کاظمین علیجاالسلام کی کیفیت؟ | 0 | ۲۲۶ | بإنجوين زيارت مطلقه | ¢ |
| 792 | حضرت امام موی کاظم الفیلائی کہلی زیارت | 0 | ۲۲۳ | سيدالشهداء الكير سے الوداع كى دعا | ¢ |
| | حضرت امام موی کاظم ﷺ کی دوسری | ٥ | ۸۲۳ | حضرت ابوالفضل العباس القليمين كي زيارت | ¢ |
| ~9~ | نيار ت | | rz• | جناب عماس الفيرة سے الوداع کی دعا | ¢ |
| rar | حضرت اما مجمد تقی اللی کی پہلی زیارت | ø | | حفرت امام حسين اللي كالمخصوص زيارات كا | ¢ |
| ۳۹۳ | حضرتاما مجمد تقى اللي كى دوسرى زيارت | O | r <u>∠</u> 1 | بيان | |
| 790 | ان دوا مامون سالوداع | ٥ | P41 | حفرت امام حسين الليراكي بهام مخصوص زيارت | ¢ |
| | متجديرا فا كي زيارت اوراس مين نماز رد هند كي | 0 | rzr | میر شعبان کی زیار ت | ¢ |
| 797 | فضيت | | | شب بائ قدر مین مفرت امام حسین اللي ك | ¢ |
| 797 | بغدا دمیں نواب اربعہ کی زیارت | 100 | r2r | مخصوص زیارت | |
| | حضرت مینخ کلینی و دیگر چند علماءِ اعلام ک | ٥ | | شبہائے عیدین یعنی عیدالفطراور عیدالانتحیٰ کے | ¢ |
| 797 | ن ي ان ت | | ۳۷۵ | شب وروز میں زیارت امام حسین اللیں | |
| 797 | سلمان محمد ی کی زیارت | 0 | r27 | شب وروزعر فدمین زیارت امام حسین الفید | ¢ |
| | 🕴 فصل ياز دهم 🖣 | | ۴۷۷ | روزعاشوراءزبارت امام حسين الفيه | ¢ |
| | امن الائمة حضرت امام رضا كلي كل زيارت | 0 | M | زیار ت عاشوراء کے بعد پڑھی جانے والی دعا | 0 |
| ~9∠ | کی فضیلت اوراس کی کیفیت کابیان | | | اربعین کے دن (۲۰ صفر کو) زیارت امام | ¢ |
| | حفرت امام رضا اللي كى زيارت كى كيفيت | ٥ | MAA | حسين القيالا | |
| 791 | اور مہلی زیا ر ت | | | | |

| مفخيمر | عوالن | 3 | مفخبر | عوال | |
|--------|---|---|-------|--|------|
| | بعض انبیاء عظام بعض امام زا دگان اوربعض | ø | ۵۰۷ | امام رضا الفيلا سالوداع كابيان | ¢ |
| | شنمرا دیان پیرب اور مخلص ابل ایمان کی قبور کی | | | 🛉 فصل دواز دهم 🛉 | |
| ٥٣٢ | زيارت كابيان | | | امامين عسكريين يعنى حضرت على نقى اورحضرت | ¢ |
| | (۱) بعض انبیاء کرام علیم السلام کی زیارت کا | 0 | | امام حسن عسرى عليها السلام كى زيارت كى | |
| orr | الممالى بيان | | ۵۰۸ | فضیلت اوراس کی کیفیت کامیان؟ | |
| | (٢) بعض امام زادگان اور خاندان نبوت | ٥ | ۵۰۸ | ان دونول ا مامول کی مشتر که زیارت | ¢ |
| | سے وابسة بعض محترم خواتین کی قبور کی زیارت | | ۵۱۰ | امامین عسکریین علیبهاالسلام سےالوداع | ¢ |
| ٥٣٣ | كابيان | | | فصل دواز دہم کا تنمه مهمه دربیان زیارت خاتم | ¢ |
| ٥٣٣ | (۱)امام زا ده سیرمحمد | ٥ | | الائمه يعنى حفرت ججة ابن الحن عليه السلام كي | |
| ٥٣٣ | STBITTA | | 011 | نیارت اورسر داب کے آماب کا جات ک | |
| ٥٣٣ | (۳) شَا ہِزادہ عبدالعظیم | | ۵۱۵ | (۲)وعائد بكالدّره | 1 |
| ٥٣٣ | (۳)امام زاده جمزه | | ۲۲۵ | (۳) دعائے عہد کا بیا ان | ¢ |
| | (۳) بعض ان علاء اعلام کے قبور کی زیارت کا | ٥ | | ∲ فصل سيز دهم ∲ | l sc |
| ۵۳۳ | بيان جوديا رائمية اطهارٌ مين مد فون ب ين - بيان جوديا رائمية اطهارٌ مين | | ۵۳۰ | بعض زیا را ت جامعه کابیان د را | - |
| ۵۳۵ | (۴) بعض مخدرات کے قبور کی زیارت کابیان " | ٥ | ۵۳۰ | (۱) کیبلی زیار ت جامعه صغیره | 550 |
| ۵۳۵ | (۱)معصومه لقم مح کازارت | | ۵۳۱ | (۲) دوسری زیارت جامعه بهمیره | |
| ۸۳۵ | (۲) شريكة التحسين مفزت زينب كي زيارت | | ۵۳۱ | (۳) تیمری زیارت جامعهٔ | ¢ |
| | (٣) امام زمانة كى والدؤ ماجده نرجس خاتون | 0 | | 🛉 فصل چهار دهم 🕏 | |
| ٩٣٥ | کی زیار ت سر | | ۵۳۲ | خاتمية الكتاب | ¢ |
| ٩٣٥ | (۴) جناب حکیمه خالون کی زیار ت سرور می | | | | |
| ٠۵۵ | جلمالل ایمان کی قبور کی زیارت کامیان | ٥ | | | |



اظهار تشكر

کتاب متظاب زاد العباد لیوم المعاد جوال دیده زیب اور دکش اندازیل طبع موکردت کے مشاق ہاتھوں تک پینج ری ہو یہ بفضلہ تعالی جناب شرافت انتساب الحاج لیافت علی صاحب آف پیرمحل ضلع خانیوال حال وارد نیو پورٹ (برطانیہ) کی ہمت مردانداور جرائت مؤمناندکا نتیجہ ہے۔ ہوا یوں کہ جب گزشتہ سے پیوستہ سال ، میں عشر و انی کے سلسلہ میں انگلینڈ کے دور و مجالس پر گیا۔ اور موصوف کے ہاں قیام کے دوران اثناع گفتگو میں اس کتاب کی تالیف وتر تیب کا تذکرہ ہوا۔ تو موصوف نے اپنی روایتی سبقت الی الخیر کا مظاہرہ کرتے ہوئے خواہش ظاہر کی کدائی کتاب کی اشاعت کی معاوت وہ حاصل کریں گے۔ جنانچہ اس کا شرو ماظرین کرام کے سامنے حاضر ہے۔ جو الحق الحق الحق الحق الحق الحق کے سامنے حاضر ہے۔ کی معاوت وہ حاصل کریں گے۔ جنانچہ اس کا شرو ماظرین کرام کے سامنے حاضر ہے۔ کی معاوت وہ حاصل کریں گے۔ جنانچہ اس کا شرو ماظرین کرام کے سامنے حاضر ہے۔ وہ الحق المحق کی معاوت وہ حاصل کریں گے۔

دعاہے کہ خداوند عالم اس کارِخیر کا ثواب ان کے دالدین کی روح پُرفتوح کو پہنچائے ،ان کے درجات بلند فر مائے اور آپ کواو لا دِنریندکی دولت سے مالا مال فر مائے اورانہیں حوادث رد نے گارہے محفوظ ومصون رکھے اور ان کی اس سعی جمیل کوشرف قبول سے نوازے۔ ع

ایس دعااز من و از جمله جهان آمین باد

آمين يا رب العالمين بجاه النبيُّ و اله الطاهرين_

واماا لاحقر محمد حسين المجفى عفى عنه بقلمه •اشوال ٢<u>٧٧١ ه</u>ر مبطابق سوانومبر ٢<u>٠٠٥ ء</u>





بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

الحمد لله رب المشرقين الذي جعل المعاء وسيلة لسعادة المارين و ذريعةً لفلاح الكونين والصلوة و السلام على سيد الثقلين و آلم المصطفين

اما بعدید بات کسی وضاحت کی مختاج نہیں ہے کہ خدائے علیم وحکیم نے جن وانس کواپنی عبادت کے لِي بيدا كيا ہے ۔جيبا كەدەخودفلىفە موت دحيات بيان كرتے ہوئے فرما تا ہے: ﴿ وَمَا خَلَقُتُ الْحِنَّ وَ اُلانُسسَّ إلَّا لِيَسَعُبُ مُوُن ﴾ (القرآن) اى طرح اربابِ علم و دانش كے ليے بير بات بھى عمال راجيريان كى مصداق ہے کہ ﴿الله عاء منع العبادة ﴾ كه يروروكارك باركام على بي صاديكاراورة بدوانا بدكرنا عباوت كامغز ہے۔(عدّ ۃ الداعی)۔ یہی وجہ ہے کہ ہمارےعلائے اعلام اورفضلائے گرام نے ہمیشہاس موضوع کو بروی اہمیت دی ہے اوراہے ہمیشداینی خاص توجہ کا مرکز بنایا ہے۔ چنانچہ حضرت شیخ طوی علید الرحمہ کی کتاب مصباح المعتھجد مويا جناب شيخ ابرا بيم^{نفع}ي عليه الرحمه كي المصباح اورالبلد الامين ،سيد ابن طاؤوس عليه الرحمه كي تهج الدعوات مويا الا قبال يا جمال الاسبوغ يا حضرت شيخ بهائي كي مفتاح الفلاح ہو يا شيخ ابن فہد حلي كي عدة الداعي _علامه مجلسي عليه الرحمه کی زا دالمعاد ہو یا جناب شخ عباس فمی علیہ الرحمه کی مفاتح البحان وغیرہ وغیرہ بیمیرےاں دمویٰ کے شاہد عادل بين يا اى حقيقت كے مختلف مظاہر۔شكر الله سعيهم و جزاهم عنا خير الجزاء گريركتابين علاوه اس کے کہ کوئی عربی میں ہےاور کوئی فاری میں اور پھر کوئی بہت صحیٰم ہےتو کوئی بہت مختصرعلاوہ ہریں بعض اور چیزیں بھی ہیں جو دل و دماغ کومتاثر کرتی ہیں اور آ دمی کواس بات پر آ مادہ کرتی ہیں کہانی قو می زبان اردو میں اس موضوع پرایک ایسی کتاب مرتب کی جائے جس میں نهطول ممل ہواد رنداختصارمخل ۔ بلکہ اعتدال ہواور پھر اس میں صرف وہ موا دورج کیا جائے جومتند ومعتبر اسناد ہے سر کارمحد و آل محد علیہم السلام ہے مروی ومنقول ہو، جس میں نہ کسی آ دمی کی ذاتی ایجاد واختر اع کی آمیزش ہواور نہ ہی رطب و پابس قتم کی کوئی چیز شامل ہو۔اور جو

تعقیبات نماز ہائے ، جگانہ سے لے کر سال کے ہارہ مہینوں کے اعمال وعبا دات تک اور سر کارمحد و آل محمد علیهم السلام کی زیارات برمشمل ہو چنانچہ تمنائھی کہ اس موضوع پر قلم فرسائی کی جائے۔ اور جب بفضلہ تعالیٰ اسلامیات کے جملہ موضوعات برمیری تصنیفات و تالیفات شائع ہورہی ہیں اور تشنہ کاماں علوم محمد و آل محمد علیہم السلام كى بياس بجهار بى بين (والحدمد لله) تؤييا ہم شعبه كيوں خالى رەجائے؟ اس ليےاس سال ماهِ مبارك یعنی ماہ صیام کے فیوض بر کات ہے استفادہ کرتے ہوئے آج اس کی آخری تاریخ کواس مبارک کام کا آغاز کر دیا ہے ۔امید کامل ہے کہ خداوند عالم کچھاہئے خصوصی فضل و کرم سے اور پچھاس ماہِ مقدس کی برکت ہے اور پچھ سر کارمحہ و آل محملیہم السلام کے توسل ہے مجھے جلد ازجلد اس کام کی جھیل کے شرف کی سعادت ہے نوازے گا۔ اور پھر جہاں اسے اپنے مخلص اور شب زندہ دارعبا دت گز اروں کے لیے مصباح (چراغ) بنائے گا۔ وہاں اسے ان کے لیے جنت کی مفتاح (کلید) بھی قرار دے گا۔اور جہاں اے ان کے لیے باعث ا قبال و کمال قرار دے گاوہاں اے ان کے لیے معا د کا بہترین زا دبھی قرار دےگا۔میری یہی آرزوے کہمیرے عین حیات میں بھی اورمیری ممات کے بعد بھی جہاں اللہ تعالیٰ سے نیکو کاراد ہے بیز گار بندوں کے دائیں ماتھ میرے ترجمہ دتفییر والا قر آن ہو وہاں ان کے بائٹیں ہاتھ میں یہ دعاؤں کی کتاب لیٹنی ''زا دالعباد کیوم المعاد''ہو، تا کہان کا بیافتدام جہاں ان کی مغفرت و بخشش کا باعث ہو و ہاں میری اور میرے والدین شریفین اورا ساتذ ہ و تلا مذہ اور دیگر تمام متعلقین ومتوسلین کی مغفرت سِیئات او ربلندی درجات کا وسله بھی ہے۔ومیا ذلک عیلی اللّٰہ بعزیز آمین يا رب العالمين بجاه النبيّ و آله الطاهرينّ ـ

مخفی نہ رہے کہ یہ کتاب ایک مقدمہ، دل ابواب، چند فصول او را یک خاتمہ پر مشتمل ہے۔

ایعنداح:۔واضح رہے کہ سورتوں، دعاؤں اور زیارتوں کا ترجمہ اپنی طرف ہے پیش کرنے کی بجائے سورتوں کے ترجمہ کے سلسلہ میں جناب مولانا حافظ سید فرمان علی مرحوم، اور دعاؤں اور زیارتوں کے ترجمہ کے بارے میں اکثر و بیشتر حضرت مفتی جعفر حسین مرحوم اور جناب علامہ سید حافظ ریاض حسین الحقوی کے تراجم پیش بارے میں اکثر و بیشتر حضرات کا ترجمہ دستیا بنہیں ہوا و ہاں اپناتر جمہ پیش کیا ہے۔

وانا الاحقر محمد حسین الجھی، سرکو دھا

مع ماهِ رمضان المبارك المهم إهه سارٌ هي يا في بج ون بمطابق ١٤ وتمبر ٢٠٠٠ ء

مقدمه

دعا کا حکم اور اس کے فوائد ،اس کی اہمیت و فضیلت اور اس کے شرا لط (از حضرت مفتی جعفر حسین اعلیٰ الله مقلهٔ)

وعأء كأحكم

الله سجاعة نے اپنی بہت ی بخششوں اور نعمتوں کو دعاء سے وابستہ کیا ہے اور بیاس کا لطف واحسان
ہے کہ اس نے نصرف دعا کی طرف رہنمائی کی بلکہ حکماً دعا کا فریضہ عائد کر دیا تا کہ اس کے بند ہے اس کے فضان کرم سے بہر ہ مند اور اس کے انعام و بخشش سے دائوں مراد کھر سے دائوں و حدیث و آثار آن وحدیث و آثار آئہ طاہرین میں دعا کے متعلق بڑی تا کیدوار دہوئی ہے۔ اور ہر طرح سے اس پر ترغیب و تحریص دلائی گئی ہے۔ چنانچہ ارشادالہی ہے:

(۱) ﴿ وَ إِذَا سَالَكَ عِبَادِى عَنِيى فَالِنَى قَرِيْبٌ . أُجِيبُ دَعُوةَ اللَّاعِ إِذَا دَعَانِ
 فَلْيَسْتَجِيْبُوا لِي ﴾

''جب میرے بندے میرے بارے میں تم سے پوچھیں تو کہدود کہ میں ان کے پاس ہی تو ہوں اور جب کوئی مجھ سے دعا ما نگتا ہے تو نمیں دعا کرنے والے کی دعا کو سنتا اور (مناسب ہوتا ہے تو) قبول کرتا ہوں۔''

(٢) ﴿ أَمَّنُ يُجِينُ الْمُضَطَّرِّ إِذَا دَعَاهُ وَ يَكُشِفُ السُّوَّءَ ﴾

''وه كون ہے كہ جب مضطر و لا چارا سے پكار سے وه منتا ہے اور ہر د كھ در دكو دوركرتا ہے۔''

(٣) ﴿ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي اَسْتَجِبُ لَكُمْ ﴾

''تمہارا پروردگارفر ما تا ہے کہ مجھ ہے دعا مانگو میں تمہاری دعا قبول کروں گا۔''

٣) ﴿ أَدُعُوا رَبُّكُمُ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ﴾

''تم اپنے پروردگا رکوتضرع و عاجزی کے ساتھاور چیکے چیکے پکارو۔''

(٥) ﴿ هُوَ الْحَيُّ لَآ اِللَّهِ اللَّهِ هُوَ فَادْعُونُهُ مُخَلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ﴾

''وہی تو ہمیشہ رہنے والا ہے جس کے سوا کوئی معبو دہر حق نہیں۔لہذاتم صدق نبیت ہے عمادت کرکے اس ہے دعامانگو۔''

حضرت پیغمبرا کرم صلی الله علیه و آله وسلم کاارشا د ب:

﴿الدعاء سلاح المؤمن و عمود الدين﴾

'' دعاءمؤمن كاجتهيا راور دين كاستون ہے۔''

امير المؤمنين على ابن ابي طالب القليرة كا ارشاد ب:

﴿الدعاء توس المؤمن و متى تكثر قرع الباب يفتح لك﴾ "وعامؤمن كير من من من المرار بار روازه كفكمنا وكلة والمماري ليح كول ديا عائے گا۔"

امام زین العابدین القایق کاارشاد ہے:

﴿انّ الدعاء ليرد البلاء﴾

'' دعاءبلاومصيبت کونال ديتي ہے۔''

امام محمد باقراطي كارشادب:

وافضل العبادة الدعاء

"د جبيترين عباوت دعاب-"

امام جعفر صادق الطيخ كاارشادب:

﴿الدعاء انفذ من السنان الحليد﴾

'' دعاتیز دھاروالی اَقَی ہے بھی زیا دہ مؤثر و کارگر ہوتی ہے۔''

}

امام موی کاظم الطفی کاارشا دے:

﴿عليكم بالدعاء فان الدعاء و الطلب الى الله يرد البلاء﴾ "دجهيں لازماً دعا مانكما چاہيئے كيونكه الله سے طلب و دعاء بلا ومصيبت كو برطرف كر ديتى ہے۔"

امام رضالظفي كاارشادي:

﴿عليكم بسلاح الانبياء فقيل وما سلاح الانبياء؟ قال الدعاء ﴾ "تهيين انبياء كي تحييارت آراسته بوما چاہيئ - پوچھا گيا كه وه بتحيياركيا ہے؟ فرمايا: دعا-"

امام محرثقی الطيع كاارشاد ب:

﴿بالدعاء تدفع البلاء﴾

SIBTAIN.COM

وعاء كى ہمه كيرى وقطرى اہميت

ہڑفض دعاء کی ضرورت کوشدت ہے محسوں کرتا ہے اور جس چیز کی ضرورت کا احساس شدید ہووہ اپنے مقام پر ایک مسلمہ حقیقت کی حامل اور انسان کی فطری طلب اور قد رتی خواہش ہوتی ہے۔ اور اگر اس کی ضرورت واہمیت پر کوئی دلیل قائم نہ بھی کی جا ہے جب بھی اس کی واقعیت میں کوئی شر نہیں ہوسکتا اور نداس کے بارے میں اطمینان وابقان میں کوئی فرق پڑسکتا ہے۔ اس لیے کہ فطرت کی ہم آ جنگی خود سب ہے بڑی ولیل ہے چہ جا ئیکہ اس کی اہمیت پر فطرت و وجدان کی شہادت کے علاوہ بے شار دلائل بھی قائم ہو چھے ہیں۔ چنانچہ اس کی اہمیت کے شوت کے لیے یہ کافی ہے کہ عبادات میں سب سے بڑی عبادت نماز ہواور و بھی طلب دعاء پر مشمل ہے۔ جسے ہر روز کم از کم پانچ مرتبہ بجالانا ضروری ہے۔ اور اذکار نماز میں سب سے اہم سور کی فاتحہ ہے۔ اور وہ سرایا وعا ہے۔ اور قرآن مجید میں آ وم نوٹے ، ایرائیم ، یعقوب ، یوسف ، ایوب ، شعیب ، یونس ، زکریا ، اور وہ سرایا وعا ہے۔ اور قر آن مجید میں اللہ علیہ وآلہ وسلم کی وعاوں کا قذکرہ ہے اور ان کے علاوہ آسیدن سلیمان ، موک تا میسی اور خود نبی اکرم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی وعاوں کا قذکرہ ہے اور ان کے علاوہ آسیدن فرعون بحر ہ مھر الشکر طالوت ، اصحاب کہف اور دیگر اہل ایمان کی وعاوں کا ذکر ہے۔ جس سے یہ حقیقت واضح ہو

جاتی ہے کہ دعا ء انہیاء کی سیرت، اولیاء کا شیوہ اور خاصانِ خدا کا دستورہے ۔علاوہ ازیں بیصرف ملت اسلامیہ ہی کا شعار نہیں ہے بلکہ تمام ملل وا دیان اسے روح نیاز مندی وحسن عبود بیت سیجھتے ہیں ۔اور فکر وعمل کے اختلاف کے باجودائ نظریہ پر یک جہتی ہے متفق ہیں کہ کوئی پکار سننے والا ہے اسے پکارنا چاہیئے اور کوئی دکھ درد کا مداوا کرنے والا ہے اس سے چارہ سازی کی التجاء کرنا چاہیئے ۔ چنا نچہ زبور کے ترانے ، تو رات کے نغمی، انجیل کے زمز ہے، شام و میداور شریمہ بھگوت کی پراتھنا کیں، گرفتھ سپر اور گیتا کی اپاسنا کیں اور ژنداوستا میں زردشت کی گاتھا کیں اور دوسر سے ادبان عالم کے مقدل صحیفوں کی دعا کیں اس کی شاہد ہیں ۔اور اسلام میں تو فریدھ کہ دعا کی اتنی ایمیت ہے کہ اس کے ترک پر جہنم کی وعید تک وار دوہوئی ہے ۔ چنانچہ ارشاوالہی ہے۔:

﴿ أَدْعُولِنِي اَسُتَجِبُ لَكُمُ إِنَّ الَّذِيْنَ يَسُتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَخِرِيْنَ﴾

"مجھ سے دعا مانگو میں قبول کروں گا۔ وہ لوگ جوغرور وتکبر کی وجہ سے میری عبادت سے

مند موز ليتة بيل ون الملك SIBTÄ 4 مند موز ليتة بيل ون الملك المكان الملك المكان المكان

مفسرین نے اس آیت میں عبادت ہے دعاءکومرادلیا ہے کیونکہ دعا عبادت ہی کا ایک شعبہ ہے اور

امام زین العابدین الفی بھی اس کی تائید میں فرماتے ہیں:

﴿فسمیت دعائک عبادة و ترکه استکبار او توعدت علی ترکه دخول جهنم داخرین﴾

''تو نے دعاء کا مام عبادت رکھا ہے اور اس کے ترک کوغرور سے تعبیر کیا ہے اور اس کے ترک پر جہنم میں ذلیل ہوکر داخل ہونے سے ڈرایا ہے۔''

دعاء کے نفسیاتی فوائد

یہ حقیقت ہے کہ انسان جس قدرا ہے نفسیات پر قابور کھنا ہے ای قدرا جماع خیالات پر قادر ہوتا ہے اور یہ دل و دماغ کی یک سوئی اور خیالات کی ہم آ جنگی قوت ارادی کی بنیا دہے ۔اس قوت کی حقیقت کچھ بھی ہو لیکن اس سے انکار نہیں ہو سکتا اور تجربہ شاہد ہے کہ اپنے مقصد میں عموماً وہی لوگ کامیاب ہوتے ہیں جواس طافت کے حامل ہوتے ہیں۔اس کے ہر خلاف ہراگندہ خیال لوگ خیالات کی ادھیڑ بن میں اپنی زندگی ختم کر

دیتے ہیں اور منزل مقصود تک رسائی انہیں نصیب نہیں ہوتی ۔اس قوت ِ ارادی کومضبوط ومتحکم کرنے کے لیے یقین کی ضرورت ہے۔ کیونکہ ارا وہ کی پختگی یقین کی مضبوطی ہے وابستہ ہے اس لیے کہ مشکوک وغیریقینی چیزوں ے ارادہ کا حتمی تعلق نہیں ہوتا ۔ لہذا جب تک یقین کامل نہ ہوگا ارادہ بھی کامل نہیں ہوسکتا۔اورمقصد کے حصول کے لیے جواسباب درکار ہیں ان کے عناصر صرف دو ہیں۔ایک ارادہ اور دوسرے یقین ۔لیکن ہر شخص میں میہ قوت و طافت نہیں ہوتی کہ وہ انہیں براہِ راست حاصل کرلے جائے اس لیے ایک ایسی چیز کی ضرورت ہے جو دل و دماغ کوعزم ویفین کے کیفیات قبول کرنے کے قابل بنا سکے اوروہ دعاہے جوان دونوں کے مجموعے کی منزل تک پہنچانے میں معین ٹابت ہوتی ہے۔وہ اس طرح کہ دعا کی اصل حقیقت مبدأ کا نئات ہے رابطہ پیدا کرنا اوراس کی قوت و طافت کود کیھتے ہوئے کہوہ ہر حاجت کے پورا کرنے اور ہرمشکل کے حل کرنے پر قادر ہے اس سے اپنی حاجنوں اور آرزوؤں کو وابسة کر دیتا ہے اور جوں جوں بیر رابطہ اور حل مشکلات براس کی قدرت کاتصورمضبوط ہوتا ہے شکوک کے دھند لکے حصنے اور یقین کی شعاعیں حمیکنے لگتی ہیں اور خیالات ادھراُ دھر بھٹکنے اور مخلف آستانوں کی طرف مورنے کے بجائے ایک مرکز پرجمہ ہو جاتے ہیں جس کے نتیجہ میں ایک متذبذ ب وغیر مستقل مزاج شخص جو ہر چیز میں شکوک پیدا کر لیتا ہے۔ای طرح تمام ذرائع سے منہ موڑنے اور صرف ایک مرکز امیدے دابستہ ہونے ہے جو ذہن میں یک جہتی وہم آ ہنگی پیدا ہوتی ہے اس سے خیالات کے مجتمع کرنے کی قوتیں اُبھر آتی ہیں جس کا نتیج قوت ارا دی کے استحکام کی صورت میں ظاہر ہوتا ہے۔غرض دعا ءعزم ویقین کا سرچشمہ اور عزم ویقین کامیابی کاسٹ بنیا دہیں۔

دعا کا دوسرا افا دی پہلویہ ہے کہ انسان کو لاز ما اپنی زندگی کے نشیب و فراز میں ایسے لمحات سے دو چار ہونا پڑتا ہے جن میں تمنا کیں اور آرزو کیں یاس کی جٹانوں سے گلرا کر پاش پاش ہوجاتی ہیں اورا خطراب کو تسلی دینے کے تمام سہارے اورامیدوں کے سارے بندھن ایک کرکے ٹوٹ جاتے ہیں۔ اس نا مرا دی و پر بیٹانی کے عالم میں انسان فطر ہ کوئی سہارا ڈھونڈ تا ہے جو اس کے فاق و اضطراب کے لیے تسلی و تسکین کا سامان فراہم کرے۔ اور اگر وہ یہ فیصلہ کرلے کہ اب کوئی چیز اسے بچانہیں سکتی تو پھر اس کے باس کون ساسہا رارہ جاتا ہے جو اس کا ہاتھ تھام کر اسے زندگی کی شاہراہ پر کھڑا کرے اور بیاس کے گھٹاٹوپ اندھروں میں اسے امید کا چرائی دکھائے۔ اور اگر اس لاچاری و درماندگی کی حالت میں یہ یعین ہوکہ ایک بالا دست طافت اس انجھن و پر بیٹائی

ے نکال لے جا سکتی ہے قواس کی طرف رجوع ہونے ہے مضبوط تر سہارا کون ہوسکتا ہے۔ چنانچہ یہ یقین ہی وہ چیز ہے جو پر یشانیوں کے با دلوں کو چھانٹ دیتا ہے اور دنیا کی پیم ناکامیوں کے بعد بھی مایی نہیں ہونے دیتا اور وہ ناکامیوں اور نامرادیوں کے بجوم میں انجام کار کی کامیابی کا یقین لئے ہوئے اللہ کی چارہ سازیوں کا امیدوار رہتا ہے۔ چنانچہ جب صبر انسانی کی بساط الٹ جاتی ہے اور متاع سکون لٹ چکتا ہے اور کامیا بی و کامرانی کے تمام ذرائع مسدوداور وسائل ناپید ہوجاتے ہیں تو اس وقت کرب واضطراب کی حالت میں اللہ تعالی کو پکارنا، عجز والحاح کا ہاتھ اٹھانا اور دردوغم کی ردواداور رخی والم کی واستان اسے سنانا ول کے لیے سر مایئے تسکیس فابت ہوتا ہے، اور ہاس وقت طریع سے انسان اپنی پاشان و پریشان قوتوں کو کیجا کر کے بے مزم وارا دہ کے ساتھ حوادث سے ظرانے کے لیے آ مادہ ہوجاتا ہے اور ہمت شکنی کے ہولناک غار میں گرنے سے ایے کو بچالے جاتا ہے۔

دعا کا تیسرا فائدہ میہ ہے کہ اس سے عبد و معبود کا رشتہ استوارا ورعبودیت والوہیت کا رابطہ مضبوط و مستحکم ہوتا ہے۔ کیونکہ جب سار سے سار سے سار کے ہار ہوجا ہے ہیں اور ہم طرف میں کے بیتے ہی تجھے بجھے نظر آتے ہیں اور ذات معبود کے علاوہ اور کوئی مرکز امید دکھائی تہیں دیتا تو احتیاج و بے مائلی کا احساس اور بجز و بے کسی کا جذبہ دل و دماغ کواس کے جلال و جروت سے متاثر کر کے اس کے دروازہ پر جھکا دیتا ہے اور انسان کے سوئے ہوئے و جدان کو جھٹے چوڑ کر بیدار کر دیتا ہے جس کے نتیجہ میں وہ تمام علائق و اسباب سے بے نیاز ہوکرا سے بی پکارے گا اور اس کے اور اس طلب و دعا کے ذریعہ اس سے لولگائے رہے گا اور میر براوا اور لگاؤ اسے تقر ب معبود کے اعلیٰ مدارج پر پہنچا دے گا۔

دعاء کاچوتھا فائدہ ہیہ ہے کہ اس سے خدا کی قوت وطاقت پراعتا دیلی اضافہ ہوتا ہے اور خوداپنی قوت و توانائی پر سے بھروساختم ہوجاتا ہے۔ چنانچہ جب انسان دعاء کے نتیجہ میں کسی مصیبت سے چھٹکارا یا کسی مقصد میں کامیابی حاصل کرتا ہے تو اسے یقین ہوجاتا ہے کہ بیسب پھے قدرت کی کارفر مائی وکارسازی کا نتیجہ ہے جس میں خوداس کی قوت و طاقت اور کارکردگی کا ذرا فطل نہیں ہے۔ اس کے نتیجہ میں وہ ہر موقع پر قدرت کی قوت و طاقت اور کارکردگی کا ذرا فطل نہیں ہے۔ اس کے نتیجہ میں وہ ہر موقع ہوئے کسی مرحلہ پر اپنی طاقت اور کارسازی پر بھروسا کرنے کا خوگر ہو جاتا ہے اوراپنی کمزوری و لا چاری کود کیستے ہوئے کسی مرحلہ پر اپنی قوت و طاقت پر اعتماد نہیں کرتا۔ اور اصل جو ہر عبودیت کہی ہے کہ انسان کا کلیئہ اللہ تعالیٰ کی بالادتی پر یقین

رکھے اوراپنی طافت وتوامائی برے اعتماد ختم کر دے اور میددعاء کا ایک لازمی اثرے۔

دعاء کا پانچواں فائدہ میہ ہے کہ اس سے کبروانا نبیت کی طوفان انگیزیاں اور تمر دوسرکشی کی طغیانیاں دب
کررہ جاتی ہیں۔ کیونکہ طلب وسوال کے موقع پرایسے حرکات وائمال کا مظاہرہ کیا جاتا ہے جوسراسر عجز و نیاز اور
تدلل وانکسار کے حامل ہوتے ہیں جیسے ہاتھوں کو او پراٹھانا، گز گڑا کر مانگنا، اپنے عجز وقصور کا اعتراف اور بے
بیناعتی ولا چاری کا اظہار کرنا۔ بیتمام چیزیں متمردانہ خیالات و جذبات کوفنا کر دیتی ہیں اور نتیجہ میں تمام اعمال و
افکار عجز و نیاز کے سانچہ میں ڈھل جاتے ہیں۔

ایک شبه اوراس کاحل

دعاء کے سلسلہ میں پیرشیدعام طور سے وارد کیا جاتا ہے کہ جب خداوند عالم نے قرآن مجید میں قبولیت دعاء کا وعدہ کیا ہے تو پھر ہر دعا کو قبول ہونا چاہیئے حالانکہ دیکھا بیرجاتا ہے کہ بہت سے دعاء مانگئے والے مدتوں طلب والحاح کے باوجودا پنے مقصد میں کامیا ہے تہیں ہوتے اوران کی تمام دعا کمیں صدا بصحرا اثابت ہوتی ہیں۔ کیا بیراللہ تعالیٰ کے ارشاد (اللہ پُر خیاف اللّٰہ وَ عُلَافٌ) (خدال پنے حد مے کے خلاف نہیں کرنا) کے منافی نہیں

نہ ہوگی وہاں ردہوجائے گی اور اللہ سجانۂ پر یہ پابندی عائد نہیں کی جاستی کہ وہ ہر دعا ءکوضر ورقبول کرے۔اگر ایسا

ہوتو پھر جہاں دو دعا کمیں باہم متصادم ہوں گی اس طرح کہ ایک شخص ایک چیز کا 'نہونا'' چاہے، اور دوسرااس کا

''نہ ہونا'' چاہے تو وہاں ان دو متضاد چیز وں کو کیونکر جمع کیا جا سکتا ہے۔ جب کہ بیام واضح ہے کہ ہست اور

نیست کو جمع نہیں کیا جا سکتا۔ اور اگر یہ کہا جائے کہ خدا وند عالم تو ہر چیز پر قادر ہے اور کوئی چیز اس کے احاطۂ

قدرت سے باہر نہیں ہے تو کیا وہ ایسانہیں کر سکتا کہ ہست و نیست کو جمع کر دی تو یہ صحیح نہیں ہے۔ اس لیے کہ

قدرت کا تعلق محرف انہی چیز وں ہے ہوتا ہے جن کا وقوع ممکن ہوا ور جس چیز کا وقوع عقلا محال ہواس سے

قدرت کا تعلق بھی نہیں ہوتا۔ اہذا الی چیز کا اے پابند نہیں قرار دیا جاسکتا جس کی عقل میں کوئی گئجائش نہ ہو۔

عدم قبولیت دعاکے وجوہ واسباب

جب دعاء کی مقبولیت مصلحت الہی ہے وابسۃ ہے، تو پھر جہاں مصلحت قبولیت کی مقتضی ہوگی وہاں دعا قبول ہوگی اور جہاں مصلحت الہی مختلف تبول ہوگی اور جہاں مصلحت الہی مختلف المن مختلف کی مقتضی ہوگی وہاں دعاءرد کر دی جائے گی۔ یہ مصلحت الہی مختلف اعتبارات سے قبولیت میں انع ہوتی ہے کہ وعاما کی وجہ اعتبارات سے قبولیت میں انع ہوتی ہوگی ہوئی اس لیے کہ وعاما کی والا ہے نفع واقع میں وہ چیز اس کے لیے مصرو سے جس میں بظاہر کوئی فائد دیا خوبی دیکھتا ہے اسے اللہ سے طلب کرتا ہے لیکن واقع میں وہ چیز اس کے لیے مصرو نقصان دہ ثابت ہوتی ہے۔ چنانچے قدرت کا ارشا دے:

﴿ وَ يَهُ عُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِ دُعَآءَ أَ بِالْخَيْرِ وَ كَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ﴾
"بهااوقات انبان برائی کی دعاءاس طرح مانگتا ہے جس طرح اپنے بھلائی کی دعا کرنا
ہے(حالانکہ وہ پینیں جانتا کہ پیرائی ہے)اورانبان توبر ابی جلد ہازہے۔"

ایی صورت میں اس کے سوال کورد کرنے ہی میں اس کی بھلائی مضمر ہوگی اور اس سے وعدہ الہی پر آ پی نہیں آ سکتی۔ اس لیے کہ اس نے سائل کی صلحت کونظر انداز کر کے قبولیت دعاء کاوعدہ نہیں کیا۔ چنانچہ اگر کوئی شخص بیہ کچے کہ میں کسی سائل کوما کام نہیں پھیروں گا اور اس کے سامنے ایک ایسا سائل آ جا تا ہے جوانی کم عقلی اور مافنجی کی دوجہ سے ایسی چیز کا سوال کرتا ہے جوواقع میں اس کے لیے مہلک و تباہ کن ہوتی ہے قاگروہ شخص اس کے سوال کو پورا نہ کرے اور اس کی خواہش کو تھکرا دے، تو یہ وعدہ کی خلاف ورزی متصور نہ ہوگی کیونکہ وعدہ کرتے وقت اس کے پیش نظر سائل کی بہودی تھی نہ کہ اس کی ہلاکت و تباہی۔ بلکہ ایسی صورت میں سائل کے کہ تا کہ کہ ایسی صورت میں سائل کے

سوال کو پورا کرنا عقلاء کے زدیک ایک قابل فدمت فعل ہوگا اوراس سے بہی کہاجائے گا کہتم نے کیوں اس کے ایسے سوال کو پورا کیا جواس کے لیے مہلک و مضر تھا اور رہے کوئی نہ کہے گا کہتم نے کیوں اپنے وعدہ کے فلاف کیا۔ اور بہجی مصلحت اس لیے قبولیت میں مانع ہوتی ہے کہا گر دعاء ما نگنے والے کی دعاء کو قبول کرلیا جائے تو وہ اس کے مفاد کے لیے تو ضر ررساں نہیں مگر مفاد عمومی کو اس سے نقصان پہنچتا ہے۔ تو اس صورت میں مفاد نوعی کو مفاد شخصی مفاد کے لیے تو ضر ررساں نہیں مگر مفاد عمومی کو اس سے نقصان پہنچتا ہے۔ تو اس صورت میں مفاد نوعی کو مفاد شخصی مفاد کے لیے تو سے جبوب شخص مفاد کے ایمال حرام ، کر اور کر دیا جائے گا اور بہجی افعال نا شائستہ جسے جبوب شلم ، فصب حقوق ، اکل حرام ، حرک واجبات وغیرہ قبولیت میں سدراہ ہو جاتے ہیں۔ کیونکہ میدییز یں خلوص نہیت، حسن کر دار اور صدق عمل کے منا فی ہیں اور قبولیت و استجابت دعاء کے لیے اعمال کی با کیزگی ازبس ضرور دی ہے چنا نچہ امیر المؤمنین التھ کا کا رشاد ہے:

﴿الداعي بلا عمل كالرامي بلا وتر﴾

''جومل نہیں کرنا اور دعاء مانگتا ہے وہ ایسا ہے جیسے بغیر چلا کے تیر چلانے والا۔''

بلاشبیمل کے بغیر دعاء کرا ایما ہی ہے بیسے کوئی ہرض کے لیے دواتو انتعالی کرے گراس کے ساتھ ایسی چیزیں بھی کھاتا بیتا رہے جواس دوا کے اثر کو زائل کر دیں یا ایک طرف زمین میں کھیتی ہوئے او ردوسری طرف اس میں مویشی چھوڑ دے جوا ہے روندیں اور پامال کریں اور بھی حکست و مصلحت دوا کے طبعی اثرات کی طرح دعاء بھی طرح دعاء کے بتائج کوئم کر دیتی ہا اور جس طرح نزع کے وقت عموماً دوا کارگر نہیں ہوتی ای طرح دعاء بھی ہوتی ہے۔ اور بھی مصلحت پھھ عرصہ کے لیے قبولیت کوتا خیر میں ڈال دیتی ہے تا کہ جب مناسب موقع و کل آئے اس کی حاجت کو پوراکیا جائے۔ گرانسان اپنی طبیعت کے لحاظ ہے چونکہ جلد بازواقع ہوا ہے، وہ چاہتا ہے کہ اس کی عرفی ہوتی ہو جائے ۔ مرانسان اپنی طبیعت کے لحاظ ہے چونکہ جلد بازواقع ہوا ہے، وہ چاہتا ہے کہ اس کی عرفی ہوتا ہے۔ حالانکہ جب بعد میں قبولیت کے موقع و کل کو دیکھتا ہے، تو بیاعتر اف کرنے پر مجبور ہو جاتا ہے کہ اگر اس موقع پر اس کی جب بعد میں قبولیت ہے کہ اگر اس موقع پر اس کی دوبہ یہ بھی ہوتی ہے کہ اللہ تعالی کو دعاء ماگئی والے گلگن بھا جاتی ہے اور اللہ تعالی ہے اس کی وابستگی کی وابستگی کی دوبہ یہ بھی ہوتی ہے کہ اللہ تعالی ہے اس کے صبر اور اللہ تعالی ہے اس کی وابستگی کی وابستگی کی درخ موڑ سے کہ وہ قبولیت دعاہ وابس ہو کر اللہ تعالی ہے اپنا رشتہ تو نہیں تو ڈرتا ہو راس ہو رہ موثر سے کہ کہ دوبہ مور سے مالین ہو کرانہ تعالی ہے اپنا رشتہ تو نہیں تو ڈرتا ہو راس ہے رہ موثر موثر کی دوبہ کو موثر کے کہ دوبہ کو موثر کے دوبہ کر موثر کے دوبہ کو کہ دوبہ کو کہ کو کہ دوبہ کو کہ دوبہ کو کہ کو کہ دوبہ کو کہ کہ کہ کہ کہ کہ کو کو کو کو کہ کو کو کو کو کو کو کہ کر کے کہ کو کو کو کو کو کے کہ کو کہ کو کہ کو کر کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کو کو کو کر کو کر کو کہ کو کر کو کو کہ کو کر کو کر کو کر کر کو کر کو کر کو کر کو کر کو کر

کر غیر کے در پر جبہ سائی تو نہیں کرتا ۔ لہذا قبولیت میں اگر تا خیر ہوتو اس کی رحمت و را فقت ہے مایوں نہ ہوتا چ چاہیئے ۔ اس لیے کہ کریم کے در پر پکار نے والا بھی نا کام نہیں رہتا ۔ ایک ندایک دن اس کی بن جائے گی اور مند مانگی مراوا ہے بلے گی ۔ لہذا قبولیت وعدم قبولیت کواللہ پر چھوڑ کر اس ہے اپنی حاجت مانگیا رہا اور اپنا دکھور د اسے سنا تا رہ اور عبودیت و نیاز مندی کا تقاضا بھی بہی ہے کہ ہم اسے پکاریں ، اس کے در پرصدا دیں ، اس کے آ گے جھولی پھیلا کیں ۔ قطع نظر اس کے کہ ہماری جھولی میں کچھ پڑتا ہے یا نہیں ، ہماری پکار کی شنوائی ہوتی ہے یا نہیں ۔ آگر نہیں ہوتی تو ایسا نہیں ہے کہ اس کے کہ ہماری کوتا ہی و بیانیں ۔ آگر نہیں ہوتی تو ایسا نہیں ہے کہ اس کے کرم و جود کا تقاضا بدل گیا ہے ، بلکہ بیم وی ہماری کوتا ہی و نگ وامانی کا نتیجہ ہے۔

اگر بزلف دراز نو دست ما نرسد گناه بخت پریثان و دست کوند ماست است مید برد

بعض حکماء و معلمت میں دعاء کی افادیت کے منکر اوراہ بے ضرورت سجھتے ہیں، اورا ثبات مدعا کے بید دلیل نما شہبات پیش کر ہے ہیں جن کا تجزید کیا جا اے تو ان کا کوئی ورن باتی نہیں رہتا۔ چنا نچان کی پہلی اور سب ہے بڑی دلیل نما شہبات پیش کر ہے ہیں جن کا تجزید کیا جا اے تو ان کا کوئی ورن باتی نہیں رہتا۔ چنا نچان کی پہلی اور سب ہے بڑی دلیل میرے کہ ہر چیز کے وقوع وعدم وقوع پر اس کاعلم جادی ہواس کے لیے دعا ما نگنا ایک وحوا دث کو قبل وقوع جا نتا ہے ۔ اور جس چیز کے وقوع وعدم وقوع پر اس کاعلم حادی ہواس کے لیے دعا ما نگنا ایک بین بیتی کو جود ہوں ہے۔ کیونکہ دعا علم الہی پر اثر انداز ہوکر ہونے والی چیز کوروک نہیں سکتی اور نہ ہونے والی چیز کو وجود میں نہیں لاسکتی ۔ او راگر ایسا ہوتو قد رہ کے لیے جہالت لازم آئے گی ۔ کیونکہ اس کے علم میں یا تو بیتھا کہ یہ چیز واقع ہوگی مگر دعاء اس کے واقع نہوگی مگر دعاء اس کے مانع ہوگی مگر دعاء اس کے این مانع ہوگی ۔ لہذا یا تو دعا کی افا دیت سے انکار کیجئے یا اللہ کے لیے جہالت کو تجویز کیجئے ۔

یہ شبہ ایک غلط نظریہ پر قائم کیا گیا ہے اور وہ یہ کہ اس کے علم کومعلوم کا سبب قر ارد سے لیا گیا ہے حالانکہ معلوم کا قوع اس لحاظ ہے اس کے علم سے وابستہ نہیں ہے کہ وہ اس کا سبب ہو کیونکہ علم صرف معلوم کے ظہور و انکشاف کا مام ہے اور اسے معلوم کے وقوع وعدم وقوع ہے کوئی واسط نہیں ہوتا ۔ چنانچہ ہمیں اگر بیعلم ہو کہ فلال انکشاف کا مام ہے اور فلال کنویں کا بانی میٹھا ہے اور فلال کنویں کا بانی شور، تو ہما راعلم زرخیز کوزرخیز اور بیٹی زرخیز اور بیٹی کو بھی اور سال کنویں کا بانی شور، تو ہما راعلم زرخیز کوزرخیز اور بیٹی خمر کو بھی اور سور کو میٹھا اور شور کوشور نہیں بناتا ۔ ای طرح ایک نجم اگر میخبر ویتا ہے کہ کل بارش ہوگی اور اس کے علم

کے مطابق ہارش ہوبھی جائے تو اس علم کوہارش کے ہونے یا نہ ہونے سے کوئی تعلق نہ ہوگا۔ بیہ ہارش تو اس وقت بھی ہوتی جب اسے ہارش کے متعلق کچھ بھی علم نہ ہوتا ۔اوراگر اس کاعلم ہی سبب ہوتا تو پھرعدم علم کی صورت میں بارش بھی نہ ہونا چاہئے تھی حالانکہ اس کے نہ جاننے کی صورت میں بھی بارش ہوتی ۔لہذاعلم کومعلو مات کے وقوع کا سبب نہیں قرار دیا جا سکتا کیونکہ علم معلوم کے تابع کی حیثیت رکھتا ہےاور جو چیز تابع کی حیثیت رکھتی ہو وہ سبب نہیں قرار باسکتی۔ کیونکہ سبب مسبب ہے مقدم ہوتا ہے ۔خداوند عالم کاعلم اگر چہو ہمعلومات کے تابع بایں معنی نہیں ہے کہ معلومات کے ذریعیہ ہے حاصل ہو ۔ پھر بھی چونکہ علم نا م ای کا ہے جومطابق واقعہ ہولہذا واقعہ یرا یک طرح کاتر تب اسے ضرورہے ۔لہٰذاو ہ بھی واقعہ کا سبب نہیں ہوسکتا۔ای ہے اس استدلال کی ردہوتی ہے جو جبر یر کیا جاتا ہے کہ جو پچھ انسان کے افعال ہوں وہ اللہ کے علم میں ازل سے ہیں۔لہذا اب ان افعال کا ہونا ضروری ہےاورانیان کی حیثیت ایک مجبور محض قرار ہائے گی ۔ کہ جو نہا پنے ارادہ وافتیار ہے کچھ کرسکتا ہےاور نہ جس رائے پرو ہ چلا گیا ہے اس ہے انحراف کرسکتا ہے۔اس صورت میں بعثت انبیاء جزاء دس اوعد ہو وعید سب چیزیں بے معنی ہو جا کیں گی اور مہروں کے تمام گناہوں کی ذمہ داری اگر ان صورے میں انہیں گناہ کہا جا سکے تو ای کے سر ہوگی اس لیے کہاس کے علم کے مطابق ان گناہوں کا وقوع ضروری تھا۔ چنانچہ اسی نظریئے کی ترجمانی كرتے ہوئے عمر خيام كہتاہ:

من مے خورم و ہر کہ چوں من اہل ہود مے خوردن من نبزد او سہل ہود
مغرورت من حق زائل مے دائست گرمے نہ خورم علم خدا جہل ہود
اس فتم کانظر بیر کھنے دالوں کو بید دیکھناچا پیئے کہ دہ بھوک ہیں کھانے کی اور مرض ہیں علائ کی ضرورت محسوں کرتے ہیں کہ اگر نہ کھا کی آتو بھو کے رہیں اور علاج نہ کریں تو شفا حاصل نہ ہو حالانکہ اس نظر بید کی رو سے انہیں نہ کھانے کی ضرورت ہے نہ دوا کی حاجت ۔ اس لیے کہ اللہ کے علم ہیں اگر ان کا بھوکا یا بیار ہونا ہے تو وہ بہر حال بھو کے اور بیار ہی ہوں گے چاہے کھا کی یا نہ کریں ۔ اور تنکدرست ہونا ہوتا ہوتا و دہ بہر حال سیر ہی ہوں گے چاہے کھا کی یا نہ کھا کی سے اور جود بھوک ہیں ۔ اور تنکدرست ہونا ہے تو بہر حال تنکدرست ہی ہوں گے چاہے علاج کریں یا نہ کریں ۔ لیکن اس کے باوجود بھوک ہیں وہ کھاتے ہی ہیں اور مرض ہیں دوا بھی کرتے ہیں ۔ کیونکہ وہ یہ بچھتے ہیں کہ بھوک کھانے سے اور بیاری دوا سے زائل ہوتی ہے اور اللہ کوان کی سیری و تنکدرتی کاعلم ہے تو اس لیے کہ وہ کھا کیں گے اور دوا

کریں گے اور خود بیم ان کی سیری و شفایا بی کا سبب نہیں ہے۔ تو جس طرح اس نے سیری کا سبب کھانے کو اور شفا کا سبب دوا کو قرار دیا ہے ای طرح ہوسکتا ہے کہ اس نے حصول مقصد کو دعا ہے وابستہ کر دیا ہواس طرح کہ اگر اس سے دعاء کی جائے تو حاجت ہر آئے گی اور دعا نہ کی جائے تو حاجت پوری نہ ہوگی۔ لہذا علم بالسبب کو سبب سمجھ کراس شبہ کے لیے ذہن میں گنجائش بیدا نہ کرنا چاہئے۔

دوسری دلیل میہ پیش کی جاتی ہے کہ اگر مقد رات الہمیہ میں کسی امر کا واقع ہونا قرار پاچکا ہے تو وہ واقع ہوکر رہے گا۔اور اگر اس کے خلاف طے پاچکا ہے تو وہ کسی طرح واقع نہیں ہوسکتا۔لہذا دعاءاگر نوشعۂ تقدیر کے مطابق ہے تو دعاء کا فائدہ و نتیجہ ہی کیا۔اور اگر نوشعۂ تقدیر اس کے خلاف ہے تو دعاء سے مقد رات کو بدلنے کی کوشش کرناسعی لا حاصل اور تقدیر کے خلاف جا ہنا دریا کے رخ کے خلاف میرنا ہے۔

یہ دلیل پہلی ہی دلیل کی ایک بدلی ہوئی صورت ہے۔فرق بیہ کہ پہلی دلیل قضائے علمی پرمین ہے۔

یعنی یہ کہ اس کاعلم ہمہ گیراورروز ازل سے تمام چیز وں پر محیط ہے اور دوسری قضائے بینی پرمین ہے یعنی یہ کمام
چیزیں اس کے حکم ہے لوج سادی میں خور و میندرہ ہیں۔احادیث میں اس قضائی ووقتمیں کی گئی ہیں۔ایک
اجل محتوم جولوج محفوظ میں ثبت اور حمی و لازمی اور ما قابل ترمیم ہوتی ہے۔اس لوح کوام الکتاب اور کتاب مبین
ہے بھی تعبیر کیا جاتا ہے، اور ایک اجل موقوف جولوح محووا ثبات میں درج اور قابل ترمیم و تنہیخ ہوتی ہے جیسا کہ
ارشاوالی ہے:

﴿ يَمُحُوا اللّٰهُ مَا يَشَاءُ وَ يُغْبِتُ وَ عِنْكَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ﴾ "وه جس چيز كوچا بها بمحوكر ديما باورجس چيز كوچا بها ب ثبت كر ديما با ادراس كے باس لوح محفوظ بـ "

چنانچ خداوند عالم جس طرح احوال وظروف کے بدلنے سے یا احکام کی معینہ مدت کے ختم ہونے سے
احکام میں ترمیم کر دیتا ہے جسے ننخ سے تعبیر کیا جاتا ہے۔ ای طرح حالات ومنتقبیات کے بدلنے سے تکوینیات
میں بھی ردو بدل کرتا رہتا ہے اور جہال محو کرنے میں مصلحت ہوتی ہے وہال محو کر دیتا ہے اور جہال ثبت کرنے
میں مصلحت ہوتی ہے وہاں ثبت کر دیتا ہے اور دعا کا تعلق ای لوح محو وا ثبات سے ہے جس میں تقدیر کے سانچ
بنتے مجر تے رہتے ہیں اور جومختم اور حتی صورت ہوتی ہے وہ لوح محفوظ میں درج ہوتی ہے۔ اب اگر لوح محو و

ا ثبات میں محرومی و مامرادی کئی کے بائے مام ہو پھی ہے تو قدرت نے اس کے بدلنے کی بھی گنجائش رکھی ہے اس طرح کہانیان، وعا،صدقہ، بروالدین یا کئی اور کمل خیر کے ذریعہ اس محرومی کو کامرانی سے بدل و سے سکتا ہے۔ چنا نچہ جب وہ ان مذکورہ اعمال میں سے کوئی عمل بجا لاتا ہے تو قدرت اس کی حرماں نصیبی کو محورکے کامیا بی و کامرانی شبت کر دیتی ہے اور بیتمام تغیر و تبدل کی صورتیں رو زازل ہی سے اس کے سامنے آئینہ ہوتی ہیں۔ ایسا نہیں ہے کہا ہے اور بیتمام تغیر و تبدل کی صورتیں ہوا ہوا وراب اس میں تبدیلی و ترمیم کی ضرورت محسوں ہوئی ہو۔ چنا نچے امام جعفر صادق الطابی کا ارشاد ہے:

﴿ ما بد الله فى شى الاكان فى علمه قبل ان يبدو له ﴾ "خداوند عالم كوجس چيز ميں بداواقع ہوتا ہے وہ اس كے واقع ہونے سے قبل اس سے آگاہ ہوتا ہے۔"

اور جب انسان کے کسی اختیاری عمل سے اور محوو اثبات کا نوشتہ بدل جاتا ہے تو پھر جو ثبت ہوتا ہے وہی اس کے حالات کے اعتبار سے اس کے لیے متاسب ہوتا ہے اس چاہے انسان کے ان تقدیر کو بنائے اور چاہے شومی و بد بختی کو وقوت دے۔ چنانچہ وہ صدقہ ، صلهٔ رکی ، ہر والدین سے آنے والی مصیبت کونال سکتا ہے۔ عمر میں اضافہ کرلے جاسکتا ہے ، فقر واحتیاج کو دور کر دے سکتا ہے۔ ای طرح دعا ہے بھی قضا کا دھارا موڑ سکتا ہے۔ اور اس میں کوئی استبعاد نہیں کہ دعا ہے قضا کا رخ لیٹ جائے ۔ اس لیے کہ جس نے قضا کو بافذ کیا ہے ای نے دعاء میں بیاثرات و دیعت کئے ہیں کہ وہ قضا کے نقوش کو بدل دے اور تقدیر کے بنے سانچے تیار کر دے۔ اور قد رہ جب چاہے مقدرات کو بدل دے متن ہے ور نہ کوئی چیز اس کے اور قد رہ جب چاہے مقدرات کو بدل دے متن ہے اور دنہ کوئی چیز اس کے ادر وہ میں جائل ہو سکتی ہے اور دنہ کوئی چیز اس کے ادا وہ میں جائل ہو سکتی ہے اور دنہ کوئی چیز اس کے ادا وہ میں جائل ہو سکتی ہے ور دنہ کوئی چیز اس کے ادا وہ میں جائل ہو سکتی ہے۔ چنانچے امام جعفر صادق النے بھی ہے دوایت ہے :

﴿ روى ميسر ابن عبد العزيز عن ابى عبد الله قال قال لى يا ميسر ادع ولا تقل ان الامر قد فرغ منه ان عند الله منزلة لا تنال الا بمسئلته ولو ان عبداً سدفاه ولم يسئل لم يعط شيئًا فاسئل تعط يا ميسر انه ليس من باب يقرع الآيوشك ان يفتح لصاحبه ﴾

میسر ابن عبد العزیز کہتے ہیں کہ مجھ ہے امام جعفر صادق الطبی نے فرمایا کہا ہے میسر دعاء

مانگا کرواور میدند کہا کرو کہ جو ہونا ہے وہ پہلے سے طے ہو چکا ہے۔اللہ کے یہاں ایسے درجے ہیں جنہیں سوال ہی ہے حاصل کر سکتے ہو۔ اگر کوئی بندہ اپنی زبان بند رکھے اور سوال نه کر ہے اسے دیا بھی نہیں جاتا ۔لہذاتم ما نگوتا کہ تہمیں دیا جائے ۔ دیکھوکوئی درداز ہ ابیانہیں ہے کہاہے کھنگھٹایا جائے اوروہ دستک دینے والے کے لیے کھول نہ دیا جائے۔" اب اگر کوئی شخص تقدیر پر قناعت کر کے اس کے دروا زے کو نہ کھٹکھٹائے اور اس کے سامنے ہاتھ پھیلانے سے دریغ کرے،تو وہ خودا بی نامرادی وحر ماں نصیبی کا سامان کر رہاہے۔ورنہاس کا فیضان کہیں رکتا نہیں اور نہاس کا درفیض بھی بند ہوتا ہے ۔اور پیمجھ لیما کہ جوقضا وقد رمیں لکھا جاچکا ہے وییا ہوکر رہے گا اوراس میں ردو بدل کی گنجائش نہیں ہے، تغطل و مایوی کو دیوت دینا ہے۔جس کے نتیجہ میں انسان اللہ تعالیٰ ہے اپنا رشتہ توڑ لے گا اوراس سے التجا کا سلسلہ قطع کر لے گا۔اوراگر بیراس کے دل و دماغ میں راسخ ہوجائے کہ اللہ کے آ گےطلب والحاح کا ہاتھا ٹھا کرشقاوت و بدبختی کوخوشحالی وخوش نصیبی ہے تبدیل کیا جا سکتا ہے تو اس کی مایوی کو امید ہے اور جمود وسکون کو حرکت و عمل ہے بداا جا سکتا ہے۔ اور تقدیر پر تکریر کے بیٹھ جانے کا بتیجے تو یہ ہوگا کہ جو جس حدیمیں ہے اس ہے آ گے بڑھنے کی سعی و کوشش ترک کر دے۔اگر کوئی مختاج ہے تو فقر واحتیاج کو دور کرنے کی فکرہے بے نیاز ہوجائے۔کوئی مریض ہے تو صحت کے لیے علاج ومعالجہ کی ضرور**ت مح**سوں نہ کرے اور کوئی رنج ومصیبت میں گھرا ہوا ہے تو اس ہے چھٹکارا حاصل کرنے کی تدبیر نہ کرےاوراس کسل واماند گی کے جونتائج سامنے آئیں گےوہ وہی ہوں گے جو پورے معاشرے کے مفلوج وا زکاررفتہ ہونے کے ہوسکتے ہیں۔ تیسری دلیل بیہے کہ کہ دعاء آئمین تنلیم ورضا کے منافی ہے کیونکہ دعااللہ کی تجویز کردہ چیز کے مقابلہ میں اپنی خواہش کو پیش کریا اوراہے منوانا ہے۔ حالا تکہ بندگی و رضا کا تقاضا یہ ہے کہا پنی خواہشوں کے مقابلہ میں منثائے الٰہی ہر خوش رہا جائے اور ہر آ رزو وطلب کومرضی مولا کے نابع قرا ردےلیا جائے اور کسی مصیبت ہر بپیثانی برشکن اور دل میں میل نہ آئے کیونکہ جومصیبت بھی وار دہوتی ہے وہ قضا وقد رکے نالع ہوتی ہے اور قضائے الہی پر رضامندی ضروری ہے۔ چنانچہ حدیث قدی میں وار دہوا ہے:

﴿من لـم يـرض بقضائي ولم يصبر على بلائي ولم يشكر لنعمائي فليخرج من ارضي و سمائي و ليطلب ربا سوائي﴾ " جو خص میری قضا پر راضی نه ہواور میری آ زمائش پر صبر نه کرے اور میری نعتوں پر شکر ادا نه کرے اور میری نعتوں پر شکر ادا نه کرے اے میری زمین اور میرے آسان سے باہر نکل جانا چاہیئے اور میرے علاوہ کوئی اور بروردگار ڈھونڈ لیما چاہیئے ۔"

اس شبه کا جواب میہ ہے کہ اگر دعا شیوہ کشلیم و آئین رضا کے خلاف ہوتی تو انبیاء وائمہ جو رضا کے مرمبهٔ اعلیٰ پر فائز بتھے دعا کواپنی زندگی کا جز و نہ بناتے اور نہاللہ سجانۂ دعا کا تھم دیتا ، حالانکہ اس نے نہصرف دعا کی ہدایت کی بلکہاس کے ترک کوغروروانا نبیت ہے تعبیر کیا ہے ۔ تو جوچیز تھم الہی کی بنا پر بجالائی جائے و ہاس کی رضا کے خلاف کیبے متصور ہوسکتی ہےاور درصور تیکہ اس نے صدقہ وخیرات اور طلب و دعاوغیر ہ کومقصد کی کامیا بی کا سبب و واسطے قرار دے دیا ہوجس طرح اس نے دنیا میں اپنی قضا کے ظہور کواسباب سے وابستہ کیا ہے تو رضائے الہی ہے منافات کا سوال ہی پیدانہیں ہوتا۔ کیونکہ اس صورت میں جس مقصد کے لیے دعا مانگی جا رہی ہے وہ وہی فیصلہ کشنا وقد رہے جس کو دعا پر موقوف رکھا ہے۔اور اگر قضا وقد ر ہرِ رضامندی کا مظاہر ہ کرنا ہی ے، تو پھر بچھو کاٹ رہا ہوتو اے الگ عربیجے سانے الل ام بجھے ۔ سانے اللہ اوتو اسے اللہ عالی مانے کے بھوک ہوتو کھانا نہ کھائے کیونہ بی تمام چیزیں بھی تو قضا ءوقد رکے تابع ہیں۔اگر بیقضا وقد رکے تابع ہیں تو پھر بچھو کو چھڑا ما، سانپ سے بچنا، مرض کا علاج کرنا او ربھوک بیاس کے وقت کھانا بیبا قضا وقد ر کے حدو د سے باہر کیسے ہوسکتا ہے۔ چنانچہ وار دہوا ہے کہامیر المؤمنین الظیلاایک دیوا رکی طرف گز رے جوگرا چاہتی تھی ۔ تو آپ نے خطرہ کے پیش نظر راستہ بدل دیا جس برایک مخص نے کہا: ﴿ اتفو من قضاء اللَّه ﴾ " کیا آپ الله کی قضا ے بھا گنا جائے ہیں۔ 'فرمایا: ﴿افسر من قضائه الى قدره ﴾"مين قضاء سے بھاگ كرقدر كروائن مين پناہ لے رہاہوں ۔''مقصد بیہے کہا گراللہ نے میری زندگی کا فیصلہ کیا ہے تو اس کاظہوراس کے سبب ہے وابستہ ہے اس طرح کہ میں گرتی ہوئی دیوارہے نچ کرچلوں ۔بہرعال جب قضائے الٰہی کاظہوراسباب ہے وابستہ ہے اور بیاسباب ای کے بیدا کروہ ہیں اور ای نے دعاء کومقصد برآ ری کا سبب قر اردیا ہے تو بیاس کی رضاہے متصادم نہیں ہوسکتی جبکہ دعاءو رضا دونوں کاسر چشمہ ایک ہے۔

چوتھی دلیل میہ ہے کہ دنیا کے تمام حوا دث و و قائع کی انتہاا یک ذات از لی پر ہوتی ہے اوراس کی حکمت و مصلحت از لی جس چیز کے وقوع کی مقتضی ہوگی وہ واقع ہوکر رہے گی اور جس کے وقوع کی مقتضیٰ نہیں ہوگی وہ واقع نہیں ہوسکتی۔تو جب اقتضائے ازلی کے بغیر کوئی امر واقع نہیں ہوسکتا تو دعا کا فائدہ ہی کیا جب کہ وہ اس کی مصلحت کے مقتصیات کو ہدل نہیں دے سکتی اور بہر حال وہی ہونا ہے جو اس کے اقتضائے ازلی نے رو زِ از ل سے فیصلہ کر دیا ہے۔

اس شبد کا جواب ہے ہے کہ خداوند عالم نے ہرچیز کا ایک نظام اور ایک قاعدہ مقرر کر دیا ہے اور تمام چیز وں کوایک ہمہ گیرسلسلہ میں اس طرح با ندھ دیا ہے جس طرح ایک سلسلہ کی کڑیاں ایک دوسر ہے ہے وابسة اور مرہ بط ہوتی ہیں جس ہے عالم کانظم ونس اور دنیا کا کا رخانہ ایک دھڑ ہے پرچل رہا ہے ۔ اس لیے حکمت از لی جہاں کسی چیز کے دقوع کی مقتضی ہوتی ہے ۔ چنانچہ اس کی حکمت کا اگر تقاضا ہیہ ہے کہ زمین میر و میراب ہوتو وہ یہ بھی چاہتی ہے کہ سمندر سے بخارات الحمیں اور فیضا اس کی حکمت کا اگر تقاضا ہیہ ہے کہ زمین میرو میراب ہوتو وہ یہ بھی چاہتی ہے کہ سمندر سے بخارات الحمیں اور فیضا میں تھیل کر ہواؤں سے فکرا کمیں اور بیا کی زمین کی میرابی کا سامان کریں تو جس طرح زمین کی میرابی، میرابی کے میرو سامان سے وابستہ ہے اس طرح مصلحت از لی نے حاجت ہر آ ری اور مقصد کی کامیا بی کو بھی مختلف اسباب سے وابستہ کر رکھا ہے ۔ اور شجملہ ان اسباب کے ایک سبب دعا بھی سے لبندا ہو مکتا ہے کہ اس کی حکمت از لی کئی حاجت ہر آ ری حاجت ہر آ ری کی اس صورت میں مقتضی ہو جب اس کے سامتے گر گڑا یا جائے اور اس سے وعا کی جائے۔ اور دوصور تیکہ دعاء نہ کی جائے حکمت کا تقاضا میہ ہو کہ اس کے سامتے گر گڑا یا جائے اور اس سے علاوہ بندوں کی حاجت ہر آ ری کی اس صورت میں مقاضا میہ ہو کہ اسے مقصد میں نا کام رکھا جائے ۔ اس کے علاوہ بندوں کی حاجت اس سے حالا میں کرتے ہوئے اس سے اور گئی کے بیش نظر حاجت اس سے دابلے ہوگی اسے دابلے ہوگی اسے دابلے ہوگی اور اس سے لوگئی کے بیش نظر اس سے دابلے ہر قرار رکھیں اور دعا ء کی خرورت کا احساس کرتے ہوئے اس سے لوگئے کے رہیں۔

پنچویں دلیل ہے کہ جب خداوند عالم کو عالم الغیوب مانا جا چکا ہے اور سے کہ کوئی چیز اس ہے وہ ملکی چیری ہوئی نہیں ہے اور وہ دلوں کے بھیروں اور آئھوں کے چوری چیے اشاروں کو جانتا ہے تو پھراپنی رودا دا سے سانا اورا ہے مقصد کو زبان پر لانا کیا ضروری ہے، جب کہ ہمار بغیر اس کا علم ہر چیز پر حاوی ہے اور وہ ہماری ہر خوا ہمش اور ہر آرزو ہے آگاہ ہے اور کوئی چیز اس سے مخلی و پوشیدہ نہیں ہے چنانچہ اس بناء پر جب حضرت ایرا ہیم الطبیح کو آگ میں ڈالا جانے لگا اور جرئیل امین الطبیح نے مدد کی پیش کش کی، اور آپ کے انکار پر جرئیل نے کہا کہ اگر مجھ سے کوئی حاجت و خوا ہمش نہیں ہے تو جس سے ہاں سے طلب کیجئے ۔ تو آپ نے فرمایا:

الونے ہے۔"

اس ولیل کا جواب ہیہ ہے کہ دعا ہے ہے مقصد ہی کب ہوتا ہے کہ اسے ہے جرتھ ورکرتے ہوئے اپنی حاجتوں اور خواہشوں کواس کے علم میں لایا جائے ۔ کیونکہ وہ کسی مرحلہ پر ہمارے بتانے اور زبان ہے پچھ کہنے کا مختاج نہیں ہے۔ بلکہ ہمارے دل کے ایک ایک ریشے کی پکارے آگاہ اور ہمارے قلب کی تہوں میں لپٹی ہوئی آرزوؤں ہے واقف ہے۔ پیطلب و دعا تذلل و انکساراور رجوع الی اللہ تو صرف عبو دیت کا ایک مظاہرہ ہے تاکہ مانگنے کی خاطر اس ہے رابطہ قائم رہے اور طلب و سوال کے پر دہ میں اس ہے کو گئی رہے۔ اور اس خیال ہے زبان کو بند رکھنا کہ وہ تو سب پچھ جا نتا ہے ایک طرح ہے انا نبیت وغرور کا مظاہرہ ہے جو بندوں کے سامنے تو میں ستائش ہو سکتا ہے مگر اللہ کے سامنے اپنی رو دا و باطن پیش نہ کیجیئے اور اسے اپنا در وول نہ سنائے تو بیشیوہ عبو دیت کے خلاف اور عجر و نیا زمندی کے منافی ہے، چنانچا رشا والہی ہے:

﴿ قُلُ مَا يَعْبَوُ ابِكُمُ رَبِّي لَوُلَا دُعَآ وُكُمُ فَقَدُ كَلَّبُتُمُ فَسَوُفَ يَكُونُ لِزَامًا ﴾ "المدروكات المحافى يَكُونُ لِزَامًا ﴾ "المدروكات المحافى يَكُونُ لِزَامًا ﴾ "المدروكات في المدروكات المحافى يَكُونُ لِزَامًا ﴾ تم نے جھٹلایا جس کا وہال عنقریب تمہارے سر پر پڑے گا۔"

بلاشہ وعا، عبو ویت کا ایک مظاہرہ اور فطرت انسانی کی ایک آواز ہے۔ چنانچہ جب بھی کوئی مصیبت مازل ہوتی ہے یاضرورت واحتیاج پر بیٹان کرتی ہے تو بے ساختہ حرف مدعا زبان پر آئی جاتا ہے۔ اس کو بے ضرورت بھینا انسانی تقاضوں پر پہرا بھانا اور فطرت و وجدان کے فلاف صف آراہونا ہے۔ اور بیہ بھینا کہ وعاء بس اس لیے کی جاتی ہے کہ اپنی آ واز اسے سنائی جائے اوراپئی حاجت و آرزواس کے علم میں لائی جائے بلاغت کی راہوں سے بے خبری کی دلیل ہے۔ چنانچہ کلام و گفتگو میں ایسے بے شارمواقع ہیں جہاں زبان سے پچھ کہنا کی راہوں سے بے خبری کی دلیل ہے۔ چنانچہ کلام و گفتگو میں ایسے بے شارمواقع ہیں جہاں زبان سے پچھ کہنا کو مورٹ بتانے ہی کے لیے ہوتا ہے کہ یہ دن کی روشنی میں شوکر کھا کرگر نے والے کو یہ کہنا کہ ''سورج ذکلا مواج'' کیا ہیہ بتانے کے لیے ہوتا ہے کہ یہ دن ہے رات نہیں ہے یا پچھا در مقصد ہوتا ہے یا خداوند عالم کا حضرت موئی القیام کا حورٹ القیام کا طویل جواب اللہ علمی کی بنا پر تھایا حضرت موئی القیام کا حکم کے ساملہ کلام جاری کرنے کے لیے تھا۔ اور موئی القیام کا طویل جواب اللہ کوعصا کے فوائد ہے آگاہ کرنے کے لیے تھا۔ اور موئی القیام کا طویل جواب اللہ کوعصا کے فوائد ہے آگاہ کرنے کے لیے تھا۔ اور موئی القیام کا حرج شاعر کی کوعصا کے فوائد ہے آگاہ کرنے کے لیے تھایا ''کلہ یہ بود دکا بہت دراز تر گفتم'' کے پیش نظر تھا۔ ای طرح شاعر کی شاعر

البينساقى سے يفر مائش كه:

الا فاسقنی خموا و قل لی هی الخمو و لا تسقنی سرّا اذا امکن الجهر "مجھ شراب پلااوریه کهه که پلاکه پیشراب ہاورخفیه طور پر نه پلا جبکه کھلے بندوں پلانا ممکن ہے۔''

کیا ہے جانے کے لیے ہے کہ یہ شراب ہے۔الیا نہیں کے ونکہ وہ و کی دہا ہے کہ سامنے شراب رکھی ہے اور شراب ہی اے پائی جائے گی بلکه اس کامقصد حصول لذہ ساعت ہے۔ اور وہ دوسر ہے واس کی طرح کا نوں کو بھی لذہ اندوز کرنا چاہتا ہے کیونکہ آئیسیں اسے و کی کر سرور و کیف حاصل کر رہی ہیں۔ قوت شامداس کی خوشہو ہے بہرہ اندوز ہورہی ہے۔ لب اس کے اس ایک قوت سامعہ اندوز ہورہی ہے۔ لب اس کے اس ایک قوت سامعہ محروم رہی جاتی تھی اس کی لذہ اندوزی کا سامان اس طرح کیا کہ ساقی ہے کہا کہ تو شراب کہد کے جھے شراب بلانا کہ اس لفظ کی کوئے سے حظ و نشاط کی محمیل ہو جائے اور کوئی حاسد لذت اندوزی ہے محروم ندرہ جائے۔ یونہی کریم کے کا نوں میں سائلوں کی آواز تھے تھی ہی ہی کوئیا کہ تا ور اس کے کا نوں میں ہیم کوئی رہیں۔ چنانچ عرب کے مشہور شاعر متنبی نے اپنے محدوح کے متعلق کہا ہے:

فاذا سئلت فالالانك محوج واذا كتمست وشت بك الآلاء

''جب جھے سے سوال کیا جاتا ہے تو اس لیے نہیں کہ تو ما نگنے والوں کو سوال کی زحمت دینا چا ہتا ہے بلکہ اس لیے کہ مختبے سائلوں کی آوازا چھی معلوم ہوتی ہے۔اور جب مختبے پر دوں میں چھیایا جائے تو تیری فعمتیں تیری غمازی کرتی ہیں۔''

اس سلسله مين امام جعفر صادق الفي كاارشاد بكه:

﴿ ان المؤمن ليدعوا الله عزوجل في حاجته فيقول الله اخروا اجابته شوقا الى صوته و دعائه ﴾

''مؤمن خدائے بزرگ و برتر ہے اپنی حاجت طلب کرنا ہے اور قدرت اس کی دعا اور آ وا زکے اشتیاق میں پیہتی ہے کہ ابھی اس کی حاجت کونا خیر میں ڈال دو۔'' اور بھی اس کے برعکس بھی ہوتا ہے اس طرح کہ اگر کسی کی آوازاہے ماکوار معلوم ہوتی ہے تو اس کی حاجت جلد روا ہو جاتی ہے تا کہ وہ پھراس کے در پر دستک دےاور نداہے پکارے۔ چنانچ چھزت امام جعفر صادق الظیالا کا ارشادہے:

﴿ان العبد ليدعوا لله فيقول الله تبارك و تعالى عجّلوا له حاجته فانّى ابغض صوته﴾

"كوئى بندهاس سے دعا مائگتا ہے تو الله سبحانه كہتا ہے كداس كى حاجت كوجلد بوراكر ديا جائے كيونكه مجھاس كالكارنا برامعلوم ہوتا ہے۔"

چنانچهای کیے بعض ما نہجار و بدکر داراشخاص کواس نے کوما کوں نعمتوں سے نوازا تا کہ مہلت دیے کے بعد انہیں جکڑا جائے اور نعمت کی سرشار ہوں میں انہیں اللہ کی طرف رجوع ہونے کی تو فیق ہی حاصل ندہوں دا د او فرعون را صد ملک و مال تا ننالد سوئے حق آں بدسگال

در بمه عرش اندای دی برا نام کا بر کر

ابرہ احضرت آبرائیم النے کہ ابارگاہ ایز دی میں دست طلب نہ بڑھا او اس کا جواب یہ ہے کہ جب بلاء و مصیبت کی نوعیت فصوصی آ زمائش کی ہوتو اس سے بچاؤ کا سوال کرما شیوہ تسلیم و رضا کے خلاف ہے۔ چنانچہ جس طرح وہ اپنے فرزند کے ذرئ کے موقع پر خدا سے بیخوا ہش نہیں کرتے کہ اس انوکی اور زالی شم کی آزمائش کو اضالیا جائے بلکہ دل و جان سے اس کے لیے آما وہ ہوجاتے ہیں، اسی طرح آگ کے بجڑ کتے ہوئے شعلوں کو دیکھ کر مراسلیم خم کر دیتے ہیں۔ نہ دعا کے لیے ہاتھا و پر انتحق ہیں اور نہ زبانوں سے کوئی ایسا جملہ نگاتا ہے جس سے بین ظاہر ہوکہ وہ آگ کی لیٹوں کو دیکھ کر ہراساں و پر بیثان ہوگئے ہیں کہ ایک طرف کافروں کو طعند زئی کاموقع ملے اور دوسری طرف خلت و شیوہ کشلیم و رضا پر حرف آئے بلکہ بڑے صبر واستقلال سے بجڑ کتے ہوئے شعلوں میں کو دیڑتے ہیں۔ اس تشلیم و رضا کی آ زمائش اور صبر واستقلال کے امتحان کو دعا سے بے نیازی کے شوت میں پیش نہیں کیا جاسکتا ۔ کیونکہ منزل رازونیا زاور ہاور منزل صبر وامتحان کو دعا سے بے نیازی کے شوت میں پیش نہیں کیا جاسکتا ۔ کیونکہ منزل رازونیا زاور ہاور منزل صبر وامتحان کو دعا سے بے نیازی کے شوت میں پیش نہیں کیا جاسکتا ۔ کیونکہ منزل رازونیا زاور ہاور منزل صبر وامتحان اور ہے۔

چھٹی دلیل میہ ہے کہ جو چیز انسان کے مصالح میں داخل اوراس کی سودو بہبوداس سے وابستہ ہوگی تو وہ مبداء فیض وسر چشمہ ٔ عطا بھی اس میں فروگذاشت نہیں کرے گااور نداس کے عطا کرنے میں بخل سے کام لے گا اور جو چیز اس کے مصالح میں داخل نہیں ہے اسے طلب کرنا بھی مناسب وقرین صواب نہیں قرار دیا جا سکتا۔ کیونکہ اس کے معنی تو بیہ ہوں گے کہ وہ اپنے مصالح کواللہ سے بہتر سمجھتا ہے۔اس لیے اس سے کوئی خواہش کرنایا کوئی چیز طلب کرنا اس کی مصلحت بنی و کارسازی پرحرف رکھنا ہے۔

اس کاجواب میہ کہ بھی مصلحت عطاکرنے اور بخشے ہی میں ہوتی ہے چاہانان طلب کرے کرے یا طلب نہ کرے، جیسے وسائل جن سے زندگی کی بقاء وابسۃ ہے اور بھی مصلحت رد کرنے اور ناکام پھیرنے ہی میں ہوتی ہے جیسے وہ چیزیں جو ہلاکت و تباہی کا سبب اور شیراز و حیات کے بھرنے کا باعث ہوتی ہیں اور بھی مصلحت دعا و طلب سے وابسۃ ہوتی ہے اس طرح کہ طلب و دعا کی صورت میں اس میں مصلحت بیدا ہونے ہوجاتی ہے اور عدم طلب کی صورت میں اس میں مصلحت کارفر مانہیں ہوتی ۔ لہذا طلب و دعا سے بیدا ہونے والے مصالح اور ان کے فوائد و ثمرات سے اینے کھروم رکھنا کہاں تک درست ہوسکتا ہے۔

اس کا جواب میہ ہے کہ دعا کو از قبیل امر و نہی سمجھنا اس کیا ظہر ہوتا ہے اور دعا میں طلب کا مفہوم ہوتا ہے۔ مگر دونوں میں فرق میہ ہے کہ امر و نہی میں تفوق و برتری کا پہلو ہوتا ہے اور دعا میں انتہائی مجز و انکساراور پستی و تذلل کا اظہار ہوتا ہے۔ لہذا ایک کو دوسرے پر قیاس کرنا غلط اور سوفہی کا نتیجہ ہے اور اگر مطلق طلب میں سوءا دبی کو تجویز کیا جائے تو اس کے معنی میہ ہوں گے کہ ماں باپ سے کوئی چیز ما نگنا ، استا دسے پچھ لوچھنا بھی سوءا دبی میں وافل سمجھا جائے ۔ اور اگر میہ چیزیں سوءا دبی میں وافل شمجھا جائے ۔ اور اگر میہ چیزیں سوءا دبی میں وافل سمجھا جائے ۔ اور اگر میہ چیزیں سوءا دبی میں وافل نہیں ہیں تو پھر اللہ تعالیٰ ہی سے طلب وسوال میں سوءا دبی کیوں ہو۔ جبکہ طلب وسوال اپنے فقر واحتیاج اور اس کی عظمت و بالا دی کا ایک واضح اعتر اف ہے۔

آٹھویں دلیل میہ کہ حمدوثنا اور ذکرالہی حاجت روائی کا زیادہ کامیا بومؤٹر ذریعہ ہے۔لہذا بہتر ذریعہ کوچھوڑ کرطلب وسوال کاہاتھ کیوں کچیلاما جائے۔ چنانچہ حدیث قدی میں وار دہواہے کہ:

﴿من شغله ذكري عن مسئلتي اعطيته افضل ما اعطى السآئلين﴾

"جو خص میرے ذکر میں اس طرح کھوجائے کہاہے دعا کا خیال ندر ہے تو میں جوسوال کرنے والوں کو دیتا ہوں اس سے زیا دہ اسے دوں گا۔"

وان العبد لمكون له الحاجة إلى الله فيهدأ بالثناء على الله و الصلوة على محمد و ال محمد حتى ينسى حاجته فيقضيها الله له من غير ان يسئاله اياها ،

''بندے کواپنے اللہ ہے کوئی حاجت ہوتی ہاوروہ پہلے حمدو ثنا کرتا ہے اور محمد و آل محمد کر درو د بھیجتا ہے اس طرح کہ اس حمدو ثنا میں کھوکرا پی حاجت کوفراموش کر جاتا ہے تو اللہ اس کی حاجت روائی کر دیتا ہے بغیراس کے کہوہ اپنی حاجت طلب کرے۔''

وعأءقبل ابتلا

جس طرح علاج کی دوقتمیں ہیں ایک علاج قبل ازمرض یعنی حفظ ما تقدم کے طور پر ایسی تد اہیراختیار کرنا جس سے انسان مرض کے حملہ سے محفوظ رہ سکے اور طبیعت مرض کی پذیرائی سے انکار کر دے، یہ معالجہ احتیاطی ہے۔ اور دوسری فتم یہ ہے کہ مرض میں مبتلا ہونے کے بعد علاج کیا جائے۔ اطبا کے نزدیک معالجہ احتیاطی نیادہ کارگر اور مفید ثابت ہوتا ہے۔ کیونکہ طبیعت سمجے حالت میں ہوتی ہے اس لیے معالجہ احتیاطی کے ارثرات کوجلد قبول کر لیتی ہے۔ ای طرح دعا کی بھی دوقتمیں ہیں۔ ایک دعا مصیبت کے مازل ہونے سے پہلے

اورایک دعامصیبت کے دارد ہونے کے بعد۔اوروہ دعاء جوقبل مصیبت ہو معالجہ احتیاطی کی طرح زیادہ مؤثر ہوتی ہے۔ لہٰذا امن و عافیت کے دنوں میں ابتلاء ومصیبت سے بچاؤ کے لیے اور فراخ روزی وخوش حالی کے زمانہ میں نگک دی سے محفوظ رہنے کے لیے دعا کرتے رہنا چاہیئے کیونکہ اس طرح کی دعا آفت وابتلا سے سپر بن جایا کرتی ہے۔ چنانچہ امام جعفر صادق الطبی کا ارشاد ہے:

﴿ من تقدم فی الدعاء استجیب له اذا نزل به البلاء ﴾ ''جو شخص مصیبت کے مازل ہونے سے پہلے دعا کرنا ہے مصیبت پڑنے پر اس کی دعا متجاب ہوتی ہے۔''

الفاظ دعاء

دعاء بمیشہ سیدهی سادی عبارت اور ہلکے تھیکے الفاظ میں مانگناچا ہیئے۔ کیونکہ دعا قلب و خمیر کی آواز ہوتی ہے جو بے ساختہ زبان سے اہل پڑتی ہے اور مقصد کی ترجمانی کے لیافظوں کی ترکیب و ترتیب کاسہا را اور لفاظی وعبارت آرائی ہے کام نہ لینا چاہیے ال لیے لہ بناوت اور تکلف کی جسک آتے ہی عجز و نیا ز کاجذبہ مصلحل اور بندگی و نیازمندی کی روح ختم ہوجاتی ہے اور بمیشہ ایک سے الفاظ بھی استعال نہ کئے جا کیں کہ وہ و زبان پر چڑھ جانے کی وجہ سے قصد و ارادہ کے بغیر بھی نکل جایا کرتے ہیں۔ اس طرح کی دعا دل کی آواز نہیں ہوتی بلکہ الفاظ بی الفاظ ہوتے ہیں جن میں اخلاص کا جذبہ ول کی حضوری اور طلب گاری کا ولولہ نہیں ہوتا۔ اور جب تک طلب میں جوش ، سوال میں ترکیپ، اور دعاء میں ولولہ نہیں ہوگا وہ دعاء ، قابل پذیر ائی نہ ہوگی۔ چنا نچے رسول اکرم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کا ارشاد ہے:

﴿إِن الله لا يستجيب الدعا من قلب لاه ﴾

" جب دل دوسرى طرف مشغول اورغافل جوتو الله تعالى دعا كوقبول نهيس كرنا "

دعاء میں ایسے الفاظ زیا دہ مؤثر ہوتے ہیں جن میں عظمت الہی کے اعتراف کے ساتھ عجز وقصور کا اقرار اور عبو دیت و نیازمندی کا اظہار ہواس لیے اپنی دعاؤں میں معصومین علیہم السلام کی دعاؤں کے کلمات دھراتے رہنا چاہیئے کہان میں جلال الوہیت کارپڑو اور جمال عبو دیت کا انعکاس پوری طرح جلوہ گر ہوتا ہے۔

وعامل اساء البي كاامتخاب

طلب و دعا کے سلسلہ میں اللہ تعالیٰ کواس نام ہے ایکارنا جاہئے جوسائل کے مقصد و مراد ہے مناسبت رکھتا ہو۔ پیطریق خطاب صرف خطاب ہی نہیں ہوگا بلکہ خطاب و دلیل دونوں ہوں گے۔اس طرح کہ جوفقر و احتیاج میںاہے ﴿ یا غنی ﴾ اور بیاری میں ﴿ یا شافی ﴾ کے گاتو ان الفاظ ہے ذہن اس طرف قبراً ملتفت ہوگا کہ جب وہ غنی ہے تو غنی کے سوا اور کون ہوسکتا ہے جوفقر واحتیاج کو دور کرے۔او رجب وہ شافی ہے تو شافی کے علاوہ کون ہوسکتا ہے جس سے شفا کی آس رکھی جائے۔ اوراسے غنی ہونے کے لحاظ سے اپنے بندوں کی احتیاج کو دور کرما چاہئے اور شافی ہونے کے اعتبارے بہاروں کوصحت بخشا چاہئے۔اوراس کے ساتھ طلب و سوال کا استحقاق بھی واضح ہو جائے گا۔ یوں کہ اگر فقیر و ما دارغنی سے نہ مائے تو کیا اینے ایسے ما داروں سے مائے۔اور بہارشانی مطلق ہے شفا کا طلب گار نہ ہوتو کس کے دارالشفاہے صحت کی بھیک مائے ۔الہٰدا جب بھی اس ذات بے نیاز کی ہارگاہ میں دعا کے لیے ہاتھ اٹھائے جائمیں تو جس نوعیت کا سوال ہوائی نوعیت کے مطابق الله كماموں ميں ہے مناسب ما مكا اتحاب كرے۔ شلّا ايك فقير و ما دار الى وسعت كا سوال كرے تو وہ الله تعالی کو ﴿العندى، المعنى، يا رازق و معطى ﴾ كنام سے يكارے مريض صحت كے ليے وعاكر يو ﴿ يا شافی ﴾ كے -مظلوم اے يكارے تو ﴿ يا منتقع ﴾ كے اور كنهگار آمرزش كنا ه كے ليے التجاءكر يو اے ﴿ يا عفو ، يا غفور ﴾ كمام م يا وكر اورحاجت مندكس حاجت كسلسله مين اس يكار في إ مبیب ﴾ کے ۔ای طرح دوسرے مطالب و حاجات میں حاجت ومقصد کی نوعیت کے مطابق جونام مناسب ہواس مام سے ایکارے۔

وعائے مغفرت میں ترتیب کالحاظ

جب ماں باپ، عزیز و اقارب اور صلحاء و مؤمنین کے لیے دعائے مغفرت کی جائے تو انبیاء اور خاصان خدا کی تأکی ہائے تو انبیاء اور خاصان خدا کی تأکی میں پہلے اپنے لیے دعائے بخشش و آمرزش کرے اور پھر دوسروں کے لیے۔ چنانچے قرآن مجید میں قدرت کا پیغیراکرم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم سے خطاب ہے: ﴿ وَاسْتَ غَلِفِرُ لِلذَنْبِكَ وَ لِللْمُؤْمِنِيْنَ

\$

وَالْمُؤُمِنَاتِ ﴾ 'آپ نے لیے اور مؤمنین و مؤمنات کے لیے طلب مغفرت کرو۔' معفرت نوح النہ کا وعاہے:
﴿ رَبِّ اغْیفرُ لِی وَ لِوَ الِلَکَ وَ لِمَن دُ حَلَ بَیْتِی مُؤُمِنا وَ لِلْمُؤُمِنِینَ وَ الْمُؤُمِناتِ ﴾ ' روردگارا جھے
اور میرے مال باپ کواور جومؤمن میرے گریش آئے اور تمام مؤمن مردوں اور مؤمن کورٹوں کو بخش دے۔'
معفرت ایرائیم النہ کی وعاہے: ﴿ وَ بَنَا اغْفِرُ لِی وَ لِوَ اللّٰمَوُمِنِینَ یَوْمَ یَقُومُ الْحِسَابُ ﴾ '' اے
مارے بالے والے! جس دن اعمال کا حماب ہوگا، مجھا ور میرے مال باپ اور تمام ایمان لانے والوں کو بخش
دے۔' معفرت موکی النہ کی وعاہے: ﴿ وَ بِنَ اغْفِرُ لِی وَ لِاَ بِحِی وَ اَدْخِلْنَا فِی وَحَمَدِکَ ﴾ '' اے
میرے یہوردگار! مجھے اور میرے بھائی کو بخش دے اور جمیں اپنی رحمت عیں وافل کرلے۔' ایل ایمان کی وعاہے: ﴿ وَ بَنِ اللّٰ ایمان کی وعاہم اللّٰ ایمان کی وعاہم اللّٰ ال

دعائے مغفرت میں اپنے کو مقدم کرنے میں شائد مید مز ہوکہ انسان خود اپنے لیے دعائے مغفرت کے اللہ کے عفود

النو پھراسے دوسروں کے لیے وعائے مغفرت کرتا زیب ویتا ہے اور جسٹ فود دعائے مغفرت سے اللہ کے عفود
درگزر کا مستحق ہوجائے تو پھراوروں کے لیے دعا کرے گا تو زیا دہ مؤثر و مستجاب ہوگی ۔ یوں جھیے کہ اگر کوئی شخص
با دشاہ کے سامنے عفوکی درخواست پیش کر ہے تو اس وقت تک دوسروں کے حق میں اس کی سفارش مناسب نہ ہوگی جب تک وہ خودا پنے لیے معافی نہ ما نگ لے گا تو پھر دوسروں کے لیے اس
کی درخواست عفومنا سب و برمحل ٹا بت ہوگی۔

بيئت وعا

دعابا وضوتشہد کی حالت میں بیٹھ کراور رُو بہ قبلہ ہو کرمائے اس طرح کہ آوازنہ زیا وہ بلند ہواور نہ زیا وہ استہ۔البتہ اگر رہاء و ضمود کا اندیشہ ہوتو گھر بہتر ہے کہ چیکے چیکے سے دعا کرے۔ دعا میں اگر شرنفس، وسوستہ شیطان اور حملۂ وشمن سے بناہ ما نگنا جا ہے تو اپنے ہاتھ کی دونوں ہتھیلیاں قبلہ کی طرف اس طرح کھیلائے جس طرح تلوار، لاٹھی، پھر وغیرہ کے وارکورو کا جاتا ہے اور طلب رزق و حاجت کیلئے دونوں ہتھیلیوں کو چہرے کے بالمقامل کھیلائے جس طرح ہاتھ کھیلا کرکوئی چیز طلب کی جاتی ہے اور تضرع والحاح کے سلسلہ میں دعاء کر ہے تو المقامل کے جیلائے کہ جاتی ہے۔ اور تضرع والحاح کے سلسلہ میں دعاء کر ہے تو المحالی ہوتا ہے۔ اور تصرح والحاح کے سلسلہ میں دعاء کر ہے تو بہتا ہے۔

ا پنے ہاتھوں کوہر سے او نیچا لے جاکر پھیلائے ۔اورمصیبت وابتلاءاورخوف وخطر کے موقع پر ہاتھ کی ہتھیلیوں کو زمین کی طرف کر لے ۔ بیدایک طرح سے اس امر کاا ظہار ہے کہ وہ اپنے اٹمال کے پیش نظر کسی چیز کے حاصل کرنے کامسخق نہیں ہے ۔اور جب دعاء ختم کر ہے تو مند، سیند، ماہر پر ہاتھ پھیرے کہ بیدا شرف اعضاء ہیں۔

شرا كطِقبوليت دعاء

شرائط قبولیت و عامیں سب سے مقدم شرط میہ ہے کہ لباس ، غذا ، جائے رہائش ، ذریعۂ معاش طیب و حلال ہواور دل میں اطمینان و رجاء کی کیفیت پیدا کرے۔ کیونکہ رجاء دعاء کی محرک ہوتی ہے اور جب رجاء کا پہلو کمزور ہوگا تو دعاء میں اعتماد ، خلوص او رولولہ پیدا نہیں ہوسکتا کہ جو قبولیت دعاء کا ضامن ہوتا ہے۔اس لیے قبولیت دعاء پر وثوق رکھتے ہوئے خلوص نہیت ، رفت قلب اور تضرع و الحاح کے ساتھ بار بار دعاء و التجاء کرے۔ چنانچے حضرت امام محمد باقر الطبیع کا ارشا دے :

دوسروں کے ساتھ مل کر دعاء ما تگنا بھی استجابت پراٹر انداز ہونا ہے اس لیے کہ مکن ہے کہ ان میں کوئی ایبامر دصالح بھی ہوجس کی خاطر سب کی دعا کیں قبول ہوجا کیں۔اور دوسروں کواپنی دعاء میں شریک کرنا ھی استجابت دعاء کاباعث ہونا ہے۔ چنانچہ ارشا دنبوی ہے:

جب تم میں ہے کوئی ایک دعا کرے تو دوسروں کو بھی دعاء میں شریک کرے تا کہ وہ قبولیت دعاء کامشحق قرار ہائے۔ اذا دعا احدكم فليعم في الدعاء فانه او جب للدعاء

شروع اورخم دعاءك آ داب

جب دعاء کیلئے ہاتھ اٹھائے تو اس کی ابتداء حمد و تقذیس الہی ہے کرے۔ کیونکہ اس سے طلب کرنا ایک طرح ہے اس کے کرم و فیضان کا اعتر اف کرنا ہے اور کرم و بخشش کا اعتر اف بیہ چاہتا ہے کہ طلب وسوال ہے

پہلے زبان اسکی مدحت وستائش میں تھلے اور تخمید و ثناء میں نغمہ ریز ہو۔ پیخمید وستائش ایسے الفاظ میں ہونا چاہیے جو اسکی پیش گاوعظمت وجلال کے شایان شان ہو۔ اس لیے بہتر ہے کہ انہی الفاظ میں حمد وستائش کرے جو معصومین علیہم السلام سے مروی ہوں، چنانچہ کتاب علی ہے بہ کلمات حمد منقول ہیں جنہیں وعاسے قبل پڑھنا چاہیئے۔

''اے وہ ذات جوشر رگ ہے بھی نیا دہ مجھ سے مزد یک ہے،اے وہ کہ جووبی کرتا ہے جو جاہتا ہے اے وہ کہ جوآ دی اوراس کے دل میں جائل ہو جاتا ہے۔اے وہ کہ جو بلند و بالا شان والا ہے،ا ہے وہ کہ جس کی کوئی مثل وظار نہیں ہے۔'' يامن هو اقرب الى من حبل الوريديا فعالا لما يريد، يا من يحول بين المرء و قلبه يا من هو بالمنظر الاعلى يا من ليس كمثله شئ.

حد کے بعداس کی نعمتو ساوراحسانوں کو یا دکرتے ہوئے اس کاشکر بیادا کر سے اکر ہوئے نہ شکو تُم الا فِی سُنگو تُم م الآ فِی سُنگ نُسگ ہُم ہُم الشکار کرد گے تو میں یقینا تہ ہیں زیادہ دوں گا۔' کی بناپر اسے زیادہ سے زیادہ تعمین عاصل ہوں۔ پھر نبی اکرم سلی الشاعلی و آلہ و سال المار الموں و دور ہے تا کہ احتساب نفس کا جذبہ بیدا ہو۔ پھر تو بہ و میں دعا بھی قبول ہو جائے پھر اپنے گنا ہوں کا اعتر اف کرے تا کہ احتساب نفس کا جذبہ بیدا ہو۔ پھر تو بہ و استخفار کرے تا کہ احتساب نفس کا جذبہ بیدا ہو۔ پھر تو بہ و استخفار کرے تا کہ گنا ہوں کی کثافت مانع قبولیت نہونے پائے۔ پھر واضح الفاظ میں اپنی حاجت طلب کرے اور آخر میں درود ریڑھے بلکہ وسط میں بھی درو دیڑھے۔

ذر بعه وتوسل

میں اور تیں وابستہ کی جاتی ہیں اور اس کے علاوہ کسی کو مستقل طور پر حاجت روا سمجھ کر پکارا مسجھے نہیں ہاور نہ آئین ضرور تیں وابستہ کی جاتی ہیں اور اس کے علاوہ کسی کو مستقل طور پر حاجت روا سمجھ کر پکارا مسجھے نہیں ہاور نہ آئین اسلام میں اس کی گفجائش ہے کہ دعا میں کسی دوسری ہستی کو پکار کر اے اللہ تعالیٰ کے صفات میں شریک تھہرایا جائے۔ گر ہر چیز میں اللہ تعالیٰ کی مشیت کے مل وال کاعقیدہ رکھتے ہوئے کسی کو پکار نا اور مدوچا ہنا شرک نہیں ہوئے سے اور نہ ان ہستیوں کو کہ جنہیں مشیت کا ہاتھ سفارش کے لیے چن چکا ہے وسیلہ قرار دینا شرک ہے کو کی تعلق رکھتا ہوں کہ وہ نہیں ہوتا ہے جب انہی کو حاجت روائی کے لیے کا فی سمجھ لیا جا نا اور مشیت باری کی ضرورت نہ سمجھی جاتی۔ اور پھر انہیں وسیلہ قرار دینا تو ایک طرح سے اللہ کی عظمت کا اعتراف اور اپنی کونا ہی دی کا

اقرار ہے اس طرح کہ اپنے کو ہراہ راست پیش گاہِ سلطانی میں عرض معروض کرنے کا اہل نہ بچھتے ہوئے ان ہستیوں کو وسلہ قرار دے رہا ہے جو وسلہ بن سکتے ہیں اور جن کے نفوں قویہ ظاہری رابطۂ حیات کے قطع ہونے کے بعد بھی عالم اسباب سے بے تعلق نہیں ہوتے ۔ چنا نچہ ای بقائے ربط وتعلق کی وجہ سے ان کی قبروں کی زیارت کی جاتی ہے اور ان کے مقبات و مشاہد میں استجابت و عاکم اڑات ظہور میں آتے ہیں ۔ تو جو شخص عمل و اعتقاد کے ذریعہ ان سے علاقہ روحانی بیدا کر لیتا ہے وہ اس کے لیے استجابت و عاکا وسلہ ہو سکتے ہیں ۔ چنا نچہ امام موئ کا ظم النا ہے مروی ہے کہ آپ نے ساعہ سے فر مایا کہ حاجت طلب کرنے سے پہلے یہ کلمات توسل براھونا کہ اللہ تعالیٰ تمہاری و عاء کوجلد قبول کر ہے۔

اللهم انّى اسئلک بحق محمّد الدالله على تَجْهِ مُحَمّ الله عليه و آله و على فان لهما عندک شانا و علم اورعلى صلوات الله عليه كا واسط ويتا من الشان و قدرا من القدر بول كونكه ان كى تير عنزو يك بؤى في من الشان و قدرا من القدر في الشان و جعق ذلك الشان و جعق الدومنزلت على على على على على الله القدر ان تصلى على الله الله المحمد و ال محمد .

اور حضرت سيد الساحدين القليلا ايك دعامين اسطرح نؤسل فرمات بين:

السلّه ف انّى اتقوب اليك منزلت بلند بإياورعلى عليه الله عليه وآله وبلم ك منزلت بلند بإياورعلى عليه اللام كم من روش و العلوية و العلوية و العلوية و العلوية و العلوية البيضاء و اتوجه اليك بهما ان گار بول اوران ونول كوسيلت تيرى طرف متوجه بول تاكر مجمع تو ان چيزول كى يما في من شوّ كذا و كذا.

ادعيه واذ كارم سعد وكي رعايت

بعض اورا دواذ کار کے اوائل ما اواخر میں بیروار دہوتا ہے کہاتنی مرتبہ درود پڑھویا اتنی دفعہ فلاں سورۃ پڑھوتو اس موقع پرعد د کالحاظ رکھنا چاہیئے اوراہے گھٹانا بڑھانا نہ چاہیئے ۔ کیونکہ اس مقام پراس کے نتائج واثرات

کواس کے عدد سے وابستہ کیا گیا ہے جو کم وہیش کرنے کی صورت میں مرتب نہیں ہو سکتے۔ چنانچے صاحب ریاض السالکین نے سید ابن طاؤس الحسینی رحمہ اللہ سے نقل کیا ہے کہ ادعیہ واذکار میں عدد کونظر انداز نہ کرنا چاہیئے ورنہ مطلو بنو انداس سے حاصل نہ ہو سکیں گے۔ اسے یوں سمجھنا چاہیئے کہ اگر کوئی شخص کہ جس کی راست بیانی پر مکمل اعتاد و وثوق ہواور وہ یہ کہے کہ فلاں مقام سے دہل گز کے فاصلہ پر ایک خز انہ مدفون ہے اگر اسے کھو وہ گو وہ خزانہ تہمیں دست یاب ہوگا۔ تو اب کوئی شخص دہل گز کے فاصلہ پر ایک خز انہ مدفون ہے اگر اسے کھو وہ گاتو وہ خزانہ تہمیں دست یاب ہوگا۔ تو اب کوئی شخص دہل گز کے فاصلہ سے آ کے یا اس فاصلہ سے بیچھے کھو وے گاتو وہ خزانہ اس کے ہاتھ نہیں گئے گا۔ بعینہ یہی صورت اذکار وادعیہ کی ہے کہ ان سے مطلو بو فوائد اسی صورت میں حاصل ہو سکتے ہیں جب ان میں عدد کا لحاظ رکھا گیا ہو۔ لہذا گفتگویا دوسرے کاموں میں مشغول ہوئے بغیر اس عدد کوئمام کرنا چاہئے اوراگر دورانِ ذکر میں کلام کرنے کی ضرورت پڑ جائے تو پھراسے از مرفو تار کرو شار کرے۔

اوقات وعاء

صحیحۂ کا ملہ یا دوسری کت احیہ میں جو وعائیں اوقات میں پڑھنا چاہئے ۔ کیونکہ و ہی کیات ان عیدانسی اوقات میں پڑھنا چاہئے ۔ کیونکہ و ہی کیات ان کے معینہ اوقات میں پڑھنا چاہئے ۔ کیونکہ و ہی کیات ان کے لیے مناسب اور قبولیت سے قریب تر ہوتے ہیں ۔ اور جو دعائیں دن اور وقت کی پابند نہیں ہیں یا ان کے علاوہ کوئی اور دعا ما نگنا چاہے تو حسب ذیل اوقات استجابت کے لحاظ سے بہتر ہیں ۔ بحر سے لے کرطلوع آ قآب تک، زوال آ فقاب کے وقت ، ضبح ، ظہر اور مغرب کی نماز کے بعد ، نماز و تر میں ، شب ہائے قدر میں ، جمعہ کے دن خطبہ اور نماز کے درمیانی وقفہ میں ، جمعہ کے دن جب کہ سورج آ دھا ڈوب چکا ہو، اذان اور اقامت کے درمیانی وقفہ میں ، جمعہ کے دن جب کہ سورج آ دھا ڈوب چکا ہو، اذان اور اقامت کے درمیانی وقفہ میں ، جمعہ کے دن جب کہ سورج آ دھا ڈوب چکا ہو، اذان اور اقامت کے درمیانی وقفہ میں ، جمعہ کے دن جب کہ سورج آ دھا ڈوب چکا ہو، اذان اور اقامت کے درمیانی وقفہ میں ، جمعہ کے دن جب کہ سورج آ دھا ڈوب چکا ہو، اذان اور اقامت کے درمیانی میں ، جمعہ کے دن جب کہ سورج آ دھا ڈوب چکا ہو، اذان اور اقامت کے درمیانی کے بعد کہ وہ دعاء کا بہترین وقت ہے سے

دلا بسوز کہ سوز تو کارہا بکند دعائے نیم شمی دفع صد بلا بکند چنانچہ امیر المؤمنین الظامی رات کے ایک حصہ میں اٹھے اور ستاروں پر نظر کرنے کے بعد نوف ابن فضالہ بکالی ہے فرمایا: ''اے نوف! داؤدا ﷺ رات کے ایسے بی حصد میں اٹھے ادر فر مایا کہ بیدہ گری ہے کہ جس میں بندہ جو بھی دعا مائے مستجاب ہوگی سوائے اس شخص کے جو سرکاری فیکس وصول کرنے والا یا (کسی ظالم حکومت کی) پولیس میں ہو یا سارنگی یا ڈھول ناشہ بجانے والا ہو۔''

يا نوف ان داؤد عليه السلام قام فى مشل هذه الساعة من الليل فقال انها ساعة لا يدعو فيها عبد الا استجيب له الا ان يكون عشارا او عريفا او شرطيا او صاحب عرطبة او صاحب كوبة.

مقامات قيوليت وعاء

جس طرح اوقات و ساعات اور ازمنه و ایام کو قبولیت دعاء میں ول ہے۔ ای طرح کل و مقام بھی قبولیت دعا پر اثر انداز ہوتے ہیں اور وہاں ہر دعا جلد مستجاب ہوتی ہے۔ جنانچہ ذیل کے مقامات استجابت دعا کے لیے خصوص ہیں: مسجد الحرام ، عرفات ، مستحر الحرام مکہ ، مسجد نبوتی ، مسجد کوفہ ، مزارات ائم الل بیت علیم السلام اور علی الحضوص روضۂ سید الشہد ا عسین ابن علی علیم السلام کہ اس کے متعلق وار دہوا ہے کہ ﴿ الاجاب قسمت قبته ﴾ "ان کے گنبد مزار کے نیچے دعا کمیں قبول ہوتی ہیں۔ "
قبته ﴾ "ان کے گنبد مزار کے نیچے دعا کمیں قبول ہوتی ہیں۔ "

جعفرحسين بقلمه

🛊 با باول 🭦

ده سوره کابیان

ا۔ سورہ کیٹین اور اس کی فضیلت:۔

يةرآن مجيد كى وى مبارك سوره ب جي" قلب قرآن "كهاجانا ب-

(۱) حضرت رسول خداصلی الله علیه و آله وسلم ہے مروی ہے کہ خلوص نبیت ہے اس کے پڑھنے والے کو با رہ عدد ختم قرآن کا ثواب ملتا ہے او راس کے پڑھنے ہے سکرات موت سے راحت نصیب ہوتی ہے۔

(۱) حضرت امام جعفر صادق الطبی ہے مردی ہے، فر مایا: جو شخص سورہ کیلین کو میچ کے دفت پڑھے تو دہ شام تک اور جو شام کی رہتا ہے اور اسے شام تک اور جو شام کی رہتا ہے اور اسے درائے کی رہتا ہے اور اسے روزی بھی ملتی ہے اور اگر اس اثناء میں مرجائے تو خدائے کریم اسے جنت النعیم میں دافل کرتا ہے۔ روزی بھی ملتی ہے اور اگر اس اثناء میں مرجائے تو خدائے کریم اسے جنت النعیم میں دافل کرتا ہے۔ (مجمع الحسنات)

(۳) مروی ہے کہ ہر بلاءومصیبت ہے اپنی اورا پنے اہل وعیال او را پنے مال ومنال کی حفاظت کے لیے سورۂ لیلین پڑھا کرو۔(ایصاً)

سوره کلین میرہے:

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ

(شروع كرنا جول) الله كما م سے جوبرہ امبر مان نہا ہے والا ہے۔

يُلس (١) وَالْقُرُانِ الْحَكِيْمِ (٢) إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرُسَلِيُنَ (٣) عَلَى صِرَاطٍ ﴿ إِلَّهِ اللَّهِ اللَّ

یاسین(ا)قرآن تھیم کی قتم (۲)یقیناً آپ (خدا) کے رسولوں میں ہے ہیں(۳) (اور) سیدھے راستے پری ہیں(۴) (بیقرآن)عزیز (غالب اور)

مُّسُتَقِيبُمٍ (٣) تَنْزِيلُ الْعَزِيْزِ الرَّحِيمِ (٥) لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ ٱنْذِرَ ابَآؤُهُمُ فَهُمُ

یو مے بریان کانا زل کیا ہوا ہے(۵) نا کرآ ہے اس تو م کوڈرا کیں جس کے باپ واوا کو (یراوراست کسی تیفیرے) ڈرایا نیس گیا اس لتے وہ غافل ہیں (۹)

غَـفِـلُونَ (٢) لَقَدُ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَى آكُثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤُمِنُونَ (٧) إِنَّا جَعَلْنَا فِي ان میں سے اکثر پر (ان کے تعصب وعنا و کی وجد سے) میں بات ہا ہت ہو چکل ہے کہ وہ ایمان ٹیس لا کیں گے (4) ہم نے (ان کے پیم کفر وعناو کی وجد سے اَعُنَاقِهِمُ اَغَلَلاَ فَهِيَ اِلَى الْآذَقَانِ فَهُمُ مُقَمَحُونَ(٨) وَجَعَلْنَا مِنُ بَيُنِ اَيْدِيُهِمُ کھا) ان کی گرونوں میں (مگرائی اور شیطان کی غلامی کے) طوق ڈال دیتے ہیں جوان کی ٹھوڑ یوں تک آ مجھے ہیں اس لتے وہراور اٹھائے ہوئے ہیں سَـدًّا وَّمِـنُ خَلَفِهـمُ سَدًّا فَأَغَشَيْنَهُمُ فَهُمُ لَا يُبُصِرُونَ (٩) وَ سَوَآءٌ عَلَيُهِمُ ءَ ر جھکا نیس سکتے (^) اور ہم نے ایک ویواران کے آ گے کھڑی کروی ہےاورایک ویواران کے پیچھے کھڑی کروی ہے(اس طرح) ہم نے انیس ٱنَّـذَرُتَهُـمُ أَمَّ لَمُ تُنَذِرُهُمُ لا يُؤُمِنُونَ (• ١) إِنَّمَا تُنَذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكُرَ وَ خَشِيَ وُ ها تک ویا ہے پان وہ یکھے و کیٹینل سکتے (9) ان کیلئے (ووٹوں باتنل) برابر ہیں خواہ آپ انہیں وُرا کمی یا نہ ڈرا کمی وہ ایمان ٹینل لا کمی گے(۱۰) آپ تو الرَّحْـمٰنَ بِالْغَيُبِ. فَبَشِّرُهُ بِمَغَفِرَةٍ وَّ أَجُر كُريُم (١١) إِنَّا نَحُنُ نَحُى الْمَوْتَى صرف اس شخص کوڈ راسکتے ہیں جونسیحت کی بیروی کرے اور بیو کیلے خدائے رحمٰن سے ڈرے پس ایسے مخص کومغفرت (بھشش) اورعمہ واحمہ کی خوفھجری و ہے وَ نَكَتَبُ مَا قَدُمُو ﴾ وَ (أُو (أُو رَاكُو هُمُ وَ كُلُّ السُّي الْحَصْيَاةُ فِي إِمَامَ مَّبِينَ (٢١) وَ ویں (۱۱) بے شک ہم ہی مردوں کوزند وکرتے میں اوران کے وہ اعمال لکھ لیتے میں جووہ آ گئے بھیج بچکے میں اوران کے وہ آٹا ہر بھی شب کرتے میں جووہ اپنے اضربُ لَهُمُ مَثلًا أَصُحابَ الْقُرْيَةِ. إِذْ جَآءَ هَا الْمُرْسَلُونَ (٣١) إِذْ أَرْسَلْنَا یجھے جھوڑ جاتے میں ادرہم نے ہرچیز کوامام میمین میں جمع کردیا ہے (۱۲)اور (ان کو سمجھانے کیلئے) بطور مثال ایک خاص بستی کا قصد سنا کمیں جب ان کے باس إِلَيُهِـمُ اثْنَيُن فَكَذَّبُوُهُمَا فَعَزَّ زُنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوُ آ إِنَّآ اِلَيُكُمُ مُرُسَلُونَ (٣٠) قَالُوُ ا ے) پیغام رساں آئے (۱۳) (پہلے) ہم نے ان کی طرف دو (رسول) جیجاتو انہوں نے ان دونوں کوجٹلایا تو ہم نے اُنہیں تیسرے (رسول) کے مَا انتُمُ إِلَّا بَشُرٌّ مِّثْلُنا. وَمَا انزَلَ الرَّحُمْنُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ انتُمْ إِلَّا تَكَذِّبُونَ (١٥) را تھ تقویت وی۔ چنانچے بینوں نے کہا کہم تمہار ہے ہا س بیجے گئے ہیں (۱۴) ان لوکوں نے کہاتم بس ہمارے ہی جیسے انسان ہو اورخد ائے رطن نے (تم قَالُوُا رَبُّنَا يَعُلُمُ إِنَّا اِلْيُكُمُ لَمُرُسَلُونَ (٢١) وَمَا عَلَيْنَاۤ اِلَّا الْبَلْغَ الْمُبِينُ (١٤) یر) کوئی چیز ما زل نبیل کی ہے تم اِلک جموٹ بول رہے ہو (۱۵) رسولوں نے کما کہ ہمارار وردگا رخوب جانتا ہے کہ ہم تمہاری طرف بیسیج گئے ہیں (۱۷) اور قَالُوْٓ ا إِنَّا تَـطَيُّرُنَا بِكُمُ. لَئِنُ لَمُ تَنْتَهُوُا لَنَرُجُمَنَّكُمْ وَ لَيَمَسَّنَّكُمُ مِّنَا عَذَابٌ اَلِيُهُ

(٨ ١) قَالُوا طَآئِرُ كُمُ مَعَكُمُ. آئِنُ ذُكِّرُتُمُ. بَلُ آنْتُمُ قَوْمٌ مُسُرفُونَ (٩١) رِ الَّيا ہے) اُگرتم اِ زندآ ہے تو ہم جمہیں سنگسار کرویں تھے اور جاری طرف ہے جہیں دروا کسٹر الطے گی (۱۸)رسولوں نے کہا کرتمہاری فال باقہ تمہارے ساتھ ہےا کیا وَجَآءَ مِنُ اَقُصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسُعِي قَالَ يَاقَوُم اتَّبِعُوا الْمُرُسَلِيُن(٢٠) اتَّبِعُوُا اگر حمہیں تھیجت کی جائے (تو بیربات بدشکونی ہے)؟ حقیقت یہ ہے کہتم حدے بڑھ جانے والے لوگ ہو (۱۹)ادرایک مختص شہر کے پر لے سرے دوٹیا ہوا آیا مَنُ لَا يَسْئَلَكُمُ أَجُرًا وَّهُمُ مُهُتَدُونَ ﴿ ١ ٢ ﴾ وَمَالِيَ لَا أَعُبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَ اِلَيْهِ اور کمااے میری قوم! رسولوں کی چیروی کرو(۲۰)ان لوکوں کی چیروی کروجوتم ہے کوئی معاوضہ میں مانگلتے اور غود بدایت یافتہ بھی میں (۲۱) مجھے کیا ہوگیا ہے کہ میں تُـرُجَعُـوُنَ (٢٢) ءَ أَتَـخِذُ مِنُ دُونِهَ الِهَةَ إِنْ يُردُنِ الرَّحُمْنُ بِضُرِّ لَا تُغُن عَنِّي اس سی کا عبادت زکروں جس نے مجھے پیدا کیا ہے سال کا تم سبال کی طرف افائے جا دیگے (۲۲) کیا میں اے جھوڑ کر ایسے خد ای کو اختیار کروں کر اگر خدا ہے شَفَاعَتَهُمُ شَيْئًا وَّلاْ يُنَقِذَوُن(٢٣) إِنِّي ٓ إِذًا لَّفِي ضَلال مُّبيُن(٢٣) إِنِّي ٓ امَنُتُ رطن مجھے کوئی نقصان پیچیانا جا ہے لیے ان کی سفارٹ مجھے کوئی فائدہ نہیجیا سکے اور نہ ہی وہ مجھے چیٹر اسکیں (۲۳) (اگر میں ایسا کروں) تو میں اس وقت کیلی ہوئی گمراہی برَ بَكُمُ فَاسْمَعُونَ ﴿ ٢٥ ﴿) قِيْلَ إِذْ خُلِ الْجَنَّةُ قَالَ يَالَيْتَ قُومِي يَعُلَمُونَ (٢٧) ی او تمہارے پر وردگار پرائیان لے آیا ہوں تم میری بات (کان لگا کر) سنو (اورائیان لے آئ^ک کا (۲۵) (انجام کاران اوکوں نے اس مؤسس کو سنگسار ا غَـفَـرَلِـيُ رَبِّيُ وَ جَعَلْنِيُ مِنَ الْمُكْرَمِيُنَ (٢٧) وَمَآ أَنْزَلْنَا عَلَى قَوُمِهِ مِنُ كرها وراس ، كماكيا كربهشت من والل موجا-وه كسناكا كاش ميرى أوم كومعلوم موجانا كرمير بديده كارغ كس وجديد جحي بخش عا بباور بجيم معزز الوكول ميس بَعُدِهِ مِنُ جُنُدٍ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنُزِلِيُنَ (٢٨) إِنْ كَانَتُ إِلَّا صَيُحَةً سے قرار ما ہے (24) اور ہم نے اس (کی شہاوت) سے بعد نقر اس کی قوم پرآ سان سے کوئی لشکر انا رااور ندی ہم کو (اتنی می بات کیلے لشکر) انا رنے کی وَّاحِـدَةً فَاِذًا هُمُ خَامِدُوْنَ (٢٩) يَحَسُرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيُهُمْ مِنُ رَسُولُ اِلْأ شرورے تھی (۲۸) وہ(سزا) تو سرف ایک مهیب آ واز (چکھاڑ) تھی جس ہے وہ ایک وم بچھ کررہ گئے (۲۹) افسوس ہے (ایسے) بندوں پر کہ جب بھی ان كَانَوُا بِهِ يَسْتُهُ زِءُ وُنَ (٣٠) اَلَـمُ يَـرَوُا كُمُ اَهْلَكُنَا قَبُلَهُمُ مِّنَ الْقُرُونِ اَنَّهُمُ کے پاس کوئی رسول آٹا ہے جو بیاس کا خماق اڑاتے ہیں (۳۰) کیا انہوں نے نیس ویکھا کہ ہم ان سے پہلے تنفی آو موں کو بلاک کر چکے ہیں إِلَيْهِ مُ لَا يَـرُجِعُونَ (٣١) وَإِنْ كُلِّ لَمَّا جَمِيْعٌ لَّذَيْنَا مُحْضَرُونَ (٣٢) وَ ايَةٌ (ہاں البتہ)وہ سب (ایک ہار)ہما رقبار رگاہ میں حاضر کئے جا تکج

لَّهُمُ الْاَرُضُ الْمَيْتَةُ. اَحْيَيُـنَهَا وَ اَخْـرَجُـنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ (٣٣) وَ اور (ہاری نشانیوں میں سے) ان کیلیے ایک نشائی وہ مروہ زمین ہے جسے ہم نے زندہ کر وا اور اس سے وانہ (غلم) تکالا جس سے جَعَلْنَا فِيُهَا جَنَتٍ مِّنُ نَخِيُلٍ وَّ اَعُنَابٍ وَّ فَجَّرُنَا فِيُهَا مِنَ الْعُيُونِ (٣٣) لِيَأْكُلُوا وہ کھاتے ہیں (٣٣) اور ہم نے اس (زمین) میں مجھوروں اور انگوروں کے باغات پیدا کے اور اس سے وہشے جاری ـنُ ثَـمَـرِهِ وَمَـا عَـمِـلَتُـهُ أَيُـدِيُهِمُ. أَفَلا يَشُكُرُونَ (٣٥) سُبُحانَ الَّذِي خَلَقَ کرویئے (۳۴) کروہ اس کے مجلوں سے کھا کیل حالا تک بیان کے باتھوں کی کارگز اری ٹین ہے کیا بیاوگ (اس پر بھی) شکراو آئین کرتے؟ (۳۵) الْازُوَاجَ كُلُّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ وَ مِنْ انْفُسِهِمْ وَ مِمَّا لَا يَعْلَمُونَ (٣١) وَ یا ک ہے دہ ذات جس نے سب اقسام کے جوڑے جوڑے پیدا کتے ہیں خواہ (نیا نا ت) ہو جھے زمین اگاتی ہے اخودان کے نفوس ہوں (بنی نوع انسان) ما ايَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ. نَسُلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَافَاهُمْ مُّظُلِّمُونَ (٣٤) وَالشَّمْسُ تَجُرِي وہ چیزیں ہوں جن کو یہ ٹیل جائے (۳۷) اور ان کیلیے ایک نشائی رات بھی ہے جس سے ہم ون کو مسخے لیسے میں تو ایک وم وہ اند چیر ہے میں رہ جاتے لِـمُسْتَـقَـرٌ لَهَـا. ذَلِكُ لَقَائِرُ الْعَزِيرُ الْعَلِيمُ ٣٨٪ وَالْقَمَرُ قَدَّرُنَاهُ مَنَازِلَ حَتّ این (۳۷) اور (ایک نشانی) سورج ہے واپے مقر راہ کافے (مدار) کی طرف چال رہا ہے اگروش کردہا ہے) پیاند از داس (خدا) کامقرر کیا ہوا ہے جوغالب ہے (احد) او عَادَ كَالْعُرُجُونِ الْقَدِيْمِ (٣٩) لَا الشَّمُسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تَدُرِكُ الْقَمَرَ وَلَا الْيُلْ علم ولا (١٨)اور (ايك نشاني) جارتهي سبيس كى بم في منزليل مقرر كروى إين بهال كك كروه (اخريس) تجويدكا يرفى شاخ كي المرج وجانا سبور المراج على الدون على سَابِقُ النَّهَارِ. وَ كُلِّ فِي فَلَكٍ يَّسُبَحُوُنَ (• ٣٠) وَ ايَةٌ لَّهُمُ آنًا حَمَلُنَا ذُرَّيَّتَهُمُ فِي بس میں ہے کہ چاند کوجا بکڑے اور شدی رات کیلیے ممکن ہے کہ وہ دن پر سبقت لے جائے اور سب (اپنے) ایک ایک فلک (داڑ ہ) میں تیررہے ہیں (۴۰) لمكِ الـمَشْحُونُ (١٣) وَ خلقنا لَهُمُ مِّنُ مِّثَلِهِ مَا يَرُكُبُوُنَ(٢٣) وَإِنْ نَشَ وران کیلئے (قدرت خدا کی) ایک نشانی یہ بھی ہے کہ ہم نے ان کی نسل کو بھری ہوئی کشتی (نوح) میں سوار کیا (۴) اور ان کیلئے (فقطی اور ڈی) میں کشتی کی لَعْرِقَهُمُ فَالْا صَرِيْحَ لَهُمُ وَلَا هُمُ يُنقَذُونَ (٣٣) إِلَّا رَحْمَةً مِّنَا وَ مَتَاعًا اللي یا ں پیدا کی ہیں جن پر وہ واردو تے ہیں (۴۳) دراگر ہم چاہیں آو اُنہیں غرق کردیں پھر ندکوئی ان کافریا درس ہوادرندی وہ چیٹر ایج جاسکیں (۴۳) تحریبہ کہ حِيْـنِ (٣٣) وَ إِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيْكُمُ وَمَا خَلَفَكُمُ لَعَلَّكُمُ تُو حَمُوْنَ ہماری رحمت (شامل حال) ہو جائے اورایک (خاص) وقت تک بہر ہ مند کرنا منظور ہو(۴۴)اور جنب ان سے کماجا تا ہے کرڈ رواس (انجام وعذا یہ

(٣٥) وَمَا تَأْتِيُهِمْ مِّنُ ايَةٍ مِّنُ ايَاتِ رَبَّهِمُ الَّا كَانُوْ اعَنُهَا مُعُرِضِيْنَ (٢٣) وَإِذَا جوتبهارے آگے ہادراس سے ڈروجوتبهارے بیچے ہے کہتم پر رقم کیاجائے (تو وہاس کی پر واڈبیس کرتے) (۴۵) اوران کے پر وردگا رکیا نشا نیوں میں سے کوئی قِيْلَ لَهُمُ أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا لِلَّذِيْنَ امَنُوْا أَنُطُعِمُ مَنُ لُو نشانی بھی ان کے باس ٹیس آئی محربہ کہ وہ اس سے روگر وائی کرتے ہیں (۴ م) اور جب ان سے کماجانا ہے کہ اللہ فے حمومیں جو پجھ عطا کیا ہے اس سے يَشَاءُ اللُّهُ اَطْعَمَهُ. إِنْ اَنْتُمُ إِلَّا فِي ضَلال مُّبيُن (٣٧) وَ يَقُولُونَ مَتْي هَذَا (کیجھ) راہ خدا میں بھی خرج کروقہ کافر اٹل ایمان سے کہتے ہیں کیا ہم اے کھلا کیں جے اگر خدا جابتا تو خود کھلا ویتا؟ تم لوگ کھلی ہوئی گمرای میں مبتلا الْـوَعُدُ إِنْ كَنْتُمُ صَلَّدِقِيْنَ (٣٨) مَا يَنَظُّرُونَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَأْخَذُهُمُ وَهُمُ ہو (۴۷)اوروہ (کافر) کہتے ہیں کراگرتم سے ہوتو بتاؤ کرید (قیامت کا)وعدہ دعید کب پوراہوگا؟ (۴۸) وہرف ایک مهیب آ واز (چکھاڑ) یعنی لفخ صور کا يَخِصِ مُونَ (٩٣) فَالْايَسُتَطِيْعُونَ تَوْصِيَةَ وَّلاْ اللي أَهْلِهِمْ يَرُجِعُونَ (٠٥) وَ انظار کررہے میں جوانیں اپنی گرفت میں لے لے گی جبکہ بیاوگ (اپنے معاملات میں) یا ہم لاجھٹز رہے ہوں گے(۴۹)(اس وقت) وہ زکوئی ومیت کر نَفِحَ فِي الصَّور فَافَا هُمْ مِنَ الْأَجَدَاثِ اللَّي رَبُّهُ مِينَ لِلَّهُ مَا يَنْكِلُوانَ ١٦ ٥) قَالُوا يَاوَيُلْنَا سکیں گے اور نہ ہی اپنے گھر والوں کی طرف واپس جاسکیں گے(۵۰) اور بنب (ووبارہ) صور پھوٹکا جائے گاتو وہ ایک وم اپنی قبروں سے (ٹکل کر) اپنے مَنْ ﴿ بَعَشْنَا مِنْ مَّرُقَدِنَا. هَذَا مَا وَعَدَ الرَّحُمَانُ وَ صَدَقَ الْمُرْسَلُوُ نَ (٢٠) إِنْ یر وردگا رکی طرف تیز تیز چلنے آئیں گے(۵۱) (اس وقت گھیرا کر) کمیں گے ہائے افسوس! کس نے جمیں ہاری خوابگا ہے اضامیا؟ (جواب ویا جائے گا) ہے كَانَتُ اِلَّا صَيُحَةً وَّاحِلَةً فَاإِذَا هُمُ جَمِيُعٌ لَّذَيْنَا مُحُضَرُوُنَ(٥٣) فَالْيَوُمَ لأ وی (قیامت) ہے جس کاخدائے رخمٰن نے وحدہ (وعید) کیا تھا اور دفیم ول نے بھی چھ کما تھا (۵۲) بس وہ ایک مہیب آ واز (چکھا ڑ) ہو گئ کھرسب کے تَـظَـلُمُ نَفُسٌ شَيْئًا وَّلاٰ تَجُزَوُنَ اِلَّا مَا كَنْتُمْ تَعُمَلُوُنَ(٥٣) اِنَّ اَصُحٰابَ الْجَنَّةِ ہارے حضور حاضر کر دیتے جاکیں گے(۵۳) پی آج کے دن کئی پر پچھ بھی ظلم نہیں کیا جائے گا اور وُم فِيُ شَعْلِ فَاكِهُونَ (٥٥) هُـمُ وَ أَزُوَاجُهُمْ فِي ظِلال عَلَى الْأَرَآئِكِ حمهیں بدلہ نبیں ویا جائے گا گر انہی اعمال کا جوتم کیا کرتے تھے(۵۴) بے شک آج ببشتی لوگ اپنے متخلہ میں خوش ہوں گے(۵۵) مُتَّكِئُونَ (٧ ٥) لَهُمُ فِيُهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمُ مَّا يَدَّعُونَ (٥٤) سَلَمٌ قَوْلًا مِنْ رَّبّ و ہاں ان کے (کھائے چنے) کیلئے (ہرخم کے) کیل

رَحِيْهِ (٥٨) وَامُتَازُو االْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجُرِمُونَ (٥٩) اَلَمُ اَعُهَدُ اِلَيْكُمُ يَا بَنِي ہوں گے اوروہ سب کچھ ہوگا جو وہ طلب کریں گے (۵۷) (آئیس)مہر یا ن (پروردگار) کی طرف سے سلام کماجائے گا (۵۸) (ارشاہ قدرت ہوگا) اے ا ذَمَ أَنُ لاَ تَعُبُدُوا الشَّيُطَانَ. إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ (٢٠) وَّأَن اعْبُدُونِي. هذَا مجرمو! الگ ہو جا دُ(۵۹) اے اولادِ آ دم! کیا میں نے حمہیں تھم نہیں دیا تھا کہ شیطان کی پرستش نہ کرما ؟ کہ وہ تمہارا کھلا ہوا وغمن ہے(۲۰) رَاطٌ مُّسِتَقِيُهُ (Y) وَلَقَدُ أَضَلَ مِنْكُمُ جِبِلًا كَثِيْـرًا. أَفَلَمُ تَكُونُوُا ہاں البتہ میری عباوت کرو کہ میں سیرھا راستہ ہے(۱۱) (اس کے باوجود) اس نے تم میں سے ایک تَعُقِلُوُنَ (٢٢) هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمُ تُوعَدُونَ (٢٣) اِصْلَوُهَا الْيَوُمَ بِمَا كُنْتُمُ کثیر گروہ کو گمراہ کر دیا کیا تم اتنا بھی ٹیمن سجھتے تھے؟(۱۲) ہے ہے وہ جہنم جس سے حمہیں ڈرملا جانا قنا(۱۳) تَكُفُرُ وُنُ(٢٣) ٱلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَى ٱفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَاۤ ٱيْدِيُهِمْ وَتَشْهَدُ ٱرُجُلَهُمْ آج اپنے کفر کی ما واش میں اس میں واشل ہو جاؤ (اور اس کی آگ تا ہو) (۱۴) آج ہم ان کے مونہوں پر میر لگا ویں مجے اور ہم سے ان کے ہاتھ بِمَا كَانُوْ ا يَكْسِبُو نَ ١٥١ ﴿ وَ أُو نَشَآءُ لَطْمَسُكُ عَلَى أَعْلِيْهِمْ فَاسْتَبِقُو ا الصِّواطَ کلام کریں گے اوران کے پاؤل کوائی ویں گے اس کے بارے ٹس جو کچھوہ کیا کرتے تھے؟ (14) اوراگر ہم چاہتے تو ان کی آتھوں کومٹا ویتے پھروہ فَأَنِّي يُبُصِرُوُنَ(٢٢) وَلُو نُشَاءُ لَمَسَخَنَهُمُ عَلَى مَكَانَتِهِمُ فَمَا اسْتَطَاعُوُا راست کی طرف ووڑتے تو ان کو کہاں نظر آ ۲۴ (۲۲) اور اگر ہم چاہج تو آئیں ان کی جگہ پر منح کرکے رکھ ویتے مُـضِيًّا وَّلاَ يَرُجعُوُنَ(٧٤) وَمَنُ نُعَمِّرُهُ نُنَكِّسُهُ فِي الْخَلْقِ. اَفَلاْ يَعُقِلُوُنَ(٧٨) کرندآ گے برد دیجے لیٹ سکتے (۲۷) اور جس کو ہم کمی محمر دیتے ہیں اسے خلقت (ساخت) میں الث دیتے ہیں کیا وَمَا عَلَمُنَاهُ الشِّعُرَ وَمَا يَنْبَغِيُ لَهُ. إِنَّ هُوَالًا ذِكُرٌ وَّ قَرُانٌ مُّبِيُنَّ (٢٩) لِّيُنَذِرَ مَنُ و وعلى سے كام بيل يعيد ؟ (١٨) اور بم في أبيس شعروشا حرى نبيل سكما في اور ندى بيان ك شلان شان ب بياتو بس أيك تصيحت اور واضح قرآن كَانَ حَيًّا وَّ يَـحِقَّ الْقَوُلُ عَلَى الْكَافِرِيُنَ (٠ ك) أَوَلَمْ يَرَوُا انَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا ہے(۲۹) ٹاکہ آپ (اس کی وربعہ سے) اُٹیل وراکی جو زندہ (ول) میں اور ٹاکہ کافروں پر ججت تمام ہو جائے(۵۰) تُ ايُدِينا انْعَامًا فَهُمُ لَهَا مَالِكُونَ (١ ٤) وَ ذَلَّلْنَهَا لَهُمُ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمُ وَ

يَأْكُلُونَ (٢٢) وَلَهُمُ فِيُهَا مَنَافِعُ وَ مَشَارِبُ. اَفَلا يَشَكُّرُ وُنَ (٣٣) یں (۷) اور ہمنے ان (مویشیوں) کوان کا علی کر مالے ہے ان میں سے بعض پر وہوارہ وتے ہیں اور بعض کا کوشت کھاتے ہیں (۷۲) اور ان کیلیے ان میں اور بھی ذُوُا مِنْ **دُ**وُنِ اللَّهِ الِهَةُ لَعَلَّهُمْ يُنْصَرُونَ (٤٣) لَا يَسْتَطِيْعُونَ نَصُرَهُمُ کے فائد ساور پینے کی چیزیں (ووورو وغیر و) بھی بیل آد کیا بیادگ شکراو آئیل کرتے؟ (۲۲)ا در کیا انہوں نے اللہ کو چھوڑ کراور خدامنا کئے بیل کرشامیدان مُ لَهُمُ جُنَدٌ مُحُضَرُوُنَ (٥٥) فَلا يَحُزُنُكَ قَوْلُهُمُ إِنَّا نَعُلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَ کی مدولی جائے گی (۴ مے)حالا تکدوہ ان کی (سیج بھی) مرفیعس کرسکتے (بلکہ)وہ (کفار)ان (بٹوں) کی تفاعلت اوران کے (وفاع) کیلیجھاضر یاش کشکر میں (۵۵) لِنُوُنَ (٧٧) أُوَلَمُ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَا خَلَقَنَاهُ مِنْ نَطَفَةٍ فَاذًا هُوَ خَصِيُّمٌ (استه فیمر)ان لوکول کی باغس آپ کورنجیده ندگریں بے شک ہم خوب جانتے ہیں جو پھوہ چھاتے ہیں اورجو پھوہ خام کرتے ہیں (۲۷) کیاانسان پیٹیل و مجھاڑا اس بيُنٌ (٧٧) وَ ضَرَبَ لَنَا مَثَلاً وَّ نَسِيَ خَلَقَهُ. قَالَ مَنُ يُحُى الْعِظَامُ وَهِيَ ں کرتا) کرہم نے اسے نطفہ سے پیدا کیا ہے مودو دیکا کی (ہمارا) کھلا ہوا کا لف بن گیا (۷۷)دوہمار ہے لئے مثالیں فیش کرتا ہےا درا بی خلقت کو جُ (٨٨) قُلُ يُحْيِبُهَا (لَذِي أَنْشَاهَا أَوَّلَ مُرَّةٍ. وَهُوَ بِكُلَّ خَلُق عَلِيُمٌ (٩٧) بحول گیا ہے وہ کہتا ہے کہ ان بڈیوں کوکون زندہ کرے گا جبکہ وہ الکل بوسیدہ ہو چکی ہوں؟ (۸۷) آپ کہرو پیجنے! انہیں وی (شد اودیا رہ) زندہ کرے گا لِذِيُ جَعَلَ لَكُمُ مِّنَ الشَّجَرِ الْآخَضُرِ نَارًا فَإِذْاۤ أَنْتُمُ مِنَّهُ تُوُقِدُوُنَ(٥٠) ں نے انبیں پہلی بار پیدا کیا تھا وہ ہر کلوق کو خوب جانتا ہے (۹۷) (خد ۱) جس نے تمہار ملے سر مرزور خت ہے آگ پیدا کی ہےا سے (اور) آگ اَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُواتِ وَالْاَرُضَ بِقَادِرِ عَلَى اَنْ يَخُلُقَ مِثْلَهُمُ بَلَى وَ هُوَ ہو(۸۰) کیا وہ (گا ورمطلق) جس نے آ سا نوں اورزین کو پیدا کیا اس بات پر گا ورٹیل ہے کہ ان (لوکوں) جیسے (ووبا رہ) پیدا کر ہے؟ ہاں وہ پڑا لَخَلَقُ الْعَلِيُمُ (١٨) إِنَّمَا أَمُرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَّقُولُ لَهُ كُنُ فَيَكُونُ (٨٢) نے والا (اور) پڑا جائے والا ہے(۸) اس کا معاملہ تو بس بول ہے کہ جب وہ کسی چیز کے پیدا کرنے کا ارادہ کرتا ہے تو کہرویتا ہے کہ ہوجاتو وہ فَسُبُحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُونُ كُلِّ شَيْءٍ وَّ اِلَّيْهِ تُرْجَعُونَ (٨٣)

(فوراً) ہوجاتی ہے(۸۲) پس باک ہوہ وات جس سے جمعہ قدرت میں ہرجیز کی حکومت ہوادرای کی طرف تم لونائے جا و کے (۸۳)

۲_ سوره رحمن اوراس کی فضیلت

(۱) حضرت امام جعفر صادق القليلائت مروى ہے، فرمایا: جو خص سورہ رحمان پڑھے اور ہر ﴿ فَهِ اَيّ الآءِ

رَبِّ كُمَا تُكَذِّبانِ ﴾ كے بعد ﴿ لا بِشَيْعِ مِنْ آلا فِرْكَ رَبِّ الْكَذِّبُ ﴾ پڑھا آگر رات
میں پڑھے اور پھراس رات وفات پا جائے تو اس كی موت شہادت كی موت ہوگی اور اگر دن میں
پڑھے اور پھراس دن وفات پا جائے تو اس كی موت شہادت ہوگی۔ (مصباح کفعمی)

را سے اور سول خداصلی اللہ عليہ وآلہ و سلم ہے منقول ہے، فرمایا: ہرچیز کے لیے ایک عروس ہوتی ہوتی ہو رہے اور سورہ رحمٰن عروس ہوتی ہوگی۔ اور سورہ رحمٰن عروس ہوتی ہوتی ہے۔ اور سورہ رحمٰن عروس القرآن ہے۔ (مجمع الحسنات)

(۴) حضرت امام جعفرصا دق الطفالاسے مروی ہے کہ بروز قیامت سورۂ رحمٰن خوبصورت شخص کی شکل میں اٹھے گی اورا ہے پڑھنے والے کی سفارش کر کے جنت میں دافل کرائے گی۔(الباقیات الصالحات)

مورهٔ رحمٰن میہے:

SIB THING M

(شروع كرنا بول)الله كمام سے جويز امپريا ن نہايت رقم والا ہے۔

الرَّحُمنُ (۱)عَلَّمَ الْقُرُانَ (۲) خَلَقَ الْإِنْسَانَ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ (۳) اَلشَّمُسُ وَالْقَمَرُ الرَّحُمنُ (۱) غَلَمَ الْقُرُانَ (۲) خَلَقَ الْإِنْسَانَ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ (۳) اَلشَّمُسُ وَالْقَمَرُ عَلَا (١) اَلْ اَخْيِرَ عَالَ (١) اَلْ اَخْيرَ عَالَ (١) اَلْ اَخْيرَ عَالَ (١) اللَّهُ عَلَا (١) اللَّهُ عَلَا (١) اللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَا

· 多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多多

تُكَدِّبان (١٣)خَـلَقَ الإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالَ كَالْفَخَّارِ (١٣)وَ خَلَقَ الْجَآنَ مِنُ اس نے انسان کو تھیکر ہے کی طرح کھنگھناتی ہوئی مٹی ہے پیدا کیا (۱۴) اور جنات کو پیدا کیا آگ مَّارِج مِّنُ نَّارِ (١٥)فَبِاَيِّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبان (١٢)رَبُّ الْمَشُوقَيُن وَ رَبُّ کے شعلہ کے اول اس (اے جن واٹس)تم اپنے پروردگارگی کن کن فعتوں کو تبطلاؤ کے: (۱۲) وہی دونوں شرقوں کاپروردگار ہے دونوں مغربوں کا الْمَغُوبَيُن(١٤)فَباَيّ الآَّءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبان(١٨)مَرَ جَ الْبَحُرَيُن يَلْتَقِيل(١٩)بَيُنَهُمَا ما لک و پروردگارہ(۱۷)سو(اے جن واٹس)تم اپنے پروردگاری کن کن فعقوں کوشلا وُکے: (۱۷) ک نے و صاچاری کئے جوآ کیس میں ٹل ہے ہیں (۱۹)ان بَـرُزَخٌ لاَ يَبُغِيلِن (٢٠)فَبِـاَيّ اللَّهِ رَبُّكُـمَا تُكَذِّبان (٢١)يَـخُـرُ جُ مِنْهُمَا الْلَؤُلُؤُ دونوں کے درمیان ایک فاصلہ ہے جس سے وہ تجاوز نہیں کرتے (۴) سو(ا ہے جن واٹس)تم اپنے پروردگاری کن کن فعتوں کو تبطلا وسے؟ (۴) ان دونوں وَالْمَرُجَانُ (٢٢)فَبِاَيِّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبان (٢٣)وَلَـهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئْتُ فِي دریا وں سے موتی ورمو تکے نگلتے ہیں (۲۲)سو (اے جن واٹس)تم اپنے پروردگار کی کن کو بھتو ں کوجٹلا وُ سے؟ (۲۳)ورای کے لئے وہ (جہاز) ہیں جو الْبَحُرِ كَالْاَعُلَامِ (١٣٠) فَلِمَانَي اللَّهِ رَبُّكُمْ اللَّكِذِبَانِ (١٥٠) كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَان (٢٦) سمندروں میں پہاڑوں کی طرح اٹھے ہوئے ہیں(۲۴۷) سو(اسے حن واٹس)تم اپنے پروردگار کی کن گونفتتوں کو جنٹلاؤ کے (۲۵) جو بھی روئے زیمن پر ہیں وَّ يَبُـقٰي وَجُهُ رَبَّكَ ذُو الْجَلال وَ الْإِكْرَ (١٤٩) فَبـاَيّ الْأَءِ رَبَّكُمَا تُكَذِّبان (٢٨) وہ سب فناہونے والے ہیں (۲۷)ورآپ کے بروردگارئی ذات ما قی رہے گی جوعظمت دا کرام دانی ہے ۔ (۲۷)تم اپنے بروردگار کی کن کن نعمتوں کو يَسْئَلُهُ مَنْ فِي السَّمُواتِ وَالْارُضِ. كُلِّ يَوُم هُوَ فِي شَأَن (٢٩) فَبِأَيِّ اللَّهِ تجٹلاؤ کے؟ (۱۸) آ سانوں اورزین میں جوبھی ہیں ای ہے(اپی حاجتیں) مانگتے ہیں وہ ہرروز (بلکہ ہر آ ن)ایک نئی شان میں ہے(۲۹) رَبُّكُمَا تُكَذِّبان (٣٠) سَنَفُرُغُ لَكُمُ أَيُّهَ النَّقَلَن(٣١) فَبِـاَىّ الْآءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبان پس تم اپنے پر وردگار کی کن نعمتوں کو جھٹلاؤ کے؟ (۳۰)اے جن وانس ہم عنقر یب (تہماری فبر لینے کیلئے)تمہاری طرف متوجہ و نےوالے ہیں (۳۱) تم (٣٢) ينا مَعُشَـرَ اللَّجِنِّ وَالْإِنْسِ إِن اسْتَطَعُتُمُ أَنُ تَنْفُذُوا مِنُ اَقَطَارِ السَّمَواتِ اینے پروردگا رکی کن کن فعتوں کو مجٹلا ؤ گے؟ (۳۲) اے گرو ہ جن وانس! اگرتم ہے ہوسکے تو تم آسانوں اور زمین کی حدود ہے ہا ہرنگل وَ الْاَرُ صَ فَانُـ فُذُوا . لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلُطْنِ (٣٣) فَبِـاَيِّ اللَّهِ رَبِّكُمَا تَكَذِّبان جا وُ(لیکن)تم طاقت اورزور کے بغیر نیس نگل کتے (۳۳) ہے اور لیکن کن کمن کمن بغیر نیس نگل کتے (۳۴)تم

(٣٣) يُـرُسَـلُ عَـلَيُكُمَا شُوَاظٌ مِّنُ نَّارٍ. وَّ نُحَاسٌ فَلاَ تَنْتَصِران(٣٥) فَباَيّ الآَّءِ دونوں پر آ گیا شعلہ اور دھواں جھوڑا جائے گا پھرتم اپنا بچا ؤ نہ کرسکو گے (۳۵) متم اپنے برور دگا رکی کن کعن تعتوں کو حبطلا وَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبان (٣٦) فَاِذَا النُشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتُ وَرُدَةً كَالِدَهَان (٣٤) ے؟ (٣٦) (اس وقت کیاعالت ہوگی)جب آسمان پھٹ جائے گااور (رنگے ہوئے)سر خچیز ہے کی طرح لال ہوجائے گا (٣٤)ثم اپنے فَبَايٌ الْأَءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبان (٣٨) فَيَوُمَئِذٍ لَّا يُسْئَلُ عَنُ ذَنْبَةٍ اِنْسٌ وَّلَا جَآنَّ (٣٩) پروردگا رکی کن کن فعقوں کو تجٹلا وُ سے؟ (۳۸) پس اس دن کسی انسان یا جن ہے اس کے گیا ہ کے متعلق سوال نہیں کیا جائے گا (۳۹) تم اپنے فَبَايَ الْآءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبان(٣٠) يُعُرَفُ الْمُجُرِمُونَ بِسِيِّمْهُمْ فَيُؤَخَذَ بِالنَّوَاصِي پر و ردگا رکی کن کن نعتوں کو جمثلا وَ سے؟ (۴۰) بجرم اپنے چہروں (اپنی علامتوں) سے پیچان لئے جائیں گےاور پھر چیژانیوں اور پا وک سے پکڑے جائیں وَ الْاَقُدَامِ (٣١) فَبِـاَيِّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْان (٣٢) هـذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا ے (ورجہنم میں پھینک دیئے جائیں سے)(m) سرتم اپنے پروردگارئی کن کن فعتوں کو تجٹلاؤ سے؟ (m) بہی وہ دوزخ ہے جے مجرم لوگ جٹلایا کرتے المُجُرِمُونَ (٣٣) لِكُا وُفُونَ بَيَّاهَا وَلَيْلَ خَمِيْمِ الرَّاسِ فَهِـاَى اللَّهِ رَبُّكُمَا تے (۳۳) کوہ (مجرم)اں (دوزخ) وہ اس کا نتہائی کھولتے ہوئے اِٹی کے درمیان گردش کرتے رہیں سے (۴۳) کیس اے جن وانس! ستم اپنے پروردگاری تُكَذِّبان (٣٥) وَلِـمَـنُ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتٰن (٣١) فَبِـاَىَّ الْأَءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبان کن کن نعتوں کو جٹلاؤ کے '(۴۵) اور چوکٹس اپنے پروردگاری ہا رگاہ میں حاضری ہے ڈرنا ہاں کیلئے ددیا غ ہیں (۴۷) پس تم اپنے پروردگاری کن کن (٣٤) ذَوَاتَا اَفُنَانِ (٣٨) فَبِـاَيّ اللَّهِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبانِ(٣٩) فِيُهِـمَا عَيُنْنِ تَجُريلن نعتوں کو تبطلاؤ کے ؟ ((۴۷) دونوں ہائے بہت ی شاخوں والے (۴۸) پس تم اپنے پروردگاری کن کن فعتوں تبطلاؤ کے؟ (۴۹)ان دونوں ہا (٥٠) فَبِاَيِّ اللَّهِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِان(٥١) فِيهِمَا مِنْ كُلَّ فَاكِهَةٍ زَوُجْنِ (٥٢) فَبِاَي غوں میں دوچشے جاری ہوں گے(۵۰) پس تم اپنے پروردگار کی کن کن فعتوں کوجیٹلا وسے؟ (۵۱)ان دونوں باغوں میں ہر پھل کی دونتمییں ہو الْأَءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبْان(٥٣) مُتَّكِئِينَ عَلَى فَرُش ۚ بَـطَآئِنَهَا مِنُ اِسْتَبُرَقِ. وَّجَنَا ں گی (۵۲) پس تم اپنے پر وردگار کی کن کن فعتوں کو تجٹلاؤ کے؟ (۵۳)و والیے بچھونوں پر تکیہ لگائے بیٹھے ہوں گے جن کے استر دبیز رکیٹم کے الْجَنَّتَيُن دَان (٥٣) فَبِاَيِّ الْآءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبان(٥٥) فِيُهِنَّ قَصِراتُ الطَّرُفِ لَمُ

پس تم اپنے پروردگار کی کن کن فعتوں کو جمثلاؤ کے؟ (۵۵)

اور دونوں باغوں کے ت<mark>یار پھل</mark> (ان کے)

يَـطُمِثُهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمُ وَلَا جَآنٌ (٥٦)فَباَيّ الآءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبان (٥٤) كَانَّهُنَّ بہت ہی نز دیکے ہوں گے (۵۲) پس تم اپنے پروردگا رکی کن کن افعقوں کو جھٹلاؤ گے؟ (۵۷)ان جنتوں میں نیچی نگا دوانی (حوریں)ہوں گی جن کو اقُونُ وَالْمَرُجَانُ (٥٨) فَبِاَيّ الآءِ رَبّكُمَا تُكَذِّبان(٥٩) هَلُ جَزَآءُ ن (جنتیوں) سے پہلے نکسی انسان نے جیمواہو گااور نہ کسی جن نے (۵۸) ہیں تم اپنے پروردگار کی کن کو نفتوں کو تبطلا وکیے '(۵۹) و (حوریں) لیمی ہوں الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانِ (١٠) فَبِأَى الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبانِ (١١) وَمِنْ دُونِهِمَا میا قوت اورمر جان (۲۰) پس تم اپنے پروردگار کی کن کن فعمتوں کو مجتلا وُ سے؟ (۲۱) فیلی کا بدلہ نیکی کے سوااور کہاہے جَنَّتُن (١٢)فَباَى اللَّهِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبان (١٣) مُدُهَآمَّتُن (١٣) فَباَى اللَّهِ رَبُّكُمَا ؟ (٦٢)) پس تم اپنے پروردگار کی کن کن فعمقوں کو تبطلا وکے؟ (٦٣) ان دونوں باغوں کےعلاوہ دو باغ ورکھی ہیں (٦٣) پس تم اپنے پروردگار کی کن کن فعمقوں کو تُكَذِّبان(١٥) فِيُهِـمَا عَيُنْن نَصَّا خَتْن (٢٢) فَبِـاَىّ الْأَءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبان (٢٤) سے (۱۵) دو نوں گہرے سِزسیای مائل (۲۷) پس تم اپنے پر وردگا رکی کن کو نفتوں کو قبطلا ؤ سے ؟ (۲۷) ان دویاغوں میں دو چشمے ہوں ا فَاكِهَةٌ وَ نَلُحُلُ وَّرُهَانُ (١٨) فَلِمَى الْأُءِ رَبِّكُ مُمَا تُكَذِّبان (١٩) فِيهُنَّ گے جو**ش م**ارتے ہوئے (۲۸) پس تم اینے ہروردگاری کن کن افعتوں کو قبطلاؤ کے؟ (۲۹) ان میں پھل، خَيْراتٌ حِسَانٌ (٧٠) فَبِاكِي الآءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبان (١١) حُورٌ مَّقُصُوراتٌ فِي تحجورا و را ما رموں گے(۷۰) پس تم اپنے پرور د گار کی کن کن نعمتوں کو تبطلا ؤ گے؟ (۷۱) ان میں اچھی سیرت وصوروالی (حوریں) الْخِيَامِ (٤٢) فَبِاَيِّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبان (٤٣) لَـمُ يَـطُمِثُهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَكا پس تم اپنے پر ور دگار کی کن کن کو فعتوں کو تبطلا ؤ گے؟ (۷۳) ان (جنتیوں سے پہلے کسی انسان یا جن نے انہیں جھوا جَآنٌ (٤٣)فَباَيّ الآِّءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبان (٤٥)مُتَّكِئِينُ عَلَى رَفَرَفٍ خَضرٍ وَّ بھی نیس ہوگا (۷۴) پس تم اپنے پر وردگار کی کن کن نعمتوں کوجٹلا وُ گے؟ (۷۵)وہ (جنتی لوگ) سبزرنگ کے چھونوں اورخوبصورت گدوں پر عَبُقُرِي حِسَان (٧٦) فَبِاَى اللهِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبان (٧٤) تَبارَكَ اسْمُ رَبَّكَ ئے بیٹے ہوں گے (۷۱) کہل تم اپنے پر وردگار کی کن کن فعتوں کو تبتلا ؤگے؟ (۷۷) بابر کت ہے تبہا رہے پر وردگار کا م جو برزی الُجَلْلِ وَالْإِكْرَامِ(٧٨)

٣ سورة واقعداوراس كي فضيلت

(۱) بعض اخباروآ ٹارے واضح و آشکار ہوتا ہے جو حضرت رسول خداصلی اللہ علیہ و آلہ وسلم ہے مروی بیں فر مایا: جو شخص نماز عشاء کے بعد سور کو اقعہ کی تلاوت کیا کرے و فقر و فاقہ ہے محفوظ رہتا ہے۔ (زا دالمعاد)

(۲) حضرت امام جعفر صادق الطبيع سے مروی ہے ،فر مایا : جو تحض ہر رات سونے سے پہلے سورہ واقعہ پڑھا کرے تو قیا مت کے دن جب اپنے پروردگار کی بارگاہ میں حاضر ہوگا تو اس کا چہرہ چو دہویں کے جاند کی طرح چیکتا ہوگا۔ (ایصناً)

(۳) حضرت امام جعفر صادق الطبی ہے مروی ہے کہ جس شخص کو جنت کی نعمتوں کا اثنتیاتی ہوو ہ سورہُ واقعہ پڑھے۔(مصباح کفعمی)

سورهٔ واقعه پیه:

SIBITIANIAMOM

(شروع كرما بول) الله كما م د جويد اجريان نهايت رحم والا ب-

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ (1) لَيْسَ لِوَقَعَتِهَا كَاذِبَةٌ (٢) خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ (٣) إِذَا وَقَعَتِهَا كَاذِبَةٌ (٢) خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ (٣) إِذَا مِبَالَةِ مِونَيْنَ مِونَ مِن الْجَبَالُ بَسَّا (۵) فَكَانَتُ هَبَآءٌ مُّنبَثًا (٢) وَجَسِ الْجَبَالُ بَسَّا (۵) فَكَانَتُ هَبَآءٌ مُّنبَثًا (٢) الله وَالْ الله وَالْ الله وَالْ الله وَالله وَاله

قَلِيُلَ مِّنَ الْأَخِرِيُنَ (٣) عَلَى سُرُر مَّوُضُونَةٍ (١٥) مُّتَّكِئِينَ عَلَيْهَا ہوگی (۱۳)اور بہت تھوڑے پیچھلوں میں ہے ہوں گے (۱۴) مرضع مختو ل پر تکمیا گائے (۱۵) آ منے ہامنے بیٹھے ہوں گے (۱۲)ان کے باس ایسے مُتَقَبِلِيُ نَ (١٦) يَـطُو فُ عَلَيْهِمُ ولُدَانٌ مُّخَلِّدُونَ (١٤) بِأَكُوابٍ وَ أَبَارِيُقَ. غلان (نوخیزلڑکے) ہوں محے جو ہمیشہ غلان ہی رہیں محے (۱۷) (شراب طہورہ محرے ہوئے) آبخو رہے آفتا ہے اور یا ک وصاف شراب کے پیا وَكَأْسِ مِّنُ مَّعِيْنِ (٨ ١) لَا يُصَدَّعُونَ عَنَهَا وَلَا يُنَزِفُونَ (٩١) وَ فَاكِهَةٍ مِّمَّا لے (میعنی جام ہمراحی سپوومراغر) لئے گر دش کررہے ہوں گے (۱۸) جس سے ندور مرہو گااور نیفنل میں فتو رآئے گا (۱۹)اورو و(غلمان) طرح طرح يَتَخَيَّرُونَ (٢٠) وَ لَحُم طَيْرِ مِّمًا يَشْتَهُونَ (٢١) وَ حُورٌ عِيْنٌ (٢٢) كَامُثالِ کے پیل پیش کریں گے وہ جے جامیں چن کیس (۲۰) اور پر بغروں کے گوشت بھی جس کی وہ خواہش کریں گے(۲۸)(اورمان کیلئے) گوری رنگت دالی خزال اللَّوَ لَوْ الْمَكَّنُوُن (٢٣) جَزَآءً ٢٠ مَا كَانُوْا يَعُمَلُوْنَ (٢٣) لَا يَسُمَعُوْنَ فِيُهَا چیٹم حوریں بھی ہوں گی (۲۲) جو چھا کرر کھے ہوئے ہو تیوں کی طرح (حسین) ہوں گی (۲۳) پیرسب پچھان کے ان اعمال کی جز اہے جوہ ہ کیا لَغُوًا وَلَا تَـأَثِيُـمًا (٧٥) إلَّا قِيلًا سَلَمًا سَلَمًا (٢٧) وَ أَصَحْبُ الْيَمِينِ . مَآ تے تھے (۲۴۷)و ہاس میں کوئی فضول اور گنا دوالی بات نہیں سنیں سے (۲۵) نگر صرف سلام و دعا کی آ وا ز آئے گی (۲۷)اورو ہ دا کیں ہاتھے وا اصُحْبُ الْيَمِيُنِ (٢٧) فِي سِدْرِ مَّخَضُودٍ (٢٨) وَّ طَلْح مَّنْضُودٍ (٢٩) وَ لے اورو ہ دائیں والے کیاا چھے ہیں (۲۷)وہ الیمی ہیری کے درختوں میں ہوں سے جن میں کا نے ٹیمیں ہوں سے (۲۸)اورتہہ بہتر کیلوں میں (۲۹) ظِلَّ مَّمُدُودٍ (٣٠) وَّمَآءٍ مَّسُكُوب (٣١) وَّ فَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ (٣٢) لَّا مَقُطُوعَةٍ اور(دورتک) سیلیموئے سابوں میں (۳۰)اور بہتے ہوئے مانی میں (۳۱)اور بہت سے بھلوں میں (۳۲)جونہ بھی قتم ہوں گےاور نہ کوئی وَّلا مَـمُـنـوُعَةٍ وَّ فَـرُش مَّـرُفُوعَةٍ (٣٣) إِنَّا أَنَشَانُهُنَّ إِنَشَاءً (٣٥) فَجَعَلْنَهُنَّ روک ٹوک ہو گی (۳۳)اوراو نیچ بچھونوں پر ہوں گے(۳۴)ہم نے (حوروں) کوخاص نے سرے سے پیدا کیا ہے(۳۵) پھران کو أَبُكُارًا (٣٢) عُـرُبًا أَتُـرَابًا (٣٤) لِلصَّحْبِ الْيَمِينِ (٣٨) ثُلُةُ مِّنَ کنواریاں بنایا ہے(۳۷)(اور) پیارکرنے والیاں اور جمعمر ہیں (۳۷) پیرسب تعتیں دائیں ہاتھ والوں کے لئے ہیں (۳۸)ایک بڑی ٱلْأَوَّلِيْنَ(٣٩) وَ ثَلَّةً مِّنَ ٱلْأَخِرِيْنَ (٠٠) وَ أَصُحْبُ الشِّمَالِ . مَآ أَصُحْبُ جماعت اگلوں میں ہے(۳۹)اورا یک بڑی جماعت پچھلوں میں ہے ہے(۴۸)اور بائیں ہاتھ والے اور کیا ہرے ہیں بائیں ہاتھ وا

الشِّـمَالِ (١٣) فِي سَمُوم وَ حَمِيْم (٢٣) وَ ظِلِّ مِّنُ يَحُمُوم (٣٣) لَا بَارِدٍ لے(۴۱) وہ لوکی لیٹ (سخت تپش) اور کھو لتے ہوئے مانی (۴۲) اور سیا ہ دھو کیں کے سابیہ میں ہو ں محے(۴۳) جو نہ شعنڈا ہو گا وَّلَا كُـرِيْــم (٣٣) إنَّهُمُ كَانُوُا قَبُلَ ﴿ لِكَ مُتُرَفِيْنَ (٣٥) وَكَانُوُا يُصِرُّوُنَ عَلَى اور نہ نفع بخش(۴۴)(کیو نکہ) وہ اس ہے پہلے(دنیا میں) خو شحال(او رعیش و عشرت میں) تھے(۴۵) الْحِنْتِ الْعَظِيْمِ (٢٣) وَكَانُوا يَقُولُونَ . اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَ عِظَامًا ءَ إِنَّا ے گنا ہراصرارکرتے تھے (۴ ۴)اور کہتے تھے کہ جب ہم مرجا ئیں گےاورٹی اور بٹیاں ہوجا ئیں گےتو کیا ہم دوبا رہاٹھائے جا ئیں لَـمَبُـعُوْثُونَ (٣٤) أَوَابَآؤُنَا الْأَوَّلُونَ (٣٨) قُلُ إِنَّ الْأَوَّلِيْنَ وَالْأَخِرِيْنَ (٩٩) عے؟ (١٤) اور كيا ہما رے پہلے باپ وا وا بھي (اٹھائے جا كيں عي؟) (١٨) آپ كهدو يجئے! كربے ثنك الكلے اور پچھلے (٢٩) لَمَجُمُوعُونَ . اِلِّي مِيْقَاتِ يَـوُم مَّعُلُوم (٥٠) ثُمَّ اِنَّكُمُ أَيُّهَا الضَّآلُونَ پھرتم اے گمراہواور جھٹلانے سبایک دن کے قرروفت یرا کھے کئے جا کیں مے (۵۰) الْمُكَذِّبُونَ (١٥) ﴿ كِلْوُنَ مِنْ هَاجً تم (ملخزین درخت) زقوم ہے کھا ؤ گے(۵۲) الْبُطُورُنَ (٥٣) فَشْرِبُورُنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ (٥٣) فَشْرِبُونَ شَرُبَ الْهِيْمِ (٥٥) اوراویرے کھولٹا ہوایاتی بیو کے (۵۴) جس طرح سخت پیاہاونٹ (بے تحاشا) باتی ہیتے ہیں (۵۵) هَـذَا نُـزُلُهُمْ يَوُمَ الدِّيُن (٧٦) نَحُنُ خَلَقُنكُمْ فَلَوُلَا تُصَدِّقُونَ (٥٤) اَفَرَءَ يُتُمُ جزاوسرا کے دن بیان کی مہمانی ہوگی (۵۲)ہم نے ہی حمہیں پیدا کیا ہے پھرتم (قیا مت کی) تقعدیق کیوں ٹییں کرتے ؟ (۵۷) کیاتم نے بھی مَّا تَمُنَوُنَ (٥٨) ءَ أَنْتُمُ تَخُلُقُو نَهُ أَمُ نَحُنُ الْخَلِقُونَ (٥٩) نَحُنُ قَدَّرُنَا بَيُنَكُمُ غو رکیاہے کہ جونطفہ تم ٹیکاتے ہو (۵۸) کیاتم اے (آ دمی بناکر) پیدا کرتے ہویا ہم پیدا کرنے والے ہیں (۵۹)ہم نے ہی تہارے درمیان الْـمَوُّتَ وَمَا نَحُنُ بِمَسْبُوُقِيُنَ (٢٠) عَلَى أَنْ نَبَدِّلَ أَمُثَالَكُمُ وَ نَنْشِئَكُمُ فِي مَا سوت (کانظام) مقر رکیا ہے اور ہم اس سے عاجز نہیں ہیں (۱۰) کہ ہم تمہاری جگرتم جیسے اور لوگ پیدا کردیں اور تم کوالی صورت میں (یا ایسے لَا تَعُلَمُونَ (١١) وَلَقَدُ عَلِمُتُمُ النَّشَّاةَ الْأُولِي فَلَوْ لَا تَذَكَّرُونَ (٢٢) عالم میں) پیدا کر دیں جس کوتم نہیں جا نے(۱۷)اورتم (اپنی) پہلی پیدائش کوتو جانتے ہی ہو پھرتھیجت کیوں نہیں حاصل کرتے؟ (۶۲)

اَفَوَءَ يُتُمُ مَّا تَحُوثُونَ (٣٣) ءَ اَنْتُمُ تَزُرَعُونَهُ اَمُ نَحُنُ الزُّرِعُونَ (٣٣) لَوُ نَشَآءُ كياتم في بمحي فوركيا ہے كتم جو يچھ (ع) يو تے ہو (١٣) كياتم ال كوا گاتے ہويا ہم اگانے والے بين (١٣) اگر ہم چا بين آو لَجَعَلُنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمُ تَفَكُّهُو نَ (٧٥) إِنَّا لَمُغُرَمُونَ (٧٢) بَلُ نَحْنُ اس (پیداوار) کو (مُشک کرکے)چوراچورا کردیں توثم ہاتیں بناتے رہ جا وُ (۱۵) کہ ہم رہنا وان پڑ گیا (۲۷) بلکہ ہم بالکل مَحُـرُوُمُوُنَ (٧٤) اَفَرَءَ يُتُمُ الْمَآءَ الَّذِي تَشُرَبُوُنَ (٧٨) ءَ اَنْتُمُ اَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ روم ہو گئے (۲۷) کیاتم نے بھی غور کیا ہے کہ وہ اپنی جوتم پیتے ہو (۲۸) کیاتم نے اسے با دل سےا تارا ہے یا لُمُ زُن أَمُ نَحُنُ الْمُنَازِلُونَ (٢٩) لَوُ نَشَاءُ جَعَلَنَاهُ أَجَاجًا فَلُولًا ہم (اس کے)اٹا رنےوالے ہیں؟ (۲۹) اگر ہم چاہتے تو اس بخت بھا ری بنا دیتے پھرتم شکر کیوں نہیں تَشُكُرُوُنَ(• ٧) اَفَرَءَ يُتُمُ النَّارَ الَّتِي تُوْرُوُنَ (١ ٧) ءَ اَنْتُمُ اَنْشَاتُمُ شَجَرَتَهَآ اَمُ کیاتم نے بھی غور کیا ہے کہ وہ آگ جوتم سلگاتے ہو (۷۱) آیا تم نے اس کا درخت پیدا کیا ہے یا ہم پیدا نَـحُـنُ الْمُنْشِئُوُنَ (47) نَحُنُ جَعَلِنَهَا لَذَا كِزَةً وَّ مَتَاعًا لِلْمُقَوِيْنَ (4٣) فَسَبّخ كرنے والے بين (٧٢) جم نے بي اے يا دوباني كا ذريعه اور سافروں كيلينے فائده كى چيز بنايا ہے (٧٣) ليس تم اليے بِ اسْمِ رَبِّكُ الْعَظِيمِ (٣٠) فَلا أَقْسِمُ بِمَواقِعِ النَّجُومِ (٥٥) وَ إِنَّهُ لَقَسَمٌ لَوُ تخظیم پروردگار کےمام کی شیخ کرو (۴۷) کیس میں متاروں کے (ڈو بنے کے) مقامات کی قسم کھا تا ہوں (۷۵) 💎 اورا گرتم سمجھو مُـوُنَ عَـظِيْمٍ (٧٦) اِنَّهُ لَقُرُانٌ كَرِيْمٍ (٧٧) فِي كِتابٍ مَّكُنُون (٧٨) لَأَ تو یہ بہت بڑی قتم ہے (۷۲) بے ٹنگ بیقر آن بڑی کوزت والاہے (۷۷) نگاہوں سے پوشیدہ ایک کتاب کے اندرہے (۷۸)اسے پا ک يَمَشُهُ إِلَّا الْـمُطَهَّرُونَ (٩٦) تَنُزيُلٌ مِّنُ رَّبِّ الْعَلَمِيُنَ (٨٠) أَفَبِهِذَا الْحَدِيُثِ لوگوں کے سواکوئی نبیں چھوسکتا (۷۹) یہ تمام جہانوں کے پروردگاری طرف سے ازل کردہ ہے (۸۰) کیاتم اس کتاب ہے أَنْتُمُ مُّ دُهِنُونَ (٨١) وَ تَجُعَلُونَ رِزُقَكُمُ أَنَّكُمُ تُكَذِّبُونَ (٨٢) فَلَوُلَا إِذَا ہا عثنا کی کرتے ہو؟ (۸۱) اورتم نے اپنے حصہ کی روزی بھی قرار دی ہے کیا ہے جٹلاتے ہو (۸۲) (اگرتم کسی کے محکوم نہیں) بَلَغَتِ الْحُلْقُوم (٨٣) وَانْتُمُ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُونَ (٨٣) وَنَحْنُ اَقُوَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمُ تو جب (مرنے والے کی)روح حلق تک بھنچ جاتی ہے(۸۳)اورتم اس وقت دیکھ رہے ہوتے ہو(۸۴)اوراس وقت ہم تم ہے زیا دومرنے وا

وَلَكِنُ لَا تُبُصِرُونَ (٨٥) فَلَوُلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ (٨٢) تَرُجعُونَهَآ إِنْ لے کے قریب ہوتے ہیں گرتم و کیھے نہیں (۸۵) پس اگر حمہیں کوئی جز اوسوا لمنے والی نہیں ہے (۸۲) تو پھراس (روح) کو کیوں واپس لونا كُنْتُمُ طِدِقِيُنَ (٨٤) فَاَمَّآ إِنُ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيُنَ (٨٨) فَرَوُ حٌ وَّ رَيْحَانٌ . وَّ

'نہیں لیتے اگرتم (اس اٹکار میں) سچے ہو(۸۷) پس اگر وہ (مرنے والا)مقربین میں سے ہے(۸۸) تو اس کے لئے را حت،خوشبو دار

جَنَّتُ نَعِيُم (٨٩) وَ اَمَّآ إِنَّ كَانَ مِنُ اَصْحُبِ الْيَمِيْنِ (٩٠) فَسَلَمٌ لَّكَ مِنْ

عذ اباورنعت بجری جنت ہے (۸۹)اورا گروہ اصحاب الیمین میں ہے ہے (تو اس سے کہاجاتا ہے)(۹۰)تمہارے لئے سلامتی ہوتو اصحاب

اَصُحْبِ الْيَمِيُنِ (١٩) وَ اَمَّآ إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِيُنَ (٩٢) فَنُزُلُّ

الیمین میں ہے ہے(۹۱) اوراگروہ جھٹلانے والے گمراہوں میں ہے(۹۲) تو پھراس کی مہمانی کھولتے

مِّنُ حَمِيْم (٩٣) وَ تَصْلِيَةَ جَحِيْم (٩٣) إِنَّ هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيُن (٩٥)

ہوئے یا ٹی ہے ہوگی (۹۳) اور دوزخ کی تپش (اور) اس میں دا خلعہے (۹۴) (جو کچھ بیان ہوا) بے شک میر حق الیفین (قطعی حق)

فَسَبِّحُ بالسَّم رَبَّكُ الْعُظِلِم (١٠) SIBTAIN (١٠)

ہے(۹۵) پس اپنے تنظیم رپوردگار کے ام کی تسیح کرو (۹۲)

۳_ سورہ جمعہ اوراس کی فضیلت

(۱) حضرت امام جعفرصا دق الطليح ہے مروی ہے فر مایا: ہر مؤمن پر لازم ہے جو ہماراشیعہ کہلاتا ہے کہ شب جمعہ میں (نمازِمغرب کےاندر) پہلی رکعت میں سورۂ جمعہ اور دوسری میں سورۂ سبح اسم ریک ا لاعلیٰ کی تلاوت کرےاور جمعہ کے دن نماز جمعہ (یا ظہر) میں سور ہُ جمعہاورسورہُ منافقو ن پڑھے پس جوابیا کرے گاتو وہ پیغیبراسلام صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی طرح عمل کرنے والاشار ہو گااور خدا کے ذمہ اس کی جزاء جنت ہے ۔ (مفاتی البخان)

(۲) جو خص ہر مجمع وشام سورہ جمعہ کی تلاوت کرے گاوہ شیطانی وسوسہ ہے محفوظ رہے گا۔ (مجمع الحسنات)

موره جمعهيے:

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ

(شروع كما بول) الله كما م مع جويد امهر بان نهايت رهم والاب يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُواتِ وَمَا فِي الْلَارُ ضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيْرِ وہ سب چیزیں جوآ سانوں میں اورزمین میں ہیں اس اللہ کی تنہیج کرتی ہیں جوبا دشاہ ہے (اور نقائض سے)یا ک ہے زیر دست ہے (اور)روا لُحَكِيْمِ (١) هُوَ الَّذِي بَعَتَ فِي الْأُمِّيّنَ رَسُولًا مِّنَّهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمُ ايْتِهِ وَ و ہ (اللہ)و بی ہے جس نے امی قوم میں انہیں میں ہے ایک رسول بھیجا جوان کواس (اللہ) کی آپیتیں پڑھ كِيُهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَ إِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَلٍ مُّبِينِ (٢) کرسنا تا ہےاو ران کو پا کیز ہ بنا تا ہےاوران کو کتاب وحکمت کی تعلیم دیتا ہے اگر چہاس سے پہلے بیہ لوگ کھلی ہوئی گمراہی میں مبتلا وَ اخِرِيُـنَ مِنْهُمُ لَمَّا يَلُحَقُوا بِهِمُ. وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمِ (٣) ذَٰلِكَ فَضَلَ اللَّهِ تھے (۲) اور (آپ کو)ان لوگوں میں ہے دوسروں کی طرف بھی بھیجا جوابھی ان نے بیں ملے ہیں اورو ہ زبر دست (اور) بڑا حکمت والا ہے (۳) میر يُـؤُتِيهِ مَنْ يَشَآءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَصْلِ الْغَظِيمِ (٣) مَثَلَ الْلِيلُ حُمِّلُوا التَّوْرَاةَ ثُمَّ لَهُ الله كالفغل وكرم ہے جسے حیاجتا ہے عطا كرنا ہے اور اللہ بڑ نے ففعل وكرم والا ہے (۴) اور جن لوگوں (يہود) كوتورا قا كا حامل بنايا گيا تكرانہوں يَحُمِلُوُهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحُمِلَ اَسُفَارًا. بِئُسَ مَثَلُ الْقَوُمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوُا بايلتِ نے اس کونہاٹھا ماان کی مثال اس گدھے کی ہے جس نے برزی کرزی کتابیں اٹھائی ہوئی ہوں اور کیابری مثال ہےان لوگوں کی جنہوں نے اللہ اللُّهِ. وَاللُّهُ لَا يَهُدِي الْقَوْمَ الظَّلِمِيْنَ (٥) قُلُ يَأْيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْ آ إِنْ زَعَمُتُهُ کی آنیوں کو مجٹلا یا اوراللہ ظالموں کوہدا ہے نہیں دیتا (انہیں منزل مقصو د تک نہیں پہچاتا)(۵) آپ کہے! اے یہو ویو! اگر تمہا را خیال اَنْكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلَّهِ مِنْ **دُ**وُنِ النَّاسِ فَتَمَنُّوُا الْمَوُتَ اِنْ كُنْتُمُ صَدِقِيُنَ(Y) وَ لأَ ہے کہ سب لوگوں کو چھو ژکرتم ہی اللہ کے دوست ہوتو پھرموت کی تمنا کروا گرتم (اپنے دعویٰ میں) سبچے ہو (۲)وروہ پرگزاس يَتَمَنُّوْنَهُ ۚ اَبَدًا ۚ إِسَمَا قَدَّمَتُ اَيُدِيُهِمُ وَاللَّهُ عَلِيْمٌ ۥبِالظَّلِمِينَ (٧) قَلَ إِنَّ الْمَوُتَ کی تمنانبیں کریں گےاہے ان (یرے)ا عمال کی وجہ ہے جووہ آئے بھیج بچکے ہیں اور اللہ ظالموں کو چھی طرح جانتا ہے(4) آپ کہہ دیجے! کہوہ مو الَّـذِيُ تَفِرُّو ۚ نَ مِنْهُ فَاِنَّهُ مُلْقِيُكُم ثُمَّ تُرَدُّونَ اِلَّى عَلِم الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئَكُمُ ت جس سےتم بھا گتے ہوو ہ بہر عال تم سے مل کررہے گی چھرتم ای (خدا) کی با رگاہ میں اوٹائے جا ؤ کے جوغائب اورعاضر کا جاننے والاہے پھر

اللّهِ وَاذْكُرُوا اللّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (١٠) وَ إِذَا رَاوُا تِجَارَةً أَوْ لَهُوَا وِ اللّهِ وَاذْكُرُوا اللّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (١٠) وَ إِذَا رَاوُا تِجَارَةً أَوْ لَهُوَا وِ اللّهِ وَاذْكُولُونَ وَالتّ يَجَارَ اللّهُ كَانِهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ

انْفَضُّوْ اللَّهُا وَ تَرَكُوكَ قَائِمًا. قُلُ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهُوِ وَ مِنَ التِّجَارَةِ.

شدد مکھتے ہیں قواس کی طرف دو ٹرپڑتے ہیں اور آپ کو کھڑا ہوا جھوڑ دیتے ہیں آپ کہدیجے! کہ جو پچھ (اجرو ثواب)اللہ کے باس ہو و کھیل

وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّزِقِينَ SIBTAIN.COM

تماشاور تجارت سے بہتر ہےاوراللہ بہترین رزق دینے والاہے(۱۱)

۵_ سور معم يتسائلون اوراس كى فضيلت

(۱) حضرت امام جعفرصا دق الطبيع سے مروی ہے بفر مایا: جوش ہررد زبلاما غدسورہ نباء کی تلاوت کر ساقہ سال ختم ہونے سے پہلے خداا سے بیت اللہ کی زیارت (حج)نصیب فر مائے گا۔ (مجمع البیان) سال ختم ہونے سے پہلے خداا سے بیت اللہ کی زیارت (حج)نصیب فر مائے گا۔ (مجمع البیان) (۲) اس سورہ کے لکھ کر بازور پر بائد ھنے سے بدن میں پڑی قوت بیدا ہوتی ہے۔ (مجمع الحسنات)

سورۇنباءىيى:

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ

(شروع كمنا جون) الله كمنام سے جوير اميريان نهايت رحم والا ب-

عَمَّ يَتَسَاءَ لُونَ (1) عَنِ النَّبَا الْعَظِيْمِ (٢) الَّذِي هُمَّ فِيْهِ مُخْتَلِفُونَ (٣) كَلَّا الِعَظِيْمِ (٢) الَّذِي هُمَّ فِيْهِ مُخْتَلِفُونَ (٣) كَلَّا اللهُ عَلَيْمِ (٢) الَّذِي هُمَّ فِيْهِ مُخْتَلِفُونَ (٣) كَلَّا اللهُ عَلَيْهِ (٢) اللهُ عَلَيْهِ مُنْ اللهُ الل

سَيَعُلَمُوُنَ (٣) ثُمَّ كَلَّا سَيَعُلَمُونَ (٥) ٱلَّمْ نَجُعَلَ ٱلْأَرْضَ مِهَدَّا (٢) وَّالْجِبَالَ ہیں(۳) ہرگر نہیں اعتقریب انہیں معلوم ہوجائے گا(۴) کھر ہرگر نہیں اعتقریب انہیں معلوم ہوجائے گا(۵) کیا ہم نے زمین کو بچھوانہیں بنلا؟ (۴) اور اَوُتَادًا(ك) وَّ خَلَقُناكُمُ اَزُوَاجًا(٨) وَّجَعَلُنَا نَوُمَكُمُ سُبَاتًا(٩) وَّجَعَلُنَا الْيُلَ پہاڑوں کو میخیں(2)اورہم نے شہیں جوڑا جوڑا پیدا کیا (۸)اور تہاری نیند کوراحت و آرام کاذربعہ(۹) اور را ت کو لِبَاسًا (• 1) وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا (1) وَبَنَيْنَا فَوُقَكُمُ سَبُعًا شِدَادًا (٢ ١) یر دہ پوٹ (۱۰) اوردن کو تھیل معاش کاوقت بنایا (۱۱) اور ہم نے تم پر سمات مغبوط (آسمان) بنائے (۱۲) وَّجَعَلَنَا سِرَاجًا وَّهَاجًا(٣١) وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِراتِ مَآءً ثُجَّاجًا(١٢) اورہم بی نے (دن میں)ایک نہایت روش جماع (سورج) بنایا (۱۳) اورہم نے یا فی سے لبرین یا دلوں سے موسلا دھاریا فی برسایا (۱۴) لِّنُخُوجَ بِهِ حَبًّا وَّنَبَاتًا (٥١) وَّجَنَّاتٍ ٱلْفَافًا (١١) إِنَّ يَوُمَ الْفَصُل كَانَ نا كرجم ال كروريع سے غلما ورسزى اگائيں (١٥) اور گھنے غات (١٦) بے تنگ فيلے كے دن (قيامت) كا مِيْقَاتُ ا(٤١) يَوْمُ يُهُ لَفُحَ فِي الصُّورُ فَتَأْتُونَ أَفُوا كُا(٨ ﴿ وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ ا یک معین وفت ہے(۱۷) جس دن صور پیونکا جائے گاتو تم لوگ فوج درفوج آؤ کے (۱۸) اور آسمان کھول دیا جائے گااوروہ درواز ہے ہی فَكَانَتُ اَبُوَابًا(٩) وَسُيّرَتِ الْجَبَالَ فَكَانَتُ سَرَابًا(٢٠) إِنَّ جَهَنَمَ كَانَتُ دروازے ہوجائے گا (۱۹) اور پہاڑ چلائے جائیں گے اورو وہالکل سراب ہوجائیں گے (۲۰) بے ٹنگ جہنم گھات مِـرُ صَـادًا(٢١) لِلطَّاغِيُنَ مَّابًا(٢٢) لَبثِيُنَ فِيُهَآ اَحُقَابًا(٢٣) لَا يَذُوْقُونَ فِيُهَا میں ہے(۱۱) (جوہر کشوں کا ٹھکا نہے(۲۲) و وائ میں مرتبائے درازتک پڑے رہیں گے(۲۳)و وائ میں نہ تھنڈک بَرُدًا وَلاَ شَرَابًا (٢٣) إِلَّا حَمِيهُمًا وَّ غَسَّاقًا (٢٥) جَزَآءً وَفَاقًا (٢٦) إِنَّهُمُ کا مزہ چکھیں گےاورنہ کوئی پینے کی چیز (۲۴)سوائے گرم پانی اور پیپ کے (۲۵) پیر(ان کےاعمال) کےمطابق بدلہ ہے(۲۷) پیلوگ (روز) كَانُوْا لَايَرُجُوْنَ حِسَابًا(٢٧) وَّكَذَّبُوْا بِالْيِتِنَا كِذَّابًا(٢٨) وَكُلُّ شَيْءٍ حساب (قیا مت) کی آو قع بی نہیں رکھتے تھے (۲۷)اور یہ ہماری آینوں کو بے در لیغ تجٹلاتے تھے (۲۸)اورہم نے ہر چیز کوایک نوشتہ میں شمار کر اَحُـصَيُناهُ كِتْابًا(٢٩) فَـذُوقُوا فَـلَنُ نَّزِيُدَكُمُ الْا عَذَابًا(٣٠) إِنَّ لِلْمُتَّقِيُنَ رکھا ہے(۲۹) چکھو اس کا مزہ ہم تمہارے عذا ب میں اضافہ بی کریں گے(۳۰) بے شک پر بیزگارو ل کیلئے کا میا نی و

(42)

مَ فَازًا (٣١) حَدَآئِقَ وَأَعُنَابًا (٣٢) وَّكُوَاعِبَ أَتُرَابًا (٣٣) وَّكُاسًا دِهَاقًا

کا مرانی ہے(اس) بعنی باغ اورا مگور ہیں (۳۷) اورا محتی جوانیوں والی ہم عمر لؤ کیاں (حوریں)(سس) اور جھلکتے ہوئے (شراب طہور کے)

(٣٣) لَا يَسْمَعُونَ فِيُهَا لَغُوًا وَلَا كِلَّابًا (٣٥) جَزَآءً مِّنُ رَّبِّكَ عَطَآءً فُي

جام (٣٣)و ه لوگ و ہاں نہ کوئی ہے ہو دہ بات سنیں گے اور نہ کوئی جھوٹ (٣٥) یہ تہبارے پروردگار کی طرف سے بطور عطیہ صلہ ہے جو کافی ووا

حِسَابًا (٣١) رَبِّ السَّمُواتِ وَالْارْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحُمْنِ لَا يَمُلِكُونَ مِنْهُ

فی ہے (۳۷) مینی و ہ رب رحمان کی طرف ہے جو آسا نوں اور زمین اورمان کے درمیان کی سب چیزوں کامپروردگار (اور مالک)ہے (جس کی

خِطَابًا (٣٤) يَوُمَ يَقُومُ الرُّورُ وَ وَالْمَلْئِكَةُ صَفًّا. لَا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنُ اَذِنَ لَهُ

ہیت ہے)لوگوں کاس سے بات کرنے کامارانیں ہے(۳۷)جس دن روح اورفر شتے صف با ندھے کھڑے ہوں گے کوئی بات نیس کرے گا

الرَّحُمْنُ وَقَالَ صَوَابًا(٣٨) ذلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ. فَمَنُ شَآءَ اتَّخَذَ اللَّي رَبِّهِ ﴿

تگر جے حدائے رحمان اچا زت دے گااوروہ ٹھیک ہات کہ گا (۳۸) میدون برحق ہے پس جوچا ہے اپنے بروردگار کی طرف اپنا ٹھکانہ

مَا بًا (٣٩) إِنَّا ٱنْذَرُ لَكُم عَذَابًا قَرِيبًا يَاوُمَ يُنظُلُ الْمَرْ عَا فَلَدَهُ وَيَقُولُ

بنائے (٣٩) بے تنگ ہم نے حمہیں عنقر بیب آنے والے عذاب سے ڈرا دیا ہے جس دن آ دی وہ (کمائی)دیکھیے گاجواس کے ہاتھوں نے

الُكْفِرُ يَالَيُتَنِيُ كُنُتُ تُرابًا (* ٣)

آ گے جیجی ہوگی او رکا فر کہے گا کہ کا ش میں مٹی ہوتا (۴۰)

٨_ سورهٔ اعلیٰ اوراس کی فضیلت

جناب شیخ صدوق علیه الرحمه حضرت امام جعفر صادق الظلی سے روایت کرتے ہیں، فرمایا: جو خض اپنی و اجبی یا مستحلی نماز میں سورہ سبح اسم ربک الاعلی پڑھنو قیا مت کے دن اس سے کہا جائے گا کہ جنت کے جس درواز سے تیرادل جا ہے اس سے داخل ہوجا۔

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ

(شروع كرما بول) الله كما م ي جويد اجريان تهايت رحم والا ب-

سَبِّحِ اسُمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى (١) ٱللَّهِ فَلَقَ فَسَوْى (٢) وَالَّذِي قَدَرَهُ

(ا نے بی) اپنے بلندو برز پر وردگار کے مام کی تنبیع سیجئے (ا) جس نے (ہر چیز کو) پیدا کیا پھر درست کیا (تناسب قائم کیا)(۲) جس نے تقدیم قررتی

فَهَدَى (٣) وَالَّذِي اَخُرَ جَ الْمَرُعَى (٣) فَجَعَلَهُ غُثَآءً اَحُواى(٥) سَنُقُرئُكَ فَلاَّ (ہرچیز کالغداز ہ قررکیا)ور(سیدی)راہ دکھائی (۳)اںنے (جانوروں کے لئے)زمین سے چا رہ ٹکالا (۴) پھراسے (خشک کرکے)سیای مأمل کوڑا بنا تَنْسٰي(٢) إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ. إِنَّهُ يَعُلَمُ الْجَهُرَ وَمَا يَخُفْي(٤) وَ نُيَسِّرُكَ ویا (۵) ہم آپ کو (ایما) پڑھائیں مے کہ پھرآپ ہیں بھولیں مے (۲) مگر جواللہ جا ہے (بھلادے) بے شک وہ ظاہر کو بھی جانتا ہے وہاس کو بھی جوچھیا ہو لِلْيُسُولِي(٨) فَلَذَكِّرُ إِنُّ نَّفَعَتِ الذِّكُولِي(٩) سَيَذَّكُرُ مَنُ يَّخُشَى(٠١) وَ اہے(4)ورہم آپ کوآ سان (شریعت) کی ہولت دیں گے(۸) ہیں آپ نفیعت سیجئے اگر نفیعت کچھے فائدہ پہنچائے (9)و پخض نفیعت قبول کرے گا يَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى(١١) الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبُراى(١٢) ثُمَّ لا يَمُونُ فيهُا جو (خداو آخرت سے)ڈرٹا ہوگا(۱۰)اور جو بدیخت ہے وہائی ہے گریز کر سےگا(۱۱)جورزی آگٹس داخل ہوگا(۱۲) پھروہ اس میں زمر سے گانہ جنے وَلَا يَحُيٰي(٣١) قَدُ أَفَلَحَ مَنُ تَزَكِّي (٣١) وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبَّهِ فَصَلَّى (١٥) بَلُ گا(۱۳) کو چھن فائز الرام ہوا جس نے اپنے آپ کو (بداعقادی و برعملی سے) پاک کیا (۱۴) او راپنے پر وردگا رکانا م یا دکیااورنما زیڑھی (۱۵) تُـؤُثِرُونَ الْحَيْـوِـةُ اللَّانِيلِ ﴿ ﴾ ﴿ وَالْآخِرَةُ نَجِيْرٌ وَكَالُقُلِي ﴿ ا ﴾ إِنَّ هَذَا لَفِي تُعَرِثُمُ لوگ دنیا کی زغدگی کو (آخرت پر)تر جیج دیتے ہو (۱۲) طالانکہ آخرت بہتر ہےاور یا ئیمارہے(۱۷) يقينأ بيربات پہلے

الصُّحُفِ الْأَوْلَى (١٨) صُحُفِ إِبْرَاهِيُمَ وَ مُوْسَى (١٩)

صحیفوں میں بھی ہے(۱۸) تعنی ابراہیم اور موی کے صحیفوں میں (۱۹)

ك سورة والفتس اوراس كي فضيلت

حصرت رسول خداصلی الله علیه د آلېه د سلم ہے منقول ہے ، فر مایا : جو محض سورهٔ والشمس کویژ ھے تو اس نے کویاان چیز ول سے تین گنا زیا د صدقہ دیا ہے جن پر سورج و چاند چمکتا ہے۔

بسُم اللهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْم

(شروع كرنا مول) الله كمام سے جوبرہ امہر بان نہایت رحم والا ہے۔

وَالشَّـمُـسِ وَ ضُحْهَا (ا) وَالْقَمَرِ إِذَا تَلْهَا (٢) وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّهَا (٣) وَالَّيُل

قتم ہے سورج اوراس کی غیاروشعاع کی() اور جاند کی جب وہ اس (سورج) کے پیچھے آئے (۲) ون کی جب وہ اس (سورج) کوشوب روش کردے(۳) اور اے کی جب کروہ

إِذَا يَغُشْهَا (٣) وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنْهَا (٥) وَالْأَرْضِ وَمَا طَحْهَا (٢) وَ نَفُسٍ وَّمَا

اے و حانب لے (۴) ورا مان کی وراس (زام) کی جس نے اسے بنلا (۵) ورز من کی اور جس نے اسے بچپلا (۲) اورانسانی نفس کی وراس کی جس نے اسے درست

سَوْهَا (٤) فَٱلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَ تَقُواهَا (٨) قَدْ أَفْلَحَ مَنُ زَكُّهَا (٩) وَقَدْ خَابَ

بنلا (2) گھراسے اس کی بدکاری وریر ویزگاری کا اہما م (القام) کیا (۸) بے شک و دخض فلاح پائیا جس نے اس (فض) کار کیریا (۹)اور و دخض ما مراد و اجس نے (کما و

مَنُ دَشْهَا (١٠) كَذَّبَتُ ثَمُودُ بِطَغُواهَا (١١) إِذِ مِ انْبَعَتَ اَشْقَلْهَا (١١) فَقَالَ

ے آلود مکرے)اسے ما مال (۱۰) تو م شمورتے اپنی سرکشی کی جیسے (اپنے توفیمرکو) جیٹلایا (۱۱) جب ان کا سب سے نیا دعیہ بخت (آ وی) اٹھ کھڑ ابو (۱۲) تو للڈ کے رسول

لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَ سُقُيهَا (١٣) فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمُدَمَ عَلَيْهِمُ

(صالح)ئے ان لوکوں سے کہا کرانشکی وفتی اوراس کے پاٹی چنے سے خبر دار دینا (اس) خیال رکھنا) (۳)گئی ان لوکوں نے اس (رسول) کو جنالا اور فوتی کی کو نجیس کا ہے دیں

رَبُّهُمُ بِذَنْبِهِمُ فَسَوّْهَا (٣١) وَلا يَخَافُ عُقْبِهَا (١٥)

تو ان کے پر درگا نے ان کے تمناہ (عظیم) کی پاواٹریٹس ان پر بلا کنٹ مازل کی اورای (بہتی) کوزشن کے رامر کردیا (۱۴) کو انڈیکس وقعہ کے فوام کا کوئی خوفہ نیس ہے(۱۵)

۸_ سورة اخلاص اوراي كي الفليك SIBTAIN . C

- (۱) متعددا حادیث میں وارد ہے کہ سور کا خلاص ثلث قر آن کے ہراہر ہے یعنی نین بار سور کا قل ھواللہ احد کے پڑھنے سے پور بے تم قر آن کا ثواب ملتا ہے۔ (تفسیر صافی)
- (۲) حضرت رسول خداصلی الله علیه و آله وسلم ہے مروی ہے ، فرمایا: جوشخص ایک بارسور ہ قل هوالله احد پڑھے اسے ہرکت حاصل ہوتی ہے اور جو دو مرتبہ پڑھے تو اسے بھی اور اس کے اہل وعیال کو بھی برکت نصیب ہوتی ہے اور جو دس بار پڑھے تو اگر چہ شیطان پوراز ورانگائے مگروہ گنا ہے محفوظ رہتا ہے۔ (مجمع الحسنات)

سورهٔ اخلاص پیہ:

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيُمِ

(شروع كمنا بول) الله كما م ع جويد اميريان نهايت رحم والاب

قُلُ هُوَ اللَّهُ أَحَلَّر ١) اللَّهُ الصَّمَدُر ٢) لَمْ يَلِدُ وَلَمْ يُولَدُ ٣) وَلَمْ يَكُنُ لَّهُ كُفُوا أَحَدُ ٣)

(اسدول) آب كيدويجية كدوو (الله) ايك ب1) الله (مارى كائنات) بينياز ب (٢) تماس كاكونى اطاو باورندوكس كالولا وب(٣) اوماس كاكونى المسرتين ب(٣)

9و-١- معوز تين اوران كي فضيلت

- (۱) بکٹرت اخبارو آٹا رملیں وارد ہے کہ جو شخص گھر سے نکلتے وقت یا لباس فاخرہ پہن کر معوذ تین کی تلاوت کرے و فظر بدے محفوظ رہتا ہے اور جو شخص خواب میں ڈرنا ہوا گروہ سونے سے پہلے سور کا قل اعوذ برب الفاق اور سور کا قل اعوذ برب الناس کی آبیت الکری سمیت تلاوت کر ساتھ کچر نہیں ڈرےگا۔ (مصیاح کفعمی)
- (۲) جوشخص رات کے وقت ان کی تلاوت کرے وہشیطانی وسوسہ ہے محفوظ رہتا ہے۔(مجمع الحینات) (۳) معوذ تین کولکھ کربچہ پر ہاند ھنے ہے وہ جنات اور دوسر ہے حشرات الارض کے شروضررہے محفوظ رہتا ہے۔(ایصٰاً)

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ

(شروع كما بول) الله كما م مد جويد اجريان نهايت رحم والاب

قُلُ اَعُودُ بِرَبِ الْفَلَقِ () مِنْ شَرِ مَا خَلَقَ () وَمِنْ شَلِ غَاسِقِ إِذَا وَقَبَ (٣)

(اے رسول) آپ کہ دیجئے کہ میں پنا ہلیتا ہوں صبح کے پروردگار کی(ا) ہراس چیز کےشرہے جواس نے پیدا کی ہے(۲)اوررات کی تا رکی

وَمِنْ شَرِّ النَّفُشْتِ فِي الْعُقَدِ (٣) وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ (۵)

کے شرہے جبکہ وہ چھاجائے (۳)اوران کے شرہے جوگر ہوں میں چھو تکے مارتی ہیں (۴)اورہا سد کے شرہے جب وہ حسد کرے(۵)

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ

(شروع كما بول) الله كما م م جويره اميرمان نهايت رحم والاب-

قُلُ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ(١) مَلِكِ النَّاسِ(٢) اللهِ النَّاسِ(٣) مِنْ شَرِّ الْوَسُوَ اسِ

(اے رسول) آپ کہرو پیجتے ! کر میں بناہ لیتا ہوں سب لوکوں سے پروروگارکی (۱)سب انسا نوں کے با وشاہ کی (۲) سب لوکوں کے الد (خد ۱) کی (۳) بار

الْخَنَاسِ (٣) الَّذِي يُوَسُوسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ (۵) مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ (٢)

باروسوسرڈ النے ماریسا ہوئے والے سے شرے (۴) جولوکوں سے ولوں میں وسوسرڈ الا ہے(۵) خواہ وہ جنوں میں ہے ہوں یا انسانوں میں ہے(۱)

آیت الکری کے فضائل بہت زیا دہ ہیں۔ یہاں ہم اس کے خواص بی کے ذکر براکتفا کرتے ہیں:

- (۱) ہر فرض نماز کے بعداس کاریا ھنارزق میں فراوانی کابا عث ہے۔
- (۲) اے ہرروز مجے وشام پڑھنا چور، ڈا کواور آتش زدگی ہے تحفظ کا ذریعہ ہے۔
- (۳) ہر روز فریضہ نماز کے بعداس کا پڑھنا سانپ بچھو کا تعویذ ہے۔ بلکہ جن وانس کےضررہے بچاؤ کا سبب ہے۔
- (۳) اگراس کولکھ کر کھیت میں فن کر دیا جائے تو وہ کھیت چوری اور نقصان ہے بچارہے گا اور اس میں ہر کت ہوگی۔
 - (۵) اگرآیت الکری لکھ کر دکان میں رکھی جائے تواس میں خیرو پر کت کا ذریعہ ہے گی۔
- (۱) اس کا گھر میں لکھ کررکھناچوری ہے بچاؤ کاموجب ہے،اگرمرنے ہے پہلےاس کوپڑھ لے تو بہشت میں اپنامقام دیکھ لے گاگا SIBTAIN.CO
 - (٤) ہرشب سوتے وقت اس کاریا ھنا فالج سے حفاظت کاباعث ہوگا۔

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ

(شروع كرتا جول) الله كمام سے جوبروام بربان نبایت رحم والا ب

ٱللُّهُ لَا إِلَّهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لاَ تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَّلاَ نَوُمٌ لَهُ مَا فِي السَّمُواتِ وَمَا

الله (قي دوزات) ب جس محملا دوكوني الرئيس ب زند ((جاديد) ب جو (ساري) كنات كا) بندوبست كرفے دلا ب اے ندوگھ آ في بورند نيزر جو يجھ آ حالوں

فِي الْآرُضِ مَنُ ذَا الَّذِي يَشُفَعُ عِنُدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعُلَمُ مَا بَيُنَ اَيُدِيْهِمُ وَمَا خَلُفَهُمُ

اور جو پھوڑین ٹس ہےدہ سبادی کا ہے کون ہے جواس کی (بینیکی)اجازت کے تغیراس کی با نگاہ ٹس (کسی کی)سفارش کرے جو پھو بندوں کے سامنے ہے دہ اے بھی

وَ لاَ يُحِينُ طُونَ بِشَيْئٍ مِّنُ عِلْمِهَ إلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرُسِيُّهُ السَّمُواتِ وَالْأَرْضَ

جانتا ہے۔اورجو پھوان کے پیچھے ہےاہے بھی جانتا ہے۔ اوردہ (بندے)اس سے علم میں سے کسی بیز (ذرا) ربھی احاطر بین کرسکتے پھرجس قدردہ چاہیاں کی کری (علم و

وَلا يَؤُدُهُ حِفْظُهُمَا وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ٥ لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشُدُ

افتدار) آسان وزمن کو تھے ہے۔ ان دونوں (آسان دزمن) کی تلمداشت اس پر گرال ٹیس گزرتی دورز ہے دروری عظمت ولا ہے۔ بین سے معاملہ میں کوئی

مِنَ الْعَيِّ فَمَنُ يَّكُفُرُ بِالطَّاغُوْتِ وَ يُؤُمِنُ أَبِاللَّهِ فَقَدِ استَمْسَكَ بِالْعُرُوةِ وَرَيْنَ اللهِ اللهِ فَقَدِ استَمْسَكَ بِالْعُرُوةِ وَرَيْنَ اللهُ اللهُ وَلِيَّ اللهُ فَقَدِ استَمْسَكَ بِالْعُرُوةِ وَاللهُ اللهُ وَلِيَّ اللهُ وَلِيُّ اللّهُ وَلِيُّ اللّهُ وَلِيُّ اللّهُ وَلِيُّ اللّهُ وَلِيُّ الْفَوْمَ وَاللّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ٥ اَللّهُ وَلِيُّ الّذِينَ الْمَنُوا يُخُوجُهُمْ مِنَ الْمُونُونِ وَاللّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ٥ اَللّهُ وَلِيُّ الّذِينَ الْمَنُوا يُخُوجُهُمْ مِنَ اللهُ وَلِي النّهُ وَلِي اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَي اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلَيْ اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَى اللّهُ وَلَى اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ اللّهُ وَلَى اللّهُ اللّهُ وَلَى اللّهُ اللّهُ وَلِي اللّهُ اللّهُ وَلَا اللّهُ اللّهُ وَلَا اللّهُ اللّهُ وَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَلَا اللّهُ اللّهُ وَلَا اللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ ال

SIBTAIN.COM

باقيات صالحات يا ثواب كافزانه درتعقيبات مشتركه ومخصه نماز بائ وبجگانه

مخفی ندرہ کہ نماز ہائے ، فجگا نہ کے تعقیبات پڑھنے کی احادیث اہل ہیت میں بڑی فضیلت وار دہوئی ہے۔ چنانچہ متعدد احادیث میں وار دہے کہ نماز فریضہ کے بعد تعقیبات میں مشغول ہونا طلب معاش میں لکلنے، مستحمٰی نماز پڑھنے سے فضل ہےاور حج ہیت اللہ کے برابرہے ۔(وسائل الشیعہ ومتدرک الوسائل)

اگر چہ تمام فقہا م کا بھات ہے کہ بھیا ہے گیل ہے جات اوضو ہو بادار و بھیلہ ہونا شرط نہیں ہے بلکہ ہر حالت میں پڑھے جاسکتے ہیں۔ گرافضل میہ ہے کہ بیٹھ کر بلکہ بحالت تشہدرو بقبلہ اور باطہارت بلکہ اولی میہ ہمافیات نماز بجالانے سے پہلے پڑھے جا کیں۔ پھر ان تعقیبات کی دو قسمیں ہیں: (۱) تعقیبات و مشتر کہ:۔ جو نماز ہائے ہجگا نہ میں نماز ہائے ہجگا نہ میں نماز ہائے ہجگا نہ میں سے ہر نماز کے بعد پڑھے جاتے ہیں۔ (۲) تعقیبات بھت زیادہ ہیں اور آئے گل کے اس سے کسی ایک نماز کے ساتھ مختص ہوتے ہیں۔ اور چونکہ ہر دوقتم کے تعقیبات بہت زیادہ ہیں اور آئے کل کے اس مشینی دور میں جبکہ کام کی کثر ت اور فرصت کی قلت ہے ہم کوشش کریں گے کہ یہاں ہر دوقتم میں سے صرف وہ تعقیبات بیش کریں جو تعدادہ جم میں خضرو کم تر ہوں اور اجر و ثواب اور فائدہ میں زیادہ و بہتر ہوں انتا ءاللہ۔

تعقيبات مشتركه

چنانچہ پہلے یہاں چند چیدہ چیدہ تعقیبات مشتر کہ بیان کئے جاتے ہیں اور بعد ازاں تعقیبات مختصّہ کا تذکرہ کیا جائے گاانٹا ءاللہ۔اور بیہ تعقیبات چند ہیں۔

(۱) نماز کے سلام کے بعد نین مرتبہ تکبیر یعنی ﴿اللّٰهُ ٱلْكُبُو ﴾ کہنا اوراس وقت ہاتھوں کا کا نوں تک بلند

-1

(٢) بعدازال بيدعار مشا:

(۴) اس کے بعد تین باریداستغفار پڑھنامتحب ہے:

﴿ اَسُتَغُفِرُ اللّٰهَ الَّذِی لَآ إِلٰهَ إِلَّهُ إِلَٰهَ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰلّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰلّٰ اللّٰلّٰ اللّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللّٰلِمِ اللّٰلِمُ اللّلْمُ اللّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللّٰلِمُ الللّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللّٰلَّمُ اللّٰلِمُلّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللّٰلِمُ اللللّٰلِمُ اللّٰلِمُلّ

(۵) ای طرح اس دعا کا ہر نماز کے بعد پڑھنا پیمیل ایمان اور اس کی سلامتی کے لیے مفید ہے۔ بید دعا حضرت امام جعفر صادق النظیج سے مروی ہے۔ (تہذیب الاحکام)

﴿ وَضِيْتُ بِاللَّهِ وَبَالُوسُلامِ دِينًا صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ اللَّهِ نَبِيًّا وَ بِالْإِسُلامِ دِينًا مِن رَضِي اللَّهُ عَلَيْهِ وَ اللَّهِ نَبِيًّا وَ بِالْإِسُلامِ دِينًا مِن رَاضَى مِول اللهِ مِر اللهُ مِرا رب، محمد صلى الله عليه و آله وَلم مير عن أملام ميرا دين،

وَ بِالْقُرْآنِ كِتَابُ اور عَلَى مَرِ وَلَ و المَ بِن حِفرت حَن مُ حَفرت حَين مُ وَالْحُسَنِ وَ الْحُسَنُ وَ الْحُسَنُ وَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَنُ وَ الْحُسَنُ وَ الْحَسَنُ وَ الْحُسَنُ وَ الْحَسَنُ وَ الْحَسَنُ وَ الْحَسَنُ وَ اللَّهُ مَّ إِنِّى وَضِيتُ فِي مَ اللَّهُ مَ اللهُ اللَّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللَّهُ اللهُ الله

(١) مرنماز كے بعد تميں يا چاليس مرتبہ تسيحات اربعه پڑھنے كى بڑى فضيلت وارد بوكى ہے جو يہ بيں: ﴿ سُبُحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلا إِلْـهَ إِلاَّ اللّٰهُ وَاللّٰهُ ٱكْبَرُ ﴾

الله ما ک ہے جماللہ بی کے لیے ہے اللہ کے سوا کوئی معبود تیس اور اللہ ہن رگ ہے۔

بعض روایات میں اس ارشاد خداوندی ﴿ اُذْ کُووا اللّهٔ فِرْ کُوا کَلِهٔ فِرْ کُوا کَلِهٔ فِرْ کُوا کَلِهٔ فِرْ کُوا کَلِهٔ فِرْ کُوا کُوری ﴿ اللّهُ فِرْ کُوا کُوری ﴾ الله کام کان کی جهت گرنے ، مردی ہے ، فرمایا: جو شخص نماز کے بعد تمیں بار تسبیحات اربعہ پڑھے وہ اس دن اپنے اوپر مکان کی جهت گرنے ، آگ میں جلنے، پانی میں غرق ہونے ، کنویں میں گرنے اور بری موت مرنے سے محفوظ رہتا ہے۔ (تہذیب الاحکام) اور حضرت امام جعفر صادق النظیم سے مردی ہے ، فرمایا: ہرنماز (فریضہ) کے بعد تمیں بار تسبیحات اربعہ پڑھنے ہے تمام گناہ جھڑ جاتے ہیں۔ (امالی شخ صدوق س)

(٤) ہر نماز کے بعد بید عابر مضے کی بڑی فضیلت وارد ہوئی ہے:

وَ زَوِّ جُنِيُ الْحُوْرَ الْعِيُنَ.

اورسیاه چیم حورے میری تزوج کردے۔

حضرت امام جعفر صادق الطفی فرماتے ہیں: جب بندہ نماز کے بعد بید عاریا هتا ہے تو دوزخ ہارگاہ خدا میں عرض کرتی ہے کہ یا اللہ! جب تیرا بندہ مجھ ہے آزادی چاہتا ہے تو تو اے آزاد کردے۔اور جنت عرض کرتی ے: یا اللہ! جب تیرابندہ مجھے تھے ہے طلب کرتا ہے تو تو اسے عطا کر دے اور حوریں عرض کرتی ہیں: یا اللہ! جب تیرابندہ تھے ہے ارک مثلقی کا سوال کرتا ہے۔ تو تو اس ہے ہماری تزوج کر دے۔ (الکافی)

(۸) ہر نماز کے بعد بیہ وعا پڑھی جائے جس کے بارے میں حضرت امام جعفر صا دق الطابی فر ماتے ہیں کہ ہر نماز کے بعداس دعا کاپڑھنار ک نہ کرو۔(الکافی)

أُعِينُدُ نَفُسِسى وَمَا رَزَقَنِى رَبِّى بِاللهِ الْوَاحِدِ الصَّمَدِ الَّذِي لَهُ يَلِدُ وَ لَمُ يُو لَدُ ٥ وَ لَمُ مَن نَفُسِسى وَمَا رَزَقَنِي رَبِّى بِاللهِ الْوَاحِدِ الصَّمَدِ الَّذِي لَهُ يَلِدُ وَ لَمُ يَو لَدُ ٥ وَ لَمُ مِن اللهِ مِن اللهُ مِن اللهُ مِن اللهِ مِن اللهِ مِن اللهِ مِن اللهِ مِن اللهِ مِن اللهِ مِن اللهُ مِن اللهِ مِن اللهُ مِن اللهِ مِن اللهُ مِن اللهُ مِن اللهِ مِن ا

يَكُنُ لَّهُ كُفُوًا اَحَدُّ ٥ وَ اُعِيدُ نَفُسِسى وَمَا رَزَقَنِى رَبِّى بِرَبِّ الْفَلَقِ مِنُ شَرِّ مَا حَلَقَ وَمِنُ نے اپی جان اورخداے کی فعتوں کو پی کرنے والے رب کی پناہ میں ویااس کی تلوق کے شرے اور تاریکی کے شرے جب وہ چھاجائے

شَرِّ غَاسِقِ إِذَا وَقَبَ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّشِ فِي الْعُقَدِ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ وَ أَعِينُهُ گَاهُوں پر پھوتھنے والیوں کے شرے اور عاسد کے شرے جب وہ صد کرے۔ یس نے اپی جان اور خدا سے ٹی نعتوں کوانسان کے

نَفُسِى وَمَا رَزَقَنِى رَبِّلَى لَ كَالِي الْمُعَلِيدُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ مِنْ شَرِّ الْوَسُوَاسِ

رب کی پناہ میں دیا جو انسانوں کا بارشاہ اور معبود ہے۔ گھاٹ لگانے، وسوسے ڈالنے والے کے شر سے جو انسانوں کے

الُخَنَّاسِ الَّذِي يُوَسُوسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ٥

دلوں میں وسوے ڈالتاہے ۔ وہ جنوں سے باانسا نوں ہے ہو۔

(9) ہر نماز کے بعد بیہ دعا پڑھی جائے جس کے ہارے میں حضرت رسول خدا علیہ سے مروی ہے ، فر مایا: جو محض چا ہتا ہے کہ قیا مت کے دن خداوند عالم اس کے گنا ہوں کے وفتر کونہ کھولے اور اسے اس کے ہرے اعمال پر مطلع نہ کرے تو ہر نماز کے بعد بیہ دعا پڑھا کرے۔(البلدالامین)

اوروه دعاییه:

اَللْهُ مَّ إِنَّ مَعُفِرَةِكَ اَرُجْى مِنُ عَمَلِي وَ إِنَّ رَحُمَةِكَ اَوُسَعُ مِنُ ذَنْهِي اَللْهُمَّ إِنُ كَانُّ اعْمَدُودا تَيرِي عَشْ مِرعامال سے زيادہ اميدافزا جاورتيري رحمت ميرك مَّاموں سے زيادہ وسيج جائے مَعِودا الرميرك مَّاه

ذَنْهِى عِنْدَكَ عَظِيْمًا فَعَفُوكَ أَعُظَمُ مِنْ ذَنْهِى اَللَّهُمَّ إِنْ لَمُ اَكُنُ اَهُلاً أَنُ تَوُحَمَنِيً تير نزديد بدے بين قو تيري درگز رمير ساگنا موں سے بہت بدي ہے۔ استعودا اگر من تيري رحمت كوائق فين قو تيري رحمت فَ وَ حُمَتُكَ اَهُلُ اَنُ تَبُلُغَنِي وَ تَسَعَنِي لِاَنَّهَا وَسِعَتُ كُلَّ شَيْ بِسرَ حُمَةِ كَ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ. فَرَحُمَتُكَ اَهُلُ اَنُ تَبُلُغَنِي وَ تَسَعَنِي لِاَنَّهَا وَسِعَتُ كُلَّ شَيْ بِسرَ حُمَةِ كَ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ. اللائِلَ إِنَ كَرَجُعَتَكَ فَيْ فِاعَ اورجُعَ قَهِر لَهِ يَهِالَى مُولَى جَيْرِي رَفِيقَ كَا واسطا عسب عنا وه رَمَ كرف والح

(۱۰) دنیاو آخرے کی خیروخوبی کے حصول کے لیے ہر نماز کے بعد بیہ دعا پڑھی جائے:

اَللَّهُ مَّ اهُدِنِسَى مِنُ عِنُدِکَ وَ اَفِيضُ عَلَى مِنُ فَضُلِکَ وَ انْشُرُ عَلَى مِنُ رَّحُمَةٍ ؟ اے معبودا تو مجھے اپی طرف سے ہمایت دے مجھ پر اپنا فعل و کرم جاری رکھ مجھ پر اپی رحمت کی چاور تان دے

وَ ٱنْزِلُ عَلَى مِنْ بَرَكَاتِكَ (الفقيه)

اور مجھ پراپی بر ستیں ازل فرما۔

(۱۱) حافظہ کی حفاظت اوراس کی تیزی کے لیے ہر نماز کے بعد بید دعایر بھی جائے جو حضرت رسول خداصلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے حضرت امیر الطفی کو تعلیم دی تھی۔

سُبُحَانَ مَنُ لا يَعْتَدِى عَلْى اَهُلِ مَمُلَكَتِهِ سُبُحَانَ مَنُ لا يَاخُذُ اَهُلَ الْاَرْضِ بِٱلْوَانِ

باک ہے وہ خدا جو اپنی مملک میں دینے والوں پر زیادتی نیس کتا۔ ایک ہے وہ خدا جو اس طرح کے عذاب سے الل

الْعَذَابِ سُبُحَانَ الرَّءُ وُفِ الرَّحِيْمِ اَللَّهُمَّ اجْعَلُ لِيُ فِي قَلْبِي نُورًا وَّ بَصَرًا وَّ فَهُمّا

زمین کی گرفت نہیں کرنا۔ باک ہے وہ خدا جومہربان رحم کرنے والا ہے، اے معبود! میرے قلب میں نورِ بصیرت، فہم اور

وَّ عِلْمًا إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (مكارم الاخلاق)

علم کوجگه دے بے شک تو ہر چیز پر قدرت رکھے والا ہے۔

(۱۲) نمازی قبولیت کے لیے ہرنماز کے بعد بیہ دعاریا ھی جائے:

الهِ لَي هَاذِهِ صَلَوتِ لَي صَلَيْتُهَا لا لِحَاجَةٍ مِنْكَ الدَّهَا وَلا رَغُبَةٍ مِنْكَ فِيُهَا الاَ تَعُظِيُ السلاميري ينازجو من في يُرهى ناس لِهِ بِكَرِيِّهِ اللهَ عاجتي ناس لِه كَرَقِهَ اللهِ مِن رَفِت يَنِي بال يعرف تيري تَقْيم

وَ طَاعَةً وَّ اِجَابَةً لَّكَ اِلَّى مَا آمَرُتَنِي بِهِ اللِّي إِنْ كَانَ فِيْهَا خَلَلٌ اَوُ نَقُصٌ مِنُ رُكُوعِهَا

و اطاعت اور تیرے علم کی اتباع ہے جوتو نے مجھے دیا ، حداوندا! اگر اس نماز میں کوئی خلل آیا ہے یا رکوع و سجود میں پھی تقص ہوتو اس پر

أَوُ سُجُودِهَا فَلا تُوَّاخِذُنِي وَ تَفَضَّلُ عَلَيَّ بِالْقُبُولِ وَ الْغُفُرَانِ. (مصاح المججر)

میری گرفت نه فرمااورای کی قبولیت اور بخشش کے ساتھ مجھ پر فضل وکرم کر دے۔

(۱۳) ہر نماز کے بعد زانوبد لئے سے پہلے دی باریہ ذکر کرنے کا حضرت امام جعفر صادق الطبی سے بے حد اجمد و ثواب مروی ہے۔

اَشُهَدُ اَنُ لاَ إِلَىهَ إِلاَ اللَّهُ وَحُدَهُ لا شَرِيُكَ لَهُلهًا وَاحِدًا اَحَدًا فَرُدًا صَمَدًا مَل الشهدُ اَنُ لاَ إِلَى اللَّهُ وَحُدَهُ لا شَرِيكَ لَي اللَّهُ وَاحِدًا اَحَدًا اللَّهُ وَحُدَا كَ جَو بَكَ إِلَى اللَّهُ اللَّ

لُّمْ يَتَّخِذُ صَاحِبَةً وَّلا وَلَدًا. (ماس البرق)

جس کی ندروجہ ہےاور ندی او لا و ہے۔

(۱۱،۱۵۰۱۳ و ۱۷) ہرنماز کے بعد سورہ حمر، آیۃ الکری، آیہ قبل اللهم مالک الملکت بغیر حساب اور آیت شهد الله تا سریع الحساب پڑھنے کے احادیث میں بے پایاں اجر و ثواب اور فوائد و عوائد مروی ہیں۔ بالحضوص آیت الکری پڑھنے کی بہت فضیلت وارد ہوئی ہے یہاں تک وارد ہے کہائ کے پڑھنے سے نماز قبول ہوتی ہے، اس کا پڑھنے والا خداکی امان میں وافل ہوجاتا ہے اور ہرفتم کی بلاؤں اور گناہوں سے خود خدا اس کی حفاظت کرتا ہے اور ہرکہ جنمان کے بعد آیت الکری پڑھنے والا خداک امان میں وافل ہوجاتا ہے اور ہرفتم کی بلاؤں اور گناہوں سے خود خدا اس کی حفاظت کرتا ہے اور ہرکہ جنمان کے بعد آیت الکری پڑھنے والے کو حفت میں وافل ہونے سے موت کے سوااور کوئی امر مانع نہیں ہے۔ (مجمع البیان)

نیز سوتے وقت اس کی تلاوت کرنا فالج کے حملہ سے تفاظت کابا عث ہے۔ (البر ہان)

میز سفر میں حفاظت کے لیے اس آیت کابا کی مرتبہ پڑھنا مجرب ہے۔ (انوا رنعمانہ جزائری)

حضرت رسول خداصلی اللہ علیہ و آلہ وسلم سے مروی ہے، فرمایا: جب خداوند عالم نے سورہ فاتحہ، آیة

الکری، آیت شہد اللّٰه اور آیت قل اللہ مالک المملک المملک المباد نوب اور گنہ گاروں میں اتارتا ہے

یعرش الٰہی سے لیٹ گئیں اور ہارگاہ ایز دی میں عرض کیا: با اللہ التو ہمیں وارالذنوب اور گنہ گاروں میں اتارتا ہے

یم مجبہ ہم طہور اور قدس سے معلّق ہیں۔ ارشا وہوا: مجھا پنی عزت و جلال کی قتم جو تخص ہر نماز (فریضہ) کے بعد

تہماری تلاوت کرے گامیں اسے ضرور حظیر ۃ القدس (جنت) میں واقل کروں گا۔ اور ہرروز اس کواپنی خاص نظر

کرم سے دیکھوں گا اور اس کی ہرروز ستر حاجتیں ہر لاؤں گا جن میں سے کم ترین حاجت بخشش گنا ہان ہے، ہر

دشمن کے شرسے اس کی حفاظت کروں گا، اسے دشمن پر فتح و فیروزی عطا کروں گا۔ اور اسے موت کے سواجنت

الفرودس میں واقل ہونے سے اور کوئی امر مانع نہ ہوگا۔ (تفیر مجمع البیان و نور الثقلین) آئے جبکہ ھیویانی حیدر

(۱۸) جناب یوسف القایم والی دعایزهی جائے جس کاپڑھنا حضرت امام جعفر صادق القایم سے مروی ہے۔ اوروہ یہ ہے:

اَللْهُمَّ اجْعَلُ لِلَى فَرَجًا وَ مَخُورَجًا وَ ارُزُقْنِى مِنْ حَيْثُ اَحْتَسِبُ وَمِنْ حَيْثُ لا اَحْتَسِبُ. اے اللہ! میرے ہرکام میں کثائش و سہولت قرار دے، مجھے رزق دے جہاں سے توقع ہے اور جہاں سے توقع نہیں ہے۔

نما زفر یضه کے بعد پڑھنا کافی ہے، بیہ:

SIBTAIN COM اَلَـلَهُمُّ إِنِّـى اَسُـئَـلُک مِن کُلِّ خَيْـرِ اَحْـاط بِـهِ عِلَمُکَ وَ اَعُوٰذُ بِکَ مِ

اے اللہ میں تھے سے ہر فیر کا طلبگار ہوں کہ تیرا علم جس کا اعاطہ کیے ہے اور ہر شر سے تیری پناہ جاہتا

كُلِّ شَرٍّ اَحَاطَ بِهِ عِلْمُكَ اللَّهُمَّ إِنَّى أَسُئَلُكَ عَافِيَتَكَ فِلْقُ وُرِى كُلِّهَا

موں جس پر تیرا علم محیط ہے،اے اللہ! میں اپنے تمام امور میں تھے سے عافیت طلب کرتا ہوں، میں دنیا کی رسوائی

وَ اَعُوُدُ بِكَ مِنُ خِزْيِ الدُّنْيَا وَ الْأَخِرَةِ.

اور آخرت کےعذاب سے تیری پناہ جا ہما ہوں۔

ایمان کی سلامتی اور دین پر ٹابت قدمی کیلئے ہر نماز کے بعد بیہ دعا پڑھے جو کہ حضرت امام جعفر
 صاوق القلیلائے منقول ہے:

يَ آ اَللّٰ اللّٰهُ يَسَا رَحْدَمُ مَنُ يَسَا رَحِيهُمُ يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ ثَبِّتُ قَلْبِیُ عَلَی دِیُزِکَ اے معودا اے بہت دُم والے مہوان اے وال کو پاٹا ویٹے والے میرے ول کو اپنے وین پہ جا وے۔ (۲۲) ید دعابر هی جائے جو حضرت امام جعفر صادق الطبی نے زرارہ کو تعلیم دی تھی جو کہ امام العصر الطبی کی غیبت میں ان کی کشائش کے لئے بر هی جائے:

اَللّٰهُ مَّ عَرِّفُنِسَى نَفُسَكَ فَسِانَّكَ إِنْ لَسَمُ تُعَرِّفُنِسَى نَفُسَكَ لَمُ اَعُرِفُ نَبِي كَالُهُ ان معود ق تھے ابی معرف مطا کر کہ بھینا اگر آوئے تھے ابی معرف مطا نہ فرمانی آوئیں جرے ہی کو نہ پچان باوں گا۔

اَکُسَلُهُ مَّ عَرِّ فُسِنِی وَسُ وَ لَکَ فَاذَّکَ إِنْ لَمْ تُعَرِّفُنِی وَسُولَکَ کَمْ اَعْرِفْ حُجَّدَ کَیْ اے معبود تھے اپنے دسول کی معرفت مطاکر کہ بیٹینا اگراؤ نے تھے اپنے دسول کی معرفت نہ کرائی تو عمل ججری ججت کو نہیجان باوں گا

اَلَـلْهُــمَّ عَـرِّ فَـنِــیُ حُــجَّتَکَ فَاِنَّکَ اِنُ لَّـمُ تُـعَرِّ فَنِـیُ حُجَّتَکَ صَلَلْتُ عَنُ دِیُنِ اے معود نصے اپی جمت کی معرفت مطاکر کہ اگر تو نے نصے اپی جمت کی پچان نہ کرانی تو نمیں اپنے دین سے گراہ ہو جاوں گا۔

(۲۳) جبنمازگزارتمام تعظیات سے فارغ ہو چکاتو آخر میں یہ آیت پڑھے:

سُبُحُانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ وَ سَلَمٌ عَلَى الْمُوْسَلِيُنَ وَالْحَمُدُ لِلْهِ رَبِّ الْعَلَمِينَ. تَها رارِ وردگار جوما حب عزت ہے وہ ان باقوں سے باک ہے جو یہ لوگ کیا کرتے ہیں، سلام ہو بھی انبیاء پر اور حد ہے شداکی جو عالین کا رب ہے۔

بعدازاں سجدہ شکر بجالائے ۔جس کی تفصیل بعدازیں بیان کی جائے گی انثا ءاللہ۔

تعقيبات بخصه كابيان

جب تعقیبات مشتر کرد عامہ کامختصر تذکرہ ہو چکاتو اب ہم تعقیبات قصہ کا تذکرہ کرتے ہیں۔ جونماز ہائے پٹیگا ندمیں سے ہر ہرنماز کے ساتھ مخصوص ہیں۔اور ہم ان کا آغاز نماز صبح کے تعقیبات مختصہ سے کرتے ہیں۔

نمازضيح كے تعقیبات مخصه كابیان

واضح رہے کہ نماز صبح کے تعظیبات دوسری نمازوں سے زیادہ وارد ہوئے ہیں اور اس نماز کی خصوصی فضیلت بکثرت روایات میں وارد ہے۔

(۱) حضرت رسول خداصلی الله علیه و آله وسلم سے منقول ہے ، فر مایا: جو محض طلوع صبح سے لے کرطلوع آفتاب تک مصلی پر بیٹے کر تعقیبات پر جھے تو خدا ہے آئش ووز نج سے محفوظ سے گا۔ (مصباح المعبجد)

(۲) حضرت امیر الظی ہے مروی ہے، فر مایا: نماز صبح کے بعد طلوع آفتا ب تک ذکر خدا میں مشغول رہنا طلب

معاش میں روئے زمین پر سفر کرنے سے بہتر ہے۔(زا والمعاو) ہم ذیل میں چندا ہم تعظیمات کا تذکرہ کرتے ہیں:

(۱) ستربار

اَسُتَغُفِرُ اللَّهَ رَبِّيُ وَ اَتُوْبُ إِلَيْهِ.

ا بي رب الله سي بخشش ما تكما ورقوب كنا مول -

پڑھا جائے۔ چنانچہ حضرت امام محمد باقر الطبی ہے مروی ہے، فر مایا: جو شخص نماز صبح کے بعد ستر بار بیراستغفار پڑھے تو خدا اس کے سات سو (۷۰۰) گناہ معاف کر دیتا ہے۔ (الفقیہ)

(۲) حضرت امام جعفر صادق الظلی ہے مروی ہے، فر مایا: جو مخص نما زمیج کے بعد ایک سومر تنبہ

مَاشَآءَ اللَّهُ كَانَ لا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ اِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيرِ مِ

جوحدا جاہے وہی ہوتا ہے، ہیں کوئی حرکت وقوت گھرو ہ خدائے بلندو ہزرگ ہے ہے۔

(٣) دن باريية ذكركرك:

سُبُحَانَ اللَّهِ الْعَظِيْمِ وَ بِحَمُدِهِ وَلَا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ اِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ.

پاک ہے ہن رگ اللہ ای کے لیے حمہ ہے اور ٹیس کوئی حرکت وقوت تگر جو بلندو ہن رگ تر خداے ہے۔

حضرت امام محد باقر الطفی ہے مروی ہے کہ جو شخص ایسا کرے گاوہ جنون ، برص ، جذام ، پریشانی ، زیر سقف آنے اور بڑھایے میں یاوہ کوئی کرنے ہے محفوظ رہے گا۔ (الفقیہ)

(٣) ايك سوباريزه:

لا إلهُ إلا اللهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِينُ.

خبیں کوئی معبو دسوائے اللہ کے جوبا دشاہ اور روشن حق ہے۔

(۵) ایک سوبار ریاهے:

SIBTATION

ہمارے کیے اللہ کافی ہے آوروہ بہترین وکیل ہے۔

جوابیا کرے گاتو خدا اے شمنوں کے شرہے محفوظ رکھے گا۔ (رسالۂ لیلیہ)

(۲) نماز صبح کے بعد ایک ہار بیدہ عاراطے:

لاَ حَوُلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ تَوَكَّلُتُ عَلَى الْحَوِي الَّذِي لاَ يَمُوُتُ وَ الْحَمُدُ كُلَّ حَرَّتَ وَ قَتَ نِيل مَر جَو الله سے ہے۔ میں اس زندہ پر مجروما کرنا موں جے موت نیس حمد اللہ کے لیے

لِسُلْسِهِ الَّذِی لَمُ یَشَّخِدُ وَلَدًا وَّلَمُ یَکُنُ لَّـهُ شَرِیُکُ فِـی الْمُلُکِ وَلَمُ یَکُنُ لُّــ ہے جس نے کی کو بیٹا ٹیس بنایا نہ تھومت میں کوئی اس کا ساجھی ہے نہ وہ کزور ہے کہ اس کا کوئی مددگار ہو

وَلِی مِّنَ اللَّالِ وَ كَبِّرُهُ تَسَكُبِيُرًا اللَّهُمَّ إِذِی اَعُودُ فَ بِحَ مِنَ الْبُوْسِ وَ الْفَقُرِ وَ مِنُ عَلَبَةٍ فَيُ اللَّهُ مِّ اللَّهُ مِن عَلَبَةٍ فَي اللَّهُ مِن عَلَبَةٍ فَي اللَّهُ مِن عَلَبَةٍ فَي اللَّهُ مِن عَارِي عَالَى عَالِي اللَّهُ عَلَيْهِ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ فَي اللَّهُ مِن عَارِي عَالِي عَالِي عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْهِ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ فَي اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ اللَّلِمُ الللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ

الدَّيُنِ وَ السُّفُمِ وَ اَسُئَلُکَ اَنُ تُعِيننِ فَي عَلْمَ اَدَآءِ حَقِّکَ اِلَيُکَ وَ اِلَى النَّامَةُ اللَّ

چنانچہ مروی ہے کہ عبداللہ بن سنان نے اپنی بدحالی کا ذکرامام جعفر صادق الطفیاؤے کیا اور آپ نے اے نماز صبح کے بعد بید دعا پڑھنے کی تلقین فرمائی جس ہے موصوف کی بدحالی دور ہوگئی۔

(٤) ايك سوباردرد دشريف يراهے:

﴿ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ ﴾

الساللدتو محمرو آل محمرير رحمت نازل فرمابه

چنانچ حضرت امام جعفر صادق النظی نے ابو صباح سے فرمایا: کیا میں تجھے اس چیز کی تعلیم نہ دوں جس کی ہرکت سے خدا تمہارے چیرہ کو آتش دو زخ سے بچالے؟ راوی نے عرض کیا: ہاں ۔ فرمایا: نماز صبح کے بعد ایک سوبا ر پڑھو: ﴿اَلَٰهُ اللّٰهُ مَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ ﴾ ۔ دوسری روایت میں انہی حضرت سے اس طرح مروی ہے، فرمایا: جو خص روزاندا یک سوبار اور شب و روز جمعہ میں ایک ہزار بار درو دشریف پڑھے گا خدا اسے آتش دوزخ ہے آزا دکردےگا۔ (مفاتے البخان)

(۸) یہا ذکار تین تین بار پڑھے، چنانچہ حضرت رسول خداصلی اللہ علیہ وا کہ وسلم کے بارے میں مروی ہے کہ وہ جب نماز صبح پڑھ کیلتے تھے تو اس قدر ہا واز بلند تین بار پڑھتے تھے کہاصحاب سنتے تھے:

﴿ اَللَّهُمَّ اَصُلِحُ دِينِيَ الَّذِي جَعَلْتَهُ لِي عِصْمَةً ﴾

یااللہ!میرے دین کی اصلاح فر ماجھے تو نے میرے لیے بناہ گیا ہ بنایا ہے۔

اور پھرتين بار کہتے تھے:

﴿ اللَّهُمَّ اَصُلِحُ لِى دُنْيَاىَ الَّتِي جَعَلْتَ فِيُهَا مَعَاشِيُ

یا اللہ! میری دنیا کی اصلاح فرماجس میں آؤنے میری روزی رکھی ہے۔

بعدا زال تين پڙھتے تھے:

﴿ ٱللَّهُمَّ ٱصُلِحُ لِي آخِرَتِي الَّتِي جَعَلُتَ اِلَّيْهَا مَرُجِعَتِي﴾

یا الله! میری آخرت کی اصلاح فرماجس کی طرف تو نے میری با زگشت قرار دی ہے۔

پھرتین ہار کہتے تھے:

﴿ اللَّهُمَّ اِنِّي اَعُوٰذُ بِرِضَاكَ مِنُ سَخَطِكَ وَ اَعُوٰذُ بِعَفُوكَ مِنُ نِقُهُمِّتِكَ

یا اللہ! میں تیری خوشنودی کے ذریعہ سے تیری ما راضی سے پناہ ما نگتا ہوں اور تیرے عفوو درگز رکے ذریعہ سے تیرے عذاب سے پناہ مانگتا ہوں۔ بعد ازاں تین با رہے ذکر کرتے تھے:

﴿ اَللّٰهُ مَّ إِنِّهُ اَعُودُهُ بِكَ مِنْكَ لا مَانِعَ لِمَا اَعُطَيْتَ وَلا مُعُطِى لِمَا مَنَعُتَ وَلا يَنُفَعُ بِالله! مِن تَهِم عَيْرِي بِناه مَا نَكَمَا مِون جَهِ وَعِطَا كرائِ عِنْ روكُ نِين سَكَمَا اور جَهَةِ فه و اس كونَي عطانين كرسكما وركبي كوش

ذَا الْجدِّ مِنْكَ الْجَهُ - (كتاب الدعاوالزياره)

كرنے والے كواس كى كوشش تھھ سےاسے كوئى فائد و نيس پہنچا سكتى۔

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ لَا حَوْلَ وَلا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ. (الكافي)

شروع الله كے باير كت مام سے جو يزام مريان نہايت رحم والا ہے تھيل ہے كوئى حركت وقوت مگروہ وجواللہ يزرگ و برز سے لتي ہے۔

(۱۰) سورۂ قدر کونماز صبح کے بعد دیں ہار۔ زوال کے وقت دیں ہا راور نمازعصر کے بعد دیں ہار پڑھے۔ حضرت امام محمد ہا قرائط کی ہے مروی ہے کہ جوشش ایسا کر بے قو وہ دو ہزار لکھنے والے (فرشتوں) کومیس سال تک مشقت میں ڈال دیتا ہے۔ (مصباح کفعمی)

نما زظهر كخصوص تعقيبات

(۱) حضرت امام جعفر صادق النظام عمروى ب، فرمايا: جوش نماز صبح اور نما زظهر كے بعد برئے هے:
 الله مَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَّ عَجِّلُ فَوَجَهُمْ.

ا مالله! مركار محمر و آل محمر بررحت ما زل كراوران كى كشائش مين جلدي فرما .

تو و ہ اس وقت تک نہیں مرے گاجب تک حضرت قائم آل محم مجل اللہ تعالی فرجۂ الشریف کو درک نہیں کرے گا۔ (کتاب الدعاوالزیارہ) ***********************

لَا إِلَىٰهَ إِلَّا اللَّهِ الْعَيظِيْسُمُ الْبَحَلِيْسُمُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهِ رَبُّ الْعَرُشِ الْكَوِيْمُ الْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ عَلَا اللَّهِ رَبُّ الْعَرُشِ الْكَوِيْمُ الْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ عَدائِظِيمَ وَلَيْمَ الْحَمْدُ اللَّهِ مَنْ الدَّيْنِ، حَدَ عَالِمِنْ كَوَ بِالنِّ وَالْحَدَا عَى كَالِي جَهُ عَدائِقِيمَ وَلَيْمَ مَعُودُنِينَ، رب عرش بري كے سواكونى الدُّين، حمد عالين كو بالنے والے خدا عى كے ليے جه

الُعَالَمِينَ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسُئَلُکَ مُوجِبَاتِ رَحُمَةِکَ وَعَزَ آئِمَ مَعُفِرَةِکَ وَ الْعَنِيمَةَ هِ احذائيں تھے امباب رحمت اور نِیْنی مفرت کا سال کنا ہوں، ہر نیکی سے صد پانے اور ہرگنا ہے بچاؤ کا طلب گار

حُلِّ بِرٍّ وَ السَّلامَةَ مِنْ كُلِّ إِنْمِ اللَّهُمَّ لا تَدَعُ لِي ذَنْبًا إِلَّا غَفَرُتَهُ وَلا هَمَّا إِلَّا فَرَّجْتَهُ وَلا عَلَى إِنَّا مِ اللَّهُمَّ لا تَدَعُ لِي ذَنْبًا إِلَّا غَفَرُتَهُ وَلا هَمَّا إِلَّا فَرَّجْتَهُ وَلا عَمَا إِلَّا فَرَجْتُهُ وَلا عَمَا إِلَّا فَرَجْتُهُ وَلا عَمَا إِلَّا فَرَجْتُهُ وَلا عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مِن اللَّهُ مِن اللَّهُ مِن اللَّهُ عَلَى إِنَّا إِلَّا فَا اللَّهُ مِن اللَّهُ اللَّلَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

ہوں، اے معبودا میرے ذمہ گناہ نہ ڈال گر وہ جے تو بخش دے، کوئی غم نہ دے گر وہ جوتو دور کر دے، بھاری نہ دے گر وہ

سُقُمًا إِلَّا شَفَيْتَهُ وَلا عَيْبًا إِلَّا سَتَرُتَهُ وَلا رِزْقًا إِلَّا بَسَطُتَهُ وَلا خَوْفًا إِلَّا امَنْتَهُ وَلا

جس سے شفا عطا کر دے، حیب نہ لگا مگروہ جے تو پوشیدہ رکھے، رزق نہ دے مگروہ جس میں فراخی عطا کرے، خوف نہ ہو مگر جس سے تو

سُوْءً إِلَّا صَرَفَتُ أُولًا إِنَّ كَا مُؤْهُ إِنَّ اللَّهِ إِنَّا لَكُمْ إِلَّهِ إِلَّا فَعَيْتَهَ

امن عطا کرے، بمائی نہ آئے گروہ جے تو ہٹا دے، کوئی حاجت نہ ہو گروہ جے تو پورا فرمائے اوراس میں تیری رضا اورمیری بہتری ہو

يَا أَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ امِيُنَ يَا رَبُّ الْعَالَمِيُنَ.

ا بسب سے زیادہ رحم کرنے والے آئین اے عالمین کے پالنے والے۔

(۳) حضرت امام جعفر صادق الطفي كے خادم بيان كرتے ہيں كه آپ نے مجھ سے فرمایا كه نماز ظهر كے بعد دى بار برڑھ:

بِاللَّهِ اعْتَصَمُّتُ وَ بِاللَّهِ اَثِقُ وَ عَلَى اللَّهِ اَتَوَكُّلُ.

الله بى تى تىلى ركىتا بول دالله بى براعماد باورالله بى برجروسه كرنا بول -

اس کے بعدا یک بار بید دعا پڑھو:

اَللَّهُ مَّ إِنْ عَظْمَتُ ذُنُوبِى فَانْتَ اَعْظَمُ وَ إِنْ كَبُرَ تَفُرِيطِى فَانْتَ اَكَبَرُ وَ إِنْ دَامَ بُخلِى اللَّهُ مَ إِنْ عَظْمَ اللَّهُ مَا يَخلِى اللَّهُ مَا يَعُولِكُمْ وَ إِنْ دَامَ بُخلِي اللَّهُ مَا يَا مُعُودا الرميرا مَن الله عِن اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَل

فَانُتَ اَجُودُ اَللَّهُمَّ اغْفِرُلِی عَظِیْمَ ذُنُوبِی بِعَظِیْمِ عَفُوکَ وَ کَثِیْرَ تَفُرِیُطِی بِظَاهِرٍ ہِ تَو تَو نیادہ دینے والا ہے، اے اللہ! این عظیم طوے میرے ہڑے گاہ بخش دے، این الطف و کرم سے میری بہت ی کا بیال گرَمِکَ وَ اقْسَمَعُ بُسُخُلِی بِفَعْسُلِ جُودِ دِکَ اَللَّهُمَّ مَا بِنَا مِنُ نِعُمَةٍ فَمِنُکَ لا اِللَهُ إِلّا اَنْ اللَّهُمَّ مَا بِنَا مِنُ نِعُمَةٍ فَمِنُکَ لا اِللَهُ إِلّا اَنْ اللَّهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ ا

اَسْتَغُفِرُكَ وَ اتُّونُ اِلَّيْكَ

نہیں میں تھھ سے بخشش جا ہتا اور تیرے حضورتو بہ کرنا ہوں۔

نمازعفر كخض تعقيبات

(۱) ستر باراستغفار پڑھی جائے: ﴿ اَسُتَغُفِو ُ اللّٰهَ رَبِّی وَ اَتُونُ اِللّٰهِ ﴾ ۔ کہ حضرت امام جعفر صادق اللّٰهِ کے بیار ستعفار کر استعفار کر استعفار کر استعفار کر دیتا ہے مروی ہے، فرمایا کہ جو شخص نماز عصر کے بعد ستر باراستغفار کر سے خدا اس کے سات سوگناہ معاف کر دیتا ہے۔ پھر فرمایا: تم میں سے کون ایلا ہے جو شب و روز میل سات موگناہ کر ہے (اکتابے الدعاو الزیارہ)

(۲) ول بارسورہ قدر براھی جائے جیسا کہ نماز صبح کے تعقیبات میں اس کا تذکرہ کیا جاچکا ہے۔

(٣) بياستغفار پڙھ:

ٱسُسَّسُلُمُهُ ٱنُ يَتُسُوُبَ عَلَمَى تَوُبَهَ عَبُدٍ ذَلِيْلٍ خَاضِعٍ فَقِيْرٍ بَائِسٍ مِسْكِيْنٍ مُسْتَكِيْنِ سوال كرنا ہوں كہ وہ اپنے عاجز خاضع مِناج مصيبت زدہ مسكين بے جارہ طالب پناہ بندے كى توبہ تبول فرمائے جواپنے نفع و فقصان

لْا يَـمُـلِكَ لِنَـفُسِهِ نَـفُعًا وَلا ضَرًا وَلا مَوْتًا وَلا حَيْوةً وَلا نُشُورًا اَللَّهُمَّ إِنَّى عُودُ بِكَ

کا ما لک ٹیس ہے نہ و ہا چی موت و حیات اور آخرت پر اختیار رکھتا ہے۔اے مبعود! میں سیر نہونے والے نفس خوف نہ رکھےوالے دل،

مِنُ نَفُسِ لاَ تَشُبَعُ وَ مِنُ قَلْبِ لا يَخُشَعُ وَ مِنُ عِلْمٍ لا يَنفَعُ وَ مِنُ صَلوةٍ لا تُرُفَعُ وَمِنُ نقع نه دين والعلم، تبول نه بون والى اورين نه جانے والى دعا سے تيرى بناه جامِتا بول ـ ا معبودا ميں تھ سے سوال دُعَآءِ لأ يُسْمَعُ اَللَّهُمَّ إِنِّى اَسْئَلُکَ الْيُسْرَ بَعُدَ الْعُسْرِ وَ الْفَرَجَ بَعُدَ الْكُرُبِ وَ الرَّخَآءَ وَكَا بَوْنَ مَنَ كَلُ بِعِدَ آمَانَى ، وَلَا حَدَى الدُسْرَ بَعُدَ الْعُسْرِ وَ الْفَرَجَ بَعُدَ الْكُرُبِ وَ الرَّخَآءَ وَكَا بَوْنَ مِن اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ

نمازمغرب كي تعقيبات يخصه

(۱) جناب سيره سلام الله عليها كي تبيح كے بعد بيه وعاروهي جائے:

إِنَّ اللَّهَ وَ مَلْآثِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا آيُّهَا الَّذِيْنَ امَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوا تَسُلِيْمًا لِنَّا اللَّذِيْنَ امَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوا تَسُلِيْمًا لِي اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الله

اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدِ وِ النَّبِيِّ وَ عَلَى ذُرِّيَّتِهِ وَ عَلَى اَهُلِ بَيْتِهِ .

حق ہے، خداو ندا افتحہ النبی ، ان کی ولادار ان کی اولادار ان کی الماریٹ پر رات از لوٹر مال SIBT A

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ وَ لا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ اِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

خدا کیا م سے شروع جورحن و رحیم ہے، تیل ہے حرکت وقوت گھروہ جوخدائے برزگ و برز سے ہے۔

(۲) تین مرتبہ کے:

ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ وَلا يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ غَيْرُهُ.

مرقتم کی تعریف حدا کے لیے ہے وہ جوچا ہتا ہے کرتا ہے اور کوئی دوسرا جوچا ہتا ہے تیل کریا تا۔

پھر یہ کے

سُبُحَانَكَ لَا اِلْـهَ اِلَّا ٱنُـتَ اغْفِرُلِى ذُنُوبِى كُلَّهَا جَمِيْعًا فَاِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ

پاک ہے تو کہ تیرے سوا کوئی معبود نہیں، میرے سارے کے سارے گناہ بخش دے کیونکہ سوائے تیرے کوئی اور

كُلُّهَا جَمِيُعًا إِلَّا ٱنْتَ.

تمامی گمنا ہان کو پخشنے والانہیں ہے۔

(m) نماز صبح ومغرب کے بعداس دعا کا پڑھنا بھی وارد ہے:

(٣) حضرت امام جعفر صادق الطّني عمروى ب، فرمايا: جوَّض نما زمغرب كے بعد تين بار پڑھے:
 الْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي يَفُعَلُ مَا يَشَآءُ وَ لَا يَفُعَلُ مَا يَشَآءُ عَيْرُهُ

برهم كي تعريف خذا كے ليے ہے وہ تو جا جا رہا ہے اور کوئی دومرا جو جا ہتا ہے تھے كر ہاتا۔

اے خیر کثیر عطا کیا جائے گا۔انثاءاللہ۔

نمازعثاءكة تقيبات ومخصه

للُّهُمَّ إِنَّهُ لَيُسَ لِيُ عِلْمٌ بِمَوْضِعٍ رِزْقِيُ وَ إِنَّمَاۤ اَطُلُبُهُ بِخَطَرَاتٍ تَخُطُرُ عَلَى قَلْبِيُ خداو ندا! مجھے اپنی روزی کے مقام کاعلم نہیں اور میں اے اپنے خیال کے تحت ڈھونڈٹا ہوں پس ممیں طلب رزق میں شہرو ریار کے فَاجُولُ فِيي طَلَبِهِ الْبُلُدَانَ وَ آنَا فِيُمَا آنَا طَالِبٌ كَالُحَيْرَانِ لا أَدُرِي أَفِي سَهُل هُوَ أَمْ فِي چکر کا ٹراہوں اوراس کی طلب میں سرگر داں ہوں اور میں نہیں جانبا کہ آیا میرا رزق ہُوا میں ہے یا پہاڑ میں، زمین میں ہے یا آسان میں، جَبَـلِ أَمُّ فِي اَرُضِ أَمُ فِي سَمَآءٍ أَمُ فِي بَرِّ أَمُ فِي بَحْرٍ وَ عَلَى يَدَىٰ مَنُ وَ مِنُ قِبَل مَنُ وَقَدُ بیابان میں ہے یا متدرمیں کس کے ہاتھ اور کس کی طرف سے ہاور میں جانتا ہوں کراس کاعلم تیرے باس ہے اس کے اسباب عَلِمُتُ اَنَّ عِلْمَهُ عِنْدَكَ وَ اَسُبَابَهُ بِيَدِكَ وَ اَنْتَ الَّذِي تَقُسِمُهُ بِلُطُفِكَ وَ تُسَ تیرے قبضے میں ہیں اور تو اپنے کرم سے رزق تقسیم کتا ہے اپی رحمت سے اس کے اسباب فراہم کرتا ہے یا خدایا محمر و آل محمر برَ حُمَةِكَ اَللَّهُمَّ فَبِصَهِ لَمُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ اللهِ وَالْجَعَلُ يَا إِلَّا زَأَةًكَ لِي وَاسِعًا وَ مَطُلَا م رحمت مازل فرما اور اے پروردگار! اپنا رزق میرے کیے وسیع کر دے، اس کا طلب کرنا آسمان بنا دے اور اس کے ملنے کی سَهُلاً وَ مَا خَذَهُ قَرِيْبًا وَّ لا تُعَنِّنِي بطَلَب مَا لَمُ تُقَدِّرُ لِيُ فِيُهِ رِزْقًا فَإِنَّكَ غَنِيٌّ عَنُ عكر قريب كروك جس چيز من تونے ميرا رزق نيين ركھا۔ مجھے اس كى طلب كے رفح مين نہ وال كر تو مجھے عَـذَابِـيُ وَ اَنَـا فَقِيـُـرٌ إِلْـي رَحْمَةِكَ فَصَـلٌ عَـلْـي مُحَمَّدٍ وَّ الِـهِ وَجُدُ عَلَى عَبُدٍ ' عذاب وید میں بے نیاز اور میں تیری رحمت کا محتاج موں اس محمد اور ان کی آل میر رحمت فرما اور اس ماچیز بندے کو

بِفَضُٰلِكَ إِنَّكَ ذُوُ فَضُلٍ عَظِيْمٍ.

اہیے فقل سے حصہ عطا فرما کرتو پڑا فقل کرنے والا ہے۔

مؤلف کہتے ہیں کہذکورہ دعاطلب رزق کی مستحب دعاؤں میں سے ہے۔ نیز نماز عشاء کے تعقیبات میں سے ہے۔ نیز نماز عشاء کے تعقیبات میں سات مرتبہ سورہ انسا انسز لناہ بھی پڑھے میٹی ندر ہے کہ نمازؤ تیرہ جو کہ بعدا زنماز عشاء دو رکعت مافلہ بیٹھ کر پڑھی جاتی ہیں سورہ ایات پڑھنامستحب ہے۔ لیکن ان سوآ بیوں کی بجائے پہلی رکعت میں سورہ واقعہ اور دوسری رکعت میں سورہ واقعہ اور دوسری رکعت میں سورہ اخلاص پڑھنا بہتر ہے۔

تجده شكركابيان

جب عبادت گزارتمام تعقیبات مشتر کدو ختصہ سے فارغ ہو جائے تو پھر سجد ہ شکر بجالائے۔ واضح ہو کہ چند مقامات پر سجدہ شکر کرنامستحب ہے اور شرعاً مرغوب ومحبوب ہے۔

ا۔ نماز ہائے پی بھاندادا کرنے کے بعد ، کیونکداس ہے نماز کی کمی پوری ہوتی ہے ، رب راضی ہوتا ہے ، ملائکہ خوش ہوتے ہیں ، شیطان ما دم ہوتا ہے ، حسنات درج ہوتے ہیں ، گنا ہ معاف ہوتے ہیں اور درجات بلند ہوتے ہیں ۔

ا۔ ہرنعت کے حصول کے بعد۔

س سی تکلیف و مصیبت کے دو رہونے کے بعد۔

س اصلاح بین الناس کرانے (یعنی دورو مجھے ہوئے اسلامی بھائیوں کومنانے کے)بعد۔

۵۔ الغرض ہر کارخیر کی انجام دہی کے بعد اور ان اسباب کے علاوہ ویسے بھی خوشنو دی خدا کے لئے بکثرت سجدہ کرما اور سجدہ کوطول ویناشر عانہایت بسند میرہ کیل کم اس کے ہمار کے بیشوایان دین بکثرت اور طویل سجدے کیا کرتے تھے۔

اس کی کیفیت

سجدہ شکر میں جاتے وقت یااس سے سراٹھاتے وقت تکبیر (اللہ اکبر) کہنا وار ذہیں ہےاس میں نہ تشہد ہے نہ سلام اور نہ ہی اس میں کوئی ذکر کرنا شرط ہے بلکہ صرف نیت کرکے پیٹانی زمین پر رکھ دینا ہی کافی ہے اس طرح ایک سجدہ ہی کافی ہے۔

اگر چہ افضل میہ ہے کہ دوہارہ کیا جائے اور درمیان میں دایاں اور ہایاں رضار زمین پر رکھا جائے جیسا کہ ابھی اوپر بیان کیا گیا ہے ذکر یا دعا سجدہ شکر میں شرطنہیں ہے لیکن ظاہر ہے کہ بیاستجابت دعا کا مقام اور عبد ومعبود کے درمیان راز و نیاز کی ہا تنیں کرنے کا بہترین موقع ہے اس واسطے اس مقام پر آئمہ طاہرین علیہم السلام ہے بکثر ت چھوٹی بڑی دعا کیں منقول ہیں جن کا ایک چھا ذخیرہ وسائل الشیعہ اورمتدرک الوسائل میں فرکورہے بعض دعا کیں بہت لمبی ہیں بعض بالکل مختصر، ہم مختلف روایات سے بعض اجزاء لے کر یہاں ذکر کرتے

میں اس کئے کہ بیا جزاء کسی ایک روایت میں مجتمع نہیں ہیں ویسے قو صرف سوبار ﴿ شُکُوا شُکُوا ﴾ یا سوبار ﴿ عَفُوا ﴾ یا کم از کم نین بار ﴿ شُکُوا لِللّٰهِ ﴾ کہدوینا ہی کافی ہے۔ (جیسا کہا مام رضاعلیہ السلام ہے مروی ہے) مگرا حوط بیہ ہے کہ اس تر تیب کے مطابق عمل کیا جائے۔ یجدہ میں سرر کھتے ہی تین بار کہ: ﴿ یَا اللّٰهُ یَا رَبِّاهُ یَا مَیّدَاهُ ﴾۔

حضرت امام جعفرصا دق علیه السلام فرماتے ہیں کہ جب بند ہ اس طرح اپنے خدا کو پکارتا ہے تو خدا جواب میں فرما تا ہے میرے بندے بتا تیری حاجت کیا ہے؟ (متدرک) تب وہ یہ دعا پڑھے جو جناب امام محمد باقر علیہ السلام سے مروی ہے:

كرب فك توبهت توبة قبول كرف والامهريان ٢٠

اوراگر اس ہے بھی مختصر دعا پڑھنا چاہے تو اس دعا کو بکثر ت پڑھے جو حضرت امام مویٰ کاظم علیہ السلام ہے مروی ہے :

اَلَـلْهُمَّ إِنِّسَى اَسُسَلَكَ السرَّاحَةَ عِنْدَ الْمَوْتِ وَ الْعَفُو عِنْدَ الْحِسْابِ فَدالِ مَين تَحْد ے موت کے وقت درگزر کا موالی ہوں۔

اوراگراس سے بھی مختصر تر پڑھنا چاہنے وہ وعاتنین بار پڑھے جو جنا بامیر الظی اسے منقول ہے:

﴿إِنِّي ظَلَمْتُ نَفُسِي فَاغْفِرُ لِي ﴿ (متدرك الوسائل)

یقیناً میں نے خود رہ للم کیا ہے اس مجھے بخش دے۔

﴿ يِنَا كُهُ فِي حِيْنَ تُعِينُهُ يَ الْمَذَاهِبُ وَ تَضِيُقُ عَلَىَّ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتُ يَا بارِئَ خَلْقِي

رَحُمَةً بِي وَ كُنُتَ عَنُ خَلُقِي غَنِيًّا صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِ مُحَمَّدٍ وَ عَلَى الْمُسْتَحُفِظِيْنَ

مِنُ الِ مُحَمَّدِ﴾۔

اس کے بعد بایاں رخسار زمین پررکھ کرید دعا تین بار بڑھے:

يَا مُسِذِلَّ كُلِّ جَبْهُ إِ وَيِنَا مُعِزَّ كُلِّ ذَلِيسُلٍ قَنْدُ وَ عِزَّتِكَ بَلَغَ مَجُهُوُ دِى فَفَرِّ جُ عَنِّى. العبرجاركوذ ليل كرنے والے بروئيل كون ہے والے تير کون كافئ لائر البيل وَلَيَا اللَّهُ فِي وَاللَّهُ مِنْ اللَّ

بعدازاں دوبارہ مجدہ میں سررکھ کرسوبار ﴿ شُکُوّا شُکُوّا ﴾ یاسوبار ﴿ عَفُوّا عَفُوّا ﴾ کہہ کراپی حاجت طلب کرے۔ (وسائل العبیعہ) یا ان دعاؤں کی بجائے وہ دعائیں پڑھے جو حضرت امام مویٰ کاظم علیہ السلام ہے مروی ہیں جومزید مختصر ہیں۔ دایاں رخسارز مین پررکھ کریہ دعا تین با رپڑھے:

﴿بُوُتُ اِلَيُكَ بِذَنْهِي عَمِلْتُ سُوءً وَ ظَلَمُتُ نَفُهِى فَاغْفِرُ لِى فَاِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ غَيُرُكُم

يا مَوُلائ ﴾ پربايال رضارزين پرركرتن باريدوعاراه هذا ﴿ وَحَمُ مَنُ اَسَاءَ وَاقْتَرَفَ وَاسْتَكَانَ

وَاغْتَرَ فَ ﴾ - (حدالق اضرة)

نیز واردے کہ جب خداکسی کوکوئی نعمت دے قوبند دادائے شکرید کے واسطے یہ بڑھے:

﴿ سُبُحْ نَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَ مَا كُنَّا لَهُ مُقُرِنِيُنَ وَ إِنَّاۤ إِلَى رَبِّنَا

پاک ہے وہ ذات جس نے ان چیزوں کو ہما رہے لئے مسخر کر دیا اور ہم ایسے نہ تھے کہ ان کواپنے قابو میں کرتے اور بے فنک ہم اپنے

لَمُنْقَلِبُونَ وَ الْحَمُدُ لِلْهِ رَبِّ الْعَلْمِينَ ﴾ - (من لا يحضره الفقيه)

یروردگار کی طرف لوٹے والے ہیں اور ہرتتم کی تعریف اس اللہ کیلئے جوسب جہانوں کاپروردگارہے۔

سجدۂ شکر میں مستحب ہے کہ سینۂ شکم (اگر ممکن ہو)اور ہاتھوں کو کہنیوں تک زمین کے ساتھ لگا کراور پھیلا کررکھاجائے۔ ہاقی سجدۂ نماز والی شرائط کی بابندی پیہاں ضرو ری نہیں ہے۔

فائده

بعض اخبارو آٹاریس وارد ہے کہ نماز کے بعد مقام ہجود پر دایاں ہاتھ پھیر کر منداور سیند پر پھیرنے سے ہرقتم کا ہم وغم اور مرض دور ہوتا ہے جنامچے زالہ زن کے لئے تین باز پردہا پڑھے

﴿ بِسُسِمِ اللَّهِ اللَّذِي لاَ إِلَى اللَّهِ اللَّهِ هُو عَالِمُ الْعَيْسِ وَ الشَّهَادَةِ الرَّحُمَٰنُ الرَّحِيمُ خدا كے نام سے جس كے علاوہ كوئى معبود نہيں وہ عياں و نہاں كا جانے والا براے رقم والا مهرمان ہے

اَللَّهُمَّ اَذُهِبُ عَنِّي الْهَمَّ وَ الْحَزَنَ» _

اے معبو داتو ہرا ندیشہ وغم کو مجھے دور کر دے۔

پہلے مند کی ہائیں طرف پھر وائیں طرف پھیرے۔ تین ہاریکی مل کرے اور مرض و ورووغیرہ کے ازالہ کے لئے سات ہارجائے ہوں کرکے مند پر پھیرتا جائے اور بیدعا بھی پڑھتا جائے۔ ﴿ یاسا مَسنُ گَلَسَسَ الْاَرُضَ عَلَی الْمَاءِ وَ سَدَّ الْهُواءَ بِالسَّمَاءِ وَ اخْتارَ لِنَفْسِهِ اَخْسَنَ الْاَسْمَاءِ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الْ مُحَمَّدٍ وَ افْعَلُ بِی کَذْ ﴾ (یہاں اپنی عاجت کا ذکر کرے) ﴿ وَ ارْزُقُنِی وَ عَلَی مُن کَذَا ﴾ (یہاں اپنی عاجت کا ذکر کرے) ﴿ وَ ارْزُقُنِی وَ عَلَی مِن کَذَا ﴾ (یہاں اپنی عاجت کا دکر کرے) ﴿ وَ ارْزُقُنِی وَ عَلَی مُن کَذَا ﴾ (یہاں اپنی عاجت کا دورو کی وایاں ہاتھ مقام ہجدہ بی کی مندا ورسین پر پھیرنے سے امراض واسقام سے شفاماتی ہے جوسنت بھی ہے اور سعادت بھی۔

﴿ بابسيوم ﴾

افا دهٔ عام درادعیهٔ صبح وشام

اگر چہخداوندعالم کے ذکر کے لیے کوئی خاص وقت نیس ہے بلکہ ﴿ ذکت اللّٰه افسضل فی کمل حین و اوان ﴾ ۔ چنانچہ خداوندعالم نے قرآن مجید میں اپنے خاص وَاکروشاکر بندوں کاان الفاظ میں وَکر خیر کیا ہے کہ ﴿ اَلّٰہِ فِیلُمّا وَ قَعُودًا وَ عَلَی جُنُو بِهِم ﴾ (سورہ آل عمران آیت اوا) کہ وہ قیام میں بقعود میں اور لیٹے ہوئے غرض کہ ہر حالت میں وکرخداکرتے ہیں ۔ مگر قرآن وسنت میں طلوع وغروب قیام میں بقعود میں اور لیٹے ہوئے غرض کہ ہر حالت میں وکرخداکرتے ہیں ۔ مگر قرآن وسنت میں طلوع وغروب آفتاب ہے پہلے ضعوصی طور بر خداکی حمد وثنا اور شیخ و ققد ایس کرنے کی بڑی تاکید وارد ہوئی ہے ۔ ارشا وقد رت کے اور قاب میں ہوئی آلفا کو کے است میں وارد ہے کہ ان وواوقات میں شیطان اپنالفکر پھیلاتا ہے۔ اہذا تم اس کے شرے خدا کی پناہ طلب کرو۔

(۱) حضرت امام جعفر صادق الطبی ہے مروی ہے، فر مایا: ہر مسلمان پرِفرض ہے طلوع وغروب آ فتاب ہے پہلے دی باربیدذ کرکرے:

لا إلى هَ إلاَّ اللَّهُ وَحُدَهُ لا شَرِيُكَ لَهُ لَهُ الْمُلُكُ وَ لَهُ الْحَمُدُ يُحْيِيُ وَيُهِيَّهُ وَيُمِي وَيُن كُنَّ معبود موائزة اكوه بكمّا جاس كاكِنَ شريك فين ملك اى كاجاوراى كيلة حرج وه زنده كرمّا اورموت ويتا جاورموت

وَ يُحْيِيُ وَهُوَ حَمُّ لَا يَمُونُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ (الكافى)

ویتااور زندہ کرتا ہےوہ زندہ ہےاہے موت نہیں بھلائی ای کے ہاتھ میں ہےاوروہ ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے۔

مخفی ندر ب که علماء اعلام نے یہاں لفظ "فرض" کوشدت استحباب برمحمول کیا ہے۔

(۲) نیزانبی جناب ہے مروی ہے کہ طلوع آفتاب سے پہلے دی بارید ذکر خدا کیا جائے:

اَعُودُ بِاللّٰهِ السَّمِيعِ الْعَلِيسِمِ مِنُ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَ اَعُودُ بِاللّٰهِ اَنُ يَحُضُرُونِ ا مِن شياطِينَ كوسوس س، سنن جائز والدخداكى بناه كاطبكار بول اورخداكى بناه عام الهول الى سے كروه مير فريب آئين

إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِينُعُ الْعَلِينُمُ.

بے منگ اللہ و ہے جو سننے جاننے والا ہے۔

(٣) اى طرح صبح وشام وَى وَى مِن السبحات البعد ﴿ سُبُحَانَ اللَّهِ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ وَلا إِلَهَ إِلَّا اللّهُ وَاللّهُ الكُبُرُ ﴾ يراصني احاديث مِن براى فضيلت واردبونى بـــ

(۷) نیزانهی جناب ہے مروی ہے ،فر مایا جمہیں کیاامر مانع ہے کہ جج وشام تین تین باریہ دعار پڑھو:

اَللْهُدَّةَ مُعَلَّبَ الْعُلُوبِ وَ الْاَبْسَارِ ثَبِّتُ قَلْبِی عَلی دِیْزِکَ وَلاَ تُوِعُ قَلْبِی بَعُدَ إِذُ اے داوں اورآ کھوں کو پلٹے والے خدائے پاک میرے دل کواپے دین پر ہما دے نہمیر ھاکرمیرے دل کواس کے بعد جب و نے مجھے

هَدَيُنَ بِسِى وَهَدِبُ لِلَّى وَلَ لَكُونُكَ رَحْمَهُ أَلِنَّ كَا الْسَالُّ الْمَالُونِ فَا الْسَالُّ مِدايت دى بِ مِحْ يِهِ إِنْ طرف سے دحمت ما زل فرمااس ميں فک نيس كرة بيزائى عطاكرنے والا سےاودا في دحمت سے جُھے آگ ہے۔ ﴿

بِسرَ حُسمَةِ كَ اَللَّهُ مَّ الْمُدُدُ لِلَى فِي عُمُورَى وَ اَوُسِعُ عَلَىَّ فِي دِزُقِي وَانْشُرُ عَلَىَّ رَحُمَةً كَ بچا اور محفوظ ركى اے الله ميرى عمر كوطويل كردے ميرے رزق ميں وسعت پيا كردے اور مجھ پر اپی دھت كا مايه فرما دے ﴿

وَ إِنْ كُنُتُ عِنُدَكَ فِي أُمِّ الْكِتَابِ شَقِيًّا فَاجْعَلْنِي سَعِيدًا فَإِنَّكَ تَمُحُوا مَا تَشَآ

اور اگر ممیں لوح محفوظ میں تیرے نزد یک بدبخت ہوں تو مجھے نیک بخت بنا دے کہ بتحقیق تو جو جاہے منانا اور لکھتا ہے

وَ تُثْبِتُ وَ عِنْدَكَ أُمُّ الْكِتْبِ.

اورلوح محفوظ تیرے باس ہے۔

اگرچہاوربھی بہت ی وعاؤں کاپڑھنااوراذ کار کا کرنا وار دہوا ہے مگر بنظر اختصارا نہی چندمتنداد عیہ و اذ کار کے تذکر دپراکتفا کی جاتی ہے۔والله المعوفق۔

امام مفته كى دعا كي

ابل ایمان کوچا بیئے کہ اپنے ائمہ طاہرین علیہم السلام کی تقلید و تا کی میں ایا م ہفتہ کی ان مقدس وعاؤں کے پڑھنے میں فقلت نہ کریں تا کہ اس پُر آشوب دور کے مصائب وشدائد سے محفوظ رہیں۔ (صحیفہ کا ملہ)

وعائروز يكشنبه(اتوار)

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ ٥

خدا کما مے شروع جوہر امہر یا ن نہایت رقم والا ہے

بِسُمِ اللَّهِ الَّذِي لَا اَرُجُو ۚ إِلَّا فَضُلَهُ وَلَا اَخُشٰى إِلَّا عَدُلَهُ وَلَا اَعۡتَمِدُ اِلَّا قَوُلَهُ وَلَا اُمُسِكُ

اس الله کے مام سے مدد مانگنا ہوں جس کے ففل وکرم ہی کا امیدوار ہوں اور جس کے عدل ہی سے اندیشہ ہے۔ای کی بات پر مجھے بجروسا ہےاورای کی رشی

إِلَّا بِحَبُلِهِ مِكَ ٱسْتَجِيْرُ يَا ذَا الْعَفُوِ وَ الرِّضُوَانِ مِنَ الظُّلُمِ وَ الْعُدُوَانِ وَ مِنْ غِيَرِ الزَّمَانِ وَإُ

ے وابستہ ہوں ۔اے عفود خوشنووی سے مالک! تمیں جھے سے ظلم و جوں زماند کے انقلابات ، شمول کے پیم جھوم اورمازل ہونے والی مصیبتوں سے بنا ہ مانگلا

تَـوَاتُـرِ الْاَحْـزَانِ وَ طُوَا إِقِ الْحَدَثَانِ لَهِ إِلْقَطَاءِ الْمُدَّةِ قُبُلَ النَّاهُبِ وَ الْعُدَّةِ وَ إِيَّاكَ

ہوں اور اس بات سے کرآخرے کا ساز وسامان اور زادِ راومهیا کرنے سے پہلے ہی مدت هیائے تم ہوجائے اور تھے ہی سے ان چیز ول کی رہنمانی چاہتا ہوں

ٱسْتَـرُشِدُ لِمَا فِيُهِ الصَّلاحُ وَ ٱلإصْلاحُ وَ بِكَ ٱسْتَعِيْنُ فِيُمَا يَقُتَرِنُ بِهِ النَّجَاحُ وَ ٱلإنُجَاحُ

جن میں اپنی بہرو وی اور دوسروں کی فلاح و ورتی کا سامان ہو اور چھوہی ہے مدد مانگیا ہوں ان باتوں کی جن میں اپنی فلاح وکا مرانی اور دوسر مے کو کامیا ب

وَ إِيَّاكَ اَرُغَبُ فِي لِبَاسِ الْعَافِيَةِ وَ تَمَامِهَا وَ شُمُولِ السَّلَامَةِ وَ دَوَامِهَا وَ اَعُوْذُ بِكَ

بنائے کی صورت مضم ہو۔اور چھے ہی سے خواہشند ہوں لہاس عافیت (کے پہنائے) اور اُسے اتما م تک پہنچائے کا اور سلامتی کے شامل حال ہوئے اور اس

رَبِّ مِنُ هَـمَزَاتِ الشَّيَاطِيُنِ وَ أَحْتَرِزُ بِسُلُطَانِكَ مِنْ جَوْرِ السَّلَاطِيُنِ فَتَقَبَّلُ مَا كَانَ مِنُ فَإ

کے وائم و برقر ارد ہے کا اور جیرے ہی ڈر بعدا مے میرے پروردگار بنا ومانگنا ہوں شیطان کے وسوسوں سے ۔اور جیرے ہی تسلط و اقتدار کے ذر بعیر تحفظ جا بتا

صَلْوتِي وَ صَوْمِي وَ اجْعَلُ غَدِى وَمَا بَعُدَهُ أَفْضَلَ مِنْ سَاعَتِي وَ يَوْمِي وَ أَعِزَّ نِي فِي

ہول فرماز واؤں سے ظلم وجورے تو میری گزشتہ نما زوں اورروزوں کو قبول فرمااورکل سےون اوراس کے بعد کے دنوں کوآج کی گھڑی اورآج کے ون سے

عَشِيهُ رَبِّي وَ قَـوُمِـى وَ احُفَظُنِي فِي يَقُظَتِي وَ نَوُمِي فَٱنْتَ اللَّهُ خَيْرٌ حَافِظاً وَ ٱنْتَ ٱرْحَمُ

بہتر قرار و ہے اور مجھے اپنے قوم وقبیلہ میں عزت وقو قیر دے اور خواب وہیر اری کی حالت میں میری حفاظت فر مایتو ہی وہ اللہ ہے جو سب سے بہتر گھران و

الدوّاحِمِينَ اللّهُمَّ إِنِّي آبُسِرَءُ إِلَيْكَ فِي يَوْمِي هَذَا وَمَا بَعُدَهُ مِنَ الْاَحَادِ مِنَ الشِّرُكِ اللهِ الدوّاحِمِينَ اللّهُمَّ إِنِّي آبُسِرَءُ إِلَيْكَ فِي يَوُمِي هَذَا وَمَا بَعُدَهُ مِنَ الْاَحَادِ مِنَ الشِّرُكِ اللهِ اللهَّائِينَ بَرِيالاً وَمَا اللهَ عَلَى طَاعَتِكَ وَاللهِ اللهِ اللهَ اللهَّائِينَ بَرِيالاً وَمَا اللهَ عَلَى طَاعَتِكَ رَجَآءً لِلاَثَابَ اللهَ اللهَ عَلَى طَاعَتِكَ رَجَآءً لِلاَثَابَ اللهُ اللهَ اللهَ عَلَى طَاعَتِكَ رَجَآءً لِلاَثَابَ اللهُ اللهَ عَلَى طَاعَتِكَ وَجَآءً لِلاَثَابَةُ وَ الْقِيْمُ عَلَى طَاعَتِكَ رَجَآءً لِلاَثَابَ اللهُ عَلَى طَاعَتِكَ رَجَآءً لِلاَثَابَةُ وَ اللهُ عَلَى طَاعَتِكَ وَالرَي مِرَّالهُ وَلِي اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى طَاعَتِكَ وَاللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْكَ اللهُ عَلَيْكُ وَاللهُ عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ اللهُ ال

قر اردے۔ بلاشہُ و بخشے والا اور رقم کرنے والا ہے۔

SIB(Top), COM

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

خدا کما م ے شروع جویز امہر یا ن نہایت رقم والا ہے

ٱلْحَمَٰدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمُ يُشُهِدُ آحَدًا حِينَ فَطَرَ السَّمْوٰاتِ وَ الْاَرُضَ وَلاَ اتَّخَذَ مُعِينًا حِيُنَ

تما م تعریفیں اس اللہ تعالیٰ سے لیے ہیں کہ جب اس نے زمین وآ سان کوخلق فر ملا تو سمبی کو کواڈ بیس بنلا ۔اور جب جابنداروں کو بیدا کیا تو اپنا کوئی مددگا رئیس مخبر لا ۔

بَرَءَ النَّسَمَاتِ لَمُ يُشَارَكُ فِي الْإِلْهِيَّةِ وَلَمُ يُظَاهَرُ فِي الْوَحُدَانِيَّةِ كَلَّتِ الْآلُسُنُ عَنُ غَايَةٍ

الوبيت مي كونى اس كاشريك، اوروحدت (واغراويت سے مخصوص ہونے) مي كونى اس كا معاون تيس ب، زما بين اس كے اعتباع صفات كے بيان كرفے

صِفَتِهِ وَ الْعُقُولُ عَنْ كُنُهِ مَعُرِفَتِهِ وَ تَوَاضَعَتِ الْجَبَابِرَةُ لِهَيْبَتِهِ وَ عَنَتِ الْوُجُوهُ لِخَشْيَتِهِ

سے گنگ اور عظلیں اس کی معرفت کی تہر تک تینچنے سے عاجز ہیں۔جائہ وسرمش اس کی جیب سے سامنے بچکے ہوئے ،چیر سے نقاب خشیت اوڑ ھے ہوئے اور

وَ انْقَادَ كُلُّ عَظِيْمٍ لِعَظَمَتِهِ فَلَكَ الْحَمُدُ مُتَوَاتِراً مُّتَّسِقًا وَّ مُتَوَالِيًا مُّسْتَوُسِقًا وَ صَلَوَاتُكُمُّ

عظمت والے اس کی عظمت کے آ می سرا مگلندہ ہیں ۔ تو بس خیر مے ہی لئے حمد دستائش ہے بے در بے ، لگا تا ر مسلسل دیمیم ۔ادراس کے رسول پر الله تعالیٰ کی المدی

**** عَـلْي رُسُولِهِ أَبَدًا وَ سَلامُهُ دَآئِمًا سَرُمَدًا أَللَّهُمَّ اجْعَلُ أَوَّلَ يَوْمِيُ هَذَا صَلاحًا وَ أَوْسَطَهُ رحمت اوروائم وجاوونى سلام موسا يالبا امير ساس ون سحابتدائى حصركوصلاح وورى، درميانى حصركوللاح وبهبووى اورة خرى حصركوكاميا في وكامر فى سيديمكنار فَلَاحًا وَّ اخِرَهُ نَجَاحًا وَّ اَعُوٰذُ بِكَ مِنُ يَوْمِ اَوَّلَهُ فَزَعٌ وَّ اَوْسَطُهُ جَزَعٌ وَّ اخِرُهُ وَجَعّ قرارد ماوراس ون سے جس کا پہلاحصہ خوف، ورمیانی حصر بنا بی اور آخری حصہ ورد والم لئے ہو، چھے سے بناہ مأمکما ہوں ما براس مذر سے لئے جو مُنس ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسۡتَغُفِوُكَ لِكُلِّ نَذُرِ نَذَرُتُهُ وَ كُلِّ وَعُدٍ وَّعَدْتُهُ وَ كُلِّ عَهْدٍ عَاهَدُتُهُ ثُمَّ لَمُ آفِ نے ملی ہو، ہراس دحد دکی نسبت جوئیں نے کیا ہو اوراس عہدو پیان کی بابت جوٹس نے بابند صابو پھر کسی ایک کوبھی خیرے لئے پوراند کیا ہو چھے سے عفو و بخشش کا بِهٖ وَ اَسْئَلُكَ فِيُ مَظَالِمٍ عِبَادِكَ عِنْدِى فَآيُّمَا عَبُدٍ مِّنُ عَبِيْدِكَ اَوْ اَمَةٍ مِّنُ اِمَآئِكَ كَانَكُمْ لَهُ خوامتگارہوں اور جیرے بندوں کے ان حقوق ومظالم کی بابت جو بھے پر عائد ہوتے ہیں جھے سے سول کرتا ہوں کر جیرے بندوں میں سے جس بندے کا اور جیری قِيَلِيُ مَظُلِمَةٌ ظَلَمْتُهَا إِيَّاهُ فِي نَفُسِمْ أَوُ فِي عِرُضِمْ أَوُ فِي مَالِمْ أَوُ فِي آهُلِهِ وَ وَلَدِمْ أَوُ غِيْبَةً کنیزوں میں ہے جس کنیز کا کوئی حق مجھ پر ہو،اس طرح کرخوواس کی ذات ما اس کی حزت یا اس سے مل ما اس سے مثل واولا وکی نسبت میں مظلمہ کا مرتکب ہواہوں ن اغْتَبُتُهُ بِهَا أَوُ تُحَامُلُ عَلَيْهِ مِمْيُلُ أَوُ هَوْيِ أَوُ انْفَةٍ أَوْ حَمِيَّةٍ أَوْ رَيَّآءٍ أَو عَصَبيَّةٍ غَآئِبًا یا غیبت سے ذربعہ اس کی بد کوئی کی ہویا (اپنے و بق)رجحان یا سمی خواہش یا رعونت یا خود بسندی یا رہا، یا عصبیت سے اس پرما جائز وہا کاڈالا ہو جا ہے وہنا تب ہویا كَانَ أَوُ شَاهِـدًا وَ حَيًّا كَانَ أَوُ مَيِّتًا فَقَـصُرَتُ يَدِىُ وَ ضَاقَ وَسُعِيُ عَنُ رَدِّهَآ اِلَيْهِ وَ حاضر، زیز ہ ہو یا مرگیا ہو، اور اب اس کاحق اواکرنا یا اے بحل کرلا میر ہے دسترس ہے باہر اور میری طاقت سے لا ہوتو اے وہ جوجا جنوں کے ہر لانے پر قاور ہے التُّحَـلُـل مِنْهُ فَاسْئَلُكَ يَا مَنْ يَّمُلِكُ الْحَاجَاتِ وَ هِيَ مُسْتَجِيْبَةٌ لِّمَشِيَّتِهِ وَ مُسْرَعَةٌ اوروہ حاجتیں اس کی مشیت سے زر فرمان اوراس سے اراوہ کی جانب جیزی سے پڑھتی ہیں تھے۔۔۔ سول کرنا ہوں کیٹو محمہ اوران کی آل پر رحمت نا زل فرمائے إِرَادَتِهِ أَنُ تُسَمِّلِيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّ أَنْ تُرُضِيَهُ عَنِّيُ بِمَا شِئْتَ وَ تَهَبَ لِيُ مِنُ اورايسة مخص كوجس طرح و جامع يحصب راضى كرو ماور مجمع اسية باس سارحت عطا كرباد شرمغفرت وآمرزش ساحير مال كوفى كونيس بوقى اورت عِنْدِكَ رَحْمَةً إِنَّهُ لا تَنْقُصُكَ الْمَغْفِرَةُ وَلا تَضُرُّكَ الْمَوْهِبَةُ يَاۤ أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ بخشش وعطاسے تخیے کوئی نقصان کھنے سکتا ہےا۔ رحم کرنے والوں میں سب سے نیا وہ رحم کرنے والے سا یالہاا کو مجھے دوشنبر کے دن اپنی جانب سے وقعتیں اَوُلِنِيُ فِي كُلِّ يَوُم ۚ اثَّنَيُن نِعُمَتَيُن مِنُكَ ثِنُتَيُن سَعَادَةً فِيَوَلَلِهِ بِطَاعَتِكَ وَ نِعُمَةً فَيَاخِرِهِ مرحمت فرما۔ ایک بیکراس دن کے ابتدائی حصہ میں تیری اطاعت کے ذریعہ سعادت حاصل جواوردوسرے بیکراس کے آخری حصہ میں تیری مففرت سے باعث

بِمَغْفِرَةِكَ يَا مَنْ هُوَ لَهُ الْإِلَّهُ وَلَا يَغُفِرُ الذُّنُوْبَ سِوَاهُ.

نعمت سے بہر ومند ہوں ۔ا مدو ہ کرونی معبود ہے ادراس کے علاوہ کوئی گما ہوں کوئٹش نہیں سکتا۔

وعائے روز سہ شنبہ (منگل)

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيُمِ ٥

خدا کما مے شروع جوہزامہر یا ن نہایت رقم والا ہے

ٱلْحَمُدُ لِلْهِ وَ الْحَمُدُ حَقَّهُ كَمَا يَسْتَحِقَّهُ حَمُدًا كَثِيرًا وَ اَعُودُ بِهِ مِنُ شَرِّ نَفُسِيُ إِنَّ الْحَمُدُ لِلْهِ وَ الْحَمُدُ حَقَّهُ كَمَا يَسْتَحِقَّهُ حَمُدًا كَثِيرًا وَ اَعُودُ بِهِ مِنُ شَرِّ نَفُسِي إِنَّ

سب تعریف اللہ کے لئے ہےاورد تکی تعریف کاحق واراورو تک اس کا مستحق ہے۔ ایسی تعریف جو کثیر وفر اول ہو۔اورٹیس اپنے خمیر کی برائی ہے اس کے واس میں

النَّفُسَ لَا مَّارَةٌ مُ بِالسُّوْءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي وَ أَعُودُ بِهِ مِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ الَّذِي يَزِيُدُنِي ذَنْبًا

بیناه مآنگنا ہوں ۔اور بے شک نفس بہت نیا وہ برائی پراہھارنے ولا ہے تحریبہ کر میراپر وردگا روٹم کر ۔۔اورٹیس اللہ بی کے ذریعیاس شیطان کے شروفساو سے بینا ہ

اِلْى ذَنْسِى وَ اَحْسَرِزُ لِهِ مِنْ كُلِّ جَبَّارٍ فَاجِرٍ وَأَسُلُطَانٍ جَزَّرٍ وَأَعَدُو قَاهِرِ اَللَّهُمَّ اجْعَلْنِى

چاہتا ہوں جومیر ہے لئے گنا ہریا تا جارہا ہے۔ اور تُمن ہر سرکش، ہر کار اور ظالم یا وشاہ اور چیرہ وست وٹمن سے اس کے واس حمایت میں بنا وگزین ہوں۔

مِنُ جُنُدِكَ فَإِنَّ جُنُدَكَ هُمُ الْعَالِبُونَ وَ اجْعَلْنِي مِنُ حِزُبِكَ فَإِنَّ حِزُبَكَ هُمُ الْمُفُلِقُ

بإرالها! مجھے اپنے تشکر میں قراردے کیونکہ جمراتشکری غالب وجمعند ہے۔اور مجھے اپنے گروہ میں قراردے کیونکہ جمراگروہ بی ہرلحا ظاسے بہتری پانے والا ہے۔اور

وَاجُعَلْنِيُ مِنُ اَوُلِيَآئِكَ فَاِنَّ اَوُلِيَآئَكَ لا خَوْتٌ عَلَيْهِمُ وَلاٰهُمُ يَحْزَنُونَ اَللَّهُمَّ اَصُلِحُ لِؤُ

مجھاہیے دوستوں میں سےقر اردے کیونکہ تیرے دوستوں کونہ کوئی اندیشہ ہوتا ہے اور ندو والسر دود ممکین ہوتے ہیں۔ا ساللہ امیرے لئے میرے دین کوآ راستہ

دِيْنِي فَإِنَّهُ عِصْمَةُ آمُرِي وَ أَصُلِحُ لِي اخِرَتِي فَإِنَّهَا دَارُ مَقَرِّي وَ إِلَيْهَا مِنُ مُجَاوَرَةِ اللِّمَامِ

کرو سال لئے کردہ میر سے ہرمعا ملہ میں حفا غلت کا ذریعہ ہے۔ ادرمیری آخرت کو تھی سنو ارد سے کیونکہ دہ میری مستقل منزل اورد فی وفرد ملیالو کول سے (پیٹیسا

مُفَرِّى وَ اجْعَلِ الْحَيْوةَ زِيَادَةً لِي فِي كُلِّ خَيْرٍ وَالْوَفَاةَ رَاحَةً لِي مِنْ كُلِّ شَرِّ اللَّهُمَّ صَلّ

چیٹر اکر) نگل بھا گنے کی جگہ ہے۔اورمیری زندگی کو ہرنیکی میں اضافہ کا باعث اورمیری موت کوہرر رخج و تکلیف سے راحت وسکون کا ذریعیقر اردے۔ا ساللہ! محمدًا

عَلَى مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ وَ تَمَامِ عِدَّةِ الْمُرُسَلِينَ وَ عَلَى الِهِ الطَّيِّبِينَ الطَّاهِرِينَ وَ

جوبيون كے فاتم اور وفيم وں كے سلسلم كے فروآخريں، ان يراوران كى ماك دما كينروآل اور برگزيد واصحاب ير رحت ما زل فر مااور جھے اس روزسہ شنبہ ميں تين

أَصْحَابِهِ الْمُنْتَجِينُنَ وَ هَبُ لِي فِي الثُّلَثَآءِ ثَلاثًا لا تَدَعُ لِي ذَنْبًا إلا غَفَرُتَهُ وَلا غَمَّا إلا

چے ہیں عطافر ما۔ وہ یہ کرمیر ہے کئی آما ہ کو ہا تی ند ہے دیے تکر یہ کراہے پیش و ہے۔ اور نہ کئی گوتگر یہ کراہے دفع کر

ٱذُهَبُتَهُ وَلا عَدُوًّا إِلَّا دَفَعُتَهُ بِيسُمِ اللَّهِ خَيْرِ الْاسْمَآءِ بِسُمِ اللَّهِ رَبِّ الْاَرْضِ وَ السَّمَآءِ

وے بعم للد کے واسطے جو (للد تعالی کے) تمام ماموں میں سے بہترہام (رمضمتل) ہاوراللہ کمام کے واسطے جوزی وآسان کا

ٱسْتَـدْفِعُ كُلَّ مَكُرُوْهِ ٱوَّلَٰهُ سَخَطُهُ وَ ٱسْتَجْلِبُ كُلَّ مَحْبُوْبٍ ٱوَّلُهُ رِضَاهُ فَاخْتِمُ لِيُ مِنْكَ

يرور دگار ہے۔ ميں تمام اينديده چيزوں کاوفعيد چاہتا ہوں۔ جن ميں اول درجہ پراس کی نا راضی ہے اورتمام پينديده چيزوں کوسميٹ ليما چاہتا ہوں۔ جن ميں سب

بِالْغُفُرَانِ يَا وَلِيَّ الْإِحْسَانِ.

سے مقدم اس کی رضا مندی ہے۔ائے تفل واحسان کے مالک تُو اپنی جانب سے میر اغاتمہ بخشش ومفقرت برفر ما۔

دعائروز چهار شنبه (بده)

M (مينالوالكرامان الرحية SIB

خدا کما م ے شروع جور امہریان نہایت رحم والا ہے

ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِيْ جَعَلَ اللَّيُلَ لِبَاسًا وَّ النَّوُمَ سُبَاتًا وَّ جَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا لَّكَ الْحَمُدُ آثِي

تمام تعریف اس الله تعالی کے لئے ہے جس نے رات کو پر دہ بنایا اور نیند کو آرا حت کا ذریعہ اور دن کو حرکت وعمل کے لئے قرار دیا ۔ تمام

بَعَثْنَنِيُ مِنْ مَّرُقَدِيُ وَلَوُ شِئْتَ جَعَلْتَهُ سَرُمَدًا حَمُدًا دَآئِمًا لاَّ يَنْقَطِعُ اَبَدًا وَلا يَحْصِي لَهُ

تعریف تیرے بی لئے ہے کہ وُ نے مجھے میری خواب گا ہے زندہ اور سلامت اٹھایا ۔اورا گر تُو جا ہتا تو اسے دائی خواب گاہینا ویتا ۔الیی حمد جو

الُخَلاَئِقُ عَلَدَدًا اَللَّهُمَّ لَكَ الْحَمُدُ اَنُ خَلَقُتَ فَسَوَّيْتَ وَ قَدَّرُتَ وَ قَضَيْتَ وَ اَمَتً وَ

ہمیشہ ہمیشہ ہے۔جس کا سلسلة قطع نہ ہواور نہ گلو ق اس کی تعتی کا شار کر سکے۔ با را لہا! تمام تعریف تیرے ہی گئے ہے کہ تُونے پیدا کیا تو ہم لحاظ

ٱحْيَيْتَ وَ ٱمُرَضُتَ وَ شَفَيْتَ وَ عَافَيْتَ وَ ٱبْلَيْتَ وَ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَيْتَ وَ عَلَى الْمُلْكِ

سے درست پیدا کیا ۔ا نداز ہمقررکیااور تھم نافذ کیا،موت دیاورزند ہ کیا۔ بیارڈالااورشفا بھی بخشی۔عافیت دی اور مبتلا بھی کیا۔اور وعرش پر

احُتَـوَيُتَ اَدُعُـوُكَ دُعَآءَ مَنُ ضَعُفَتُ وَسِيُلَتُهُ وَ انْقَطَعَتْ حِيُلَتُهُ وَ اقْتَرَبَ اَجَلُهُ وَ تَدَانَى

ستمكن ہوااور ملک پر چھا گیا بئیں جھے سے دعاما نگلنے میں ای مخص کا ساطر زمل اختیا رکرتا ہوں جس کاوسیلہ کمزور، حیارہ کارختم اورموت کاہنگام

فِى الدُّنْيَا اَهَلُهُ وَ الشُعَدَّتُ اِلَى رَحُمَةِ كَ فَاقَتُهُ وَ عَظُمَتُ لِتَفُرِيُطِهِ حَسُرَتُهُ وَ كَثُرَتُ زَلَّتُهُ فَ زديك بوردنيا شراس كما ميدول كا وامن سف چكابواور تيري رحت كى جانب اس كما حتياج شديد بواودا في كوابيول كى وجدے أسير في

وَ عَشْرَتُهُ وَ خَلْصَتُ لِوَجُهِكَ تَوُبَتُهُ فَصَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ وَ عَلَى اَهُلِ بَيْتِهِ ﴿

حسرت اوراس کی اغزشوں اورخطاؤں کی کثرت ہواور تیری بارگاہ میں صدق نیت سے اس کی قوبہ ہوچکی ہویتو اب خاتم الانبیا مجمداوران کی با ک

الطَّيِّبِينُنَ الطَّاهِرِينَ وَ ارُزُقُنِي شَفَاعَةَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ اللهِ وَلا تَحْرِمُنِي صُحْبَتَهُ

و با کیز ہ آ لئر پرحت ما زل فرمااور مجھے محمر سلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی شفاعت نصیب کراور مجھے ان کی ہم نشینی سے محروم زیکر ہاس لئے کہ تُو تمام رحم

إِنَّكَ أَنُتَ أَرُحَمُ الرَّاحِمِينَ اَللَّهُمَّ اقْضِ لِي فِي الْاَرْبَعَآءِ اَرْبَعَلِ اجْعَلُ قُوِّتِي فِي طَاعَةِكَ

كرف والول سے زمادہ رحم كرف والا ب-بارالها! اس روز چهارشنبه ميس ميري جارهاجتيں پورى كر دے۔ يد كراهمينان موتو تيري

وَ نَشَاطِيُ فِي عِبَادَتِكَ وَ رَغَبَتِي فِي ثُوَابِكَ وَ زُهُدِي فِيُمَا يُوجِبُ لِي اَلِيُمَ عِقَابِكَ الله

فرمانبر داری میں ،سروں وتو تیری عبادت میں،خواہش ہوتو تیرے ثواب کی جانب اور کنار ہمٹی ہوتو ان چیزوں سے جو تیرے درونا کے عذاب کا

SIBTAIN.COM فَاللَّهُ لِمَا نَشَاءُ .

ما عث ہیں ہے فلک قوجس چیز کے لئے جا ہا ہے لطف کوکا رفر ما کما ہے۔

وعائے روز پنج شنبہ (جمعرات)

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ ٥

خدا کما م ہے شروع جویز امہر یا ن نہایت رقم والا ہے

ٱلْـحَـمُدُ لِلَّهِ الَّذِي ٱذُهَبَ اللَّيُلَ مُظُلِمًا بِقُدُرَتِهِ وَ جَآءَ بِالنَّهَارِ مُبُصِرًا بِرَحُمَتِهِ وَكَسَاذِي

سب تعریف اس اللہ کے لئے ہے جس نے اپنی قدرت سے امذ حیری رات کورخصت کیا اورا پی رحمت سے روشن ون ٹکالا اوراس کی روشنی کا زرما رجامہ مجھے

ضِيَاآءَ هُ وَ أَنَا فِي نِعُمَتِهِ ٱللَّهُمَّ فَكَمَا أَبُقَيْتَنِي لَهُ فَٱبْقِنِي لِآمُثَالِهِ وَ صَلِّ عَلَى النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ

پہنلا اوراس کی نعمت سے بھرہ مند کیا۔ اِ رالبا اِ جس طرح تو نے اس دن سے لتے مجھے اِ فی رکھاای طرح اس جیے دوسر ، ونوں سے لئے زند ورکھ۔اور

وَالِهِ وَلاَ تَسَفُحَ عُنِينِي فِيُسِهِ وَفِي غَيْرِهِ مِنَ اللَّيَالِيُ وَالْآيَّامِ بِارْتِكَابِ الْمَحَارِم وَاكْتِسَابِ

اپنے تی خبر محماً دران کی آ ل پر رحمت ما زل فر مااوراس ون میں اوراس کےعلاوہ اور راتوں اور دنوں میں حرام امور کے بجالا نے اور کما ہو معاصی کے ارتکا ب

الْمَاثِمِ وَ ارُزُقْنِي خَيْرَهُ وَ خَيْرَ مَا فِيْهِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهُ وَاصْرِفْ عِنِّي شَرَّهُ وَشَرَّ مَا فِيْهِ وَشَرًّ

کرنے سے رنجید وخاطر نہ کر۔اور مجھے اس ون کی بھلائی اور جواس کے بعد ہاس کی بھلائی عطا کر۔اوراس ون کی ہر انی اورجو بچھاس ون میں ہاس کی

مَا بَعُدَهُ اللَّهُمَّ اِنِّي بِلِمَّةِ ٱلإسُلامِ اتَّوَسَّلُ اِلَيْكَ وَبِحُرُمَةِ الْقُرُانِ اَعْتَمِدُ عَلَيْكَ وَبِمُحَمِّمٌ

برائی اورجواس کے بعد ہاس کی ہر ائی مجھ سے دور کروے اے اللہ ائمیں اسلام سے عہدو پیان کے ذریعہ چھے سے توسل جاہتا ہوں اورقر آن کی عزت و

الْـمُـصُـطَفٰي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَالِهِ اَسْتَشُفِعُ لَكَيْكَ فَاعْرِفِ اَللَّهُمَّ ذِمَّتِيَ الَّتِي رَجَوُتُ بِهَا

حرمت کے واسط سے تھے پر مجروسا کرتا ہوں اور مصطفی صلی اللہ علیہ وآلیہ وسلم سے وسیلہ سے حیری بارگاہ میں شفاعت کا طلب گارہوں بقو اے میرے معبود!

قَطَاآءَ حَاجَةِي يَا أَرُحَمَ الرَّاحِمِينَ اللَّهُمَّ اقْضِ لِي فِي الْخَمِيسِ خَمْسًا لَّا يَتَّسِعُ لَهَآ إلَّا

میرے اس عبدویتان پرنظر کرجس کے وسلہ سے حاجت برآ ری کا امیروار ہوں۔اے رقم کرنے والوں میں سب سے زیا وہ رقم کرنے والے ۔ با پرانہا! اس

كَرَمُكَ وَلاٰ يُطِيُقُهَا إلَّا نِعَمُكَ سَلاٰمَةً ٱقُواى بِهَا عَلٰى طَاعَةِكَ وَعِبَادَةً ٱسْتَحِقُّ بِهَا جَزِيٌّ

روز پنیشنبه میں میری پاچ حاجتیں برلاجن کی سائن خیرے ہی واس کرم میں ہاورخیری ہی تعتوں کی فراوائی ان کی مختل ہوسکتی ہے۔ ایسی سلامتی وے جس

مَشُوْبَةِ كَ وَسَعَةً فِي الْلَحَالِ مِنَ الْإِزْقِ الْلَحَلَالِ وَأَنْ تُؤْمِنِكُ فِي مُواقِفِ الْخَوْفِ بِامُذِكَ

سے حیری فر مائبر داری کی قوت حاصل کرسکوں۔الیجی تو فیق عباوت دے جس سے حیر ہے تواب عظیم کاستحق قراریا کا۔اورسروست رزق حلال کی فراوانی

وَتَـجُعَلَنِـيُ مِنُ طَوَارِقِ الْهُمُومِ وَالْغُمُومِ فِي حِصْدِكَ وَصَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَالِ مُحَمَّدٍ ﴿

اور خوف وخطر کے مواقع پر اپنے اس کے ذریعہ مطمئن کروے اور غول اور فکروں کے بچوم سے اپنی بناہ میں رکھ مجمداوران کی آ ل پر رحمت ما زل فر مااوران

وَّا جُعَلُ تَوَسُّلِي بِهِ شَافِعًا يَّوُمَ الْقِيَامَةِ نَافِعًا إِنَّكَ أَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِيُنَ.

ے میر کے سل کوقیا مت کے ون سفا رش کرنے والا، نفع بخشے والاقر اردے۔ بیکٹ و رحم کرنے والوں میں سب سے زیا و ورحم کرنے والا ہے۔

دعائروز آدينه (جعه)

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

حدا کیا مے شروع جویزام پریان نہایت رقم والا ہے

ٱلْحَـمُـدُ لِللَّهِ الْاَوَّلِ قَبُلَ الْإِنْشَآءِ وَ الْإِحْيَآءِ وَ الْأَخِرِ بَعُدَ فَنَآءِ الْاَشْيَآءِ الْعَلِيهِ الَّذِي لاَ

تمام تعریف اس اللہ تعالیٰ کے لئے ہے جو پیدا کرنے اور زندگی بخشنے سے پہلے موجود تھااور تمام چیزوں کے فنا ہونے کے بعد ہاقی رہے گا۔وہ

يَنُسْسِي مَنُ ذَكَرَهُ وَلاَ يَنْقُصُ مَنُ شَكَرَهُ وَلاَ يَخِيُبُ مَنُ دَعَاهُ وَلاَ يَقُطَعُ رَجَآءُ مَنُ رَجَآهُ ا بیاعلم والاہے کہ جواسے یا در کھے اسے بھولٹائییں۔ جواس کاشکرا دا کرے اس کے بال کمیٹیں ہونے دیتا۔ جواس یکارے اسے محروم ٹییں ٱللَّهُـمَّ إِنِّيُ ٱشْهِدُكَ وَ كَفْلِي بِكَ شَهِيُدًا وَ ٱشْهِدُ جَمِيْعَ مَلاثِكَتِكَ وَ سُكَّانَ سَمَوَاتِكَيُّ وَ كرتا -جواس سے اميدر كھاس كى اميرنييں تو ژنا ہا إلها إنمين تھے كواه كرنا ہوں اورتو كواه ہونے كے لحاظ سے بہت كافى ہے۔اور تيرے حَـمَـلَةِ عَـرُشِكَ وَ مَـنُ بَعَثُتَ مِنُ ٱنْبِيٓآئِكَ وَ رُسُلِكَ وَ ٱنْشَاْتَ مِنُ ٱصْنَافِ خَلُقِكَ ۗ ﴿ الْمُلِكَ تمام فرشتوںاور تیرے آسا نوں میں بسنے والوںاور تیرے عرش کے اٹھانے والوںاور تیرے فرستادہ نبیوں اور رسولوں اور تیری پیدا کی ہوئی ٱشْهَــُدُ ٱذَّكَ ٱنْتَ اللَّهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا ٱنْتَ وَحُدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَلا عَدِيْلَ وَلا خُلْفَ لِقَرْ ﴿كَ مسمقتم کی مخلو قات کوا چی کوا بی بر گوا ہ کرتا ہوں کہ تو بی معبو د ہےاور تیر ہے علاو ہ کوئی معبو ڈٹیٹل یتو وحدہ لاشریک ہے تیرا کوئی جمسرٹیل ہے۔ وَلاْ تَبُدِيُـلَ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ عَبُدُكَ وَ رَسُوُلُكَ اَذٰى مَا حَمَّلْتَهُ تیرے قول میں ندوعد ہ خلاقی ہوتی ہے اور نہ کوئی تبدیلی ۔اور یہ کرمحمسلی اللہ علیہ و آلہ وسلم تیرے فاص بندے اور رسول ہیں ۔جن چیزوں کی الْعِبَادِ وَ جَاهَدَ فِي اللَّهِ عَزُّوا جَلُّ حَقَّ الْحِهَادِ وَ أَنَّهُ بَشَّرَ بِمَا هُوَ حَقٌّ مِّنَ الثَّوَابِ وَ أَنْذَرَ ذمہ دار**ی** تُو نے ان پر عائد کی وہ ہندوں تک پہنچا دیں ۔ نہوں نے حدائے ہن رگ و برتر کی راہ میں جہا دکر کے حق جہا دا دا کیااور سیجے سیجے تواب بِـمَـا هُـوَ صِـدُقٌ مِّـنُ الْعِقَابِ اَللَّهُمَّ ثَبَّتُنِي عَلَى دِيْنِكَ مَا اَحْيَيْتَنِي وَلا تُزغُ قَلْبي بَعُدَ اِذُ کی خوشخبری دی اورواقعی عذاب سے ڈرایا۔ با را لہا! جب تک ٹو مجھے زندہ رکھا ہے دین پرٹابت قدم رکھاور جب کہ ٹونے مجھے ہدایت کر هَـدَيْتَنِـيُ وَهَـبُ لِـيُ مِنُ لَّدُنُكَ رَحُمَةً إِنَّكَ ٱنُتَ الْوَهَّابُ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ عَلْي دی تو میرے دل کوبے را ہ نہ ہونے دے اور مجھے اپنے ماس سے رحمت عطا کر۔ بیٹک تو ہی (نعمتوں کا) بخشنے والا ہے ۔محماً و ران کی آل پر مُسحَدمَّدِ وَّ الجُعَلُنِديُ مِنُ ٱتُبَاعِهِ وَ شِيْعَتِهِ وَ احْشُرُنِيُ فِي زُمُرَتِهِ وَ وَفَقُنيُ لِاَدَآءِ فَرُ ض رحمت نا زل فرما اورہمیں ان کے گرو ہ میں قرار دےاوران کے زمر مے محشور فرما اور نما زجعہ کے فریضیاوراس دن کی دوسری عبادتوں کے بجا الُـجُـمُ عَـاتِ وَمَا اَوْجَبُتَ عَلَيَّ فِيُهَا مِنَ الطَّاعَاتِ وَ قَسَمُتَ لِلَّهُلِهَا مِنَ الْعَطَآءِ فِي يَوْم لانے اوران فرائض پڑمل کرنے والوں پر قیامت کے دن جوعطا کیں تُونے تقسیم کی ہیں آئیس حاصل کرنے کی توفیق مرحمت فرما۔ بے شک ٹو الُجَوْآءِ إِذَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ. صاحب اقتداراور حکمت والاہے۔

وعائے روز شنبہ (ہفتہ)

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

خدا کے ام سے شروع جو پڑام ہر مان نہایت رقم والا ہے

بِسُمِ اللَّهِ كَلِمَةِ الْمُعَتَصِمِينَ وَمَقَالَةِ الْمُتَحَرِّ زِيْنَ وَ اَعُوُذُ بِاللَّهِ تَعَالَى مِنُ جَوُرٍ

مدوالله تعالى كمام سے جوجفا ظت جا ہے والول كا كلمة كلام اور بنا و دُهومُ في والول كاور و زبان بے۔اور خد اوند تعالى سے بنا و جا بتا ہول ستم كارول كى ستم

الْجَائِرِيُنَ وَكَيْدِ الْحَاسِدِيْنَ وَ بَغْيِ الظَّالِمِيْنَ وَ أَحْمَدُهُ فَوُقَ حَمْدِ الْحَامِدِيْنَ اَللَّهُمَّ

رانی، حاسدوں کی فریب کاری اور ظالموں سے ظلم مارواہے یمیں اس کی حمد کمتا ہوں (اورسوال کرتا ہوں کروہ اس حمد کو) تما م حمد کرنے والوں کی حمد بیرفو قیت

ٱنُتَ الْوَاحِدُ بِلاَ شَرِيُكِ وَ الْمَلِكُ بِلاٰ تَـمُلِيُكِ لاَّ تُضَاّدُ فِي حُكْمِكَ وَلاٰ تُنَازَعُ

و ۔۔ ا بالباب و ایک اکیلا ہے۔ جس کا کوئی شریک نیس ۔ اور پغیر کسی کے مالک بنا ہے تو مالک وفر مازوا ہے۔ ٹیرے تھم کے آ محکوئی روک کھڑی ٹیس کی جا

مُلْكِكَ ٱسْتَلُكَ أَنْ تُعَلِّمُ عَلَى مُحمَّلِ عَلِي كَوْ رَاسُولِكَ وَأَنْ تُوزِعَنِي مِنْ شُكْرِ نُعُ

سکتی اور نہجیری سلطنت وفر مازوائی میں جھے سے تکمر فی جا سکتی ہے بئیں جھے سے سول کتا ہوں کڑو اپنے عبدخاص اور رسول تعفرت محر پر رحمت مازل فر مااور

مَا تَبُلُغُ بِيُ غَايَةً رِضَاكَ وَ أَنُ تُعِيُنَذِي عَلَى طَاعَةِكَ وَ لَزُّوُمٍ عِبَادَةِكَ وَ اسْتِحُقَاقِ مَثُوْبَا

ا بی تحتوں پر ایبا شکرمیرے ول میں ول وے جس ہے او اپنی خوشنووی کی آخری حد تک مجھے پہنچا وے۔ اور اپنی نظر عنایت سے اطاعت، عباوت کی

بِـلُـطُفِ عِـنَايَةِكَ وَ تَرُحَمَنِيُ بِصَدِّيُ عَنُ مَّعَاصِيُكَ مَآ اَحْيَيُتَذِيُ وَ تُوَفِّقِنِي لِمَا يَنُفَعُنِيُ

یا بندی اورثواب کا انتخفاق حاصل کرنے بیل میری مدفر مائے اور جب تک مجھے زندہ رکھے گنا ہوں سے بازر کھے ٹس بچھ پر رتم کرے۔اور جب تک مجھے

ٱبُـقَيْتَنِـٰيُ وَ أَنُ تَشُرَحَ بِكِتَابِكَ صَدُرِيُ وَ تَحُطُّ بِتَلاٰوَتِهٖ وِزُرِيُ وَ تَمُنَحَنِي السَّلاٰمَةَ فِيُ

باقی رکھے ان چیزوں کی آؤ فیل وے جومیرے لئے سود مند ہوں اور اپنی کتاب کے ذرابعہ میر اسید کھیل وے اور اس کی تلاوت کے وسیلہ سے میرے گنا ہ

دِيُنِيْ وَ نَفُسِيُ وَلا تُوْحِشَ بِي آهُلَ ٱنْسِيُ وَ تُصِمَّ إِحْسَانَكَ فِيُمَا بَقِيَ مِنْ عُمُرِي كَمَآيُ

چھانٹ وے اور جان وائمان کی سلامتی عطا فرمائے اور میرے دوستوں کو (میرے گنا ہوں کے باعث) وحشت میں نہ ڈالے اور جس طرح میری گزشتہ

أَحْسَنُتَ فِيْمَا مَضَى مِنْهُ يَآ أَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ.

زندگی میں احمانات کے میں ای طرح بقیرزندگی میں مجھ پراہنے احمانات کی تحیل فرمائے۔اے رحم کرنے والوں میں سب سے زیاو ورحم کرنے والے۔

(١) حفرت امير عليه السلام كى دعاء صباح

ِ ذیل میں حضرت امیر المؤمنین علی علیہ السلام کی دعاء صباح نقل کی جاتی ہے جس کاہر مبح پڑ ھناوار دہواہے ، جوبیہے: بہشم اللّٰیہ الرَّ حُمانِ الرَّ حِمانِ الرَّ حِمانِ الرَّ حِمانِ الرَّحِيمُ o

خدا کمام سے شروع جوہڑامہر بان نہایت رقم والا ہے

اَللْهُ مَّ يَا مَنُ دَلَعَ لِسَانَ السَّبَاحِ بِنُطُقِ تَبَلُّجِهِ وَ سَرَّحَ قِطَعَ اللَّهُ لِ الْمُظُلِمِ بِغَيَاهِبِ ا معبود! اے وہ ص نے میچ کی زبان کوروشیٰ کی کویائی دی اورا تدمیری رات کے تکڑوں کولرزتی تا ریکیوں سمیت بنکا دیا

تَكَجُلُجِهِ وَ اَتُقَنَ صُنعَ الْفَلَكِ الدَّوَّارِ فِي مِقَادِيْرِ تَبَرُّجِهِ وَ شَعُشَعَ ضِيَآءَ الشَّمُسِ بِنُورِ اورگوئة آسان كاسا ختكواس كرير جول عظم كيااورسورج كاروشي كواس كورفروزال سے چكايا اے وہ جس

تَاجُوبِهِ يَا مَنُ دَلَّ عَلَى ذَاتِهِ بِذَاتِهِ وَ تَنَزَّهَ عَنُ مُجَانَسَةِ مَخُلُوقَاتِهِ وَ جَلَّ عَنُ مُلْأَفَمةِ

كَيُفِيَّاتِهِ يَا مَنُ قَرُ 4 مِنْ خَطَراتِ الظُّنُونِ وَ بَعُدُ عَنْ لَحَظَّاتِ الْعُيُونِ وَ عَلِمَ بِمَا كَانَ

ہے اے وہ جوظنی خیالوں سے قریب ہے اور آئم تھوں کی دید سے دو رہے او رہونے والی چیز وں کو ہونے سے پہلے جان چکا

قَبُلَ اَنُ يَكُونَ يَا مَنُ اَرُقَدَنِي فِي مِهَادِ اَمُنِهِ وَ اَمَانِهِ وَ اَيُقَطَنِي إِلَى مَا مَنَحَنِي بِهِ مِنُ مِّنَنِهِ وَ إِنَا هِ وَجِسَ نَے مُحِمَا ہِ اَمْن وسلامتی کے گہوارے ہیں سلایا اوراپی بخشش اوراحیان کویانے کے لیے مجھے بیرارکیا

ا بِهِ الْحُوهِ ، مَن لَا يَصِيمُ اللهُ وَمُلَا مَن مِهُ الرَّيِ الْمُلَا اورا فِي الرَّامُ اللهُ مَ عَلَى الدَّلِيُل إِلَيْ كَ فِي الرَّيْلِ اللهُ عَن فِي المُنْفِرِةِ عَنْ مِي بِيَدِهِ وَ سُلُطَانِهِ صَلَّ اللَّهُمَّ عَلَى الدَّلِيُل إِلَيْكَ فِي

ا پی قد رت وا فتدارے ہرانی کو مجھ پر ہاتھ ڈالنے سے روکا اے معبو درجت فر مااس پر جوتا ریک رات میں تیری طرف

اللَّيْلِ الْاَلْيَلِ وَالْمَاسِكِ مِنْ اَسْبَابِكَ بِحَبُلِ الشَّرَفِ الْاَطُوَلِ وَالنَّاصِعِ الْحَسَبِ فِغْ

ر ہنمائی کرنے والاا ورتیرے سہاروں میں سے شرف کی بائیدا ررس کو پکڑنے والا چنکتی پیٹانی والا اعلیٰ خاندان میں سے

ذِرُوَـةِ الْكَاهِلِ الْاَعْبَلِ وَ الثَّابِتِ الْقَدَمِ عَلَى زَحَالِيُفِهَا فِي الزَّمَنِ الْاَوَّلِ وَ عَلَى اللهِ

استوار روش والا آغاز بی سے لغزشول کے مواقع پر نابت قدم رہنے والا ہے اور رحمت فریااس نبی کی نیکو کاربر گزیدہ خوش

الْآخُيَارِ الْمُصْطَفَيُنَ الْآبُرَارِ وَافْتَحِ اللَّهُمَّ لَنَا مَصَارِيْعَ الصَّبَاحِ بِمَفَاتِيُحِ الرَّحُمَةِ وَ

ر دار آل پراےمعبو د! اپنی رحمت و بخشش کی سنجوں سے ہمارے لیے مبیح کے دروا زے کھول دے اےمعبو د! مجھے نیکی و

الْفَلاحِ وَ ٱلْبِسُنِيُ ٱللَّهُمَّ مِنُ ٱفْضَلِ خِلَعِ الْهِدَايَةِ وَالصَّلاحِ وَ ٱغُرِسِ ٱللَّهُمَّ بِعَظَمَةِكَ ہدا ہت کی بہترین خلعت پہنا دے خدا وندا! اپنی عظمت کے باعث میرے دل میں اپنے خوف کی لہریں دوڑا دے اے فِيُ شِرُبِ جَنَانِيُ يَنَابِيُعَ الْخُشُوعِ وَ أَجُرِ ٱللَّهُمَّ لِهَيْبَةِكَ مِنُ امَاقِي زَفَرَاتِ الذُّمُوعِ وَ معبو د!ا پی ہیت کے لیے میری آئتھوں ہے آنسوؤں کے تا رجاری کرد ہےخدایا میری مجے خلقی کو قناعت کی لگام ڈال دے اَدِّبِ اَللَّهُمَّ نَزَقَ الْخُرُقِ مِنِّي بِاَزِمَّةِ الْقُنُوعِ اللَّهِيُّ اِنْ لَمْ تَبُتَدِئُنِي الرَّحْمَةُ مِنْكَ بِحُسُنِ میر سے اللہ اگر تونے اپنی رحمت سے مجھے نیکی کی توثیق نددی تو کون مجھے تیری طرف کشادہ را در لے چلے گا اورا کرتیری دی التُّوفِيُقِ فَمَنِ السَّالِكُ بِهَٰ لَيُكَ فِي وَاضِحِ الطَّرِيُقِ وَ إِنْ اَسُلَمَتْنِيَ كَانُكَ لِقَآئِدِ الْاَمَلِ وَ ہوئی ڈھیل سے میں خواہش کے پیچھے چل پڑا تو کون مجھے ہوں کی ٹھوکروں سے بچائے گاا وراگر میر لےنفس اور شیطان کی الْـمُنٰي فَمَن الْمُقِيْلُ عَثَرَ اتِي مِنُ كَبَوَاةِ الْهَواي وَ إِنْ خَذَلَنِيْ نَصُرُكَ عِنْدَ مُحَارَبَةِ النَّفُس جنگ میں تیری نفرے میرے شامل حال نہ ہوتی تو تکویا تیری دوری نے مجھے رہج وغم کے حوالے کر دیا میرے مالک آیا وَ الشَّيْطَانِ فَقَدُ وَكُلِّي جِذُلًّا نَكُ إِلَى خَيْتُ النَّصَبِ وَ الْحِرْمَانِ الْهَاتُيَرَ انِي مَآ آتَيُتُكَ تیری نظر سے میں تیرے پاس اپنی خوا ہمٹول کے لیے آیا ہوں یا میں نے تھے سے اس وقت تعلق بنایا کہ جب میرے گنا ہوں إِلَّا مِنْ حَيْثُ الْأَمَالِ أَمُ عَلِقُتُ بِأَطُرَافِ حِبَالِكَ إِلَّا حِيْنَ بَاعَدَتُنِي ذُنُوبِي عَنُ دَارِ نے مجھے تیرے وصال سے دورکر دیا پس میرے دل نے خوا ہشوں کواپنی بری سواری بنایا پس نفرین ہے اس پرا وراس کی الُوصَالِ فَبِئُسَ الْمَطِيَّةُ الَّتِي امُتَطَتُ نَفُسِي مِنُ هَوَاهَا فَوَاهًا لَّهَا لِمَا سَوَّلَتُ لَهَا ظُنُونُهَا خیافی تمنا وَل برا ورتبابی ہواس کی جواس نے اپنے آتا ہریہ جرائ کی ہے الہی میں نے اپنی ا مید کے ہاتھوں تیرے باب وَ مُنَاهَا وَ تَبًّا لُّهَا لِجُوْاَتِهَا عَلَى سَيّدِهَا وَ مَوْلُهَآ اِلْهِيُ قَرَعْتَ بَابَ رَحُمَةِكَ بيَدِ رَجَآئِيُ رحمت پر دستک دی اوراپنی حدیے زیا دتمناؤل سے ڈر کے تیرے پاس بھا گ آیا ہوں اور محبت کی انگیوں سے تیرے وَ هَـرَبُتَ اِلَيُكَ لَاجِئًا مِّنُ فَرُطِ اَهُوَ آئِيُ وَ عَلَّقُتَ بِاَطُرَ افِ حِبَالِكَ اَنَامِلَ وَلَأَئِيُ فَاصْفَ وا مانِ رحمت کوتھا م لیاہے اے معبو د! مجھ سے جولغزشیں اور خطا نمیں ہو نمیں ان سے چشم پوشی فر ماا ورمیری چا در کی پیجی سے ٱللَّهُمَّ عَمَّا كُنُتُ ٱجُرَمُتُهُ مِنُ زَلَلِيُ وَ خَطَآئِيُ وَ اَقِلْنِيُ مِنْ صَرْعَةِ رِدَآئِي فَإِنْكَ سَيّدِي وَ ﴿ صرف نظر فرما کیونکہ تو میرا آتا و مالک ہے اور میرا سہاراا ورامید ہے اور تو بی اس و نیاا ورآخرے میں بھی میر ااصلی مطلوب

مَـوُلاٰيَ وَ مُـعُتَـمَـدِيُ وَ رَجَـآئِيُ وَ أَنْتَ غَايَةً مَطُلُوٰبِيُ وَ مُنَاىَ فِي مُنْقَلَبِي وَ مَثُواى اللهي ومقصود ہے میرے معبود! تو اس بے جارے کو کیے نکال دے گاجو تیرے پاس گنا ہوں سے بھا گ کر آیا ہے یا اس طالب كَيُفَ تَطُوُدُ مِسُكِيْنًا وِالْتَجَا اِلَيُكَ مِنَ الذُّنُوبِ هَارِبًا اَمُ كَيُفَ تُخَيّبُ مُسْتَرُشِدًا قَصَدَ ہدا ہت کو کیے مایوں کرے گا جو تیرے حضور دوڑتا ہوا آیا ہے یا اس بیا ہے کوتو کیے دورکرے گا جو تیرے کرم کے حوش سے اِلٰي جَنَاهِكَ سَاعِيًا أَمُ كَيُفَ تَرُدُّ ظَمُانَ وَرَدَ اِلٰي حِيَاضِكَ شَارِبًا كَلَّا وَ حِيَاضُكَ مُتُرَ پیاں بھانے آیا ہے ہر گزشیں کہ تیر ہے قیض کے چشے خشک سالی میں بھی رواں میں اور تیرا باب کرم واضلے اور سوال کے فِيُ ضَنْكِ الْـمُحُولُ وَ بَابُكَ مَفْتُوحٌ لِلطَّلَبِ وَ الْوُغُولُ وَ اَنْتَ غَايَةُ الْمَسْئُولُ وَ نِهَايَا لیے کھلا ہے اور تو سوال کی انتہاا ورا مید کی حد آخر ہے میر ہے معبو دایہ میر نے قس کی ہا گیں ہیں جن کو میں نے تیری مثیت الْمَامُول اللهي هلذِ ﴿ أَزَمَّهُ نَفُسِي عَقَلْتُهَا بِعِقَالِ مَشِيَّةِكَ وَ هَذِ ﴿ أَعُبَآءُ ذُنُوبِي دَارَ أَتُهَا ک ری سے باند ھ دیا ہے اور رہے ہیں میر ے گنا ہول کی کھڑیا ں جو میں نے تیری پخشش ورحمت کے آگے لارکھی ہیں اور پیا بِعَفُوكَ وَ رَحُمَتِكُ وَ هَٰذِهِ الْمُوآئِيَ الْمُطِلَّةُ وَكُلْتُهَا ۚ إِلَى جَبَابٍ لَطُفِكَ وَ رَافَتِكَ فَالْجَيْعَالَ جیں میری گمراہ کن خواہشیں جو میں نے تیر سے لطف وکرم کے پیر د کر دی جیں اپس اے پر ور دگار!اس مجمح کومیر ہے لیے نور اللُّهُمَّ صَبَاحِيُ هٰذَا نَازِلاً عَلَيَّ بِضِيّاءِ الْهُدَى وَ بِالسَّلاٰمَةِ فِي الدِّيْنِ وَ الدُّنْيَا وَ مَسَآئِيُ ہدا ہے اور دین و دنیا کی سلامتی کی حامل بنا کرنا زل قر ماا وراس رات کودشمنوں کی مکاری ہے میری ڈھال اور ہلاک کرنے جُنَّةً مِّنُ كَيُدِ الْعِدَى وَ وِقَايَةً مِّنُ مُرُدِيَاتِ الْهَوْكَ إِنَّكَ قَادِرٌ عَلَى مَا تَشَآءُ تُؤْتِي الْمُلُكَ والی ہوں سے میری سپر بنا دے بے شک تو جو جا ہے اس پر قا درہے جسے جا ہے ملک دیتا ہے اور جس سے جا ہے واپس لے مَنُ تَشَاءُ وَ تَنُز عُ الْمُلْكَ مِمَّنُ تَشَاءُ وَ تُعِزُّ مَنُ تَشَاءُ وَ تُذِلُّ مَنُ تَشَاءُ بيَدِكَ الْخَيُر إِذَّ اليما ہے اور جے جا ہے عزت ويتا اور جے جا ہے ذات ويتا ہے ہر بھلائی تيرے ہاتھ ميں ہے بے شک تو ہر چيز پر قا در ہے عَـلْي كُلِّ شَيْئِ قَدِيْرٌ تُولِجُ اللَّيُلَ فِي النَّهَارِ وَ تُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَ تُخُرِجُ الْحَيَّ مِنَ رات کو دن میں داخل کرتا اور دن کورات میں داخل کرتا ہم ردہ سے زند ہ کواور زندہ سے مردہ کو برآ مدکرتا ہے اور جے الْمَيِّتِ وَ تُنخُرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ تَرُزُقُ مَنُ تَشَاءُ بِغَيْرٍ حِسَابٍ لَّاإِلَٰهَ اِلَّآ أَنْتَ عا ہے بے صاب رزق عطافر ما تا ہے نہیں کوئی معبو دسوائے تیرے یا ک ہے توا سے اللہ اور حمد تیرے بی لیے ہے کون ہے جو

سُبُحَانَكَ ٱللَّهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ مَنُ ذَا يَعُرِفُ قَدُرَكَ فَلا يَخَافُكَ وَ مَنُ ذَا يَعُلَمُ مَآ ٱنْكُي فَلا تیری قدرت کو پیچانے تو اس سے نہ ڈرے و وکون ہے جو جانتا ہوتو کون ہے پھر تھے سے مرعوب نہ ہوتونے اپنی قدرت سے يَهَابُكَ ٱللَّفُتَ بِقُدُرَتِكَ الْفِرَقَ وَ فَلَقُتَ بِلُطُفِكَ الْفَلَقَ وَ ٱنَّرُتَ بِكَرَمِكَ دَيَاجِيَ الْكَيُّكُيق منتشر کومتحد کیاا وراپنے لطف سے سپیدہ مجمع کونمایاں کیاا ورتونے ہی اپنے کرم سے تا ریک راتو ں کوروش کیاا ورتو نے سخت وَ ٱنْهَرُتَ الْمِيَاهَ مِنَ الصُّهُ الصَّيَاخِيُدِ عَذُبًا وَّ أَجَاجًا وَّ ٱنْزَلْتَ مِّنَ الْمُعُصِرَاتِ مَآءً پھروں میں سے میٹھے اور کھاری پانی کے چشمے جاری کیے اور با دلول سے تھرا ہوا میٹھا پانی برسایا اورتو نے سورج اور چاند کو ثَجَاجًا وَّ جَعَلُتَ الشُّمُسَ وَ الْقَمَرَ لِلْبَرِيَّةِ سِرَاجًا وَّهَّاجًا مِنْ غَيْرِ أَنْ تُمَارِسَ فِيُمَا ا نسا نوں کے لیے روشن جہاغ بنایا بغیراس کے کہ جو پچھاتو نے پیدا کیا تھکا ہوا وراس کاعلاج کیا ہوپس اے عز ہے اور بقاء ابُسَدَاُتَ بِهِ لُغُوبًا وَلا عِلاجًا فَيَامَنُ تَوَحَّدَ بِالْعِزِّ وَ الْبَقَآءِ وَ قَهَرَ عِبَادَهُ بِالْمَوْتِ وَ الْفَنَآءِ میں یگا نہا ورموت وفناء کے ذریعے بندول پر غالب رہنے والے! رحمت فر مامحمدٌ و آلی محدٌ پر جو پر ہیز گار ہیںا ورمیری پکار صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الْهِ الْأَتْقِلْمَاءِ وَاسْمَعُ نِدْ أَئِلَ وَاسْتَجِبُ دُعَانِي وَ حَقِّقُ بفَضلكَ امَلِي سن لے میری دعا قبول فرماا وراپنے کرم سے میری تمنا وا مید پوری کر دےا ہے وہ بہترین ذات جے تکلیف دور کرنے کے وَ رَجَآئِهِي يَا خَيْرَ مَنُ دُعِيَ لِكَشُفِ الضَّرِّ وَ الْمَأْمُولِ لِكُلِّ عُسُرٍ وَ يُسُرِ بِكَ آنْزَلْتُ لیے پکا را جاتا ہےا ورائے تنگی وفراخی میں امید گاہ ممیں تیرے حضور حاجت لے کر آیا ہوں پس مجھے اپنی وسیع عطاؤں ہے حَاجَتِي فَلا تَـرُدُّنِي مِنُ سَنِي مَوَاهِبكَ خَآئِبًا يَّا كَرِيْمُ يَا كَرِيْمُ يَا كَرِيْمُ برَحُمَتِكَ محرومی کے ساتھ دورند کریا کریم یا کریم یا کریم اپنی رحمت کے ساتھ اسے تو سب سے زیا دہ رحمت کرنے والا ہے او رخدا کی اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى خَيْر خَلُقِهِ مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ اَجُمَعِيْنَ. رحمت ہوخلق میں بہترین حضرت محمداً وران کی سبھی آ ل پر ۔ پُهر مجده مِين جائے اور کے: اِلٰهِیُ قَلْبِیُ مَحُجُو بُ وَ نَفْسِیُ مَعُیُو بُ وَ عَقَلِیُ مَعَلَو بُ وَ هَوَ آئِیُ خداما! میرے دل پر تجاب ہے میرے نفس میں عیب ہے میری عقل نا کارہ ہے میری خوا ہش

غَالِبٌ وَّ طَاعَةِيُ قَلِيُلٌ وَّ مَعُصِيَتِيُ كَثِيُرٌ وَّ لِسَانِيُ مُقِرٌّ بِالذُّنُوبِ فَكَيُفَ حِيُلَتِي يَا سَتَّارَ

غالب میری عبادت کم اور گناہ بہت زیادہ جیں میری زبان گناہوں کا قرار کرتی ہے تو میرا جا رہ کار کیا ہے اے عیبول کو

الْعُيُسُوبِ وَ يَا عَلَامَ الْعُيُوبِ وَ يَا كَاشِفَ الْكُرُوبِ إِغُفِرُ ذُنُوبِي كُلَّهَا بِحُرُمَةِ مُحَمَّدٍ وَ چهانے والے اے پھی باتوں کو جانے والے اے دکھوں کو دور کرنے والے میرے تمام گنا و بخش دے واسط ہے تجے محمد و

الِ مُحَمَّدٍ يَّا غَفَّارُ يَا غَفَّارُ يَا غَفَّارُ بِرَحُمَةِكَ يَاۤ أَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ.

آ ل محرمليهم السلام كايا غفا ريا غفا ريا غفارا بني رحمت كے ساتھ اے سب سے زيا وہ رحم كرنے والے۔

(٢) حضرت امامزين العابرين عليه السلام كى دعائے عافيت

ا كاطرح معزت امام زين العابدين عليه السلام كى دعائے عافيت بھى مرروز روهنى حابيئے ،جوبيہ:

ٱللّٰهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ اللِّهِ وَ ٱلْبِسُنِيُ عَافِيَةَكَ وَ جَلِّلْنِيُ عَافِيَةَكَ وَ حَصِّنِّي بِعَافِيَةِ كَيْ

ا ہے اللہ! رحمت نا زل فر ما محمد اور ان کی آگ پر اور مجھے اپنی عافیت کالباس پہنا، اپنی عافیت کی ردا اوڑ ھا، اپنی عافیت کے

ٱكُرِمُنِى بِعَافِيَةِكَ وَ ٱغُنِنِى بِعَافِيَةِكَ وَ تَصَدَّقْ عَلَى بِعَافِيَةِكَ وَهَبُ لِي عَافِيَةٍ كُفُّ وَ

ذربعہ محفوظ رکھ۔اپی عافیت کے ذریعہ عزت ووقاردے۔اپی عافیت کے ذریعہ بے نیاز کردے۔اپی عافیت کی بھیک میری

ٱلْهِرِشْنِي عَافِيَةَكَ وَ أَصُلِحُ لِي عَافِيَةً كَلَ وَلا تُفَرِّقُ بَيْلِي وَ لَيْلُ عَافِيَةً كَ فِي الدُّنْيَا وَالا ﴿ إِنَّا لَهُ إِنَّا لَهُ إِنَّا لَهُ إِنَّا لَهُ إِنَّا لَهُ إِنَّا إِنَّا اللَّهُ إِنَّا إِنَّا اللَّهُ إِنَّا إِنَّا اللَّهُ إِنَّا إِنَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ إِنَّا إِلَّا اللَّهُ إِنَّا إِنَّا اللَّهُ إِنَّا إِنَّا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

حجو بی میں ڈال دےا پی عافیت مجھے مرحمت فرما۔اپی عافیت کومیرااوڑھنا پچھونا قراردے۔اپی عافیت کی میرے لیےا صلاح

ٱللُّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ اللهِ وَ عَافِينَ عَافِيَةً كَافِيَةً شَافِيَةً عَالِيَةً نَامِيَةً عَافِيَةً تُولِّذُ فِي

و دری فر مااور دنیاو آخرت میں میرےاورا پی عافیت کے درمیان جدائی نہ ڈال ۔ا ہے میرے معبود! رحمت یا زل فر مامحمداور

بَدَنِي الْعَافِيَةَ عَافِيَةَ الدُّنْيَا وَ الْأَخِرَةِ وَامُنَّنُ عَلَىَّ بِالصِّحَةِ وَالْآمُنِ وَالسَّلَامَةِ فِي دِيْنِي وَ

ان کی آگ پراور مجھےالیی عافیت دے جو بے نیا زکرنے والی ، شفا بخشے والی (امراض کے دسترس سے) ہا لا اور روزا فزوں

بَدَنِيُ وَ الْبَصِيْرَةِ فِي قَلْبِي وَ النَّفَاذِ فِي أُمُورِيُ وَ الْخَشْيَةِ لَكَ وَ الْخَوُفِ مِنْكَ وَ الْقُوَّا

ہو ۔الی عافیت جومیر ہےجتم میں دنیا و آخرت کی عافیت کوچنم دے اور صحت، امن ،جتم و ایمان کی سلامتی ،قبلی بصیرت ، نفانی

عَـلَى مَا أَمَرُ تَنِي بِهِ مِنْ طَاعَتِكَ وَ الْإِجْتِنَابِ لِمَا نَهَيُتَنِي عَنُهُ مِنْ مَعْصِيَتِكَ اَللَّهُمَّ وَامُنُرُ ﴿

امور کی صلاحیت، پیم و خوف کا جذبہ اورجس اطاعت کا تھم دیا ہے اس کے بجالانے کی قوت اور جن گیا ہوں ہے منع کیا ہے ان

عَلَىَّ بِالْحَجِّ وَالْعُمُرَةِ وَ زِيَارَةِ قَبُرِ رَسُولِكَ صَلُوتُكَ عَلَيْهِ وَ رَحْمَتُكَ وَ بَرَكَاتُكَ عَلَيُّهِ وَ

ہے اجتناب کی تو فیق بخش کر مجھ پر احمان فریا۔ با الہامجھ پر بیاحمان بھی فریا کہ جب تک تو مجھے زندہ رکھے، ہمیشہاس مال بھی

عَلْي الِهِ وَ الْ رَسُولِكَ عَلَيْهِمُ السَّلامُ آبَدًا مَا ٱبْقَيْتَنِي فِي عَامِي هَذَا وَ فِي كُلِّ عَامِي ا و رہر سال حج وعمر ہ او رقبر رسول صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم او رقبور آل رسول سلام الله علیهم کی زیارت کرنا رہوں ۔او را ن عبا دات وَاجْعَلُ ذٰلِكَ مَقُبُولًا مَشُكُورًا مَذُكُورًا لَدَيُكَ مَذُخُورًا عِنُدَكَ وَ اَنْطِقُ بِحَمْدِكَيْكُ وَ کومتبول و پیندیده، قابل النفات اوراپیزیاں ذخیرہ قرار دے اور حمدوشکرو ذکر اور ثائے جمیل کے نغموں ہے میری زبان کو شُكُركَ وَ ذِكُركَ وَ حُسُن الثُّنَاءِ عَلَيُكَ لِسَانِيُ وَ اشْرَحُ لِمَرَاشِدِ دِيُنِكَ قَلُبِي وَ أَهْيَةُ نِيُ سکویا رکھاور دین ہدا بیوں کے لیے میرے دل کی گر ہیں کھول دے اور مجھے اور میری اولا دکو شیطان مردو د اور زہر یلے وَ ذُرِّيِّتِي مِنَ الشُّيُطُنِ الرَّجِيُمِ وَ مِنْ شَرِّ السَّامَّةِ وَ الْهَآمَّةِ وَالْعَآمَّةِ وَالْآلَمَةِ وَ مِنْ شَرّ كُلّ جا نوروں، بلاک کرنے والے حیوانوں اور دوسرے جانو روں کے گزند اور چیٹم بدسے پنا ہ دے اور ہرسرکش شیطان ، ہر ظالم شَيُطَان مَريُدٍ وَ مِنُ شَرِّ كُلِّ سُلُطَان عَنِيُدٍ وَ مِنُ شَرِّ كُلِّ مُتُرَفٍ حَفِيُدٍ وَ مِنُ شَرّ كُلّ تحكمران، ہر جمع جنقے والےمغرور، ہر كمزوراورطاقتور، ہراعلی وا دنی، ہر چھوٹے بڑے اور ہرنز ديک اور دوروالے اور جن و ضَعِيُفٍ وَ شَدِيْدٍ وَ مِلْ هَا إِنَّا شَرِيْقِ وَوْخِلِيْعِ وَمِنْ شَرَّكُولَ صَعِيْرٍ وَ كَبِيْرِ وَ مِنْ شَرّ انس میں سے تیرے پیٹمبراوران کے اٹل بیت ہے ہرسر پیکارہونے والے اور ہر حیوان کے شرسے جن پر تھے تسلط عاصل ہے، كُـلِّ قَـرِيْبٍ وَ بَعِيْدٍ وَ مِنُ شَرِّ كُلِّ مَنُ نَصَبَ لِرَسُولِكَ وَلِاَهُلِ بَيْتِهِ حَرُبًا مِّنَ الْجِنِّ وَ محفوظ رکھ۔اس لیے کرتو حق و عدل کی راہ پر ہے ۔اےاللہ! محمد اوران کی آل پر رحمت ما زل فرما اور جو مجھ سے برا تی کرما الْإِنُس وَ مِنُ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ أَنُتَ اخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّكَ عَلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيهُم اَللَّهُمَّ صَلَّ چاہے بھے سے روگر دان کر دے، اس کا حرجھ سے دور، اس کا اثر مجھ سے دفع کردے اوراس کے حروفریب (کے تیر) عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ اللهِ وَمَنُ اَرَادَنِيُ بِسُوْءٍ فَاصُرِفُهُ عَنِّي وَادُحَرُ عَنِّيُ مَكُرَهُ وَ ادُرَأَ عَنِّيُ شَرَّهُ ای کے سیز کی طرف پلٹا دےاوراس کے سما ہے ایک دیوا رکھڑی کر دے یہاں تک کہ اس کی آتھوں کو مجھے دیکھنے سے نا ہیا وَ رُدَّ كَيْدَهُ فِي نَحُرِهِ وَاجْعَلُ بَيْنَ يَدَيُهِ سَدًّا حَتَّى تُعْمِىَ عَنِّي بَصَرَهُ وَ تُصِمُّ عَنُ ذِكُرى اوراس کے کا نوں کومیرا ذکر سننے سے بہرا کر دے اوراس کے دل پرتقل چڑ ھادے تا کہ میرااسے خیال نہ آئے۔اورمیر ہے سَمْعَهُ وَ تُتُقْفِلَ دُونَ اِخُطَارِي قَلْبَهُ وَ تُخُرِسَ عَنِّي لِسَانَهُ وَ تَقُمَعَ رَأْسَهُ وَ تُذِلُّ عِزَّهُ وَ با رے میں پچھے کہنے سننے ہے اس کی زبان کو گنگ کرد ہے ، اس کا سر کچل دے۔ اس کی عزت یا مال کر دے ، اس کی حمکنت کوتو ژا تَكُسِرَ جَبَرُوْتَهُ وَ تُذِلَّ رَقَبَتَهُ وَ تَفُسَخَ كِبُرَهُ وَ تُؤْمِنَنِى مِنُ جَمِيعٍ ضَرِّهٖ وَ شَرِّهٖ وَ غَمُزِهٖ وَ دـــاس کارُدن مِن ذلت کاطوق ڈال دے اس کا تجرِثُم کردے۔ اور چھاس کی خردرمانی، شریندی، طعنزنی، هَـمُـزِهٖ وَ لَـمُـزِهٖ وَ حَسَـدِهٖ وَ عَـدَاوَتِهٖ وَ حَبَآئِلِهٖ وَ مَصَآئِدِهٖ وَ رَجُلِهٖ وَ حَيْلِهٖ إِنَّكَ عَزِيُزُ

غیبت، عیب جوئی، حسّد، دهمنی اور اس کے بھندوں، ہتھکنڈوں، پیادوں اور سواروں سے اپنے حفظ وامان میں رکھ۔ یقیناً تو پچھ دو

غلبہ واقتدار کاما لک ہے۔

(٣) وعائے منتشیر

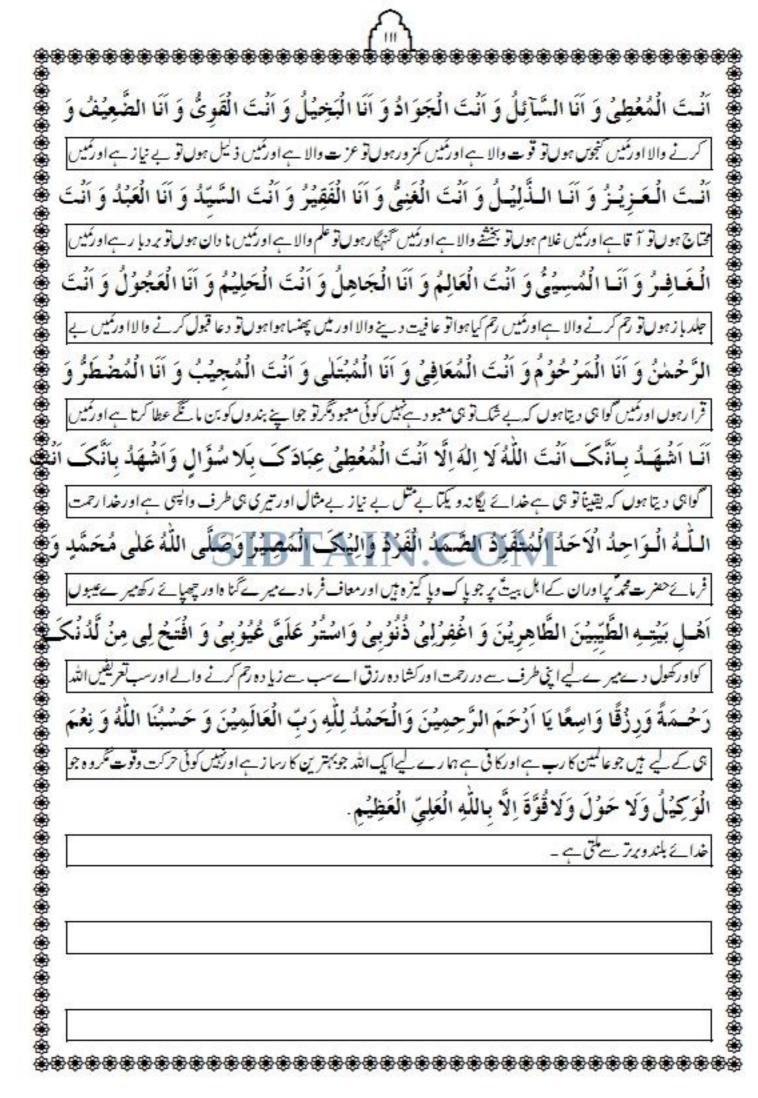
اگرخدانو فیق دینو اہل ایمان کوچاہیئے کہ جوشام اس دعائے یستشیر کوبھی پڑھا کریں جوحضرت پیغیبر اسلام صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے حضرت امیر علیہ السلام کوتعلیم دی تھی اورانہیں صبح وشام اس کے پڑھنے اوراپنے بعد اپنے اوصیا تاکوبھی اس کے تعلیم دینے کا تھلم دیا تھا۔ (مہج الدعوات) اوروہ دعا یہ ہے:

SIBOTE SI

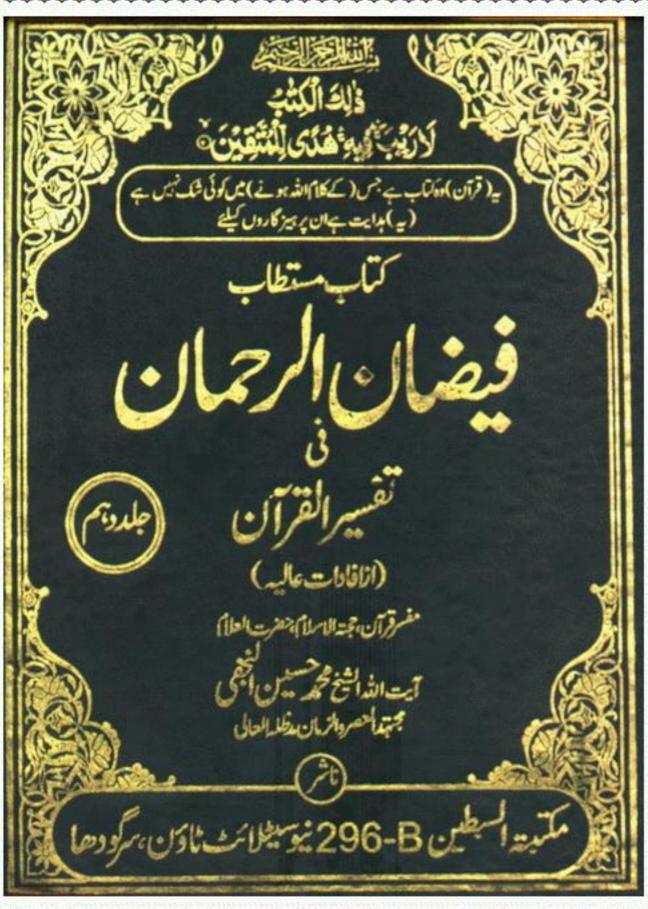
خدا كمام سے شروع جويروام بريان نہايت رحم والا ب

وَ مَا بَيْـنَهُـمَا وَ مَا تَـحُتَ الشُّرَى فَانَآ اَشُهَدُ بِأَذَّكَ اَنْتَ اللَّهُ لَا رَافِعَ لِمَا وَضَعُتَ وَلَا کا ہے جو کچھ آسا نول میں اور جو کچھ زمین میں ہے جو کچھان کے درمیان اور جو کچھ زیر زمین موجود ہے ہیں میں گواہی دیتا ہول وَاضِعَ لِمَا رَفَعُتَ وَلَا مُعِزَّ لِمَنُ اَذُ لَلُتَ وَلَامُذِلَّ لِمَنْ اَعْزَزْتَ وَلَا مَا نِعَ لِمَنُ أَعْطَيْتَ کرتو ہی اللہ ہے نہیں کوئی بلند کرنے وا لا اسے جسے تو بہت کر ہے اور نہیں کوئی بہت کرنے والا اسے جسے تو بلند کر ہے نہیں کوئی وَلَا مُعُطِى لِمَا مَنَعُتَ وَ أَنْتَ اللَّهُ لَآ اِللَّهِ الَّا أَنْتَ كُنُتَ اِذُا لَمُ تَكُنُ سَمَآءٌ مَّبُنِيَّةٌ وَلأ عزت دینے والا اسے جسے تو ذکیل کرےا ورنہیں کوئی ذکیل کرنے والا اسے جسے تو عزت دے نہیں کوئی روکنے والا اسے جسے تو اَرُضٌ مَـدُحِيَّةٌ وَ لَا شَـمُسٌ مُضِينَئَةٌ وَ لَا لَيُلُ مُظُلِمٌ وَ لَا نَهَارٌ مُّضِيٓيً وَ لَا بَحُرٌ لُجّي وَ لَا عطا کرےاورنہیں کوئی عطا کرنے والا اس کوجس ہے تو روک لےا ورتو ہی اللہ ہے نہیں کوئی معبو دسوائے تیمر لے موجودتھا جب جَبَلٌ رَّاسٍ وَّ لَا نَجُمٌ سَارٍ وَّ لَا قَمَرٌ مُّنِيُرٌ وَّ لَا رِيْحٌ تَهُبُّ وَ لَا سَحَابٌ يَّسُكُبُ وَ لَا بَرُقٌ آ سان بلندنبيس كيا گيا تھااور نەزمين بچھائی گئي تھی اور نەسورج چيكايا گيا تھا نەتا ريك رات اور نەروش دن پيدا ہوا تھا نەسمندر يَكُمَعُ وَلَا رَحُدُ يُسَبِّحُ وَالْارُواحُ تَكَفِّسُ وَأَلَا طَآئِرٌ يُطِيرُ وَلَا لَا ثَكُو قُدُ وَلَا مَآءُ يَظُردُ موجزن تھا نہ کوئی او نچاپہا ڑتھا نہ چلتا ہوا ستارہ تھاا ور نہ چیکتا ہوا جا ندا ورچلتی ہوئی ہواتھی نہ بی ہر سنے وا لا ہا دل تھا نہ جیکنے والی كُنْتَ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ كَوَّنَتَ كُلُّ شَيْءٍ وَّ قَدَرُتَ عَلَى كُلِّ شَيءٍ وَ ابْتَدَعْتَ كُلُّ شَيْءٍ بجلی ا ور نذکر کنے والے با دل ندسانس لینے والی روح ا ور ندا ڑنے وا لا پر ند ہ تھا نہ جلتی ہوئی آ گ۔ا ور نہ بہتا ہوا پانی پس تو ہر چیز وًّ أَغُنيُتَ وَ أَفُقَرُتَ وَ اَمَتَّ وَ اَحْيَيُتَ وَ اَضْحَكْتَ وَ اَبْكَيْتَ وَ عَلَى الْعَرُشِ اسْتَوَيْتَ سے پہلے تھاا ورتو نے ہر چیز کو بنایا اورتو ہی ہرشکی پر قا دروقد ریہ ہےتو نے ہر چیز کوا یجا دکیاا ورانہیں بے نیا زاورمختاج بنایا اسےموت فَتَبَارَكُتَ يَآ اَللَّهُ وَ تَعَالَيُتَ اَنْتَ اللَّهُ الَّذِي لَا اِلٰهَ الَّا اَنْتَ الْخَلَاقُ الْمُعِينُ اَمُرُكَ غَالِبٌ اورزندگی دیتاہے ہنسا تا ہے اوررلاتا ہے اورتو عرش پر حاوی ہے پس تو باہر کت ہے اے اللہ تو بلند ہے تو وہ اللہ ہے کہ میں کوئی وَّ عِلْمُكَ نَافِذٌ وَّ كَيْدُكَ غَرِيْبٌ وَ وَعُدُكَ صَادِقٌ وَّ قَوْلُكَ حَقٌّ وَّ حُكُمُكَ ﷺ لَّ وَ معبو دسوائے تیرے تو پیدا کرنے والا مدددینے والاہے تیراحکم غالب تیراعکم مجرااور تیری تدبیر عجیب ہے تیرا وعد وسیااور تیرا قول كَلَامُكَ هُدًى وَ وَحُيُكَ نُورٌ وَ رَحْمَتُكَ وَاسِعَةٌ وَ عَفُوكَ عَظِيْمٌ وَ فَضُلُكَ ﷺ يُرٌ وَ حق ہےا ورتیرا فیصلہ عا دلا نہہا ورتیرا کلام ہدایت والا ہے تیری وحی نورا ورتیری رحمت وسیع ہے تیری بحشش عظیم تیرافضل کثیر

عَـطَآوُكَ جَزِيْلٌ وَّ حَبُلُكَ مَتِيُنٌ وَ اِمْكَانُكَ عَتِيْدٌ وَّ جَارُكَ عَزِيْزٌ وَ بَأْسُكَ شَدِيْدٌ وَيَجْكُرُكَ اورتیری عطا بہت بڑی ہے تیری ری مضبوط اور تیری قدرت آمادہ ہے تیری پنا ہ لینے والا قوی تیرا حملہ بخت اور تیری تجویز پیجیدہ مَكِيُلُدٌ أَنُتَ يَا رَبِّ مَوْضِعُ كُلِّ شَكُواى وَ حَاضِرُ كُلِّ مَلاءٍ وَّ شَاهِدُ كُلِّ نَجُواى مُنْتَهلي ہا ہے پر وردگا رتو ہر شکایت کے چینچنے کی جگہ ہر جماعت میں موجوداور ہر سر گوشی کا گوا ہ ہےتو ہر حاجت کی مفتی ہرغم کو دورکرنے كُـلّ حَاجَةٍ مُّفَرِّجُ كُلّ حُزُن غِنٰي كُلّ مِسْكِيُن حِصْنُ كُلّ هَارِبِ اَمَانُ كُلّ خَآئِفٍ حِرُزُ والا ہر بے جا رے کا سرمانیہ ہر بھا گئے والے کے لیے قلعہ ہر ڈرنے والے کے لیے جائے امن کمز وروں کی ڈ ھال فقیروں کا الضَّعَفَآءِ كَنُزُ الْفُقَرَآءِ مُفَرَّجُ الْغَمَّآءِ مُعِينُ الصَّالِحِينَ ذٰلِكَ اللَّهُ رَبُّنَا لَآ اِلٰهَ الَّا هُوَ تَكُفِي خزا نہ غموں کومٹانے والاا ورنیکو کاروں کا مددگا رہے بہی اللہ جا را رہے ہے نہیں کوئی معبود مگر وہی تو کافی ہےاہے ان بندول کے مِنُ عِبَادِكَ مَنُ تَوَكَّلَ عَلَيْكَ وَ ٱنْتَ جَارُ مَنُ لَاذَبِكَ وَ تَضَرَّعَ اِلَيُكَ عِصْمَةً مَنِ اعْ ﴿ کے جو تھے پر بھروسہ کرتے ہیں تو پناہ ہاں کی جو تیری پناہ جا ہ اور تھے سے فریا دکرے تو مددگار ہاں کا جو تھے سے مدد ماتھ بِكَ نَـاصِرُ مَـنِ انْتَصَرَّابِكُ تَغَفِّرُ الذَّنُوْبُ لِمَنِ النَّتَغُفُّرَاكَ جَبَّارُ الْجَبَابِرَةِ عَظِيْمُ الْعُظُ ناصر ہے اس کا جو تیری نصرت جا ہے تو بخش دیتا ہے گنا ہ جو تھھ سے بخشش طلب کر ہے تو جا ہروں پر غالب ہز رگوں کا ہز رگ كَبِيُرُ الْكُبُوَآءِ سَيِّدُ السَّادَاتِ مَوُلَى الْمَوَالِيُ صَرِيْخُ الْمُسْتَصُرِخِيُنَ مُنَفِّس ' عَن برہ وں کا برہ اسر دا روں کا سر دار آتا وال کا آتا دا دخواہوں کا دا درس معیبت ز دوں کا عمکسا رہے قرا روں کی دعا قبول کرنے والا الْـمَكُـرُوُبِيْـنَ مُحِيْبُ دَعُـوَـةِ الْـمُـضُـطَرّيْنَ اَسُمَعُ السَّامِعِيْنَ اَبُصَرُالنَّاظِرِيْنَ اَحُكُمُ شغنے والوں میں زیا دہ سننے والا دیکھنےوالوں میں زیا دہ دیکھنےوالا عا کموں میں زیادہ چکم کرنے والا جلدحسا ب کرنے والا رحم الُحَاكِمِيْنَ اَسُرَعُ الْحَاسِبِيْنَ اَرُحَهُ الرُّحِمِيْنَ خَيْرُ الْغَافِرِيْنَ قَاضِي حَوَ آئِج الْمُؤْمِنِيُنَ کرنے والوں میں زیادہ رخم کرنے والا بخشنے والول میں سب سے بہتر مؤمنوں کی حاجات ہر لانے والا نیکو کاروں کا فریا درس تو مُغِيُثُ الصَّالِحِيُنَ ٱنْتَ اللَّهُ لَآ اِلٰهَ إِلَّا ٱنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيُنَ ٱنْتَ الْخَالِقُ وَ آنَا الْمَخُلُوُقُ وَ عی معبو دہے نہیں کوئی معبو دسوائے تیر ہے تو عالمین کا رب ہے تو خالق ہےا ورئمیں مخلوق ہوں تو مالک ہے اورئمیں مملوک ہوں تو ٱنُتَ الْمَالِكُ وَ آنَا الْمَمُلُوكُ وَ ٱنُتَ الرَّبُّ وَ آنَا الْعَبُدُ وَ ٱنْتَ الرَّازِقُ وَآنَا الْمَرُزُوقُ یر ور دگا رہے اور مُیں تیرابند ہ ہول تو را زق ہے اور مُیں رزق یانے والا ہول تو عطا کرنے والا اور مُیں ما تکنے والا ہول تو سخاوت







فیضان الرحمان فی تفسیر القرآن کی دس جلدیں منصهٔ شہود په آگئ ہیں۔ اپنے قربی بک سٹال سے طلب فرمائیں۔

🗣 باب چہارم 🗣

شب دروز کے ادعیہ داذ کار کا تذکرہ

چونکہ انسان کی غرض خلقت خداوند عالم کی عباوت اوراس کی بندگی بجا لانا ہے اس لیے بندہ کواپنے خالق و ما لک کی عبادت اور بندگی بجا لانے کے لیے کوئی معمولی سا بہانہ ہی کافی ہے۔ چنانچہ اگر کوئی بندہ اپنے مالک کی بندگی ادا کرتے کرتے جان بھی قربان کردینو پھر بھی کہنا پڑے گا کہ

جان دی دی ہوئی ای کی تھی آئے ہوئی ای کی تھی ہوا ہے۔ چائی تاہوں میں دن کی ہارہ ساعتوں کو ہارہ ائمہ چنا نچہ حضرت شخ طوی و شخ بہائی " اور شخ تعلی نے اپنی کتابوں میں دن کی ہارہ ساعتوں کو ہارہ ائمہ طاہرین علیہم السلام کے عدد پر تقتیم کیا ہے اور پھر ہر ہر ساعت کی مخصوص دعاؤں کا تذکرہ بھی کیا ہے مگرانہوں نے اس سلسلہ میں کوئی خاص روایت نقل نہیں کی ۔ لہذا ہم پھھاس وجہ سے اور پھھا ختصار کے چش نظر ان دعاؤں کا یہاں ذکر نہیں کررہے بلکہ بعض ضروری اورادو و ظائف کا تذکرہ کریں گے ۔ تفصیلات کے خواہشمند مذکورہ کتابوں کی طرف رجوع کریں ۔

(۱) مج سورے جاگئے کے وقت کے اذکار کا تذکرہ

جب انسان چھوٹی موت (نینر) ہے بخیرہ عافیت بیدار ہوتو سب سے پہلے تین ہاریوں اپنے پروردگار
کاشکر اواکر ہے: ﴿اَلْحَمُدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ﴾ ۔اس کے بعد چہارگان شکر بیا واکر ہے:
(۱) ﴿اَلْسَحَمُدُ لِللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ مُن اَحْیَسَانِ کی بَعُدَ مَسَا اَمْسَاتَ نِسی وَ اِلْیُسِهِ النُّنْشُورِ ﴾ ۔

برتم کی تعریف خدا کے لیے ہے جس نے مارنے کے بعد مجھے زندہ کیا ہے اور ای کی ہارگاہ میں عاضری ہوگ ۔

برتم کی تعریف خدا کے لیے ہے جس نے مارنے کے بعد مجھے زندہ کیا ہے اور ای کی ہارگاہ میں عاضری ہوگ ۔

(٢)﴿ ٱلْحَدُمُ لَلْهِ اللَّهِ اللَّهِ وَسَلَّمَ وَسَلَّمَ وَلَمُ مَحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ وَلَمُ برقتم كاتعريف خداك لي بجس نے مجھے حضرت محمصطفی صلی الله عليه وآله وَمَلَم كا احت سے قرار دیا ہے يَجْعَلُنِي مِنْ سَائِرِ الْاُمَمِ، ۔

اور عام امتول سے نہیں بنایا ۔

(٣) ﴿ ٱلْحَدُمُدُ لِللَّهِ اللَّذِي جَعَلَ رِزْقِي فِي يَدِهِ وَلَمْ يَجْعَلُهُ فِي اَيْدِى النَّاسِ ﴾ - برتم كاتعريف خدا كے ليے جس نے ميري روزي الله باتھ ميں رکھی ہوت کی اور اوگوں کے ہاتھ ميں نہيں رکھی ۔

(٣) ﴿ ٱلْسَحَدَمُدُ لِسَلْدِهِ الَّسَدِى سَتَسَرَ عُيْسُوبِي وَلَمْ يَفُضَحُنِى بَيْسَ النَّسَاسِ ﴾ برتم كاتعريف خدا كيل به شرع عيول بريده وال ركها جاور جھاؤگوں ميں رسوانيس كيا۔ (حلية المتقين)

(٢) محرفيزى اور نمازتجد را صنى كافضيات وكيفيت كابيان؟

اگرخداوند عالم محرخیزی اور نماز ججری منظر فی مطافی ای ای ای ای ای ای ایک جس کی او فیق مطافی ایک جس کی او فیق م فضیلت سے قرآن وسنت چھلک رہے ہیں۔ ارشا وقد رہ ہے: ﴿ وَبِ الْاسْحَارِ هُمْ يَسُتَغُفِرُونَ ﴾ که مؤمنین مج سحری کے وقت استغفار (طلب مغفرت) کرتے ہیں۔

عطار ہو ردمی ہو، رازی ہو غزالی ہو کے کھ ہاتھ نہیں آتا ہے آہ بحر گاہی

مؤمن کے علامات میں ہے ایک اہم علامت شب وروز میں اکیاون رکعت نماز پڑھنا بھی ہے جو کہ نماز پڑھا تھی اور اس کی دور کعت شفع اور ایک رکعت ور بلا کر مئی نماز پڑھا نہ، ان کے مقررہ نوافل اور نماز تبجد کی آٹھ رکعت اور اس کی دور کعت شفع اور ایک رکعت ور بلا کر مئی ہیں۔ بہر حال شب بیداری اور بحر خیزی مؤمن کا شرف، اس کے چہرہ کی روئق، بدن کی صحت نیز وسعت رزق کا سبب ہے اور اس کے گنا ہوں کا کفارہ ہے۔ احادیث میں اس کے پڑھنے کی بہت فضیلت وار دہوئی ہے۔ بہر حال بند کا مؤمن کو چاہیئے کہ مجے بیدار ہونے اور بول و ہماز وغیرہ حوائح ضرور بید ہے فارغ ہونے اور ان حالات کی دعا کیں پڑھنے کے بعد وضوئے کامل کرے جس میں مسواک کرنا بھی شامل ہے اور اس کی مقررہ دعا کیں پڑھنے ہو انس طرح بھر رہ دعا کیں پڑھنے ہے۔ (جو قوا نین الشریعہ کی پہلی جلد میں نہ کور ہیں)۔ بعد از ان نماز تہجد پڑھے جواس طرح

دراصل نماز جہر آٹھ رکعت ہے۔اور دور کعت نماز شفع اور ایک رکعت نماز ور پھر مجاز اُسب کونماز جہد کہد دیا جاتا ہے۔ بینماز نصف شب کے بعد اور طلوع فجر سے پہلے دو دور کعت کرکے پڑھی جاتی ہے۔اگر وقت کافی ہوتو پہلی دو رکعتوں میں بہتر بیہ ہے کہ ہر رکعت میں سورہ حمد کے بعد تمیں (۳۰)باریا کم از کم تین بار سورہ اخلاص پڑھی جائے اور ہاتی چھر کعتوں میں جوسور سے جا ہے پڑھے۔

بعد ازال نمازشفع کی دورکعت پڑھے۔ نمازی کواختیارے کہ دونوں رکعتوں میں سورہ حمد کے بعد سورہ قبل ہوں اللہ احد پڑھے یا پہلی رکعت میں سورہ حمد کے بعد سورہ قبل اعوذ بوب الناس اور دوسری رکعت میں حمد کے بعد سورہ قبل اعوذ بوب الفلق پڑھے اور سلام کے بعد بید دعا پڑھے:

اِلْهِسَىٰ تَعَرَّضَ لَکَ فِسَی هٰ ذَا السَّلِیُ لِ الْدُمْتَعَرِّضُونَ وَ قَصَدَکَ الْقَاصِدُونَ وَ اَمَّلَ فَضُلَمُّ میرے معودا طلب کرنے والوں نے آج رات خودکو تیرے ہی سامنے چیش کیا ہے ارا دہ کرنے والوں نے تیری ہی بارگاہ کا ارادہ

وَ مَعُرُ وُفَكَ السَّطَالِبُونَ وَ لَكَ فِي هَلَا اللَّهُ لِا نَفُحَاتُ وَ حَوَائِزُ وَ عَطَايَا وَ مَوَاهِبُ تَمُرُّ كيا جاورهاجتندول نے تيرے بی نقل واصان سے اميد إندهی مولَ ہے آج کی دانت میں تيری مهر بانیاں تيری بخشش تيری

بِهَا عَلَى مَنُ تَشَاءُ مِنُ عِبَادِكَ وَ تَدَمُنَعُهَا مَنُ لَّهُ تَسُبِقُ لَهُ الْعِنَايَةُ مِذُكَ وَهَا آفَا ذَا أَوْ عِطاكِي اورتيرِے بى انعاموں كى ہے كہٰ وَاپنے بندوں ہيں ہے جس پر جا ہے ان سے احسان فرمائے اوراس سے روک لے جس

عُبَيُنهُ كُ الْفَقِيسُرُ إِلَيُكَ الْمُوَمِّسِلُ فَحُسلَكَ وَ مَعُرُو ُ فَكَ فَإِنْ كُنُتَ يَا مَوُلاَى تَفَخَيُّتَ بِهِ تِمِى اوْجِه اورعنايت نه مولى مواوريه مِن مول تيراحتير بنده كه تيرامخان مول اورتير فضل واحمان كاميدركمنا مول لِس ال

فِی هلذِہِ اللَّیُسُلَةِ عَلْمی اَحَدِ مِّنُ خَلُقِکَ وَعُدُتَّ عَلَیْهِ بِعَآئِدَةٍ مِّنُ عَطُفِکَ فَصَلِّ عَلَا میرےمولا!اگراآج کی رائے میں اُوا پی گلوق میں کس پر دا دود مُش کرےاوراس کو انعام عطافر مائے جو تیری

مُستحمَّدٍ وَّ الِ مُحَمَّدِ وِالسطَّيِبِيُسنَ السطَّاهِرِيُنَ الْخَيِّرِيُنَ الْفَاضِلِيُنَ وَ جُدُ عَلَى بِطُوْلِكَ وَ مهرانی کے ساتھ موتو رحمت ما زل فرمامحکم اور آل محمر پر جو صاف جن پاک جن نیکوکار جن اور با فضیلت جن اورائے فضل اور

مَعُرُو فِهِ كَ يَا رَبَّ الْعَالَمِينُ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّينُ وَ الِهِ الطَّاهِرِينَ وَ فَيْ احمان سے مجھ رِ بَخْثَائَشُ كرا سے جہانوں كے بالنے والے اور رحمت مواللہ ك مُحمَّر يرجونبيوں مِن آخَرَى في جِن اور ان كآل يہ

ا ہے وعدے کے مطابق اسے قبول فرما کیونکہ تو اسے وعدے کی خلاف ورزی نہیں کرتا۔

اس كے بعد ایک رکعت نما زور پڑھے جس میں سورہ حمد کے بعد سورہ اخلاص ایک بار پڑھے ۔ یا سورہ اخلاص نین با راور معوذ تین (قل اعوذ برب الفلق اور قل اعوذ برب الناس) ایک ایک ایک بار پڑھے اور پھر دعائے قنوت کا اللہ ما خصولت کے علاوہ سات بار قنوت کے اللہ ما خصولت کے کا دہ سات بار کھے اور اس میں مقررہ دعائے قنوت کا اللہ ما خصولت کی کھڑے ہوئے کی جگہ کھڈ المقام المعافی نے کھڑے ہوئے کی جگہ کہ المعافی نے النار کی النار کی ایست میں دوز نے سے تیم کی پناہ لینے والے کے کھڑے ہوئے کی جگہ ہے) پڑھے اور سر باراستغفار کرے یعنی کی است می فیل الله کر بھی و الله کر بھی و الله کہ بڑھے اور اگروفت وسیح ہوتو تین سوبا رہ المعافی کی بڑھے ۔ جیسا کہ حضرت امام زین العابدین علیدالسلام پڑھا کرتے تھے اور آخر میں سے ہوتو تین سوبا رہ المعافی کی بڑھے ۔ جیسا کہ حضرت امام زین العابدین علیدالسلام پڑھا کرتے تھے اور آخر میں سے

رَبِّ اغْفِرُلِي ۗ وَ لَا حَمْنِي وَ كُبُ عَلَى إِذَّكَ أَنْتُ النَّوَّابِ الْعَفُورُ الرَّحِيْمُ.

ا برب مجھے بخش دے مجھ پر رحم کراو رمیری توبہ قبول فرما ہے شک تو برا تو بہ قبول کرنے والامعا ف کرنے والامهر بان ہے۔

اور بہتر ہے کہ اپنابایاں ہاتھ دعا کے لیے بلند کرے اور دائیں ہاتھ سے بیقعدادشار کرے۔

اليناح

مشہوریہ ہے کہ نمازور کے قنوت میں چالیس عدوزندہ یا مردہ مؤمنین کانام لے کراس طرح ان کے لیے دعائے مغفرت کی جائے: ﴿اللّٰهُ مَّ اغْفِرُ لفلاں و فلاں و فلاں ﴾ مگرنمازشب کے خصوصی ادعیہ و اذکار میں اس کا کوئی تذکرہ نہیں ماتا ہاں البتہ بعض عمومی روایات میں وارد ہے کہ اگر چالیس اہل ایمان کے لیے نام بنام وعاکی جائے تو اس طرح کرنے ہے اپنی وعا قبول ہوتی ہے اور غالبًا اس سے علماء نے یہ استنباط کیا ہے کہ اس مقام استجابت وعامیں اہل ایمان کویا دکیا جائے ۔ تاکہ ان کی ہرکت سے خدائے رحیم وکر یم اس کے حال زار پر رحم فرمائے اور الله الموفق۔

اختام کیا جائے واللّٰہ الموفق۔

نمازشب سے فارغ ہونے کے بعد دعائے دحزین راھی جائے جوبیہ:

أُنَاجِيُكَ يَا مَوُجُودًا فِيي كُلِّ مَكَان لَّعَلَّكَ تَسْمَعُ نِدَائِي فَقَدُ عَظُمَ جُرُمِيُ وَ قَ ے وہ اللہ جو ہر جگہ موجود ہے میں جھوے مناجات کر رہا ہوں شاید کہ تو میری فریا دس لے کیونکہ میرے جرائم زیا دہ ہیں اور حیا گھٹ حَيَآ إِسْىُ مَوُلَاىَ يَا مَوُلَاىَ أَيَّ الْاَهُوَالِ ٱلْمَذَّكُّرُ وَ ٱيُّهَا ٱنْسَلِي وَلَوُ لَمُ يَكُنُ إِلَّا الْمَوْتُ میں ہے میرے مولا اے میرے مولا میں کن کن خوفوں کویا دکروں اور کن کوفر اموش کروں اگر موت کے سوا کوئی خوف نہ ہوتا تو میں لَكَفْي كَيُفَ وَمَا بَعُدَ الْمَوْتِ أَعْظُمُ وَ أَدُهِي مَوْلاَيَ يَا مَوُلاَيَ حَتَّى مَتْى وَ إِلَى مَتْى کا فی تھا اور موت کے بعد کے حالات تو زیادہ پُر خطر ہیں میرے مولا اے میرے مولا کب تک اور کہاں تک تجھ سے ٱقُولُ لَكَ الْعُتُبِلِي مَرَّةً بَعُدَ أُخُرِي ثُمَّ لَا تَجِدُ عِنْدِيْ صِدُقًا وَّلاَ وَفَآءً فَيَاغَوُثَاهُ کہتا رہوں ایک کے بعد دوسری بار عذر لاؤ پھر بھی تو میری طرف سے اس میں سچاقی اور بابندی نہیں باتا ہائے فریاد ثُمَّ وَا غَوْثَاهُ بِكَ يَهِ ٓ ٱللَّهُ مِنْ هَ رِّي قَدْ غَلَبَتِهِ يُ وَمِنْ عَدُوٍّ وَّ قَدِ اسْتَكُلَبَ عَلَيَّ پھر ہائے فریا دہے تھے سے اےاللہ فواہش نفس سے جومجھ پر عاوی ہے اوران وخمن سے فریا دجومجھ پر جھیٹ پڑا ہے اس دنیا پر فریا دجومجھ وَ مِنُ دُنْيًا قَدُ تُزَيَّنَتُ لِي وَمِنُ نَّفُسِ أَمَّارَةٍ * بِالسُّوْءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي مَوْلَايَ يَا مَوْلَايَ پر جھپٹ پڑا ہےاں دنیا پر فریا د جومیرے لیے سنور کر آ گئی اورائ نفس پر جوہرا تی کا تھم دیتا ہے تگر جس پرمیرا رب رحم کرے میرے مولا إِنْ كُنُتَ رَحِمُتَ مِثُلِمُ فَارُحَمُنِيُ وَإِنْ كُنُتَ قَبَلُتَ مِثْلِيُ فَاقْبَلْنِي يَا قَابِلَ السَّحَرَةِ ا میرے مولا اگرتو نے کسی مجھ جیسے پر رہم کیا ہے تو مجھ پر بھی رہم کر کہ اگر کسی مجھ جیسے کاعمل قبول کیا ہے قسم عمل قبول کرا ہے ساحران اقْبَلْنِيُ يَا مَنُ لَّهُ اَزَلُ اتَّعَرَّفَ مِنْهُ الْحُسُنِي يَا مَنُ يُغَذِّيْنِي بِالنِّعَمِ صَبَاحًا وَّ مَسَآءً مصر کو قبول کرنے والے مجھے بھی قبول کرا ہے وہ جس سے میں نے ہمیشہ احجائی ہی کو پیچانا اےوہ جو مجھے مبح و شام نعتیں عطا فرما تا ہے إرُ حَمْنِي يَوْمَ اتِيُكَ فَرُدًا شَاخِصًا إِلَيْكَ بَصَرِي مُقَلَّدًا عَمَلِي قَدْ تَبَرَّءَ جَمِينُ الْخَلْ مجھ پر اس دن رحم فرمانا جب تنہا ہوں گا اور تیری طرف آ کھ لگائے ہوں گا اپنے عمال گلے میں انکائے جب ساری مخلوق مِنِدَى نَعَمُ وَ اَبِيُ وَ اُمِّيُ وَمَنُ كَانَ لَهُ كَدِّيُ وَ سَعْيِيُ فَإِنْ لَهُ تَرُحَمُنِيُ فَمَنُ يَرُحَمُنِيُ وَمَنُ

يُ وُنسُ فِي الْقَبُو وَحُشَةِ يُ وَمَن يُنطِقُ لِسَانِي إِذَا حَلُوتُ بِعَمَلِيُ وَ سَآ نَلُةَ يُ عَمَّا آنُتَ

قَرَى تَهَانَ مِن كُون مِرا مَهُم مِوكًا كُون مِرى زَان كَرُوا كَرَے كَا جَبَة مَل كَ إِرَب مِن مُحَدَ سَال كَرَد كَا جَبَرَة فَلُتُ لَمُ اَفْعَلُ قُلُتَ اللّمُ اللّهُ وَلَا مَعُولُ كَانَ مِن عَدُلِكَ وَ إِنْ قُلْتُ لَمُ اَفْعَلُ قُلْتَ اللّمُ اللّهُ وَمَن عَدُلِكَ وَ إِنْ قُلْتُ لَمُ اَفْعَلُ قُلْتَ اللّمُ اللّهُ وَمَن عَدُلِكَ وَ إِنْ قُلْتُ لَمُ اَفْعَلُ قُلْتَ اللّمُ اللّهُ وَاللّهُ وَمَا مُولا كَان مِرى زَان كَرَم عَالَون اللّهُ وَكَ يَسَا مَولا كَن وَ اللّهُ وَكَ يَسَا مَولا كَن قَبُلَ سَرَابِيلُ اللّهُ وَلَى اللّهُ وَكَ يَسَا مَولا كَن قَبُلَ سَرَابِيلُ اللّهُ وَلَى اللّهُ وَكَ يَسَا مَولا كَن قَبُلَ سَرَابِيلُ اللّهُ وَلَى اللّهُ وَلَاللّهُ وَلَا مَولا اللّهُ وَلَا كُلُولُ كُلُ اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَعَيْدُ اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا لَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَاللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي اللّهُ وَاللّهُ وَلَا الللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي الللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَلِي الللللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي اللللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي الللللّهُ وَلِي اللللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي الللللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي اللللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي الللّهُ وَلِي الللّهُ وَلَا الللّهُ وَلِي الللّهُ الللّهُ وَلِي الللّهُ اللللّهُ وَلِي اللللّهُ الللللّهُ اللللْهُ الللّهُ الللللّهُ اللللللّهُ الللّهُ ال

میرے ہاتھ گردن میں باند ھوئے جائیں اے سب سے زیادہ رقم کرنے والے اوراے بہت بخشے والے۔

(٣) بعدا زاں نماز مج کے ورکو اللہ بڑے جا کہ اللہ کھاڑے ہو الطاور آ داب کے ساتھ ادا کی جائے۔

(۴) اور بعد ازاں طلوع آفتا ہے پہلے نماز صبح کے تعقیبات اوروہ اورا دوو ظائف پڑھے جا کیں جن کا تذکرہ قبل ازیں'' افادۂ عام درادعیہ صبح و شام'' کے عنوان کے تحت کیاجا چکا ہے۔

ون اوررات كا آغاز صدقه ع كياجائ

(۵) بعدازال دن كا آغاز حسب توفیق بچه صدقه وخیرات سے كرے تاكه الى دن كے آفات وبليات سے خدا اسے محفوظ رکھے۔ اورائ طرح رات كا آغاز بھی صدقه وخیرات سے كرے تاكه الى رات كى بلاؤل و مصيبتول سے محفوظ رہے اس امركى احاديث بيل براى فضيلت اور تاكيدوار دبوئى ہے۔ ﴿ لانسه لا يسود البلاء الا المدعاء ولا يود القضاء الا المصدقة ﴾۔

(١) نیز ہررد زدرج ذیل دعاؤں اوراؤ کارکا پڑھنا بھی واردہاوران کے بے پایاں اجروثواب مذکور ہیں۔

اَسُئَلُ اللَّهَ الْجَنَّةَ وَ اَعُوٰذُ بِاللَّهِ مِنَ النَّارِ.

میں خداہے جنت طلب کرتا ہوں اور چہنم سے اس کی پنا وہ انگرا ہوں۔

حضرت امام جعفرصادق علیہ السلام فرماتے ہیں: جب کوئی بندۂ مؤمن سات با ربیہ دعا پڑھتا ہے تو جہنم کہتی ہے کہ یا اللہ اے مجھ سے پناہ دے دے ۔ (الفقیہ)

(ب) بید دعا پڑھی جائے چنانچہ حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام سے مردی ہے کہ جب کوئی مؤمن شب وروز میں چالیس گنا ہانِ کبیرہ کرے اور پھر پشیمان ہوکر بید دعا پڑھے تو خدا اس کے گناہ بخش دیتا ہے:

اَسْتَغُفِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ ال

ذُوالُجَلالِ وَ الْإِكْرَامِ وَ اَسْئَلُهُ اَنْ يَتُوْبَ عَلَيَّ.

جلال وا كرام كاما لك اورسوال كرنا جدي كرو ويرك وباتول كرا يا كلال على المراح CIRT A

(ج) مرروز سات بار يون الله تعالى كى حمروثنا كى جائے:

ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ نِعْمَةٍ كَانَتُ اَوُ هِيَ كَائِنَةٌ.

عدا ک حدے ہرای فعت پر جو پہلے مل تھی یا اب مل ہے۔

امام جعفر صادق الظفیٰ سے مروی ہے ، فرمایا: جوابیا کرے گاتو کویا اس نے اللہ کی ہر نعمت کاشکر بیا دا کر دیا ہے۔ (کتاب الدعاوالزیارۃ للشیر ازی)

(و) هررد زنجيين مرتبه پڙھ:

اَللَّهُمَّ اغْفِرُ لِلْمُؤْمِنِيُنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ وَ الْمُسُلِمِيُنَ وَ الْمُسُلِمَاتِ.

ا سےاللہ پخش دے تمام مؤمنین ومؤمنات کواور تمام سلمین ومسلمات کو۔

حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام ہے مروی ہے کہ جب کوئی شخص ایسا کرتا ہے تو خداوند تعالیٰ تمام گزشتہ اور آئندہ بیدا ہونے والے اہل ایمان کی تعدا دے ہراہر اس کے نامۂ اعمال میں نیکیاں لکھ دیتا ہے اوراتنی ہی ہرائیاں مٹا دیتا ہے اور جنت میں استے ہی اس کے درجے بلند کر دیتا ہے۔ (زا والمعاد) (و) هرروز سومرته تسبيحات اربعه كابراهنا بهي واردب: ـ

سُبُحَانَ اللَّهِ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ وَلَا إِلْهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ اكْبَرُ.

الله بإك ترج حمالله عي كيلي بي الله بي كيلي معبو دسوائ الله كاورالله برز رك ترب

مردی ہے کہ جوالیا کرے گاتو خدااس کے جسم کوجہنم پرحرام قراردے دیگا۔ (مصباح کفعمی)

(ز) تین سوسائھ مرتبہ استغفار کرنے اور تین سوساٹھ بار ﴿ اَلْہِ حَمْدُ لِلْهِ وَبِّ الْعَالَمِيْنَ كَفِيْرًا عَلَى سُحُلِّ حَالٍ ﴾ (تمام ترحمہ ہے اللہ کے لیے جو جہانوں کا رب ہے ہرحال میں بہت بہت حمد) کے پڑھنے کی بھی بڑی فضیلت وارد ہوئی ہے۔ (مصباح المجود)

SIBTAIN. COMMODINA(2)

اَشْهَدُ اَنْ لا إلْهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ مَعْدَهُ لا شَرِيْكَ لَهُ اللَّهَ الْهِا وَاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا

میں گواہی دیتا ہوں کہ کوئی خیس معبود سوائے اللہ کے وہ بکرا ہے اس کا کوئی ساجھی نہیں وہ معبود ہے اکیلا بگانہ بے نیاز کہ جس کی

لُّمُ يَتَّخِذُ صَاحِبَةً وَّلا وَلَدًا

نەكونى زوجە بادرنەكونى فرند

(ط) رو زا ندول مرتبه به دعاریاهی جائے:

اَعُددُتُ لِكُلِّ هَوُلِ لَا اِللهَ اللهُ وَلِكُلِّ هَمْ وَ غَمْ مَّاشَاءَ اللّهُ وَلِكُلِّ نِعُمَةِ وِ الْحَمُدُ عِلَى اللهُ وَلِكُلِّ هَمْ وَالْدَيْحِ مِن اللهُ وَلِكُلِّ وَعَن بِهِ الله مِن اللهِ وَلِكُلِّ وَعَن بِهِ اللهُ مِن اللهِ وَلِكُلِّ وَعَلَ اللهُ وَلِكُلِّ وَاللهِ وَلِكُلِّ وَعَلَي اللهُ وَلِكُلِّ وَعَلَي اللهُ وَلِكُلِّ وَلَي اللهُ وَلِكُلِّ وَلَي اللهُ وَلِكُلِّ وَلِكُلِّ وَلِكُلِّ وَلِكُلِّ وَلَي اللهُ وَلِكُلِّ وَلِكُلِّ اللهُ وَلِكُلِّ اللهُ وَلِكُلِّ اللهُ وَلِكُلِّ وَلَي اللهُ وَلِكُلِّ وَلِكُلِّ اللهُ عَلَي اللهُ وَلِلْكُولِ اللهُ عَم اللهُ وَلِلْكُلِّ وَلَي اللهُ وَلِلْكُولِ اللهُ عَلَي اللهُ وَلِلْكُولِ اللهِ وَاللهُ وَال

}

تَوَكَّلُتُ عَلَى اللَّهِ وَ لِكُلِّ عَدُوِّ هِ اعْتَصَمْتُ بِاللَّهِ وَ لِكُلِّ طَاعَةٍ وَ مَعْصِيَةٍ عَى يَهِ مُروس كَنَا مِول بَر وَثَمَن كَ لِي كُول مِن خَذا كَى خَاه لِيَنَا مِول اور بَر اطاعت اور نافرماني ي كُول ثيين كُولَ

لَّا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

حرکت وقوت گروہ جواللہ بلندویزرگ سے ہے۔

چنانچ حضرت رسول خدا علی ہے مروی ہے کہ جو محض ہر روز دیں بارید دعا پڑھے گا تو خدا اس کے چار ہزار گنا ہ معاف کر دے گا او راہے سکرات موت ،فشار قبر اورشدا ئد قیا مت اور شیطان اوراس کے فشکروں ہے محفوظ رکھے گا۔ (البلدالامین)

(ى) روزاندا يك بارىيد دعايراهي جائے:

بِسُمِ اللّٰهِ حَسُبِى اللّٰهُ تَوَكَّلُتُ عَلَى اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ إِنِّى اَسْسَلُكَ خَيْسَ الْمُورِى كُلِّهَا فَداكِنام مع مير عليه الله كالله بي مجرورا مين جھے الله كا الله كا الله كا الله بي مجرورا مين جھے سے الله كا مارى بهترى كا سوال كرنا ہوں

وَاعُودُ وَكَ مِنْ حِرْي الدُّنْيَا وَعَدَابِ الْاحِرَةِ.

اور تیرک پنا ہلیتا ہوں دنیا کی رسوائی اور آخرت کےعذاب ہے۔

چنانچے حضرت امام محمد باقر علیہ السلام ہے منقول ہے ، فر مایا : جو شخص روزاندا یک بارید دعا پڑھے گا تو خداوند عالم خوداس کے دنیوی واخر وی امور کی کفایت کرےگا۔ (مصباح کفعمی)

(٤) غروب آفتاب ہے پہلے وہ مخصوص دعائیں پڑھی جائیں جن کا اوپر ''ادعیۂ صبح وشام'' کے ضمن میں تذکرہ کیا جاچکا ہے۔

مونے کے آداب کا تذکرہ

(۸) بعدا زاں نمازمغرب وعشاءا ہے اوقات فضیلت میں پڑھی جائے اورجب آ دمی رات کا کھانا وغیرہ کھا کر اورحوائج ضرور بیہ سے فراغت کے بعد سونے کا ارا دہ کرے تو پہلے حسب ذیل کا م انجام دے۔

(9) سارے دن کے اعمال و افعال کا خود محاسبہ کرے پھر نیکیوں پر خدا کا شکر ادا کرے اور بدیوں پر تو بدو انا بد کرے۔ حدیث میں وارد ہے: ﴿لیس منا من لم یحاسب نفسہ کل لیلۃ ﴾"جو خص ہررات اپنا محاسبہ نہ کرے وہ ہم میں ہے نہیں ہے۔"(رسالہ محاسبہ نفس جناب سیدا بن طاؤوں ؓ) (۱۰) سونے سے پہلے آیت الکری کی ایک بار ، سور کقل یا ایھا الکافرون کی چاربار اور سور کقل ہو الله احد کی گیارہ بار ہا کہ انکم تین بار تلاوت کی جائے اور سور کا الھاکہ التک اثر کا پڑھنا بھی وارو ہے جس کی برکت ہے آ دمی فشار قبر سے محفوظ رہتا ہے۔ (مقاح الفلاح) اور تبیح جناب سید ہ پڑھی جائے اور ایک سوبار استخفار کی جائے۔

ا یک روایت میں وار دہے کہ آبیت الکری پڑھنے کے بعد بیروعائھی پڑھی جائے کہ حضرت رسول خدا ﷺ ایبا کرتے تھے:

بسسم الله امَنُتُ بِالله وَ كَفُرُتُ بِالطَّاعُونِ اللهُمَّ احْفَظُنِي فِي مَنَامِي وَفِي يَقُظَنِي .

خدا كمام من شرخدا يرايان لايابول اورطافوت كااثكاركيا بـا معودة فينداور بيراري شريري هاظت فرما ـ (عدة الداع)

نيز بروايت مفضل حضرت امام جعفر صادق الطَيْنَ من مروى ب، فرمايا: جب سونے لگوتو اگر ہو سكة تو باره حرفول كے ساتھا بيخ آپ كوخداكى بناه ميں وے دو ـ راوى نے عرض كيا كه وہ باره حرف كون سے بين؟

فرمايا: وه ميه بين:

الله و الحود بين الله و الحود الله و الحدود الله و الحدود بين الله و الله و

بِسرَسُولِ السلَّبِ صَسلَّمَ السلَّهُ عَلَيْسِهِ وَ الِهِ مِنُ شَرِّ مَسا خَلَقَ وَ بَرَءَ وَ ذَرَءَ. خدا كرسول سلى الله عليه و آله كى بر چيز كر شر ب جواس نے پياكى اور پهيلائى۔ (الباقيات الصالحات الشيخ عباس فيّ) نيز سوتے وقت اس دعا كے تين با ريز هنے كابروا تواب واردہوا ہے:

ٱلْحَدُمُ لُلِلْهِ الَّذِي عَلَا فَقَهَرَ وَ الْحَمُدُ لِلْهِ الَّذِي بَطَنَ فَخَبَرَ وَ الْحَمُدُ لِلْهِ الَّذِي مَلَكَ حمه خداك لي جو بلند بواتو غالب رہاتام ترحم ب خداك لي جو پيثيره ب توبا فبر ب تام ترحم بنداك لي جو مالك ب

_

﴿ باب پنجم ﴾

شب دروز جمعه کی اہمیت و فضیلت کا تذکرہ

یہ بات قرآن وسنت کی تصریحات اور ذاتی مشاہدات سے ثابت ہے کہ خالق علیم و تھیم نے اس کا کنات کی کوئی بھی دو چیزیں بالکل برابر پیدائیس کیں۔ نبی نبی کے درجہ میں فرق ہے، ولی ولی اوروصی وسی کے مرتبہ میں فرق ہے۔ دو الل ایمان ہیں قوان کے ایمان میں فرق اور دو کافر ہیں تو ان کے تفریل فرق۔ پیلم کُنّ الموسط الموسط فی مقلم ایمان ہیں قوان کے ایمان میں فرق و پیلم کُنّ الموسط کی مرات میں فرق ۔ چنانچہ متعدد روایات میں وارد ہے کہ جمعہ کا دن تمام دنوں کا سر دار ہے اور جمعہ کی رات تمام راتوں کی سر دار ہے۔ لہذا اگر اس شب وروز میں نیکی کی جائے تو اس کا ثواب عام دنوں سے کئی گنا زیادہ ہوتا ہے اور اگر ان میں برائی کی جائے تو اس کا عذاب بھی عام دنوں سے کئی گنا زیادہ ہوتا ہے ورائر ان میں برائی کی جائے تو اس کا عذاب بھی عام دنوں سے کئی گنا وزیا ہے ۔ حضرت امام جمعفر صادق الطبیج ہے مروی ہے کہ جمعہ کے دو ال تک وفات یا جائے وہ فشار قبر سے محفوظ رہتا ہے۔ نیز انہی جناب سے مروی ہے، فرمایا: جمعہ کے دن کا خاص احر اماور حق ہے ۔ خبر داراس کے اس حق کو ضائع نہ کرو ۔ اس حن موائع نہ کرو بھی کی دن کا خاص احر اماور حق ہے ۔ خبر داراس کے اس حق کو ضائع نہ کرو ۔ اس کو دور تمام محر مات شرعیہ سے پر ہیز دن عبادت الی میں کوتا ہی نہ کرو بلکہ اعمالِ صالح بجالا کرخدا کا قرب حاصل کرد اور تمام محر مات شرعیہ سے پر ہیز دور الکا فی والفقیہ)

بیشب وروز قبولیت دعائے لیے مخصوص ہیں۔ بھی ایبا بھی ہوتا ہے کہ ایک بندہ مؤمن خدا ہے کوئی دعا کرتا ہے مگروہ اس کی قبولیت کو جمعہ تک مؤخر کردیتا ہے تا کہ اس کی عظمت اجا گر ہوجائے۔ (عدة الدائی) حضرت امیر الطبیح ہے منقول ہے ، فر مایا: خداوند عالم نے جمعہ کوئمام دنوں پر بڑائی عطافر مائی ہے اور اسے عید کا دن قرار دیا ہے اور اس کی رات بھی خاص عظمت کی مالک ہے اس دن اللہ تعالی ہے جو پچھ

طلب کیا جائے وہ عطا کردیا جاتا ہے اور اگر کوئی شخص کسی وجہ ہے مستوجب عذا ب بھی ہوتو شب وروز جمعہ میں دعا و پکارکرنے سے اس عذا ب سے اس کی گلوخلاصی ہوجاتی ہے۔ بہرحال شب وروز جمعہ او رہا گخصوص جمعہ کا دن عبا دت الہی کرنے اور دینی کام انجام دینے کے لیے مخصوص ہے۔ حدیث میں وار دہے: ﴿ویدل لِسمَنُ لَسمُ يُنفَرِّعُ فَا نَفُسَهُ لِلْمُجْمَعُونَة ﴾ ''افسوس ہے اس شخص کے لیے جوجمعہ کا دن دینی امورکی بجا آ وری کے لیے فارغ نہیں کرسکتا۔''(الوسائل)

شب جعدمی روهی جانے والی سورتوں اور دعاؤں کا تذکرہ

بہرحال شب جمعہ جو کہ بڑ ی عظمت وجلالت والی اور مخصوص عبا دے الہی کرنے کی رات ہے۔ا حادیث میں اس کے بہت ہے اعمال وعبادات وارد ہوئے ہیں ہم ان میں سے چندا ہم اعمال واورا دکا تذکرہ کرتے ہیں۔ اس کے بہت سے اعمال وعبادات وارد ہوئے ہیں ہم ان میں سے چندا ہم اعمال واورا دکا تذکرہ کرتے ہیں۔ (۱) سورۂ کیلین پڑھی جائے۔ چنانچے حضرت امام جعفر صادق الطبی سے مروی ہے ، فرمایا: جو شخص شب جمعہ میں سورۂ کیلین کی تلاوت کرے گاوہ اس حالت میں صبح کرے گا کہ اس کی مغفرت ہو چکی ہوگی۔

SIBTAIN COM
(۲) سورہ واقعہ کی تلاوت کی جائے۔ چنانچ حضرت امام جعشر صادق القلیلا ہے مردی ہے، فرمایا: جو شخص شب
جمعہ میں سورہ واقعہ کی تلاوت کر بے فرمایا: عوالی اس ہے محبت کرے گاوروہ سب لوکوں کی نگاہ میں محبوب ہوگا
اوروہ دنیا میں بھی فقر و فاقہ اور کسی آفت میں مبتلا نہ ہوگا اور (جنت میں) حضرت امیر القلیلا کے خاص رفقاء میں
ہے ہوگا۔ (ایصاً)

(۳) سورہ بنی اسرائیل کی تلاوت کی جائے۔ چنانچہ حضرت امام جعفر صادق الظیاؤے مروی ہے کہ جو شخص ہر شب جمعہ میں سورہ بنی اسرائیل کی تلاوت کرے گاو ہ اس وقت تک نہیں مرے گا جب تک حضرت قائم آل محمد کو درکے نہیں کرے گا۔اور پھر و ہ ان کے اصحاب میں ہے ہوگا۔(ایضاً)

(۴) سورہ دخان کا بھی شب دروز جمعہ میں پڑھنا دارد ہے کہ جو خص شب جمعہ یا روز جمعہ سورہ دخان پڑھے گاخدا اس کے لیے جنت میں ایک گھر تغمیر کرے گا۔ (ایضاً)

(۵) سورۂ جمعہ کابھی شب جمعہ میں پڑھنا وارد ہے اور بیہ کہ بیال جمعہ سے لے کر دوسرے جمعہ تک کا کفارہ شار ہوگا۔(مفاتیج البخان)

اَللَّهُمَّ اِنِّی اَسُشَلُکَ بِوَجُهِکَ الْگریُمِ وَ اسْمِکَ الْعَظِیْمِ اَنُ تُصَلِّی عَلَی مُحَدًّ خداوندا! میں تیری ذات کریم اور تیرے برز نام کے واسطے سے سوال کرنا ہوں کہ مُمَدَّ و آل مُمَرَّ

وَّ الِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنُ تَغُفِرَ لِيُ ذَنْبِيَ الْعَظِيْمِ.

پر رحمت ما زل فر ما اور میرے بڑے بڑے کیا ہوں کو پھٹ وے۔

(۲) شب جمعہ یا روز جمعہ سات بار بیہ دعا پڑھی جائے کہ حضرت رسول خدا علیہ ہے مردی ہے کہ جو محض شب جمعہ یا روز جمعہ سات مرتبہ پڑھے گا وہ اگر اس رات یا اس دن میں فوت ہو گیا تو جنت میں داخل ہوگا۔(الفاً)

اَلَـلْهُ مَّ اَنْتَ رَبِّی لَا اِلْمَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقُتنِینِی وَ اَنَا عَبُدُکَ وَ ابُنُ اَمَدِ کَ اے معبودا تو بی میرا رب ہے تیرے سوا کوئی معبود نیس تو نے بی مجھے پیدا کیا اور میں تیرا بندہ اور تیری کنیز کا میا ہوں

رَفِسَىٰ قَبُسِطَةِ كُولَا لَ**صَحِبَ لِي لِيَهِ لَا كُلُّولَ الْكَلِّ** كُلُّ الْعَلَا كُتُّ عَسِلَى عَهُدِ الْ

اور تیرے قابو میں ہوں میری مہار تیرے رست قدرت میں ہے میں اپنی طاقت کے مطابق تیرے عہد و بیان پر قائم

وَ وَعُدِكَ مَا اللَّهَ طَعُتُ أَعُودُ بِرِضَاكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعُتُ أَبْيُونُ عُمَةِكَ رہا ہوں جو براتی کڑا ہوں اس میں تیری رضاکی پناہ جاہتا ہوں تیری نعمت کا بار اور میرے گناہ کا بوجھ

وَ اَبُوْءُ بِذَنْبِيُ فَاغُفِرُ لِي ذُنُوبِي إِنَّهُ لَا يَغُفِرُ الذُّنُوبِ إِلَّا اَنْتَ.

میرے کندھے پر ہے ہیں میرے گیا ومعاف کردے کہ تیرے سوا کوئی گیا ہوں کومعاف تہیں کرسکتا۔

(٣) حضرت شیخ طوی و شیخ تفعمی نے شب و روز جمعه اور شب و روز عرفه میں درج ذیل دعا کا پڑھنامستحب لکھا

اَللّٰهُ مَ مَنُ تَعَبَّاً وَ تَهَيَّاً وَ اَعَدُّ وَاسْتَعَدُّ لِوِفَادَةٍ اللّٰي مَخُلُونٍ رِجَاءَ رِفُدِه وَ طَلَبَ نَآئِلِهِ خدایا، جوہی عطا و بخش کے لیے مخلوق کی طرف جانے کو آمادہ تیار اور مستعد ہواس کی امیدای کی دادو دہش پر گلی ہوتی ہے

وَ جَسَآئِسُوْرَسِهِ فَسَالَیُکُ یَسَا رَبِّ تَسَعُبِیَتِسیُ وَ اسْتِنعُدَادِیُ رَجَآءَ عَفُوِکَ وَ طَلَبَ نَآئِلِکم تو اے پروردگارا میری آمادگی و تیاری تیرے عنو و درگزر تیری عطا و بخشش اور تیرے انعام کے صول کی امید پر ہے

وَ جَآئِزَتِكَ فَلا تُنخَيُّبُ دُعَآئِيُ يَا مَنُ لاَّ يَخِيُبُ عَلَيْهِ سَآئِلٌ وَّلا يَنْقُصُهُ نَآئِلٌ فَإنِّي لَهُ پس میری دعا کو مایوں نہ کراےوہ وات جس سے کوئی سائل امیدنیں ہونا نہ عطا میں کمی آئی ہے تو میں نے جوعمل صالح کیااس کے اتِكَ ثِقَةً بِعَمَلِ صَالِحٍ عَمِلْتُهُ وَلا لِوِفَادَةِ مَخُلُونِ رَّجَوْتُلَقَيُدُكَ مُقِرًّا عَلَى نَفُسِي مجروے پر تیری جناب میں نہیں آیا ن مخلوق کے دین کی اسیدر کھتا ہوں میں تو اپنی برائیوں کا اقرار اور ظلم کا اعتراف کرتے ہوئے تیری بارگاہ بِ الْإِسَـآنَةِ وَالظُّلُم مُعُتَرفًا بِأَنْ لاَّ خُجَّةَ لِي وَلاْ عُذُرَ آتَيْتُكَ أَرُجُو عَظِيُمَ عَفُوكَ الَّذِ میں حاضر ہوا ہوں اور کوئی ججت اور عذر نہیں رکھتا ہوں میں تیرے حضور تیرے عظیم عفو کی امید لے کر آیا ہوں جس سے تو عَـفَوُتَ بِـهٖ عَـنِ الْـخَـاطِئِيُنَ فَلَمُ يَمُنَعُكَ طُولُ عُكُوفِهِمُ عَلَى عَظِيْمِ الْجُرُمِ أَنُ عُدُتَّ خطا کاروں کو معاف فرمانا ہے کہ ان کے گماموں کا تشکسل تھے ان پر رحمت کرنے سے باز نہیں رکھ سکتا تو اے وہ ذات عَـلَيُهِـمُ بِالرَّحُمَةِ فَيَامَنُ رَحُمَتُهُ وَاسِعَةٌ وَّ عَفُوهُ عَظِيُمٌ يَا عَظِيُمُ يَا عَظِيُمُ يَا عَظِيمُ لَا يَرُدُّ جس کی رحمت عام اور عفو و سبخشش عظیم ہے یا عظیم یا عظیم یا عظیم تیرا غضب تیرے ہی حکم سے پلٹ سکتا ہے غَضَبَكَ إِلَّا حِلْمُكَ وَلا يُنْهِجِي مِنْ سَخَطِكَ إِلَّا التَّضَرُّعُ إِلَيْكَ فَهَبُ لِي يَآ اور تيرى ما داخى تير _ حضور الدوفراد سے دور ہوتى ہے۔ تو اے مير ے خدا الحصالي ال لذرت سے كشائش عطاكر جس سے تو فَرَجًا بِالْقُدُرَةِ الَّتِي تُحْيِي بِهَا مَيُتَ الْبِلادِ وَلا تُهْلِكُنِي غَمًّا حَتَّى تَسْتَجيُبَ لِيُ وَ اجڑے شہوں کو آباد کرنا ہے مجھے فمگینی میں ہلاک نہ کر یہاں تک کہ تو میری دعا کی قبولیت سے مجھے آگاہ نہ فرمائے تُمَعَرِّ فَنِي الْإِجَابَةَ فِي دُعَآئِيُ وَ اَذِقْنِيُ طَعُمَ الْعَافِيَةِ اللَّي مُنْتَهَى اَجَلِي وَلا تُشُمِتُ بِي مجھے میرے دم آخر تک صحت و عافیت ہے رکھ اور میرے دخمن کو میری بری حالت پر خوش نہ ہونے دے اے مجھ پر تسلط اور عَدُوِّيُ وَلا تُسَلِّطُهُ عَلَيَّ وَلا تُمَكِّنُهُ مِنُ عُنُقِي اَللَّهُمَّ إِنْ وَضَعُتَذِي فَمَنُ ذَا الَّذِي يَرُفَعُذِي افتیار نہ دے اے پروردگارا اگر تو مجھے گرا دے تو کون مجھے اٹھانے والا ہے اور تو مجھے بلند کرے تو کون ہے جو مجھے وَ إِنْ رَفَعُتَنِييٌ فَمَنُ ذَا الَّذِي يَضَعُنِيُ وَ إِنْ اَهُلَكُتَنِيُ فَمَنُ ذَا الَّذِي يَعُرِضُ لَكَ فِي بت كرسكا مو اگر تو مجھے بلاك كرے تو كون تيرے بندے سے متعلق عجھے كيھ كيدسكا ہے يا اس كے بارے ميں سوال كر عَبُدِكَ أَوْ يَسُئَلُكَ عَنُ آمُرِهِ وَ قَدُ عَلِمُتُ آنَّـهُ لَيُسسَ فِي حُكُمِكَ ظُلُمٌ وَلا سکتا ہے بے قتک میں یہ جانتا ہوں کہ تیرے تھم میں علم نہیں اور تیرے عذاب میں جلدی نہیں اور بے قتک جلدی وہ

نَقِـمَةِكَ عَجَـلَةٌ وَّ إِنَّـمَا يَعُجَلُ مَنُ يَّخَافُ الْفَوْتَ وَ إِنَّمَا يَحْتَا جُ إِلَى الظَّلُم الطَّعِيُفُ کرتا ہے جے وقت نکل جانے کا ڈر ہواورظلم وہ کرتا ہے جو بے قدرت اور کمزور ہواورا سے میرے معبودا تو ان باتوں سے بلند وَقَـٰدُ تَّـعَالَيُتَ يَآ اِلٰهِيُ عَنُ ذٰلِكَ عُلُوًّا كَبِيُرًا اَللَّهُمَّ اِنِّيَاعُودُ بِكَ فَاعِذُنِي وَ اَسْتَجِيْرُ اور بہت بڑا ہے اے معبودا کمیں تیری پناہ لیتا ہوں تو مجھے پناہ دے تیرے نزدیک آتا ہوں مجھے نزدیک کر لے بِكَ فَاجِرُنِي وَ اَسُتَرُزقُكَ فَارُزُقُنِي وَ اَتَوَكَّلُ عَلَيُكَ فَاكُفِنِي وَ اَسْتَنْصِرُ تھھ سے روزی مانگنا ہوں مجھے روزی دے تھھ پر مجروسہ رکھتا ہوں میری کفانیت فرما اپنے دخمن کے خلاف تھھ سے مدد جا ہتا ہوں عَـلَى عُـدُوِّيُ وَ اسْتَعِيُـنُ بِكَ فَاعِنِنِّي وَ اَسْتَغُفِرُكَ يَاۤ اِلٰهِيُ فَاغُفِرُ لِيُ امِيُنَ امِيُنَ امِيُرَةً اور اعانت کا طالب ہوں میری مدد فرما اور میرے معبود تھے سے بخشش کا طالب ہوں مجھے بخش دے آمین آمین آمین س (۴) دعائے کمیل کاپڑ ھنابڑی فضیلت کا حامل ہے جو منقر بیب آ رہی ہے۔ (۵) بعض روایات میں اس میں دعائے اَللَّهُ مَّ بِالشَاهِدَ مُحَلِّ فَجُواٰی کاپِرْ مِنا بھی وارد ہے۔اور بیدوعا خاصی طویل ہے جس کے پڑھنے ہے گنا ہ معاف ہوتے ہیں، نیز بیددعا شب فرقد میں پڑھی جاتی ہے، جوبیہ ہے: ٱللَّهُمَّ يَا شَاهِدَ كُلِّ نَجُواى وَ مَوْضِعَ كُلِّ شَكُواى وَ عَالِمَ كُلِّ خَفِيَّةٍ وَ مُنْتَهَى كُلِّ حَاجَةٍ ا سے اللہ! اے ہررا زکے گوا دا ہے ہر شکایت کے ویکھنے کے مقام اسے ہر پوشیدہ چیز کے جاننے والے اور ہرھا جت کی آخری جگدا ہے يَا مُبْشَدِئًا بِالنِّعَمِ عَلَى الْعِبَادِ يَا كَرِيْمَ الْعَفُو يَا حَسَنَ التَّجَاوُزِ يَا جَوَادُ يَا مَنُ لا يُوَارِيُ بندوں پر اپنی نعتوں کا آغاز کرنے والےا ہے مہر مان معاف کرنے والے اسے بہترین درگز رکرنے والے اے عطا کرنے والے مِنْهُ لَيُكُ ذَاجٍ وَلاَ بَحُرٌ عَجَاجٌ وَ لَا سَمَآءٌ ذَاتُ اَبُوَاجٍ وَلاَ ظُلَمٌ ذَاتُ ارُتِيَاجٍ يَّا مَنِ ا ہے وہ جس سے نہاں نہیں ہے تا ریک رات نہ ہے کنا رسمندر نہ پر جوں والا آسمان اور نہ یکبارگی اٹھنے والی موجیس نہاں ہیں ا ہے وہ الظُّلُمَةُ عِنْدَهُ ضِيَاءٌ اَسْئَلُكَ بِنُورٍ وَجُهِكَ الْكَرِيْمِ الَّذِي تَجَلَّيْتَ بِهِ لِلْجَبَلِ فَجَعَلْتَهُ دَ نا ریکیاں جس کے لئے روشن ہیں سوال کرنا ہوں بواسطہ تیری عزت والی ذات کے نور کے جس کوٹونے پہاڑ پر چیکا یا تو وہ بھر کر رہ گیا

**************** وَ خَرَّ مُوسَى صَعِفًا وَ بِاسُمِكَ الَّذِي رَفَعُتَ بِهِ السَّمْوَاتِ بِلَا عَمَدٍ وَ سَطَحُتَ بِهِ ﴿ او رحضرت موی عب ہوش ہو کر گریٹ ہے اور بواسط تیرے نام کے جس سے ٹونے بلند کیا آسانوں کو بغیر ستون کے اور بھیلایا زمین کو الْآرُضَ عَلْى وَجُهِ مَاءٍ جَمَدٍ وَّ بِاسْمِكَ الْمَخُزُونِ الْمَكُنُونِ الْمَكُتُوبِ الطَّاهِرِ الَّذِي جے ہوئے پانی کی سطح کے اور پر اور سوالی ہوں بواسط تیرے محفوظ پوشیدہ لکھے ہوئے باک ترنام کے کہ جس سے تھے پکا را جائے تو إِذَا دُعِيُتَ بِهِ اَجَبُتَ وَ إِذَا سُئِلُتَ بِهِ اَعُطَيْتَ وَ بِاسْمِكَ السُّبُّوُحِ الْقُدُّوُسِ الْبُرُهَانِ جواب دیتا ہےاو رجب اس کے ذریعے تھے ہے ما نگا جائے تو دیتا ہے او ربواسطہ تیرے پا کستر پا کیزہ روشن مام کے سوالی ہوں جو ہر الَّـذِيُ هُوَ نُورٌ عَلَى كُلِّ نُورٍ وَ نُورٌ مِنُ نُورٍ يُضِي ءُ مِنْهُ كُلُّ نُورٍ إِذَا بَلَغَ الْاَرْضَ انْشَقَّتُ نورے بالار نورہے و ونورہاں نورمیں ہے اورجس ہے ہرنور چکتاہے جب و وزین پر پہنچاتو و و پیٹ گئی جب آسانوں پر پہنچاتو وَ إِذَا بَلَغَ السَّمْوَاتِ فُتِحَتُ وَ إِذَا بَلَغَ الْعَرُشَ اهْتَزَّ وَ بِاسُمِكَ الَّذِي تَرُتَعِدُ مِنْهُ فَرَائِصُ وہ کشا دہ ہو گئے اور جب عرش پر پہنچا تو وہ لرزنے لگا اور بواسطہ تیرے اس نام کے کہ جس سے تیرے فرشتوں کے دل دہل جاتے ہیں مَلائِكَتِكَ وَ بِالاسْلِمِ اللَّذِي مُشَّى بِهِ الْحِضْرُ عَلَى قُلْلِ الْمَاءِكُمَا مَشْى بِهِ عَلَى جَدَدٍ او رسوالی ہوں حق جبرائیل میکائیل او راسرافیل کے واسطے ہے اور حضرت محمصطفی صلی الله علیہ و آلیہ کے اس حق کے واسطے ہے سوالی الْآرُضِ وَ بِـاسُـمِكَ الَّذِي فَلَقُتَ بِهِ الْبَحْرَ لِمُوسِى وَ اَغُرَقُتَ فِرُعَوُنَ وَ قَوْمَهُ وَ اَنْجَيْتَ ہوں جوتمام نبیوں اور فرشتوں پر ہے اور سوالی ہوں کہ جس کی برکت سے خصر یا ٹی کی اہروں پر چلتے تھے جیسا کہ وہ اس سے زیمن کی بِهِ مُوسَى بُنِ عِمْرَانَ وَ مَنُ مَعَهُ وَ بِاسْمِكَ الَّذِي دَعَاكَ مُوسَى بُنُ عِمْرَانَ مِنُ جَانِحٍ بلندیوں پر چلتے تھاور بواسطہ تیرےنام کے جس سے تُونے موئ کے لئے دریا کوچیرااو رفرعون کواس کی قوم سمیت غرق کیااورموئ الطُّورِ الْآيُمَنِ فَاسْتَجَبُتَ لَهُ وَ اَلْقَيْتَ عَلَيْهِ مَحَبَّةً مِنْكَ وَ بِاسْمِكَ الَّذِي بِهِ اَحُيٰ عِيْسَ ین عمران کومع ان کے ساتھیوں کے نجات دی اور بواسطه اس نام کے جس ہے موسی میں میں ان نے کچھے طورا یمن کی ایک سمت ہے بُنُ مَـرُيَمَ الْمَوْتَىٰ وَ تَكَلَّمَ فِي الْمَهُدِ صَبِيًّا وَ اَبُرَءَ الْآكُمَةَ وَالْآبُرَ صَ بِاذَٰ نِكَ وَ بِاسْمِكَ یکا را تھا ہیں تُو نے اس کوجواب دیا اوراس پر اپنی محبت ما زل فرمائی اور سوالی ہوں بواسطاس مام کے جس کی برکت سے عیسیٰ بن مریم الَّـذِيُ دَعَـاكَ بِـه حَـمَـلَةُ عَـرُشِكَ وَ جِبُرَائِيُلُ وَ مِيْكَائِيُلُ وَ اِسْرَافِيُلُ وَ حَبِيُبُكَ مُحَيِّكِمًا نے مردے زندہ کیے بچینے میں گہوا رہے میں کلام کیا اور تیرے علم سے اس نام کے ساتھ حبذام و برعی والوں کوشفا دی اور بواسطہ

 صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَمَلائِكَتُكَ الْمُقَرَّبُونَ وَ ٱنْبِيَاؤُكَ الْمُرُسَلُونَ وَ عِبَادُكَ الصَّالِحُوْنَ تیرےاں نام کے جس سے بچھے حاملانِ عرش اور جبرائیل میکائیل او راسرا فیل اور تیرے محبوب و حبیب حضرت محرصلی الله علیہ و آلبہ مِنُ اَهُـلِ السَّـمْوَاتِ وَ الْاَرْضِيُنَ وَ بِاسْمِكَ الَّذِي دَعَاكَ بِهِ ذُوالنُّونِ اِذْ ذُهَبَ مُغَاضِبُّ تحقیے پکارتے ہیں نیزجس مام سے تیرے مقرب فرشتے تیرے بھیجے ہوئے انبیا ءاو رتیرے نیکوکا ربندے تھیے پکارتے ہیں جوآسان فَظَنَّ اَنُ لَن نَّقُدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَى فِي الظُّلُمَاتِ اَن لَّا اِلَّهَ اِلَّا ٱنْتَ سُبُحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ أَ والوں اورزین والوں میں ہیں اور بواسطہ تیرے اس مام کے جس سے پکا را تھتے تچھلی والے نے جب وہ غصے میں جا رہا تھا تو اس نے الظَّالِمِيُنَ فَاسُتَجَبُتَ لَه ۚ وَ نَجَّيُتَهُ مِنَ الْغَمِّ وَ كَذَالِكَ نُنُجِى الْمُؤُمِنِيُنَ وَ بِاسْمِكَ الْعَظِيُّ إ خیال کیا تواہے نہ پکڑے گا چر پکا راو ہ بانی کی تا ریکیوں میں کرٹیس کوئی معبو دسوائے تیر مے تو باک ترہے بے قتل میں بول ظالموں الَّذِيُ دَعَاكَ دَاوُوُدُ وَ خَرَّ لَكَ سَاجِدًا فَغَفَرُتَ لَهُ ۚ ذَنْبَهُ وَ بِاسْمِكَ الَّذِي دَعَتُكَ بِهِ أَيُّهِيِّيَةُ میں سے پس تُونے قبول کی اس کی دعااور تُونے اسے لکالا رمج وقم میں سے اور تو مومنوں کوائی طرح رہائی دیتا ہے اور سوالی ہوں امُرَأَةً فِرُعَوْنَ إِذْ قَالَتُ ﴿ رُبِ الْنِ لِي عِنْدَكُ إِبْيَا فِي الْجَنَّةِ وَانْحِيى مِنْ فَرُعَوْنَ و عَمَلِهِ تیرے ہن رگ ترنام سے جس سے پکا را تھے وا وُدِّ نے گر گیا سجدے میں پس بخش دی تونے ان کی بھول اور بوا سط تیرے نام کے جس وَ نَجِّنِيُ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِيُنَ﴾ فَاسُتَجَبُتَ لَهَا دُعَائَهَا وَ بِاسُمِكَ الَّذِي دَعَاكَ بِهِ أَيُّولُإُ ے پکارا تھے آپ زوجہ فرمون نے جب کہنے گئی کرمیرے رب بنامیرے لیے اپنے بال جنت میں ایک گھراو رنجات دے مجھے إِذْ حَلَّ بِهِ الْبَلاَءُ فَعَافَيُتَهُ وَ آتَيُتَهُ آهُلَهُ وَ مِثْلَهُمْ مَعَهُمُ رَحُمَةً مِنُ عِنُدِكَ وَ ذِكْرِي فرعون اوراس کے مل سے اور نجات دے مجھے طالموں کے گرو ہے اس تونے اس کی دعاس کی اور سوالی ہوں بواسط تیرے اس نام لِلْعَابِدِيْنَ وَ بِاسْمِكَ الَّذِي دَعَاكَ بِهِ يَعْقُوْبُ فَرَدَدتَ عَلَيْهِ بَصَرَهُ وَ قُرَّةَ عَيْنِهِ يُوسُفَ کے جس سے پکارا تجھے ایوب نے جب ان پڑخی آپڑی کی اس نجات دی تو نے ان کواور دیے عیال اور اپی رحمت سے انہیں ان جیسے اور جَـمَـعُتَ شَمْلَهُ وَ بِاسْمِكَ الَّذِيُ دَعَاكَ بِهِ سُلَيْمَانُ فَوَهَبُتَ لَهُ مُلُكًا لاَ يَنْبَغِيُ لاَحَدٍ مِ بھی عطا کینا کرعبا دے گز اروں کے لیے یا دگار ہے او رسوالی ہوں بوا سطہ تیرے اس مام کے جس سے پکا را تھے لیقو بٹ نے پس بَعُدِهِ إِنَّكَ أَنُتَ الْوَهَّابُ وَ بِاسْمِكَ الَّذِي سَخَّرُتَ بِهِ الْبُرَاقَ لِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْكُ وا پس دیں تُونے انہیں آئیمیں اوران کا نورِنظر یوسٹ بھی اوراس بگھرے خاندان کو بیجا کر دیا اور بواسطہ تیرےاس نام کے جس

************* وَآلِهِ وَسَلَّمَ إِذْ قَالَ تَعَالَى ﴿ سُبُحَانَ الَّذِي اَسُراى بِعَبُدِهِ لَيُلاُّ مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى ے پکا را تھے۔ لیمانؑ نے پس ٹو نے بخشاانییں ایسا ملک وحکومت جوان کے بعد کسی کے لیے نہیں بے شک ٹو بہت عطا کرنے والا ہے الْـمَسُجِدِ الْاَقْصٰي﴾ وَ قَوُلُهُ ﴿سُبُحَانَ الَّذِيُ سَخَّرَلَنَا هَذَا وَ مَا كُنَّا لَهُ مُقُرِنِيْنَ وَ إِنَّا اِلٰي اور بواسطہ تیرے اس نام کے جس سے تُو نے مطبع کیا ہرا ق کو بہ خاطر محرصلی اللہ علیہ وآلہہ وسلم کے جبیرا کہ فرمایا خدائے تعالیٰ نے باک رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ﴾ وَ بِاسُمِكَ الَّذِي تَنَزَّلَ بِهِ جِبُرَائِيُلُ عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَأ ہو ہ ذات جس نے اپنے بندے کوسیر کرائی راتوں رات کعبہ شریف ہے مسجداقعتیٰ تک اور قولی خدا ہے یا ک ہو ہ ذات جس نے بِاسْمِكَ الَّذِي دَعَاكَ بِهِ آدَمُ فَغَفَرُتَ لَه ' ذَنْبَه ' وَ اَسْكَنْتَه ' جَنَّتَكَ وَ اَسْتُلُكَ بِحَقّ الْقُلْحُآن ا سے ہمارے لیے مطبع کیاو رنہ ہم میں ایسی طاقت نہ تھی اور اپنے پرورد گا رکی طرف پلٹنے والے ہیں او ربوا سطہ تیرے اس مام کے جے الْعَظِيُمِ وَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيُنَ وَ بِحَقِّ اِبُرَاهِيُمَ وَ بِحَقِّ فَصُلِكَ يَوُمَ الْقَضَاءِ وَ بِحَقٍّ أَ جرائیل لے کرآئے حضرت محمصطفی سلی الله علیه وآله کے پاس اور بواسطہ تیرے اس نام کے جس سے پکارا تھے آدم نے کہل الْمَوَاذِيُنِ إِذَا نَصِبَكُ وَ الصَّلَحَفِ إِنَّ لَيْسَرَثُ وَبِلَحَقِّ الْقَلْمِوَمَا جَرَى وَ اللَّوْحِ وَ معاف کی ٹونے ان کی بھول اورانہیں اپنی جنت میں تھیم ایا اور سوال کرنا ہوں تھے سے عظمت والے قر آن کے واسطے سے حضرت مجمدً مَا أَحُسَى وَ بِحَقِّ الْإِسُمِ الَّذِي كَتَبُتَهُ عَلَى سُرَادِقِ الْعَرُشِ قَبُلَ خَلُقِكَ الْخَلُقَ وَالدُّنْيَا ﴿ نبیول کے خاتم کے واسطہ سے او را ہرا ہیم کے واسطہ سے اور قیا مت کے روز تیرے فیلے کے واسطہ سے او رمیز ان عدل کے واسطہ وَالشُّـمُسَ وَالْقَـمَرَ بِٱلْفَىٰ عَامٍ وَ اَشُهَدُ اَنُ لاَ اِللَّهِ اِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لاَ شَرِيُكَ لَهُ وَ اَنَّهُ سے جبنصب کی جائے اور محیفے تھولے جائیں اور قلم کے واسطہ ہے جب وہ چلے اور لوح کے واسطہ ہے جب پر ہو جائے اور اس مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ رَسُولُهُ وَ اَسْتَلُكَ بِاسْمِكَ الْمَخُزُونَ فِي خَزَائِنِكَ الَّذِي اسْتَأْثَرُتَ ﴿ نام کےواسطہ ہے جس کوٹو نے لکھاعرش کے پر دول پراس پہلے کرتو نے بنایا مخلو ق اور دنیا کواو رسور ج و چا غد کو دو ہزار سال میں اور فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ لَمُ يَظُهَرُ عَلَيْهِ أَحَدٌ مِنْ خَلْقِكَ لاَ مَلَكٌ مُقَرَّبٌ وَلاَ نَبِيًّ مُرُسُ سکوائی دیتا ہوں کرنہیں معبو دسوائے اللہ کے جو بکرا ہے اس کا کوئی ٹافی نہیں اوریہ کرحضرت محمراس کے بندےاور رسول ہیں اور وَلاَ عَبُدُ مُصْطَفْى وَ اَسُئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِي شَقَقُتَ بِهِ الْبِحَارَ وَ قَامَتِ بِهِ الْجِبَالُ سوال کرتا ہوں تھے ہے بواسطاس نام کے جومحفو ظہے تیرے خزانوں میں جس کوفاص کیاہے وُ نے علم غیب کے مما تھاہیے حضور میں

************* اخُتَلَفَ بِهِ اللَّيُلُ وَ النَّهَارُ وَ بِحَقِّ السَّبُعِ الْمَثَاذِيُ وَ الْقُرُآنِ الْعَظِيْمِ وَ بِحَقِّ الْكِرَامِ كر تين إلى اورندي كونى برائر كالوق من سے كونى بھى ندكونى مقرب فرشته ندكونى بھيجا ہوا نبى اورندي كونى برگزيد و بنده اور رسوال كرنا الْكَاتِبِيْنَ وَ بِحَقِّ طُهْ وَ يُس وَ كَهْيِعُص وَ حُمَّعَتْق وَ بِحَقِّ تَوُرَاةٍ مُوسَى وَ إِنْجِيُلِ عِيسْلي ہوں تھے سے بواسطہ تیرےاس مام کے جس سے تُو نے دریا وَں کو چیرا پہا ڑو ں کو قائم فر مایا اور اس سے دن رات میں تغریق کی ہے وَ زَبُورِ دَاؤُدَ وَ فُرُقَانٍ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَ عَلَى جَمِيْعِ الرُّسُلِ وَ بَاهِيًّا او ربوا سطہ دویا رہ نا زل شدہ سات آ پیوں او رعظمت والے قر آ ن کے بوا سطہ دوعزت والے کا تبوں کے بواسطہ طیا یکس تھیجھ اور شَرَاهِيًّا اَللَّهُمَّ اِنِّيُ اَسُئَلُكَ بِحَقِّ تِلُكَ الْمُنَاجَاتِ الَّتِي كَانَتُ بَيُنَكَ وَ بَيُنَ مُوْسَيَ معسق اوربواسطه موی گئو رہے عیسی کی انجیل داؤؤی زبوراوربواسطہ محمد کے قرآن کے عندا رحت کرے ان پر او ران کی آل عِـمُـرَانَ فَـوُقَ جَبَـلٍ طُـوُرِ سَيُنَاءَ وَ اَسْتَلُكَ بِاسُمِكَ الَّذِي عَلَّمُتَهُ مَلَكَ الْمَوُتِ لِقَبُطُ یرا ورتمام رسولوں پر اوراپنے دونوں اساع اعظم پر اےاللہ! میں سوال کرتا ہوں تھھ سے بواسطہ اس را زونیا زکے جوہوا تھا تیرے اور الْارُواحِ وَ اسْسَلَكَ إِمِهِ الْمُحْكَ الَّهِ يُ كُتِبَ عَلَى وَرَاقِ الزَّيْكُونِ فَخَضَعَتِ النِّيرَانُ لِيلُكُ موی میں مران کے درمیان طور بیناء کے بابرکت پہاڑیر اورسوال کرنا ہوں جھے سے بواسطہ تیرے اس مام کے جوثو نے روحیل قبض الْوَرَقَةِ فَـقُلُتَ ﴿ يَا نَارُ كُونِي بَرُدًا وَ سَلاَمًا ﴾ وَ اَسْتَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِي كَتَبُتَهُ عَلَا کرنے کے لیے فرعند سموت کو تعلیم فرمایا اور سوال کرنا ہوں جھ سے بوا سطہ تیرے اس نام کے جو لکھا گیا تبجر زینون کے ہے پر پس سُرَادِقِ الْمَجُدِ وَ الْكَرَامَةِ يَا مَنُ لاَ يُحُفِيهِ سَائِلٌ وَلاَ يَنْقُصُهُ نَائِلٌ يَا مَنُ بِهِ يُسْتَغَاثُ وَ جھک گیا دوز خاس ہے کے آ کے پھر کہاتو نے کرا ہے آ گ ہوجا تھنڈی اور سلامتی والی اور سوال کرنا ہوں تھے سے تیرےاس ما إِلَيْهِ يُلْجَأُ اَسُئَلُكَ بِمَعَاقِدِ الْعِزِّ مِنُ عَرُشِكَ وَ مُنْتَهَى الرَّحْمَةِ مِنْ كِتَابِكَ وَ بِاسُمِيْكُمْ ے جے و نے لکھا ہے عزت اور ہز رگی کے پر دوں پر اےو ہ کہ جے سوال سے تکی ٹییں ہوتی اور عطاءے کمی ٹییں آتی اےو ہ جس الْاَعْظَمِ وَ جَدِّكَ الْاَعْلَى وَ كَلِمَاتِكَ التَّامَّاتِ الْعُلَى اَللَّهُمَّ رَبَّ الرِّيَاحِ وَ مَاذَرَكُ سے مدد مانگی اور جس سے پنا ہ لی جاتی ہے سوال کرتا ہوں تھے سے بواسطہ تیر ہے عرش کے عزت والے مقامات تیری کتاب میں موجود وَالسَّمَاءِ وَمَا اَظَلُّتُ وَالْارُضِ وَمَا اَقَلُّتُ وَ الشِّياطِيُنِ وَمَا اَضَلَّتُ وَالْبِحَارِ وَمَا جَرَتُ ا نتہائی رحمت کے اور بواسطہ تیرے اسم اعظم تیری بلندمز شان اور تیرے کامل اور بلندمز کلمات کے اے اللہ اے ہوا وک اور ان کے

*********************** وَ بِحَقِّ كُلِّ حَقِّ هُوَ عَلَيْكَ حَقٌّ وَ بِحَقِّ الْمَلائِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَ الرُّو حَانِيّيْنَ وَ الْكَرُ وُبِيّيْنَ فِي ا ٹڑات کے رب اے آسمان اور اس کے سماییہ کے رب اے زیمن او راس کے بوجھ کے رب اے شیطانوں او ران کے گمراہ کر دہ کے وَ الْـمُسَبِّحِيُـنَ لَكَ بِاللَّيُلِ وَالنَّهَارِ لاَ يَفْتَرُونَ وَ بِحَقِّ اِبْرَاهِيُمَ خَلِيُلِكَ وَ بِحَقّ كُلِّ وَلِأ رب اے دریا وک اوران کی روانی کے رب اور بواسطہ ہرای حق کے جو چھھ پر ہےا ور بواسطہ تقرب فرشتوں رو حاثیوں کروبیوں يُنَادِيُكَ بَيُنَ الصَّفَا وَالْمَرُوةِ وَ تَسُتَجِيُبُ لَهُ دُعَائَهُ يَا مُجِيبُ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ هَذِ او رتیری سبع کرنے والوں کے رات اور دن میں جو تھکتے نہیں ہیں اور بواسطہ تیرے خلیل اہر اہیمؑ کےاور بواسطہ تیرے ہر دوست کے الْكَاسُسَمَاءِ وَ بِهِذِهِ الدَّعَوَاتِ اَنُ تَغُفِرَ لَنَا مَا قَدَّمُنَا وَ مَا اَخُرُنَا وَمَا اَسُرَرُنَا وَ مَا اَعُلَنًا وَ مَا جوصفاءومروہ کے درمیان مجھے پکارنا ہے اورتو اس کی دعا قبول کرنا ہے اے قبول کرنے والے سوال کرنا ہوں تھے ہے بواسطہ ان ٱبُدَيُنَا وَ مَا ٱخُفَيْنَا وَ مَا ٱنْتَ ٱعْلَمُ بِهِ مِنَّا إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ بِرَحُمَةِكَ يَا ٱرْ-نا موں کے اور بوا سطان دعاؤں کے بیر کر بخش وے ہمارے گنا ہ جوہم کر پچے اور کریں گے اور جوہم نے جیپ کر کیے اور جو ظاہر کیے الرَّاحِمِيُنَ يَا حَافِظُ كُلِّ غُولِ إِن مُولِنَ لَ كُلِّ وَحِيْلٍ يُلْقُلُّوا كُلَّ ضَعِيُفٍ يَا نَاصِرَ كَلّ او رجوہم نے بیان کیے او رجوہم نے چھپائے اور جن کوتو ہم سے زیا دہ جا نتا ہے بے شک تو ہر چیز پر قد رت رکھے والا ہے بذر ربعہ اپنی مَظُلُومٍ يَا رَازِقَ كُلِّ مَحُرُومٍ يَا مُونِسَ كُلِّ مُسْتَوُحِشٍ يَا صَاحِبَ كُلِّ مُسَافِرٍ يَا عِمَادَ رحمت کے اے سب سے زیا دہ رحم کرنے والے اے ہربے وطن کے تھہان اے ہر تنہا کے ساتھی اے ہر کمزو رکی قوت اے ہر تتم دید و كُلِّ حَاضِرٍ يَا غَافِرَ كُلِّ ذَنُبٍ وَ خَطِينُهَ إِيَا غِيَاتَ الْمُسْتَغِثِينَ يَا صَرِيْخَ الْمُسْتَصُرِ خِينُنَ يَا کی مدد کرنے والے اے ہرمحروم کے را زق اے ہرخوف ز دہ کے ہمدم اے ہر مسافر کے ہمراہی اے ہر حاضر کے سہارے اے ہر كَاشِفَ كَرُبِ الْمَكُرُوبِيُنَ يَا فَارِجَ هَمِّ الْمَهُمُومِيُنَ يَا بَدِيْعَ السَّمْوَاتِ وَالْاَرَضِيُنَ يَا گنا ہ اور خطا کے بخشنے والے اے فریا دیوں کے فریا درت اے ہر پکارنے والے کی شنے والے اے دکھیارے لوگوں کے دکھوں کے مُنْتَهٰى غَايَةِ الطَّالِبِيُنَ يَا مُجِيُبَ دَعُوَةِ الْمُضُطَرِّيُنَ يَا اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ دور کرنے والے اعظم زدہ کے قم مٹانے والے اے آسانوں اور زمینوں کے پیدا کرنے والے اے طلبگاروں کے مقصد کی انتہاء يَا دَيَّانَ يَـوُمِ اللِّدِيْنِ يَا اَجُوَدَ الْاَجُوَدِيْنَ يَا اكْرَمَ الْاكْرَمِينِ يَا اَسُمَعَ السَّامِعِيْنَ يَا اَبُصَرَ اے پریشان لوگوں کی دعا قبول کرنے والے اے سب سے زیادہ رخم کرنے والے اے سب جہانوں کے رب اے یوم جز ا کو ہدلہ

**** النَّاظِرِيُسَ يَا اَقُدَرَ الُقَادِرِيُنَ اغْفِرُلِيَ الذُّنُوْبَ الَّتِيُ تُغَيِّرُ النِّعَمَ وَاغْفِرُلِيَ الذُّنُوْبَ الَّتِي ویے والے اے عطا کرنے والوں سے زیا دہ عطا کرنے والے اے مہر با ٹوں سے زیا دہ مہر بان اے سننے والوں سے زیا دہ سننے تُـوُرِثُ النُّـدَمَ وَاغُفِرُلِيَ الذُّنُوْبَ الَّةِي تُورِثُ السَّفَمَ وَاغُفِرُلِيَ الذُّنُوبَ الَّةِي تَهُةِكُ والے اے دیکھنے والوں سے زیا دہ دیکھنے والے اسے طاقتو رو س سے زیا دہ طاقت والے میر ہے وہ گنا ہ معاف کر دے جوفعتو ں سے الُعِصَمَ وَاغُفِرُلِيَ الذُّنُوُبَ الَّتِيُ تَرُدُّ الدُّعَاءَ وَاغُفِرُلِيَ الذُّنُوبَ الَّتِيُ تَحْبِسُ قَطُرَ السَّمَاءِ محروم کرتے ہیں میرے و وگنا و بخش دے جوشرمند گی کابا عث بنتے ہیں میرے و وگنا ومعاف کر دے جو بھا ریاں پیدا کرتے ہیں وَاغُفِرُ لِيَ الذُّنُوُبَ الَّتِيُ تُعَجِّلُ الْفَنَاءَ وَاغُفِرُ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِيُ تَجُلِبُ الشِّقَاءَ وَاغُفِرُ لِيَ میرے وہ گنا و پیش دے جو پر دول کو فاش کرتے ہیں میرے وہ گنا ومعاف کر دے جو دعا کوروک دیے ہیں میرے وہ گنا وہش دے اللَّذَنُوُبَ الَّتِي تَظُلِمُ الْهَوَاءَ وَاغُفِرُ لِيَ الذُّنُوبَ الَّةِي تَكْشِفُ الْغِطَاءَ وَاغْفِرُ لِيَ الذُّنُوبَ جوبارشوں میں رکاوٹ ڈالتے ہیں میرے و وگنا ہ معاف کر دے جوجلدموت لاتے ہیں میرے و وگنا و بخش دے جو بد بختی کامو جب الَّتِينُ لا يَغَفِرُهَا غَيْرُكُ يَا ٱللَّهُ وَالْحُمِلَ عَنِلَي كُلُّ تَبِعَةٍ لِا حَدٍّ مِنْ خَلَقِكَ والجُعَلُ لِيُ بنتے ہیں میرے وہ گنا ہ معاف کر وے جومیری دنیا کوتا ریک کرتے ہیں میرے وہ گنا ہ پخش وے جوبے پر دگی کا سبب بنتے ہیں اور اَمُوىُ فَوَجًا وَ مَخُرَجًا وَ يُسُوًا وَ اَنْزِلُ يَقِينُكَ فِي صَدُرِيُ وَ رَجَائَكَ فِي قَلْبِي حَتَى میرے وہ گنا ہ معاف کر دے جن کوتیرے سوا کوئی معاف نہیں کرسکتا اے اللہ! تیری مخلوق میں سے مجھ برکسی کا جو بو جھ ہے وہ مجھ سے ٱرُجُو ۚ غَيْرَكَ ٱللَّهُمَّ احُفَظَنِيُ وَ عَافِنِي فِي مَقَامِيُ وَاصْحَبْنِي فِي لَيُلِي وَ نَهَارِي وَ مِنُ بَيُ بٹا دے میرے کاموں میں کشائش آ سانی اور سہولت پیدا کر دے میرے سینے میں اپنا یقین اور میرے دل میں اپنی امید کو جگہ دے يَـدَىُّ وَ مِـنُ خَـلُـفِـيُ وَ عَـنُ يَـمِيُـنِـيُ وَ عَنُ شِمَالِيُ وَ مِنُ فَوُقِي وَ مِنُ تَحَيِيُ وَ يَسِّرُ لِيَ یہاں تک کہ تیرے غیرے امید ندر کھوں اے اللہ!میرے مقام میں میری حفاظت کراو رجھے پنا ہ دے او رمیرے ساتھ رہ دن میں السَّبيُــلَ وَ اَحُسِنُ لِيَ التَّيُسِيُرَ وَ لَا تَخُذُلُنِيُ فِي الْعَسِيْرِ وَاهْدِنِيُ يَا خَيُرَ دَلِيُلٍ وَ لَاتَكِلْنِيُ رات میں میری نگہبانی کرمیرے آگے ہے چکھے ہے میرے دائیں ہے بائیں ہے اور میرے اوپر سے اور نیچے ہے اور میرا راستہ اِلْي نَفَسِيُ فِي الْاَمُورِ وَ لَقِنِيُ كُلِّ سُرُورٍ وَ اقْلِبُنِيُ اِلْي اَهْلِيُ بِالْفَلاَحِ وَالنَّجَاحِ مَحُبُوراً آ سان کر دے میرے لیے بہتر آ سائش پیدا کر دے اور جھے تنگی میں ذلیل وخوار ند کر جھے را ہ بھا دے اے بہترین رہبراو رمعاملات

فِي الْعَاجِلِ وَالْآجِلِ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيُرٌ وَ ارُزُقْنِي مِنُ فَضُلِكَ وَ اوُسِعُ عَلَيَّ مِ میں مجھے میر نے نقس کے حوالے نہ کر مجھے ہرطرح کی خوثی عطافر مااور مجھے اپنے کئے میں واپس لے چل بہتری اور کا میا فی کے ساتھ 🖁 طَيّبَاتِ رِزُقِكَ وَاسْتَعُمِلُنِي فِي طَاعَتِكَ وَ أَجِرُنِي مِنْ عَذَاهِكَ وَ نَارِكَ وَ اقْلِبُنِي ﴿ إَذَا اور دنیاو آخرت کی بھلائی کے ساتھ بے شک تو ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے او رجھ پرا پنافغنل و کرم کرمیر ہے لیے اپنے با کیزہ رزق میں تَوَقَّيْتَنِي إِلَى جَنَّةِكَ بِرَحْمَةِكَ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُودُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعُمَةِكَ وَ مِنْ تَحُ إِيل فراوا نی فرما بھے اپی فرمانبر داری میں لگا دے جھے اپی سز ااور آ گ ہے پناہ دےاو رجب تُو مجھے و فات دیے وا پی رحمت ہے مجھے عَـافِيَةِكَ وَ مِنْ حُلُولِ نِقُمَةِكَ وَ مِنْ نُزُولِ عَذَابِكَ وَ أَعُوٰذُ بِكَ مِنْ جَهُدِ الْبَلاَءِ وَ ﴿ كُلِّيكِ جنت میں پہنچا دے اے اللہ! میں تیری پنا ہ ما تکما ہوں اس سے کہ مجھ سے تیری نعمت چھن جائے اور تیری تکہبانی حاصل نہ رہے پنا ہ الشِّقَاءِ وَ مِنْ سُوءِ الْقَضَاءِ وَ شَمَاتَةِ الْآعُدَاءِ وَ مِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَ مِنُ شَرِّ مَا جا ہتا ہوں تیری طرف سے گئی او رعذاب کے آنے ہے او رتیری پنا ہ جا ہتا ہوں بخت آنر ماکش سے بدہختی کے آنے سے بری تقدیر فِي الْكِتَابِ الْمُنزَلِ اللَّهُمَّ لِا تَحْعَلَنِنَى مِنَ الْأَشْرَالِ وَلَا مِنْ اصْلِحَابِ النَّارِ وَلا تَحْرِمُنِي ے دشمنوں کے طعن سے اوراس تکلیف ہے جوآ سان سے ما زل ہواور ہراس ہرائی ہے جس کا ذکرما زل شدہ کتاب میں ہے اے صُحْبَةَ الْآخُيَارِ وَ اَحْيِنِي حَيَاةً طَيْبَةً وَ تَوَقَّنِيُ وَفَاةً طَيّبَةً تُلُحِقُنِي بِالْآبُرَارِ وَارُزُقُنِيُ الله! مجھے نہ قرار دے بڑے لوگوں میں اور ہالی چہنم میں ہے اور نہ ہی مجھے نیک افرا د کی صحبت ہے محروم رکھ مجھے یا کیزہ زندگی نصیب مُرَافَقَةَ الْاَنْبِيَاءِ فِي مَقْعَدِ صِدُقٍ عِنْدَ مَلِيُكٍ مُقْتَدِرٍ اَللَّهُمَّ لَكَ الْحَمُدُ عَلَى حُسُنِ بَلاثِكِمْ کر مجھ کو بہترین حالت میں موت و نے نیکو کاروں میں شامل کر دینا مجھے انبیاء کا ساتھ عطافر مانا اس مقام صدق وصفامیں جو تیری وَ صُنُعِكَ وَلَكَ الْحَمُدُ عَلَى الْإِسُلاَمِ وَاتِّبَاعِ السُّنَّةِ يَا رَبِّ كَمَا هَدَيْتَهُمُ لِدِيُذِكَ ز ہر دست حکومت میں ہےا ہے معبو د! حمد ہے تیرے لیے تیری طرف سے بہترین آ زمائش میں مدد کرنے پر او رحمہ ہے تیرے لیے کہ تُو عَـلْـمُتَهُـمُ كِتَـابَكَ فَـاهُدِنَا وَ عَلِّمُنَا وَ لَكَ الْحَمُدُ عَلَى حُسُنِ بَلاَثِكَ وَ صُنْعِكَ عِيْ نے اسلام کی پیروی اورسنت پر عمل کی توفیق دی اے پروردگار جیسے تُو نے ان کی اپنے دین کی طرف رہنمائی کی اپنی کتاب انہیں خَاصَّةً كَمَا خَلَقُتَنِي فَأَحُسَنُتَ خَلُقِي وَ عَلَّمْتَنِي فَأَحُسَنُتَ تَعُلِيُمِي وَ هَدَيُتَنِي سکھائی اپس ہماری بھی رہنمائی کراور ہمیں سکھااور حمد ہے تیرے لیے بہترین آ زمائش پراوراس خاص احسان پر جوڑو نے مجھ پر کیا

فَأَحُسَنُتَ هِـدَايَتِـيُ فَلَكَ الْحَمُدُ عَلَى إِنْعَامِكَ عَلَيَّ قَدِيْمًا وَ حَدِيْثًا فَكُمُ مِنْ كُرُب جیما کرو نے مجھے پیدا کیاتو اچھی صورت دی مجھے علم سکھایا تو بہترین تعلیم دی او رمیری را ہنمائی کی تو کیا خوب رہنمائی کی اپس حمہ ہے سَيِّدِيُ قَـٰذُ فَرَّجُتَهُ وَ كُمُ مِنُ غَيِّم يَا سَيِّدِي قَدُ نَفْسُتَهُ وَ كُمُ مِنُ هَمِّ يَا سَيِّدِي قَدُ كَشَفْتَهُ تیرے لیے کہ تُو نے مجھے پہلے وقت ہے آج تک مسلسل نعتیں دیں تو اے میرے سردا رکتنے ہی دکھتھے جو تُونے دورکر دیے میرے وَ كُمْ مِنْ بَلاَءٍ يَا سَيِّدِي قَدُ صَرَفَتَهُ وَ كُمْ مِنْ عَيْبٍ يَا سَيِّدِي قَدُ سَتَرُتَهُ فَلَكَ الْحَمُا آ قا کتنے ہی خم تھے جوڑو نے مٹا دیےا ہے میرے مالک! کتنے ہی اندیشے تھے جوڑو نے مُوکر دیئے اے میرے آ قاکتنی ہی پریشانیا ں عَـلْـى كُلِّ حَالٍ فِي كُلِّ مَثُوًى وَ زَمَان وَ مُنْقَلَبٍ وَ مَقَامٍ وَ عَلَى هٰذِهِ الْحَالِ وَ كُلِّ حَالِ تھیں جوتو نے ختم کردیں اور کتنے ہی حیب تھے جوٹو نے ڈھانپ لیے لیس حمد ہے تیرے لیے ہرایک حال میں ہرجگہ ہر زمانے میں ہر ٱللَّهُمَّ اجُعَلَنِي مِنُ ٱفْضَلِ عِبَادِك نَصِيبًا فِي هَذَا الْيَوْمِ مِنْ خَيْرِ تَقُسِمُهُ أَوْ ضُرِّ تَكُشِفُهُ ا یک منزل میں اور ہرایک مقام پراو راس موجو دہ حالت میں اور ہر حالت میں اے معبو د! آج کے دن مجھے حصہ ونصیب کے لحاظ سے سُوءٍ تَسَصُرِفَهُ أَوُ بَلاَءٍ تَلِدُوَعُهُ أَوْ حَيْرٍ لَهُ ﴿ قُلُهُ أَوْ لَرَ لَحَلَمَةٍ تَنْشُرُ هَا أَوْ عَافِيَةٍ تُلْبِسُهَا فَإِنَّكَ اپنے سب بندوں سے برتر قرار دےاس بھلائی میں جوٹو نے تقسیم کی یا جو تکلیف ٹونے دور کی یا جو برائی ٹونے ہٹائی یا جوٹتی ٹونے نالی عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَلِدِيُرٌ وَ بِيَلِكَ خَزَائِنُ السَّمْوَاتِ وَالْاَرُضِ وَ ٱنْتَ الْوَاحِدُ الْكَرِيُرُ یا جو خیر اُو نے عطا کی یا جورحمت اُونے عام کی یا جوعا فیت اُونے عنایت کی ہے کہ بے شک تو ہر چیز پر قد رت رکھتا ہے آسانوں او رزیمن الْمُعُطِى الَّذِيُ لاَ يُرَدُّ سَائِلُهُ وَ لَايَخِيُبُ آمِلُهُ وَلاَيَنْقُصُ نَائِلُهُ وَلاَيَنْفَدُ مَا عِنْدَهُ بَلُ يَزُدَادُ کے خزانے تیرے قبضے میں ہیں اور تُو و ہ بکتا ہزرگی والاعطا کرنے والا ہے کہ جو کسی سائل کوہڑکا تاخییں کسی امیدوار کو مایوی خبیں کرنا كَثُرَـةً وَ طِيُبًا وَ عَطَاءً وَ جُودًا وَ ارُزُقُنِـيُ مِنُ خَزَائِذِكَ الَّةِيُ لاَ تَفُنٰى وَ مِنُ رَحُمَةِكَ او رجس کی عطام منیں ہوتی او رجو پچھاس کے ماس ہے تم خیل ہوتا بلکہ و ہیڑھتا ہے مقدا رمیں ما کیزگی میں عطامیں اور سخاوت میں الْـوَاسِـعَةِ إِنَّ عَـطَادَكَ لَمُ يَكُنُ مَحُظُورًا وَ أَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ بِرَحُمَةِكَ يا أرْحَا او رعنا بت کر مجھے اپنے خزا نول سے جو محتم نہیں ہوتے اپنی وسیع رحمت میں سے کہ بے شک تیری عطا کبھی بندنہیں ہوتی اورتو ہر چیز پر قدرت ركتاب إلى رحمت كرماتها برب ب زياده رحم كرف والي-

(۱) شب و روز جمعه میں ایک ہزار ہار درو دشریف پڑھنے کی بڑی فضیلت وا رد ہوئی ہے۔ حتی کہ حضرت امام محمد باقر علیہ السلام سے منقول ہے کہ میر سے زویک اس سے بڑی کوئی عبادت نہیں ہے۔ (مفاتے) جس کاقبل ازیں تذکرہ کیا جاچکا ہے جسے علاء وفقہانے مستحب قرار دیا ہے۔ (مصباح الم ہجد)

تذکرہ کیا جاچکا ہے جسے علاء وفقہانے مستحب قرار دیا ہے۔ (مصباح الم ہجد)

(۷) دَں باریہ دعاشب جمعہ میں پڑھی جائے:

يَا دَآئِمَ الْفَضُلِ عَلَى الْبَرِيَّةِ يَا بَاسِطَ الْيَدَيُنِ بِالْعَطِيَّةِ يَا صَاحِبَ الْمَوَاهِبِ السَّنِيَّةِ الدَوه وَاللَّهُ الْعَلَى الْمَوَاهِبِ السَّنِيَّةِ الدَوه وَالدَه اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّ

محمر و آل محمر پر رحمت فرما جو مخلوقات میں سب نے بہتر ہیں اور ائے بلندیوں کے مالک! اس رات میں میرے گیاہ بخش دے۔

(۸) نیز شب جمعه اینے مرحومین ومرحومات کے لیے حسب تو فیق کچھ صدقہ و خیرات ضرور دینی چاہیئے کہاں کی بڑی تا کیداور ترک کی مذمت وار دہوئی ہے۔

(۹) نیز شب جمعه حضرت امام مسین النام کخصوص زیادی کاراهنا کمی وارد به افزاده درز دیک یا دور سے ضرور پڑھنی چاہیئے ۔(واللّٰه الموفق)

مخفی نہ رہے کہشب جمعہ نما زمغر ہے کہ پہلی رکعت میں سورۂ جمعہ اور دوسری میں سورۂ قبل ہو اللّٰہ احمد اور نما زعشاء کی پہلی رکعت میں سورۂ جمعہ اور دوسری میں سورۂ سبح اسم دبک الاعلی کا پڑھنا مستحب ہے۔

روز جعدك اعمال واورا دكابيان

(۲) نماز صبح کے بعد کسی ہے کلام کرنے ہے پہلے میہ وعا پڑھے تا کہا گلے جمعہ تک اس کے گنا ہوں کا کفارہ قرار پائے جبیبا کہ حضرت امام جعفرصا وق الطبی ہے مروی ہے۔ (کتاب الدعا والزیارہ)

اَللَّهُمَّ مَا قُلْتُ فِي جُمُعَتِى هَذِهِ مِنُ قَوْلٍ اَوْ حَلَفُتُ فِيْهَا مِنُ حَلْفِ اے معبودا میں نے اپنے اس جو کے دوز جو بات کی یا اس میں کی بات پر حم کھائی ہے یا کی طرح

اَوُ نَسَذَرُتُ فِيهَا مِسنُ نَّدُو فَمَشِيَّةُ كَ بَيُسَ يَدَى ذَلِكَ كُلِّهِ فَمَا شِفْتَ مِنْهُ كَالِمُ مِنْ كَالِح بِهِ ان مِن جَلَى ذَلِكَ كُلِّه فَمَا شِفْتَ مِن الْمَا فَلَا اللهُ مَن اللهُ مَن اللهُ مَن اللهُ مَا يَحْدَرُ مَن كَالِح بِهِ اللهُ مَا مَا اللهُ مَا مَا اللهُ مَا مَا لُهُ مَا اللهُ مَا مَا اللهُ مُا مَا اللهُ مَا مَا اللهُ مَا مُن صَالِح اللهُ مَا مَا اللهُ مُلِح اللهُ مَا مَا مَا مُن صَالِح اللهُ مَا مَا مَا مُن صَالِح اللهُ مَا مُن صَالِح اللهُ مَا مَا مَا مُن صَالِح اللهُ مَا مُن صَالِح اللهُ مَا مُن صَالِح اللهُ مَا مُن صَالِح المَا مُعْمَا مُعْمِوا مِن مَا مُعْمَا مُعْمِوا مِن مُن صَالِح المَا مُعْمِوا مِن مُن صَالِح المَا مُعْمِوا مُعْمِوا مُعْمِوا مُعْمِوا مُعْمِوا مُعْمِوا مُعْمِوا مُعْمِوا مُعْمِوا مُعْمُولُ مِن

میں اس بررحت کا طالب ہوں اور جس برتو لعنت کر ہے میں بھی لعنت کرتا ہوں۔

(٣) نما زمیج کے بعد سورۂ رحمٰن کی تلاوت کرنا اور ہر ﴿ فَبِ اَيِّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِانِ ﴾ کے بعد ﴿ لأ بِشَيُ مِنُ ٱلأَئِكَ رَبِّ اُكَذِّبِ ﴾ کہنا وارد ہے۔ (تفییر البرہان)

(۴) حضرت رسول خداصلی الله علیه و آلبه وسلم اور دوسر ےائمہ ہدی علیهم السلام کی مشتر که زیارت پڑھنا جبیبا کہ حضرت امام جعفر صادق علیدالسلام ہے مروی ہے کہ اس دن عنسل کر کے صاف ستھرے کپڑے پہن کرجنگل میں یا کوشھے کی حبیت پر جاکر کپار کعت نماز دو سلام کے ساتھ پڑھے دور اس کے بعد یہ زیارت پڑھے: اَلسَّلاَمُ عَلَيُكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَ رَحُمَةُ اللَّوَ بَرَكَاتُهُ اَلسَّلاَمُ عَلَيُكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ الْمُرْسَلُ سلام ہو آپ پر اے پیغیر رحمت ہو اللہ کی اور اس کی برسیس ہوں سلام ہو آپ پر اے خدا کے بیسجے ہوئے وَ الْوَصِيُّ الْمُرْتَحْسِي وَالسَّيِّدَةُ الزَّهُرَآءُ وَ السِّبُطَانِ الْمُنْتَجَبَانِ وَ الْاَوُلادُ الْاَعُلامُ پیغمبراورسلام ہوآ پ کے بہندید ہوصی پرسلام ہو نی فی حدیجۂ کبریؓ ، اور بی بی فاطمیۂ زہراً پر سلام ہوآ پ کے نواسوں حسیق وحسیق پراوران وَ الْأُمَنَاءُ الْمُنْتَجَبُونَ حِئْتُ انْقِطَاعًا إِلَيْكُمُ وَ إِلَى ابْآئِكُمُ وَ وَلَدِكُمُ الْخَلَفِ عَلى کے فرزندوں رپر جو دین کی نشانیاں اوراس کے امین ہیں میں حاضر ہوا ہوں آپ کے آپ کے آبا ءاور آپ کے فرزند قائم کے حضور بَرَكَةِ الْخَلُقِ فَقَلْبِي لَكُمُ مُسَلِّمٌ وَ نُصُرَتِي لَكُمُ مُعَدَّةٌ حَتَّى يَحُكُمَ اللَّهُ لِدِيْنِهِ جو برکت یا رہے ہیں کہل میرا دل آپ کے لیے جھکا ہوا اور میری نفرت آ کے لیے آمادہ ہے یہاں تک کہ خدا ظہور قائم کا فَ مَعَكُمُ مَعَكُمُ لا مَعَ عَدُوّ كُمُ إِنِّي لَمِنَ الْقَآئِلِيْنَ بِفَضْلِكُمُ مُّقِرٌّ ، بِرَجُعَتِكُمُ لاَ أُنْكِرُ

تھم فرمائے ہیں آپ کے ساتھ، آپ کے ساتھ ہوں شاآپ کے وشمن کے ساتھ بے شک آپ کی ہزرگی کا قائل اور آپ کی

لِللهِ قُدُرَةً وَلاَ أَذْعُمُ إِلاَّ مَساشَسَاءَ السُّسَهُ سُبُحَسانَ اللَّهِ وَ الْحَمُدُ لِلَّهِ ذِى الْمُلُكِ وَ رجعت كاقراركنا بول خداك قدرت كا تكاركين كرنا بول اوروي اعتقاد ركفتا بول جوخدا جا بِتا ب إلى ب الله كرجو كائنات كاما لك اور

الُمَلَكُوْتِ يُسَبِّحُ اللَّهَ بِالسَّمَ آئِهِ جَمِيعُ خَلْقِهِ وَالسَّلامُ عَلَى اَرُوَاحِكُمُ الْمَلَكُونِ يُسَبِّحُ اللَّهَ بِالسَّمَ آئِهِ جَمِيعُ خَلْقِهِ وَالسَّلامُ عَلَى اَرُوَاحِكُمُ عَمران ہِ اللہ کا ماری مخلوق اس کے ناموں کی تبیع کرتی ہے اور سلام ہو آپ کی روموں پر اور آپ کے

وَ اَجُسَادِكُمُ اَلسَّلامُ عَلَيْكُم وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ

جسمول پرسلام ہوآپ پر خدا کی رحمت ہواو راس کی بر ستیں ہول۔

(۵) اینے والدین اور دوسرے مرحومین ومؤمنین کی قبروں پر جانے کی بڑی فضیلت وار دہوئی ہے کہ اہل ایمان انتظار کرتے ہیں کہ کون ان کی زیارت کے لیے آتا ہے جس سے وہ خوش ہوتے ہیں جبیبا کہ حضرت امام محمد باقر القلیلائے سے مروی ہے۔ (مفاتے البخان)

(۱) اہل وعیال کے لیے عمدہ غذا اور پھل فروٹ کا اہتمام کیا جائے تا کہ وہ جمعہ کی آمد کا انظار کریں اور اس کے آنے سے خوش ہوں۔ SIBTAIN.COM

(۷) حجامت کرائی جائے بالخصوص ماخن اورمو چھیں کٹوائی جائیں۔

(٨) عسل جمعه کیا جائے کہ سنت مؤکرہ ہے بلکہ بعض فقنهاء عظام اس کے دجوب کے بھی قائل ہیں۔

(٩) زوال آفتاب ہوتے ہی نماز جمعہ کی ادائیگی کا اہتمام کیا جائے۔

(١٠) خوشبورگائی جائے اورلباس فاخر ہ زبیب بدن کیاجائے۔

(۱۱) مخصوص طریقه پر ہیں رکعت نوافل پڑھے جا کیں جو کہ نوافل ظہرین کابدل ہیں ۔تفصیل قوانین الشریعہ میں دیکھی جائے۔

(۱۲) نماز عصر کے بعد دیں ہار بیصلوات پڑھی جائے:

اَللّٰهُ مَّ صَلِّ عَلْى مُحَمَّدٍ وَ الِ مُحَمَّدِ وِ الْاَوْصِيَآءِ الْمَرْضِيِّيُ مَ بِالْفُضَلِ صَلَوْتِكَ اے معودا رصت فرما محمد و آلِ محمد پر کہ جو ان کے پندیدہ اوصاء بیں اپی بہترین رحموں کے ماتھ

وَ بَـارِکُ عَـلَيْهِـمُ بِـاَفُـضَـلِ بَـرَکَاتِکَ وَ السَّللَّمُ عَـلَيُهِـمُ وَ عَلَى اَرُوَاحِهِمُ وَ اَجُسَادِهِ اور ان پر برکت نازل فرما اپی بهترین برکتوں سے اور سلام ہو ان پر اور ان کی روح پر اور ان کے جسوں پر وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَکَاتُهُ.

اورخدا کی حمتیں اور پر ستیں ہوں۔

(۱۳) نیزعصر کے بعد قریب بغروب دعائے سات اور دعائے عشرات پڑھی جائے۔نیز روز جمعہ دعائے ند بہ کا پڑھنا بھی وار دے ۔لہٰدااگرخدامز بدتو فیق دیتو اسے بھی پڑھنا چاہیئے ۔

(۱۴) نیز جمعہ کے دن صحیفۂ کاملہ کی دعانمبر ۳۶ جوکہ عید الفطر کے دن بھی پڑھی جاتی ہےاور دعانمبر ۴۸ جو کہ عید الاضحٰ کے دن بھی پڑھی جاتی ہے پڑھی جائے۔واللّٰہ المعوفق۔

SIBTAIN.COM

﴿ بابِ ششم ﴾

چندمشهورومتندادعيه مباركه كاتذكره

(۱) **دعائے کھیل** ": ۔ یہ دعامشہو رومتند دعاؤں میں ہے ایک ہے جو یمیۂ شعبان اورشبہائے جمعہ میں یڑھی جاتی ہے۔جوحضرتامیر الظاملائے اپنے خاص صحابی کمیل بن زیا دُکوتعلیم دی تھی۔ جناب کمیل ٹیان کرتے ہیں کہ میں مسجد بھیرہ میں حضرت امیر القلیلا کی خدمت میں حاضر تھا جبکہ آئے کے اصحاب کی ایک جماعت بھی عاضرتھی۔ای اثنامیں آنجنابؓ نے نیمہ شعبان کا تذکرہ کرتے ہوئے فرمایا کہ جو شخص بیررات عبادت خدامیں جاگ کرگزارے اوراس میں معاع خصر پر مصے تو اس کی وعا ضرور قبول ہوگی ۔ پس جب آپ اپنی قیام گاہ کی طرف تشریف لے گئے تو میں رات کے وقت ہی آپ کے در دولت پر حاضر ہوا۔ تو آپ نے میرے حاضر ہونے کا سبب دریافت کیا۔ میں نے عرض کیا: وعاء خصر حاصل کرنے کے لیے حاضر ہوا ہوں ۔فر مایا: اے کمیل! بیٹھ جاؤ۔ پھر فر مایا: جب اس دعا کو یا د کر لوتو اسے ہر شب جمعہ میں ایک باریا ہرمہینہ میں ایک با ریا ہر سال میں ایک بار یا یوری زندگی میں ایک بار پڑھو۔ (شراعداء ہے) تمہاری کفایت کی جائے گی، وسعت رزق عطا کی جائے گی اور گناہوں کی مغفرت کی جائے گی ۔اے کمیل!تم اپنے (اخلاص اور) طویل صحبت کی وجہ ہے اس کے مستحق ہو کہ تہرہیں بیہ دعاتعلیم کی جائے پھر فر مایا:لکھو۔۔۔اورایک روابیت میں یوں مروی ہے کہ جناب کمیل ؓ بیان کرتے ہیں کہ میں نے حضرت امیر الظیلا کو نیمهٔ شعبان کی رات سجدہ میں بید دعایر بھتے ہوئے سنا کہ پڑھ رہے تھے۔۔۔ جن علماء کرام نے دعا کے موضوع پر کتابیں لکھی ہیں ان سب نے اس دعا کا ذکر کیا ہے اور حضرت علامہ مجلسیؓ نے اسے بہترین دعاؤں میں ہےا یک دعا قرار دیا ہے۔ (مصیاح شیخ،مصیاح تفعمی، مجع الدعوات وكتاب الاقبال سيدا بن طاؤوس، زا دالمعامجلسي ومفاتيج الجنان محدث فتي وغير هوغيره) _

اوروہ دعائے مبارک یہے:

}*******************************

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيُمِ ٥

خدا کمام سے شروع جو بردام پر بان نہایت رحم والا ہے للَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِرَحْمَةِكَ الَّتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ وَّ بِقُوَّةِكَ الَّتِي قَهَرُتَ بِهَ ے معبو دیس تھے سے سوال کرتا ہوں تیری رحمت کے ذریعے جوہر شئ پر محیط ہے تیری قوت کے ذریعے جس سے قونے ہر شئ کوزیر شَيْءٍ وَّ خَضَعَ لَهَا كُلُّ شَيْءٍ وَّ ذَلُّ لَهَا كُلُّ شَيْءٍ وَّ بِجَبَرُ وُتِكَ الَّتِي غَلَبْتَ بِهَا كُلُّ شَيْ تھیں کیا ہوا ہے اور اس کے سامنے ہر شی جھکی ہوئی اور ہر شی زریہ ہے تیرے جبروت کے ذریعے جس سے تو ہر شی پر غالب ہے تیری وَّ بِعِزَّتِكَ الَّتِيُ لَا يَقُوٰمُ لَهَا شَيُءٌ وَّ بِعَظَمَتِكَ الَّتِيُ مَلَاثُ كُلَّ شَيْءٍ وَّ بِسُلُطَانِكَ عزے ذریعے جس کے آ گے کوئی چیز تشہر تی نہیں تیری عظمت کے ذریعے جس نے ہرچیز کوئیر کردیا تیری سلطنت کے ذریعے جو عَلاٰ كُلَّ شَيْءٍ وَّ بـوَجُهكَ الْبَاقِيُ بَعُدَ فَنَآءِ كُلِّ شَيْءٍ وَّ بِاَسُمَآئِكَ الَّتِيُ مَلَاتُ اَرْكَ ہر چیز سے بلندہے تیر نظہور کے ذریعے جوہر چیز کی فنا کے بعد ہاقی رہے گا سوال کرتا ہوں تیر سے اموں کے ذریعے جنہوں نے كُلِّ شَيْءٍ وَ بِعِلْمِكَ الْإِنْكُاخُاطُ بِكُلِّ شَيْءٍ وَ بِلُورٍ وَجُهِكُ الْلِكَوْطَآءَ لَهُ كُلُّ شَيْءٍ يَا ہر چیز کے اجزاء کو پُرکررکھا ہے تیرے علم کے ذریعے جس نے ہر چیز کو گھیر رکھا ہےاور تیری ذاہ کے نور کے ذریعے جس سے ہر چیز نَـوُرُ يَـا قَـدُّوُسُ يَـآ اَوَّلَ الْاَوَّلِيُـنَ وَ يَآ اخِرَ الْاٰخِرِيْنَ اَللَّهُمَّ اغْفِرُلِيَ الذَّنُوبَ الَّةِيُ تَهُةِ كُ روشن ہوئی ہے یا نور یا قد دیں اےاولین میں سب سے اول اوراے آخرین میں سب سے آخرا ہے معبو دمیر سےان گنا ہوں کو الُعِصَمَ اَللَّهُمَّ اغُفِرُلِيَ الذُّنُوْبَ الَّتِي تُنُولُ النِّقَمَ اَللَّهُمَّ اغْفِرُلِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تُغَيّرُ النِّعَهَ معاف کر دے جو پر دہ فاش کرتے ہیں خدایا!میر ہےوہ گنا ہمعاف کر دے جن سے عذاب نا زل ہوتا ہے خدا وندامیرے وہ گنا ہ ْلُلَّهُمَّ اغْفِرُ لِيَ الذُّنُوْبَ الَّتِيُ تَحْمِسُ الدُّعَآءَ اَللَّهُمَّ اغْفِرُ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تُذُولُ الْبَلَّاءَ بخش دے جن سے تعتیں زاکل ہوتی ہیںا ہے معبود!میرے وہ گنا ومعاف فرما جو دعا کوروک دیتے ہیں اےاللہ!میرے وہ گنا و ٱللَّهُمَّ اغْفِرُ لِيُ كُلَّ ذَنُب ٱذْنَبُتُهُ وَكُلَّ خَطِّينَةٍ ٱخُطَاتُهَا ٱللَّهُمَّ إِذِّيٓٱتَقَرَّبُ اِلَيُكَ بِذِكُركَ بخش دے جن سے بلانا زل ہوتی ہےا ہے خدامیر اہروہ گنا ہ معاف فر ماجو میں نے کیا ہے اور ہر لغزش سے درگز رکر جو مجھ سے ہوئی ٱسۡتَشۡفِعُ بِكَ الِي نَفُسِكَ وَ ٱسۡئَلُکَ بِجُوْدِکَ اَنۡ تُدُنِيَنِيُ مِنُ قُرُبِکَ وَ اَنۡ تُوزعَنِيُ

یع تیرا تقر ب جا ہتا ہوں اور تیری ذات کو تیرے حضورا پنا سفارتی بنا تا ہوں تیرے جو د کے

چگر ک پ

وَ أَنُ تُسلُهِ مَنِي ذِكُرَكَ اَللَّهُمِّ إِنِّي اَسْئَلُكَ سُؤَالَ خَاضِع مُّتَذَلِّلِ خَاشِع مُّتَضَرِّع أ واسطے سے سوال کرتا ہوں کہ مجھے اپنا قرب عطافر مااورتو فیق دے کہ تیراشکرا داکروں اورمیری زبان پراپناؤ کر جاری فر ماا سے اللہ! تُسَامِحَنِيُ وَ تَرُحَمَنِيُ وَ تَجُعَلَنِيُ بِقِسُمِكَ رَاضِيًّا قَانِعًا وَ فِيُ جَمِيْعِ الْاَحُوالِ مُتَوَاضِعًا نمیں سوال کرتا ہوں جھکے ہوئے گرے ہوئے ڈرے ہوئے کی طرح کہ مجھ سے چٹم پوشی فرما مجھ پر رحمت کر مجھے اپنی قسمت پر راضی ٱللَّهُمَّ وَ ٱسْئَلُكَ سُوَّالَ مَن اشْتَدَّتُ فَاقَتُهُ وَ ٱنْزَلَ بِكَ عِنْدَ الشَّدَآئِدِ حَاجَتَهُ وَ عَظُمَ فِيُكَّإِ و قانع اور ہرتتم کے حالات میں زم خورہے والا بنا دےیا اللہ! نمیں تجھ سے سوال کرتا ہوں اس شخص کی طرح جو سخت شکی میں ہو عِنْدَكَ رَغُبَتُهُ اَللَّهُمَّ عَظُمَ سُلُطَانُكَ وَ عَلا مَكَانُكَ وَ خَفِيَ مَكُرُكَ وَ ظَهَرَ اَمُرُكَ وَيَجْفَلَبَ تختیوں میں پڑاا پنی حاجت لے کرتیرے پاس آیا ہوں اور جو کچھ تیرے پاس ہے اس میں زیا وہ رغبت رکھتا ہوں اے اللہ تیری قَهُرُكَ وَجَرَتُ قُدُرَتُكَ وَ لَا يُمُكِنُ الْفِرَارُ مِنْ حُكُومَةِكَ اَللَّهُمَّ لَا اَجِدُ لِذُنُوبِي غَافِرًا سلطنت عظیم اور تیرامقام بلند ہے تیری تدبیر پوشیدہ اور تیراا مرخاہر ہے تیرا قبر غالب تیری قدرت کارگر ہے اور تیری حکومت سے وَّلَا لِلقَبَآئِحِيُ سَاتِرًا وَّ لَا لِلسِّيءِ مِنْ عَمَلِي الْقَبِيحِ بِالْحَجِي مُبَدِّلًا غَيْرَكَ لَا اللهُ الْقُتَ فرارممکن نہیں خدا وندائمیں تیرے سواکسی کونہیں یا تا جومیرے گنا ہ بخشنے والامیری برائیوں کو چھیانے والااورمیرے برے مل کونیکی سُبُحَانَكَ وَ بِحَمُدِكَ ظَلَمُتُ نَفُسِيُ وَ تَجَرَّاتُ بِجَهُلِيُ وَ سَكَنُتُ اِلَى قَدِيْمِ ذِكُرِكَ ﴿ لَي میں بدل دینے والا ہونییں کوئی معبو دسوائے تیر ساتو پاک ہا ورحمہ تیر ہے جا سے میں نے اپنے نفس برظلم کیاا پی جہالت کی وَ مَـذِّكَ عَـلَـىَّ اَللَّهُمَّ مَوُلَايَ كَمُم مِّنُ قَبِيُحِ سَتَرُتَهُ وَ كُمُ مِّنُ فَادِحٍ مِّنَ الْبَلَّاءِ اَقَلْتَهُ وَ كُمُ وجد سے جرائے کی اور میں نے تیری قدیم یادا وری اور اپنے لیے تیری بحص پر جروس کیا ہے اساللہ! میرے مولا کتنے ہی گنا ہوں مِّنُ عِثَارِ وَقَيْتَهُ وَكُمُ مِّنُ مَّكُرُوهٍ دَفَعُتَهُ وَ كُمُ مِّنُ ثَنَآءٍ جَمِيُلِ لَّسُتُ اَهُلَا لَّهُ نَشَرُتَهُ اَللَّهُمَّ کی تونے پر دہ پوشی کی اور کتنی ہی سخت بلا وَل سے مجھے بچالیا کتنی ہی لغزشیں معاف فر مائیں اور کتنی ہی ہرائیاں مجھ سے دور کیس تو عَظُمَ بَلَائِيُ وَ اَفُرَطَ بِيُ سُوْءُ حَالِيُ وَ قَـصُـرَتُ بِيُ اَعُمَالِيُ وَ قَعَدَتُ بِي اَغُلالِيُ وَ نے میری کتنی ہی تعریفیں عام کیں جن کا میں ہرگز اہل ندتھاا ہے معبو دا میری معیبت عظیم ہے بدحا لی پچھے زیا وہ ہی بڑھ ھے چکی ہے حَبَسَنِييُ عَنُ نُفُعِيُ بُعُدُ آمَالِيُ وَ خَدَعَتُنِيُ الدُّنِيَا بِغُرُورِهَا وَ نَفُسِيُ بِجِنَايَتِهَا وَ مِطَالِيُ يَا میرے اعمال بہت کم بیں گنا ہوں کی زنچرنے مجھے جکڑ لیا ہے کمی آ رزوؤں نے مجھے اپنے تفع سے روک رکھا ہے دنیا نے اپنی

سَيِّدِيُ فَاسْتَلُكَ بِعِزَّتِكَ أَنْ لَّا يَحُجُبَ عَنْكَ دُعَآئِيُّهُ عُولِلِيَ وَ فِعَالِي وَلَا تَفُضَحُنِي وقو كه بازى سے اور نفس نے جرائم اور حیله سازى سے مجھ كوفريب ديا ہے اسے ميرے آقاميں تيرى عزت كاواسطادے كرسوال كرتا بِخَفِيٌّ مَا اطَّلَعُتَ عَلَيْهِ مِنُ سِرِّي وَلَا تُعَاجِلُنِيُ بِالْعُقُوْبَةِ عَلَى مَا عَمِلْتُهُ فِي خَلَوَ آتِي مِنُ ہوں کہ میری برحملی وبد کر داری میری دعا کو تھے سے نہ رو کے اور تو مجھے میرے پوشیدہ کامول سے رسوا نہ کرے جن میں تو میرے را ز سُوْءِ فِعُلِيُ وَ اِسَآئَةِيُ وَدَوَام تَفُريُطِيُ وَ جَهَالَتِيُ وَ كَثُرَةِ شَهَوَاتِيُ وَ غَفُلَةِيُ وَ كُن اللَّهُمَّ کو جانتا ہے اور مجھے اس پر سزا وینے میں جلدی نہ کر جو میں نے خلوت میں غلط کام کیا ہمائی کی ہمیشہ کوتا ہی کی اس میں میری نا دانی بِعِزَّتِكَ لِيُ فِي كُلِّ الْآحُوالِ رَءُ وُفًا وَّ عَلَيَّ فِي جَمِيْعِ الْاُمُورِ عَطُوْفًا اللِّي وَ مَوْلَايَ وَ خوا جمول کی کثر ت اورغفلت بھی ہے اورا ے میرے اللہ مجھے تیری عزت کا واسطہ کہ میرے لیے ہرحال میں مہر بان رہ اور تمام رَبِّيُ مَنُ لِّي غَيُرُكَ ٱسْئَلُهُ كَشُفَ ضُرَّى وَالنَّظَرَ فِلْهُرِي اللهِي وَ مَوْلَايَ اَجُرَيْتَ عَلَيّ امور میں مجھ پرعنا بہت فرما میر ہے معبو دمیر ہے رہ تیرے سوامیرا کون ہے جس سے سوال کروں کہمیری تکلیف دورکر دے اور حُكُمًا وِاتَّبَعُتُ فِيُهِ هُوٰى نَفْسِلَى وَلَهُ ٱلْحَتَرِسُ فِيهُ مِنْ لَزُينِي عَدُوَّي فَعَرَّنِي بِمَآ أهُوٰى وَ میرےمعاملے پرنظر رکھےمیرےمعبو داورمیرےمولاتو نے میرے لیے تھم صا درفر مایالیکن میں نے اس میں خواہش کا کہامانا ور ٱسْعَدَهُ عَلَى ذَٰلِكَ الْقَضَاءُ فَتَجَاوَزُتُ بِمَا جَرَى عَلَيَّ مِنْ ذَٰلِكَ بَعُضَ حُدُودِكَ ﴿ میں وحمن کی فریب کا ری سے چونہیں سکااس نے میری خواہشوں میں دھو کہ دیا اور وقت نے اس کا ساتھ دیا کی آؤ نے حکم صا در کیا خَالَفُتُ بَعُضَ اَوَامِرِكَ فَلَكَ الْحَمُدُ عَلَيَّ فِي جَمِيْعِ ذَٰلِكَ وَلَا حُجَّةَ لِيُ فِيُمَا جَرَٰى میں نے اس میں تیری بعض حدود کوتو ژاا ورتیر ہے بعض احکام کی مخالفت کی پس حمد ہے تیرے لیے ان سب کابا رمجھ پر ہےا ور فِيُهِ قَـضَآءُ كَ وَ ٱلْزَمَنِيُ حُكُمُكَ وَ بَلاؤُكَ وَ قَدْ آتَيْتُكَ يَآ اِلْهِي بَعْدَ تَقُصِيُري وَ اِسْ ﴿ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّاللَّ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ میرے پاس کوئی جمت نہیں اس میں جوفیصلہ تو نے میرے لیے کیااورآ مادہ کیا مجھے تیرے تھم اور تیری آ زمائش نے کہاےاللہ عَـلَى نَـفُسِيُ مُعُتَذِرًا نَّادِمًا مُّنُكَسِرًا مُّسُتَقِيُّلا مُّسُتَغُفِرًا مُّنِيبًا مُّقِرًّا مُّذُعِنًا مُّعُتَرِفًا لَّا اَجِدُ تیرے حضور آیا ہوں جب کہ میں نے کوتا ہی کی اوراپیے نفس پر زیا دتی کی ہے میں عذر خوا ہ پشیمان ہارا ہوا معافی کا طالب مجتشش کا مَفَرًّا مِّمَّا كَانَ مِنِّي وَلَا مَفُزَعًا ٱتَوَجَّهُ اِلَيْهِ فِي آمُرِي غَيْرَ قَبُولِكَ عُذُري وَ اِدْخَالِكَ اِيَّا ﴿ سوالی تا بب گناموں کا اقراری سرنگوں اقبالی موں جو پچھ مجھ سے موانداس سے فرار کی را ہے نہ کوئی جائے پنا ہ کہا ہے معالمے میں

*********************** فِيُ سَعَةِ رَحُمَةِكَ اَللَّهُمَّ فَاقْبَلُ عُذُرِيُ وَارْحَمُ شِدَّةَ ضُرِّيٌ وَ فَكُنِي مِنُ شَدِّ وَثَاقِي يَا ﴿ اس کی طرف توجہ کروں سوائے اس کے کہتو میراعذ رقبول کرےاور مجھےاپنی وسیع تر رحمت میں داخل کردےا ہے معبود پس میراعذر رَبِّ ارْحَمُ ضَعُفَ بَدَنِي وَ رِقَّةَ جِلْدِي وَ دِقَّةَ عَظُمِي يَا مَنُ بَدَءَ خَلْقِي وَ ذِكُرى وَ قبول فرمامیری سخت تکلیف پر رحم کراور بھاری مشکل سے رہائی دےا ہے پروردگا رمیرے بدن کی کمزوری جلد کی نا ز کی ہڈیوں کی تَـرُبيَتِـيُ وَ بـرِّيُ وَ تَـغُذِيَتِي هَبُنِيُ لِابْتِدَآءِ كَرَمِكَ وَ سَالِفِ برِّكَ بي يَآ اِلْهِيُ وَ سَيّدِي ﴿ بار کی پر رحم فرمااے وہ ذات جس نے میری خلقت ذکر پر ورش نیکی اورغذا کا آغاز کیاا پنے پہلے کرم اورگز ری نیکی کے تحت مجھے رَبِّي ٱتُراكَ مُعَذِّبيُ بِنَارِكَ بَعُد تَوُحِيْدِك وَ بَعُدَ مَانُطُواى عَلَيْهِ قَلْبِي مِنُ مَّعُرفَةِكَ و لَيُجْج به معاف فر مااے میر ہے معبود میرے آتا اور میرے رب آیا میں سیسجھوں کہ تو مجھے اپنی آگ کاعذاب دے گا جبکہ تیری تو حید کا لِسَانِيُ مِنُ ذِكُرِكَ وَ اعْتَقَدَهُ ضَمِيُرى مِنْ حُبَّكَ وَ بَعْدَ صِدُق اعْتِرَافِيُ وَ دُعَآئِي خَاضِ معترف ہوں اس کے ساتھ میرا دل تیری معرفت سے لبریز ہے اور میری زبان تیرے ذکر میں گلی ہوئی ہے میراغمیر تیری محبت سے لِّرُبُوبِيَّةِكَ هَيُهَاكُ أَنُّ لَا كُومِ مِنْ أَنْ تُطْيَعُ مَنْ رَّبِيْكُو كَبِعِدُ مَن ادْنَيْتَهُ أَوْ تَشَرِّدَ مَنُ گندھا ہوا ہے اورا پنے گنا ہول کے سچے اعتراف اور تیری ربوبیت کے آ گے میری عاجزانہ پکار کے بعد بھی تو مجھے عذا ب دے گا اوَيُتَهُ أَوْ تُسَلِّمَ إِلَى الْبَلَّاءِ مَنُ كَفَيْتَهُ وَ رَحِمْتَهُ وَلَيْتَ شِعُرِيْ يَا سَيّدِيْ وَ الهي وَ مَوْلَايَ ہر گرنبیں توبلند ہاں سے کہ جسے پالا ہواہے ضائع کرے یا جسے قریب کیا ہوا سے دورکرے یا جسے پنا ہ دی اسے چھوڑ دے یا جس ٱتُسَلِّطُ النَّارَ عَلَى وُجُوْهٍ خَرَّتُ لِعَظَمَةِكَ سَاجِدَةً وَّ عَلَى ٱلْسُنِ نَطَقَتُ بِتَوُحِيْدٍ ٱ کی مر پرستی کی اوراس پرمہر بانی کی ہواہے معیبت کے حوالے کر دے اے کاش میں جانتا اے میرے آقامیر ہے معبو داور میرے صَادِقَةً وَّ بشُكُركَ مَادِحَةً وَّ عَلَى قُلُو بِاعْتَرَفَتُ بِالْهِيَّةِكَ مُحَقِّقَةً وَّ عَلَى ضَمَآئِرَ مولا کہ آیا تو آگ میں ڈالے گاان چروں کو جو تیری عظمت کے سامنے جدے میں پڑے جیں اوران زبا نوں کو جو تیری تو حید کے حَوَثُ مِنَ الْعِلْمِ بِكَ حَتَّى صَارَتُ خَاشِعَةً وَّ عَلَى جَوَارِ حَسَعَتُ إِلَى اَوُطَانِ تَعَبُّدِكَ ﴿ بیان میں مچی ہیںاورشکر کے ساتھ تیری تعریف کرتی ہیںاوران دلوں کو جو تحقیق کے ساتھ تحقیم معبو د مانتے ہیںاوران تغمیروں کو جو طَآئِعَةً وَّ اَشَارَتُ بِإِسْتِغُفَارِكَ مُذُعِنَةً مَّا هَكَذَا الظُّنُّ بِكَ وَلَا أُخْبِرُنَا بِفَضْلِكَ عَذُكُ ﴿ يَا تیری معرفت سے پُر ہوکر تھے سے خاکف ہیں توانہیں آگ میں ڈالے گا؟اوران اعضاء کو جوفر مانبر داری سے تیری عبادت گاہوں

كَـرِيُـمُ يَا رَبِّ وَ أَنُتَ تَعُلَمُ ضَعُفِي عَنُ قَلِيهُلِ مِنُ بَلَّاءِ الذُّنْيَا وَ عُقُوْبَاتِهَا وَمَا يَجُرِي فِيُهَا کی طرف دوڑتے ہیں اور یقین کے ساتھ تیری مغفرت کے طالب ہیں (تو انہیں آگ میں ڈالے) تیری ذات سے ایسا گمان مِنَ الْـمَـكَارِهِ عَـلَى اَهلِهَا عَلَى اَنَّ ذٰلِكَ بَلَاءٌ وَّ مَكُرُوهٌ قَلِيُلٌ مَّكُثُهُ يَسِيُرٌ بَقَآؤُهُ قَصِيُرُ نہیں ندریہ تیرے فضل کے مناسب ہےا ہے کریم اے بر وردگا را دنیا کی تکلیفوں اور مصیبتوں کے مقامل تو میری نا طاقتی کو جانتا ہے مُّدَّتُـهُ فَكَيُفَ احْتِـمَالِي لِبَلَّاءِ الْأَخِرَةِ وَ جَلِيُلِ وُقُوْعِ الْمَكَارِهِ فِيُهَا وَ هُوَ بَلَّاءٌ تَطُولُ ا ورابل دنیایر جوتگیاں آئی ہیں(میں انہیں ہر داشت نہیں کرسکتا)اگر چیاں شکی وختی کا دورانیہ کم اور بقاء کا وفت تھوڑا اور مدے کوتا و مُـدَّتُـهُ و يَـدُوُمُ مَـقَـامُهُ وَلا يُخَفُّفُ عَنُ اَهْلِهِ لِانَّهُ لا يَكُونُ اِلَّا عَنُ غَضَبكَ وَانْتِقَامِكَ ہے تو پھر کیونکر میں آخرے کی مشکلوں کوجھیل سکوں گا جو ہڑ می سخت ہیں اورو دالیمی تکلیفیں ہیں جن کی مدھ طولا نی اقامت دائمی اور سَخَطِكَ وَ هَـٰذَا مَا لَا تَـقُـُومُ لَـهُ السَّمَواتُ وَالْاَرُضُ يَا سَيِّدِيُ فَكَيُفَ لِي وَ أَنَا عَبُدُك ان میں کسی کے لئے کی نہیں ہوگی اس لیے کہوہ تیرے فضب تیرے انقام اور تیری نا راضی سے آئی ہیں اور بیروہ سختیاں ہیں جن الصَّعِينُفُ الذَّلِيُلُ الْحَقِيرُ الْمَسْكِينَ الْمُسْتَكِلُنُ يَا اللهِي وَ رَبِّلُ وَسَيَدِي وَ مَوُلاي لاي کے سامنے زمین آسان بھی کھڑے نہیں روسکتے توائے قامجھ پر کیا گز رے گی جبکہ میں تیرا کمز وربست بے حیثیت بے ماییاور بے الْأُمُورِ اِلَيُكَ اَشُكُو وَ لِمَا مِنْهَا اَضِجُّ وَ اَبُكِي لِلَالِيْمِ الْعَذَابِ وَ شِدَّتِهَ اَمُ لِطُولِ البَلَاءِ وَ اس بندہ ہوں اے میرے معبو دمیرے رہے میرے آ قااور میرے مولا! میں کن کن باتوں کی تھے سے شکایت کروں اور کس کس کے مُـدَّتِهٖ فَلَئِنُ صَيَّرُتَذِي لِلْعُقُوٰبَاتِ مَعَ اَعُدَآئِكَ وَ جَمَعُتَ بَيْنِي وَ بَيْنَ اَهُل بَلائِكَ وَ فَرَّقُ لي اله وشيون كرول؟ دردما ك عذاب كي تحق كے ليے يا معيبت كے طول ومدت كے ليے پس اگرتونے مجھے عذاب وعقاب ميں بَيُنِينُ وَ بَيُنَ أَحِبَّآئِكَ وَ أَوُلِيَآئِكَ فَهَنِّنِي يَآ اللِّهِيُ وَ سَيِّدِيُ وَ مَوُلَايَ وَ رَبّي صَبَرُتُ عَلَا ا پنے وشمنوں کے ساتھ رکھااور جھے اورا پنے عذابیوں کوا کٹھا کر دیا اور جھے اورا پنے دوستوں اورمجبوں میں دوری ڈال دی توا ہے عَـذَابِكَ فَكُيُفَ أَصُبِرُ عَـلَى فِرَاقِكَ وَ هَبْنِيُ صَبَرُتُ عَلَى حَرِّ نَارِكَ فَكُيْفَ أَصُبِرُ ﴿ میرے معبو دمیرے آتامیرے مولا اورمیرے رہاتو ہی بتا کہ میں تیرے عذاب پر صبر کرلوں تو تھے سے دوری پر کیسے صبر کرول گا النُّـظُر اِلَى كَرَامَةِكَ أَمُ كَيُفَ اَسُكُنُ فِي النَّارِ وَ رَجَآئِيُ عَفُوُكَ فَبِعِزَّتِكَ يَا سَيّدِ ﴿ وَ ا ورجھے بتا کہ میں نے تیری آ گ کی تپش پر صبر کرلیا تو تیر ہے کرم ہے کس طرح چیٹم یوٹنی کرسکوں گایا کیسے آ گ میں پڑارہوں گا

مَوُلَايَ ٱقُسِمُ صَادِقًا لَئِنُ تَـرَكُتَنِيُ نَاطِقًا لَّأَضِجَّنَّ الدُّكَ بَيْنَ اَهُلِهَا ضَجِيُجَ الْأمِلِيُنَ جب كه مين تير ك فنوو بخشش كا ميدوار مول پس فتم ہے تيرى عزت كى اے مير ئ قااورمولا تي فتم كما كر تونے ميرى كويائى باقى وَلَاصُـرُخَنَّ اِلَيُكَ صُـرًا خَ الْـمُسُتَصُرِخِيُنَ وَلَابُكِيَنَّ عَلَيْكَ بُكَّآءَ الْفَاقِدِيْنَ وَلَانَادِيَذُكُمْ رہنے دی تو میں اہل مار کے درمیان تیرے حضور فریا دکروں گا آرز ومندوں کی طرح اور تیرے سامنے الد کروں گا جیے مدد گار کے اَيُنَ كُنُتَ يَا وَلِيَّ الْمُوْمِنِيُنَ يَا غَايَةَ امَالِ الْعَارِفِيُنَ يَا غِيَاتَ الْمُسْتَغِيُثِينَ يَا حَبِيُبَ قُلُوُب متلاثی کرتے ہیں تیرے سامنے یوں گریہ کروں گانا چیزوں کی طرح اور تجھے یکاروں گا کہاں ہے توا مے مؤمنوں کے مدد گارا ہے الصَّادِقِيُـنَ وَ يَاۤ اِلٰهَ الْعَالَمِيُنَ اَفَتُرَاكَ سُبُحَانَكَ يَاۤ اِلٰهِيُ وَ بِحَمُدِكَ تَسُمَعُ فِيُهَا صَوْكُمُ عا رفو ل کی امیدول کے مرکز اے بے چارول کی دا درس کرنے والے اے سچے لوگول کے دلی دوست اورا سے عالمین کے معبو دکیا عَبُدٍ مُّسُلِم سُجِنَ فِيهَا بِمُخَالَفَتِهِ وَ ذَاقَ طَعُمَ عَذَابِهَا بِمَعْصِيَتِهِ وَ حُبِسَ بَيُنَ اَطُبَاقِهَا میں تجھے دیکھتا ہوں تو پاک ہاں ہے اے میر سے اللہ اپنی حمد کے ساتھ تیری حمد ہے کہتو وہاں سے بندؤ مسلم کی آ واز سن رہاہے بجُرُمِهِ وَ جَرِيْرَتِهِ وَهُوَ لِظِيمُ إِلَهُ كِلَ طَحِيْحَ مُؤْمِلَ لِرَحْمَةِ كُ و يُنَادِيُكَ بِلسَان جوبوجہ نا فرمانی دوزخ میں ہےاپنی برائی کے باعث عذا ب کا ذا کقہ چکھ رہا ہےاورا پنے جرم گنا ہرجہنم کے طبقوں کے پیچوں چے بند تَـوُحِيُـدِكَ وَ يَتَـوَسَّلُ اِلَيُكَ بِرُبُوبِيَّةِكَ يَا مَوُلَاىَ فَكَيُفَ يَبُقَىٰ فِي الْعَذَابِ وَ هُوَ يَرُجُ ﴿ فَكَيْمَا ہے وہ تیرے سامنے گریہ کر رہا ہے تیری رحمت کے امید وار کی طرح اور اہل تو حید کی زبان میں تحجیے یکار رہاہے اور تیرے حضور سَلَفَ مِنْ حِلْمِكَ وَ رَأَفَتِكَ وَ رَحْمَتِكَ أَمُ كَيْفَ تُـوُلِـمُهُ النَّارُ وَ هُوَ يَاْمُلُ فَضُلَكَ ﴿ وَ تیری ربو بیت کووسیله بنا رہاہےا ہے میر ہےمو لا! پس کس طرح وہ عذاب میں رہے گا جب کہوہ تیر گرز شتہ جلم ورافت اور رحمت رَحُمَةكَ أَمُ كَيُفَ يُحُرِقُهُ لَهِيُبُهَا وَ أَنْتَ تَسُمَعُ صَوْتَهُ وَ تَرِي مَكَآنَهُمُ كَيُفَ يَشُتَمِلُ کا میدوا رہے یا پھر آ گ کیونکراہے تکلیف دے گی جب وہ تیرے نفل اور رحمت کی امیدر کھتاہے یا آ گ کے شعلے کیے اس کو عَـلَيْـهِ زَفِيُرُهَا وَ أَنْتَ تَعُلَمُ ضَعُفَةَ آمُ كَيُفَ يَتَـقَـلُـقَلُ بَيُنَ اَطُبَاقِهَا وَ أَنْتَ تَعُلَمُ صِدُقَةً أَمُ جلائیں گے جباقواس کی آ وا زمنتنااوراس کے مقام کود کھتا ہے یا گیے آ گ کے شرار سے اسے کھیریں گے جباتواس کی ماتو انی كَيُفَ تَزُجُرُهُ زَبَانِيَتُهَا وَ هُوَ يُنَادِيُكَ يَا رَّبُّلُمُ كَيُفَ يَرُجُوُ فَضْلَكَ فِي عِتُقِهِ مِنْهَا فَتَتُرُكَهُ کو جانتا ہے یا کیے وہ جہنم کے طبقوں میں پریشان رہے گا جب تواس کی سجائی سے واقف ہے یا کیے جہنم کے فرشتے اسے جھڑ کیس

فِيُهَا هَيُهَاتَ مَا ذَٰلِكَ الظُّنُّ بِكَ وَلَا الْمَعُرُوفُ مِنْ فَضُلِكَ وَلَا مُشُبِهٌ لِّمَا عَامَلُتَ ﴿ گے جب وہ تجھے پکارٹا ہے اے میرے ر**ب** یا کیے ممکن ہے کہ وہ خلاصی میں تیرے فضل کا امیدوا رہوا ورتو اسے جہنم میں رہنے الْـمُوجِـدِيُـنَ مِـنُ بـرِّكَ وَ اِحْسَـاذِكَ فَبـا الْيَـقِيُن اَقُطَعُ لَوُلَا مَا حَكَمُتَ به مِن تَعُذِيُـ وے ہرگر نہیں تیرے بارے میں یہ گمان نہیں ہوسکتانہ تیر نے فضل کا ایساتھا رف ہے نہ بیاتو حید پر ستوں پر تیرے احسان وکرم کے جَاحِدِيُكَ وَ قَضَيْتَ بِهِ مِنُ اِخُلَادِ مُعَانِدِيُكَ لَجَعَلْتَ النَّارَ كُلُّهَا بَرُدًا وَّ سَلامًا وَّمَا كَا ساتھ مشا بہ ہے ہیں میں یقین رکھتا ہوں کہا گرنونے اپنے ڈنمنول کو آگ کاعذاب دینے کا تھم نہ دیا ہوتا اوراپنے مخالفوں کو ہمیشہ ِلاَحَـدِ فِيُهَا مَقَرًّا وَّ لَا مُقَامًا لَكِنَّكَ تَقَدَّسَتُ ٱسْمَآؤُكَ ٱقْسَمْتَ ٱنْ تَمُلَاهَا مِنَ الْكَافِرِيُؤْ اس میں رکھنے کا فیصلہ نہ کیا ہوتا تو ضرور ہی تو آ گ کو طونزی اور آ رام بخش بنادیتااور کسی کوبھی آ گ میں جگہاور ٹھ کا نہ نہ دیا جاتا کیکن مِنَ الْحِنَّةِ وَ النَّاسِ اَجُمَعِيُنَ وَ اَنُ تُخَلِّدَ فِيُهَا الْمُعَانِدِيْنَ وَ اَنْتَ جَلَّ ثَنَآ وُكَ قُلْتَ مُبْتَدِةً تونے اپنے یا کیز ہاموں کی قتم کھائی کہ جہنم کوجنوں وانسا نوں میں سے تمام کا فروں سے بھر دے گااور رپر کہ پر بخالفین ہمیشہ اس میں وَّ تَطَوَّلَتُ بِالْإِنْعَامِ مُمَّا كُرُّمَا أَفْمَنُ كَانَ مُؤْمِنًا كُمَلُ كَانَ فَاسِقًا لَا يَسْتَوُونَ اللهِي وَ رجیں گےاورتو بڑ کی آخریف والا ہے تو نے فضل وکرم کرتے ہوئے بلا سابقہ پیفر مایا کہ آیا و ہخض جومؤمن ہے وہ فاسق جیسا ہے وہ سَيِّدِيُ فَاسُئَلُكَ بِالْقُدُرَةِ الَّتِي قَدَّرُتَهَا وَ بِالْقَضِيَّةِ الَّذِي حَتَمُتَهَا وَ حَكَمُتَهَا وَ غَلَبُتَ مَ وونول برابرنبیں میرے معبو دمیرے آتا! میں تیری قدرت جسے تو نے توانا کیا اور تیرا فرمان جسے تو نے لیفنی و محکم بنایا اور تو غالب عَـلَيْـهِ ٱجُـرَيْتَهَـا ٱنُ تَهَبَ لِيُ فِيُ هَٰذِهِ اللَّيُلَةِ وَ فِيُ هَٰذِهِ السَّاعَةِ كُلَّ جُرُم ٱجُرَمُتُهُ وَ كُلَّ ہے اس پر جس پراسے جاری کرےاس کے واسطے سے سوال کرتا ہوں کہ بخش دےاس شب میں اوراس ساعت میں میرے و ہ ذَنُبِ أَذْنَبُتُهُ وَ كُلَّ قَبِيُحِ ٱسُرَرُتُهُ وَ كُلَّ جَهُلِ عَمِلْتُهُ كَتَمْتُهُ آوُ ٱعُلَنْتُهُ ٱخُفَيُتُهُ آوُ ٱظُهَرُتُهُ تمام جرم جومیں نے کیے وہ گناہ جو مجھے سے مرز دجوئے وہ سب برائیاں جومیں نے چھپائی ہیں جونا دانیاں کیں اوران پر پر دہ ڈالا با وَ كَلَّ سَيِّئَةٍ أَمَرُتَ بِإِثْبَاتِهَا الْكِرَامَ الْكَاتِبِيْنَ الَّذِيْنَ وَكُلْتَهُمُ بِحِفُظِ مَا يَكُونُ مِذِّي وَ کھولا پوشیدہ رکھایا ظاہر کیااورمیری بدیاں جن کے لکھنے کا تونے کراماً کاشین کو حکم دیا ہے جنہیں تو نے مقرر کیا ہے کہ جو پچھ میں جَعَلْتَهُمُ شُهُوُدًا عَلَيَّ مَعَ جَوَارِحِيُ وَ كُنُتَ ٱنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيَّ مِنْ وَّرَآئِهِمُ وَالشَّاهِدَ کروں اسے محفوظ کریں اوران کومیر ہےا عضاء کے ساتھ ہی مجھ پر گوا ہنایا اوران کےعلا وہ خودتو بھی مجھ پر ہا ظرا وراس باہ کا

****** لِمَا خَفِيَ عَنْهُمُ وَ بِرَحُمَةِكَ أَخُفَيْتَهُ وَ بِفَضْلِكَ سَتَرُتَهُ وَ أَنُ تُوَفِّرَ حَظِّي مِنُ كُلِّ خَيْ کواہ ہے جوان سے پوشیدہ ہے تو نے اپنی رحمت سے اسے چھپایا اورا پنے فضل سے بردہ ڈالا وہ معاف فرمااور میر ہے لیے وافر ٱنْزَلْتَهْ اَوُ اِحْسَانِ فَضَّلْتَهْ اَوُ بِرِّ نَشَرُتَهْ اَوُ رِزْقِ بَسَطُتَهْ اَوُ ذَنْبِ تَغُفِرُهْ اَوُ خَطَإِ تَسُتُرُهُ يَا حصه قرار دے ہر خیر میں جسے تونے نازل کیایا جس احسان کو بڑھایا جس نیکی کو پھیلایا جس رزق میں اضافہ کیایا جوگنا ہونے معاف رَبِّ يا رَبِّ يَا رَبِّ يَاۤ اِلْهِيُ وَ سَيِّدِيُ وَ مَوُلَاىَ وَ مَالِكَ رِقِّي يَا مَنُ بِيَدِهٖ نَاصِيَةِيُ يَا عَلِيُمًا فر ملایا جس غلطی کوڈ ھانیا ہے یارب یا رب یا رب اے میر ہے معبو دمیرے آتامیرے مولا اورمیری جان کے مالک اے وہ جس بِـضَـرِّيُ وَ مَسْكَـنَتِـيُ يَا خَبِيُرًا بِفَقُرِيُ وَ فَاقَتِيُ يا رَبِّ يا رَبِّ يَا رَبِّ اَسْتُلُكَ بحَقِّكَ کے ہاتھ میں میری با گے ہا ہے میری تنگی و بے جارگ سے واقف اے میری اواری وتنگدی سے باخبر یا رب یا رب یا رب میں قُدُسِكَ وَ اَعُظُم صِفَاتِكَ وَ اَسْمَائِكَ اَنُ تَـجُعَلَ اَوُقَاتِيُ مِنَ اللَّيُلِ وَالنَّهَارِ بِذِكُ ﴿ كُ تیرے حق ہونے تیری پا کیزگی تیری عظیم صفات اورا ساء کا واسط دے کر سوال کرتا ہوں کہ میرے رات دن کے اوقات اپنے ذکر مَعُمُورَةً وَّ بِخِدْمَةِكَ مُوْصُولَةً وَ عُمَالِلْي عِلْدَكَ مَقْبُولَةً خَتِي تَكُونَ أَعُمَالِي وَ أَوْرَادِ عَ سے آبا وکرا ورمسلسل اپنی حضوری میں رکھا ورمیرے اعمال کواپنی جناب میں قبولیت عطافر ماحتیٰ کیمیرے اعمال اورا ذکار تیرے كُلُّهَا ورُدًا وَّاحِدًا وَّ حَالِيُ فِي خِدْمَةِكَ سَرُمَدًا يَا سَيِّدِيُ يَا مَنُ عَلَيْهِ مُعَوَّلِي يَا مَنُ الَّيْهِ حضورا یک وردقر ارباع اورمیرا بدحال تیری بارگاه میں جمیشہ قائم رہے اے میرے آ قااے وہ جس پر میرا تکیہ ہےا ہے وہ جس شَكُوُتُ أَحُوَالِيُ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ قَوِّ عَلَى خِدُمَةِكَ جَوَارِحِيُ وَاشُدُدُ عَلَى الْعَزِيْمَةِ ﴿ سے میں اپنے حالات کی تنگی بیان کرتا ہوں یا رب یا رب یا رب میرے ظاہری اعضاء کواپنی حضوری میں قوی اور میرے باطنی جَوَانِحِيُ وَهَبُ لِيَ الْجِدَّ فِيُ خَشْيَةِكَ وَالدُّوَامَ فِي الْإِتِّصَالِ بِخِدُمَةِكَ حَتَّى اَسُرَ ﴿ ا رادول کوممکم ومضبو ط بنا دےا ور مجھے تو فیق دے کہ تھھ سے ڈرنے کی کوشش کروں اور تیری حضوری میں جیشگی پیدا کرول حتی کہ إِلَيُكَ فِي مَيَادِيُنِ السَّامِقِيُنَ وَ أُسُرِ عَ إِلَيُكَ فِي الْبَارِزِيُنَ وَ أَشْتَاقَ اِلْي قُرُبِكَ تیری بارگاہ میں پہلوں کی را ہوں پر چل پڑوں اور تیری طرف جانے والوں ہے آ گے نگل جاؤں تیرے قرب کا شوق رکھنے والوں الْـمُشْتَاقِيُـنَ وَ اَدُنُـوَ مِنُكَ دُنُـوً الْـمُخُلِصِيُنَ وَ اَخَافَكَ مَخَافَةَ الْمُوْقِنِيُنَ وَ اَجُتَمِعَ فِيْ میں زیا دہشوق والا بن جاؤں تیرے خالص بندول کی طرح تیرے قریب ہو جاؤں اہل یقین کی ما نند تجھے سے ڈروں اور تیرے

جِوَارِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيُنَ اللَّهُمَّ وَ مَنُ اَرَادَنِي بِسَيْوُفَارِدُهُ وَ مَنُ كَادَنِي فَكِدُهُ وَاجُعَلْنِي مِنُ آ ستال پرمؤمنوں کے ساتھ عاضر رہوں اے معبو دجومیر ہے لیے برا کی کا ارا دہ کر ہے تواس کے لیے ایسا ہی کر جومیر ہے ساتھ محر ٱحُسَنِ عَبِيُدِكَ نَصِيبًا عِنُدَكَ وَ ٱقْرَبِهِمْ مَنْزِلَةً مِّذُكَ وَ ٱخَصِّهِمْ زُلُفَةً لَّدَيُكَ فَإِنَّهُ لَا لَيُجَكُّالُ کرے قواس کے ساتھا بیا ہی کر مجھے اپنے ان بندول میں قرار دے جونھیب میں بہتر میں جومنزلت میں تیرے قریب ہیں جو ذٰلِكَ الَّا بِفَضْلِكَ وَ جُدُلِيُ بِجُوْدِكَ وَاعْطِفُ عَلَيَّ بِمجُدِكَ وَاحْفَظُنِيُ بِرَحُهُ ﴿ تیرے حضور تقرب میں مخصوص ہیں کیونکہ تیرے فضل کے بغیر یہ درجات نہیں مل سکتے بواسطدا پنے کرم کے مجھ پر کرم کر بذر ایعدا پنی وَاجُعَلُ لِسَانِيُ بِذِكُرِكَ لَهِجًا وَّ قَلُبِي بِحُبِّكَ مُتَيَّمًا وَّ مُنَّ عَلَيَّ بِحُسُنِ إِجَابَةِكَ وَ أَقِيُّونِي یز رگی کے مجھ پر توجہ فرما بوجہ اپنی رحمت کے میری حفاظت کرمیری زبان کواپنے ذکر میں گویا فرمااورمیرے دل کواپناا سیر محبت بنا عَشُرَتِيُ وَاغُفِرُ زَلَّتِي فَاِنَّكَ قَضَيْتَ عَلَى عِبَادِكَ بِعِبَادَتِكَ وَ اَمَرُتَهُمُ بِدُعَآئِكَ وَ ضَيَّكِيَتَ وے میری دعا بخو بی قبول کر کے مجھ پراحسان فر مامیرا گناہ معاف کر دے اور میری خطا بخش دے کیونکہ ٹونے بندول پرعبادت لَهُمُ الْاِجَابَةَ فَالِلُكَ لِلَّارَكِ نَصَبُكُ وَتُحِينُ إِلَّاكُ يَا رَبِّ مَدَدُتُ يَدِي فَبِعِزَّتِهَ فرض کی انہیں دعاما تکنے کا حکم دیا اور قبولیت کی حانت دی ہے ہیں اے پر وردگار میں اپنا رخ تیری طرف کر رہا ہوں اور تیرے اسْتَجِبُ لِي دُعَآئِيُ وَ بَلِغُنِي مُنَاىَ وَلَا تَقُطَعُ مِنْ فَضُلِكَ رَجَآئِيُ وَاكْفِنِي شَرًّا الْجنّ عُ آ کے ہاتھ پھیلارہا ہوں تو اپنی عزے کے طفیل میری دعا قبول فرمامیری تمنا ئیں ہر لااورا پنے فضل سے تکی میری ا میدندتو زمیرے وَ الْإِنْسِ مِن اَعْدَا لِي يَا سَرِيْعَ الرَّضَآ اِغْفِرُ لِمَنْ لَا يَمُلِكُ اِلَّا الدُّعَآءَ فَانَّكَ فَعَالٌ لِّمَا الْمَا وسمن جنول اورانسا نول سے ہیں ان کے شرسے میری کفایت کرا ہے جلد راضی ہونے والے اسے بخش دے جو دعا کے سوالچے نہیں تَشَاءُ يَا مَنِ اسْمُهُ دَوَآءٌ وَ ذِكُرُهُ شِفَآءٌ وَ طَاعَتُهُ غِنِّي اِرْحَهُ مَّنُ رَّاسُ مَالِهِ الرَّجَآءُ وَ ر کھتا ہے شک تو جوچا ہے کرنے والا ہے اے وہ جس کانا م دواجس کا ذکر شفاا وراطاعت تو گلری ہے رحم فر مااس پرجس کاسر ماریکھن سِلَاحُهُ الْبُكَاءُ يَا سابِغَ النِّعَمِ يَا دَافِعَ النِّقَمِ يَا نُوْرَ الْمُسْتَوُ حِشِيْنَ فِي الظُّلَمِ يَا عَالِمًا لأَ امیداورسامان گریہ ہےا نے متیں پوری کرنے والے اسے ختیاں دور کرنے والے اے تاریکیوں میں ڈرنے والول کیلئے نورا ہے يُعَلُّمُ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّافْعَلُ بِي مَآ اَنْتَ اَهُلُهُ وَلَا تَفُعَلُ بِي مَا اَنَا اَهُلُهُ وَ وہ عالم جے پڑھایا نہیں گیا رحمت فرمامحمہ و آل محمہ پر مجھ سے وہ سلوک کرجس کا تو اہل ہےاوروہ سلوک نہ کرجس کا میں اہل ہوں

صَلَّى اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ وَالْاَئِمَّةِ الْمَيَامِينَ مِنُ الِهِ وَ سَلَّمَ تَسُلِيمًا.

رحمت کرے خداا ہے رسول پراور ہا ہر کت ائمہ پر جوان کی آل سے جیں اور بھیجے درود کثیر۔

(۲) دعائے مشلول : - بیردعا بھی مشہور و معروف دعاؤں میں سے ایک ہے۔ اس کا پس منظر بیہ ہے کہ ایک جوان آ دمی اینے والد کی بافر مانی اوراس کی بد دعا کرنے کی وجہ سے شل ہوگیا ۔ اس نے کسی طرح اینے آپ کو مبحد الحرام میں پہنچایا اور خدا سے دعا و پکار کی ۔ پس حضر سے امیر الطبیح نے اسے اس حالت زار میں دیکھاتو ترس کھا کر فر مایا: آیا میں تجھے وہ دعا تعلیم نہ دوں جو حضر سے رسول خدا اللہ نے جھے تعلیم دی ہے جس میں اسم اعظم موجود ہے جو جو خوالی پڑھتا ہے اس کی دعا قبول ہوتی ہے اور جو پھی طلب کیا جائے وہ عطا ہوتا ہے اور اس کی ہرکت سے رہ خوفم دور ہوتا ہے اور بھارکوشنا ملتی دعا قبول ہوتی ہے اور بھی طلب کیا جائے وہ عطا ہوتا ہے اور اس کی ہرکت سے رہ خوفم معاف ہوجا ہے اور بھا تا ہے اور گناہ معاف ہوجا تا ہے اور کہا تھی جو بھی اس کا بیان ہے کہ میں نے معاف ہونا ہوگا ہے۔ چنا نجود ہواں حضر سے امیر الطبیع ہے وہ دعا حاصل کر کے گھر گیا ۔ اور اسے پڑھا۔ اس کا بیان ہے کہ میں نے خواب میں حضر سے رسول خال آئی ہیں اور بیا کی ڈھیک ہوگیا۔ (مجال معاف کو کی اور کی الدی وہ کیا۔ اور اسے پڑھا۔ اس کا بیان ہے کہ میں نے خواب میں حضر سے رسول خال آئی کیا گئی کی ہوگیا۔ (می کا گھیک ہوگیا۔ (می کا کر کا اس کا کھی کی سے کہ میں اس کی گھیک ہوگیا۔ (می کھی کھی ہوگیا۔ (می کھی کھی ہوگیا۔ (می کھی کھی ہوگیا۔ (می کھی کھی ہوگیا۔ (می کھی ہوگیا۔ (می کھی ہوگیا۔ (می کھی کھی ہوگیا۔ کی کھی ہوگیا۔ (می کھی کھی ہوگیا۔ کو کھی ہوگیا۔ (می کھی کھی ہوگیا۔ کو کھی ہوگیا۔ کو کھی ہوگیا۔ کو کھی کھی ہوگیا۔ کو کھی ہوگی ہوگیا۔ کو کھی ہوگی ہوگیا۔ کو کھی ہوگیا۔ کو کھی ہوگی ہوگی ہوگی ہوگی ہوگیا۔ کی کھی ہوگیا۔ کو کھی ہوگیا ہوگی ہوگیا ہوگی ہوگی ہوگی ہو

وه وعائر يف يهد: يسم الله الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ ٥

خدا كمام م فروع جويرامهر بان نهايت رهم والاب

اَللَّهُمَّ إِنِّى اَسْفَلُکَ بِإِسْدِم كَهِسْمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَ الْإِكْرَامِ يَا حَى يَا احالله! مِن تَحْدَ عَ وَال كَنا مُول تَيْرِ عَامِ يِهِم الله الرَّمُ الصاحب التويز رَفَّا عَنده احتَّمْهِ إِن احزه وَيُن كُنَ قَيُّ وُمُ يَا حَيُّ لَا إِللَهُ إِلاَّ اَنْتَ يَا هُو يَا مَنُ لا يَعُلَمُ مَا هُوَ وَلا كَيْفَ هُوَ وَلاَ ايُن هُوَ وَلاَ معود واع تير عاعده كرجے كُنَ يُمِن جانا كره كيا جنديركره كيا جنديركره كهاں جنديركره وكوركم إلى وفودى جانا ج

حَيُثُ هُوَ إِلَّا هُوَ يَا ذَا الْمُلُكِ وَ الْمَلَكُونِ يَا ذَ الْعِزَّةِ وَ الْجَبَرُونِ يَا مَلِكُ يَا قُدُّوسُ

ا ہے صاحب ملک وملکوت ا ہے صاحب عزت وا قترارا ہے با دشاہ ا ہے ہا ک ا ہے سلامتی والے اے امن دینے والے اے پا سبان اے

سَلاهُ يَا مُوْمِنُ يَا مُهَيُمِنُ يَا عَزِيُزُ يَا جَبَّارُ يَا مُتَكِّبِّرُ يَا خَالِقُ يَا بَارِئُ يَا مُصَوِّرُ يَا مُفِيدُ يَا

عزت والےائے زیر دست اے بڑائی والےائے پیدا کرتے والے اسے جو ددیجے والے اسے صورت بنائے والے اسے فائد ہ دیجے والے

مُـدَبِّرُ يَا شَدِيْدُ يَا مُبُدِئَ يَا مُعِيْدُ يَا مُبِيْدُ يَا وَدُوْدُ يَا مَحْمُوْدُ يَا مَعْبُوْدُ يَا بَعِيْدُ يَا قَرِيْبُ يَا یمحکم کام والے اسے حا حب ایجا وا ہے مرجع خلق اے خالم کو ہلاک کرنے والے اسے مجت والے اسے نیک صفات اسے حَسِينُبُ يَا بَدِيُعُ يَا رَفِيُعُ يَا مَنِيُعُ يَا سَمِيْعُ يَا عَلِيْمُ يَا حَلِيْمُ يَا كُرِيْمُ يَا معبو دا ہے بعید اے قریب اے دعا قبول کرنے والے اے تکہبان اے حساب کرنے والے اے ایجاد کرنے والے اے بلند مرتبہ اے عالی حَـكِيْهُم يَا قَدِيْمُ يَا عَلِيُّ يَا عَظِيْمُ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا دَيَّانُ يَا مُسْتَعَانُ يَا جَلِيُلُ يَا جَمِيلُ يَا مقام اے سننے والے اے علم والے اے حکم والے اسے مہر یا ن الے حکمت والے اسے وجود قدیم اسے عالی شان اسے ہزرگ والے اسے مجت وَكِيُــلُ يَــا كَفِيُـلُ يَا مُقِيُـلُ يَا مُنِيُلُ يَا نَبِيُلُ يَا دَلِيُلُ يَا هَادِيُ يَا بَادِيُ يَآ اَوَّلُ يَآ اخِرُ يَا ظَاهِرُ نے والے اے احسان کرنے والے ایے جزا دیجے والے اے مدد کرنے والے اسے جلالت والے اسے صاحب جمال اسے کا رسما زامے يَا بَاطِنُ يَا قَآئِمُ يَا دَآئِمُ يَا عَالِمُ يَا حَاكِمُ يَا قَاضِيُ يَا عَادِلُ يَا فَاصِلُ يَا وَاصِلُ يَا طَاهِرُ يَا سر پرست اے معاف کرنے والے اے پہنچانے والے اے باعظمت اے رہنما اے رہبرا سے ابتداء کرنے والے اسے اول اے آخر اسے مُطَهِّرُ يَا قَادِرُ يَا مُقُتَدِرُ مِا كَلِيْرُ لَا مُتَكِّبُرُ مَا وَاحِدُ لِلْ أَحَدُ يَا صَمَّدُ يَا مَنُ لُمُ يَلِدُ وَلَمُ يُولُدُ ظاہرا سیاطن اساستوا را سے ہمیشہ رہنے والے اے علم والے اسے صاحب تھم اسے مصف استعدل کرنے والے اسے سب سے جدا اسے وَلَــُهُ يَـكُــُنُ لَّـٰهُ كُفُوًا أَحَدٌ وَّلَهُ يَكُنُ لَّهُ صَاحِبَةٌ وَّلا كَانَ مَعَهُ وَزِيْرٌ وَّلاَ اتَّخَذَ مَعَهُ مُشِيِّرًا سب سے ملے ہوئے اے یا ک اے یاک کرنے والے اے قدرت والے اسے اقتداروالے اے ہرزگ اے ہرزگ والے اسے یکا ندا ہے احُتَاجَ إِلَى ظَهِيُسِ وَّلا كَانَ مَعَهُ مِنُ إِلَّهٍ غَيْرُهُ لَأَ إِلَّهَ إِلَّا ٱنْتَ فَتَعَالَيْتَ عَمَّا يَقُولُ یکٹاا ہے بے نیا زامےوہ جوکسی کاپایے ٹییں اور دیکسی کامیا ہے اور جس کا کوئی جمسر ٹییں ہے اور نہ بی اس کی کوئی زوجہ ہے نہائ کیلیج کوئی و زمرِ الطَّالِـمُونَ عُـلُوًّا كَبِيُرًا يَا عَلِيٌّ يَّا شَامِخُ يَا بَاذِ خُ يَا فَتَّا حُ يَا نَفًّا حُ يَا مُوْتَا حُ يَا مُفَرّ جُ يَا اور نہاس نے اپنا کوئی مثیر بنایا نہوہ کسی مددگا رکی حاجت رکھتا ہے اور نہاس کے ساتھ کوئی اور معبود ہے نیس کوئی معبود سوائے تیرے کی بلند نَاصِرُ يَا مُنْتَصِرُ يَا مُدُرِكُ يَا مُهُلِكُ يَا مُنْتَقِمُ يَا بَاعِثُ يَا وَارِثُ يَا طَالِبُ يَا غَالِبُ يَا مَرُ تے ہیں تو بلند و ہرمز ہےا ہے عالی شان اے بلند مرتبہ والے اے عالی مرتبہا ہے تھو لتے وا۔ يَفُوتُهُ هَارِبٌ يَّا تَوَّابُ يَا أَوَّابُ يَآ وَهَّابُ يَا مُسَبِّبَ الْاَسْبَابِ يَا مُفَتِّحَ الْاَبُوَابِ يَا مَنُ

حَيْثُ مَا دُعِيَ آجَابَ يَا طَهُورُ يَا شَكُورُ يَا عَفُوُّ يَا عَفُوُّ يَا غَفُورُ يَا نُورَ النُّورِ يَا مُدَبّرَ الْأُمُورِ يَا المحانے والے اے ورشہ والے اے طالب اے غالب اے وہ جس سے بھاضنے والا بھا گنییں سکتا اے تو بہ قبول کرنے والے اے بیکٹے لَطِيُفُ يَا خَبِيُـرُ يَا مُجِيُرُ يَا مُنِيُرُ يَا بَصِيُرُ يَا ظَهِيْرُ يَا كَبِيْرُ يَا وَتُرُ يَا فَوُدُ يَآ اَبَدُ يَا سَنَدُ يَا والے اے بہت دینے والے اساب مبیا کرنے والے اے دروا زوں کے تھولنے والے اے وہ کہ جیسے بھی پکا راجائے دعا قبول کرنا ہے صَـمَـدُ يَـا كَـافِـيُ يَـا شَـافِـيُ يَا وَافِيُ يَا مُعَافِيُ يَا مُحْسِنُ يَا مُجْمِلُ يَا مُنْعِمُ يَا مُفْضِلُ يَا ا ہے بہت یا کیزہا ہے بہت شکروالےا ہے معاف کرنے والےا ہے بخشے والےا نے دیکے پیدا کرنے والےا ہے مورکی تدبیر کرنے والے مُتَكَّرٌ مُ يَا مُتَفَرِّدُ يَا مَنُ عَلَا فَقَهَرَ يَا مَنُ مَلَكَ فَقَدَرَ يَا مَنُ بَطَنَ فَخَبَرَ يَا مَنُ عُبِدَ فَشَكَّرَ يَا ا سعبر بإن الشخير دا را سينا ه دينے والے السے روشن کرنے والے السیمیا السے مدد گارا سے برگا السام بالسا اللہ والے السے مَنُ عُصِيى فَغَفَرَ يَا مَنُ لا تَحُويُهِ الْفِكُرُ وَلا يُدُركُهُ بَصَرٌ وَلا يَخُفى عَلَيْهِ أَثَرٌ يًا رَازِقَ تگہبان اے بے نیا زاے کا فی اے شفادینے والے اے و فاکرنے والے اے معاف کرنے والے اے احسان کرنے والے اے نیکو کا راے الْبَشَـرِ يَا مُـــَّـدِّرَ كُــلَ قَلَدُ (يَـا عَالِي الْلَمَكَانِ يَا شُهِدِيُدُ الْأَزُكَانِ يَا مُبَدِّلَ الزَّمَانِ يَا قَابِلَ تعمت دیجے والے اسے ہز رگوا راہے ہڑ مے مرجے والے اسے یکا تھی والے اسے وہ کہ بلندی کے سماتھ عالب ہے اسے وہ کہ مالک ہے پھر قا در الْـقَرُبَان يَا ذَا الْمَنِّ وَ الْإِحْسَان يَا ذَا الْعِزَّةِ وَ السُّلُطَانِ يَا رَحِيْمُ يَا رَحُمْنُ يَا مَنُ هُوَ كُلُّ ہےا ہے وہ جونہاں اور ہا خبر ہےا ہے وہ جومعبو دہتو بدلہ دیتا ہےا ہے وہ جو کہ ما فی پر بخشا ہےا ہے وہ جوفکر میں سانہیں سکتا اور نگاہ اسے يَـوُمٍ فِـىُ شَـان يَّـا مَـنُ لاَ يَشُـعَلُهُ شَانٌ عَنُ شَان يَّا عَظِيُمَ الشَّان يَا مَنُ هُوَ بِكُلِّ مَكَان يَا د کیجنیس ماتی اورکوئی نشان اس سے پوشیدہ خبیں ہےا ہےا نسا نوں کورزق دیجے والے اسے ہرا غداز ہ کے مقر رکرنے والے اسے بلند مرتبہا ہے سَامِعَ الْاصْوَاتِ يَا مُجِيُبَ الدَّعَوَاتِ يَا مُنْجِحَ الطَّلِبَاتِ يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ يَا مُنْزِلَ محكم وسائل والےا ہے زمانے کوبد لنے والےائے قربانی قبول کرنے والےائے صاحب نعمت واحسان البے صاحب عزت اورابدی حکومت الْبَوَكَاتِ يَا رَاحِمَ الْعَبَوَ اتِ يَا مُقِيلًا الْعَثَوَ اتِ يَا كَاشِفَ الْكُرُ بَاتِ يَا وَلِيَّ الْحَسَنَاتِ يَا والے یا رحیم یا رحمٰن اےوہ کہ ہرروزجس کی نبی شان ہےا ہو ہ جے ایک کام دوسرے کام سے غاقل ٹییں کرنا اے برڑے مقام والےا ہےوہ رَافِعَ الدَّرَجَاتِ يَا مُؤْتِيَ السُّؤُلاتِ يَا مُحْيِيَ الْآمُوَاتِ يَا جَامِعَ الشُّتَاتِ يَا مُطَّلِعًا عَلَي

النِّيَّاتِ يَا رَآدٌ مَا قَدُفَاتَ يَا مَنُ لاَّ تَشْتَبهُ عَلَيْهِ الْاَصُوَاتُ يَا مَنُ لاَّ تُضُجرُهُ الْمَسْئَلاتُ ا برکتیں نازل کرنے والے اے آنسوؤں ہر رحم کھانے والے ایے گنا ہوں کے معاف کرنے والے اسے سختیاں دورکرنے والے اے وَلَا تَغُشَاهُ الطُّلُمَاتُ يَا نُوُرَ الْآرُضِ وَ السَّمَواتِ يَا سَابِغَ النِّعَمِ يَا دَافِعَ النِّقَمِ يَا بَارِئَ تنكيول كويبند كرنے والےام حجے بلند كرنے والےا مطالبے پورے كرنے والےا مے دول كوزندہ كرنے والےائے بلحروں كوا كھا النُّسَم يَا جَامِعَ الْأُمَم يَا شَافِيَ السَّقَم يَا خَالِقَ النُّور وَ الظُّلَم يَا ذَالُجُورِ وَ الْكَرَم يَا مَنُ كرنے والے اپنیتوں كى خبرر كھيوالے اے كھوئى ہوئى چيزيں دینے والے اسدو وجس بر آ وازیں مشتر نہیں ہوتیں اسدو وجے كثرت لاً يَـطَأُ عَرُشَـهُ قَدَمٌ يَّا اَجُوَدَ الْاَجُودِيْنَ يَاۤ اَكُرَمَ الْاَكُرَمِيْنَ يَاۤ اَسُمَعَ السَّامِعِيُنَ يَاۤ اَبُصَرَ سوال سے تنگی ٹیس ہوتی اورنا ریکیاں اسے گھیرتی ٹیس ہیں اے آسا نوں اورزمین کی روشنی اے بعتوں کے پورا کرنے والے اے بلا کیس النَّاظِرِيُنَ يَا جَارَ الْمُسْتَجِيُرِيُنَ يَا اَهَانَ الْخَائِفِيُنَ يَا ظَهُرَ الْلَّاجِيُنَ يَا وَلِيَّ الْمُؤْمِنِيُنَ يَا نا لنے والے اسے جاند اروں کو ہیدا کرنے والے اسے امتوں کو جمع کرنے والے اسے بیاروں کوشفا دیے والے اسے روشنی و تاریکی کے پیدا غِيَاتَ الْمُسْتَغِيُثِينَ يَا غَايَةً الطَّالِينَ إِلَا طَاحِبُ كُلُّ غَرِيْبٍ لِمَا مُؤْمِنَ كُلَّ وَحِيْدٍ يًا مَلْجَا کرنے والے اے صاحب جودو کرم اے وہ جس کے عرش پر کسی کا قدم نہیں آیا اے سب حیوں سے بڑے تی اے سب بزرگی والوں سے كُـلِّ طَـرِيُـدٍ يَّـا مَـاُواى كُـلِّ شَـرِيُدٍ يَّا حَافِظَ كُلِّ ضَآلَٰةٍ يَّا رَاحِمَ الشَّيْخ الْكَبِير يَا رَازِقَ زیا دہ بزرگ ہے سننے والوں میں زیا دہ سننے والے اے دیکھنے والوں میں زیا دہ دیکھنے والے اے بنا وگزینوں کی بناہ گاہ اے ڈرے ہوؤں کی الطِّفُلِ الصَّغِيُرِ يَا جَابِرَ الْعَظُمِ الْكَسِيرِ يَا فَآكُ كُلِّ اَسِيُرِ يَّا مُغُذِيَ الْبَآئِسَ الْفَقِيرُر جائے امن اے پنا دحیاہنے والوں کی جائے پناہ اے مؤمنوں کے سر پرست اے فریا دیوں کے فریا درت اے طلبگاروں کی امیداے ہرسفر عِصْمَةَ الْخَائِفِ الْمُسْتَجِيْرِ يَا مَنُ لَّهُ التَّدُبِيْرُ وَ التَّقْدِيْرُ يَا مَنِ الْعَسِيْرُ عَلَيْهِ سَهُلٌ يَّسِيْرٌ يَّ کرنے والے بے ساتھی اے ہرا کیلے کے ہم تشیں اے ہر لکالے سکتے کی جائے پنا دا ہے بیٹھکا نوں کی قرارگا دا ہے ہر کمشد ہ کے تگہبان اے مَنُ لاَّ يَحْتَا جُ إِلَى تَفُسِيُر يَّا مَنُ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ يَّا مَنُ هُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ خَبِيُرٌ يَّا مَنُ بڑے بوڑھے پر رحم کرنے والے اے نتھے بچے کوروزی دیے والے اے ٹوٹی ہڈی کوجوڑ دیے والے اے ہر قیدی کور ہائی دیے والے اے هُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيُرٌ يَّا مُرُسِلَ الرِّيَاحِ يَا فَالِقَ الْإِصْبَاحِ يَا بَاعِثَ الْاَرُوَاحِ يَا ذَا الْجُوْدِ وَ بے جارہ مفلس کوعنی بنانے والے اسے خا نف پناہ گزین کی جائے قرارا ہے وہ جومذ بیراور تقدیر کا مالک ہے اسے وہ جس کیلیج ہر مشکل

السَّمَاحِ ، يَا مَنُ بِيَدِهِ كُلُّ مِفْتَاحٍ يَّا سَامِعَ كُلِّ صَوْتٍ يَّا سَابِقَ كُلِّ فَوْتٍ يَّا مُحْيِى كُلِّ آ سمان او رہلکا ہےا ہے وہ جو تغییر کامحتاج نے نہیں اے وہ جو ہر چیز پر قدرت رکھتا ہےا ہے وہ جو ہر چیز کود کھتا ہے نَفُسٍ ، بَـعُـدَ الْـمَوُتِ يَا عُدَّتِي فِيُ شِدَّتِي يَا حَافِظِيُ فِيُ غُرُبَتِيُ يَا مُوْنِسِيُ فِيُ وَحُدَتِيُ يَا ا ہے ہوا وَل کو چلانے والے اسے مبح کی پوکھولتے والے اے روحوں کو بیمینے والے اسے عطا وسخاوت والے اسے وہ جس کے ہاتھ میں سب وَلِيَ فِي نِعُمِةًى يَا كَهُفِي حِيْنَ تُعُييُنِي الْمَذَاهِبُ وَ تُسَلِّمُنِي الْاَقَارِبُ وَ يَخُذُلُنِيُ كُلُ کلیدیں ہیںا ہے سب آ وا زوں کو سننے والے اے ہر گز رہے ہوئے سے پہلے اے زندہ کرنے والے سب نفسوں کے ان کی موت کے بعد صَـاحِبٍ يًّا عِمَادَ مَنُ لَا عِمَادَ لَهُ يَا سَنَدَ مَنُ لَّا سَنَدَ لَهُ يَا ذُخُرَ مَنُ لاَّ ذُخُرَ لَهُ يَا حِرُزَ مَنُ ا سے ختیوں میں میری بناہ اے سفر میں میرے محافظ اے میری تنہائی کے ہدم اے میری فعتوں کے مالک اے میری بناہ جب مجھ پر را ہیں بند لا حِرُزَ لَهُ يَا كَهُفَ مَنُ لا كَهُفَ لَهُ يَا كَنُزَ مَنُ لا كَنُزَ لَهُ يَا رُكُنَ مَنُ لا رُكُنَ لَهُ يَا غِيَاتَ ہو جا کیں رشتہ دار مجھے دورکردیں اوراحباب مجھے حجھوڑ جا کیں اےاس کے سہارے جس کا کوئی سہا رانبیں اےاس کی سندجس کی کوئی سند مَنُ لَا غِيَاتَ لَهُ يَا جَارٌ مَنْ لَا جَارٌ لَهُ يَا جَارِ فِي اللَّهِمِ فِي إِنْ رُكُّونِي الْوَلِيُقَ يَآ اللهي بالسَّحُقِيُق خبیں اے اس کے ذخیرے جس کا کوئی ذخیرہ خبیں اے اس کی پناہ جس کی کوئی پناہ خیس اے اس کی امان جس کیلیے امان خبیں اے اس کے يَا رَبَّ الْبَيْتِ الْعَتِيُقِ يَا شَفِيُقُ يَا رَفِيُقُ فَكُنِيُ مِنُ حَلَقِ الْمَضِيُقِ وَاصُرِفُ عَنِّي كُلُّ هَمّ وَّ خزائے جس کا کوئی خزا زخییں اےاس کی فیک جس کی کوئی فیک فیس اےاس کے قریا دری جس کا کوئی فریا دری فیس اےاس کے بمسایہ جس کا غَـهُ وَّ ضِيُـقُ وَّ اكْفِنِيُ شَرَّ مَا لَا أُطِيُقُ وَ اَعِنِّيُ عَلَى مَاۤ اُطِيُقُ يَا رَآدً يُوسُفَ عَلَى يَعُقُوبَ کوئی ہمساریزمیں اے میرے ہمساریہ جونز دیک تر ہے اے میری مضبوط ترین فیک اے میرے حقیقی معبو داے خانۂ کعبہ کے پروردگاراے يَا كَاشِفَ ضُـرٌ ٱيُّـوُبَ يَا غَافِرَ ذَنُبِ دَاؤُدَ يَا رَافِعَ عِيْسَى ابُنِ مَرُيَمَ وَ مُنُجِيَهُ مِنُ ٱيُدِي مہر ہان اے دوست مجھے تک گھیرے ہے آزاد کر دے مجھ سے ہرهم واندیشہ اور تنگی دورفر ما دے مجھے اس شرسے بچا جومیری طافت سے زیادہ الْيَهُوْدِ يَا مُجِيُبَ نِدَآءِ يُونُسَ فِي الظُّلُمَاتِ يَا مُصْطَفِيَ مُوْسِي بِالْكَلِمَاتِ يَا مَنْ غَفَر ہاو راس میں مد دوے جومیں ہے۔ سکتا ہوں اے وہ جس نے یعقوب کو پوسٹ واپس دلایا اےا یوب کا دکھ دورکرنے والے اے دا وُڈ کی ِلاَٰدَمَ خَطِيْــُئَتَهُ وَ رَفَعَ اِدُرِيْسَ مَكَانًا عَلِيًّا مِبرَحُــمَتِـهٖ يَا مَنُ نُجْحِي نُوُحًا مِّنَ الْغَرَق يَا مَنُ

**** اَهُلَكَ عَادَ الْأُولِي وَ ثَمُودَ فَمَآ اَبُقَلَى وَ قَوْمَ نُوحٍ مِّنْ قَبُلُ اِنَّهُمْ كَانُوا هُمُ اَظُلَمَ وَ اَطُعٰى ایونس کی فریا دکو پینچنے والے اسے موتی " کواپنے کلام کیلیے منتخب کرنے والے اسے آدم کے ترک اولی کومعاف کرنے والے اورا درلیں کواچی وَ الْمُوْتَـفِكَةَ اَهُـواى يَا مَنُ دَمَّرَ عَلَى قَوْمِ لُوطٍ وَّ دَمُدَمَ عَلَى قَوْمِ شُعَيْبٍ يَّا مَن اتَّخَذَ رحمت ہے بلند مقام پر لے جانے والے اے نوٹح کو ڈو ہے ہے بچانے والے اے وہ جس نے عاداو کی اور ثمو دکو ہلاک کیا کرسی کوبا تی نہ إِبُـرَاهِيْمَ خَلِيُلاً يَّا مَنِ اتَّخَذَ مُوُسلي كَلِيُمًا وَّاتَّخَذَ مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ وَ عَلَيْهِمُ حچوڑااوران سے پہلے قوم نوح کوہلاک کیا کہ جوہڑ ہے ظالم سرکش اور دین میں افتر اءکرنے والے تھے اے وہ جس نے قوم لوط کی بستیوں کو ٱجُـمَـعِيُـنَ حَبِيْبًا يًّا مُؤْتِيَ لُقُمَانَ الْحِكُمَةَ وَ الْوَاهِبَ لِسُلَيْمَانَ مُلُكًا لَأ يَنْبَغِيُ لِاَحَدٍ مِّنُ الث دی اورقوم شعیب پرعذاب کابا دل بھیجا تھا اسے وہ جس نے اہرا ہیم کوا پنا قلیل بنایا اسے وہ جس نے موئی میں کواپنا کلیم بنایا اور محمد کواپنا بَعُدِهٖ يَا مَنُ نَصَرَ ذَا الْقَرُنَيُنِ عَلَى الْمُلُوكِ الْجَبَابِرَةِ يَا مَنُ اَعُطَى الْخِضُرَ الْحَياوةَ وَ رَ حبیب قرار دیا کہ خدا کی رحمت ہوان پران کی آل پراوران سب ہستیوں پر جن کا ذکر ہواا لے قمان کو حکمت عطا کرنے والے اورسلیمان کو لِيُوشَعَ بُن نُون و الشُّهُمُ لَ يَعُدُ غُرُوبِهَا يَا مَنُ رَبَطُ عَلَى قُلُبِ أَمْ مُؤْسَى وَ أَحْصَنَ فَرُجَ الیمی سلطنت و پیجوالے کرچیسی بعد میں کسی اور کوئییں ملی اے وہ جس نے جاہر بإر مثابوں کےخلاف ذوالقر نمین کی مددفر ماتی اے وہ جس نے مَرُيَهَ ابُنَتِ عِمُوانَ يَا مَنُ حَصَّنَ يَحْيَى بُنَ زَكَرِيًّا مِنَ الذُّنُبِ وَ سَكَّنَ عَنُ مُوسَى خصر گودائمی زندگی دی اور پوشع بن نون کی خاطر آفتا ب کو پلٹایا جب و هخروب ہو چکا تھا اے و ہس نے ما درموی میں کے دل کوسکون دیا اور الْغَضَبَ يَا مَنُ بَشَّرَ زَكَرِيًّا بِيَحُيلِي يَا مَنُ فَدَا اِسْمَاعِيُلَ مِنَ الذُّبُحِ بِذِبُح عَظِيُمٍ يَا مَنُ قَبِلَ مريخ بن عمران کو بإ كدامنی سے سرفراز فر مايا ہے وہ جس نے بچئي "بن زكريا كو گنا ہ سے محفوظ كياا و رموي " كے غضب كو دورفر مايا اسو وہ جس قُـرُبَانَ هَابِيُلَ وَ جَعَلَ اللُّعُنَةَ عَلَى قَابِيُلَ يَا هَازِمَ الْاَحُزَ ابِ لِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّهُ عَلَيُهِ وَ الِهِ نے زکر یا کو یکی کی بٹارت دی اےوہ جس نے اسامیل کوؤ بحظیم کے بدلے میں ذیج سے بچالیا ہےوہ جس نے ہابیل کی قربانی قبول صَـلٌ عَـلَـي مُـحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّ عَلَى جَمِيْعِ الْمُرْسَلِيُنَ وَ مَلْئِكَتِكَ الْمُقَرَّبِيْنَ وَ اَهُل فرمانی اور قابیل پرلعنت مسلط کر دی اے حضرت محرسلی الله علیه و آلبه کی خاطر کفار کے جتھوں کو تکست دیجے والے رحمت مازل کرمحمر و آل محمر میر طَاعَتِكَ أَجُمَعِيْنَ وَ ٱسُئَلُكَ بِكُلِّ مَسْئَلَةٍ سَئَلَكَ بِهَا آحَدٌ مِّمَّنُ رَضِيْتَ عَنُهُ فَحَتَمُ ﴿ ا بینے تمام رسولوں براو را بینے مقرب فرشتوں براو را بینے فر مانبر داروں بندوں براور میں سوال کرنا ہوں چھھے ہراس سوال کے واسطے ہے جو

********************* عَلَى الْإِجَابَةِ يَآ اَللَّهُ يَآ اَللَّهُ يَاۤ اَللَّهُ يَا رَحُمٰنُ يَا رَحُمٰنُ يَا رَحُمٰنُ يَا رَحُمُ يَا تیرے ہراس بندے نے کیا جس سے و راضی وخوش ہے پھر تونے اس کی دعا قبول فر مائی مااللہ ما اللہ ما رحمٰن ما رحمٰن ما رحمٰ ما رحیم ما رحیم ما رَحِيْــهُ يَا ذَاالُجَلالِ وَ الْإِكْرَامِ يَا ذَا الْجَلالِ وَ الْإِكْرَامِ يَا ذَا الْجَلالِ وَ الْإِكْرَام بِهِ بِهِ بِهِ رتیم اے جلالت ویز رقی والے اے جلالت ویز رقی والے اے جلالت ویز رقی والے ای کاواسطهای کا ای کا ای کا ای کا ای کا بِه بِه بِهِ اَسْتَلُكَ بِكُلِّ اسْمِ سَمَّيْتَ بِهِ نَفُسَكَ اَوُ اَنْزَلْتَهُ فِي شَيْءٍ مِّنْ كُتُبِكَ اَوِ اسْتَأْثُرُ ﴿ نام کاواسطہ جس سے تو نے اپنی ذات کو پکارا ہے بیا ہے صحیفوں میں سے کسی میں اٹا راہے مااسے علم غیب میں اپنے لیے مقر رو خاص کیا ہے ان بِهٖ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنُدَكَ وَ بِمَعَاقِدِ الْعِزِّ مِنْ عَرُشِكَ وَ بِمُنْتَهَى الرَّحُمَةِ مِنُ كِتَابِكَ ﴿ وَ مقامات بلند کاواسطہ جو تیرے عرش میں ہیں اس نہایت رحمت کا واسطہ جو تیری کتاب میں ہے اور اس آیت کا واسطہ کراگر زین کے تمام بِـمَا لَوُ أَنَّ مَا فِي الْاَرُضِ مِنُ شَجَرَةٍ أَقُلاهٌ وَ الْبَحُرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعُدِهٖ سَبُعَةَ ابُحُر مَّا نَفِدَتُ درخت قلم اورسمندرروشنا فی بن جا کیں اس کے بعد سمات سمند راور ہول آو بھی خدا کے کلمات لکھے نہ جا کیں گے نہمام ہوں تھے بے شک اللہ كَـلِـمَاتُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهُ عَرِيزٌ حَكَيْمٌ وَ ٱسْتُلُكُ بِٱسْمَآئِكُ الْحَكِي الَّتِي نَعَتَّهَا فِي كِتَادٍ. غالب ہے حکمت والا اور میں سوال کرتا ہوں تیرے پیارے ماموں کے ساتھ جن کی تو نے قر آن میں تو صیف کی ہے پس تو نے کہااور اللہ فَقُلُتَ وَ لِلَّهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنِي فَادُعُوهُ بِهَا وَقُلُتَ اُدُعُوٰنِي ٓ اَسْتَجِبُ لَكُمُ وَ قُلُتَ وَ إِذَا کیلئے ہیں بیارے بیارے نام تو تم اے انہی ہے چارہ اور تونے کہا مجھے پکا روئمیں تہاری دعا قبول کروں گا اور تونے کہا کہ جب میرے سَــُـلَكَ عِبَادِيُ عَنِّيُ فَاِنِّيُ قَرِيْبٌ أَجِيُبُ دَعُوهَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ وَ قُلُتَ يَا عِبَادِيَ الَّذِيْنَ بندے مجھے پکاریں تو میں ان کے قریب ہی ہوتا ہوں میں دعا کرنے والے کی دعا قبول کرتا ہوں جب و ہ دعا کرےاور تو نے کہاا ہے میرے اَسُوكُوْا عَلْى اَنْفُسِهِمُ لا تَقُنَطُوُا مِنُ رَّحُمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغُفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيُعًا إِنَّهُ هُوَ وہ ہندوجنہوں نے اپنے او پڑھلم کیا ہےتم اللہ کی رحمت سے امید نہ ہوجانا کہ بے شک اللہ تما می گیا ہ بخش دے گابیتیناً وہ بہت بخشے والامہر بان الُـغَـفُورُ الرَّحِيْمُ وَ أَنَا اَسْئَلُكَ يَآ اِلٰهِيُ وَ اَدُعُوكَ يَا رَبِّ وَ اَرْجُوكَ يَا سَيِّدِيُ وَ اَطْمَعُ ہاور میں سوال کرتا ہوں تجھ سے اے معبو دیکھیے پکارتا ہوں اے پروردگا راور تجھ سے امید رکھتا ہوں اے میرے آتا میں دعا کے قبول ہونے إِجَابَتِيُ يَا مَوُلاٰيَ كَمَّا وَعَدُتَنِيُ وَ قَدُ دَعَوْتُكَ كَمَا اَمَرُتَنِيُ فَافْعَلُ بِي مَآ أَنْتَ اَهُلُهُ يَا ﴿ کی طبع رکھتا ہوں اے میرے مولا جیسے تو نے وعد ہ کیااور میں نے تھے ایکا را جیسا کرتو نے مجھے تھم دیا پس تو بھی مجھ ہے وہ سلوک کرجس کا تو

كَرِيْمُ وَ الْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ أَجُمَعِيْنَ.

ا بل ہے یا کریم اور تعریف بس حدا کے لئے ہے جو عالمین کا رب ہے اور رحمت کرے اللہ محمر و آل محمر پر جوبھی ان میں ہیں۔

(٣) دعائے عشرات : بیده عابھی معروف و متنده عاؤں میں ہے ایک ہے جو ہر صبح و شام اور بالحضوص جمعہ کے دن عصر کے وقت پڑھی جاتی ہے جو حضرت امیر الظاہر ہے مروی ہا ور مفصل کتابوں میں اس کے برؤے فضائل اور بے بایاں ثواب وار دبوئے ہیں جنہیں بنظرا خصاریبال نقل نہیں کیا جاسکتا تفصیل کے خواہشمند حضرات کتاب مصباح المجمع د ، مج الدعوات اور کتاب الد عاوالزیارہ دغیرہ کتب مفصلہ کی طرف رجوع فرما کیں۔ اور وہ دعائے شریف ہے :

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

خدا کے نام سے شروع جو ہڑا مہر بان نہایت رحم والا ہے

سُبُحَانَ اللّٰهِ وَ الْحَمُلُ لِللّٰهِ وَالْآ اللّٰهِ وَاللّٰهُ الْلَٰهُ وَاللّٰهُ الْكُورُ وَلاَ حُولُ وَلاَ قُولًا وَلاَ اللّٰهِ الْعَلِيّ فَلَى اللّٰهِ وَالْعَرْوهِ مِعَ اللّٰهِ الْعَلَيْ اللّٰهِ اللّهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰمُ اللّٰهُ الللّٰمُ اللّٰهُ الللّٰمُ الللّٰمُ الللّٰمُ الللّٰمُ الللّٰمُ الللّٰمُ الللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللللّٰمُ اللللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ الللّٰمُ الللّٰمُ الللللّٰمُ الللّٰمُ الل

الْـمُـلُكِ وَ الْـمَلَكُوْتِ سُبُحَانَ ذِي الْعِزَّةِ وَ الْجَيَرُوْتِ سُبُحَانَ ذِي الْكِبُرِيَآءِ وَ الْعَظَمَةِ ﴿ پاک ہے وہ جوصا حب عزت وجروت ہے پاک ہے وہ جو بڑائی اور یز رگی کا مالک ہے با دشاہ برحق مقتد را ورمنز ہ ہے پاک الْمَلِكِ الْحَقِّ الْمُهَيُمِنِ الْقُدُّوسِ سُبُحَانَ اللَّهِ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ سُبُحَافٌّ ہے خدابا وشاہ زندہ کہ جے موت نہیں یا ک ہے خدا جوبا وشاہ زندہ ومنزہ ہے یاک ہے وہ جو قائم ودائم ہے یاک ہے وہ جو دائم اللُّهِ الْمَلِكِ الْحَيِّ الْقُدُّوسِ سُبُحَانَ الْقَآئِمِ الدَّآئِمِ سُبُحَانَ الدَّآئِمِ الْقَآئِمِ سُبُحَانَ رَبّي وقائم ہے پاک ہے میرا رب جوعظمت والا ہے پاک ہے میرا رب جواعلی ہے پاک ہے وہ جو ہمیشہ زندہ و پائندہ ہے پاک ہے الْعَظِيْمِ سُبُحَانَ رَبِّيَ الْآعُلَى سُبُحَانَ الْحَيِّ الْقَيُّوْمِ سُبُحَانَ الْعَلِيِّ الْآعُلَى سُبُحَانَهُ وَ وہ جو بلند وبالا ہے وہ پاک اور برتر ہے با کیزہ ومنزہ ہے جارا رب جوملائکہ اور روح کا رب ہے باک ہے وہ ہمیشہ رہنے والا تَعَالَى سُبُّوُ حُ قَدُّوُسٌ رَّبُنَا وَ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَ الرُّوُ حِ سُبُحَانَ الدَّآئِم غَيْر الْغَافِل سُبُحَانَ جو غافل نہیں پاک ہے وہ جوبغیر تعلیم کے عالم ہے پاک ہے وہ جو دیکھی ان دیکھی ہر چیز کا خالق ہے پاک ہے وہ جونظروں کو الُعَالِم بِغَيْرِ تَعُلِيْم سُلِبُحَانَ خَالِق مَا يُرَى وَمَا لا يُرِي سُبُحَانَ الَّذِي يُدُركُ الْابُصَارَ وَلا ﴿ یا تا ہے اورنظریں اسے نہیں پاسکتیں اور بار کے بین وخبر والا ہے اے معبود! میں نے تیری طرف سے ملنے والی لعمت ،خبر، تُدُرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ اللَّطِيُفُ الْخَبِيْرُ اللَّهُمَّ إِنِّي أَصْبَحُتُ مِنْكَ فِي نِعْمَةٍ وَ خَيْرٍ وَ بَرَكَامٍ ﴿ ہر کت اور عافیت میں ملیج کی ہے اس رحمت فر مامحمہ وآل کھڑ پراور پوری کر مجھ پر اپنی فعمت ، خیراور پر کتیں اور مجھے آتش جہنم ہے وَّ عَافِيَةٍ فَصَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ وَ ٱتُّمِمُ عَلَيَّ نِعُمَةً كَ وَ خَيْرَكَ وَ بَرَكَاتِكَ وَ عَافِيكُ كُ نجات بھی دے مجھے اپنے شکر کی تو فیق دےا وراپنی طرف سے عافیت ،عطااورمہر یا فی سے نوا زجب تک میں زندہ ہوں اے بنَجَاةٍ مِّنَ النَّارِ وَ ارُزْقُنِيُ شُكُرَكَ وَ عَافِيَتَكَ وَ فَضُلَكَ وَ كَرَامَتَكَ اَبَدًا مَّا اَبْقَيْتَنِي أَفْجُهُمَّ معبو د مجھے تیرے نورسے ہدا ہت اور تیرے نفل سے تو گری مل ہے تیری نعت کے ساتھ میں نے میج کی اور شام کی ہے اے بنُوُركَ اهْتَدَيْتُ وَ بِفَضْلِكَ اسْتَغْنَيْتُ وَ بِنِعُمَةِكَ أَصْبَحْتُ وَ أَمْسَيْتُ اَللَّهُمَّ إِنِّي أَشُهِ ﴿كَ معبو دمیں تھے گوا ہبنا تا ہول اور تیری گوا بی کافی ہے اور گوا ہبنا تا ہول تیرے ملائکہ، انبیاءا وررسل اور تیرے عرش کے حاملین وَ كَفْي بِكَ شَهِيُـدًا وَّ أُشُهِدُ مَلَاثِكَةَكَ وَ ٱنْبِيٓآئَكَ وَ رُسُلَكَ وَ حَمَلَةَ عَرُشِكَ وَ ﴿ تیرے آسانوں اور تیری زمین کے رہنے والوں اور تیری تمام مخلوق کواس بات پر کہ یقینا تو ہی اللہ ہے نہیں کوئی معبو دسوائے

سَمْوَ اللَّهُ لَأَ ٱلْفَتِالَّا وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ بِٱنَّكَ ٱنْتَ اللَّهُ لَأَ ٱلْفَتَالَّا وُحَدَكَ لا شَريُكَ ﴿ تیر ساق بکتا ہے تیرا کوئی ٹانی نہیں اوراس پر کرھنر ہے محمصلی اللہ علیہ وآلہ تیر ہے بند ہے اور تیرے رسول ہیں اور بے شک تو لَكَ وَ أَنَّ مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ عَبُدُكَ وَ رَسُوُلُكَ وَ أَنْكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ ﴿ إِلَّهِ عَبُدُكَ وَ رَسُولُكَ وَ أَنْكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ ﴿ إِلَّهِ عَبُدُكَ وَ رَسُولُكَ وَ أَنْكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ ﴿ إِلَّهِ عَبُدُكَ وَ رَسُولُكَ وَ أَنْكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ ﴿ إِلَّهِ عَبُدُكَ وَ رَسُولُكُ وَ أَنْكُ وَ أَنْكُ ہر چیز پر قا درہے تو بی زندہ کرتا اورموت دیتا ہےا ورموت دیتاا ور زندہ کرتا ہے نمیں گوا بی دیتا ہول کہ جنت حق ہے جہنم حق تُحْيِيُ وَ تُمِيْتُ وَ تُمِيْتُ وَ تُحْيِيُ وَ اَشُهَدُ اَنَّ الْجَنَّةَ حَقٌّ وَّ اَنَّ النَّارَ حَقٌّ وَّ النَّشُورَ حَقٌّ وَّ ہے قبروں سے جی اٹھنا حق ہے اور قیامت آنے والی ہے اس میں کوئی شک نہیں اور خدا اسے زند وکرے گا جو جوقبر میں ہے السَّاعَةَ اتِيَةٌ لاّ رَيْبَ فِيُهَا وَ اَنَّ اللَّهَ يَبُعَثُ مَنُ فِي الْقُبُورِ وَ اَشُهَدُ اَنَّ عَلِيَّ بُنَ اَبِي طَالِب کمیں گواہی دیتا ہوں کہا مام علیٰ بن ابی طالب سیح اور سیج امیر المؤمنین ہیں اور پیے کہا ن کی اولا دمیں جوا مام ہوئے وہہدا ہے اَمِيُـرُ الْـمُـوُّمِنِيُـنَ حَقًا حَقًا وَ اَنَّ الْآئِـمَّةَ مِنُ وُّلُدِهٖ هُمُ الْآئِمَّةُ الْهُدَاةُ الْمَهُدِيُّوُنَ غَيْرُ دینے والے ہدایت یافتہ ائکہ جیں وہ ندگمرا ہ جیں اور ندگمراہ کرنے والے جیں اور پیر کہوہ تیرے چنے ہوئے دوست اور تیری الطُّسَآلِيُنَ وَلاَ الْمُضِلِّيُنَ وَ أَنْهُمُ آوُلِيّاءُ كَلَّ الْمُصْطَفُولَنَّ وَ حِزْابُكِ الْعَالِبُونَ وَ صِفَوتَكَ غالب جماعت میں وہ تیری کلوق میں سے برگزید ہ وبہترین افرا د ہیںا وروہ ایسے شریف ہیں جن کوتو نے اپنے دین کی خاطر خِيَـرَتُكَ مِنُ خَـلُـقِكَ وَ نُـجُبَائُكَ اللَّذِيْنَ انْتَجَبْتَهُمُ لِدِيْنِكَ وَ اخْتَصَصْتَهُمُ مِّنُ خَالَكُمْ جناا ورانہیں اپنی مخلوق میں خاص مقام دیا تونے انہیں اپنے بند ول میں سے منتخب کیاا وران کو عالمین کے لیے اپنی ججت قرا ر وَاصْـطَفَيْتَهُمُ عَلَى عِبَادِكَ وَ جَعَلْتَهُمُ حُجَّةً عَلَى الْعَالَمِيْنَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِمُ وَ السَّلامُ دیا تیری رخش ہوں ان پرا ورسلام اورخدا کی رحمت اور بر کات اے معبود! میری پیر گواہی اینے ہاں درج فر مالے حتی کہ رَحُمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ اللَّهُمَّ اكْتُبُ لِيُ هَذِهِ الشَّهَادَةَ عِنْدَكَ حَتَّى تُلَقِّنَنِيُهَا يَوُمَ الْقِيامَةِ قیا مت میں تو مجھے اس کی تلقین کرےاور مجھ سے راضی ہو جائے بے شک تو قا درہے اس پر جوتو جاہے اے معبو د! تیرے لیے ٱنُتَ عَنِّيُ رَأُضِ إِنَّكَ عَلَى مَا تَشَآءُ قَدِيْرٌ ٱللَّهُمَّ لَكَ الْحَمُدُ حَمْدًا يَّصُعَدُ أَوَّلُهُ وَلا يَنْفَا ﴿ حد ہے وہ حمد جس کا پہلا حصد بلند ہوتا ہے اور آخری شتم ہوئے والانہیں اے معبو داحمد تیرے ہی لیے ہے الیبی حمد کہ آسان اخِرُهُ ٱللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا تَضَعُ لَّكَ السَّمَآءُ كَنَفَيْهَا وَ تُسَبِّحُ لَكَ الْاَرْضُ وَأَ تیرے آ گےا ہے شانے جھکا دےاورز مین اور جواس پر ہے وہ تیری سیح کرےا ہمعبو د! تیرے لیے حمہ ہے جو ہمیشہ ہمیشہ

عَـلَيُهَا اَللَّهُمَّ لَكَ الْحَمُدُ حَمُدًا سَرُمَدًا اَبَدًا لاَّ انْقِطَاعَ لَهُ وَلاٰ نَفَادَ وَ لَكَ يَنْبَغِيُ وَ اِلَيُكُيُّ جاری ہے وہ ندرکتی ہے ندمتم ہوتی ہے وہ تیرے ہی لائق ہے اور قبی تک پہنچتی ہے وہ میرے دل میں زبان پر میرے سامنے يَـنُتَهـيُ فِيَّ وَ عَلَيَّ وَلَدَيَّ وَ مَعِيُ وَ قَبُلِيُ وَ بَعُدِيُ وَ اَمَامِيُ وَ فَوُقِيُ وَ تَحْتِي وَ إِذَا مِثُّ وَ میرے ساتھ مجھ سے پہلے میرے بعدمیرے پہلو میں میرے اور اور میرے نیچے ہے جب میں مروں اور قبر میں یکہ و تنجا رو بَقِيْتُ فَرُدًا وَّحِيْدًا ثُمَّ فَنِيْتُ وَ لَكَ الْحَمُدُ اِذَا نَشِرُتُ وَ بُعِثْتُ يَا مَوُلاَى اَللَّهُمَّ وَلَكَمَّ جا وَل چَر خَاك درخَا ك ہوجا وَل اور تیرے لیے حمد ہے جب قبر میں اٹھ بیٹھوں اور کھڑا کیا جا وَل اے میر ہے مولا اے معبو د الْحَـمُـدُ وَ لَكَ الشَّكُرُ بِجَمِيْعِ مَحَامِدِكَ كُلِّهَا عَلَى جَمِيْعِ نَعُمَآ دِكَ كُلِّهَا حَتَّى يَنْتَكُمُّ حمداورشکر تیرے بی لیے ہے تیرے تمام و کمال اوصاف کے ساتھ تیری جمی نعمات کے ساتھ حتی کہ حمد و ہاں پہنچ جہال تو جا ہتا الْحَمُدُ اللَّي مَا تُحِبُّ رَبَّنَا وَ تَرُطٰي اَللَّهُمَّ لَكَ الْحَمُدُ عَلَى كُلَّ أَكُلَةٍ وَّ شَرُبَةٍ وَّ بَطُشَةٍ وَّ ہا ہارے رہ رے بس میں تیری رضا ہے اے معبو د! تیرے لیے حمد ہے اشیاء خور دونوش پر ہاتھ سے پکڑنے رو کئے اور قَبْضَةٍ وَّ بَسُطَةٍ وَّفِي كُلُّ مُواضِعٌ شَغَرَةٍ ٱللَّهُمَّ أَكُ الْحَمَّدُ حَمَّدًا خَالِدًا مَّعَ خُلُودِكَ إِ کھولنے پراورجم کے بال بال پر تیری حد ہےا ہے معبو دا تیرے لیے حدہے ہمیشہ کی حمرتیرے دوام کے ساتھ تیرے لیے حمد وَلَكَ الْحَمُدُ حَمُدًا لا مُنْتَهِى لَهُ دُونَ عِلْمِكَ وَ لَكَ الْحَمُدُ حَمُلَكُ لَهُ دُونَ ہے وہ حمد جس کی سوائے تیرے علم کے کوئی حد مبیں حمرہے تیرے لیے وہ حمد جس کی مدت تیری مشیت میں ہے حمرہے تیرے مَشِيَّةِكَ وَ لَكَ الْحَمُدُ حَمُدُ اللَّهِ رَلِقَائِلِةِ اللَّ رضَاكَ وَ لَكَ الْحَمُدُ عَلَى حِلْمِكَ لیے وہ حمد کہ حمد کرنے والے کا اجرتیری رضائی ہے حمد ہے تیرے لیے جوجائے ہوئے بھی زی کرتا ہے حمد ہے تیرے لیے کہ عِلْمِكَ وَ لَكَ الْحَمُدُ عَلَى عَفُوكَ بَعُدَ قُدُرَتِكَ وَ لَكَ الْحَمُدُ بَاعِثَ الْحَمُدِ ۗ ۗ لَكَ قوت کے با وجود درگز رفر ما تا ہے جم ہے تیرے لیے کہ تو وجہ جم ہے تیرے لیے کہ تو ما لک جم ہے تیرے لیے کہ الُحَمُدِ وَارِثَ الْحَمُدِ وَ لَكَ الْحَمُدُ بَدِيْعَ الْحَمُدِ وَ لَكَ الْحَمُدُ مُنْتَهَى الْحَمُدِ وَ لَكُ تھے سے ابتدا وحد ہے تیرے لیے کہ تھے پرا نتہا وحد ہے حد ہے تیرے لیے کہ تو حمد کا آغاز کرنے والا ہے حمد ہے تیرے لیے کہ تو الُحَـمُدُ مُبْتَدِعَ الْحَمُدِ وَ لَكَ الْحَمُدُ مُشْتَرِيَ الْحَمُدِ وَ لَكَ الْحَمُدُ وَلِيَّ الْحَمُدِ وَ لَي خریدار حمد ہے تیرے لیے تو نگہبان حمد ہے حمد ہے تیرے لیے تو قد کی حمد والا ہے اور حمد ہے تیرے لیے کہ تو وعدے میں

**** الُحَـمُدُ قَدِيْمَ الْحَمُدِ وَلَكَ الْحَمُدُ صَادِقَ الْوَعْدِ وَفِيَّ الْعَهْدِ عَزِيْزَ الْجُنُدِ قَائِمِ الْمَجُدِيِّ سچا عبد پورا كرنے والاتو انا كشكروا لا با ئيرار برزرگى والا با ورحم بتير ك ليے تو او فيح درجوں والا ب دعائيں قبول وَلَكَ الْحَمْدُ رَفِيْعَ الدَّرَجَاتِ مُجِينَبَ الدَّعَوَاتِ مُنْزِلَ الْأَيَاتِ مِنْ فَوُقِ سَبْع سَمْوَاتٍ كرنے والا بساتوں أسانوں سے بلندر مقام سے آیات ازل كرنے والا بير كتوں والا بوركوتا ريكيوں سے عَظِيْمَ الْبَرَكَاتِ مُخُرِجَ النَّوُرِ مِنَ الظُّلُمَاتِ وَ مُخُرِجَ مَنُ فِي الظُّلُمْتِ اِلَى النَّوُرِ مُبَدِّلَ نکالنے والا ہے تا ریکیوں میں روٹ کے وروشنی کی طرف لانے والا ہے گنا ہوں کوئیکیوں میں بدلنے والا ہے اور نیکیوں کومرا تب السَّيِّئَاتِ حَسَنَاتٍ وَّ جَآعِلَ الْحَسَنَاتِ دَرَجَاتٍ اَللَّهُمَّ لَكَ الْحَمُدُ غَافِرَ الذُّنُب وَ قَابلَ میں بدلنے والا ہے اےمعبو دتیرے لیے حمد ہے کہ تو گنا ہ معاف کرنے والاتو بہ قبول کرنے والاسخت عذاب دینے والاعطا السُّوبِ شَدِيْدَ الْعِقَابِ ذَا الطُّولِ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ إِلَيْكَ الْمَصِيْرُ اَللَّهُمَّ لَكَ الْحَمُدُ فِي کرنے والا ہے نہیں کوئی معبو دسوائے تیرے ہا زگشت تیری ہی طرف ہےا ہے معبو د تیرے لیے حمد ہے راہ میں جب وہ چھا اللَّيُل إِذَا يَغُشٰى وَلَكُ الْحَلْمُدُ فِي النَّهَا ﴿ إِذَا لَجَلَّى وَ لَكُ الْحَلْمُ فِي الْأَخِرَةِ وَ الْأَوْلَى جائے تیرے لیے حدہ ون میں جب وہ روش ہوجائے تیرے لیے حدہ و نیااور آخرے میں تیرے لیے حدہ آسان کے لَكَ الْحَـمُدُ عَدَدَ كُلِّ نَجْمٍ وَّ مَلَكٍ فِي السَّمَآءِ وَ لَكَ الْحَمُدُ عَدَدَ الثَّرَاى وَ الْحَطي ستاروں اور فرشتوں کے تعدا دکے ہر اہر تیرے لیے حمہ ہے خاک اور رہت کے ذروں اور پچلوں کی تصلیوں کی تعدا دکے ہرا ہر النُّوى وَ لَكَ الْحَمُدُ عَدَدَ مَا فِي جَوِّ السَّمَآءِ وَ لَكَ الْحَمُدُ عَدَدَ مَا فِي جَوُفِ الْآرُضَ تیرے لیے حدہے فضاء آسان میں موجو دجیزوں کی تعدا دے برابرتیرے لیے حدہے تبہ زمین میں موجود چیزوں کی تعدا دکے وَ لَكَ الْحَمُدُ عَدَدَ اَوُزَانِ مِيَاهِ الْبِحَارِ وَ لَكَ الْحَمُدُ عَدَدَ اَوُرَاقِ الْاَشْجَارِ وَ لَكم برابرتیرے لیے حمد ہے سمندروں کے بیانیوں کے برابرتیرے لئے حمد ہے درختوں کے بیوں کی تعدا د کے برابرتیرے لیے حمد الُحَمُدُ عَدَدَ مَا عَلَى وَجُهِ الْآرُضِ وَ لَكَ الْحَمُدُ عَدَدَ مَاۤ أَحُطٰى كِتَابُكَ وَ لَكَ الْحَا ہے زمین پرموجود چیز ول کی تعدا دے ہرا ہرتیرے لیے حدہ تیری کتاب میں موجو د تعدا دیے ہرا ہرتیرے لیے حدہ تیرے عَدَدَ مَاۤ اَحَاطَ بِهِ عِلْمُكَ وَ لَكَ الْحَمُدُ عَدَدَ الْإِنْسِ وَ الْجِنِّ وَالْهَوَآمِّ وَ الطَّيْرِ وَ الْبَهَآ علم میں موجود تعدا د کے برابر تیرے لیے حمہ ہانیا نوں جنوں کیڑوں پر ندوں مویشیوں اور درندوں کی تعدا د کے برابر جوحمہ

وَ السِّبَاعِ حَـمُدًا كَثِيهُ رًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيهِ كَمَا تُحِبُّ رَبَّنَا وَ تَرُضٰى وَ كَمَا يَنُبَغِي لِكَرَم اس میں زیا د ہ پا کاور باہر کت ہوجیسی حمراے پر وردگا رکھتے بیندا ورجس پرتو راضی ہے جیسی حمد تیری شان کرم اور تیری وَجُهِكَ وَ عِزَّ جَلَالِكَهُ وَسِرتِهِ كِي: لاَّ إِلَّهَ إِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلُكُ وَ جلالت ذات کے لائق ہے منہیں کوئی معبو دسوائے خدا کے جو یکتا ہے جس کا کوئی ٹاٹی نہیں اسی کیلئے الْحَمُدُ وَ هُوَ اللَّطِيُفُ الْخَبِيُرُ - صَمِرتِهِ كِيهِ لاَّ اللَّهُ وَحُدَهُ لا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ ملک ہے اسی کیلئے حمہ ہے اور وہ ہا ریک بین وخیر دا رہے سنہیں کوئی معبو دسوائے اللہ کے جو یکتا ہے جس کا کوئی ٹانی نہیں اسی لَـهُ الْـحَـمُدُ يُحْيِيُ وَ يُمِيُتُ وَ يُمِيْتُ وَ يُحِيىُ وَهُوَ حَيٌّ لاَّ يَمُوُتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَ هُوَ عَلَى کیلئے ملک اسی کیلئے ہے حمد جو زند وکرتا اور مارتا ہے جو مارتا اور زند و کرتا ہے اور و وزند ہے جسے موت نہیں اسی کے ہاتھ میں ہے كُلِّ شَيْءٍ قَدِيُرٌ ـ رَسِم تِهِ كِي: اَسُتَخْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَّهَ اللَّهَ اللَّهُ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهُ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهُ اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللَّالَةُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّه خیراوروہ ہر چیز پر قادر ہے مجھش جا ہتا ہول اللہ سے جس کے سواکوئی معبود نہیں وہ زندہ و پائندہ ہےا وراسی کے وَى مرتبه: يَا اَللَّهُ يَا اَللَّهُ مِنَ الرَّهِ: ﴾ رَحُمنُ يَا رَحُمنُ إِنَا رَحُمنُ اللَّهُ مِن رتبه: حضورتو بركتا جول بالله بالله الدرحمت كرنے والے اے رحمت كرنے والے اے مهر بان اے مهر بان يًا بَدِيْعَ السَّمُواتِ وَ الْاَرُض مِن مِن بَهِ: يَا ذَا الْجَلال وَ الْإِكْرَام مِن رَبِّ: يَا حَنَّانُ يَا ا ہے آسانوں اورزمین کے پیدا کرنے والے اے صاحب جلالت ویز رگی اے مہر بانی کرنے والے اسے احسان کرنے والے مَنَّانُ -وَں مرتبہ: يَا حَيُّ يَا قَيُّوُمُ -وَں مرتبہ: يَا حَيَّ لاَّ إِلٰهَ إِلاَّ ٱنْتَ -وَں مرتبہ: يَا اَللّٰهُ يَا لاّ إِلٰهَ إِلَّا اےزندہ نہیں کوئی معبو دسوائے تیرے اےاللہ اےوہ ڈات نہیں کوئی معبو د اَنْتَ ـوَرَهِرِتِهِ: بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِـوَرَهِ:اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آل سوائے تیر سےخدا کے نام سے جو بڑا مہر با ان نہا ہے رحم والا ہے ۔ اے معبو درحمت فرما محمد و آل محمد میں مُحَمَّدٍ ـوَںمرتبہ:اَللَّهُمَّ افْعَلُ بِيُ مَآ اَنْتَ اَهُلُهُ وَںمرتبہ:امِیْنَ امِیُنَ۔وَںمرتبہ:قُلُ هُوَ اللّهُ ا ہے معبود میرے ساتھ وہ رہتا وکرجس کا تو اہل ہے۔ ایسا ہی ہوا بیا ہی ہو کبو(اے نبی)اللہ ایک ہے اے معبود اَحَدُّ ﴾ اللَّهُمَّ اصْنَعُ بِي مَآ اَنُتَ اَهُلُهُ وَلاْ تَصْنَعُ بِي مَآ اَنَا اَهُلُهُ فَاِذَّكَ اَهُلُ التَّقُوٰى وَ میرے ساتھ وہ سلوک کرجس کا تو اہل ہے اور مجھ ہے وہ نہ کرجس کا میں اہل ہوں بے شک تو بچانے والا اور بخشنے والا ہے

اَهُ لُ الْدَمَ فُهُ وَرَةٍ وَ اَنَا آهُ لُ الذُّنُوبِ وَ الْحَطَايَا فَارُحَمُنِى يَا مَوُلاَى وَ اَنْتَ اَرُحَمُ اور يُسَ ثَمَا الْدَهُ فُهُ وَالا اور فلا ثَيْلَ اللهُ عَلَى الْمَوْلِ اللهِ اللهِ عَلَى الْمَوْلِ اللهِ وَالا اور فلا ثَوْدَ وَالا عَلَى اللهِ عَلَى الْحَيِّ اللّهِ عَلَى الْحَيْلُ اللّهِ عَلَى الْحَيِّ اللّهِ عَلَى الْحَيِّ اللّهِ عَلَى الْحَيِّ اللّهِ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الْحَيِّ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ وَاللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ وَاللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ وَاللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ وَ كَبُولُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الل

بیان کرتے رہا کرو۔

(۴) دعائے سمات : بید عاجم مشہور و متند دعاؤں میں سے ایک دعا ہے۔ جو کتب دعا میں صفر سے امام محمد باقر القیلائے سمات : بید عالمی مشہور و متند دعاؤں میں سے ایک دعا ہے۔ جو کتب دعا میں اسم اعظم موجود ہے۔ یہاں تک مروی ہے کدا گر لوگا و کو اس دعا کی وہ طلم ہے معلوم ہوتی جو ہمیں معلوم ہے تو اس پر تلواروں سے باہم جنگ کرتے ۔ نیز ید دعا حضر ت امام العصر عجل اللہ تعالی فرجۂ الشریف کے مائی ب خاص جنا ہے جمد بن عثان عمری ہے بھی منقول ہے اور بید دعا جمعہ کے دن اس کی آخری ساعت میں پڑھی جاتی ہے۔ (مصباح شیخ طوی، مصباح کفعمی، محمال الاسبوع ابن طاؤوں، زا والمعا و بھسی، کتاب الدعاوالزیارہ و غیرہ و غیرہ و

اَللَّهُمَّ إِنِّى اَسْفَلُکَ بِالسَمِکَ الْعَظِیْمِ الْاَعْظَمِ الْاَعْزِ الْاَجَلِ الْاَکُومِ الَّذِی إِذَا دُعِیْتَ إِلَى السَّمُ الْعَظِیْمِ الْاَعْزِ الْاَجَلِ الْاَکُومِ الَّذِی إِذَا دُعِیْتَ إِلَى السَّمَاءِ لِلْفَتُحِ بِالرَّحْمَةِ النَّفَتَحَتُ وَ إِذَا دُعِیْتَ بِهِ عَلَى مَضَائِقِ عَلَى مَعَائِقِ اللَّهُ اللَّ

دُعِيُتَ بِهِ عَلَى الْآمُوَاتِ لِلْنُشُورِ انْتَشَرَتُ وَ إِذَا دُعِيْتَ بِهِ عَلَى كَشُفِ الْبَأْسَاءِ وَ نام سے پکاریں تو آسانی ہو جائے اور جب مردول کواٹھانے کے لیے بچھے اس نام سے پکاریں تو وہ اٹھ کھڑ ہے ہوں اور الطُّـرَّاءِ انْكَشَفَتُ وَ بِجَلالَ وَجُهِكَ الْكَرِيْمِ اكْرَمِ الْوُجُوْهِ وَ اَعَزِّ الْوُجُوْهِ الَّذِي عَنَتُ جب تنگیاں سختیاں دور کرنے کے لیے مجھے اس مام سے پکاریں تو وہ دور ہو جائیں اور سوالی ہوں تیری ذات کریم کے لَـهُ الْـوُجُـوُهُ وَ خَصَعَتُ لَهُ الرِّقَابُ وَ خَشَعَتُ لَهُ الْاَصُوَاتُ وَ وَجلَتُ لَهُ الْقُلُوبُ مِنُ جلال کے ذریعے جوسب سے ہزرگ ذات سب سے معز ز ذات کہ جس کے آگے چپر سے جھکتے ہیں اس کے سامنے کر دنیں مَخَافَةِكَ وَ بِقُوَّتِكَ الَّتِي بِهَا تُمُسِكُ السَّمَآءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرُضِ الَّا بِاذُنِكَ وَ تُمُ ﴿ كُ خم ہوتی ہیں اس کے حضور آ وازیں کا نمتی ہیں اور دل خوف زدہ ہو جاتے ہیں سوال کرتا ہوں تیری اس قوت کے ذریعے السَّمْوَاتِ والْاَرُضَ اَنُ تَـزُولاً وَ بِـمَشِيَّةِكَ الَّتِـيُ دَانَ لَهَـا الْعَالَمُونَ وَ بِكَلِمَةِكَ الَّةِ جس سے تونے آسان کوزبین پر گرنے سے روک رکھا ہے مگر جب تواسے تھم دےا وراس سے آسان اور زمین کورو کا ہوا خَلَقُتَ بِهَا السَّمْوَاكِ وَ الْأَرْضُ وَ بِحِكْمَةٍ كُ الَّتِي صَنَعْتُ بِهَا الْعَجَائِبَ وَ خَلَقُتَ بِهَ ہے کہ کھسک نہ جائمیں اور تیری مثبت کے ذریعے سوالی ہوں عالمین جس کے مطبع ہیں تیرےان کلمات کے واسطے سے الطُّلُمَةَ وَ جَعَلْتَهَا لَيُّلا وَّ جَعَلْتَ اللَّيُلَ سَكَّنًا وَّ خَلَقُتَ بِهَا النُّورَ وَجَعَلْتَهُ نَهَارًا وَّ سوالی ہوں جن سے تو نے آسا نوں اور زمین کو پیدا کیا تیری حکمت کے واسطے سے جس سے تو نے مجیب چیزیں بنا نمیں اور جَعَلُتَ النَّهَارَ نُشُوْرًا مُّبُصِرًا وَّ خَلَقُتَ بِهَا الشُّمُسَ وَ جَعَلُتَ الشُّمُسَ ضِيَآءً وَّ خَلَقُتَ جس سے تونے تاریکی بنائی اوراسے راہ قرار دیا اوراہے آ رام کے لیے خاص کیاا پی تھمت سے تونے روشنی پیدا کی اور بِهَا الْقَـمَـرَ وَ جَعَلْتَ الْقَمَرَ نُوْرًا وَّ خَلَقُتَ بِهَا الْكُوَاكِبَ وَجَعَلْتَهَا نُجُوُمًا وَّ بُرُوجًا وَّ اسے دن کانا م دیاا وردن کوجا گ اٹھنے اور دیکھنے کے لیے بنایا تو نے اس سے سورج کو پیدا کیاا ورسورج کوروش کیا تو نے مَصَابِيُحَ وَّ زِيْنَةً وَّ رُجُومًا وَّجَعَلُتَ لَهَا مَشَارِقَ وَ مَغَارِبَ وَ جَعَلُتَ لَهَا مَطَالِعَ وَ اس سے جاند کو پیدا کیا اور چاند کو چکد اربنایا ورتونے اس سے ستاروں کو پیدا کیاانبیں فروزاں کیاان کے ہرج بنائے مَجَارِيٰ وَ جَعَلُتَ لَهَا فَلَكًا وَّ مَسَابِحَ وَ قَدَّرُتَهَا فِيُ السَّمَآءِ مَنَازِلَ فَٱحُسَنُتَ تَقُدِيُرَهَا وَ انہیں جہاغ بنایا اور زینت بنایا تنکبار بنایا تو نے ان کے لیے طلوع اورغروب کے مقام بنائے تو نے ان کے حیکنے اور جلنے کی

صَوَّرُتَهَا فَأَحُسَنُتَ تَـصُوِيُرَهَا وَ أَحُصَيْتَهَا بِأَسُمَآئِكَ إِحُصَآءً وَّ دَبَّرُتَهَا بِحِكُمَةِكَ را ہیں بنا تمیں تو نے ان کے لیے فلک اور سیر کی جگہ بنائی اور آسان میں ان کی منزلیں مقر رکیں پس تو نے ان کا بہترین تَـدُبِيُـرًا وَّ أَحُسَنُتَ تَدُبِيُرَهَا وَ سَخُّرُتَهَا بِسُلُطَانِ اللَّيُلِ وَ سُلُطَانِ النَّهَارِ وَ السَّاعَاتِ وَ انداز وکٹہرایا اورانہیںشکل عطا کی تو نے انہیں کیا ہی احجی شکل دی اورانہیں اپنے ناموں کے ساتھ یو ری طرح شار کیا اور عَـدَدِ السِّنِيُنَ وَ الْحِسَابِ وَ جَعَلْتَ رُؤُيتَهَا لِجَمِيْعِ النَّاسِ مَرُئٌ وَّاحِدًا وَّ اَسْئَلُكَ اَللَّهُمَّ ا پنی حکمت سے ان کا ایک نظام قائم کیاا ورخوب تد پیرفر مائی ا ورانہیں مطیع بنایا رات کے عرصےا ور دن کی مدت کے لیے ا ور بِمَجْدِكَ الَّذِي كَلُّمُتَ بِهِ عَبُدَكَ وَ رَسُولَكَ مُوْسَى بُنَ عِمُرَانَ عَلَيْهِ السَّلامُ ساعتوں اور سالوں کے حساب کا ذریعہ بنایا اور سب لوگوں کے لیے ان کو دیکھنا کیسال کر دیا اور سوال کرتا ہوں تھھ سے الْمُقَدَّسِيُّنَ فَوُقَ إِحُسَاسِ الْكُرُوبِيُنَ فَوُقَ غَمَائِمِ النُّوْرِ فَوُقَ تَابُوُتِ الشَّهَادَةِ فِي ا ے اللہ تیری ہز رگی کے ذریعے جس سے تونے اپنے بندے اور رسول حضرت موی علیہ السلام سے کلام فر مایا یا ک لوگوں عَـمُودِ النَّارِ وَ فِلَى ظُورُ سَيْنَاعَ وَ فَيْ جَيَلِ خُوْرِيْتُ فِي الْرَادِ الْمُقَدَّسِ فِي الْبُقُعَةِ میں جوفرشتوں کی سمجھ سے بالانور کے با دلوں سے بلند تا ہوت شہا دے سے اونچا کہ جوآ گ کے ستون میں طور سینامیں کو ہ الْـمُبَارَكَةِ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْآيُمَنِ مِنَ الشُّجَرَةِ وَ فِيُ اَرُضِ مِصْرَ بِتِسُعِ آيَاتٍ ، بَيّنَاتٍ حوریث میں وا دی مقدس میں ہر کت والی زمین میں طورا میمن کی طرف کے ایک درخت سے سرز مین مصر میں ہوا سوال کرتا وَ يَـوُمَ فَـرَقُتَ لِبَنِـيُ إِسُرَائِيُلَ الْبَحُرَ وَ فِي الْمُنْبَحِسَاتِ الَّتِي صَنَعُتَ بِهَا الْعَجَائِبَ فِي ہوں نوم بحز ول کے واسطے سے اور دن کے واسطے سے کرتو نے بنی اسرائیل کو دریا میں راستہ دیا اور دریائے سوف میں مجیب بَحُر سُوُفٍ وَّ عَقَدتَّ مَاءَ الْبَحُرِ فِي قَلْبِ الْغَمُر كَالْحِجَارَةِ وَ جَاوَزُتَ بِيَنِي اِسُرَائِيُلَ چشمے بنا دیئےا ورتو نے دریا کے پانی کو جکڑ کے رکھ دیا بھنور کے درمیان پھروں کی ما نندا ورتو نے بنی اسرائیل کو دریا ہے البَحُرَ وَ تَـمَّتُ كَلِـمَتُكَ الْحُسُنٰي عَلَيْهِمُ بِمَا صَبَرُوا وَ اَوْرَثْتُهُمُ مَشَارِقَ الْاَرْض گزار دیا اوران کے بارے میں تیرا بہترین وعد واپورا ہوا جب انہول نے صبر کیا اور تو نے ان کو مالک بنایا زمین کے مَغَارِبَهَا الَّتِي بَارَكُتَ فِيُهَا لِلْعَالَمِيْنَ وَ أَغُرَقُتَ فِرُعَوُنَ وَ جُنُوْدَهُ وَ مَرَاكِبَهُ فِي الْيَمِّ وَ مشرقوں اورمغربوں کا جن میں تو نے عالمین کے لیے ہر کتیں رکھی ہیں اورغرق کر دیا تو نے فرعون اوراس کے لشکروں کواور

********************** بِ اسْمِكَ الْعَظِيْمِ الْاَعْظِمِ الْاَعْزِ الْاَجَلِّ الْاَكْرُمِ وَ بِمَجُدِكَ الَّذِي تَجَلَّيْتَ بِهِ لِمُوْسَيَ ان کی سوا رایوں کو دریائے نیل میں اور سوالی ہوں بوا سطہ تیرے ام کے جو بلند برتر عزت والا روشن تر بزرگی والا ہے اور كَلِيُ مِكَ عَلَيْهِ السَّلاُّمُ فِي طُور سَيْنَآءَ وَ لِإِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ السَّلاُّمُ خَلِيُلِكَ مِنُ قَبُلُ فِيْ بوا سطہ تیری شان کے جوتو نے ظاہر کی اپنے کلیم موک علیہ السلام کے لیے طور سینا میں اور اس سے پہلے اپنے خلیل اہر اہیم علیہ مَسْجِدِ الْخَيُفِ وَ لِإِسْحَاقَ صَفِيَّكَ عَلَيْهِ السَّلاَّمْ فِي بِئُرِ شِيَعٍ وَّ لِيَعُقُوْبَ نَبِيّكَ عَلَيْهِ السلام کے لیےمبحد خیف میں اورا پنے برگزید واسحاق علیہالسلام کے لیے جا وہ بع میں اورا پنے نبی یعقوب علیہالسلام کے السَّلاَمَ فِي بَيْتِ إِيْلِ وَّ اَوْفَيْتَ لِإِبُرَاهِيُمَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ بِمِيْثَاقِكَ وَ لِإسُحٰقَ بحَلْفِكَ ﴿ لیے بیت ایل میں اور تو نے اہرا ہیم علیہ اسلام سے اپنا عہد و پیان پو را کیا اورا سحاق میں کے لیے اپنی تسم پو ری کی اور پھوب لِيَعْقُوبَ بِشَهَادَتِكَ وَ لِلُمُؤُمِنِيُنَ بِوَعُدِكَ وَ لِلدَّاعِيْنَ بِأَسْمَائِكَ فَأَجَبُتَ وَ بِمَجُ کے لیے اپنی شہا دے ظاہر کی مؤمنین سے اپنا وعدہ وفا کیا جنہوں نے تیرے ماموں کے ذریعے دعائیں کیں انہیں قبول کیا الَّذِي ظَهَرَ لِمُوْسَى بُلٍ عِمْرَانَ عَلَيْهِ السَّلالْمُ عَلَى قَبِّةِ الرُّمَّانِ وَ بِآيَاتِكَ الَّتِي وَقَعَتُ عَلَى أَ ا ورسوا لی ہوں بواسطہ تیری شان کے جو قبہ کر مان پرموٹ علیہ السلام کے لیے ظاہر ہوئی اور بواسطہ تیر مے مجمز وں کے جوملک اَرُضِ مِصْرَ بِمَجْدِ الْعِزَّةِ وَ الْعَلَبَةِ بِآيَاتٍ عَزِيْزَةٍ وَ بِسُلُطَانِ الْقُوَّةِ وَ بِعِزَّةِ الْقُدُرَةِ وَ مصر میں رونما ہوئے تیری شان وعزت اورغلبہ سےعزت والی نٹانیوں سے غالب قوت سے قدرت کی بلندی اور پورا بِشَأْنِ الْكَلِمَةِ التَّامَّةِ وَ بِكَلِمَاتِكَ الَّتِي تَفَضَّلْتَ بِهَا عَلَى اَهُلِ السَّمْوَاتِ وَ الْاَرْضِ وَ ہونے والے قول کی شان سے اور تیرے ان کلمات سے جن کے ذریعے تونے آسا نوں اور زمین کے رہنے والوں اور اہل اَهُـل الـذُّنُيَــا وَ اَهُـل الْـآخِـرَـةِ وَ بـرَحُـمَةِكَ الَّتِـيُ مَنَنُتَ بِهَـا عَلَى جَمِيُع خَلُقِكَ و نیاا ورابل آخرے پر احسان کیا سوالی ہوں بوجہ تیری رحمت کے جس سے تو نے اپنی ساری مخلوق پر کرم کیا سوالی ہوں تیری بِاسْتِطَاعَةِكَ الَّتِي اَقَمْتَ بِهَا عَلَى الْعَالَمِينَ وَ بِنُورِكَ الَّذِي قَدُ خَرَّ مِنُ فَزَعِهِ طُورُ سَيْنَا ﴿ تو انا ئی کے واسطے سے جس سے تو نے اہل عالم کو قائم رکھا سوالی جول بواسطہ تیرے نور کے جس کے خوف سے طور سینا تھانا وَ بِعِلْمِكَ وَ جَلاَلِكَ وَ كِبُرِيَ آئِكَ وَ عِزَّتِكَ وَ عِزَّتِكَ وَ جَبَرُونِيكَ الَّتِي لَمُ تَسُتَقِلُهَا الْارْ عُلُ وَ چو رہوا سوالی ہوں بوا سطہ تیرے علم وجلالت تیری بڑائی وعزت اور تیرے جبروت کے جس کوزبین ہر واشت نہ کرسکی اور

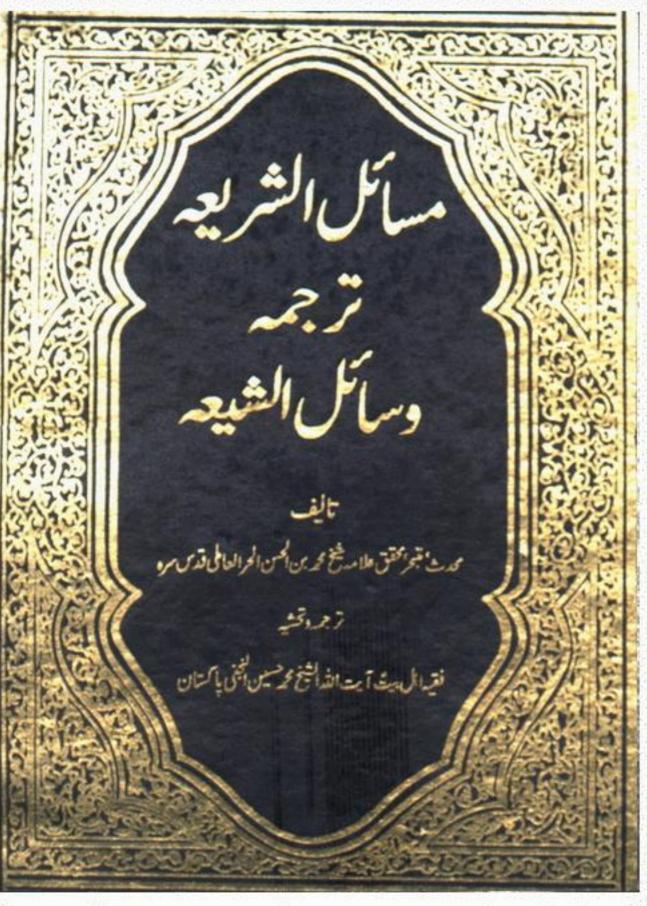
انُخَفَظَتُ لَهَا السَّمْوَاتُ وَ انْزَجَرَ لَهَا الْعُمْقُ الْآكْبَرُ وَ رَكَدَتُ لَهَا الْبِحَارُ وَ الْآنُهَارُ وَ آ سان عاجز ہو گئے اور اس سے زمین کی گہرائیاں کیکیا کئیں جس کے آ محے سمندر اور نہریں رک گئے پہاڑ اس کے لیے خَـضَـعَتُ لَهَا الْجِبَالُ وَ سَكَنَتُ لَهَا الْآرُضُ بِمَنَاكِبِهَا وَ اسْتَسُلَمَتُ لَهَا الْخَلاَئِقُ كُلُّهَا حجمک گئے اور زمین اس کے لیےا پنے قدروں پر رک گئیا س کے سامنے ساری ہی مخلوق سرنگوں ہو گئیا پی روؤں پر چکتی وَ خَفَقَتُ لَهَا الرِّيَا حُرِفِي جَرَيَانِهَا وَ خَمَدَتُ لَهَا النِّيُرَانُ فِي اَوْطَانِهَا وَ بسُلُطَانِكَ الَّذِي ہوا ئیں اس کے سامنے پر بیثان ہو کئیں اس کے لیے آ گا ہے مقام پر بجھ گئی سوالی ہوں بوا سطہ تیری حکومت کے جس کے عُـرِفَتُ لَكَ بِهِ الْغَلَبَةُ دَهُرَ الدُّهُوْرِ وَ حُمِدتٌ بِهِ فِي السَّمْوَاتِ والْاَرَضِيْنَ وَ بِكَلِمَتِكَ ذریعے ہمیشہ ہمیشہ تیرے غلبے کی پیچان ہوتی ہے اور آسانوں اور زمین میں اس سے تیری حمد ہوتی ہے سوالی ہوں بواسطہ كَلِمَةِ الصِّدُقِ الَّتِي سَبَقَتُ لِاَبِيُنَا آدَمَ عَلَيْهِ السَّلاَّمُ وَ ذُرِّيَّتِهِ بِالرَّحْمَةِ وَ اَسُئَلُكَ تیرے سے قول کے جوتونے ہمارے باپ آ دم اوران کی اولا دکے لیے رحمت کے ساتھ فر مایا ہے سوالی ہوں بوا سط تیرے بِكَلِمَتِكَ الَّتِي غَلَبَكُ كُلُّ شَيْءٍ وَابِنُولِ وَإِجْهِكُ الَّذِي تَلِحَلُّهُ بِهِ لِلْجَبَلِ فَجَعَلْتَهُ دَكَّا إِلَّ کلمہ کے جوتمام چیزوں پر غالب ہے سوالی ہوں بواسطہ تیری ذاہ کے نور کے جس کا جلوہ تو نے پہا ڑپر ظاہر کیاتو وہ لکڑے خَرَّ مُوُسىٰ صَعِقًا وَّ بِمَجُدِكَ الَّذِي ظَهَرَ عَلَى ظُوْرٍ سَيْنَآءَ فَكَلَّمُتَ بِهِ عَبُدَكَ وَ رَسُوْلَا کلڑے ہواا ورموی کا بے ہوش ہوکر کر پڑے سوالی ہوں بواسطہ تیری ہز رگی کے جوطور سیناپر ظاہر ہوئی تو کلام کیا تونے اپنے مُـوُسَى بُنَ عِمُرَانَ وَ بِطَلُعَتِكَ فِيُ سَاعِيُرَ وَ ظُهُوُرِكَ فِي جَبَلِ فَارَانَ بِرَبَوَاتِ الْمُقَدَّسِ بندے اوراپنے رسول موک ہیں عمران سے سوالی ہوں بواسط ساعیر پر تیرے چیکا راورکوہ فاران پر تیرے ظہور کے جو وَ جُنُودِ الْمَلائِكَةِ الصَّافِّيُنَ وَ خُشُو عِ الْمَلائِكَةِ الْمُسَبِّحِيْنَ وَ بِبَرَكَاتِكَ الَّتِي بَارَكُتَ یا کبازوں کے ٹیلوں پر مفیں بائد سے ہوئے ملا تک پر اور سیح خواں ملا تک کے خوف پر ہوا سوال کرتا ہوں بوا سط تیری بر کا ت فِيُهَا عَلَى إِبْرَاهِيُمَ خَلِيُلِكَ عَلَيْهِ السَّلاَّمُ فِي أُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَ بَارَكُتَ کے جن سے تو نے اپنے خلیل اہراہیم علیہ السلام کو حضر ہے محمصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی ا مت میں ہر کت دی اورا پنے ہر گزید و لِإِسْحَاقَ صَفِيَّكِ فِيُ أُمَّةِ عِيُسْلِي عَلَيْهِمَا السَّلاُّمْ وَ بَارَكُتَ لِيَعْقُونِ اِسُرَائِيُلِكَ فِي أُ اسحاق * کوهفرے عیملی علیہالسلام کی امت میں ہر کت دی اور ہر کت دی تو نے اپنے اسرائیل بعقوب کوهفرے موکی علیہ

مُوْسلي عَلَيُهِ ما السَّلاُّمْ وَ بَارَكُتَ لِحَبِيبُكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ فِي عِتُرَتِهِ وَ السلام کی امت میں اور برکت دی تو نے اپنے حبیب حضر ہے محمصلی اللہ علیہ وہ لیہ وسلم کوان کی عمر ہے اور ذریت اوران کی ذُرِّيَّتِهِ وَ أُمَّتِهِ اَللَّهُمَّ وَكَمَا غِبُنَا عَنُ ذَالِكَ وَ لَمُ نَشُهَدُهُ وَ آمَنًا بِهِ وَ لَمُ نَرَهُ صِدُقًا وَ عَدُلا ا مت میں جبیہا کہ ہم ان کے عبد میں موجود نہ تھے ہم نے انہیں دیکھانہیں اوران پر راستی اور درتی سے ایمان لائے ہم اَنُ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ آل مُحَمَّدٍ وَ اَنُ تُبَارِكَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آل مُحَمَّدٍ وَ تَرَحَّمَ عَلَم عاہے ہیں کدر حمت فرما محمدٌ وآل محمدٌ پر اور ہر کت نا زل فرما محمدٌ وآل محمدٌ پر اور شفقت فرما محمدٌ وآل محمدٌ پر جس طرح تو نے مُحَمَّدٍ وَ آل مُحَمَّدٍ كَافُضَل مَا صَلَّيْتَ وَ بَارَكُتَ وَ تَرَحَّمُتَ عَلَى إِبُرَاهِيُمَ وَ آل بہترین رحمت اور برکت اور شفقت ابراہیم وآل ابراہیم پرفر مائی تھی بے شک تو حمداور شان والا جوجا ہے سوکرنے والا ہے إِبُرَاهِيُمَ إِذْكَ حَمِيُدٌ مَجِيُدٌ فَعَالٌ لِمَا تُرِيُدُ وَ أَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيُرُّبِ إِيْ عاجت بإن اورتو ہر چیز پر قدرت رکھتاہے۔ رَاوَرَكِ: ٱللَّهُمَّ لِمُحَلِّقُ هَذَا الذُّعَآلِ وَلِمَحَقَّ هَذِهِ ٱلْأَسْمَآءِ الَّهِي لاَ يَعُلَمُ تَفُسِيرُهَا وَ ا ہے معبو د! اس دعاء کے واسطے سے اوران نامول کے واسطے سے کہنیں جانتا کوئی ان کی تغییرا وربجز تیر ہے کوئی لاَيَعُلَمُ بَاطِنَهَا غَيْرُكَ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ آل مُحَمَّدٍ وَّ افْعَلُ بِي مَآ ٱنْتَ اَهُلُهُ وَلاَ تَفْعَ ان کی حقیقت ہے آگا ہٰبیں تو رحمت فرما محمد وآل محمد پر اور مجھ ہے وہ سلوک کر جو تیر ہے ثنایا ن ہے نہوہ سلوک جس کا میں مسحق بِيُ مَا أَنَا اَهُـلُـهُ وَاغُـفِـرُ لِيُ مِنُ ذُنُوْبِيُ مَا تَقَدَّمَ مِنُهَا وَ مَا تَأَخَّرَ وَ وَسِّعُ عَلَيَّ مِنُ حَلال ہوں اور بخش دے میرے گنا ہوں میں سے جو میں نے پہلے کیے اور جو بعد میں کئے اور اپنا رزق حلا ل میرے لیے کشا دہ کر رِزُقِكَ وَ اكْفِنِيُ مَؤُوْنَةَ اِنْسَانِ سَوْءٍ وَّ جَارِ سَوْءٍ وَّ قَرِيْنِ سَوْءٍ وَّ سُلُطَانِ سَوْءٍ اِنْكَ عَ دے اور مجھ کو ہرے انسان ہرے ہمسائے ہرے ساتھی اور ہرے حاکم کی اذبیت سے بیچائے رکھ ہے شک تو جوجا ہے وہ مَا تَشَاءُ قَلِدِيْرٌ وَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيُمٌ آمِيْنَ رَبَّ الْعَالَمِيْنَ لِعَصْ لَخُول مِن يول آيا بِكه وَ أَنْتَ كرنے برقا درہا ور ہر چیز كاعلم ركھتا ہے آمين يا رب العالمين اورتو ہر چیز برقد رت ركھتا ہے عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيُرٌ -اس كِ بعد جوعاجت ركة ابواس كاذكر كرے اور كے: يَـــآ اَللَّهُ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ اےاللہ اے محبت کرنے والے اے

يَا بَدِيْكَ السَّمُوٰتِ وَ الْاَرُضِ يَا ذَا الْجَلالِ وَ الْإِكْرَامِ يَاۤ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللَّهُمَّ بِحَقّ احسان کرنے والے اے آسانوں اور زمین کے ایجا دکرنے والے اے جلالت ویزرگی والے اے سب سے زیا دورحم کرنے هلد الدُّعَآءِ من آخراورعلام مجلسيٌ في مصباح سيد بن باقى في الكُوعات كردعات عات كي بعديد عاروه عن والےا ہے معبو داس دعا کے واسطے ٱللَّهُـمَّ بِحَقِّ هٰذَا الدُّعَآءِ وَ بِحَقِّ هٰذِهِ الْاَسُمَآءِ الَّتِي لاَ يَعُلَمُ تَفُسِيُرَهَا وَلاَ تَأُويُلَها وَلاَ ا ہے معبو د!اس دعاء کے واسطے ہے اوران نا مول کے واسطے سے کونبیں جانتا کوئی ان کی تفییرا ورندان کی تا ویل بَاطِنَهَا وَلاَ ظَاهِرَها غَيُرُكَ أَنُ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ آل مُحَمَّدٍ وَّ أَنْ تَرُزُقَنِي خَيْرَ الذُّنُ اور نهان کا باطن اور نهان کا ظاہر سوائے تیرے تو رحمت فر مامحمہ و آل محمہ پرا ورجھے دنیا و آخرے کی بھلائی عطافر ما وَ الْلَاخِرَةِ ـ بَهِرا بِي عاجات طلب كرےاوركے: وَافْعَلُ بِي مَآ أَنْتَ اَهْلُهُ وَلاَ تَفْعَلُ بِي مَآ أَنَآ اَهْلُهُ اور مجھ سے وہ سلوک کر جو تیر ہے شایان ہے نہوہ سلوک جس کا میں وَانُتَقِهُ لِيُ مِنُ فُلَان بُلُ فُلان يَهَالِ إِنَّانَ كَامَ لِلْوَرِيِّ كَا إِنَّا غُفِرُ لِي مِنُ ذُنُوْبِي مَا تَقَدَّمَ مِنَهَا وَمَا تَاخَرَ وَ لِوَالِدَى وَ لِجَمِيعُ الْمُؤْمِنِينَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ وَ وَسِّعُ عَلَىَّ مِنُ حَلالِ سے جوان میں سے پہلے جیںا ورجو پچھلے جیںا ورمیر ہے ماں باپ کے اورسارے مؤمنین ومؤمنات کے گنا و بخش دے اورا پنا رِزْقِكَ وَ اكْفِنِيُ مُؤْنَةَ اِنْسَان سَوْءٍ وَ جَارِ سَوْءٍ وَ سُلُطَان سَوْءٍ وَ قَرِيُنِ سَوْءٍ وَ يَوْم سَوْءٍ رزق حلال میرے لیے کشادہ کردے اور مجھ کوہرے انسان ہرے ہمسائے ہرے حاکم ہرے ساتھی ہرے دن ہری ساعت کی اذبیت وَّ سَاعَةِ سَوْءٍ وَّ انْتَهِمُ لِـيُ مِـمَّـنُ يَكِيُـدُونِيُ وَ مِمَّنُ يَبُغِيُ عَلَيَّ وَيُرِيُدُبِيُ وَ باَهُلِيُ وَ سے بچائے رکھاورمیر ی طرف سے بدلہ لے اس سے جس نے مجھے دعو کا دیا جس نے مجھ پرظلم کیا جو کلم کا ارادہ کرتا ہے میر سے اہل اَوُلادِيُ وَ اِخْـوَانِـيُ وَ جَيْرَانِيُ وَ قَرَابَاتِيُ مِنَ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ ظُلُمًا اِنْكَ عَلَى مَ میری اولا دمیرے بھائیوں میرے ہمسایوں کے لیے جومؤمنین ومؤمنات میں سے ہیں اس سے انقام لے بے شک تو جو پھیچا ہتا تَشَاءُ قَدِيُرٌ وَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيُمٌ امِيُنَ رَبُّ الْعَالَمِيُنَ ﴾ إلى اللَّهُمُّ بحَقَّ هذَا الدُّعَآءِ ہاں پر قدرت رکھتا ہے اور ہر چیز سے واقف ہے آمین اے رب العالمین ۔ اے معبود! اس دعا کے واسطے

تَـفَحُّلُ عَلَى فُقَرَآءِ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ بِالْغِنِي وَ الثُّرُوةِ وَ عَلَى مَرُضَى الْمُؤْمِنِيُنَ وَ یما رمؤ منین و مؤ منات کو سے عطا فر ما غریب مؤمنین ومؤ منات کو مال و متاع الْمُؤْمِنَاتِ بِالشِّفَآءِ وَ الصِّحَّةِ وَ عَلْمَى ٱحُيَآءِ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ بِاللُّطُفِ وَ الْكَرَامَةِ ا و رزند ه مؤمنین ومؤمنا ت پر لطف و کرم فر ما وَ عَلَى اَمُوَاتِ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ بِالْمَغُفِرَةِ وَالرَّحْمَةِ وَ عَلَى مُسَافِر ى الْمُؤْمِنِيُنَ وَ مر د ه مؤمنین ومؤ منات پر پیخشش و رحمت فر ما اور سیا فرمؤمنین و مؤمنات کوسلامتی و رز ق الُـمُـوُّمِـنَاتِ بالرَّدِّ اِلَى اَوُطَانِهِمُ سَالِمِيْنَ غَانِمِيْنَ برَحُمَةِكَ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ صَأَ کے ساتھ گھر و ل میں واپس لا اللُّهُ عَلَى سَيَّدَنَا مُحَمَّدٍ خَاتَم النَّبِيِّينَ وَ عِتُرَتِهِ الطَّاهِرِينَ وَ سَلَّمَ تَسُلِيُمًا كَثِيُرًا لَيُخَابَنِهُم کرنے والے اور رحمت خدا ہو ہما رہے سر دا رنبیوں کے خاتم حضر ہے محد کیر اوران کی پا کیز ہ اولا دیر ا ہے معبو دیس سوال کرتا ہوں بو اسطیاس دعا کی حرمت کے اور بِـمَـافَاتَ مِنْهُ مِنَ الْاَسُمَآءِ وَ بِمَا يَشُتَمِلُ عَلَيْهِ مِنَ التَّفُسِيْرِ وَ التَّدُبِيْرِ الَّذِي لأ يُحِيُطُ بهَ ان ہا موں کے ذریعے جواس میں ند کو رنہیں اوران گفیر وقد ہیر کے واسطے سے سوال کرتا ہوں جس کا سوائے تیر ہے کوئی ا حاطہ إلا أنت أنْ تَفْعَلَ بي كَذَا و كَذَا و كذا (كذااوكذاكى بجائ اين حاجات طلب كرے) -نہیں کرسکتا کہ تو میرے لیے ایساا وراہیا کر۔





وسائل الشیعه کا ترجمه، تیرهویں جلد آب و تاب سے شائع ہو گئی ہے۔ اپنے قریبی بک اسٹال سے طلب فرمائیں۔

(a) دعائے جوشن کبیر :۔

جناب شیخ گفعمیؒ نے مصباح اور بلد الامین میں اور جناب سید ابن طاؤوں نے مجے الدعوات میں اور دوسر ہے علاء کرام نے بھی اپنی کتب دعوات میں اس دعا کا بڑی شرح و بسط کے ساتھ تذکرہ کیا ہے جو ہروایت دعفرت امام زین العابدین القابی حضرت رسول خداصلی اللہ علیہ دآ لہ وسلم سے منقول ہے ۔ جس کا پڑھنا ہاعث حفظ و امان ہاور جو ما و رمضان کی پہلی رات اور لیلۃ القدر میں پڑھی جاتی ہے اوراس کے بڑے اوا ہمنقول ہیں بہر حال وہ دعا ہیہ ہے:

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ

حدا كمام م شروع جويزام بريان نهايت رحم والاب

سُبُحَانَكَ يَا لَا اِللَّهَ اِلَّا ٱنْتَ الْغَوْثِ الْغَوْثِ خَلِّصْنَا مِنَ النَّارِ يَا رَبِّ

تو یا ک ہا ہے وہ کرنہیں کوئی معبود سوائے تیر فریا درسوں کفریا دریں خلاصی دیے میں آگ ہے اے پروردگار

اوربلدالا مين ميں ہے كہ مقال ہے أن إب الله كاور برفضل عربعد كرج كسبُ حَافَكَ يَا لَآ إِلَٰهُ إِلَّا

عدا کنام ہے تو ماک کے اے وہ کر نہیں کوئی

ٱنُتَ الْغَوُتُ الْغَوُتَ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ وَ خَلِّصْنَا مِنَ النَّارِ يَا رَبِّ يَا ذَا الْجَلالِ وَ

معبو دسوائے تیرے فریا درسوں کے فریا در**ی رحمت فر ما محمر**و آ**ل محمر** پراو رخلاصی دے ہمیں آگے سے یا رب اے صاحب جلالت و ہزرگی اے

الْإِكْرَامِ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيُنَ(1)

مب سے زیادہ رحم کرنے والے۔

ٱللُّهُ مَّ إِنِّي ٱسْتَلُكَ يَاۤ ٱللّٰهُ يَا رَحُمٰنُ يَارَحِيْمُ يَا كَرِيْمُ يَا مُقِينُمُ يَا عَظِيبُمُ يَا

ا معبود مين مانكما بول جھے سے تیرے مام سے اساللہ اس بخشے والے اسے مبر مان اس كرم كرنے والے اس تظہرنے والے اس برانى والے

حَلِيْهُ يَا حَكِيْهُ شُبُحَانَ يَا لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ الْغَوْثَ الْغَوْثَ خَلِّصْنَا مِنَ النَّارِ يَارَبِّ(2)

اےسب سے پہلے اعلم والے اے ہر وہاراے حکمت والے تُو یا ک ہے اے وہ کرٹیس کوئی معبو دسوائے تیرے فریا دُسمی فریا دُسمی خلاصی وے

يَاسَيِّدَ السَّادَاتِ يَا مُجِينُبَ اللَّهُ عُوَتِ يَارَافِعَ الدَّرَجَاتِ يَاوَلِيَّ الْحَسَنَاتِ يَا غَافِرَ

ہمیں آگے اے پر وردگا راہے سر داروں کے سر داراے دعا کمیں قبول کرنے والے اے درجے بلند کرنے والے اے نیکیوں میں مدد دینے

***** الُخَطِيُئَآتِ يَامُعُطِيَ الْمَسْئَلاَتِ يَاقَابِلَ التَّوْبَاتِ يَا سَامِعَ الْاَصُوَاتِ يَا عَالِمَ الْخَفِيَّاتِ يَا والےائے گنا ہول کے بخشے والے اسے ماجات بوری کرنے والے اسے وبی اگرنے والے اسے آوازول کے سننے والے اسے جمیسی جیزول کے دَافِعَ الْبَلِيَّاتِ (3) يَا خَيْرَ الْغَافِرِيُنَ يَا خَيْرَالُفَاتِحِيْنَ يَا خَيْرَالنَّاصِرِيْنَ يَاخَيْرَالُحَاكِمِيْنَ يَا جانے والے اے بلائمیں دورکرنے والے (۳) اے بیٹنے والول میں بہتراے فتح کرنے والوں میں بہتر اے مدد کرنے والول میں بہتر اے خَيُسرَ السَّازِقِيْسَنَ يَسا خَيْسرَ الْـوَارِثِيْسَنَ يَاخَيْرَ الْحَامِدِيْنَ يَا خَيْرَ الذَّاكِرِيْنَ يَا حا کموں میں بہتر اےرز ق دینے والوں میں بہتر اےوارثوں میں بہتر اے تھریف کرنے والوں میں بہتر اے ذکر کرنے والوں میں بہتر اے خَيُرَ الْمُحُسِنِيُنَ(4) يَا مَنُ لَهُ الْعِزَّةُ وَالْجَمَالُ يَا مَنُ لَهُ الْقُدُرَةُ وَالْكَمَالُ يَا مَنُ لَهُ الْمُلْكُ میر یا نول میں بہتر اےاحمان کرنے والوں میں بہتر (۴) اے وہ جس کے لیےعزت اور جمال ہےاہے وہ جس کے لیے قدرت اور کمال ہے وَالْحَكَلالُ يَا مَنُ هُوَالْكَبِيُرُ الْمُتَعَالُ يَا مُنْشِيءَ السَّحَابِ الثِّقَالِ يَا مَنُ هُوَ شَدِيُدُ الْمِحَال اے وہ جس کے لیے ملک اور جلال ہےا ہے وہ جو ہز اتی والابلند ہر ہےا ہے جرے یا دلوں کے پیدا کرنے والے اے وہ جو پخت قوت والا ہےا ہے يَا مَنُ هُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ يَا مَلُ هُوَ شَدِيلُ الْعِقَابِ يَامَلُ عِنْدُهُ حُسُنُ النُّوَابِ يَامَنُ عِنُدَةٌ وہ جو تیز تر حماب کرنے والا ہےا ہے وہ جو بخت عذاب دینے والا ہےا ہے وہ چس کے ہاں بہترین تواب ہےا ہے وہ جس کے یا س لوح محفوظ أُمُّ الْكِتَابِ (5)اَللَّهُـمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِإِسْمِكَ يَاحَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَادَيَّانُ يَا بُرُهَانُ يَا سُلُطَانُ ہے(۵) اے معبود تیں جھے ہے سوال کرتا ہوں تیرے نام ہے اے محبت والے اے احمان کرنے والے اے بدلہ دینے والے اے ولیل روشن رِضَوَانُ يَا غَفَرَانُ يَا سُبُحَانُ يَا مُسْتَعَانُ يَا ذَا الْمَنِّ وَالْبَيَانِ(6) يَامَنُ تَوَاضَعَ كُلُّ شَيْءٍ اے صاحب سلطنت اے رامنی ہوتے والے اے بخشے والے اے پاکٹر گی والے اے مدوکرنے والے اے صاحب احمان وہیان (٦) اے وہ لِّعَظَمَتِهِ يَامَنِ اسْتَسُلَمَ كُلُّ شَيْءٍ لِقُدُرَتِهِ يَامَنُ ذَلَّ كُلُّ شَيْءٍ لِعِزَّتِهِ يَا مَنُ خَضَعَ كُلُّ جس کی عظمت کے آ کےسب چیزیں جنگی ہوئی ہیں اے وہ جس کی قدرت کے سامنے ہر منٹی سرگلوں ہےا ہے وہ جس کی ہڑائی کے سامنے ہرچیزیت شَـىٰءٍ لِّهَيْبَتِهِ يَـامَـن انْـقَادَكُلُ شَيْءٍ مِّنُ خَشْيَتِهِ يَامَنُ تَشَقَّقَتِ الْجِبَالُ مِنُ مَّحَافَتِهِ يَامَنُ ہے اے وہ جس کے خوف ہے ہر چیز دنی ہوئی ہے اے وہ جس کے ڈرے ہر چیز فرما نمر داریٹی ہوئی ہے اے وہ جس کے خوف ہے پہاڑ بھٹ قَامَتِ السَّمْوَاتُ بِاَمُرِهِ يَامَنِ اسْتَقَرَّتِ الْآرُضُونَ بِاذْنِهِ يَامَنُ يُسَبِّحُ الرَّعُدُ بِحَمْدِهِ يَامَنُ جاتے ہیں اےوہ جس کے علم ہے آ سان کھڑے ہو گئے اےوہ جس کے اذن سے زمینیں گھیری ہوئی ہیں اےوہ کرکڑ کتی بھی جس کی شیخ خوالا

لْأَيَعُتَدِيُ عَلَى اَهُلِ مَمُلَكَتِهِ (7) يَاغَافِرَالُخَطَايَايَا كَاشِفَ الْبَلايَا يَا مُنْتَهَى الرَّجَايَا يَا اے دہ جوابینے زیر حکومت اوگول پرظلم نہیں کتا (4) اے گنا ہول کے بیشتے والے اے بلائیں دورکرنے والے اے امیدول کے آخری مقام اے مُجُزِلَ الْعَطَايَا يَاوَاهِبَ الْهَدَايَا يَارَازِقَ الْبَرَايَا يَا قَاضِيَ الْمَنَايَا يَا سِامِعَ الشَّكَايَا يَا بهت عطاؤن والے اے تخفے عطا کرنے والے ایجلو ق کورزق دینے والے اے تمنا کمیں پوری کرنے والے اے شکابیتیں سننے والے اسے ملو ق کو بَاعِثَ الْبَرَايَا يَا مُطُلِقَ الْاُسَارِٰى (8) يَـاذَالُـحَـمُدِوَالثُّنَآءِ يَاذَالُفَخُر وَالْبَهَآءِ يَاذَاالُفَضُل زندہ کرنے والے اسے قیدیوں کو آزاد کرنے والے(۸) اس تعریف وثنا والے اس فخر وخوبی والے اسے بزرگی وبلندی والے اسے عبداورو قا وَالْقَصَاءِ يَا ذَاالُعِزَّ وَالْبَقَاءِ يَا ذَاالُجُوْدِوَالسَّخَآءِ يَاذَاالُا لَآءِ وَالنَّعُمَآءِ (9) اَللَّهُمَّ إِنِّي والے اے معافی وینے والے اور رامنی ہونے والے اےعطا و پخشش والے اے فیصلے اور انصاف والے اےعزت اور بقا والے اے عطاء و اَسُـئَـلُکَ بِاسُـمِکَ یَا مَانِعَ یَا دَافِعَ یَا رَافِعُ یَا صَانِعُ یَا نَافِعُ یَا سَامِعُ یَاجَامِعُ یَا شَافِعُ سخاوت والے اے رحمتوں اور تعمتوں والے (9) اے معبود تمیں سوال کرتا ہوں تیرے نامے اے روکتے والے اے بٹائے والے اے بلند وَاسِعُ يَا مُوسِعُ (10) لِلْ طَانِعَ كُلِّ مَصْنُولُ عَ لِمَا تَحَالِقُ كُلِّ مَحْلُولٌ كَارُزاقَ كُلِّ مَرُزُوق يَا كرنے والے اے بنانے والے اے نفع والے اے سننے والے اے جمع كرنے والے اے شفاعت كرنے والے اے كشاد كى والے اے وسعت مَالِكَ كُلِّ مَمْلُوُكِ يَا كَاشِفَ كُلِّ مَكُرُوب يَا فَارِجَ كُلِّ مَهُمُوْم يَارَاحِمَ كُلِّ مَرُحُوا ویے والے(۱۰) اے ہرمعنوع کے صافع اے ہر کلوق کے خالق اے ہررزق یانے والے کے رازق اے ہرمملوک کے مالک اے ہر دکھی کا وکھ يَانَاصِرَ كُلِّ مَخُذُولِ يَا سَاتِرَ كُلِّ مَعُيُوبِ يَا مَلْجَا كُلِّ مَطُرُودٍ(11)يَاعُدَّتِي عِنْدَ شِدَّتِي وور کرنے والے اے ہر پریٹان کی پریٹانی ہٹانے والے اے ہر رحم کیے سکتے پر رحم کرنے والے اے ہر بے سیارا کے مددگاراے ہر براتی پر بلو يَا رَجَآئِنيُ عِنْدَ مُصِيْبَتِيُ يَا مُونِسِيُ عِنْدَ وَحُشَتِيُ يَا صَاحِبِيُ عِنْدَ غُرُبَةِيُ يَاوَلِيّي عِنْدَ ڈا لئے والے اے ہر راند ہے گئے کی بنا وگا ہ (۱۱) استحقٰ کے وقت میر ہے مایہ اے معیبت میں میری امیدگا واے وحشت کے وقت میرے ہمدم نِعُمَتِيُ يَا غِيَاثِيُ عِنُدَ كُرُبَتِيُ يَا دَلِيُلِيُ عِنُدَ حَيْرَتِيُ يَا غَنَآئِيُ عِنْدَ افْتَقَارِي يَا مَلَجَآئِيُ عِنْدَ اے میری تنہائی میں میرے ساتھی الے فعت میں میری کفایت کرنے والے اے د کھ در دمیں میرے مددگاراے جیرت کے وقت میرے دہنما اے اضُطِرَارِيُ يَا مُعِيْنِيُ عِنْدَ مَفُزَعِيُ (12) يَاعَلَامَ الْغَيُوُبِ يَا غَفَّارَ الذُّنُوبِ يَا سَتَّارَالُغَيُوب

************* يَاكَاشِفَ الْكُرُوبِ يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ يَا طَبِيْبَ الْقُلُوبِ يَا طَبِيْبَ الْقُلُوبِ يَا مُنَوَّ رَالْقُلُوبِ يَا اَنِيُسَ سکنا ہوں کے بخشنے والے اسے عیبوں کے چھیانے والے اسے مصیبتیں دور کرنے والے اب دلوں کو پلٹنے والے اب دلوں کے معالج اب دلوں کے الْـقَلُوْبِ يَا مُفَرِّجَ الْهُمُوْمِ يَا مُنَفِّسَ الْغُمُوْمِ (13) اَللَّهُمَّ اِنِّيُ اَسْتَلُکَ بِاِسْمِکَ يَا جَلِيُلُ روتُن کرنے والے اے دلوں کے ہمدم اے قمول کی گر ہ کھو لتے والے اے قموں کو دور کرنے والے (۱۳) اے معبو دہیں سوال کرتا ہول تیرے نا م جَــمِيُــلُ يَا وَكِيُلُ يَا كَفِيُـلُ يَا دَلِيُلُ يَا قَبِيُلُ يَا مُدِيْلُ يَا مُنِيُلُ يَا مُقِيُلُ يَا مُحِيُلُ(14)يَا دَلِيُلَ ے اےجلال دالے اسے تمال دالے اسے کا رما زامے مریر ست اے رہنما اے قبول کرنے والے اے رداں کرنے والے اسے بخشے والے اے الْمُتَحَيِّرِيُنَ يَا غَيَاتَ الْمُسْتَغِيُثِيْنَ يَا صَرِيْخَ الْمُسْتَصُرِ خِيْنَ يَا جَارَ الْمُسْتَجيُريُنَ يَا اَمَانَ معاف کرنے والے اے جگر دینے والے (۱۴) اے سرگر دانوں کے رہنما اے یکارنے والوں کی مدد کرنے والے اے فریا دیوں کی فریا دکو تینیخے الُخَوَائِفِيُنَ يَا عَوُنَ الْمُؤْمِنِيُنَ يَارَاحِمَ الْمَسَاكِيُنَ يَا مَلْجَأَ الْعَاصِيُنَ يَا غَافِرَ الْمُذُنِبِيُنَ يَا والےاہے بنا ہ طلب کرنے والوں کی بنا ہ اے ڈرنے والوں کی ڈھاری اےمومنوں کے مددگا راہے بہجا روں پر رحم کرنے والے اے گنجگاروں مُحِيُبَ دَعُوَةِ الْمُصْطَرِّيُنَ (15) يَا ذَا الْجُودِ وُالْإِلَى صَانَ يَا ذَا الْفَضُلِ وَالْإِمْتِنَانِ يَا کی پناہ اے خطاکا روں کے بخشنے والے اے بیقر ارول کی دعا قبول کرنے والے (۱۵) اےعیا حب جودواحمان اےصاحب فضل ومنت اے ذَاالَامُن وَالْاَمَان يَاذَالُقُدُس وَالسُّبُحَان يَا ذَالُحِكُمَةِ وَالْبَيَانِ يَا ذَاالرَّحُمَةِ وَالرَّضُوَانِ يَا صاحب امن وامان اسطهارت وما کیزگی والے اسے حکمت وہیان والے اے رحمت ورضا والے اسے حجت اورروش دلیل والے اسے عظمت و ذَاالَحُجَّةِ وَالْبُرُهَانِ يَا ذَاالَعَظَمَةِ وَالسُّلَطَانِ يَا ذَاالرَّالُوَافَةِ وَالْمُسْتَعَانِ يَا ذَالُعَفُوَ سلطنت والے اے مہریانی کرنے اور مدد دینے والے اے معافی دینے اور پخشے والے(١٦) اے وہ جو ہر چیز کا پروردگار ہے اے وہ جو ہر شن کا وَالْغَفُرَانِ (16) يَـا مَـنُ هُـوَ رَبُّ كَـلِّ شَـيْءٍ يَّا مَنُ هُوَاللهُ كُلِّ شَيْءٍ يَا مَنُ هُوَ خَالِقُ كُلّ معبود ہےا ہے وہ جوہر چیز کا خالق ہےا ہے وہ جوہر چیز کا بنانے والا ہےا ہے وہ جوہر گئی سے پہلے تھا اسے وہ جوہر کے شَـىُءٍ يَـامَـنُ هُـوَ صَـانِعُ كُلِّ شَيْءٍ يَامَنُ هُوَقَبُلَ كُلِّ شَيْءٍ يَا مَنُ هُوَ بَعُدَ كُلِّ شَيْءٍ يَامَنُ شکی ہے بلند ہےا ہے وہ جو ہرچیز کا جاننے والا ہےا ہے وہ جو ہرچیز پر قا درہےا ہے وہ جو باقی رہے گا جب ہرچیز فنا ہوجائے گی (۱۷) اے معبو د هُوَفُوٰقَ كُلَ شَيْءٍ يَامَنُ هُوَعَالِمٌ بِكُلِّ شَيْءٍ يَا مَنُ هُوَ قَادِرٌ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ يَامَنُ هُوَ يَيُقَلِي

وَيَفُنَى كُلُّ شَيْءٍ (17) اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا مُؤْمِنُ يَامُهَيُمِنُ يَا مُكَوِّنُ يَامُلَقِّنُ نے والے اے مکان دینے والے اے زینت دینے والے اے اعلان کرنے والے اے ہا نٹے والے (۱۸) اے وہ جواپیخ افتر ار نُ يَا مُهَوِّنُ يَا مُمَكِّنُ يَامُزَيِّنُ يَا مُغَلِنُ يَا مُقَسِّمُ (18) يَا مَنُ هُوَ فِي مُلَكِم مُقِيْمٌ يَا مَنُ پر قائم ہےا ہے وہ جوا پٹی سلطنت میں قدیم ہےا ہے وہ جوا پٹی شان میں بلندرتر ہےا ہے وہ جوابیخے بندول پر مہریا ن ہےا ہے وہ جو ہر چیز کا جا ننے والا هُـوَ فِـيُ سُـلُـطَانِهِ قَدِيْمٌ يَامَنُ هُوَ فِيُ جَلالِهِ عَظِيْمٌ يَا مَنُ هُوَ عَلَى عِبَادِهِ رَحِيهٌ يَّامَنُ هُوَ ہےا۔وہ جونا فرمان سےزمی کرتا ہےا۔وہ جوا میدوار پر کرم کرتا ہےا۔وہ جوانی صنعت میں حکمت والا ہےا۔وہ جوانی حکمت میں باریک لَ شَـيْءٍ عَـلِيُــةٌ يَـامَنُ هُوَ بِمَنُ عَصَاهُ حَلِيُهٌ يَّامَنُ هُوَ بِمَنُ رَجَآهُ كُرِيُهٌ يَّامَنُ هُوَ فِي بین ہےاہد ہ جس کا احمال قدیمی ہے(19) اےوہ جس ہے اس کے فضل کی امید کی جاتے وہ جس ہے بخشش کا سوال کیا جاتا ہےا۔وہ ــهِ حَكِيُـمٌ يَّامَنُ هُوَ فِي حِكْمَتِهِ لَطِيُفٌ يَامَنُ هُوَ فِي لَطَفِهِ قَدِيْمٌ(19)يَا مَنُ لَا يُرُجٰي جس ہے بھلائی کی آئی ہےا ہے وہ جس کےعدل ہے خوف آٹا ہے اے وہ جس کی حکومت ہمیشہ رہے گی اے وہ جس کی سلطنت کے سواکوئی اللَّا فَيضُلُهُ يَامَنُ لَّا يُلِيكُمُ ۚ إِلَّا عَفُو هُ يَامَلُ لَا يُنظِّرُ الْآبِرُّهُ يَامَلُ لَا يَحَافُ إِلَّا عَدُلَّهُ يَامَنُ لَّا سلطنت نہیں اے دوچس کی رحمت ہرچیز کو گھیرے ہوئے ہےا ہے وجس کی رحمت اس کے فضب ہے آ کے ہےا ہے دوچس کاعلم ہرچیز پرجا وی يَـدُوُمُ إِلَّا مُلُكُهُ يَامَنُ لَّا سُلُطَانَ إِلَّا سُلُطَانَهُ يَامَنُ وَسِعَتُ كُلُّ شَيْءٍ رَحُمَتُهُ يَامَنُ سَبَقَتُ ہا ہے وہ کہ جس کا ساکوئی خیس ہے (۲۰)اےاندیشے ہٹا دینے والے ائے م دورکرنے والے ائے گنا ہ معاف کرنے والے اساقو بہ قبول کرنے رَحُمَتُهُ غَضَبَهُ يَامَنُ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمُهُ يَامَنُ لَيْسَ اَحَدٌ مِّثُلَهُ (20) يَافَارِ جَ الْهَمّ والے استخلوقات کے خالق اے دعد ہے میں سیجے اے عہد پورا کرنے والے اے راز کے جاننے والے اے دانے کو چیرنے والے اے لوگوں يَاكَاشِفَ الْغَمِّ يَاغَافِرَالذُّنُبِ يَاقَابِلَ التُّوبِ يَاخَالِقَ الْخَلْقِ يَا صَادِقَ الْوَعْدِ يَا مُوفِي کے رازق (۲۱) اےمعبود چھے تیرےنا م ہے سوال کرتا ہول اے بلند اے وفا داراے بے تیا زامے مہریان اے احسان کرنے والے اے الْعَهُـدِيَا عَالِمَ السِّرِّيَا فَالِقَ الْحَبِّ يَارَازِقَ الْآنَامِ (21) اَللَّهُـمَّ إِنِّي اَسْتَلُكَ باسُمِكَ لیندید واپ کیز و اسابتد اکرنے والےات توت والے اسےاتم (۲۲) اےوہ جس نے نیکی کوظاہر کیا اےوہ جس نے ہدی کوڈھ نمانیا اےوہ يُّ يَا وَفَيُّ يَا غَنِيُّ يَا مَلِيُّ يَا حَفِيُّ يَارَضِيُّ يَازَكِيُّ يَا بَدِيٌّ يَاقُويٌ يَا وَلِيُّ (22) يَامَنُ

**** اَظُهَـرَ الْحَـمِيْـلَ يَـامَـنُ سَتَـرَ الْقَبِيُحَ يَامَنُ لَمُ يُؤَاخِذُ بِالْجَرِيْرَةِ يَامَنُ لَمُ يَهُةِكِ السِّتُرَ يَ مغفرت والے اے دونوں ہا تھوں ہے رحمت کرنے والے اسے ہرسر کوشی کے مالک اے شکابیت سننے والے (۲۳) اے کامل فعمت کے مالک اے عَـظِيُــمَ الْعَفَوِ يَا حَسَنَ التَّجَاوُزِيَا وَاسِعَ الْمَغُفِرَةِ يَا بَاسِطَ الْيَدَيُنِ بِالرَّحْمَةِ يَا صَاحِبَ وسیج رحمت والے اےاحسان میں پیل کرنے والے اے بھر پورتکمت والے اے کامل قند رت والے اے قاطع دلیل والے اے محلی ہوئی ہز رگی كُـلٌ نَـجُواى يَامُنْتَهٰى كُلِّ شَكُواى (23) يَـاذَاالنِّـعُـمَةِ السَّابِغَةِ يَا ذَاالرَّحُمَةِ الُوَاسِعَةِ يَا والےاہے ہمیشہ کی عزت والے اےمضبو طاقوت والےاہ سب سے زیا د ،عظمت والے (۲۴)اے آسا نول کے بنانے والے استار مکیول کو ذَاالُمِذَٰةِ السَّابِقَةِ يَا ذَاالُحِكُمَةِ الْبَالِغَةِ يَا ذُاالُقُدُرَةِ الْكَامِلَةِ يَاذَالُحُجَّةِ الْقَاطِعَةِ وجود میں لانے والے اے آنسو وَاں پر رحم کرنے والے الطغز شول کےمعاف کرنے والے اسے بیوں کے چھیانے والے ایم روں کوزند ہ يَاذَ االُكَرَ امَةِ الظَّاهِرَةِ يَا ذَا الْعِزَّةِ الدَّآئِمَةِ يَا ذَالُقُوَّةِ الْمَتِيْنَةِ يَا ذَاالُعَظَمَةِ الْمِنِيُعَةِ (24)يَا کرنے والے اے آیات کے نازل کرنے والے اے تیکیوں کودو چند کرنے والے اے گنا ہوں کے منانے والے اسے تحت ہرانہ لینے والے (۲۵) بَدِيْعَ السَّمْوَاتِ يَلِهُ جَاعِلَ الطُّلُهُ إِلَّا إِلَا حِمَّ الْعَبُرُاتِ يَا مُقِيْلَ الْعَشَرَاتِ يَا سَاتِرَ الصعبود چھے سے تیرے بی نام سے سوال کرتا ہوں اسے صورت سازاے اندازہ کرنے والے اسے تیر کرنے والے اسے یاک کرنے والے اسے الْـعَوُرَاتِ يَامُحُييَ الْاَمُوَاتِ يَا مُنْزِلَ الْإِيَاتِ يَا مُضَعِّفَ الْحَسَنَاتِ يَا مَاحِيَ السَّيِّئاتِ يَا روش كرنے والے اے آسان كرنے ولے اے بشارت دينے والے اے ڈرانے والے اے سب سے پہلے اے سب سے آخرى (٢٦) اے شَدِيُدَ النَّقِمَاتِ (25) اَللَّهُـمَّ اِنِّيُ اَسْئَلُكَ باسُمِكَ يَا مُصَوِّرُ يَا مُقَدِّرُ يَا مُدَبِّرُ يَا مُطَهِّ مقدی گھرے رب اےمقدی مہینے کے رب اےمحتر مشہر کے رب اے رکن ومقا م کے رب اے معٹر محتر م کے رب اےم جدمحتر م کے رب اے مُسَوَّرُ يَسا مُيَسِّسرُ يَسا مُبَشِّرُ يَا مُنَذِرُ يَا مُقَدِّمَ يَا مُؤَخِّرُ (26) يَسا رَبَّ الْبَيْسِ الْحَرَام يَا رَبَّ حل وحرام كرب الصدوثتي اورتا ريكيول كرب الصدرودوملام كرب الصالوكول مين و لا في پيداكرنے والے (١٤٧) الصحاكمول مين الشُّهُ رِالْحَرَامِ يَارَبُّ الْبَلَدِ الْحَرَامِ يَارَبُّ الرُّكُنِ وَالْمَقَامِ يَا رَبُّ الْمَشُعَرِ الْحَرَامِ يَارَبُّ ہو سے حاکم اے عادلوں میں زیادہ عادل اے بچوں میں زیادہ سے اے پاکوں میں پاکستر اے خالقوں میں بہتر خالق اے حساب کرنے والوں الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ يَارَبُّ الْحِلِّ وُالْحَرَامِ يَارَبُّ النَّوُرِ وَالظَّلَامِ يَارَبُّ التَّحِيَّةِ وَالسَّلاَم

****** يَارَبُّ الْفُدُرَةِ فِي الْآنَامِ (27) يَا أَحُكَمَ الْحَاكِمِيْنَ يَا اَعُدَلَ الْعَادِلِيُنَ يَآ اَصُدَقَ والول میں بڑے ریز رگ (۲۸) اے اس کی فیک جس کی کوئی فیک جیس اے اس کے سہارے جس کا کوئی سہار انہیں اے اس کے سرمایہ جس کا کوئی الصَّادِقِيُنَ يَاۤ اَطُهَوَ الطَّاهِرِيُنَ يَآ اَحُسَنَ الْخَالِقِيُنَ يَااَسُوَ عَ الْحَاسِبِيُنَ يَا اَسُمَعَ السَّامِعِيُنَ سر ماینجیس اے اس کی بنا ہ جس کی کوئی بنا ہبیں اے اس کے فریا درس جس کا کوئی فریا درس ہیں اے اس کی بڑ ائی جس کی کوئی بڑ ائی ہیں اے اس کی يَا ٱبْصَرَ النَّاظِرِيْنَ يَا ٱشْفَعَ الشَّافِعِيْنَ يَا ٱكُرَمَ الْآكُرَمِيْنَ (28)يَا عِمَادَ مَنُ لَّا عِمَادَ لَهُ عزت جس کیلئے عزت نہیں اے اس کے مددگا رجس کا کوئی مددگا رفییں اے اس کے ساتھی جس کا کوئی ساتھی نہیں اے اس کی پناہ يَ اسَـنَـدَ مَنُ لَا سَنَدَلَهُ يَاذُخُو مَنُ لَّا ذُخُو لَهُ يَاحِوُ زَمَنُ لَّا حِوْزَلَهُ يَا غِيَاتَ مَنُ لَّا غِيَاتَ لَهُ نہیں (۲۹)اے معبود میں سوال کرتا ہوں جھوے تیر سام مے اے بنا درینے والے اے پائیدارائے بھٹی والے اے حم کرنے والے اے بے يَافَخُورَ مَنُ لَا فَخُولَلَهُ يَا عِزَّمَنُ لَا عِزَّلَهُ يَا مُعِيُنَ مَنُ لَا مُعِيُنَ لَهُ يَآاَنِيُسَ مَنُ لَآ اَنِيُسَ لَهُ عیب اے حکومت کے مالک اے علم والے اے تقلیم کرنے والے اے بند کرنے والے اے کو لنے والے اے اس کے تلم بدار جو تلم بداری جا ہے يَــآاَمَانَ مَنُ لَا اَمَانَ لَهُ (29) اَللَّهُ مِ إِنْ أَلْمُكُلِّكُ بِالنَّهِ كَدِيًّا عَاصِم يَاقَآئِمُ يَا دَآئِمُ يَارَاحِ اے رحم کرنے والے اس پر جورحم کا طالب ہوا ہے بیشتے والے اس کے جوطالب بیشش ہوا ہے تصرت کرنے والے اس کی جوثھرت جا ہےا ہے يَـاسَالِمُ يَا حَاكِمُ يَا عَالِمُ يَاقَاسِمُ يَا قَابِضُ يَا بَاسِطُ (30)يَا عَاصِمَ مَن اسْتَعُصَمَهُ يَارَاحِمَ حفاظت كرتے والے اس كى جوهفا ظت كرنے والے اس كى جوهفا ظت كركا طالب ہوا ، برائى وينے والے اس كو جو بروائى طلب كرے اے مَنِ اسْتَرُحَـمَـهُ يَـاغَـافِـرَ مَنِ اسْتَغُفَرَهُ يَا نَاصِرَ مَنِ اسْتَنْصَرَهُ يَا حَافِظَ مَنِ اسْتَحُفَظَهُ يَا ر ینمانی کرنے والے اس کی جو رہنمانی جا ہے اے دادرس اس کے جو دادری کا طالب ہو اے مددگار اس کے جو مدد طلب کرے اے قریا ورس اس مُكُرمَ مَن اسُتَكُرَمَهُ يَا مُرُشِدَ مَن اسْتَرُشَدَهُ يَا صَرِيْخَ مَن اسْتَصُرَخَهُ يَا مُعِيُنَ مَن کے جوفریا دکرے(۳۱) اے وہ غالب جوظلم ٹیس کرتا اے وہ ہاریک جونظر انداز ٹیس ہوتا اے وہ ٹکہبان جوسوتا ٹیس اے وہ جا ووال جومرتا ٹیس اسْتَعَانَهُ يَا مُغِينُتُ مَنِ اسْتَغَاثَهُ (31)يَا عَزِيُزاً لاَيُضَامُ يَالَطِيُفًا لَا يُرَامُ يَاقَيُّوُمًا لَا يَنَامُ يَادَ آئِمًا اے وہ زیرہ جےموت ٹیس اے وہا وشاہ جے زوال ٹیس اے وہ با تی جوفائی ٹیس اے وہ عالم جس میں جہل ٹیس اے وہ بے نیا زجو کھا تا ٹیس اے لَّايَفُوٰتُ يَاحَيُّالاً يَمُوٰتُ يَامَلِكًا لَّا يَزُولُ يَابَاقِيًالَّا يَفُنَى يَاعَالِمًا لَا يَجُهَلَ

يَاصَمَدًالَّا يُطُعَمُ يَاقُويًّا لَّا يَضُعُفُ (32) اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَااَحَدُ يَاوَاحِدُ را کرنے والے اے ورہ والے اے شمارہ وینے والے اے نفع وینے والے(۳۳) اے سب بیووں کے بیڑے اے سب شَاهِدُ يَا مَاجِدُ يَا حَامِدُ يَا رَاشِدُ يَا بَاعِثُ يَاوَارِتُ يَاضَآرٌ يَا نَافِعُ (33) يَا اَعُظَمَ مِنُ كُلّ یز رگول سے بزرگ تر اے سب مہریا تول سے مہریان اے ہرعالم سے بڑے عالم اے ہرتھیم سے بڑے تھکت والے اسے ہرقد یم سے قدیم تر عَـظِيُمٍ يَا اَكُرَمَ مِنُ كُلِّ كَرِيْمٍ يَا اَرُحَمَ مِنُ كُلِّ رَحِيْمٍ يَا اَعُلَمَ مِنُ كُلِّ عَلِيْمٍ يَا اَحُكَمَ مِنُ اے ہر بزرگ سے بر رگ ر اے ہر لفیف سے زیادہ لفیف اے ہر جلال والے سے زیادہ جلال والے اسے ہر زبروست سے زیادہ كَـلِّ حَكِيْسِمٍ يَا أَقُدَمَ مِنُ كُلِّ قَدِيْمَ يَا أَكْبَرَ مِنْ كُلِّ كَبِيْرِ يَاٱلْطَفَ مِنْ كُلّ لَطِيْفٍ يَا اَجَلَّ زیر وست (۳۳)اے بہتر درگز رکزنے والے اے بڑے احمال والے اے زیا دہ فیمروالے اسٹدیم فعنل والے اے بمیشہ کے لطف والے اے مِنُ كُلِّ جَلِيُلِ يَا اَعَزَّ مِنُ كُلِّ عَزِيُزِ (34) يَا كَرِيْمَ الصَّفُح يَا عَظِيْمَ الْمَنِّ يَا كَثِيُرَ الْخَيُرِ يَا خوب تر صنعت والے استختی دور کرنے والے اے دکھ دور کرنے والے اے ہر ملک کے مالک اسے فق کا فیصلہ دینے والے (۳۵) اے وہ جو قَدِيْسَ الْفَسْسُلِ يَسَادُ آئِدُمُ اللَّطُفِ يَا لَطِلُفُ الصُّنُعِ يَا مُنَفِّسُ الْكُرْبِ يَا كَاشِفَ الضُّرّ يَا ا پنے عبد کو پورا کرنے والا ہےا۔ وہ جواپنی وفایس قوی ہےا۔ وہ جواپنی قوت میں بلند ہےا ہے وہ جواپنی بلندی میں قریب ہےا ہے وہ جواپنے مَالِكَ الْمُلْكِ يَا قَاضِيَ الْجَوْقُ3)يَا مَنُ هُوَ فِيُ عَهْدِهٖ وَفِيٌّ يَّامَنُ هُوَ فِيُ وَفَائِهِ قَويٌّ يَّامَنُ قرب میں مہریان ہےاہوہ جواپنے لطف میں بلندر ہےاہوہ جواپنی بلندی میں عزت دار ہےاہوہ جواپنی عزت میں عظیم ہےاہوہ جواپنی هُ وَ فِيي قَوَّتِهِ عَلِيٌّ يًّا مَنُ هُوَ فِي عُلُوٍّهِ قَرِيُبٌ يَامَنُ هُوَ فِي قَرُبِهِ لَطِيُفٌ يَّامَنُ هُوَ فِي لَطُفِهِ بلند مرتبہ ہےا ہے وہ جوابینے مرتبعے میں تعریف والا ہے (۳۷) اے معبود میں سوال کتا ہوں چھ سے تیرے مام ہے اے کفایت شَـريُفٌ يَـامَـنُ هُـوَ فِـيُ شَـرَفِهِ عَزِيْزٌ يَّامَنُ هُوَ فِيُ عِزَّهِ عَظِيُمٌ يَامَنُ هُوَ فِي عَظَمَتِه مَجيئاً لے اے وفا دارا کے عاقبت دینے والے اے ہمایت دینے والے اے بلانے والے اے فیصلہ کرنے وار يَامَنُ هُوَ فِيُ مَجُدِهِ حَمِيْدُ (36)اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسُئَلُكَ بِاسْمِكَ يَاكَافِيُ يَاشَافِيُ يَاوَا خوشنودی والے اے بلندی والے اسباقی رہنے والے (٣٧) اے وہ جس کے آئے ہر چیز جھکتی ہےا ہے وہ جس کے آگے ہر چیز خوف زرہ ہے يَامَعَافِيُ يَا هَادِيُ يَا دَاعِيُ يَا قَاضِيُ يَارَاضِيُ يَا عَالِيُ يَابَاقِيُ (37) يَا مَنُ كُلُ شَيْءٍ خَاضِعٌ

لَـهُ يَا مَنُ كُلُّ شَيْءٍ خَاشِعٌ لَهُ يَا مَنُ كُلُّ شَيْءٍ كَآئِنٌ لَّهُ يَا مَنُ كُلُّ شَيْءٍ مَوُجُودٌ به يَا مَنُ چیز ڈرتی ہےاہے وہ چس کے ذریعے ہر چیزمو جو دہوئی ہےاہےوہ جس کی طرف ہر چیز کی با زگشت ہےاہے وہ جس ہے ہر چیز ڈرتی ہے اےوہ كَـلّ شَـيْءٍ مُّـنِيُـبٌ اِلَيُهِ يَا مَنُ كُلُّ شَيْءٍ خَآئِفٌ مِّنُهُ يَا مَنُ كُلُّ شَيْءٍ قَآئِمٌ به يَا مَنُ كُلُّ کے ذریعے ہرچیز ہاتی ہےا۔وہ جس کی طرف ہرچیز لوٹتی ہےا۔وہ کہ ہرچیز جس کی حمد میں معروف ہےا۔وہ جس کے جلوے کے سواہر شَـيُءٍ صَـآئِـرٌ اِلَيُهِ يَا مَنُ كُلُّ شَيْءٍ يُسَبِّحُ بحَمُدِهِ يَا مَنُ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكُ اللَّ وَجُهَلَا3) چیز نا پیدہ وجائے گی (۳۸)اے وہ جس کے سواکوئی جائے فراز بیس ہےاے وہ جس کے سواکوئی جائے پنا ڈبیس اے وہ جس کے سواکوئی مقا مقصد يَامَنُ لَا مَفَرَّ إِلَّا إِلَيْهِ يَا مَنُ لَا مَفُزَعَ إِلَّا إِلَيْهِ يَا مَنُ لَّا مَقُصَدَ إِلَّا إِلَيْهِ يَا مَنُ لَّا مَنُحَا مِنُهُ إِلَّا مٹیں اےو ہص ہے خلاصی ٹیمن لیکن اس کی طرف ہے اےوہ جس کے سواکسی کورغبت ٹیمیں ہوسکتی اےو ہ کرٹیمن ہے حرکت وقوت گراسی ہے إِلَيْهِ يَا مَنُ لَا يُرُغَبُ إِلَّا إِلَيْهِ يَا مَنُ لَّا حَوُلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِهِ يَا مَنُ لاَّ يُسْتَعَانُ إِلَّا بِهِ يَا مَنُ لاَّ اے وہ جس کے سواکہیں ہے مد دئیس مل سکتی اے وہ جس کے سوا کسی پرتجر وسرٹیس ہوسکتا اے وہ جس کے سوائسی ہے امیدٹییں ہوسکتی اے وہ جس يُتُوَكُّلُ الَّا عَلَيْهِ يَا مُرُزُ لَا يُواجِلُ إِلاَّ هُوَ يَا مَرُ لا يُعْبَدُ الَّا هُو (39) عَيْرَ الْمَرُهُوبِينَ يَا کے سوائسی کی عبادت ٹیمیں ہوسکتی (۳۹)اے بہترین ڈرانے والے اے بہترین لبحانے والے اے بہترین طلب کیے جانے والے اے بہترین خَيُرَ الْمَرُغُوبِيُنَ يَا خَيُرَ الْمَطُلُوبِيْنَ يَا خَيْرَ الْمَسْئُولِيْنَ يَا خَيْرَ الْمَصُودِيْنَ يَا خَيْرَ سوال کیے جانے والے اے بہترین قصد کیے جانے والے اے بہترین وکر کیے جانے والے اے بہترین شکر کیے جانے والے اے بہترین محبت لْدَكُورِيْسَ يَا خَيْسَ الْمَشْكُورِيْسَ يَا خَيْسَ الْمَحْبُوبِيْنَ يَا خَيْرَ الْمَدْعُويْنَ يَا ے بہترین پکا رہے جانے والے اے بہترین اُس کیے جانے والے (۴۰) اے معبود میں چھے سوال کرتا ہوں تیرے ا م الْمُسْتَانِسِيْنَ (40)اَللَّهُــمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا غَافِرُ يَا سَاتِرُ يَا قَادِرُ يَا قَاهِرُ يَا فَ ے اے قدرت والے اے غلیرو الے اے پیدا کرنے والے اساتو ڑنے والے اے جوڑنے والے اے يَاكَاسِرُ يَا جَابِرُ يَا ذَاكِرُ يَا نِاظِرُ يَا نَاصِرُ (41)يَا مَنُ خَلَقَ فَسَوْى يَامَنُ قَدَّرَ فَهَالى يَا مَنُ ذکر کرنے والے اے دیکھنے والے اے مدوکرنے والے(۴۱) اے وہ جس نے پیدا کیا مجر درست کیا اے وہ جس نے اندازہ گھیر لاکچر ہدایت دی يَّكُشِفُ الْبَلُواي يَا مَنُ يَّسُمَعُ النُّجُواي يَا مَنُ يُّنْقِذُ الْغَرُقِي يَا مَنُ يُّنُجِي الْهَلُكُي يَامَنُ

*************** يَّشْفِي الْمَرُّطْي يَامَنُ اَضُحَكَ وَابُكْي يَامَنُ اَمَاتَ وَاَحُيْي يَامَنُ خَلَقَ الزَّوْجَيُن الذَّكَرَ مریفتوں کوشفا دیتا ہےا ہے وہ جو روتوں کو بٹسا تا ہےاہے وہ جو ما رتا ہےا درزندہ کرتا ہےا ہے وہ جس نے جوڑے بنائے نزاور ما دہ کے (۴۴)اے وَالْاَنْشِي(42)يَـا مَنُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحُر سَبِيْلُهُ يَامَنُ فِي الْافَاقِ ايَاتَهُ يَامَنُ فِي الْايَاتِ بُرُهَانَهُ وہ جس نے خاک وآب میں رائے بنائے اےو ہ جس نے فضا میں اپنی نشانیاں بنا کمیں اےوہ جس کی نشانیوں میں قوی دلیل ہےا ہے وہ کرموت يَامَنُ فِي الْمَمَاتِ قُدُرَتُهُ يَامَنُ فِي الْقُبُوُرِ عِبْرَتُهُ يَامَنُ فِي الْقِيْمَةِ مُلْكُهُ يَامَنُ فِي میں جس کی قدرت فلاہر ہےا ہے وہ جس نے قبرول میں عبرت رکھی ہےا ہے وہ قیامت میں جس کی با دختا ہت ہےا ہے وہ حساب میں جس کی جیہت الْحِسَابِ هَيْبَتَهُ يَامَنُ فِي الْمِيُزَانِ قَضَآئَهُ يَامَنُ فِي الْجَنَّةِ ثَوَابُهُ يَامَنُ فِي النَّارِ عِقَابُهُ (43) ہاے وہ میزانِ عمل میں جس کی منتقفی ہےاہے وہ جس کی طرف ہے ثواب جنت ہےاہے وہ کہ جس کاعذاب دوز خے ہے(۴۳)اے وہ کرخوف يَا مَنُ اِلَيُهِ يَهُرَبُ الْحَالِفُونَ يَامَنُ اِلَيْهِ يَفُزَ عَ الْمُذُنِبُونَ يَامَنُ اِلَيْهِ يَقُصِدُ الْمُنِيُبُونَ يَامَنُ ز دہ جس کی طرف بھا مجتے ہیں اے وہ کہ گزگار جس کی بناہ لیتے ہیں اے وہ کرتو بہرنے والے جس کا قصد کرتے ہیں اے وہ کہ جس کی طرف إِلَيْهِ يَـرُغَبُ الزَّاهِدُوْنَ يَامَلُ إِلَيْهِ يَلْجَا الْمُتَحَلِّرُوْنَ يَامَنُ بِهِ يَسْتَافِسُ الْمُريدُونَ يَامَنُ بِهِ پر ہیز گارر فبت کرتے ہیں اے وہ کر پر بیٹان لوگ جس کی بناہ چاہے ہیں اے وہ کراراوہ کرنے والے جس سے ما نوس ہیں اے وہ جس پر محت يَفُتَخِرُ الْمُحِبُّوُنَ يَامَنُ فِي عَفُو هِ يَطُمَعُ الْخَاطِئُونَ يَامَنُ اِلَيْهِ يَسُكُنُ الْمُوْقِنُونَ يَامَنُ عَلَيْهِ لوگ فخر کرتے ہیں اے وہ کہ خطا کا رجس کے حفوی خواہش رکھتے ہیں اے وہ جس کے ہاں یعین والے سکون پاتے ہیں اے وہ کرتے کل کرنے يَتَوَكُّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ (44)اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسُئَلُكَ بِاسُمِكَ يَا حَبِيُبُ يَا طَبِيُبُ يَا قَرِيُبُ والے جس پرتو کل کرتے ہیں (۴۴) اے معبو دہیں چھے سوال کرتا ہوں تیرےنا م سے اے مجبوب اے جا روگر اے نز ویک تر اے تگم بداراے حَسِيُبُ يَا مُهِيْبُ يَا مُثِيُبُ يَا مُجِيبُ يَا مُجيبُ كَا خَبِيُرُ يَا بَصِيُرُ (45)يَا أَقَرَبَ مِنُ كُلّ لے اے تُو اب دینے والے اے قبول کرنے والے اسے اِخبر اسے جا (۴۵) اسے ہر قریب سے زیا وہ قریب اے قَـرِيُـبِ يَاأَحَبَّ مِنُ كَلِّ حَبِيُبِ يَاأَبُصَرَمِنُ كُلِّ بَصِيُرِ يَا أَخْبَرَ مَنُ كُلِّ خَبيُر يَاأَشُوفَ مِنُ ہر محبّ ہے زیا دہ محبت والے اے ہر دیکھنے والے ہے زیا دہ بیا اے ہر یا فہرے زیا دہ فہر والے اے ہر برزگ ہے زیا دہ بزرگ كُـلِّ شَـرِيُفٍ يَـا أَرُفَعَ مِـنُ كَـلِّ رَفِيُـع يَـا أَقُـواى مِـنُ كَـلِّ قَوِيِّ يَا أَغَدٰى مِنُ كَلِّ غَنِيِّ يَا

اَجُودَهِنُ كُلِّ جَوَادٍ يَا اَرُأَفَ مِنُ كُلِّ رَؤُوفٍ (46)يَّا غَالِبًا غَيْرَ مَعُلُوبٍ يَا صَانِعًا غَيُرَ غالب جس پر کوئی غالب نہیں اے وہ صافع جے کسی نے نہیں بنایا اے وہ خالق جو طلق نہیں ہو ااے وہ ما لک جس کا کوئی مالک نہیں اے وہ زیر وست مَصْنُوُع يَا خَالِقًا غَيْرَ مَخُلُوق يَا مَالِكًا غَيْرَمَمُلُوكٍ يَاقَاهِرًا غَيْرَ مَقُهُور يَارَافِعًا غَيْرَ جو کسی کے زبر نہیں اے وہ بلند جسے کسی نے بلند نہیں کیا اے وہ تگہبان جس کا کوئی تگہبان نہیں اے وہ مد دگا رجس کا کوئی مدرگا رئیس اے وہ حاضر جو مَـرُفُـوُع يَـاحَافِظًا غَيُرَ مَحُفُوظٍ يَّا نَاصِراً غَيُرَ مَنْصُور يَا شَاهِدًا غَيُرَ غَائِب يَا قَريُبًا غَيُرَ تکمیں بھی غائب میں اے وہتریب جو مجھی دورٹیس ہوا (۳۷)اےٹور کی روشنی اےٹو رروٹن کرنے والے اےٹور کے پیدا کرنے والے اےٹور کا بَعِيْدٍ (47)يَـا نُـوُرَ النَّوُرِ يَا مُنَوِّرَ النَّوُرِ يَا خَالِقَ النَّوُرِ يَا مُدَبِّرَ النَّوُرِ يَا نُوُرَاً بندوبست کرنے والےائے ورکی اندازہ گیری کرنے والے اے ہرنور کی روشنی اے ہرنورے اولین نو راے ہرنور کے بعدروشن رہنے والے اے قَبُـلَ كُـلِّ نُـوُرًا نُورًا بَعُدَ كُلِّ نُور يَانُورًا فَوْقَ كُلِّ نُوريَا نُورًا لَيُسَ كَمِثُلِهِ نُورٌ (48)يَا ہر نورے با لاتر نوراے وہ نورجس کی مثل کوئی نورنبیں (۴۸) اےوہ جس کی عطابلندیز ہےاہے وجس کافعل بار بیک تر ہےا ہےوہ جس کا لطف مَنُ عَطَآئُهُ شَرِيُفٌ يَامَنُ فِعُلَهُ لَطِيْفُ يَامَنُ لَطُفَهُ مُقِيبُمٌ يَامَنَ إِحْسَانُهُ قَدِيمٌ يَامَنُ قَوْلُهُ حَقٌّ یا کندہ ہاےوہ جس کا احمال قدیم ہےا ہےوہ جس کا قول حق ہےاہے وہ جس کا دعد وہیا ہےا ہے وہ جس کے عفو میں احمال ہےا ہے وہ جس کے يَـامَـنُ وَعُـدُهُ صِـدُقٌ يَـامَـنُ عَفُوهُ فَضُلَّ يَّامَنُ عَذَابُهُ عَدُلٌ يَامَنُ ذِكُرُهُ حُلُوٌ يَامَنُ فَضُلَّهُ عذاب میں عدل ہےا ہے وہ جس کا ذکرشیریں ہےاہے وہ جس کا احمان عام ہے(۴۷) اے معبود میں جھے ہے سوال کرتا ہول تیر سام مے اے عَمِيْهُ (49) اَللَّهُــَمَّ اِنِّي اَسْئَلُكَ باسْمِكَ يَا مُسَهِّلُ يَا مُفَصِّلٌ يَا مُبَدِّلُ يَا مُذَرِّلُ بمواركرنے والے اسے جداكرنے والے استبريل كرنے والے اسے يت كرنے والے اسے اتا رنے والے اسے عطاكرنے والے اسے فعت مُنَوِّلَ يَا مُفْضِلَ يَا مُجُزِلَ يَا مُمُهِلَ يَا مُجُمِلُ (50)يَا مَنُ يَّرِٰى وَلَا يُرِٰى يَا مَنُ يَخُلُقُ وَلَا دینے والے اے قیش کرنے والے اےمہات دینے والے اے نیکوکار (۵۰) اے وہ جود کھتا ہے تو دُظر نہیں آتا اےوہ جوخلق کرتا ہے اورخلق يُخُلَقُ يَا مَنُ يَهُدِيُ وَلَا يُهُدَى يَا مَنُ يُحْيِيُ وَلَا يُحْيِي يَا مَنُ يُّسْئَلُ وَلا يَسُئَلُ يَا مَنُ يُطُعِهُ ااے وہ جو ہدایت ویتا ہے اور ہدایت طلب ٹیس اے وہ جوزئر وکرتا ہے اورزئر وٹیس کیا گیا اے وہ جومسٹول ہے اور سائل ٹیس اے وہ جو طُعَهُ يَا مَنُ يُجِيُرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ يَا مَنُ يَّقُضِيُ وَلَا يُقَضِّى عَلَيْهِ يَا مَنُ يَّحُكُمُ وَلَا

\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$ يُحُكُّمُ عَلَيْهِ يَامَنُ لُّمُ يَلِدُ وَلَمُ يُولَدُ وَلَمُ يَكُنُ لَّهُ كُفُوًا اَحَدٌ (51)يَا نِعُمَ الْحَسِيبُ يَا نِعُمَ سکسی کا تھم میں اے وہ جس کا کوئی مینا نہیں نہ وہ کسی کامینا ہا ور نہ کوئی اس کا ہمسر ہے(۵۱)اے بہترین حساب کرنے والے اے بہترین میا رہ گر الطَّبِيُبُ يَا نِعُمَ الرَّقِيُبُ يَا نِعُمَ الْقَرِيُبُ يَا نِعُمَ الْمُحِيُّبُ يَا نِعُمَ الْحَبِيبُ يَا نِعُمَ الْكَفِيلُ يَا ا بہترین مگہبان اے وہ جو کتنا قریب ہےاہے وہ جو دعا قبول کرنے والا ہےاہے وہ جو بہترین محبوب ہےاہے وہ جو بہترین سر پرسٹ ہےاہے نِعُمَ الْوَكِيُلُ يَا نِعُمَ الْمَوُلِي يَا نِعُمَ النَّصِيُرُ (52)يَا سُرُورَ الْعَارِفِيُنَ يَامُنَى الْمُحِبِّيُنَ يَا وہ جو بہترین کارماز ہےاہے بہترین آتا اے بہترین یا ور(۵۴) اےعارٹو ل کی شادمانی اے حب داروں کی تمنااے ارادت والول کے ہمدم سَ الْـمُـرِيُـدِيُـنَ يَـا حَبِيُـبَ التَّـوَّ ابِيُنَ يَارَازِقَ الْمُقِلِّيُنَ يَا رَجَآءَ الْمُذُنِبِيُنَ يَا قُرَّةَ عَيُن اساق بركرنے والوں كے محبوب اے بے مايد لوكوں كے رازق اسے كما بركاروں كى آس اس عبادت كرنے والوں كى تعنى چتم اس د كھياروں كے الْعَابِدِيُنَ يَامُنَفِِّسَ عَنِ الْمَكُرُوبِيُنَ يَا مُفَرِّجَ عَنِ الْمَغُمُومِيْنَ يَآ اِلْهَ الْاَوَّلِيْنَ نے والے اشفِم زووں کاغم مثانے والے اسے پہلوں پچھلوں کے معبو د(۵۳) اے معبود تبیں سوال کرتا ہوں جھے ہے تیرے ہی نا م وَالْاخِرِيْنَ (53) اَللَّهُامَّ إِلَهِي اَسُئَلُكِ بِاسْمِكَ يَارَبُّنَا يَا اللَّهَنَا يَاسَيُدَنَا يَا مَوُلْنَا يَا نَاصِرَنَ ے اے ہا رے رب اے ہارے معبوداے ہارے ہر داراے ہارے آ قااے ہارے یا دراے ہا رے محافظ اے ہا رے رہنما اے ہا رے حَافِظَنَا يَادَلِيُلَنَا يَا مُعِينَنَا يَا حَبِيْبَنَا يَا طَبِيْبَنَا (54)يَا رَبَّ النَّبِيِّيُنَ وَالْأَبُوارِيَا رَبَّ مددگا راے ہما رہے مجبوب اے ہمارے چارہ گر (۵۴) اے انبیا ءو صالحین کے پر وردگاراے صدیقوں اور نیک لوگوں کے پروردگا راہے جنت و الصِّـدِّيُقِيُسنَ وَالْاَخْيَارِيَا رَبَّ الْجَنَّةِ وَالنَّارِيَا رَبُّ الصِّغَارِ وَالْكِبَارِيَارَبِّ الْحُبُوبِ ووزخ کے مالک اے چھوٹول برا ول کے رب اے وانہ وٹمر کے پر وان ج والے والے اے دریاؤل اور درختوں کے مالک اے محراؤل اور وَالشِّمَارِيَا رَبُّ الْاَنْهَارِ وَالْاَشْجَارِ يَارَبُّ الصَّحَارِيُ وَالْقِفَارِ يَارَبُّ الْبَوَارِيُ وَالْبِحَارِ بستیول کے مالک انے حسکیوں اور سمندرول کے ہر وردگاراے دن اور رات کے مالک اے کھلی اور چیپی باتوں کے مالک (۵۵)اے وہ جس کا يَـارَبُّ اللَّيُـلُ وَالنَّهَارِ يَارَبُّ الْاَعْكَانِ وَالْاَسُرَارِ (55)يَـا مَنُ نَفَذَ فِي كُلِّ شَيْءٍ اَمُرُهُ يَا مَنُ تھم ہرچیز میں جاری ہےا ہے وہ جس کاعلم ہرچیز پر حاوی ہےا ہے وہ جس کی قدرت ہر چیز تک پیچی ہوئی ہےا ہے وہ کر جس کی فعمتوں کو بندے سن لُحِقَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمُهُ يَا مَنُ بَلَغَتُ إِلَى كُلِّ شَيْءٍ قُدُرَتُهُ يَا مَنُ لَّا تُحْصِي الْعِبَادُ نِعَمَهُ يَا

******************** مَنُ لَا تَبُلُغُ الْخَلَاثِقُ شُكُرَهُ يَا مَنُ لَا تُدُرِكُ الْاَفْهَامُ جَلَالَهُ يَا مَنُ لَأَتَنَالُ الْاَوْهَامُ كُنُهَأ کریز رنگی اور برد ائی جس کالہا می ہےا ہے وہ جس کی قضا کو بند سے اُنہیں سکتے اے وہ جس کے سواکسی کی حکومت نہیں اے وہ جس کی عطا کے سوا يَـامَـنِ الْعَظَمَةُ وَالْكِبُرِيَآءُ رِدَآئُهُ يَا مَنْ لَّاتَرُدُّ الْعِبَادُ قَضَآئَهُ يَا مَنْ لاَّ مُلْكَ إِلَّا مُلْكُهُ يَامَنُ کوئی عطانہیں (۵۲)اے وہ جس کے لیےنمونہ اعلیٰ ہےاہے وہ جس کے لیے بلند مفات میں اےوہ دنیا وآخرت جس کی ملکیت ہیں اےوہ جو لَّا عَطَآءَ إِلَّا عَطَآئُهُ (56)يَا مَنُ لَّهُ الْمَشَلُ الْآعُلَى يَا مَنُ لَّهُ الصِّفَاتُ الْعُلْيَا يَا مَنُ لَّهُ الْآخِرَةُ جنت الما دیٰ کاما لک ہےا ہے وہ چس کی نشانیا ل عظیم ہیں اے وہ جس کے ام پیندید ہ ہیں اے وہ جوتھم وفیلے کاما لک ہےاہے وہ کہ ہوا وفضا جس وَالْاُولِلِي يَا مَنُ لَّهُ الْجَنَّةُ الْمَاوِاي يَامَنُ لَّهُ الْأَيَاتُ الْكُبُرِاي يَا مَنُ لَّهُ الْاَسُمَآءُ الْحُسُنِي يَا کی ما لک ہیں اےوہ جوعرش وفرش کا ما لک ہےاہے وہ جو بلندآ سانوں کاما لک ہے(۵۷) اےمعبود میں جھے ہے سوال کرتا ہوں تیرے بی ما م مَنُ لَّهُ الْحُكُمُ وَالْقَصَاءُ يَا مَنُ لَّهُ الْهَوَآءُ وَلْفَضَآءُ يَا مَنُ لَّهُ الْعَرُشُ وَالْثَراى يَا مَنُ لَّهُ ے اے معافی دینے والے اے بخشنے والے اے بہت مبر والے اے بہت شکر اولے اے مہر بان اے زم خواے سوال شدہ اے محبت والے اے السَّمُواتُ الْعُلَى (57) اللَّهُ لَمُ إِنْ أَسْتُلُكُ بِالسِّمِكُ لِا غُفُورٌ يَا صَبُورٌ يَا شَكُورُ یا ک تر اسلے کیزہ (۵۸) اے دوآ سان میں جس کی بڑائی ہےاہے دہ زمین میں جس کی نشانیاں میں اے دہ جس کی دلیلیں ہرچیز میں میں اے دہ رَؤُفْ يَا عَطُوفْ يَا مَسْئُولُ يَا وَدُودُ يَا سُبُّوحُ يَا قُدُّوسُ (58)يَا مَنُ فِي السَّمَآءِ عَظَمَتُهُ سمندرول میں جس کی انوکھی چیزیں ہیں اےوہ پہاڑوں میں جس کے خزانے ہیں اےوہ جس نے خلق کو ظاہر کیا کچر جاری رکھا اے وہ جس کی يَا مَنُ فِي الْاَرُضِ ايَاتَـهُ يَا مَنُ فِي كُلِّ شَيْءٍ دَلَائِلَهُ يَا مَنُ فِي الْبِحَارِ عَجَائِبُهُ يَا مَنُ فِي طرف ہر امر کی با زگشت ہے اے وہ جس کا لطف ہر چیز میں عیال ہے اے وہ جس نے ہر چیز کوخوبی سے خلق کیا اے وہ جس کی قد رہ مخلو قات میں الُجِبَالِ خَزَ آئِنَهُ يَا مَنُ يَبُدَءُ الْخَلُقَ ثُمَّ يُعِينُدُهُ يَا مَنُ إِلَيْهِ يَرُجِعُ الْآمُرُ كُلَّهُ يَا مَنُ اَظُهَرَ فِي اڑ اندازی کرری ہے(۵۹) اےاس کے ساتھی جس کا کوئی ساتھی نہیں ہے اےاس کے چارہ گرجس کا کوئی چارہ گرفییں اے اس کی دعا قبول كُلِّ شَـيْءٍ لَّطُفَهُ يَا مَنُ أَحُسَنَ كُلُّ شَيْءٍ خَلُقَهُ يَا مَنُ تَصَرُّفَ فِي الْخَلَآئِقِ قُدُرَتُهُ (59) يَا کرنے والے جس کی کوئی قبول کرنے والاقہیں اے اس کے مہر مان جس پر کوئی مہر مان ٹیس اے اس کے بمر ابنی جس کا کوئی بمر ابنی شیس اے اس حَبِيُبَ مَنُ لَّا حَبِيُبَ لَهُ يَا طَبِيُبَ مَنُ لَّا طَبِيْبَ لَهُ يَا مُجِيْبَ مَنُ لَا مُجِيْبَ لَهُ يَا شَفِيُقَ کے فریا دریں جس کا کوئی فریا دری فیس اے اس کے رہنما جس کا کوئی رہنما فیس اے اس کے ہمرم جس کا کوئی ہمرم فیس اے اس پر رقم کرنے والے

***** مَـنُ لَّا شَفِيُقَ لَهُ يَا رَفِيُقَ مَنُ لَّا رَفِيُقَ لَهُ يَا مُغِينُتُ مَنُ لَّا مُغِينُتَ لَهُ يَا دَلِيُلَ مَنُ لَّا دَلِيُلَ لَهُ يَا جس پررم کرتے والاکوئی نہیں اے اس کے ساتھی جس کا کوئی ساتھی نہیں (۲۰)اے طالب کفایت کی کفایت کرتے والے اے ہوایت طلب کی اَنِيُسَ مَنُ لَآ اَنِيْسَ لَهُ يَا رَاحِمَ مَنُ لَا رَاحِمَ لَهُ يَا صَاحِبَ مَنُ لَا صَاحِبَ لَهُ (60) يَا كَافِيَ ہدایت کرنے والے اسٹنگہانی چاہنے والے کے تگہبان اے رعایت جاہنے والے کی رعایت کرنے والے اسے شفاما تنگنے والے کوشفا وینے والے مَنِ اسْتَكُفَاهُ يَا هَادِيَ مَنِ اسْتَهُدَاهُ يَا كَالِيَ مَنِ اسْتَكُلَاهُ يَا رَاعِيَ مَنِ اسْتَرُعَاهُ يَا شَافِيَ اے فیصلہ جانبے والا کا فیصلہ کرنے والے اے پڑوت خواہ کوڑوت دینے والے اے وفا طلب سے وفا کرنے والے اےقوت کے طالب کوقوت مَىن اسْتَشْـفَاهُ يَا قَاضِيَ مَن اسْتَقُضَاهُ يَا مُغْنِيَ مَنِ اسْتَغُنَاهُ يَا مُوُفِيَ مَنِ اسْتَوُفَاهُ يَا مُقَوِّيَ عطا کرنے والے اے طالب سریرستی کی سریرستی کرنے والے (٦١) اے معبود میں چھے ہے سوال کرتا ہوں تیرے بی مام ہے اے طلق کرنے والے مَن اسْتَقُوَاهُ يَا وَلِيَّ مَن اسْتَوُلَاهُ (61)اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَاخَالِقُ يَا رَازِقُ ا برزق دینے والے اے بولنے والے اسے مرق والے اسٹ گا ثر کرنے والے اسے مداکرنے والے اساقہ ڑنے والے اسے جوڑنے والے نَاطِقُ يَا صَادِقُ يَا فَالِقَ يَا فَارَقُ يَا فَارِقُ يَا فَاتِقُ لِمَا رَاتِقُ يَا سَابِقُ يَا سَامِقُ 62) يَا مَنُ يُقَلِّبُ اللَّيُلَ اےسب سے پہلے اے بلندی والے (۶۲) اے رات اور دان کو پلٹائے والے اے روشنیول اورتا ریکیوں کے پیدا کرنے والے اے وہ جس نے وَالنَّهَارَ يَا مَنُ جَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالْآنُوَارَ يَا مَنُ خَلَقَ الظِّلُّ وَالْحَرُّورَ يَا مَنُ سَخَّرَ الشُّمُسَ مایہ اور دعوپ کو پیدا کیا اے وہ جس نے سورج اور چاند کوپا بند کیا اے وہ جس نے نیکی وبدی کا انداز پھٹم رایا اے وہ جس نے موت اور زندگی کو پیدا وَالْـهَمَوْ يَا مَنُ قَدَّرَ الْخَيُرَ وَالشَّرُّ يَا مَنُ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوِةَ يَا مَنُ لَهُ الْخَلْقُ وَالْآمُوُ يَا کیا اے وہ جس کے ہاتھ میں خلق وامر ہےاہے وہ جس کی نہ کوئی زوجہ بنی نہ فرزند ہوا اےوہ جس کی حکومت میں کوئی ساتھی شہیں اے وہ جو عاجمة مَنُ لَّـمُ يَتَّخِذُ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا يَّا مَنُ لَيُسَ لَهُ شَرِيُكٌ فِي الْمُلْكِ يَا مَنُ لَّمُ يَكُنُ لَّهُ وَ مہیں کہاس کا کوئی مددگارہو(۲۳)اےوہ جوارادہ کرنے والوں کی مراد کوجا نتا ہےاہےوہ جوخاموش لوگوں کے دل کی ہاتھی جانتا ہےا ہےوہ جو مِّنَ الذِّلِّ (63)يَا مَنُ يَّعُلَمُ مُوَادَالُمُويُدِيْنَ يَا مَنُ يَّعُلَمُ ضَمِيْوَ الصَّامِتِيْنَ يَا مَنُ يَّسُمَعُ اَنِيُوَ کمزوروں کی زاری کوئنتا ہے اےوہ جو ڈرنے والے لوگوں کا رونا دیکھ لیتا ہےاہے وہ جوسوالیوں کی حاجمؤں کا مالک ہےاہے وہ جوتو بہکرنے الُـوَ اهِـنِيُسنَ يَـا مَـنُ يَّرِاى بُكَآءَ الْخَائِفِيُنَ يَا مَنُ يَّمُلِكُ حَوَ آئِجَ السَّآئِلِيُنَ يَا مَنُ يَّقُبَلُ عُذُ والوں کا عذر قبول کرتا ہےاہے وہ جونسا دیوں کے مل کواچھائییں گر دانیا اے وہ جوئیکوکا روں کےاجر کورائیگالٹیمیں کرتا اےوہ جوعا رنو ں

**** التَّآئِبِيُّنَ يَامَنُ لَا يُصُلِحُ عَمَلَ الْمُفَسِدِيْنَ يَا مَنُ لَا يُضِيُّعُ اَجُرَ الْمُحْسِنِيْنَ يَا مَنُ لَا يَبُعُدُ ے دورٹیس رہتا اےسب داتا وک ہے ہوئے اتا (۱۳)اے ہمیشہا قی رہنے والے اے دعا کے سننے والے اے بہت زیا وہ عطا کرنے والے عَنُ قُلُوُبِ الْعَارِفِيْنَ يَا اَجُوَدَ الْاَجُودِيْنَ (64)يَا دَآئِمَ الْبَقَآءِ يَا سَامِعَ الدُّعَآءِ يَا وَاسِعَ اے خطا کے بخشے والے اسے آسمان کے بنانے والے اے بہترین آ زمائش کرنے والے اے بھلی تعریف والے اسٹند کی بلندی والے اے بہت الْعَطَآءِ يَا غَافِرَ الْخَطَآءِ يَا بِدِيُعَ السَّمَآءِ يَا حَسَنَ الْبَلَآءِ يَا جَمِيْلَ الثُّنَآءِ يَا قَدِيْمَ السُّنَآءِ يَا وفا داری کرنے والے اے بہترین جز اوسینے والے (۱۵) اے معبو دیں چھے سے سوال کرتا ہول تیرے بی نام سے اے پر دوپوش اے پختیم ہارا ہے كَثِيْرَ الْوَفَآءِ يَا شَرِيُفَ الْجَزَآءِ (65)اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا سَتَّارُ يَا غَفَّارُ يَا قَهَّارُ غلبہ والے اےز وروالے اے بہت مبر دالے اے نیکی والے اے افتیا روالے اے کھولنے والے اے نفع دینے والے اے شاداں (٦٢)اے وہ جَبَّارُ يَا صَبَّارُ يَا بَآرُّ يَا مُخُتَارُ يَا فَتًا حُ يَا نَفًا حُ يَا مُرُتَاحُ (66) يَا مَنُ خَلَقَنِي وَسَوَّانِي يَا جس نے مجھے پیدا کیا اور سنوارا اے وہ جس نے مجھے رزق دیا اور بالا اے وہ جس نے مجھے طعام دیا اور سیراب کیا اے وہ جس نے مجھے قریب کیا مَنُ دَ ذَقَنِينُ وَ رَبَّانِهِ ﴾ إِذَا مَنْ أَطْعَلَمَنِكُ وَسَلَّقَانِكُ يَا مَنْ قُرَّايِنِكُ وَأَدْنَانِي يَا مَنُ عَصَمَنِي اورز دیجی عطاکی اےوہ جس نے میری مخمبداشت کی اور کھا ہے تکی اے دہ جس نے میری حفاظت کی اور تعابیت کی اےوہ جس نے مجھےعزت دی وَكُفَانِيُ يَا مَنُ حَفَظَنِيُ وَكَلانِيُ يَا مَنُ اَعَزَّنِيُ وَاَغْنَانِيُ يَا مَنُ وَفَقَنِيُ وَهَدَانِي يَا مَنُ اور دولتمنند ہنایا اے وہ جس نے میری مدد کی اور ہدایت عطاکی اے وہ جس نے مجھے انس کیا اور بناہ دی اے وہ جس نے مجھے موت دی اور زند ہ آنَسَنِيُ وَآوَانِيُ يَا مَنُ اَمَاتَنِيُ وَاَحْيَانِيُ (67)يَا مَنُ يُجِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ يَا مَنُ يُقَبَلُ التَّوْبَةَ کیا (۱۷)اے وہ جوابیخ کلام ہے حق کوٹا بت کرتا ہےاہے وہ جوابیخ بندول کی تو بیقول فرما تا ہےاہے وہ جوانسان اوراس کے دل کے درمیان عَنُ عِبَادِهِ يَا مَنُ يَّحُولُ بَيُنَ الْمَرُءِ وَقَلُبِهِ يَا مَنُ لَا تَنُفَعُ الشَّفَاعَةُ الَّا بِاذُنِهِ يَا مَنُ هُوَ اَعُلَمُ حائل ہوتا ہےا۔ وہس کے اذن کے بغیرشفاعت پچھ نفع شہیں پہنچاتی اے وہ جورا دے بیٹکے ہوئے لوگوں کوخوب جانتا ہے اے وہ جواپیج تھم بِمَنُ ضَلَّ عَنُ سَبِيُلِهِ يَا مَنُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكِّمِهِ يَا مَنُ لَا رَآدٌ لِقَضَآئِهِ يَا مَن انْقَادَ كُلُّ شَيْءٍ ے ہرگز نہیں ٹلآ اےوہ جس کا فیصلہ پلٹایا نہیں جا سکتا اے وہ جس کے امر کے آگے ہرچیز جنگی ہوئی ہےا ہےوہ جس کی قدرت ہے آسان ہا ہم لِّـاَهُرِهِ يَا مَنِ السَّمَاوِاتُ مَطُويًاتُ بِيَمِيْنِهِ يَامَنُ يُرُسِلُ الرِّيَا حَ بُشُرًا بَيُنَ يَدَى رَحُمَتِهِ(68)

***** يَا مَنُ جَعَلَ الْأَرُضَ مِهَادًا يًّا مَنُ جَعَلَ الْجِبَالَ اَوْتَادًا يًّا مَنُ جَعَلَ الشُّمُسَ سِرَاجًا يَا مَنُ میخوں کی طرح گا ڑااے وہ جس نے سورج کوج اغینایا اے وہ جس نے جاند کوروشن فرمایا اے وہ جس نے رات کو پر وہ پوشی کے لیے بنایا اے وہ جَعَلَ الْـقَـمَـوَ نُورًا يَّا مَنُ جَعَلَ اللَّيُلَ لِبَاسًا يًّا مَنُ جَعَلَ النَّهَارَ مَعَاشًا يَا مَنُ جَعَلَ النُّوُ مَ جس نے دن کوکا م کاج کا وفت ٹھیرالا اے وہ جس نے نیز کوذر بعیر راحت بنایا اے وہ جس نے آسان کا شامیا نہ لگایا اے وہ جس نے چیز ول میں سُبَاتًا يَا مَنُ جَعَلَ السَّمَآءَ بِنَاءً يَّا مَنُ جَعَلَ الْاَشْيَآءَ اَزُوَاجًا يًّا مَنُ جَعَلَ النَّارَ جوڑ ہے مقر رکیے اے وہ جس نے آتش دوزخ کو کمین کا وہنایا (۲۹)اے معبود میں چھے سوال کرتا ہوں تیرے بی نام ہے اے سننے والے اے مِرُصَادًا (69) اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسُئَلُكَ باسُمِكَ يَا سَمِيْعَ يَا شَفِيْعَ يَا رَفِيُعَ يَا مَنِيُعَ يَا سَرِيُ شفاعت والے اے بلندی والے اے محفوظ اے جلدی کرنے والے اے ابتد اکرنے والے اے برد اتی والے اے قد رت والے اے خبر والے بَـدِيْـعُ يَا كَبِيُرُ يَا قَدِيْرُ يَا خَبِيُرُ يَا مُجِيْرُ (70)يَـا حَيَّـا قَبُلَ كُلِّ حَيّ يَا حَيًّا بَعُدَ كُلّ حَيّ يَا ا ہے پناہ دینے والے (۷۰) اے ہر زند ہے پہلے زندہ ہونے والے اسے ہر زند ہ کے بعد زندہ رہنے والے اسے وہ زندہ جس کی مثل کوئی اور زندہ حَتُّى الَّـذِي لَيُسسَ كَلِمِثُلِهِ حَيُّ يَا حَلَّى الَّذِي لَا يُشَارِكُهُ حَيٌّ يًا حَيٌّ الَّذِي لا يَحْتَاجُ إِلَى مبیں اے وہ زند وکوئی زند وجس کاشر کیے مبیں اے وہ زند ہ جو کسی زند وکامتا ج نبیں اے دہ زند ہجوسب زندوں کوموت ویتا ہےا ہے وہ زند ہ جو حَىّ يَا حَيُّ الِّذِي يُمِينُتُ كُلِّ حَيّ يَا حَيُّ الَّذِي يَوُزُقُ كُلُّ حَيّ يَا حَيًّالَّهُ يَوثِ الْحَيٰوةَ مِنُ سب زند ول کورز تی دیتا ہےا ہے وہ زند ہیس نے کسی زندہ سے زندگی ٹیمیں مائی اے وہ زندہ جوزند ول کوموت ویتا ہےا ہے وہ تگہبان کرجے نہ نیمیند حَيِّ يَا حَيُّ الَّذِي يُحُي الْمَوْتِلِي يَا حَيُّ يَا قَيُّوهُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوُمٌ (71)يَا مَنُ لَّهُ ذِكُرٌ آتی ہےنہ اڈگھ (اے) اے وہ جس کا ذکر بھلایا نہیں جا سکتا اےوہ جس کے نورکو بچھایا نہیں جا سکتا اےوہ جس کی نعتو ل کوٹنا رئیس کیا جا سکتا اےوہ لاَّ يُنْسلي يَا مَنُ لَّهُ نُورٌ لَا يُطُفِي يَا مَنُ لَهُ نِعَمَّ لاَّ تُعَدُّ يَا مَنُ لَّهُ مُلُكَّ لَا يَزُولُ يَا مَنُ لَّهُ ثَنَآهُ جس کی با دشاہی ٹوٹے والی ٹیس اےوہ جس کی تعریف کی کوئی حدثیم اےوہ جس کے جلال کی کیفیت بے بیان ہے اےوہ جس کے ممال کو سمجھا لا يُحُطى يَا مَنُ لَّهُ جَلَالٌ لاَ يُكَيَّفُ يَا مَنُ لَّهُ كَمَالٌ لَّايُدُرَكُ يَا مَنُ لَّهُ قَضَآءٌ لا يُرَدُّ يَا مَنُ خبیں جا سکتا اے دہ جس کا فیصلہ تا لائییں جا سکتا اے دہ جس کی مفات میں تبدی<mark>لی ٹبی</mark>ں اے دہ جس کے دمفوں میں تبدل ٹبیں (۷۲) اے عالمین لُّـهُ صِـفَاتٌ لَّا تُبَدَّلُ يَا مَنُ لَّهُ نَعُوٰتٌ لاَ تُغَيِّرُ (72)يَـا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ يَا مَالِكَ يَوُم الدِّيْنَ يَا

غَـايَةَ الـطَّالِبِيُـنَ يَا ظَهُرَ اللَّاحِيْنَ يَا مُدُرِكَ الْهَارِبِيْنَ يَا مَنْ يُحِبُّ الصَّابِرِيْنَ يَا مَنْ يُحِبُّ ووست رکھتا ہا۔ وہ جوتو برکرتے والول محبت کتا ہاے وہ جویا کیزگی والول کو پیند کرتا ہا ہے وہ جو نیکوکا رول کو پیند کرتا ہا ہے وہ جو التَوَّابِيُنَ يَسا مَنُ يُّحِبُّ الْمُصَطَهِّرِيُنَ يَسا مَنُ يُحِبُّ الْمُحُسِنِيُنَ يَا مَنُ هُوَ اَعُلَهُ ہدایت یا فتہ لوگوں کو جانتا ہے(۲۳) اےمعبود میں چھے ہے سوال کرتا ہوں تیرےنا م ہے اےمہریان اے ہمدم اے نگر مدار اے احاطہ کرنے بِالْمُهُتَدِيُنَ (73)اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلَكَ بِاسْمِكَ يَاشَفِيْقُ يَا رَفِيُقُ يَا حَفِيُظَ يَا مُحِيُطَ يَا مُقِيُ والےاےرز ق دینے والے اعفر یا درس اعرات دینے والے اعدات دینے والے اے پیدا کرنے والے اعلانے والے (۵۳) اے يَا مُغِيُثُ يَا مُعِزُّ يَا مُذِلُّ يَا مُبُدِئُ يَا مُعِينُهُ (74)يَا مَنُ هُوَ اَحَدٌ بِلَاضِدٍّ يَا مَنُ هُوَ فَرُدٌ بِلَانِدٍّ وہ جوابیا یکا نہے جس کا کوئی مقا تاخیں اے وہ جوابیا بکراہے حس کا شریک ٹیس اے وہ جوابیا بے نیاز ہے جس میں کوئی عیب ٹیس اے وہ جوابیا يَا مَنُ هُوَ صَمَدُ بِلاَ عَيُبٍ يًّا مَنُ هُوَ وِتُرُّ بِلَا كَيُفٍ يًّا مَنُ هُوَ قَاضٍ بِلَا حَيُفٍ يَا مَنُ هُوَ فر دہے جس میں کوئی کیفیت نہیں اے وہ جس کا فیصلہ خلا ف حق نہیں ہوتا اے وہ رب جس کا کوئی وزیرنہیں ہےاہے وہ عزت دارجے ذلت نہیں اے رَبُّ بَلَا وَزِيْرِ يَا مَنُ هُو عَزِيْرٌ بِلا ذُلِّ يَا مَنْ هُو غَلِيٌّ بَلَا حَيُّفٍ يَّا مَنْ هُوَ غَنِيٌّ بَلاَ فَقُرِ يَا وہڑ وت مند جوبتاج نبیں اے وہا وشاہ جے جٹایا نہیں جاسکتا اے ایسے صفتو ل والے جس کی کوئی مثال نہیں (۷۵) اے وہ جس کا ذکر ذاکرول مَـنُ هُوَ مَلِكَ بِلَا عَزُلِ يَا مَنُ هُوَ مَوْصُونُكُ بِلاَ شَبِيُرِ75)يَـا مَنُ ذِكُرُهُ شَرَفٌ لِلذَّاكِريُنَ کیلئے وجہ برزرگی ہےاہےوہ جس کا شکرشا کروں کیلئے کامیا ہی ہےاہےوہ جس کی حمد حمد کرنے والوں کیلئے وجہ عزت ہےاہےوہ جس کی فرمانجر داری يَا مَنُ شُكُرُهُ فَوُزٌ لِلشَّاكِرِيْنَ يَا مَنُ حَمُدُهُ عِزٌّ لِّلُحَامِدِيْنَ يَا مَنُ طَاعَتُهُ نَجَاةً لِلُمُطِيُعِيْنَ يَا فرما نبر دارول کیلئے وجہ بجات ہےا ہے وہ جس کا درواز ہ طابگا رول کیلئے کھلار ہتا ہےا ہے وہ جس کارا سرقو بسکرنے والول کیلئے ظاہر وہا ہر ہےا ہے وہ مَنُ بَابُهُ مَفْتُو حُ لِلطَّالِبِيُنَ يَا مَنُ سَبِيلُهُ وَاضِحٌ لِّلُمُنِيْبِيْنَ يَا مَنُ ايَاتُهُ بُرُهَانٌ لِلنَّاظِرِيُنَ يَا جس کی نشانیاں دیکھنے والوں کیلئے پیختہ ولیل ہیں اے وہ جس کی کتاب پر ہیزگا رول کیلئے تھیجت ہے اے وہ جس کا رزق فرما نبر داروں اور مَـنُ كِتَـابُهُ تَذُكِرَةٌ لِلْمُتَّقِيْنَ يَا مَنُ رَزُقُهُ عُمُوُمٌ لِلَطَّآئِعِيْنَ وَالْعَاصِيْنَ يَا مَنُ رَحْمَتُهُ قَرِيْبٌ نا فرما نول کیلئے کیسال ہےا ہے وہ جس کی رحمت نیکوکارول کے نز ویک تر ہے (۷۱) اے وہ جس کانا م برکت والا ہےا ہے وہ جس کی شان بلند مِّنَ الْمُحْسِنِيُنَ (76)يَا مَنُ تَبَارَكَ اسْمُهُ يَا مَنُ تَعَالَى جَدُّهُ يَا مَنُ لِإَلَٰهَ غَيْرُهُ يَا مَنُ جَلَّ

ثَنَائُهُ يَا مَنُ تَقَدَّسَتُ اَسُمَائُهُ يَامَنُ يَّدُوُمُ بَقَائُهُ يَا مَنِ الْعَظَمَةُ بَهَا نُهُ يَا مَن الْكِبُرِيَاءُ رِدَائُهُ ہے اے وہ کہ بزرگی جس کا جلوہ ہےا ہے وہ کہ بڑ اتی جس کا لہاس ہےا ہے وہ جس کی تعتقر ل کی حدثییں اے وہ جس کی تعتقر ل کا شارٹییں (۷۷) يَا مَنُ لَاتُحُطِي الْآنَّةُ يَا مِنَ لَا تُعَدُّنَعُمَآنُهُ (77)اَللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِاسْمِكِ يَا مُعِيْنُ الے معبود میں چھے سے سوال کرتا ہوں تیرے بی مام ہے اے مددگا راے امانتداراے آشکا رائے بچیرہ اعقد رت والے اے ہدایت والے اے نُ يَا مَتِينُ يَا مَكِينُ يَا رَشِينُ يَا حَمِينُ يَا حَمِينُ يَا مَجِينُ يَا شَدِينُ يَا شَهِينُ (78) يَا ذَاالُعَرُ ش تعریف والے اے بزرگی والے استحکم اے کواہ (۷۸) اے بزر کعرعرش کے مالک اے درست قول والے اے پیختر کام کرنے والے اے الْمَجِيُدِ يَا ذَاالُقَوُلِ السَّدِيُدِ يَاذَاالُفِعُلِ الرَّشِيُدِ يَا ذَاالْبَطُش الشَّدِيُدِ يَا ذَا الْوَعُدِ سخت گر فت کرنے والے اے دعد ہ کرنے والے اور دھمکی دینے والے اے وہ جوقا بل تھریف سر پرست ہےا ہے وہ کہ جوچا ہے کرگز رتا ہےا ہے وَالْوَعِيْدِ يَا مَنُ هُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِينُدُ يَا مَنُ هُوَ فَعَالٌ لِّمَا يُرِيُدُ يَا مَنُ هُوَ قَرِيُبٌ غَيْرَ بَعِيْدٍ يَا وہ جوابیا قریب ہے کہ دورٹیس ہوتا اے دہ جو ہر چیز کا دیکھنے والا ہےا۔ وہ جو بندول پر ہر گر ظلم میں کرتا (۷۹)اے وہ جس کا نہ کوئی شریک ہے نہ مَنُ هُوَ عَلَى كُلِّ شَلِّي شَهِلِدٌ إِنَّا مَنْ هُوَ لَيْشَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ (79)يَا مَنُ لَا شَرِيُكَ لَهُ وَلَا وزیراے وہ جس کی نہکوئی مثل ہے نہا تی اے روشن سورج اور جاند کے خالق اےنا دار برنو اکور وت دینے والے اے نتھے بیچے کورز تی دینے وَ زِيْسَ يَامَنُ لَّاشَبِيُهَ لَهُ وَلاَ نَظِيْرَ يَا خَالِقَ الشُّمُس وَ الْقَمَرِ الْمُنِيْرِ يَا مُغُنِيَ الْبَآئِسِ الْفَقِيْر والے اے بوٹ پوڑھے پر رحم کرنے والے اے ٹوٹی ہوتی ہڈی کو جوڑنے والے اے خوف زوہ بنا ہ جو کہ بنا ہ وسینے والے اے وہ جواسینے کوجانتا يَا رَازِقَ الطِّفُلِ الصَّغِيُرِ يَا رَاحِمَ الشُّيُخِ الْكَبِيْرِ يَا جَابِرَ الْعَظْمِ الْكَسِيْرِ يَا عِصْمَةَ اورد کھتا ہےا۔ وہ جو ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے(۸۰) اے فعتوں والے ختی اے فعل وکرم کرنے والے اے لوح قلم کے پیدا کرنے والے اے الُخَائِفِ الْمُسْتَجِيُرِ يَا مَنُ هُوَ بِعِبَادِهِ خَبِيُرٌ بَصِيْرٌ يَّا مَنُ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيءٍ قَدِيُرٌ(80)يَا انسانوں اور کیٹروں کے بنانے والے استخت کیراور بدلہ لینے والے اسعرب وجم کوالہا م کرنے والے اسے در دوغم کودور کرنے والے اسے راز و ذَا الْجُوُدِ وَالْنِعَمِ يَاذَا الْفَضُلِ وَالْكَرَمِ يَا خَالِقَ اللُّوحِ وَالْقَلَمِ يَا بَارِيَ الذَّرّ وَالنَّسَمِ يَا نیت کے جاننے والے اے کعبدورم کے پر وردگا راہوہ جس نے چیز ول کولاشتی ہے پیدا کیا (۸۱) اے معبو دمیں چھے ہوال کرتا ہول تیرے ذَاالُبَاسِ وَالنِّقَمِ يَا مُلْهِمَ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ يَا كَاشِفَ الضَّرِّوَالْاَلَمِ يَا عَالَمَ السِّرّ وَالْهِمَ جی t مے اے کا م کرنے والے اے بنانے والے اے قبول کرنے والے اے یورا کرنے والے اے جدا کرنے والے اے ملانے والے اے

يَا رَبُّ الْبَيْتِ وَالْحَرَمِ يَا مَنُ خَلَقَ الْاَشْيَآءَ مِنَ الْعَدَمِ(81)اللَّهُمَّ إِنِّي اَسُئَلُكَ باسْمِكَ عدل کرنے والے استغلبہ والے اسے طلب کرنے والے اسے عطا کرنے والے (۸۲) اسے وہ جس نے اپنے فضل سے نعب مجنثی اسے وہ جو فَاعِلُ يَا جَاعِلُ يَا قَابِلُ يَا كَامِلُ يَا كَامِلُ يَا فَاصِلُ يَا وَاصِلُ يَا عَادِلَ يَا غَالِبُ يَا طَالِبُ يَا سخاوت میں بلند ہےا ہے وہش نے مہریا ٹی ہے عطافر مائی اے وہ جس نے اپنی قدرت ہے عزت دی اے وہ جس نے تعکمت ہے انداز وکھیرالیا وَاهِبُ (82)يَا مَنُ ٱنْعَمَ بِطَوْلِهِ يَا مَنُ ٱكُومَ بِجُوْدِهِ يَا مَنُ جَادَبِلُطُفِهِ يَا مَنُ تَعَزَّزَ بِقُدُرَتِهِ يَا اے دہ جس نے اپنی رائے ہے تھم دیا اے دہ جس نے اپنے علم نے تھم قائم کیا اے دہ جواپنی پر دباری ہے معاف کرتا ہے اے دہ جو بلند ہوتے مَنُ دَنٰى فِيُ عُلُوٍّهٖ يَا مَنُ عَلَا فِي دُنُوٍّهٖ (83)يَا مَنُ يَّخُلُقُ مَايَشَآءُ يَامَنُ يَّفُعَلُ مَا يَشَآءُ يَا مَنُ ہوئے بھی قریب ہےا۔ وہ جونز د کمی میں ھی بلند ہے(۸۳)اے وہ کہ جوجا ہے پیدا کرتا ہےا۔ وہ کہ جوجا ہے کر گزرتا ہےا۔ وہ کرجے يُّهُدىُ مَنُ يَشَاءُ يَامَنُ يُضِلُّ مَنُ يَشَاءُ يَا مَنُ يُعَذِّبُ مَنُ يَشَاءُ يَا مَنُ يَغَفِرُ لِمَنُ يَشَاءُ يَا و جوایت دیتا ہےا۔ وہ کرچے وا ہے گراہ کرتا ہےا۔ وہ کرچے وا ہے عذاب دیتا ہےا۔ وہ کرچے وا ہے بخشا ہےا۔ وہ کرچے وا ہے مَنُ يُعِزُ مَنُ يَشَآءُ يَا مَنُ لِلِذِلْ مَنْ يَسَاءُ لَا مَنْ يُصَوْرُ فِلَى الْأَرْ خَامِمًا يَشَآءُ يَا مَنُ يَخْتَصُّ عزت دیتا ہےا ہےوہ کرجے جا ہے ذلت دیتا ہےا ہےوہ کر تلکھول میں جیسی جا ہےصورت بنا تا ہےا ہےوہ کرجے جا ہےاپنی رحمت ہے فاص کرتا بِرَحُمَتِهِ مَنُ يَّشَآءُ (84)يَا مَنُ لَمُ يَتْخِذُ صَاحِبَةً وَّلاَ وَلَدًا يًا مَنُ جَعَلَ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدُرًا يًا ہے(۸۴) اے وہ جس نے نہیوی کی اور نہ اولا ووالا ہوااے وہ جس نے ہر چیز کا ایک انداز ڈھیر لا اے وہ جس کی حکومت میں کوئی حصہ دار قبیس مَنُ لَّا يُشُرِكُ فِي حُكْمِهِ اَحَدًا يَّا مَنُ جَعَلَ الْمَلَائِكَةَ رُسُلاًيًا مَنُ جَعَلَ فِي السَّمَا اے وہ جس نے فرشتول کو قاصد قر اردیا اے وہ جس نے آسان میں ہرج تر حیب دیے اے وہ جس نے زمین کورینے کی مجکہ بنایا اے وہ جس نے بُـرُوُجًا يًّا مَنُ جَعَلَ الْأَرُضَ قَرَارًا يًّا مَنُ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا يًّا مَنُ جَعَلَ لِكُلّ شَيءٍ انسان کوقطر گا آ ب سے پیدا کیا اے وہ جس نے ہر چیز کی مدت مقر رفر مائی اے وہ جس کاعلم ہر چیز کو گھیرے ہوئے ہے اے وہ جس نے سب اَمَدًا يَّا مَنُ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا يَّا مَنُ اَحُطى كُلِّ شَيْءٍ عَدَدًا (85)اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسُئَلُكَ چیز دن کا شارکررکھا ہے(۸۵)اےمعبود میں جھے ہے سوال کرتا ہوں تیرے بی نام ہے اےادل ہے آخر اے ظاہر اےباطن اے نیک اے ق بِاسُمِكَ يَا أَوَّلَ يَا اخِرُ يَا ظَاهِرُ يَا بَاطِنُ يَابَرُّ يَا حَقُّ يَا فَرُدُ يَا وَتُرُ يَا صَمَدُ يَا سَرُ مَلِكَا 8)

يَا خَيْرَ مَعُرُوْفٍ عُرِفَ يَآ اَفُضَلَ مَعُبُوْدٍ عُبِدَ يَآ اَجَلَّ مَشُكُوْرِ شُكِرَيَآ اَعَزَّ مَذُكُورِ ذُكِرَ يَآ یں بہترین شکر کیے گئے اے ذکر کیے ہوؤل میں بلند مر اے تعریف کیے ہوؤل میں بالاتر اے ہرموجودے قدیم جوطلب کیا گیا اے ہرموصوف أَعْلَى مَنْحُمُوْدٍ خُمِدَ يَآ أَقُدَمَ مَوْجُوُدٍ طَلِبَ يَآ أَرُفَعَ مَوْضُوْفٍ وُّصِفَ يَآ أَكْبَرَ مَقُصُوْدٍ ے اعلیٰ جس کا دمف کیا گیا اے ہرمقصو دے بلند کرجس کا قصد کیا گیا اے ہرسوال شدہ ہے باعزت جس ہے سوال ہوا اے بہترین محبوب جے قُصِدَ يَاۤ اَكُرَمَ مَسُئُولِ سُئِلَ يَاۤ اَشُرَفَ مَحُبُوبٍ عُلِمَ (87)يَا حَبِيُبَ الْبَاكِيُنَ يَا سَيّدَ جانا گیا (۸۷) اے رونے والوں کے دوستدارا ساق کل کرنے والول کے سر دارائے گمراہوں کو ہدایت دینے والے اےمومنول کے سر پر ست الْمُتَوَكِلِّيُنَ يَا هَادِيَ الْمُضِلِّيُنَ يَا وَلِيَّ الْمُؤُمِنِيُنَ يَا إِنِيُسَ الذَّاكِرِيُنَ يَا مَفُزَعَ الْمَلْهُوُفِيُنَ ا سیا د کرنے والوں کے ہمرم اے دل جلوں کی پنا ہ گا ہ اے سچے لوگوں کونجات دینے والے اسے قد رت والوں میں ہو ہے باقد رت اے علما میں يَا مُنْجِيَ الصَّادِقِيْنَ يَا اَقُدَرَالُقَادِرِيُنَ يَا اَعُلَمَ الْعَالِمِيْنَ يَا اِلْهُ الْخَلُق اَجُمَعِيْنَ (88) يَا مَنُ زیا دہ عالم اے ساری تلوق کے معبود (۸۸)اے وہ جو بلند اور مسلط ہاہوہ جو مالک تو لا ہاہو وہ جو نہاں اور خبر دار ہےا ہے وہ جو معبود ہے عَلَا فَـقَهَرَ يَا مَنُ مَلَكُ لَقُدُارَ يَا مُنْ لَطَنَ فَحَبَا يَا مَنْ عَبِدُ فَاشَكُرُ يَا مَنْ عُصِي فَغَفَر يَا مَنْ تو شاکریمی ہےا۔وہ جس کی بے بھی ہوتو بخش دیتا ہےا۔وہ جس کوفکر پانہیں سکتی اےوہ جے آ گھدد کچیزیں سکتی اےوہ جس پر کوئی نشان مخفی نہیں لًا تَحُويُهِ الْفِكُرُ يَا مَنُ لَّا يُدُرُّكُهُ بَصَرٌ يَّا مَنُ لَّا يَخُفَى عَلَيْهِ أَثَرٌ يَّا رَازِقَ الْبَشَرِيَا ہا ہے بشر کوروزی دینے والے اسے ہراندازہ کے مقر رکزنے والے (۸۹) اے معبودتیں جھے سوال کرتا ہوں تیرے بی نام سے اعظم ہمان مُقَدِّرَكُلَّ قَدَرِ (89) اَللَّهُمَّ إِنِّـيُ اَسُـئَـلُكَ بِاسْمِكَ يَا حَافِظُ يَا بَارِئُ يَا ذَارِئُ يَا بَاذِخُ اب پیدا کرنے والے اے فاہر کرنے والے اے بلندی والے اے کشاکش دینے والے اے کھو لنے والے اے فرمایا ل کرنے والے اے ذمہ دار فَارِجُ يَا فَاتِحُ يَا كَاشِفُ يَا ضَامِنُ يَآ امِرُ يَا نَاهِيُ (90)يَا مَنُ لَّا يَعُلَمُ الْغَيْبَ إِلَّا هُوَ يَا مَنُ ائے تھم کرنے والے اےرد کنے والے (۹۰) اے وہ جس کے سواکوئی بھی غیب نہیں جانتا اے وہ جس کے سواکوئی و کھ دور نہیں کرسکتا اے وہ جس لَّا يَصُوفُ السُّوْءَ إِلَّا هُوَ يَا مَنُ لَّا يَخُلُقُ الْخَلُقَ إِلَّا هُوَ يَا مَنُ لَّا يَغُفِرُ الذُّنُبَ إِلَّا هُوَ يَا مَنُ کے سواکوئی ہمی خلق ٹییں کرسکتا اے وہ جس کے سواکوئی گنا ہ معاف ٹییں کرتا اے دہ جس کے سواکوئی فعیت تمام ٹییں کرتا اے دہ جس کے سواکوئی لَّا يُسْهُمُ النِّبُعُمَةَ إِلَّا هُوَ يَا مَنُ لَّايُقَلِّبُ الْقُلُوبَ إِلَّا هُوَ يَا مَنُ لَّا يُدَبِّرُ الْآمُوَ إِلَّا هُوَ يَا مَنُ ولوں کو بیس پاٹا تا اے وہ جس کے سواکوئی کا م پور مے بیس کرتا اے وہ جس کے سواکوئی بارش میس ہر ساتا اے وہ جس کے کوئی روزی میں ہیڑ صاتا

لَّا يُنَزَّلُ الْغَيْثَ اِلَّا هُوَ يَا مَنُ لَّا يَبُسُطُ الرَّزْقَ اِلَّا هُوَ يَا مَنُ لَّا يُحُى الْمَوْتَلَى اِلَّا هُوَ (91) يَا اے وہض کے سواکوتی بھی مردے زند ہ بیس کتا (۹۱) اے تمز ورول کے مددگا راے مسافروں کے ہمدم اے دوستوں کی مدد کرنے والے اے مُعِيُنَ الضَّعَفَآءِ يَا صَاحِبَ الْغُرَبَآءِ يَا نَاصِرَ الْأَوْلِيَآءِ يَا قَاهِرَ الْأَ عُدَآءِ يَا رَافِعَ السَّمَآءِ يَا د شمنول پر غلبہ مانے والے اے آسمان کو بلند کرنے والے اے خواص کے ساتھی اے پر ہیز گاروں کے دوستداراے بے مایول کے فز انے اے يَا كَافِيًا مِّنُ كُلِّ شَيْءٍ يَّا قَائِمًا عَلَى كُلِّ شَيْءٍ يَّا مَنُ لَّا يُشْبِهُهُ شَيْءُ يَّا مَنُ لًا يَزِيُدُ فِي و دلتند ول کے معبوداے کر یمول ہے زیا وہ کریم (۹۴)اے ہر چیز ہے کفایت کرنے والے اے ہر چیز کی گھرانی کرنے والے اے وہ جس کے كِهِ شَكْءُ يَّا مَنُ لا يَخُفْى عَلَيْهِ شَيْءٌ يَا مَنُ لا يَنْقُصُ مِنْ خَزَائِنِهِ شَيْءٌ يَّا مَنُ لَّيْسَ جیسی کوئی چیز میں اےوہ جس کی حکومت میں اضافہ میں ہوسکتا اےوہ جس ہے کوئی چیز میں اےوہ جس کے فرزانوں میں سیجے بھی کی میں آتی كَـمِثْلِهِ شَيْءٌ يًّا مَنُ لاَّ يَعُزُبُ عَنُ عِلْمِهِ شَيْءٌ يًّا مَنُ هُوَ خَبِيْرٌ م بِكُلِّ شَيْءٍ يًّا مَنُ وَسِعَتُ اے وہ جس کی مثل کوئی چیز نہیں اے وہ جس کے علم ہے کوئی چیز یا ہر نہیں ہےاہے وہ جو ہرچیز کی خبر رکھتا ہےاہے وہ جس کی رحمت ہرچیز تک وسیع رَحْمَتُهُ كُلِّ شَيْءٍ (93) اللَّهُ لِم إنَى أَسْتَلُكُ بِالسِّمِكُ لِمَا مُكُومٌ مِا مُطِّعِمُ يَا مُنْعِمُ يَا مُعُطِيٍّ ہے(۹۳)ا ہے معبود میں چھے سے سوال کرتا ہوں تیرے بی مام ہے اعززت دینے والے اے کھانا دینے والے ایفنت عطا کرنے والے اے بِـمَـنِ اسْتَحُفَظُهُ رَقِيْبٌ يَّا مَنُ هُوَ بِمَنُ رَجَاهُ كَرِيْهُ يَّا مَنُ هُوَ بِمَنُ عَصَاهُ حَلِيْهٌ يَّا مَنُ هُوَ عطا کرنے والے اے دولت وینے والے اے ذخیرہ کرنے والے اے قتا کر دینے والے اے زندہ کرنے والے اے بچاری دینے والے اے مُعْنِيُ يَا مُقَنِيُ يَا مُفْنِيُ يَا مُحُيِيُ يَا مُرُضِيُ يَا مُنجِيُ (94) يَآ أَوَّلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ اخِرَهُ يَآ اِللّهَ نجات دینے والے(۹۴) اے ہر چیز ہے پہلے اوراس کے بعد اے ہر چیز کے معبو داوراس کے ما لک اے ہر چیز کے پر وردگا راوراے منانے مُورَيِّبُ يَا مُسَخَوِّفُ يَا مُحَذِّرُ يَا مُذَكِّرُ يَا مُسَجِّرُ يَا مُغَيِّرُ(98) يَسا مَسُ عِلْمُهُ سَابِقُ يَّا مَنُ لے اے ہرچیز کے پیدا کرنے اور انداز ڈھیرانے والے اے ہرچیز کو بند کرنے اور کھو لنے والے اے ہرچیز کا آغاز کرنے اور اے لوٹانے شَـىءِ وَّ بَـاسِـطَهُ يَا مُبُدِى كُلِّ شَيْءٍ وَ مُعِيْدَهُ يَا مُنُشِيًّ كُلِّ شَيْءٍ وَّ مُقَدِّرَهُ يَا مُكُوِّنَ كُلِّ والےاے ہرچیز کوریو حانے اور روک نگانے والے اے ہرچیز کو بنانے اور اے تبدیل کرنے والے اے ہرچیز کوزندہ کرنے اور اےموت ویے شَـيُءِ وَّ مُـحَـوَّ لَـهِ يَـا مُـحُيبَى كُلِّ شَيْءٍ وَ مُمِيْتَهُ يَا خَالِقَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ وَارثُهُ(95) يَا خَيْرَ

أَنِيُسَ الْأَصُفِيَآءِ يَا حَبِيُبَ الْأَتُقِيَآءِ يَا كَنَزَ الْفَقَرَآءِ يَآ اِلٰهَ الْأَغُنِيَآءِ يَآ اكُرَمَ الْكُرَمَآءِ(92) اور شکر کیے ہوئے اے پہترین حمرکرتے والے اور حمد کیے ہوئے اے پہترین گواہ اور گوائی دیے ہوئے اے بہترین بلانے والے اور بلائے ہوئے كَـلِّ شَـيْءٍ وَّ مَلِيُكَهُ يَا رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ وَّ صَانِعَهُ يَا بَارِئَ كُلِّ شَيْءٍ وَّ خَالِقَهُ يَا قَابِضَ كُلِّ اے بہترین جواب دینے والے اور جواب دیتے ہوئے اے بہترین اُس کیے ہوئے اور اُس کرنے والے اے بہترین رفیق اور بم تشین اے ذَاكِرِ وَّ مَذُكُورٍ يَا خَيُرَ شَاكِرِ وَّ مَشُكُورٍ يَّا خَيْرَ حَامِدٍ وَّ مَحُمُودٍ يَّا خَيْرَ شَاهِدٍ وَّ بہترین قصد کیے ہوئے اور طلب کیے گئے اے بہترین دوستدار اور دوست رکھے گئے (۹۲) اے وہ جے پاکرا جائے تو جواب ویتا ہے مَشُهُودٍ يَّا خَيُسَرَ دَاعٍ وَّ مَـدُعُوِّ يَّا خَيْرَ مُجِيْبٍ وَّ مُجَابٍ يَّا خَيْرَ مُوْنِسٍ وَّ اَنِيُسٍ يَّا خَيْرَ اے وہ جس کی اطاعت کی جائے تو محبت کرتا ہےاہے وہ جومحبت کرنے والے کے قریب ہوتا ہےاہے وہ جوطالب حفاظت کا تگہبان ہےاہے وہ جو صَـاحِب وَّ جَلِيُس يَّا خَيْرَ مَقُصُودٍ وَّ مَطْلُوب يَّا خَيْرَ حَبِيْبٍ وَّ مَحُبُوبٍ (96) يَا مَنُ هُوَ امید دار برکرم کرتا ہےا ہے وہ جونا فرمان کے ساتھ زمی کرتا ہےا ہے وہ جوا ٹی بڑائی کے با وجود مہربان ہےا ہے وہ جوا پی حکمت میں بلند ہےا ہے لِـمَـنُ دَعَاءُ مُحِيْبُ يَا مَنْ هُو لِلمَنْ أَطَاعَهُ حَبِيْبٌ يَا مَنْ هُوَ الِّي مَنْ أَحَبُّهُ قَريب يًا مَنْ هُوَ وہ جوقد کی احسان کرنے والا ہےا۔وہ جوارادہ رکھےوالے کوجانتا ہے(۹۷)امے معبود میں چھے سوال کرتا ہوں تیرے بی نام ہے اے سب فِيُ عَظَمَتِهِ رَحِيْمٌ يَّا مَنُ هُوَ فِي حِكْمَتِهِ عَظِيْمٌ يَّا مَنُ هُوَ فِيُ إِحْسَانِهِ قَدِيْمٌ يَّا مَنُ هُوَ بِمَنُ بنانے والے اسے شوق دلانے والے اسے پلٹانے والے اسے پیچھا کرنے والے اسے تر تیب کرنے والے اسے شوف دلانے والے اسے ڈرانے اَرَادَهُ عَلِيُمٌ (97) اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ يَا مُسَبِّبُ يَا مُرَغِّبُ يَا مُقَلِّبُ يَا مُعَقِّ والے اسپا دکرنے والے اسپا پیمرکرنے والے اسبر لنے والے (۹۸) اسے وہ جس کاعلم سبقت رکھتا ہے اسے وہ جس کا وعد وہم ہے ہے اسے وہ وَّ عُـدُهُ صَـادِقُ يَّـا مَـنُ لَّـكُفُهُ ظَاهِرٌ يَّا مَنُ أَمُرُهُ غَالِبٌ يَّا مَنُ كِتَابُهُ مُحُكَّمٌ يَّا مَنُ قَضَآ زُهُ جس كالطف ظاہر ہےا۔ وہ جس كاتھم غالب ہےا۔ وہ جس كى كتاب محكم ہےا۔ وہ جس كا فيصله ما فذہباے وہ جس كا قرآن شان والا ہے كَآئِنُ يَّا مَنُ قُوُانُهُ مَجِيُدٌ يَّا مَنُ مُّلُكُهُ قَدِيهٌ يَّا مَنُ فَضُلُهُ عَمِيْمٌ يَّا مَنُ عَرُشُهُ عَظِيُمٌ (99) يَا اے وہ جس کی حکومت قدیمی ہےا ہے وہ جس کا فضل عام ہےاہے وہ جس کاعرش پرزگ تر ہے(99)اے وہ جے ایک ساعت وہ سری ساعت ہے يَشَغَلُهُ سَمُعٌ عَنُ سَمُع يًّا مَنُ لا يَمُنَعُهُ فِعُلِّ عَنُ فِعُل يًّا مَنُ لاً يُلُهِيهِ قَوُلٌ عَنُ قَوُل رتی اے دوجہے ایک فعل دوسر مے فعل ہے مانع نہیں ہوتا اے دوجہے ایک قول دوسر ہے قول میں محل نہیں اے دوجہے ایک سوال دوسر ہے

شیں اے دہ دولت والے جو کسی کامختاج نہیں اے دہ ہر جو چھوٹا نہیں اے دہ تکہبان جوغا فل نہیں آویا ک ہے اے دہ کر سوائے تیرے کوئی معبود

الاً أنْتَ الْغَوْثَ الْغَوْثِ خَلِطْنَا مِنَ لَنَالِ الْمَالِكِ الْعَوْثِ خَلِطْنَا مِنَ لَنَالِ الْمَالِكِ ال

میں اعفریا درس اعفریا درس ہمیں آتش جہم سے بچالے اے بالنے والے۔

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيُمِ ٥

خدا کے مام سے شروع جو ہوام پر بان نہایت رحم والا ہے

ٱللَّهُــةَ صَـلٌ عَـلَى مُـحَـمَّدٍ وَّ اللَّهِ وَ بَلُّغُ بِإِيْمَانِيُ ٱكُمَلَ الْإِيْمَانِ وَ اجْعَلُ يَقِينِني ٱفُضَلَ با پالها! محماً وران کی آل پر رحت ما زل فر مااورمیر ہےائیان کوکامل ترین ائیان کی حد تک پہنچاد ہےاورمیرے یقین کوپہترین یقین قرار دے الْيَقِيُسن وَ انْتَهِ بِنِيَّتِي إِلَى أَحْسَنِ النِّيَّاتِ وَ بِعَمَلِيُ الِي أَحْسَنِ الْاَعْمَال اَللَّهُمَّ وَفِرُ اورمیری نیت کو پہندید ہزین نیت اورمیرے اعمال کو بہترین اعمال کے بایہ تک بلند کر دے۔ خداو ندا! اپنے لطف سے میری نیت کو خالص و بِـلُطُفِکَ نِیَّتِیُ وَ صَجِّحُ بِمَا عِنُدَکَ یَقِیُنِیُ وَ اسْتَصْلِحُ بِقُدُرَتِکَ مَا فَسَدَ مِنِّیُ اَللَّهُمَّ بے رہا اورا پی رحت سے میرے یقین کواستوار اورا پی قد رت سے میری خرابیوں کی اصلاح کر دے ۔ با یا لہا! محمد اوران کی آ ل پر رحت صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ اللهِ وَاكْفِنِي مَا يَشُغُلُنِي الْإِهْتَمَامُ بِهِ وَاسْتَعُمِلُنِي بِمَا تَسْئَلُنِي غَدًا نا زل فرما اور مجھے ان مصروفیتوں سے جوعبادت میں مانع ہیں بے نیا زکر دے اورانہی چیزوں پڑھل پیراہونے کی توفیق دے جن کے بارے عَنُـهُ وَ اسْتَـفُـرِ غُ آيَّـامِيُ فِيُمَا خَلَقُتَنِيُ لَهُ وَاغْنِنِيُ وَ أَوْسِعُ عَلَيٌّ فِي رِزُقِكَ وَلا تَفْتِنِيُ میں مجھ ہے کل کے دن سوال کرے گا و رمیر ہے ایا م زندگی کوغرض خلقت کی انجام دبی کے لیے مخصوص کر دے اور مجھے (دوسروں ہے) بے بِالنَّظُرِ وَ اَعِزَّنِيُ وَلاَ تَهُمَالِيلِي بِالْكِبْرِ وَ عَبَّدْلِيمُ لَكُ وَلاَ تُفْسِدُ عِبَادَتِي بِالْعُجُبِ وَ اَجُر نیا زکر دےاورمیر ے رزق میں کشاکش و وسعت عطا فرما ۔احتیاج و دست گھری میں مبتلانہ کر۔عزت وتو قیر دے، کیروغرو رہے دوجار نہ لِلنَّاسِ عَلَى يَدِيَ الْخَيْرَ وَلا تَمُحَقُهُ بِالْمَنِّ وَهَبُ لِيُ مَعَالِيَ الْاَخُلاقِ وَ اعْصِمُنِيُ مِنَ ہونے دے۔میر کے نقس کوبندگی وعبادت کے لئے مام کراو رخود پیندی سے میری عبادت کو فاسدنہ ہونے دے اورمیر سے انھوں سے لوگوں الْـفَخُـرِ اَلـلَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الِهِ وَلا تَرُفَعُنِيُ فِي النَّاسِ دَرَجَةً اِلَّا حَطَطُتَنِيُ عِنْدَ كوفيض پہنچااورأے احسان جمانے سے رائيگان ندہونے دے۔ مجھے بلندیا بیا خلاق مرحمت فرمااورغروراورتفاخرے محفوظ ر کھ۔ بارالہا! محم نَفُسِيُ مِثْلَهَا وَلا تُحُدِثُ لِيُ عِزًّا ظَاهِرًا إِلَّا ٱحُدَثُتَ لِيُ ذِلَّةً مِ بَاطِنَةً عِنْدَ نَفُسِي بَقَدَرِهَا اوران کی آل پر رحمت نا زل فر مااورلوگوں میں میرا درجہ جتنابلند کرےا تناہی مجھے خودا پی نظروں میں بیت کر دےاورجتنی ظاہری عزت مجھے ٱللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِ مُحَمَّدٍ وَ مَتِّعُنِي بِهُدًى صَالِحٍ لا ٱسْتَبُدِلُ بِهِ وَ طَريُقَةِ حَقّ وے اتناہی میر نے قس میں باطنی بے قصتی کا احساس پیدا کردے ۔ با ہا الہا! محماً و مان کی آل پر رحمت ما زل فر مااور مجھے ایسی نیک ہدا ہے ۔ لا أَزِيْنُعُ عَنْهَا وَ نِيَّةِ رُشُدِ لا أَشُكُّ فِيْهَا وَ عَمِّرُنِيُ مَا كَانَ عُمُرِي بِذُلَةً فِي طَاعَةِكَ ہبر ہمند فرما کہ جے دوسری چیز ہے تبدیل نہ کروں اورا لیے سیجے راستہ پر نگا جس ہے بھی مند نہ موڑوں ، اورائیسی پختہ نیت دے جس میں ذیا شبہ

فَإِذَا كَانَ عُمُرِي مَرُتَعًا لِلشَّيْطَانِ فَاقْبَضْنِي إِلَيْكَ قَبُلَ أَنْ يَسْبِقَ مَقُتُكَ إِلَى آوُ نہ کروں اور جب تک میری زندگی تیری اطاعت وفر مانبر داری کے کام آئے مجھے زند ہ رکھاور جب وہ شیطان کی جرا گا ہین جائے تو اس سے يَسْتَحُكِمَ غَطَبُكَ عَلَيَّ ٱللَّهُمَّ لا تَدَعُ خَصْلَةً تُعَابُ مِنِّي إِلَّا ٱصُلَحْتَهَا وَلا عَآئِبَةً پہلے کہ تیری نا راضگی ہے سمالقہ پڑھیا تیراغضب مجھ پر بھیٹی ہوجائے ، مجھے اپنی طرف اٹھالے ۔ا ہے معبود! کوئی الیسی خصلت جومیرے لیے أُوَّنَّبُ بِهَآ إِلَّا حَسَّنْتَهَا وَلَا ٱكُرُوْمَةً فِيَّ نَاقِصَةً إِلَّا ٱتُمَمَّتَهَا ٱللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ معیوب مجھی جاتی ہواس کی اصلاح کے بغیر نہ چھوڑ اور کوئی الیمی ہری عادت جس مرمیر کی سرزنش کی جاسکے اسے درست سے بغیر نہ رہنے دے ال مُحَمَّدٍ وَ اَبُدِلْنِيُ مِنُ م بِغُضَةِ اَهُلِ الشُّنَانِ الْمَحَبَّةَ وَ مِنْ حَسَدِ اَهُلِ الْبَغْي الْمَوَدَّةَ اورجویا کیزہ خصلت ابھی مجھ میں نا تمام ہوا ہے بھیل تک پہنچا دے۔ اے اللہ! رحمت نا زل فرما محمد اوران کی آل پر اورمیری نسبت کینہ تو ز وَمِنُ ظِنَّةِ اَهُلَ الصَّلاحِ الثِّقَةَ وَمِنُ عَدَاوَةِ الْآدُنَيُنَ الْوَلاٰيَةَ وَمِنُ عُقُولُق ذَوى الْآرُحَام ا چشمنوں کی دشتنی کواُلفت ہے،سر کشوں کے حسد کومحبت ہے، نیکوں ہے ہے اعتماد کی کواعتما دیے، قربیوں کی عداوت کو دویتی ہے جزیزوں کی قطع الْمَبَرَّةَ وَ مِنُ خِذُلانَ الْأَقْرَلِيْنَ النَّصَرَةَ وَ مِنْ حُبُ الْمُذَّارِيْنَ تَصُحِيُحَ الْمِقَةِ وَ مِنْ رَدِّ العلقي كوصلة رحى سے، قرابتداروں كى بے اعتبانى كونصرت وتعاون سے، خوشامديوں كى ظاہرى محبت كو تجى محبت سے اور سراتھيوں كے اہانت الْـمُلابسِيُـنَ كَرَم الْعِشُرَةِ وَ مِنُ مَرَارَةِ خَوُفِ الظَّالِمِيْنَ حَلاٰوَةَ الْاَمَنَةِ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى آمیز برتا و کوشن معاشرت ہےاور ظالموں کے خوف کی مخی کوامن کی شیرینی ہے بدل دے خداوندا! رحمت نا زل فرما محمداوران کی آل براور مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ وَاجُعَلُ لِي يَدًا عَلَى مَنْ ظَلَمَنِيُ وَ لِسَانًا عَلَى مَنْ خَاصَمَنِيُ وَ ظَفَرًا م بمَنْ جومجھ برظلم کرےاں پر مجھے غلبہ دے۔ جومجھ سے جھگڑ ا کرےاں کے مقابلہ میں زبان (جحت شکن) دے۔ جومجھ سے دشنی کرےا*ں بر* عَـانَـدَنِـيُ وَهَبُ لِيُ مَكُرًا عَلَى مَنُ كَايَدَنِيُ وَ قُدُرَةً عَلَى مَن اضُطَهَدَنِيُ وَ تَكُذِيبًا لِمَنُ مجھے فتح و کامرانی بخش۔ جو مجھ سے مرکز ہاں کے مرکا تو ڑعطا کر۔جو مجھے دبائے اس پر قابو دے۔جومیری بد کوئی کرےا سے جھٹلانے کی قَـصَبَنِيُ وَ سَلاَمَةً مِـمَّـنُ تَـوَعَّدَنِيُ وَ وَفَقُنِي لِطَاعَةٍ مَنْ سَدَّدَنِيُ وَ مُتَابَعَةٍ مَنْ أَرْشَدَنِيُ طاقت و ہاور جوڈ رائے جھکائے ،اس سے مجھے محفوظ رکھ۔ جومیری اصلاح کرے اس کی اطاعت اور جوراہ راست دکھائے اس کی پیروی ٱللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ وَ سَدِّدُنِيُ لِأَنُ أَعَارِضَ مَنْ غَشِّنِيُ بِالنَّصُحِ وَ أَجُزِيَ مَنُ کی تو بیش عطا فرما ۱۰ استاللہ! محمداً و زان کی آگ پر رحمت ما زل فرمااور مجھے اس امر کی تو بیش دے کہ جو مجھ سے غش و فریب کر

هَـجَـرَنِـيُ بِـالُبِرِّ وَ ٱثِيُبَ مَنُ حَرَمَنِيُ بِالْبَذُلِ وَ ٱكَافِيَ مَنُ قَطَعَنِيُ بِالصِّلَةِ وَ ٱخَالِفَ مَن خواہی کروں، جو مجھے چھوڑ دےاس ہے حسن سلوک ہے پیش آؤں، جو مجھے محروم کرےاہے عطاق بخشش کے ساتھ عوض دوں اور جوقطع رحی اغْتَابَنِيُ إِلَى حُسُنِ الذِّكُرِ وَ أَنُ أُشُكُرَ الْحَسَنَةِ وَ أُغُضِيَ عَنِ السَّيَّئَةِ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى کرےاہے صلۂ رحی کے ماتھ بدلہ دوں اور جو پس بیت میری برانی کرے میں اس کے برخلاف اس کا ذکر خیر کروں اور حسن سلوک پر شکریہ مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ وَ حَلِّنِيُ بِحِلْيَةِ الصَّالِحِيْنَ وَ ٱلْبُسْنِيُ زِيْنَةَ الْمُتَّقِيْنَ فِي بَسُطِ الْعَدُلِ وَ بجالا ؤں اور بدی ہے چیٹم پوٹئ کروں ۔ با یالہا! محماً و ران کی آل پر رحمت نا زل فر مااور عدل کے نشر ، غصر کے منبط اور فتنہ کے فروکرنے ، متفرق كَـظُم الْغَيْظِ وَ اِطُفَآءِ النَّآئِرَةِ وَ ضِمَّ اَهُلِ الْفُرُقَةِ وَ اِصْلاح ذَاتِ الْبَيْنِ وَ اِفْشَآءِ الْعَارِفَةِ و پرا گندہ لوگوں کوملانے ، آپس میں صلح وصفائی کرانے ، نیکی کے ظاہر کرنے ،حیب پر پر دہ ڈالنے ، نرم خوئی وفروتی اورحسن سیرت کے اختیار وَ سَتُر الْعَاآئِبَةِ وَ لِيُس الْعَرِيُكَةِ وَ خِفُضِ الْجَنَاحِ وَ حُسُنِ السِّيُرَةِ وَ سُكُون الرِّيُح وَ کرنے ، رکھ رکھاؤ رکھے حسن اخلاق سے پیش آنے ، فضیلت کی طرف پیش قدمی کرنے ، تفضل واحسان کوڑ جیج دیے ، خوردہ کیری سے کنارا طِينُبِ الْمُحَالَقَةِ وَاللَّابُقِ إِلَى الْفَضِينَاةِ وَ إِيْثَارِ النَّفَضَّلُ وَ تُرْكِ التَّعِير وَ الإفضال کرنے اورغیرمستحق کے ساتھ حسن سلوک کے ترک کرنے اور حق ہات کے کہنے میں اگر چیرو مگراں گز رے، اورا پی گفتا رہ کروار کی جھلائی کو کم عَـلَى غَيُر الْمُسْتَحِقِّ وَ الْقَوُل بِالْحَقِّ وَ إِنْ عَزَّ وَ اسْتِقُلالِ الْخَيْرِ وَ إِنْ كَثُرَ مِنْ قَوْلِيُ وَ سیجھنے میں اگر چیوہ زیادہ ہواورا ہے قول وعمل کی برانی کوزیادہ بچھنے میں اگر چیوہ مم ہو۔ مجھے نیکوکا روں کے زیوراور پر ہیز گاروں کی سج دیج سے فِعُلِي وَ اسْتِكُثَارِ الشُّرِّ وَ إِنْ قَلَّ مِنْ قَوْلِي وَ فِعُلِيُ وَ أَكْمِلُ ذَٰلِكَ لِي بِدَوَام الطَّاعَةِ وَ آ ما ستہ کراوران تمام چیزوں کو دائمی اطاعت اور جماعت ہے وابستی اورائل بدعت اورا بیجاد کردہ را یوں پڑھمل کرنے والوں ہے علیجد گی کے لَزُوُمِ الْجَمَاعَةِ وَ رَفُضِ اَهُـلِ الْبِـدَعِ وَ مُسْتَعُمِلِ الرَّايِ الْمُخْتَرِعِ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى ذریعه پایی پھیل تک پہنچادے۔ با رالہا! محماوران کی آل پر رحت ما زل فرمااور جب میں بوڑ ھاہوجاؤں تواپی وسیع روزی میرے لیے قرار مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ وَاجُعَلُ اَوُسَعَ رِزُقِكَ عَلَيَّ إِذَا كَبِرُتُ وَ اَقُوٰى قُوَّتِكَ فِيَّ إِذَا نَصِبُتُ دےاور جب عاجز و درما مد وہوجا وَل آوا فِي قوى طاقت سے مجھے مہارا وےاور مجھے اس بات مل متلا ندكر كرتيرى عبادت مل ستى وكونا عى وَلاٰ تَبْتَلِيَنِّي بِالْكَسَلِ عَنُ عِبَادَتِكَ وَلاَ الْعَلْمِي عَنُ سَبِيُلِكَ وَلاَ بِالتَّعَرُّ ض لِخِلافِ کروں، تیری راہ کی تشخیص میں بھنگ جا وُں، تیری محبت کے نقاضوں کی خلاف ورزی کروں اور جو بچھ سے متفرق ویرا گندہ ہوں ان سے میل

مَحَيَّةِكَ وَلا مُحَامَعَةِ مَنُ تَفَرَّقَ عَنُكَ وَلا مُفَارَقَةِ مَن اجْتَمَعَ اِلَيُكَ اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي جول رکھوں اور جو تیری جانب پڑھنے والے ہیں ان سے علیحد ہ رہوں ۔خداو بذا! مجھے ایسا قرار دے کہ ضرورت کے وقت تیرے ذریعہ حملہ اَصُولُ بِكَ عِنْدَ الطُّرُورَةِ وَ اَسُئَلُكَ عِنْدَ الْحَاجَةِ وَ اَتَضَرَّعُ اِلَيُكَ عِنْدَ الْمَسْكَنَةِ کروں، حاجت کے وقت جھے ہے سوال کروں اورفقر واحتیاج کے موقع پر تیرے ماہنے گزاگڑ اوس اوراس طرح مجھے نہ آ زمانا کہ اضطرار میں وَلا تَـفُتِنِّـىُ بِـالْاِسْتِعَـانَةِ بِعَيْـرِكَ إِذَا ضُطُرِرُتُ وَلا بِالْخُضُو عِ لِسُوَالِ غَيْرِكَ إِذَا تیرے غیرے مددما گلوں اور فقر ونا داری کے وقت تیرے غیرے آ مے عاجز اند درخواست کروں اورخوف کے موقع پر تیرے سواکسی دوسرے افْتَـقَـرُتُ وَلاٰ بِالتَّـضَـرُعِ اللَّي مَنُ دُونَكَ اِذَا رَهِبُتُ فَاسْتَحِقَّ بِذَٰلِكَ خِذُلانَكَ وَ کے سامنے گزار اول کرتیری طرف سے محروی ، ماکای اور بے اعتنائی کا مستحق قرار یا وں سامے تمام رہم کرنے والوں میں سے سب سے زیادہ مَنْعَكَ وَ اِعْرَاضَكَ يَا اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ. اَللَّهُمَّ اجْعَلُ مَا يُلُقِي الشَّيْطَانُ فِي رُوعِيُ رحم کرنے والے خدایا! جوحرص، بد گمانی اور صد کے جذبات شیطان میرے دل میں پیدا کرے انہیں اپنی عظمت کی یا داپنی قدرت میں تشکراور مِنَ التَّمَنِّيُ وَ التَّظَنِّيُ وَ الْحَسَدِ ذِكُوا لِغَظَمْةِ كَ وَ تَفَكَّرُ ا فِي قُذُرِّتِكَ وَ تَدُبيُرًا عَلَى وخمن کے مقابلہ میں مذہبر وجارہ سازی کے تصورات ہے بدل دےاور فحش کلائی یا بے ہو دہ کوئی میا دشنام طرا زی یا حجوثی کواہی یا غائب مؤمن عَدُوِّكَ وَمَآ اَجُـرَاى عَلَى لِسَانِيُ مِنُ لَفُظَةٍ فُحُشِ اَوُ هُجُرِ اَوُ شَتُم عِرُضِ اَوُ شَهَادَةِ کی فیبت یا موجودے بدز بانی اوراس قبیل کی جوہا تیں میری زبان پرلاما جا ہے انہیں اپنی حمرسرائی ، مدح میں کوشش وانہاک، تجھیدو ہر: رگی کے بَاطِلِ اَوِاغْتِيَابِ مُؤْمِنِ غَآئِبِ اَوُ سَبِّ حَاضِرٍ وَمَا اَشْبَهَ ذَٰلِكَ نُطُقًا بِالْحَمُدِ لَكَ وَ بیان بشکرنعت واعتر اف احسان اورا پی نعتوں کے شارہے تبدیل کردے اے اللہ! محماً وران کی آگ پر رحمت ما زل فرما اور مجھ پر ظلم ندہوئے إغَرَاقًا فِي الثَّنَاءِ عَلَيُكَ وَ ذَهَابًا فِيُ تَـمُجِيُدِكَ وَ شُكُرًا لِنِعُمَتِكَ وَ اعْتِرَافًا بائے جب کرتواں کے دفع کرنے پر قادرہے ،اور کسی پرظلم نہ کروں جب کرتو مجھے ظلم سے روک دیے کی طاقت رکھتا ہے اور گمرا ہ نہو جاؤں بِإِحْسَانِكَ وَ اِحْصَاءً لِمِنَنِكَ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ وَلا أَظُلَمَنَّ وَ اَنْتَ مُطِيُقٌ جب كرميرى را بنمائى تيرے لئے آسمان ہے اور وقتاج ند مول جبد ميرى فارخ البالى تيرى طرف سے ہے۔ اور سركش ند موجا وك جب كر لِلدَّفَعِ عَنِيى وَلا أَظُلِمَنَّ وَ أَنْتَ الْقَادِرُ عَلَى الْقَبْضِ مِنِّى وَلاَ أَضِلَّنَّ وَ قَدُ أَمُكَنَّكُ میری خوشحانی تیری جانب سے ہے ۔ با یالہا! میں تیری مغفرت کی جانب آیا ہوں ۔ اور تیری معانی کاطلب گاراور تیری بخشش کا مشاق ہوں ۔

هِـدَايَتِـيُ وَلاَ اَفْتَـقِرَنَّ وَمِنُ عِنُدِكَ وُسُعِيُ وَلاٰ اَطُغَيَنَّ وَمِنُ عِنُدِكَ وُجُدِي اَللَّهُمَّ اللي تمیں صرف تیرے فعل پرمجر وسمار کھتا ہوں اور میرے پاس کوئی چیز الین نہیں ہے جومیرے لیے معفرت کا باعث بن سکے اور ندمیر کے مل میں مَغُفِرَةِكَ وَفَدُتُ وَ إِلَى عَفُوكَ قَصَدُتُ وَ إِلَى تَجَاوُزِكَ اشَّتَقُتُ وَ بِفَضْلِكَ کچھ ہے کہ تیرے عفوکا سراوارقراریا وک اوراب اس کے بعد کہ میں خو دہی اپنے خلاف فیصلہ کر چکاموں تیرے فعنل کے سوامیرا سرمایۂ امید کیا وَيْقُتُ وَلَيْسَ عِنْدِيْ مَا يُوْجِبُ لِيُ مَغُفِرَتَكَ وَلاَ فِيْ عَمَلِيْ مَا اَسْتَحِقُّ بِهِ عَفُوكَ وَمَا ہوسکتاہے ۔البغامجماوران کی آل پر رحمت ما زل کراور مجھ پر تفضل فرما۔خدایا! مجھے ہدایت کے ساتھ کویا کر،میر ہے دل میں تقویٰ و پر ہیز گاری لِيُ بَعُدَ أَنُ حَكَمُتُ عَلَى نَفُسِيُ إِلَّا فَضُلُكَ. فَصَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الِهِ وَ تَفَضُّلُ عَلَيّ کا لقا فرما، یا کیزهمل کی و فیق دے، پیندید ه کام میں مشغول رکھ حفدایا مجھے بہترین راسته پر چلااو رابیا کرکہ تیرے دین و آئین پرمروں اور اَللَّهُــةً وَ اَنْطِقُنِيُ بِالْهُدَى وَ اَلْهِمُنِي التَّقُولِي وَ وَفِّقُنِيُ لِلَّتِي هِيَ اَزْكِي وَ اسْتَعُمِلْنِي بِمَا ای پر زندہ رہوں یا سےاللہ! محمداً وران کی آل پر رحمت نا زل فر ما اور مجھے (گفتا روکروا رمیں)میا شروی ہے بہر ہمند فر مااور درست کا روں هُوَ اَرُضِي اَلِلَّهُمَّ اَسُلُكُ بِيَ الطَّرِيْقَةَ الْمُثْلِي وَاجْعَلْنِي عَلَى مِلْةِكَ اَمُونُ وَ اَحْيلي اور مدانت کے رہنماؤں اور نیک ہندوں میں سے قرار دے اور آخرت کی کامیا نی اور جہنم سے سلامتی عطا کر بے ندایا میر نے نسس کا ایک حصہ اپنی ٱللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ وَ مَتِّعُنِيُ بِالْإِقْتِصَادِ وَاجْعَلْنِيُ مِنُ اَهُلِ السَّدَادِ وَمِنُ اَدِلَّةٍ (ابتلاءوآ زمائش کے) لیے مخصوص کرو ہے کہ اے (عذا ب ہے) رہائی ولا سکے اورا یک حصہ کہ جس ہے اس کی (وینوی) اصلاح وورتی الرَّشَادِ وَمِنُ صَالِحِي الْعِبَادِ وَ ارُزُقُنِيُ فَوْزَ الْمَعَادِ وَ سَلاَمَةَ الْمِرُصَادِ اَللَّهُمَّ خُذُ وابستہ ہےمیرے لئے رہنے دے کیونکہ میرانفس تو ہلاک ہونے والا ہے گھریہ کرتواہے بچالے جائے ۔ا سےاللہ!اگر میں عملین ہوں تومیرا سما ز لِنَفُسِكَ مِنُ نَفُسِيُ مَا يُخَلِّصُهَا وَ اَبُق لِنَفُسِيُ مِنُ نَفُسِيُ مَا يُصُلِحُهَا فَإِنَّ نَفُسِيُ وسامان (تسکین) تو ہےاوراگر (ہر جگہ ہے)محروم رہوں تو تھے ہی ہے دا دفریا دے۔ جو چیز جا چکی، اس کاعوض اور جوشے تباہ ہو گئی اس کی هَـالِكَةَ أَوْ تَـعُـصِـمَهَا اَللَّهُمَّ اَنْتَ عُدَّتِي إِنْ حَزِنْتَ وَ اَنْتَ مُنْتَجَعِي إِنْ حُرِمُتُ وَبكَ ورتی اور جھے تو ما پیند کرے اس کی تبدیلی تیرے ہاتھ میں ہے۔ البذا بلا کے ما زل ہونے سے پہلے عافیت ما تکنے سے پہلے خوشھالی ، اور گمرا ، ی اسْتِغَاثَتِيُ إِنْ كَرِثُتُ وَ عِنْدَكَ مِمَّا فَاتَ خَلَفٌ وَ لِمَّا فَسَدَ صَلاحٌ وَ فِيُمَا أَنْكُرُتَ سے پہلے ہدانیت سے مجھ میرا حسان فرما یا و رلوگوں کی سخت و درشت با توں کے ربح سے محفوظ رکھاو رقیا مت کے دن امن واطمینان عطافر

تَغُييُرٌ فَامُنُنُ عَلَيَّ قَبُلَ الْبَلَّاءِ بِالْعَافِيَةِ وَ قَبُلَ الطَّلَبِ بِالْجِدَةِ وَ قَبُلَ الضَّلال بالرَّشَادِ حسن ہدایت وارشاد کی تو فیق مرحمت فرما ۔ اے اللہ! محماً و ران کی آ ل پر رحمت ما زل فرمااورا پنے لطف سے (برائیوں کو) مجھ سے دور کردے وَاكُفِنِي مُؤْنَةَ مُعَرَّةِ الْعِبَادِ وَهَبُ لِيُ اَمُنَ يَوُم الْمَعَادِ وَ امْنِحُنِي حُسُنَ الْإرُشَادِ اَللَّهُمَّ اورا پی نعمت سے میری پرورش اورا ہے کرم سے میری اصلاح فرمااوراہے فضل واحسان سے (جسمانی ونفسانی امراض سے)میرا مداوا کر۔ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ اللهِ وَادُرَأُ عَنِّيُ بِلُطُفِكَ وَاغُذُنِيُ بِنِعُمَةِكَ وَ اَصْلِحُنِيُ بِكُرُمِكَ مجھے اپنی رحمت کے سامید میں جگہ دے۔اوراپنی رضام ندی میں ڈھانپ لے۔اور جب امور مشتر ہو جائیں تو جوان میں زیا دہ قرین صواب ہو وَ دَاوِنِيُ بِـصُـنُـعِكَ وَ أَظِـلَّـنِيُ فِي ذَرَاكَ وَ جَلَّلُنِيُ رِضَاكَ وَ وَقِقُنِيُ إِذَا اشْتَكَلَتُ اور جب عمال میںاشتبا ہواقع ہوجائے تو جوان میں ما کیزہر ہواور جب مذا جب میںاختلاف پڑجائے تو جوان میں بہندید ہر ہواس پڑعمل عَلَيَّ الْامُوْرُ لِاهْدَاهَا وَ إِذَا تَشَابَهَتِ الْاعْمَالَ لِلاَزْكَاهَا وَ إِذَا تَنَاقَضَتِ الْمِلَلُ لاَرْضَاهَا پیراہونے کی تو فیق عطا فرما ہا ہے اللہ! محمداً وران کی آل پر رحمت ما زل فرما اور مجھے بے نیا زی کا تاج پہنا اور متعلقہ کاموں اوراحسن طریق اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ اللهِ وَ تُوجُنِي بِالْكِفَايَةِ وَ سُمِّنِي حُكَنَ الُولاَيَةِ وَ هَبُ لِيُ ے انجام دیجے پر مامور فرمااورالیمی ہدایت ہے سرفرا زفر ماجو دوام و ثبات لئے ہوئے ہواور فنا ءوخوشحانی سے مجھے بے راہ نہ ہوئے دے اور صِدُقَ الْهِدَايَةِ وَلا تَفْتِنِي بالسَّعَةِ وَامْنِحُنِي حُسُنَ الدَّعَةِ وَلا تَجْعَلُ عَيْشِي كَذَّا كَدًّا آ سودگی و آسرائش عطا فرماه او رزندگی کوخت دشوار نه بنا دیے میری دعا کورد نه کر کیونکه میں کوتیرا مدمقا تل خییں قرا ردیتا او رنہ تیر ہے سما تھے کسی کو وَلاٰ تَـرُدَّ دُعَـائِيُ عَلَيَّ رَدًّا فَانِيِّي لاٰ أَجُعَلُ لَكَ ضِدًّا وَلاٰ اَدْعُوْا مَعَكَ نِدًّا. اَللَّهُمَّ صَلّ تیرا ہمسر سجھتے ہوئے پکارتا ہوں۔اےاللہ! محمداً و ران کی آ ل پر رحمت ما زل فر مااور مجھے فضول خرچی سے بازر کھاور میری روزی کو تباہ ہوئے عَـلَى مُـحَمَّدٍ وَّ الِـهِ وَامُـنَـعُنِيُ مِنَ السَّرَفِ وَ حَصِّنُ رِزُقِيُ مِنَ الثَّلَفِ وَ وَفَرُ مَلَكَذِي سے بچااورمیرے مال میں ہرکت دے کرای میں اضافہ کراور مجھای میں ہے امو رخیر میں خرچ کرنے کی وجہ ہے راوحق وصواب تک پہنچا۔ بِالْبَوَكَةِ فِيُهِ وَ أَصِبُ بِيُ سَبِيُلَ الْهِدَايَةِ لِلُبِرِّ فِيُمَا ٱنْفِقُ مِنْهُ ٱللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ بإیالها! محماً وران کی آگ پر رحت ما زل فر مااور مجھے کسب معیشت کے رکج وغم سے بے نیاز کردے ۔اور بے حساب روز می عطافر ما تا کہ تلاش وَاكْفِينِيُ مُوْنَةَ الْإِكْتِسَابِ وَارُزُقُينِيُ مِنْ غَيْسِ إِحْتِسَابِ فَلاَ اَشْتَغِلَ عَنْ عِبَادَتِكَ

بِ الطُّلَبِ وَلا أَحْسَمِلَ اِصْرَ تَبِعَاتِ الْمَكْسَبِ اَللَّهُمَّ فَاطُلِبُنِي بِقُدُرَةِكَ مَا اَطُلُبُ وَ ہوں اے پی قدرت سے مہیا کرد ہے اور جس چیز سے خا کف ہوں اس سے پی عزت وجلال کے ذریعہ پناہ دے خدایا !میری آ برو کوفناء و أَجِرُنِيُ بِعِزَّتِكَ مِمَّا أَرُهَبُ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ اللَّهِ وَصُنُ وَجُهِيُ بِالْيَسَارِ وَلا تو گھری کے سماتھ محفوظ رکھا و رفقر و تنگ دی سے میری منزلت کفظروں سے زیگرا۔ کہ تجھ سے رزق مایے والوں سے رزق مانگلے لگوں اور تیر ہے تَبُتَذِلُ جَاهِيُ بِالْإِقْتَارِ فَاسْتَرُزِقَ اَهُلَ رِزُقِكَ وَ اَسْتَعُطِيَ شِرَارَ خَلُقِكَ فَافُتَتِنَ بِحَمُدِ بیت بندوں کی نگاہ لطف وکرم کواپی طرف موڑنے کی تمنا کروں اور جو مجھے دے اس کی مدح و ثنااور جونہ دے اس کی ہرائی کرنے میں مبتلا ہو مَنُ اَعُطَانِيُ وَ اَبُتَلِي بِذَمَّ مَنُ مَنَعِنِيُ وَ اَنُتَ مِنُ دُوْنِهِمُ وَلِيُّ الْإِعْطَآءِ وَ الْمَنُعِ اَللَّهُمَّ صَلَّ جا وُں ۔اورتو بی عطا کرنے اورروک لینے کا اختیا ررکھتا ہے نہ کہ وہ۔ا ساللہ! محماً وران کی آ ل پر رحمت نا زل فر مااور مجھےالیں صحت دے جو عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ اللهِ وَارُزُقْنِي صِحَّةً فِي عِبَادَةٍ وَ فَرَاغًا فِي زَهَادَةٍ وَ عِلْمًا فِي اسْتِعُمَالِ وَ عبادت میں کام آئے اورالیی فرصت جودنیا ہے بے تعلقی میں صرف ہواورا بیاعلم جومکل کے ساتھ ہواو رالیں پر ہیز گاری جوحداع تدال میں ہو وَرَعًا فِي اِجْمَالِ اَللَّهُمُ الْحِبْمُ بِعُفُوكُ أَجَلِلُي وَ حَقِّقُ فِلَي رَجَّآءٍ رَحُمْتِكَ اَمَلِي وَ سَهِّلُ (كروسواس مين جتلان موجاؤن) ا سالله!ميري مدت حيات كواسية عفوه وركز ركيم اتحد ختم كراو رميري آرز وكورهت كي اميد مين كامياب إِلَى بُلُوُ غِ رِضَاكَ سُبُلِي وَ حَسِّنُ فِي جَمِيْعِ أَحُوَ الِي عَمَلِي اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ فر مااورا پی خوشنودی تک و بختے کے لئے راہ آسمان کراور ہر حالت میں میر کے مل کو بہتر قرار دے۔ اے ملٹہ! محمآوران کی آل بررحمت یا زل الِهِ وَ نَبَّهُنِيُ لِذِكُرِكَ فِي اَوْقَاتِ الْغَفْلَةِ وَاسْتَعْمِلْنِي بِطَاعَةِكَ فِي اَيَّامِ الْمُهُلَةِ وَانْهَجُ فرمااور مجھے غفلت کے لحات میں اپنے ذکر کے لیے ہوشیار کراورمہلت کے دنوں میں اپنی اطاعت میں مصروف رکھ اور اپنی محبت کی سہل و اِلْي مَحَبَّتِكَ سَبِيُلاً سَهُلَةً اكْمِلُ لِيُ بِهَا خَيْرَ الدُّنْيَا وَ الْاخِرَةِ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ آ سمان را دمیر ہے لیے کھول دےاو راس کے ذریعہ میرے لیے دنیاو آخرت کی بھلائی کو کامل کردے۔ا ہےاللہ! محماً و ران کی اولا دیر بہترین وَّ الِهِ كَافُضَلِ مَا صَلَّيْتَ عَلَى آحَدٍ مِّنُ خَلْقِكَ قَبُلَهُ وَ أَنْتَ مُصَلِّ عَلَى آحَدٍ بَعُدَهُ وَ رحت نا زل فرما ۔ ایسی رحت جواس سے پہلےتو نے مخلو قات میں ہے کسی ایک بریا زل کی ہواو راس کے بعد کسی بریا زل کرنے والا ہواو رہمیں اتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَ فِي الْأَخِرَةِ حَسَنَةً وَ قِنِيُ بِرَحُمَةِكَ عَذَابَ النَّارِ. د نیامیں بھی نیکی عطا کراورآ خرت میں بھی اورا پی رحت ہے ہمیں دوز خ کےعذاب ہے محفوظار کھ۔

(2) دعسائے توبه : میده عائے شریف بھی صحیفہ سجا دیدگی مقدس اور عظیم المرتبده عاؤں میں سے ایک ہے۔ گہرگاروں کو بارگاہوں سے آئی ہوں سے تو بدو انا بہرتے وفت اس وعاکے فیوض وہر کات سے فائدہ اٹھانا چاہیے۔

اوروه وعائے مبارک پیہے:

اَللَّهُــمَّ يَـا مَنُ لا يَصِفُهُ نَعُتُ الْوَاصِفِيُنَ وَ يَا مَنُ لا يُجَاوِزُهُ رَجَآءُ الرَّاجِيُنَ وَيَامَنُ لأ ا ہے معبو دا اسدہ جس کی توصیف سے وصف کرنے والوں کے توصیحی الفاظ قاصر ہیں ۔ا سے وہ جوا میدواروں کی امیدوں کا مرکز ہے۔اسدوہ يَضِيُعُ لَدَيْهِ اَجُرُ الْمُحُسِنِيُنَ وَ يَا مَنْ هُوَ مُنْتَهِي خَوُفِ الْعَابِدِيْنَ وَ يَا مَنْ هُوَ غَايَةٌ خَشْيَةٍ جس کے ہاں نیکوکا روں کا اجر ضالکے خیس ہوتا ۔ا ہے وہ جوعبادت گزا روں کے خوف کی منزل معجا ہے۔ا ہے وہ جو پر ہیز گاروں کے بیم و ہراس کی الْـمُتَّـقِيُـنَ هـذَا مَقَامُ مَنُ تَدَاوَلَتُهُ آيُدِى الذُّنُوُبِ وَ قَادَتُهُ اَزْمَّةُ الْخَطَايَا وَاسْتَحُوَذَ عَلَيْهِ حد آخر ہے۔ بیاں شخص کاموقف ہے جو گماہوں کے ہاتھوں میں کھیلاہے اور خطاؤں کی ہا گوں نے جے تھینج لیاہے اور جس پر شیطان غالب آ گیا الشُّيُّطُنُ فَقَصَّرَ عَلَمَهُ ۚ الْمُرْتَ بِهِ يَـ أُورُكُ إِلَّا وَ تَعَاطَى مَا نَهَيُّتَ عَنُهُ تَغُويُوا كَالُجَاهِلِ ہے۔اس لیے تیرے تھم سالا پروای کرتے ہوئے اس نے (اوائے فرض) میں کتابی اور فریب خورد گی کی وجہ سے تیرے منہیات کام تھب ہوتا بِـقُـدُرَةِكَ عَـلَيْهِ اَوُ كَالُمُنُكُرِ فَضُلَ إِحْسَانِكَ اِلَيْهِ حَتَّى اِذَا انْفَتَحَ لَهُ بَصَرُ الْهُدَى وَ ہے۔ گویاو داپنے کو تیر ہے بھند قد رت میں مجھتا ہی نہیں ہاور تیر نے فعل واحسان کو جلونے اس پر کئے ہیں مانتا ہی نہیں ہے گھر جب اس کی تَــَقَشَّعَتُ عَنْهُ سَحَآئِبُ الْعُمٰى آخُطى مَا ظَلَمَ بِهِ نَفُسَهُ وَ فَكَّرَ فِيُمَا خَالَفَ بِهِ رَبَّهُ فَرَاى چیٹم بھیرت واہوئی اوراس کوری و بے بھری کے باول اس کے مامنے سے چھٹے واس نے اپنے نفس پر کئے ہوئے ظلموں کا جائز ولیااور جن جن كَبِيُـرَ عِـصُيَـانِـهِ كَبِيُـرًا وَ جَـلِيُـلَ مُخَالَفَتِهِ جَلِيُلاً فَٱقْبَلَ نَحُوكَ مُؤَمِّلاً لَكَ مُسْتَحِيًّا موا رد پر اپنے پر و ردگا رکی مخالفتیں کی تھیں ان پر نظر دو ڑائی تواپنے بڑے گیا ہوں کو (واقعاً)بڑا او مخطیم مخالفتوں کو (حقیقۂ)مخطیم بایا تو و واس حالت مِنْكُ وَ وَجَّهَ رَغُبَتُهُ اِلَيُكَ ثِقَةً م بِكَ فَأَمَّكَ بِطَعَمِهِ يَقِينًا وَ قَصَدَكَ بِخُوفِهِ میں کر چھے سے امیدوار بھی ہےاورشرمسار بھی، تیری جانب متوجہ ہوااور یقین واطمینان کے ساتھا پی خواہش و آرزوکو لے کرتیراقصد کیااور (ول إِخُلاصًا قَـدُ خَلا طَـمَـعُهُ مِنُ كُلِّ مَطُمُوعٍ فِيُهِ غَيْرِكَ وَ اَفُرَخَ رَوْعُهُ مِنْ كُلِّ مَحُذُورٍ

میں) تیرا خوف لئے ہوئے خلوص کے ساتھ تیری ہارگاہ کا اما دہ کیااس حالت میں کہ تیرےعلاہ ہاہے کسی سے غرض نگھی اور تیرے سوااے کسی کا

مِنَهُ سِوَاكَ فَمَثَلَ بَيُنَ يَدَيُكَ مُتَضَرَّعًا وَ غَمَّضَ بَصَرَهُ اِلَى الْاَرُضِ مُتَخَشِّعًا وَ طَاطَا خوف ریتھا۔ چنانچہو وعاجز انہصورے میں تیرے سراہنے آ کھڑا ہوااو رفر وتن سے اپنی آ تھمیں زمین میں گاڑلیں او ریڈلل وانکسارے تیری عظمت رَأْسَهُ لِعِزَّتِكَ مُتَذَلِّلاً وَ اَبَثَّكَ مِنُ سِرَّهِ مَاۤ اَنْتَ اَعُلَمُ بِهِ مِنْهُ خُضُوعًا وَ عَدَّدَ مِنُ کے آ گے سرجھکا لیااور عجزونیا زمندی سے اپنے را زہائے درون پر دوجنہیں تو اس سے بہتر جانتا ہے تیرے آ گے کھول دیئےاور عاجز ک سے اپنے ذُنُوبِهِ مَآ ٱنُتَ ٱحُصٰى لَهَا خُشُوعًا وَ اسْتَغَاتَ بِكَ مِنْ عَظِيْمٍ مَا وَقَعَ بِهِ فِي عِلْمِكَ وَ و وگنا وجن کاتو اس سے زیادہ حساب رکھتا ہے ایک ایک کر کے ثار کے اوران بڑے گنا ہوں سے جوتیر ہے کم میں اس کے لیے مہلک اوران بد قَبِيُح مَا فَضَحَهُ فِي حُكُمِكَ مِنُ ذُنُوُبِ اَدُبَرَتُ لَذَاتُهَا فَذَهَبَتُ وَ اَقَامَتُ تَبعَاتُهَا اعمالیوں سے جوتیر ہے فیصلہ کے مطابق اس کے لئے رسوا کن ہیں ، دا دو فریا دکرتا ہے ۔و داگیا ہ کہ جن کی لذت جاتی رہی ہےاو ران کا وہال ہمیشہ فَلَزِمَتُ لاَ يُنْكِرُ يَآ اِلْهِيُ عَدُلَكَ إِنْ عَاقَبُتَهُ وَلاَ يَسُتَعُظِمُ عَفُوَكَ إِنْ عَفَوْتَ عَنْهُ وَ کے لیے باتی رہ گیا ہے۔امیر معبودا اگرتو اس پرعذاب کر ہے وہ تیر معدل کامکرٹیس ہوگا۔او راگر اس سے درگز رکر ہےاورزس کھائے رَحِـمُتَهُ لِانْكَ الرَّبِّ الْكُولِيمُ الَّذِي لَا يَتَعَاظُمُهُ غُفُرَالُ الذُّلْبِ الْعَظِيْمِ اللَّهُمَّ فَهَا اَنَا ذَا تو وہ تیرے عفو کو کئی جیب اور بردی بات نہیں سمجھے گا۔اس لئے کہ تو وہ پرورد گارکریم ہے جس کے مزد دیک بڑے سے برڈ ہے گیا ہ کو بھی بیش رینا کوئی قَـٰدُ جـئُةُكَ مُطِيُعًا لِلَامُوكَ فِيُمَآ اَمَرُتَ بِهِ مِنَ الدُّعَآءِ مُتَنَجِّزًا وَعُدَكَ فِيُمَا وَعَدُتَ یڑ کیات نہیں ہے۔اچھاتو اےمیر ہے معبود! میں تیری ہارگاہ میں حاضر ہوں۔ تیرے تھم دعا کی اطاعت کرتے ہوئے اور تیرے وعد ہ کا ایفا بِهِ مِنَ الْإِجَابَةِ إِذْ تَقُولُ ادْعُونِيُ اسْتَجِبُ لَكُمُ اَللَّهُمَّ فَصَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الِهِ وَالْقَنِي چاہتے ہوئے جوقبولیت دعاء کے متعلق تونے اپنے اس ارشاد میں کیا ہے۔"مجھ سے دعاما تکوتو میں تمہاری دعاء قبول کروں گا"خداو ندا!محمداو ران کی بِمَغُفِرَتِكَ كَمَا لَقِيْتُكَ بِإِقْرَارِيُ وَ ارْفَعُنِيُ عَنُ مَصَارِ عِ الذَّنُوْبِ كَمَا وَضَعُتُ لَكَ آلًى پر رحمت ما زل فر مااو را چي مففرت مير پيشامل حال کريجس طرح مين (اپنځ گيا مون کا)اقرار کرتے موئے تيري طرف متوجه بهواموں اور نَـفُسِـيُ وَ اسُتُـرُنِيُ بِسِتُرِكَ كَمَا تَأَنَّيْتَنِيُ عَنِ الْإِنْتِقَامِ مِنِّيُ اَللَّهُمَّ وَ ثَبَّتُ فِي طَاعَتِكَ ان مقامات سے جہاں گیا ہوں ہے مغلوب ہونا پڑتا ہے مجھے (مہارا دے کر)اوپراٹھالے جس طرح میں نے اپنے نفس کوتیرے آ سے (خاک نِيَّتِي وَ احْكِمُ فِي عِبَادَتِكَ بَصِيُورَتِي وَ وَفِّقُنِي مِنَ الْآعُمَالِ لِمَا تَغُسِلُ بِهِ دَنَسَ

الُخَطَايَا عَنِّيُ وَ تَوَفَّنِيُ عَلَى مِلَّتِكَ وَ مِلَّتِ نَبِيَّكَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ السَّلامُ إِذَا تَوَفَّيْتَنِي اطاعت میں میری نیت کواستواراورا پی عبارت میں میری بھیرت کوتوی کراور مجھیان اعمال کے بجالانے کی توفیق دے جن کے ذریع تو میرے اَللَّهُمَّ إِنِّي ٱتُوٰبُ اِلَيُكَ فِي مَقَامِي هَذَا مِنْ كَبَآئِر ذُنُوْبِي وَ صَغَآئِرِهَا وَ بوَاطِن سَيّئاتِي ' گنا ہوں کے میل کودھوڈا لے باور جب مجھے دنیا ہے اٹھائے تو اپنے دین اورا پنے نبی محرصلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے آئین پراٹھا یا ہے معبو دامیں وَ ظَوَاهِرَهَا وَ سَوَالِفِ زَلَاتِيُ وَ حَوَادِثِهَا تَوْبَةَ مَنُ لا يُحَدِّثُ نَفْسَهُ بِمَعْصِيَةٍ وَلا يُضُمِرُ اس مقام پراینے جھوٹے بڑے گناہوں پوشیدہ و آشکارامعصیتوں اورگزشتہ وموجودہ لغزشوں ہے تو بہ کنا ہوں،اس مخض کی ی تو بہجودل میں اَنُ يَعُودُ فِي خَطِيْمَةٍ وَ قَدُ قُلُتَ يَا اللهي فِي مُحُكَم كِتَابِكَ اِنَّكَ تَقُبَلُ التَّوْبَةَ عَنُ معصیت کا خیال بھی نہلائے اور گناہ کی طرف یکٹنے کا تصور بھی نہ کرے ۔خداوندا! تونے اپنی محکم کتاب میں فرمایا ہے کرتو بندوں کی توبیقول کرنا عِبَادِكَ وَ تَغُفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَ تُحِبُّ التُّوَّابِيُنَ فَاقْبَلَ تَوْبَةِي كَمَا وَعَدُتَ وَاغُفُ عَنُ ہے اور گنا ہوں کومعاف کرنا ہے اور تو ہر کے والوں کودوست رکھتا ہے۔ البنداتو میری تو بقبول فرما جیسا کرتو نے وعدہ کیا ہے، اور میرے گنا ہوں کو سَيِّئَاتِي كُمَا ضَمِنَكُ وَأُوْجِبَ لِي مَحَلَّتُكُ كُمُا شَرَطُكَ وَ لَكِ يَا رَبُّ شَرُطِي اللَّ معاف کردے جیسا کرتے نے ذمہ لیاہے، اور حسب قرار دا داپی محبت کومیرے لئے ضروری قرار دے ۔اور میں تھے سے اے میرے پروردگا را بیہ ٱغُـوُدَ فِييُ مَكُرُوهِكَ وَ ضَمَانِيُ ٱلَّا ٱرْجِعَ فِيُ مَذْمُوْمِكَ وَ عَهْدِيُ ٱنْ اَهُجُرَ جَمِيْعَ اقراركمتا موں كەتىرىمايېندىد ھابتوں كى طرف رخ نبيس كروں گاورىي قول وقراركرنا موں كەقابل فدمت چيزوں كى طرف رجوئ نەكروں گا ساور مَعَاصِيُكَ ٱللَّهُمَّ إِنَّكَ ٱعْلَمُ بِمَا عَمِلُتُ فَاغْفِرُ لِي مَا عَلِمُتَ وَ اصُرِفَنِي بِقُدُرَةِكَ ب عبد كرنا بول كرتيرى تمام ما فرمانيول كويكسر جيور دول كاب يالها اتومير فيل وكردارت خوب آگاه ب ساب جويحي توجانتا باس بخش دے اِلْي مَا أَحْبَبُتَ اَللَّهُمَّ وَ عَلَيَّ تَبعَاتُ قَدُ حَفِظُتُهُنَّ وَ تَبعَاتُ قَدُ نَسِيُتُهُنَّ وَ كُلُّهُنَّ اورا پی قدرت کاملہ سے بہندید وچیزوں کی طرف مجھے موڑ و سا اللہ امیر ہے ذمہ کتنے ایسے حقوق ہیں جو مجھے یا دہیں۔اور کتنے ایسے مظلمے ہیں بِعَيُنِكَ الَّتِيُ لَا تَـنَامُ وَ عِلْمِكَ الَّذِي لَا يَنُسْنِي فَعَوِّضٌ مِنْهَآ اَهُلَهَا وَ احْطُطُ عَنِّي جن پرنسیان کامرِ دہ پڑا ہواہے کیکن و ہب کےسب تیری آئٹھول کےسامنے ہیں سالیی آٹٹھیں جوخواب آلودہ نیلں ہوتیں ساور تیرے کم میں وزُرَهَا وَ خَفِّفُ عَنِّي ثِقُلَهَا وَ اعْصِمُنِيُ مِنْ أَنْ أَقَارِفَ مِثْلَهَا ٱللَّهُمَّ وَإِنَّهُ لَا وَفَاءَ لِيُ فروگزا شت نیس ہوتی ۔البنیا جن لوگوں کامجھ پر کوئی عن ہےا**ں** کانبیں *عوض دے کرای* کابو جھ مجھ سے برطرف

بِ السُّوبَةِ إِلَّا بِعِصُمَةِكَ وَلا اسْتِمُسَاكَ بِيُ عَنِ الْخَطَايَا إِلَّا عَنُ قُوَّةِكَ فَقَوِّنِي بقُوَّةِ کردے، اور مجھے پھرویسے گنا ہوں کے ارتکاب سے محفوظ رکھ اے اللہ! میں آوب پر قائم نیس رہ سکتا تکرتیری ہی محرانی ہے اور کہنا ہوں ہے با زمیس كَافِيَةٍ وَ تَوَلَّنِيُ بِعِصْمَةٍ مَانِعَةٍ اَللَّهُمَّ اَيُّمَا عَبُدٍ تَابَ اِلَيُكَ وَ هُوَ فِي عِلْم الْغَيُب آ سکتا گرتیری پی قوت وتو انائی سے باہندا مجھے بے نیا زکرنے والی قوت سے تقویت دے اور (گیا ہوں سے)رو کنے والی گھرانی کا ذمہ لے با ہے عِنُـدَكَ فَاسِخٌ لِتَوْيَتِهِ وَ عَائِدٌ فِي ذَنْبِهِ وَ خَطِيْتَتِهِ فَانِيْ اَعُوْذُ بِكَ اَنُ اَكُوْنَ كَذٰلِكَ الله! و ہبندہ جو تھے ہے تو بکرے اور تیرے علم غیب میں و او بھکنی کرنے والوں اور آئیا دوسعصیت کی طرف دوبا رہ پکٹنے والا ہوتو میں تھے ہے بنا دہا نکتا فَاجُعَلُ تَـوُيَتِيُ هَـذِهِ تَـوُبَةً لا أَحْتَا جُ بَعُدَهَا إِلَى تَوْبَةٍ تَوُبَةً مُوْجِبَةً لِمَحُو مَا سَلَفَ وَ ہوں کماس جیسا ہوں میر کاو بکوالی تو بقرار دے کماس کے بعد پھرتو ہے کا حتیاج ندرہےجس سے گزشتہ گنا مجوموجا ئیں اورزندگی کے باتی السَّلاْمَةِ فِيُـمَا بَقِيَى ٱللَّهُ مَّ إِنِّي أَعْتَذِرُ إِلَيْكَ مِنْ جَهُلِيٌ وَ ٱسْتَوْهِبُكَ سُوْءَ فِعُلِي دنوں میں (گنا ہوں ہے) سلامتی کا سامان ہو۔اے اللہ! میں اپنی جہالتوں سے عذر خوا داورا بی بداعمالیوں سے پیخشش کا طلب گارہوں۔لبندا فَاضَمُمُنِيُ اللَّي كَنَفِ رَحُمَ كَ تَطَوُّ لِا وَالسَّارُ فِي بِسِلْرَ عَافِيَ كِي تَفَضَّلا اللَّهُمَّ وَ إِنِّي ایے لطف واحسان سے مجھے پناہ گاہے رحمت میں جگہ دے اورایئے تفضل ہے اپنی عافیت کے میر وہ میں چھیا لے۔ا سے اللہ! میں ول میں گزرنے ٱتُـوُبُ اِلَيُكَ مِنُ كُـلٌ مَا خَالَفَ اِرَادَتَكَ أَوْ زَالَ عَنُ مُحَبَّةِكَ مِنُ خَطَرَاتِ قَلَبيُ وَ والے خیالات اور آئکھ کے اشاروں اور زبان کی گفتگوؤں ،غرض ہراس چیز ہے جوتیر سےارا دہورضا کے خلاف ہواور تیری محبت کے حدو دے باہر لَحَظَاتِ عَيُنِديُ وَ حِكَايَاتِ لِسَانِيُ تَوْبَةً تَسُلَمُ بِهَا كُلُّ جَارِحَةٍ عَلَى حِيَالِهَا مِنُ ہو، تیری بارگاہ میں آو باکرتا ہوں۔الیمی آو باجس سے میرا ہر ہرعضوا پی جگہ پر تیری عقوبتوں سے بیچا رہے اور مان تکلیف دہ عذابوں سے جن سے تَبِعَاتِكَ وَ تَامَنُ مِمَّا يَخَافُ الْمُعْتَدُوُنَ مِنُ ٱلِيُم سَطَوَاتِكَ ٱللَّهُمَّ فَارْحَمُ وَحُدَتِي بَيْنَ سرکش لوگ خا نف رہتے ہیں محفوظ رہے ۔ا مے معبو دا بیہ تیرے مائے میرا عالم تنہائی ، تیرے خوف سے میرے دل کی دھڑ کن، تیری ہیہ ہے يَدَيُكُ وَ وَجِيْبَ قَلْبِي مِنْ خَشْيَةِكَ وَ اضْطِرَابَ أَرْكَانِي مِنْ هَيْبَةِكَ فَقَدُ أَقَامَتْنِي میرےاعصاء کی تحرتھری ان حالتوں پر رہم فرما۔ پروردگا را مجھے گنا ہوں نے تیری بارگاہ میں رسوائی کی منزل پر لاکھڑا کیاہے ۔اب اگر جے رہوں يَا رَبِّ ذُنُوبِي مَقَامَ الْحِزُى بِفِنَآئِكَ فَإِنْ سَكَتُّ لَمْ يَنُطِقُ عَيْيُ اَحَدٌ وَإِنْ شَفَعُتُ

فَلَسُتُ بِالْمُلِ الشُّفَاعَةِ اللَّهُمُّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ اللَّهِ وَ شَفِّعُ فِي خَطَايَايَ كَرَمَكَ اینے کرم و پخشش کومیری خطاوٰں کا شفیع قرار دےاو راپنے فضل ہے میرے گیا ہوں کو پخش دےاور جس سز ا کا میں سز اوا رہوں و دسزانہ دےاو را پنا وَعُـدُ عَلَى سَيِّئَاتِيُ بِعَفُوكَ وَلا تَجُزنِيُ جَزَآئِيُ مِنُ عُقُوْبَةِكَ وَابُسُطُ عَلَيَّ طَوُلَكَ وامن کرم مجھ پر پھیلا دےاوراپنے پر دہ عنوو رحمت میں مجھے ڈھانپ لے اور مجھے اس ذی اقتدار مخص کا سابرنا و کرجس کے آ سے کوئی بندہ وَ جَلِّلُنِيُ بِسِتُرِكَ وَافْعَلُ بِيُ فِعُلَ عَزِيْزِ تَضَرَّ عَ اِلَيْهِ عَبُدٌ ذَلِيْلٌ فَرَحِمَهُ اَوُ غَنِيّ تَعَرَّضَ ولیل گزائز ائے تو وہ اس بریزس کھائے با اس داہمتند کا ساجس ہے کوئی بندہ مختاج لیٹے تو وہ اسے سہا ما دے کراٹھا لے۔بار الہا! مجھے تیرے لَـهُ عَبُـدٌ فَقِيْرٌ فَنَعَشَهُ اَللَّهُمَّ لا خَفِيْرَ لِيُ مِنْكَ فَلْيَخْفُرُنِيْ عِزُّكَ وَلا شَفِيْعَ لِيُ إِلَيْكَ (عذاب) ہے کوئی پناہ دینے والانہیں ہے۔اب تیری قوت وتو انا ئی ہی پناہ دیلے دے۔اور تیرے یہاں کوئی میری سفارش کرنے والانہیں ۔اب فَلْيَشْفَعُ لِيُ فَضُلَّكَ وَ اَوْجَلَتُنِي خَطَايَايَ فَلْيُؤْمِنِّي عَفُو كَ فَمَا كُلَّ مَا نَطَقُتُ به عَنُ تیرافغل ہی سفارش کر ہے کرے۔اورمیرے گناہوں نے مجھے ہرا سمال کر دیا ہے۔اب تیراعفوہ درگز رہی مجھے مطعئن کریے کو کرے۔ یہ جو پچھے جَهُل مِنِي بسُوْءِ أَشَرِى وَالْا نِسُيّان لِيمًا شَبَقَ مِنْ ذُمِيْم فَعُلِي لَكُنُ لِتَسْمَعَ سَمَآؤُكَ میں کہ رہا ہوں اس کے نہیں کہ میں اپنی بدا عمالیوں سے اواقت او راپی گزشتہ بد کرداریوں کوفراموش کرچکا ہوں بلکہ اس کئے کہ تیرا آسمان او رجو وَمَنُ فِيُهَا وَ اَرُضُكَ وَمَنُ عَلَيُهَا مَآ اَظُهَرُتُ لَكَ مِنَ النَّدَمِ وَ لَجَاْتُ اِلَيُكَ فِيُهِ مِنَ ال میں رہتے سہتے ہیں اور تیری زمین اور جوائ برآبا دہیں ،میری مدا مت کوش کا میں نے تیرے ما مضاظها رکیا ہے، اور میری و بکوش کے التَّوْبَةِ فَلَعَلَّ بَعُضَهُمُ بِرَحُمَةِكَ يَرُحَمُنِيُ لِسُوْءِ مَوُقِفِيُ اَوُ تُدُرِكُهُ الرَّقَّةُ عَلَيَّ لِسُوْءِ وربعہ تھے سے بنا ما تھی ہے س کیں ۔ تا کہ تیری رحمت کی کا رفر مائی کی جبہ ہے کسی کومیر سے حال زار پر رحم آجائے یامیری پریشان حالی پر اس کا دل حَـالِـيُ فَيَـنَالَنِيُ مِنْهُ بِدَعُوَةٍ هِيَ اَسُمَعُ لَدَيُكَ مِنْ دُعَآئِيُ اَوُ شَفَاعَةٍ اَوْ كَدَ عِنْدَكَ مِنْ میرے وقت میں دعا کرے جس کی تیرے ہاں میری دعاء سے زیادہ هنوائی ہو۔ یا کوئی الیمی سفارش حاصل کرلوں جو تیرے ہاں میری شَفَاعَتِيُ تَكُونُ بِهَا نَجَاتِيُ مِنُ غَضَبِكَ وَ فَوُزَتِيُ بِرِضَاكَ اَللَّهُمَّ إِنُ يَكُنِ النَّدَمُ تَوُبَةً درخواست سے زیادہ مؤرثہ مواوراس طرح تیر مفضب سے نجات کی دستاویز اور تیری خوشنودی کابروا نده اسل کرسکوں اساللد!اگر تیری بارگاه إِلَيُكَ فَانَا ٱنُدَمُ النَّادِمِيُنَ وَ إِنْ يَّكُنِ التَّرُكُ لِمَعْصِيَةِكَ إِنَابَةً فَاَنَا اَوَّلُ الْمُنِيبِيُنَ وَ إِنْ مں مدامت ویشیمانی بی تو بہ ہےتو میں پشیمان ہونے والوں میں سب سے زیا دہ پشیمان ہوں۔او را گریز کے معصیت بی تو ہوانا برت ہےتو میں تو بہ

وَ عَدُن الْإِسْتِعُفَارُ حِطَّةٌ لِلدُّنُوبِ فَإِنِّي لَكَ مِنَ الْمُسْتَغُفِرِيْنَ اللَّهُمَّ فَكَمَا اَمَرُتَ بِالتَّوْيَةِ

الرَّ والول عُن اول عُن اللَّهُمُّ وَ حَنْفُتَ عَلَى الدُّعَآءِ وَ وَعَدْتَ الْإِجَابَةَ فَصَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ اللِ عُن اللَّهُمَّ وَلَا لَوْ عَنْفُتَ عَلَى الدُّعَآءِ وَ وَعَدْتَ الْإِجَابَةَ فَصَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ اللِ عَن اللَّهُمَّ وَاللَّهُمُّ وَاللَّهُمُّ وَاللَّهُمُّ وَاللَّهُمُّ وَاللَّهُمُّ وَاللَّهُمُّ وَاللَّهُمُّ وَاللَّهُمُّ مَن اللَّهُمُّ مَن وَحُمَةِكَ اللَّهُمُّ مَن اللَّهُمُّ مَن اللَّهُمُّ مَن وَحُمَةِكَ اللَّهُمُّ مَن اللَّهُمُّ مَن وَاللَّهُمُ مَن اللَّهُمُّ مَن اللَّهُمُّ مَن وَاللَّهُمُ مَن اللَّهُمُّ مَن اللَّهُمُّ مَن اللَّهُمُّ مَن اللَّهُمُ مَن اللَّهُمُّ مَن اللَّهُمُ مَن اللَّهُمُ مَن اللَّهُمُ مَن اللَّهُمُّ مَن اللَّهُمُ اللَّهُمُ مَن اللَّهُمُ مِن اللَّهُمُ مَن اللَّهُمُ مَن اللَّهُمُ اللَّهُمُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ وَلَيْ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ وَاللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ وَاللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللْمُسُلِّمُ مَا اللَّهُمُ اللَ

ہماری سفارش کرے اس کئے کرتو ہر چیز پرقد رت رکھتاہے اور سیامر تیرے لئے مہل وآسمان ہے۔

(۸) دعاء برائے حل مشكلات: بيدعابھى صحيفة كاملەكى مقدس دعاؤں ميں سے ايك متنددعا ب جوحا كم جاير كے شرسے نجات پانے ، ہر مصيبت كے نالئے، وشمن پر غلبہ حاصل كرنے اور فقر و فاقد سے اور ہر قتم كے خوف وخطر سے نجات حاصل كرنے كے ليے خلوص نيت سے پر بھى جاسكتى ہے۔

مُـؤُتَـمِـرَةٌ وَ بِارَادَتِكَ دُوُنَ نَهُيكَ مُنْزَجِرَةٌ أَنْتَ الْمَدْعُوُّ لِلْمُهمَّاتِ وَ أَنْتَ الْمَفُزَعُ رو کے خودی تیرے ارادہ سے رکی ہوئی ہیں۔ مشکلات میں مجھے بی پیاراجاتا ہے اور ملیات میں تو بی جائے بناہ ہے ان میں سے کوئی مصیب تکن بیس سکتی فِي الْمُلِمَّاتِ لِا يَنُدَفِعُ مِنُهَآ إِلَّا مَا دَفَعُتَ وَلا يَنُكَشِفُ مِنُهَآ إِلَّا مَا كَشَفُتَ وَ قَدُ نَزَلَ انتخر جساقہ نال دےاور کوئی مشکل حل میں ہو بھتی تحریصیۃ حل کردے۔ بروردگا راجھ برایک الیم معیبت مازل ہوئی ہے جس کی تنگینی نے مجھی گرا نباز کر دیا بِيُ يَا رَبِّ مَا قَدُ تَكَادَنِيُ ثِقُلُهُ وَ ٱلَّمَ بِيُ مَا قَدُ بَهَظَنِيُ حَمُلُهُ وَ بِقُدُرَتِكَ اَوُرَدُتَهُ عَلَيَّ وَ ے اور ایک ایسی آفت آرٹری ہے جس مے میری قوت ہر واشت عاجز ہو چک ہے تونے اپی قدرت سے اس مصیبت کو مجھ پروارد کیا ہے اور اپنے اقتدار بسُلُطَانِكَ وَجُهُتَهُ اِلَيَّ فَلا مَصُدِرَ لِمَآ اَوُرَدُتَ وَلاَ صَارِفَ لِمَا وَجُهُتَ وَلاَ فَاتِحَ لِمَآ سے میری طرف متوجہ کیا ہے تو جسے تُووارد کرے اے کوئی ہٹانے والاءاور جستو متوجہ کرےا سے کوئی پلٹانے والاءاور جستو ہندکرے اسے کوئی تھولنے ٱغُـلَقُتَ وَلاَ مُغُلِقَ لِمَا فَتَحْتَ وَلاَ مُيَسِّرَ لِمَا عَسَّرُتَ وَ لاَ نَاصِرَ لِمَنُ خَذَلَتَ فَصَلّ ولا اور جستو تھولےا ہے کوئی بند کرنے والااو رجستو دھوار بنائے اسے کوئی آسمان کرنے والااور جستو نظرا نما زکر ہےا سے کوئی مد ددیجے والاثمیس ہے۔ عَـلْي مُـحَمَّدٍ وَ الِهِ وَافْكَحُ لِي لَا رَبُّ بَابُ الْفَرَجِ بِطُوِّ لِكُ وَاكْكِرُ عَذِي سُلُطَانَ الْهَمّ رحمت ما زل فرما محماً وران کی آل میره اوراچی کرم نوازی سے است میرے یا لئے والے میرے لئے آسراکش کا دروازہ کھول دے اوراچی قوت وتواناتی سے خم و بحَوْلِكَ وَ اَنِلُنِي خُسُنَ النَّظَرِ فِيُمَا شَكُوْتَ وَ اَذِقْنِي حَلَاوَةَ الصُّنُعِ فِيُمَا سَالُتُ ا ندوه کا زو رو از دےاور میرے اس محکوہ کے پیش انظرا بی نگا وکرم کارخ میری طرف مواردے اور میری حاجت کو پورا کرکے شیر می احسان سے مجھلندے وَهَبُ لِيُ مِنُ لَّذُنِّكَ رَحْمَةً وَ فَرَجًا هَنِيُنًا وَ اجْعَلُ لِيُ مِنْ عِنْدِكَ مَخُورَجًا وَ حِيًّا وَلاَ ا ندوز کر ہاو را چی طرف ہے رحمت اورخوشکوارآ سودگی مرحمت فرمااورمیر ہے لئے اپنے لطف خاص ہے جلد چھٹکار ہے کی راہ پیدا کراورای عم واندوہ کی وجہ تَشْغَلْنِيُ بِالْإِهْتِمَامِ عَنُ تَعَاهُدِ فُرُوْضِكَ وَاسْتِعُمَالِ سُنَّتِكَ فَقَدُ ضِقُتُ لِمَا نَزَلَ بي سے اپنے فرائض کی بابندی اور سخبات کی بھا آوری سے غفلت میں نہ ڈال دے۔ کیونکہ میں اس مصیبت کے ہاتھوں تک آچکا ہوں اور اس حادث کے يَا رَبِّ ذَرُعًا وَ امُتَلَاثُ بِحَمُلِ مَا حَدَثَ عَلَيَّ هَمًّا وَ أَنْتَ الْقَادِرُ عَلَى كَشُفَ مَا مُنِيُتُ اٹوٹ میٹنے سے دل ریج واندوہ سے بحر گیا ہے۔جس مصیبت میں مبتلا ہوں اس کے دور کرنے اور جس بلا میں پینسا ہوں اس سے نکالنے میر تُو بی قادر بِهِ وَ دَفُعِ مَا وَقَعُتُ فِيُهِ فَافُعَلُ بِي ذَٰلِكَ وَ إِنْ لَمُ اَسْتَوُجِبُهُ مِنْكَ يَا ذَا الْعَرُش الْعَظِيُم. ے لبغلا بی قدرت کومیرے حق میں کارفر ماکر ہا گرچہ تیری طرف ہے میں اس کا سزاوار نیٹرار یا سکوں ہاہے حرش تعظیم کے ما

(٩) شر اعداء سے بچاؤ کی دعا:۔

یہ وعابھی صحیفہ سجا دیڈی مقدس وعاؤں میں ہے ایک مقدس و عاہے۔ آج جبکہ وشمنان اسلام ہمیں مسلمان سمجھ کر اور دشمنان اللام ہیتے ہمیں اہل و لایت وائیان سمجھ کر نہ صرف ہمیں ہرفتم کا گزند پہنچانے بلکہ صفحۂ ہستی ہے مثانے پر تلے ہوئے ہیں تو ضرورت اس امری ہے کہ ہم حفاظت خودا ختیاری کے دوسرے طاہری آلات و اسباب کے علاوہ اس مقدس وعا کے اسلمہ کے ساتھ بھی اپنے آپ کو سلم کریں تا کہ دشمن جارا ہال بھی بیکا نہ کرسکیں ۔اوروہ دعا ہے ۔

الهِي هَدَيْتَنِي فَلَهَوْتُ وَ وَعَظْتَ فَقَسَوْتُ وَ اَبْلَيْتُ الْجَمِيلُ فَعَصَيْتُ ثُمَّ عَرَفْتُ مَا

ا میرے معبوداتو نے میری رہنمانی کی محرمین عافل رہاتو نے بیند وقسیعت کی محرمین سخت ولی سے باعث متاثر ند ہوا یو نے جھے عمد العتیں بخشیں بحرمین نے

أَصُدَرُتَ إِذْ عَرَّ فُتَنِيهِ فَاسْتَغُفَرُتُ فَاقَلْتَ فَعُدْتُ فَسَتَرُتَ فَلَكَ اللهِي الْحَمُدُ تَقَحَّمُتُ

نا فرمانی کی۔ چربے کرجن گنا ہوں سے قونے میر ارخ موڑا جب کرتو نے جھے اس کی معرفت عطا کی توئنیں نے (گنا ہوں کی ہر تی کو) پیچان کرتو ہواستغفار کی جس بر

اَوْدِيَةَ الْهَلَاكِ وَ حَلَلُهُ شِعَالَ تَلَغِ تَلَعَ رَضَكَ فِيهَا إِلَكُواتِكَ وَ بِحُلُولِهَا

تونے مجھے معاف کرویا۔ ورپھر گنا ہوں کامر تکب ہو او تونے پر دو پوشی سے کام لیاا ہے ہرے معبودا خیرے ہی لیے حمدوثا ہے بیمیں بلاکت کی داویوں میں جھا مذااور

عُقُوبَ اتِكَ وَ وَسِيلَتِي إِلَيُكَ التَّوْحِيلُ وَ ذَرِيُعَتِي أَنِّي لَمُ أُشُرِكُ بِكَ شَيْئًا وَلَمُ

تبای وربا دی کی گھاٹیوں میں از ا۔ان ہلاکت خیز گھاٹیوں میں جیری قیر مانی سخت کیریوں اور ان میں روآئے سے جیری عقوبتوں کا سامنا کیا۔ جیری بارگا ہ میں میرا

أَتَّخِذُ مَعَكَ اللَّهَا وَ قَدْ فَرَرُتُ اِلَيُكَ بِنَفُسِي وَ اِلَّيْكَ مَفَرُّ الْمُسِيءِ وَ مَفُزَعُ

وسلہ جیری وحدت و یکرائی کا اقرار ہےاورمیر اور بعیصرف ہے ہے کئیں نے کسی چیز کو تیراشر یک ٹیس جانا، اور جیرے ساتھ کسی کومعبور ٹیس کا ہمرایا ۔اورئیس اپنی جان کو

الُمُ ضَيِّعِ لِحَظِّ نَفُسِهِ المُمُلتَجِيءِ فَكُمُ مِنُ عَدُوِّ انْتَضٰى عَلَيَّ سَيُفَ عَدَاوَتِهِ وَ شَحَذَلِي

لتے جیری رحمت ومففرت کی جانب گریز ال ہوں اورایک گذرگار جیری ہی طرف جماگ کرآتا سیاورایک انتجاء کرنے والاجوابیع حظ وفعیب کوضائع کرچکا ہو جیرے

ظُبَةَ مُدُيَتِهِ وَ أَرُهَفَ لِي شَبَاحَدِهِ وَ دَافَ لِي قَوَاتِلَ سُمُوْمِهِ وَ سَدَّدَ نَحُوِي صَوَآئِبَ

ی واکن میں بناہ لیتا ہے۔ کتنے ہی ایسے وشن متے جنہوں نے شمشیر عدادت کو بھے پر بینیا م کیا اور میرے لیے اپنی جیمری کی وحار کوبا ریک اورا پی تندی وسختی کی ہا رکو

سِهَامِهِ وَلَهُ تَنَمُ عَنِينُ عَيُنُ حِرَاسَتِهِ وَ اَضْمَرَ اَنُ يَسُومَنِي الْمَكُرُوهُ وَ يُجَرِّعَنِي زُعَاقَ

جیز کیا اور بانی میں سے لیے مملک زہروں کی آمیزش کی اور کمانوں میں جیروں کوجو ڈکر بھے نشاند کی زومیں رکھ لیا۔ اور ان کی تھا قب کرنے والی نگامیں مجھ سے ذرا

مَرَارَتِهِ فَنَظَرُتَ يَا اللِّهِي اللَّي ضَعُفِي عَنِ احْتِمَالِ الْفَوَادِحِ وَ عَجُزِي عَنِ الْإِنْتِصَارِ مِمَّنُ عافل ندہو تیں۔ورول میں میری ایڈ ارسانی سے مصوبے با مدھتے اور سمنج جرعوں کی تعلق سے مجھے پیم سلند کا مہناتے رہے تو اسدمیر ہے معبودا ان رائج وآلام کی قَصَدَنِيُ بِـمُـحَارَبَتِهِ وَ وَحُدَتِيُ فِيُ كَثِيُر عَدَدِ مَنُ نَاوَانِيُ وَ أَرْصَدَلِيُ بِالْبِلاءِ فِيُمَا لَمُ یرواشت سے میری کمزوری اور بھے سے آ مادہ پیار ہوئے والوں کے مقابلہ ش اتقام سے میری عاجزی اورکٹیر انتحداد وشنوں اورلیز ارسانی کیلئے گھات لگائے والوں اَعُـمِـلُ فِيُهِ فِكُرِى فَابُتَدَاْتَنِي بِنَصُرِكَ وَ شَدَدُتَ اَزْرِي بِقُوَّتِكَ ثُمَّ فَلَلُتَ لِي حَدَّهُ وَ کے مقابلہ میں میری جہائی تیری نظر میں تھی جس کی طرف ہے میں عافل اور بے قتر قدا کرتے نے میری مدومیں پکل اورا بی قوت اور طاقت ہے میری کمر معبو طاک ہے صَيَّرُتَـهُ مِـنُ بَعُدِ جَمُع عَدِيْدٍ وَحُدَهُ وَ اَعُلَيْتَ كَعُبِيُ عَلَيْهِ وَ جَعَلْتَ مَا سَدَّدَهُ مَرُدُودًا بیکراس کی تیزی کو و اوراس کے کثیر ساتھیوں (کوشتشر کرنے) سے بعداے مکدوجها کرویا اور جھے اس پیغلبہ ومریلندی عطاکی اور جوتیراس نے اپنی کمان میں عَـلَيُـهِ فَـرَدَدُتَـهُ لَمُ يَشُفِ غَيُظَهُ وَلَمُ يَسُكُنُ عَلِيُلُهُ قَدُ عَضَّ عَلَى شَوَاهُ وَ اَدُبَرَ مُوَلِّيًا قَدُ جوڑ ۔ تھے وہ اس کی طرف پلٹا ویئے۔چنا نچے اس صالت میں آؤنے اسے پلٹا دیا کر رفقہ وہ اپنا خصر شینٹرا کر سکا ،اور نداس کے مل کی تبیش فروہ و تکی ۔اس نے اپنی بوٹیاں آخُـلَفُتُ سَرَايَاهُ وَكُمْ مِنْ بَاغَ بَغَانِيُ بِمَكَائِدِهِ وَ نَصَبَ لِي شُرَاكِ مَصَائِدِهِ وَ وَكُلّ بي کا میں اور پیچے پھر اگر جاا گیا اوراس کے نظر والول نے بھی اے وغا وی اور سینے تک ایسے مشکر تھے جنہوں نے اپنے تکروفریب ہے بھے برظلم وتحدی کی اوراپ شکار کے تَـفَقُدَ رِعَايَتِهِ وَ اَضُبَا اِلَيَّ اِضُبَاءَ السَّبُعِ لِطَرِيُدَتِهِ اِنْتِظَارًا لِإِنْتِهَازِ الْفُرُصَةِ لِفَرِيُسَتِهِ وَهُوَ جال میر مدلیے بچھائے اورا پی نگا چہتو کا بھے پر بہرالگا دیا اوراس طرح گھات لگا کر بیٹے گئے جس طرح ورند واسینے شکا رکے انتظار میں موقع کی ہا ک میں گھات لگا کر يُنظَهِرُ لِنُ بَشَاشَةِ الْمَلَقِ وَ يَنُظُرُنِيُ عَلَى شِدَّةِ الْحَنَقِ فَلَمَّا رَأَيْتَ يَا اِلْهِيُ تَبَارَكُتَ وَ میشتا بردا محالیده دبیر مسامنے توشلداند طور پرخنده بیشانی سے بیش آئے اور (ور پروه) اجہائی کیفے زنظروں سے مجھے و کیھتے تو جب اسد خدائے ہز رگ وہرتر تَعَالَيُتَ دَغَلَ سَرِيُرَتِهِ وَ قُبُحَ مَا انْطَواى عَلَيْهِ اَرْكَسْتَهُ لِلَّامِّ رَأْسِهِ فِي زُبُيَتِهِ وَ رَدَدُتَهُ فِي ان کی بدباطنی وبدسرشتی کود یکھاتو انین سرے ٹل انہی سے گز ھے میں الٹ دیا اور انہیں انہی سے غارسے گہراؤ میں بھینک دیا ،اورجس جال میں بھے گرفیا رہ کھنا جا جے مَهُواى حُفُرَتِهِ فَانْقَمَعَ بَعُدَ اسْتِطَالَتِهِ ذَلِيُلاَّ فِي رِبَقِ حِبَالَتِهِ الَّتِي كَانَ يُقَدِّرُ أَنُ يَوَانِيُ تھے خودی غرور در بلندی کامظاہرہ کرنے سے بعد ذیل ہوکر اس سے بیسندوں میں جارات ہے۔اور پچ تو ہے ہے کہ اگر تیم ی رحمت شریک حال نہ ہوتی تو کیا بعید تھا کہ جو فِيُهَا وَ قَلْدُ كَادَ أَنُ يَّحُلُّ بِي لَوُلا رَحُمَةً كَ مَا حَلّ بِسَاحَتِهِ وَكُمْ مِنْ حَاسِدٍ قَدُ شَرَقَ

بىيُ بغُصَّتِهِ وَ شَجِيَ مِنِّيُ بِغَيُظِهِ وَ سَلَقَنِيُ بِحَدِّ لِسَانِهِ وَ وَحَرَنِيُ بِقَرُفِ عُيُوْبِهِ وَ جَعَلَ ا بی جیز زبا فی سے مجھے افیت ویتے رہے اورائے عیوب کے ساتھ مجھے عہم کر کے طیش ولائے رہے اور میری آئر دکوائے جیروں کا نشا نہ بنایا اور جن بری عافق ل میں عِـرُ ضِـيُ غَـرَضًا لِـمَـرَامِيُـهِ وَ قَـلُـدَنِيُ خِلالاً لَمُ تَزَلُ فِيُهِ وَ وَحَرَنِيُ بِكَيُدِهِ وَ قَصَدَنِيُ وہ خود بمیشہ جتلار ہے دہ میر منڈ عددیں اورا بی فریب کا ربوں سے مجھے مشتعل کرتے اور اپنی وغلا زبوں کے ساتھ میری طرف پر تو گئے رہے تھیں نے اے بِـمَكِيُـدَتِـهٖ فَنَـادُتُكَ يَـا اِلْهِـيُ مُسُتَـغِيُثًا بِكَ وَاثِقًا بِسُرُعَةِ اِجَابَةِكَ عَالِمًا أَنَّهُ لأ میر ساللہ تھے سے فریا دری چاہجے کا ورتیری جلدها جت رو فی پر بحروسا کرتے ہوئے کچنے یکا راورا تحالیکہ بیجانیا تھا کہ جوتیر سے مایة حمایت میں بناہ لے گا، وہ يُضُطَهَدُ مَنُ اَوْى اِلٰي ظِلَّ كَنَفِكَ وَلاٰ يَقُزَعُ مَنُ لَجَاۚ اِلٰي مَعُقِل انْتِصَارِكَ فَحَصَّنْتَذِي تلست خورد ونیس ہوگا اورجو تیر سانقام کی بناہ گا ویکم میں بنا گرزیں ہوگا وہراساں ٹیس ہوگا۔ چنا نچ تو نے اپنی قدرت سے ان کی شدت وشراککیزی سے جھے محفوظ مِنُ بَـاُسِهِ بِقُدُرَتِكَ وَ كُمُ مِّنُ سَحَآئِبِ مَكُرُوهٍ جَلْيُتَهَا عَنِّيُ وَ سَحَآئِب نِعَم أَمُطَرُتَهَا كرويا اوركتنے بى مصيتوں كے اور جومير _ افق زندگى ير جھائے ہوئے) تھاؤ نے چھانٹ دينے اور كتنے بى افعتوں كيا ول برسا دينے اور كتنى بى رحمت كى عَلَيَّ وَ جَدَاوِلِ رَحُمَةٍ لَمُثَارُتُهَا وَ عَافِيَةٍ ٱلْبَسَتَهَا وَ ٱغَيُنِ ٱلْحَدَّاثِ طَمَسْتَهَا وَ غَوَاشِي نہریں بہا دیں ورستنے می محت وعافیت سے جامے بہنا دیئے، اور سننی ہی آلام وحوادث کی آسمیس (جومیری طرف عمران خیس) تولے بے نور کردیں اور سننے ہی كُرُبَاتٍ كَشَفْتَهَا وَكُمُ مِّنُ ظَنِّ حَسَنِ حَقَّقُتَ وَ عَدَم جَبَرُتَ وَ صَرُعَةٍ ٱنْعَشُتَ وَ هموں کے ریک پروے (میرے ول پرے)اشاویئے اور کتنے ہی اجھے گمانوں کو نے سی کرویا۔ اور کتنی ہی دستیوں کاتو نے چارہ کیا اور کتنی ہی شوکروں کو نے مَسُكَنَةٍ حَوَّلُتَ كُلَّ ذَٰلِكَ اِنْعَامًا وَ تَطَوُّلاً مِنْكَ وَفِيْ جَمِيْعِهِ انْهِمَاكًا مِنِّي عَلَى سنجالا اور منتی بی داریل کونے فراز وے سے کبل ویا۔ (بارالہا!) میسب حیری طرف سے انعام داحسان ہاورئیس ان تمام واقعات سے با وجو وحیری عصیتوں مَعَاصِيُكَ لَـمُ تَـمُنَعُكَ إِسَائَتِنِي عَنُ إِنَّـمَامِ إِحْسَانِكَ وَلا حَجَرَنِي ذَٰلِكَ عَن میں ہمہ تن منہک رہا۔ (لیکن)میری بدا عمالیوں نے بچھے اپنے اصامات کی بحیل سے روکائییں اور نہتیر اُفضل واحسان مجھے ان کاموں سے جو تیری مارائمتگی کابا عث ارُتِكَابِ مَسَاخِطِكَ لا تُسْئَلُ عَمَّا تَفُعَلُ وَ لَقَدُ سُئِلُتَ فَأَعُطَيْتَ وَلَمُ تُسْئَلُ فَابْتَدَاتَ میں از رکھ کا ورجو بکھا کر ساس کی بابت تھے ہے ہو چھ بھٹیس ہو تھی۔ تیری ذات کی شم! جب بھی تھے سے ماٹھا گیا تو نے عطا کیا اور جب نہ ماٹھا گیا تو تو نے از وَاسْتُمِيْحَ فَضُلُكَ فَمَا اكْدَيْتَ اَبَيْتَ يَا مَوُلاَىُ الَّا إِحْسَانًا وَ امْتِنَانًا وَ تَطَوُّلاً وَ اِنْعَامًا

وَ اَبَيْتُ اللَّا تَـقَـحُمُما لِـحُرُمَاتِكَ وَ تَعَدِّيًا لِحُدُودِكَ وَ غَفْلَةً عَنْ وَعِيْدِكَ فَلَكَ شیل کیا۔اورکن جیر مجرمات میں بھا خداجیر معدودواحکا مے متجاوز ہونا اور جیری تبدید دسر زلش سے ہمیشہ خفلت کرنا رہا۔ا مدیر معبودا جیر میں لیے جمدو الُحَـمُـدُ اللهِـيُ مِنُ مُقُتَدِرِ لا يُغُلَبُ وَ ذِيُ اَنَاةٍ لا تَعُجَلُ هٰذَا مَقَامُ مَن اعْتَرَفَ بسُبُوُ غ ستائش ہے جوابیا صاحب اقتدار ہے جومفلوب نہیں ہوسکتا۔اورابیار ما رہے جوجلدی نہیں کرنا۔یہاں شخص کاموقف ہے جس نے حیری فعقوں کی فراوانی کا النِّعَم وَ قَابَلَهَا بِالتَّقُصِيُرِ وَ شَهِدَ عَلَى نَفُسِهِ بِالتَّضْييُعِ اَللَّهُمَّ فَانِّي اَتَقَرَّبُ اِلَيُكَ احتر اف کیا ہے اوران اُحتوں کے مقابلہ میں کو ای کی ہے اورائ خلاف اپنی نیاں کا ری کی کوائی وی ہے اے میرے معبود اِئیس محمد (صلی الله علیه وآله وسلم) کی بِـالْمُحَمَّدِّيَّةِ الرَّفِيُعَةِ وَالْعَلَويَّةِ الْبَيُضَآءِ وَ آتَوَجَّهُ اِلَيُكَ بِهِمَا أَنْ تُعِيُذَنِيُ مِنْ شَرَّ كَذَا وَ منزلت بلندبا بیاورعلی (علیدالسلام) کے مرتبه روش وورخشال کے واسطہ سے تھے سے تقرب کا خواستگار ہوں اور ان ووٹوں کے دسیار سے تیم ی طرف متوجہ ہوں تا کہ كَذَا فَإِنَّ ذَٰلِكَ لا يَضِيُقُ عَلَيُكَ فِي وُجُدِكَ وَلا يَتَكَأْدُكَ فِي قُدُرَتِكَ وَ أَنْتَ مجھے ان چیز وں کی برائی سے بناہ و مے جن سے بناہ طلب کی جاتی ہے اس لیے کرمیہ تیری و محمت کے مقابلہ میں وثوار اور تیری قدرت کے آھے کوئی مشکل عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ فَهَبِ إِلَى يَا الْهِنْ مِنْ رَحْمَةٍ كُ وَ دُواهِ تَوْ فِيْقِكَ مَا أَتْخِدُهُ سُلَّمًا کام ٹیس ہےاوراہ ہرجیز پر گاور ہے۔البذاقو اپنی رحت اوروائی او ثیق سے مجھے بہر ومند فرما کہ جھے زیند قر اردے کرجیری رضا مندی کی سطح پر بلند ہوسکوں اوراس کے أَغُرُ جُ بِهِ إِلَى رِضُوَانِكَ وَ امَنُ بِهِ مِنْ عِقَابِكَ يَآ أَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ. وربعة تير عداب محفوظ ربول ما معتمام رحم كرفي والول مي سع يره مدكرهم كرفي والما (۱۰) دعائے حضرت حجت الفائل: - جناب شیخ تقعمی نے اپنی کتاب البلدالامین میں لکھا ہے کہ بیدوعا حضرت ججة عليدالسلام مروى : ٱللَّهُمَّ ارُزُقُنا تَوُفِيُقَ الطَّاعَةِ وَبُعُدَ الْمَعْصِيَةِ وَ صِدْقَ النِّيَّةِ وَ عِرْفَانَ الْحُرُمَةِ وَآكُرمُنَا ا ہے معبود تو فیق دے جمیں اطاعت کرنے نا فر مانی سے دور رہنے نیت صاف رکھنے اور حرمتوں کو بیجانے کی اور جمیں را و بِالْهُدَاى وَالْإِسْتِقَامَةِ وَسَـدِّدُ ٱلْسِـنَتَنَا بِالصَّوَابِ وَ الْحِكُمَةِ وَامُلَا قُلُوبَنا بِالْعِلْمِ را ست اور تا بت قدی سے سرفرا زفر ماا ور جاری زبا نو ل کوخو بی و دانا ئی سے بولنے کی تو فیق دے جارے دلول کوعلم ومعرفت وَالْمَعُرِفَةِ وَطَهَرُ بُـطُونَنا مِنَ الْحَرامِ وَالشُّبُهَةِ وَاكْفُفُ اَيُدِيَنا عَنِ الظُّلُمِ وَ البِّرُقَةِ سے بھر دےا ورہما رہے مکموں کوحرا م اورمشکوک غذا ہے یا ک رکھ بھا رے ہاتھوں کوستم اور چوری کرنے ہے بچائے رکھاور

********************** وَاغْضَضْ أَبُطارَنا عَنِ الْفُجُورِ وَ الْخِيانَةِ وَاسُدُدُ اَسُماعَنا عَنِ الْلَغُو وَالْغِيبَةِ وَتَفَضَّلُ ہماری آئٹھوں کوہدی اور خیانت سے بازر کھ اور جمارے کا نوں کو چفلی اور بے فائدہ باتیں سننے سے عَـلٰى عُلَمٰآئِنَا بِالزُّهُدِ وَالنَّصِيُحَةِ وَعَلَى الْمُتَعَلِّمِينَ بِالْجُهُدِ وَالرَّغُبَةِ وَعَلَى الْمُسْتَمِعِينَ محفو ظ فر ما جما رے علماء وین پر زہد ونقیحت ارزا فی فر ماا ور جما رے طالب علموں کومحنت اور رغبت عطا کر وعظ سننے بِ الْإِيِّبَاعِ وَالْمَوْعِظَةِ وَعَلَى مَرُضَى الْمُسْلِمِيْنَ بِالشِّفَآءِ وَالرَّاحَةِ وَعَلَى مَوْتَاهُمُ بالرَّافَةِ وا لول کو نصیحت پکڑنے اور پیروی کرنے کی تو فیق دےاور بیا رمسلما نول کو شفایا ب فرمااور آرام دےان کے وَ الرَّحْـمَةِ وَعَـلَـي مَشَايِخِنَا بِالْوَقَارِ وَالسَّكِينَةِ وَعَلَى الشَّبَابِ بِالْإِنَابَةِ وَالتُّوبَةِ وَ عَلَى مرحومین پر مهر با نی ورحمت فر ما جا رہے بو ڑھوں کو تھیرا ؤا ورنسلی عطا کرا ور جا رہے جوا نوں کوتو بہاستغفا رکی تو فیق النِّسَآءِ بِالْحَيٰآءِ وَالْعِفَّةِ وَعَلَى الْآغُنِيَآءِ بِالتُّواضُع وَالسَّعَةِ وَعَلَى الْفُقَراآءِ بِالطَّبُرِ دے اورعورتوں کو حیاا ورپا کدامنی عنابت فرما جمارے تو مگروں کوفروتنی اور سخاوے عطا کردے اورمفلسوں کو وَالْقَسْاعَةِ وَعَلَى الْعُرَاةِ بِالنَّصُ وَالْغَلَيْةِ وَعَلَى الْأَسَرَاءِ بِالْخَلَاصِ وَالرَّاحَةِ وَعَلَى صبر وقناعت بخش دے غازیوں کو مد داورغلبہ دے قیریوں کور ہائی اور آرام دے حاکموں کوانصاف اورزمی کی الْاُمَوٰآءِ بِالْعَدُلِ وَالشَّفَقَةِ وَعَلَى الرَّعِيَّةِ بِالْلِانُصَافِ وَ حُسُنِ السِّيُرَةِ وَ بَارِكُ لِلُحُجَّاج تو فیق دے اورعوام کی حق شناسی اورنیک کر دار بنا دے جا جیوں اور زائر وں کے زا درا ہا ورخر چ میں ہر کت الزُّورْارِ فِي الزَّادِ وَ النَّفَقَةِ وَاقُضِ مَا آوُجَبُتَ عَلَيْهِمْ مِنَ الْحَجِّ وَالْعُمُرَةِ بِفَضْلِكَ د ہے اوران پر جو عج اورعمر ہ تونے وا جب کیا ہے و ہ اچھی طرح ا دا کرا دے اپنے فضل سے اوراپی رحمت سے

رَحُمَةِكَ يَآ أَرُحَمَ الرُّاحِمِينَ

اے سب سے زیا وہ رحم کرنے والے۔

نیز بید عاتبھی انہی حضرت علیہ السلام ہے مروی ہے۔ (مج الدعوات)

دعاءِ حضرت حجت الله

اللهى بِحَقِّ مَنُ نَاجًاكَ وَ بِحَقِّ مَنُ دَعًاكَ فِي الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ تَفَضَّلُ عَلَى فُقَراءِ الْمُوْمِنِينَ فَيَ مير عموداس كا واسط جو تھے سے راز كہتا ہے اوراس كا واسط جو تجے صحرا و دريا ميں پكارتا ہے كہ مفلس مؤمنین و الُـمُؤُمِنَاتِ بِالْغِنَى وَ الثَّرُوَةِ وَ عَلَى مَرُضَى الْمُؤْمِنِيُنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ بِالشِّفَاءِ وَ الصِّحَةِ وَ

مؤ منات کو مال ویژ وت عطا کر کے خوشحال وخورسند کر دےمؤمن مر دول اورمؤمن عورتو ل بیں بیا رول کو صحت و

عَلْى آخَيْاءِ الْمُوْمِنِيُنَ وَ الْمُوْمِنَاتِ بِاللَّطُفِ وَ الْكَرَمِ وَ عَلَى آمُواتِ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ

تتكدرتتی عطا فرما زند ه مؤمن مر دول اورمؤمن عورتول پر اپنا لطف و كرم ارزانی فرما اور مرحوم مؤمن مردول اور

الُمُؤْمِنُاتِ بِالْمَغُفِرَةِ وَ الرَّحْمَةِ وَ عَلَى خُرَبَاءِ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ بِالرَّدِّ إِلْى

مؤمن عورتوں پر بخشش اورمهر بانی فر ما دےا ورمسا فرمؤمن مر دول اورعورتوں کو محت سلامتی اور مال کے ساتھا پنے

أَوْ طَانِهِمُ سَالِمِيْنَ غَانِمِيْنَ بِمُحَمَّدٍ وَّ الِهَ ٱجُمَعِيْنَ.

تھروں میں پہنچاد ہے تھے واسطے محمدًا وران کی آل یا کے کا۔

(۱۱) دعائے خاتمہ بالخیر:۔

صديث يس واروب كم ﴿ الامور بالخواتيم ﴾ يعني ع

SIBOTION COOK

لہذا ایک بند ہ مؤمن کواپنے خاتمہ بالخیر ہونے کی فکر سے غافل نہیں ہونا چاہیئے اوراس مقصد جلیل کے حاصل کرنے کے لیے دوسر سے امور کے علاوہ اس دعا کاپڑھنا بھی بہت مفید ہے جو کہاس معاملہ کے بارے میں صحیفۂ کاملہ میں مذکور ہے جو یہ ہے:

يَا مَنُ ذِكُرُهُ شَرَفٌ لِللَّاكِرِينَ وَيَا مَنُ شُكُرُهُ فَوُزٌ لِلشَّاكِرِينَ وَيَا مَنُ طَاعَتُهُ نَجَاةً

ا ہے وہ ذات! جس کی بادہ یا دکرنے والوں کیلیج سرمایۂ عزت، اے وہ جس کاشکر،شکر گز اروں کیلیجے وجۂ کامرانی ، اے وہ جس کی

لِلْمُطِيُعِيُنَ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ اللهِ وَ اشْغَلُ قُلُوبَنَا بِذِكُرِكَ عَنُ كُلِّ ذِكْرٍ وَ ٱلْسِنَتَنَةِ

فرمانبر داری فرمانبر داروں کیلیج ذریعہ تنجات ہے۔رحمت ما زل فر ما محمداوران کی آ لئے پراورہا رے دلوں کوا چی یا دمیں اور ہماری زبا نوں کو

بِشُكْرِكَ عَنْ كُلِّ شُكْرٍ وَ جَوَارِحَنَا بِطَاعَةِكَ عَنْ كُلِّ طَاعَةٍ فَاِنُ قَدَّرُتَ لَنَا فَرَاغًا هِ

ا ہے شکر بیمن اور ہمارے اعضا کواچی فرمانبر داری میں مصروف رکھ کر ہریا دہ ہر شکر بیاو رہر فرمانبر داری ہے بے نیاز کردے اورا گرتونے

شُغُلٍ فَاجُعَلْهُ فَرَاعَ سَلامَةٍ لا تُدُرِكُنَا فِيهِ تَبِعَةٌ وَلا تَلْحَقُنَا فِيهِ سَامَةٌ حَتَّى يَنْصَرِفَ عَنَّا

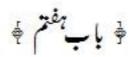
ہماری مصروفیتوں میں کوئی فراغت کالحدر کھا ہے تو اسے سلامتی ہے ہمکنا رکر ،اس طرح کرنتیجہ میں کوئی گیا ہ دامن گیرنہ ہواو رنہ منتگی رونما ہو

************* كُتُابُ السَّيِّسَاتِ بِصَحِينُفَةٍ خَالِيَةٍ مِنْ ذِكْرِ سَيَّاتِنَا وَ يَتَوَلَّى كُتَّابُ الْحَسَنَاتِ عَنَّا تا کہ برائیوں کو لکھنے والے فرشتے اس طرح پلٹیں کہ مامہ اعمال ہماری برائیوں کے ذکر سے خالی ہواور نیکیوں کو لکھنے والے فرشتے ہماری مَسُرُوُرِيْنَ بِمَا كَتَبُوُا مِنُ حَسَنَاتِنَا وَ إِذَا انْقَضَتُ آيَّامُ حَيْوِتِنَا وَ تَصَرَّمَتُ مُدَدُ أَعُمَارِنَا وَ نیکیوں کولکھ کرمسر وروشا داں واپس ہوں اور جب ہماری زندگی کے دن بیت جائیں اورسلسلئہ حیات قطع ہوجائے او رتیری بارگاہ میں حاضر اسُتَحُضَرَتُنَا دَعُوَتُكَ الَّتِي لا بُدَّ مِنْهَا وَ مِنُ إِجَابَتِهَا فَصَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الِهِ وَاجُعَلُ ہونے کا بلاوا آئے جے بہر حال آنا او رجس پر بہر صورت لبیک کہنا ہے بقو محماً وران کی آل پر رحمت نا زل فر مااور ہمارے کا تبانِ اعمال خِتَامَ مَا تُحْصِيُ عَلَيْنَا كَتَبَةُ أَعُمَالِنَا تَوْبَةً مَقُبُولَةً لاَ تُوقِفُنَا بَعُدَهَا عَلى ذَنُبِ اجُتَرَحُنَاهُ ہمارے جن اعمال کاشارکریں ان میں آخری عمل مقبول تو بہ کوتر اردے کہ اس کے بعد ہمارے ان گنا ہوں او رہماری ان معصیتوں پر جن وَلاٰ مَعُصِيَةٍ اِقُتَرَفُنَا وَلاٰ تَكُشِفُ عَنَّا سِتُرًا سَتَرُتَهُ عَلَى رُؤُوسِ الْاَشُهَادِ يَوُمَ تَبُلُو ٱخْبَارَ کے ہم مرتکب ہوئے ہیں سرزنش نہکر ہےاور جب اپنے بندوں کے حالات جانچے تو اس پر دہ کو جوتو نے ہمارے کیا ہوں پر ڈالا ہے سب

عِبَادِكَ إِنَّكَ رَحِينًا بِهُلَ وْعَاكُ وْ مُلْكَحِيبٌ لِمَنْ لَادَاكُ . \$

کے روبروجاک نہ کرے۔ بے ٹنگ جو تھے بلائے تو اس پرمہر بانی کرنا ہےاور جو تھے پکار ہے اس کی سنتا ہے۔

(۱۲) دعائے سیدالشہد اءالطفی جوآپ الطفی نے روزِ عاشوراء پڑھی تھی اور حضرت امام زین العابدین الطفی کواس وقت تعلیم دی تھی جبکہ آپ کے بدن سے خون بہدر ہاتھا۔ آپ القلی نے امام القلی کوسینہ سے لگا کرید دعاتعلیم دی جو ا ہم حاجات اور بخت مصائب وشدائد کے وقت پڑھی جاتی ہے: بِحَقِّ يَاسَ وَ الْقُرُآنِ الْحَكِيْمِ وَ بِحَقِّ طُهُ وَ الْقُرُانِ الْعَظِيْمِيَا مَنُ يَقُدِرُ عَلَى حَوَآئج وا سطه دیتا ہوں پنس والقر آن الحکیم کاا وروا سطه دیتا ہوں طلہ والقر آن العظیم کا ہے وہ جوسوال کرنے والوں کی حاجق ں السَّآئِلِيُنَ يَا مَنُ يَعُلَمُ مَا فِي الضَّمِيْرِ يَا مُنَفِّسًا عَنِ الْمَكُرُ وُبِيْنَ يَا مُفَرِّجًا عَنِ الْمَغُمُومِيْنَ ی قادر ہے اے وہ کہ دلول کی ہاتیں جانتا ہے دکھیارول کے دکھ دور کرتا ہے اور عم زدول کے يَسا دَاحِهَ الشَّيسُخِ الْسَكَبِيُرِيَسا دَاذِقَ الطِّفُلِ الصَّغِيُرِيَسا مَنُ لَا يَحُسَاجُ إِلَى عم مناتا ہے اے بوڑھے پر رحم کرنے والے اے چھوٹے بچے کو روزی دینے والے اے وہ جے شرح بیان کی



چند ستحی نمازو**ں کابیان**

مستحمی نمازیں بہت زیادہ ہیں جن میں ہم بڑے اختصار کے ساتھ چند مختلف فتم کی نمازوں کا تذکرہ کرتے ہیں تا کہ بیدکتا ب ان کے تذکرہ کی سعاوت ہے محروم ندرہ جائے۔

ا_ نوافل يوميه

نماز پڑگانہ کے فوافل جمل کی تعدال تیس رکعت ہے کہیں تہ تھا ایسی کی آئے، عصر کی آٹے، مغرب کی چاراور عشاء کی بیٹھ کر دور کعت جو کہ ثارا یک ہوتی ہان کی بجا آوری کی بالحضوص صبح اور مغرب کے نوافل کی بہت تا کیدوارد ہوئی ہے۔

۲_ نمازتجر

وراصل نماز تہجر آٹھ رکعت ہے اور دور کعت نماز شفع اور ایک رکعت نماز وہڑان گیارہ رکعتوں کو مجاز آ نماز تہجر یا نماز شب کہد دیا جاتا ہے سفر وحضر ہر حال میں اس نماز کے پڑھنے کی ارشادات معصومین علیہم السلام میں بڑی تاکید وار دہوئی ہے۔ نماز پڑگا نداس کے مقررہ نوافل اور اس نماز شب کے ملانے سے شب وروز میں اکیاون (۵۱)رکعت مبنی ہیں جن کاپڑھنامؤمن کی علامات میں سے ہے۔واللہ الموفق

س_ نوافل ماه رمضان

ماہ رمضان المبارک میں ایک ہزار رکعت نوافل پڑھنا مستحب ہیں قبول مشہور منصور کی بناء پر ان کے پڑھنے کی ترتیب بیہ ہے کہ کم ماہ رمضان ہے لے کرہیں تک ہر رات ہیں رکعت بایں ترتیب کہ آٹھ رکعت نما ز مغرب کے بعد اور ہا رہ رکعت نمازعشاء کے بعد اور اکیس سے لے کرتمیں تک ہر رات تمیں رکعت نمازمغرب کے بعد بدستورسابق آئے رکعت اورعشاء کے بعد ہائیس رکعت ۔ یہ کل سات سور کعتیں ہوگئیں ۔ علاوہ ہریں انیس، اکیس اور تئیس کی رات کو ایک ایک سور کعت، یہ ہوگئیں کمل ایک ہزار رکعت ۔ اس سے ثابت ہوگیا کہ ہمارے ہاں ماہ رمضان المبارک کے نوافل کی تعداو ہراوران اسلامی سے زیادہ ہفرق صرف یہ ہے کہ ہم ہماعت کے ساتھ نہیں ہوئے ہے۔ کیونکہ یہ بدعت ہے۔ و سحل بدعة ضلالة و سحل ضلالة سبیلها الی المناد ۔ (متفق بین الفرقین)

اسلامی ہرا دری کے خلیفہ ٹانی کواس نمازتر اوس کے بدعت ہونے کا خوداعتر اف ہے۔ (ملا خطہ ہو: بخاری اجس ۲۳۲، طبع دبلی، ﴿نعمت البدعة هذه﴾)

٣ - نماز اول برماه

ہرمہینہ کی پہلی تاریخ کو ہایں طریق دورکعت نماز پڑھنامتحب ہے کہ پہلی رکعت میں الحمد کے بعد سورہ قل ہو اللہ تمیں ہا راور دوسر کی رکعت میں الحمد کے بعد سورہ قل سواللہ تمیں ہا راور دوسر کی رکعت میں الحمد کے بعد سے اوفیق ہے صدقہ و سے دیا جائے۔ روایت میں وارد ہے کہ جو شخص ایسا کرے کویا اس نے اس مہینہ کی سلامتی فرید لی ہے۔ بیز اس نماز کے بعد درج ذیل دیں آیات کا پڑھنامتحب ہے:

نیزاس نماز کے بعد درج وَیل وَں آیات کاپڑھنامستوب ہے:

ہِ سُسِمِ اللّٰہِ السرِّ مُحْسَمٰنِ السرِّ حِیْسِمِ وَمَا مِنُ دَآبَةٍ فِی الْارُضِ اِلَّا عَلَی اللّٰہِ دِرْقُهَا وَ یَعْلَمُ فَمَا مِنُ دَآبَةٍ فِی الْارُضِ اِلَّا عَلَی اللّٰہِ دِرْقُهَا وَ یَعْلَمُ فَمَا مِنْ دَآبَةٍ فِی الْارُضِ اِللَّاعِ اللَّهِ دِرْقُهَا وَ یَعْلَمُ فَمَا مِنْ مَرْت كُرنَ وَالْ كُنَّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ بِسُسِمِ اللّٰهِ السرِّ مُحَمِّنِ الرَّحِیْمِ 0 وَ اِنْ فَمُستَ وَدَعَهَا كُلُّ فِی كِتَابٍ مُّبِینِ بِسُسِمِ اللّٰهِ السرِّ مُحَمِّنِ الرَّحِیْمِ 0 وَ اِنْ فَمُستَ قَدَرَهَا وَ مُستَ وُدَعَهَا كُلُّ فِی كِتَابٍ مُّبِینِ بِسُسِمِ اللّٰهِ السرِّ مُحَمِّنِ الرَّحِیْمِ 0 وَ اِنْ فَقَرَ هَا وَ مُستَ وَدَعَهَا كُلُّ فِی كِتَابٍ مُّبِینِ بِسُسِمِ اللّٰهِ السرِّ مُحَمِّنِ الرَّحِیْمِ 0 وَ اِنْ فَقَرَ الرَّحِیْمِ مَا اللّٰہِ اللّٰ اللّٰ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ وَلَى اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللللّٰهُ الللّٰهُ اللللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الل

شَيْئِ قَدِيْرٌ 0 بِسُمِ اللّٰهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ 0 سَيَحُعَلُ اللّٰهُ بَعُدَ عُسُرٍ يُسُوًا مَاشَآءَ اللّٰهُ كرنے والام بران خدا كے نام سے شروع جورطن و رحم ہے بہت جلد خدائق كے بعد آ مانی عطا كرے گا جواللہ جاہے گا وہ ہوگا

لاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ حَسُبُنَا اللَّهُ وَ نِعُمَ الُوِكِيُلَ وَ اُفَوِّ ضُ اَمُوِى إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالُعِبَادِ

لاَ إِلْهَ إِلاَّ انْتَ سُبُحَافَكَ إِنِّى كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ رَبِّ إِنِّى لِمَا انْزَلْتَ إِلَى السَّا إِلَى السَّالِمِينَ رَبِّ إِنِّى لِمَا انْنَزَلْتَ إِلَى السَّالِمِينَ وَبِي إِنِّى إِنَّا مِنْ السَّالِمِينَ وَمِنْ السَّالِمُ السَّالِمِينَ وَمِنْ السَّالِمُ اللَّهُ السَّ

مِنُ خَيْرٍ فَقِيْرٌ رَبِّ لا تَذَرُنِي فَرُدًا وَ أَنْتَ خَيْرًا الوارِثِيْنَ.

میں اس کی حاجت رکھتا ہوں میرے رہ مجھ کوا کیلانہ چھوڑاور بہترین وارث تو ہی ہے۔

۵_نمازغفیله

۱- نماز مدیمیت

نما زہدیہ میت جونماز وحشت القبر کے نام ہے مشہورے اگرچہ بینما زبطریق ائمہ اطہارٌ مروی نہیں ہے۔اس لئے بعض فقہاءعظام نے اس کے جواز میں اشکال کیا ہے لیکن چونکہ حضرت رسول خداً کی طرف منسوب ہے اس لئے احادیث'' من بلغ'' کے پیش نظر پر جاءمطلوبیت اسکے پڑھنے میں بظاہر کوئی اشکال نہیں ے۔واللہ العالم۔اس نماز کوشیخ تقعمی نے مصباح میں کتاب موجز شیخ ابن فہد حلی سے نقل کیا ہے انہوں نے مرسلا حضرت رسول خداصلی الله علیه و آلبه وسلم سے روایت کی ہے کہ آنخضرت نے فرمایا۔میت برقبر کی پہلی رات سے بڑھ کرکوئی سخت وقت نہیں آتا ۔اس لئے اس رات صدقہ وخیرات دے کراینے مرنے والوں پر رخم کرواورا گرصد قہ نہ دےسکوتو پھرتم میں ہے کوئی شخص بایں طور دورکعت نماز پڑھے پہلی رکعت میں حمر کے بعد آ بیت الکری ایک با راور دوسری رکعت میں سورہ حمر کے بعد سورہ انا انز لنا دیں با راور سلام کے بعد کہے: ﴿ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّ ابْعَثْ ثُوَابَهَا إلى قَبُر فُلاَن ﴾ (يهال ميت كانام لے) يمل کرتے ہی خداوند عالم ایک ہزار فرشتوں کوایک ہزار جا دے کر مرف والے کے باس بھیجنا ہے اوراس کی قبر کو کشادہ کردیتا ہے جبیہا کہ اس روایت کے الفاظ سے ظاہر ہے کہ بینما زصد قد نہ دے سکنے کی صورت میں وارد باس لئے بہتریہ ہے کہ اگر ممکن ہوتو کچھ نہ کچھ صدقہ بھی دیا جائے اور بینما زبھی پڑھی جائے نیز روایت سے یہ بھی ظاہر ہوتا ہے کہ صرف ایک شخص کا بینماز پڑھنا کافی ہے اس لئے احوط بیہے کہ اگر ایک ہے زائد افرا د یر هیس تو بقصد درود نه بره هیس بلکه صرف بقصد رجاء مطلوبیت بجالا نمیں - دوسری روایت میں اس نماز کی تر کیب یوں مروی ہے کہ پہلی رکعت میں حمر کے بعد سورہ قل ھو اللہ احد دو مرتبہ اور دوسری میں حمر کے بعد سورہ الہا تم الزكارُ وسم تبه يراهي جائے اور سلام كے بعد كے: ﴿ ٱللَّهُ مَّ صَلَّ عَلَى مُسَحَمَّدٍ وَ ال مُحَمَّدٍ وَ ابُسعَتْ تُسوَابَهَا إلى قَبُرِ فُلاَن ﴾ ال لئ أفضل يه اكه بردوطريق كمطابق دوبارينماز راهي

۷۔ نماز جعفر طیار ؓ

جس کونماز شبیج بھی کہا جاتا ہے بیہ وہ جلیل المرتنبت نماز ہے جوحضرت رسول خداصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے جناب جعفر طیار "کو فتح خیبر کے بعد تعلیم فر مائی تھی احا دیث میں اس کے بے حساب اجرو ثواب وارد ہیں نیز واردہے کہاول تو بینماز ہر روز پڑھی جائے ، ورنہ ہر ہفتے ورنہ ہر ماہ ورنہ ہر سال ورنہ پوری زندگی میں ایک با ر ضرور رہاھی جائے کیونکہاں کے پڑھنے ہے گناہ معاف ہوجاتے ہیں۔اگر چہ فبیہ''عالج'' کے ذروں اور سمندر کی جھاگ کے ہراہر ہوں نیز اگر چہ بینماز ہرونت پڑھی جاسکتی ہے مگرسب سے افضل ہروز جمعہ حیاشت کا وقت ہے۔اسی طرح اس میں حمد کے بعد ہر سورہ پڑھی جا سکتی ہے مگر افضل ہیہ ہے کہ جار رکعت بدوسلام پڑھی جائے۔ پہلی رکعت میں حمہ کے بعد سورہ زلز ال ، دوسری میں حمہ کے بعد سورہ العادیا ہے، تیسری میں حمہ کے بعد سورہ نصر اور چوتھی میں سورہ تو حیدایک ایک باراس نماز کی اصل خصوصیت تسبیحات کی کثرت ہے۔ بایں طور کہ ہر رکعت میں الحمد كے بعد دوسرى سور ، حتم كرنے كے بعد پندره بارتسبيحات اربعد ﴿ سُنبُ حَانَ اللَّهِ وَ الْحَمُدُ لِلَّهِ وَ لا َ إللهَ إِلَّا السُّلَّهُ وَ السُّلَّهُ الْكُبَوُّ ﴾ بعدا زال ركوع مين، ركوع ہے سرا ٹھانے كے بعد، پہلے بجدے ميں، اس ہے سر اٹھانے کے بعد، دوسر سے بحدے میں اوراس ہے سر اٹھانے اور دوسری رکعت کے لئے اٹھنے ہے پہلے دیں دیں باریمی تسبیحات پڑھی جا کیں پھر دوسری رکعت میں ای طرح عمل کیا جائے حتیٰ کہ دوسرے سجدے ہے سراٹھانے اورتشہد ریاھنے سے پہلے دی با رہی سیج ریھی جائے اور بی کیفیت دوسری دور کا دور کا سور کی ہے اس طرح ہر رکعت میں پچھتر باراورمجموی طور پر تنین سوبا رتسبیجات اربعه پڑھی جانگینگی نیز واجبی وسختی نماز کی طرح اس نماز میں ہر دوسری رکعت کے رکوع سے پہلے قنوت بھی مستحب ہے اگر کسی حالت میں تسبیحات رہ جا کیں یا تم ہو جا کیں تو اس کے بعد دوسری حالت میں ان کی تلافی کی جاسکتی ہے اور اگر سلام کے بعد یا وآ کیس تو ہر جاء مشروعیت ان کی قضا کی جاسکتی ہے نیز بعض روایات ہے ظاہر ہوتا ہے کہاس نما ز کونما زشب یا دیگر شب و روز کے نوافل میں بھی شار کیا جا سکتا ہے نیز جلدی کی حالت میں بغیر تسبیحات ہے بھی پڑھی جا سکتی ہے اور سلام کے بعد جس حال میں عا بتسبيحات كى قفا موسكتى ب-والله العالم-

۸_نمازاستخاره

استخاره كے سلسلے ميں متعدولتم كى نمازي منقول بيں مگرسب سے زياده متند و معتر نماز استخاره ذات الرقاع ہے جس كاطريقه بيہ كه پہلے چھ ير جياں كلصى جائيں تين پر بيمبارت كلصى جائے: ﴿ بِسُسِمِ السُلْبِ السَّرِ عُمارت كلصى جائے: ﴿ بِسُسِمِ السُلْبِ الْعَزِيُزِ الْحَكِيمُ مِلْلان بن فلانة افعل ﴾ اور تين پر بيمبارت كلصى جائے: ﴿ بِسُسِمِ السُّلْهِ الْعَزِيُزِ الْحَكِيمُ فِلان بن فلانة الْعَرِيُزِ الْحَكِيمُ فلان بن فلانة اللهِ الْعَزِيُزِ الْحَكِيمُ فلان بن فلانة الْعَرِيمُ السَّلْمِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيمُ لفلان بن فلانة

لا تفعل ﴾ (فلال بن فلانه كى جگه صاحب استخاره اوراس كى والده كانا م لكها جائے) پھران پرچيوں كؤمسلى كے يہ تھے ركاردوركعت نما زاستخاره پڑھا وربجده بين مرركاكر سوبا رپڑھے: ﴿اَسُتَ خِينُو اللّٰهَ بِوَ حُمَتِهِ خِيرَةً فِي عَافِيَةٍ ﴾ پھرا تھ كربيھ جائے اورا يك با ربيدعا پڑھے: ﴿اَللّٰهُ مَ خِسرُلِكَى وَاخْتَورُ لِي فِي جَمِيعِ فَي عَافِيَةٍ ﴾ پھرا تھ كربيھ جائے اورا يك با ربيدعا پڑھے: ﴿اَللّٰهُ مَ خِسرُلِكَى وَاخْتَورُ لِي فِي جَمِيعِ اللهَ وَالْفَاقِ وَالْفَاقِ وَالْفَاقِةِ ﴾ الله وَالْفَاقِيةِ ﴾ وَالْفَاقِيةِ ﴾ الله وَالْفَاقِيةِ الله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالْفَاقِيةِ الله وَالله وَلّه وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَاله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله

بعد ازاں زیر مصلی ہاتھ لے کران پرچیوں کوخوب ہاہم ملادے اور پھر کے بعد دیگرے نکا لے۔اگر مسلسل وہ تین پر چیاں نکلیں۔جن پر ﴿افعل ﴾ لکھا ہے قوہ کام کرے کہ بہت خوب ہے اوراگر مسلسل تینوں ﴿لا تفعل ﴾ والی پر چیاں برآ مد ہوں تو وہ کام ہرگز نہ کرے کہ بہت بدہ اورا گر مختلف پر چیاں برآ مد ہوں کہ بعض پر ﴿افعل ﴾ اور بعض پر ﴿لا تفعل ﴾ ہوتو پھر چاریا زیا وہ سے زیاوہ پا ﴿ فَعَل ﴾ اور بعض پر ﴿افعل ﴾ اور بعض کر پر چیاں نیا دہ ہوں گ

9_ غماز مديد والدين

یہ نماز کوشب و روز کیل مروفات پڑی جائی ہے گون کی پہنا آفن ہے یہ جورتم ہے کہ اے مغربین کے بعد پڑھنا بہتر خیال کیا جاتا ہے اس کی کوئی حقیقت نہیں ہے اسکے دوطریقے مروی ہیں: (۱) دو رکعت نماز کہل رکعت میں حمد کے بعد وس باریم آیت پڑھے: ﴿ رَبِّ اغْفِر لِنَی وَ لِوَ الِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤُمِنِیْنَ وَ الْمُؤُمِنِیْنَ وَ الْمُؤُمِنِیْنَ وَ الْمُؤُمِنِیْنَ وَ الْمُؤُمِنِیْنَ وَ الْمُؤُمِنِیْنَ وَ الْمُؤُمِنَا کَ الله وردوس کی اعدوس باریم آیت پڑھے: ﴿ رَبِّ اغْفِرُلِی وَ لَوَ اللّه وَ الله وردس کی اعدوس باریم کے بعدوس باریم کے بعدوس باریم کے بعدوس باریم پڑھے: ﴿ رَبِّ الرُحَدَ مُنْ مَا كَمَا رَبَّينِی صَغِیْرًا ﴾ (۲) دورکعت پہلی رکعت میں حمد کے بعد سورہ انا اعطینا کے الکو ٹر ایک بارنیز کی نماز والدین اپنی مرحوم اولا د باراور دوسری رکعت میں حدے بعد سورہ انا اعطینا کے الکو ٹر ایک بارنیز کی نماز والدین اپنی مرحوم اولا د کیا بھی پڑھ سکتے ہیں ان کیلئے افغیل بیہے کہ وہ رات کے وقت پڑھیں۔ (کما ورد عن الصادق النہ کے)

۱۰ نماز وسعت رزق

دورکعت نماز پڑھے۔ پہلی رکعت میں حمد کے بعد سور کانیا اعطیب نک السکو ثو تین ہاراوردوسری رکعت میں حمد کے بعد سور کقل اعوذ ہوب الفلق اور قبل اعوذ ہوب الناس تین تین ہار پڑھے اور بعد ازاں

يَا مَاجِدُ يَا وَاحِدُ يَا كَرِيْهُ اللَّوَجَّهُ إِلَيْكَ بِمُحَمَّدٍ نَبِيٍّكَ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهُ احد رَقَ والحاريكان احوط كرنے والے من نے تيري طرف رخ كياہے تيرے بَي بَنُ رَمَت مُرسَى الله عليه و آله كے وسطے

وَ الِهِ يَا مُحَمَّدُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّى اَتَوَجَّهُ بِكَ إِلَى اللَّهِ رَبِّى وَ رَبِّكَ وَ رَبِّ كُلِّ شَى كُلِّ اللَّهِ يَا مُكِلِّ اللَّهِ وَإِلَى اللَّهِ وَبِي وَ رَبِّ كُلِّ شَى كُلِّ اللَّهِ مَا اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى ال

و استَ لُک اَللَّهُ مَّ اَنُ تُسصَلِّی عَلی مُحَمَّدٍ وَ اَهُلِ بَیْتِ وَ اَسْتَلُک نَفْحَ الله عَلَی مُحَمَّدٍ وَ اَهُلِ بَیْتِ وَ اَسْتَلُک نَفْحَ الله عَلَی الله

كريكمةً مِنُ نَفَحَاتِكَ وَ فَتُحَايَسِيرًا وَ رِزُقًا وَاسِعًا ٱلْمُ بِهِ شَعْشِى وَ ٱقْضِى بِهِ دَيْنى الطاف كريان من سالف خاص كابا مانى كامياني اوروسيع رزق كاسوال ب جس سے ميرى پريثانى دور بواور ميرا قرض اوا بوجائے

SIB السَّعِينَ بِهِ عَلَى هُوَالِي OM

اوراس کے ذریعے اپنے عیال کی کفالت کروں۔

اله نماز دفع سرت وتخق

جوفض عرت وخی میں گرفتار ہووہ ہوقت زوال آفتاب ہایں ترکیب دورکعت نماز پڑھے کہ پہلی رکعت میں سورہ حمد کے بعد سورہ قل ہواللہ احدا یک ہاراور سورہ انسا فصحنا لک فتحا ابتداء سے لے کرینصوک نصوراً عزیزاً تک ایک ہاراور دوسری رکعت میں سورہ حمد کے بعد سورہ قبل ہو اللّٰہ احد اور سورہ اللم نشرح ایک ہارور دوسری رکعت میں سورہ حمد کے بعد سورہ قبل ہو اللّٰہ احد اور سورہ اللم نشرح ایک ہارہ ہے ہرتم کی سختی دور ہو جائے گی۔ بعض ذمہ دارعلماء کا بیان ہے کہ بینماز اس مقصد کیلئے مجرب

۱۲_ نمازطلب حاجت

نماز ہائے طلب حاجت بکثرت ہیں ہم صرف ایک نماز کے تذکرہ پراکتفا کرتے ہیں یہ نماز حاجت شب جعہ یا شب عید قربان میں پڑھی جاتی ہے جو دو رکعت ہے ہر رکعت میں سورہ حمد ایک بار مگر آیت مبار کہ *****

بعدا زاں سرسجدہ میں رکھ کر دوسوم تنبہ یا رب بارب کا ورد کیا جائے بعد ازاں حاجت طلب کی جائے کہ یوری ہوگی۔انٹا ءاللہ العزیز۔

الصماح . مفق ندر كديه نمازي ائد طاهرين عليهم السلام معنقول بين -

(۱۳) نماز برائے ازالہ ہم وغم

حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام ہے مروی ہے کہ آپ نے مسمع ہے فرمایا: اے مسمع! جب تہمیں دنیا کے ہموم وغموم میں ہے کوئی ہم وغم لائق ہوتو اس کے ازالہ کے لیے وضو کرکے کسی مسجد میں جا وَاوروہاں دو رکعت نما زیڑھ کرخدا ہے ہم وغم کے دورکرنے کی دعا کرو۔ چنانچہ خدا فرما تا ہے: ﴿وَاسْتَ عِیْنُ وُا بِالصَّبْرِ وَالصَّلُوةَ ﴾ کہ مشکل وقت میں نماز وروزہ کے ذریعہ ہے خدا ہے ید دطلب کرو۔ (کتاب الدعاوالزیارہ)

(۱۳) نمازطن مهمات SIBTAIN.COM

جب كوئى مشكل پيش آئة و چار ركعت نماز بدوسلام پراهى جائة اور پهلى ركعت بيس الحمد كے بعد سات بار ﴿ حَسُبُنا اللّٰهُ وَ نِعُمَ الُوَكِينُ ﴾ اور دوسرى ركعت بيس الحمد كے بعد سات بار ﴿ حَسُبُنا اللّٰهُ وَ نِعُمَ الُوكِينُ ﴾ اور دوسرى ركعت بيس الحمد كے بعد سات بار ﴿ لَا قُو وَ لَدًا ﴾ اور تيسرى بيس الحمد كے بعد سات بار ﴿ لَا اللّٰهُ وَانْ تَوَنِ آنَا اَقَلَ مِنْ كَ مُنْكَ مَا لا قُو وَلَدًا ﴾ اور تيسرى بيس الحمد كے بعد سات بار ﴿ لَا اللّٰهُ وَانْ اللّٰهُ وَانْ اللّٰهُ مَصِينً مِنَ السَّلْمِينَ ﴾ اور چوتى ركعت بيس الحمد كے بعد سات بار ﴿ وَانْفَوْ صُلُ اَمْ مِنَ اللّٰهِ إِنَّ اللّٰهُ مَصِينً مِنَ السَّلْمِينَ ﴾ اور چوتى ركعت بيس الحمد كے بعد سات بار گاه خداوندى بيس ﴿ وَانْفَوْ صُلُ اَمْ مِنُ اللّٰهِ إِنَّ اللّٰهُ مَصِينً مِن اللّٰهِ عِبَادٍ ﴾ و بعد ازال اپنى عاجت بارگاه خداوندى بيس كرے ۔ (الباقيات الصالحات)

(۱۵)نماز حدیث نفس

حضرت امام جعفرصا دق الطبيرة ہے مروی ہے، فر مایا: کوئی ایبا مؤمن نہیں ہے جسے چالیس دن کے اندر حدیث نفس عارض نہ ہولہذا جب اسے یہ عارضہ (وسوسہ) لافق ہوتو دو رکعت نماز پڑھ کرخدا سے پناہ مائگے۔(مفاتیج) نيز صديث نفس يعنى وسوسته شيطانى سے بَيخ كے ليے اس ذكر كاكر ما بھى مروى ہے: ﴿ لا حَوُلَ وَ لا قُوّةَ اِلّا بِاللّهِ ﴾ - نيز اس مقصد كے ليے اپ اور ہاتھ يجير تے ہوئے يه وردكرا بھى حضرت امام جعفر صادت عليه السلام مے منقول ہے: ﴿ بِسُسِمِ اللّهِ وَ بِاللّهِ مُحَمَّدُ رَّسُولُ اللّهِ وَ لا حَوُلَ وَ لا قُوَّةَ اِلّا بِاللّهِ اللّهِ اللّهِ وَ لا حَوْلَ وَ لا قُوَّةَ اِلّا بِاللّهِ اللّهِ اللّهِ عَلَيْهِ مَا اللّهِ عَلَيْهِ اللّهِ عَلَيْهِ مَا اللّهِ عَلَيْهِ مَا اللّهِ عَلَيْهِ اللّهِ عَلَيْهِ اللّهِ عَلَيْهِ اللّهِ عَنِينَى مَا اَحْذَرُ ﴾ - (ايفاً)

(۱۲)**نماز استغاثه بخدا**:۔

کتاب مکارم الاخلاق میں بینماز مروی ہے کہ سوتے وقت پاک برتن میں پاک پانی بھر کررکھواور

پاک کیڑے ہے اس کا مند بند کر دو اور جب رات کے آخری حصد میں نماز تہجد کے لئے اٹھوتو اس پانی ہے تین

گونٹ پانی پیواور ہا تی ہے وضو کرو۔ اور قبلہ روہو کرا ذان وا قامت کہد کر دو رکعت نماز پڑھو۔ اور سورہ حد کے

بعد جوسورہ چاہو پڑھو گررکوع میں جاکر ۲۵ مرتبہ ﴿ یا غیبات الْمُسْتَغِیْشِیْنَ ﴾، رکوع ہے سرا ٹھاکر ۲۵ مرتبہ
پھر سجدہ میں جاکر یہی ذکر ۲۵ وفعہ، بعد از اس سرا ٹھاکر پچیس ہار پھر دوسری رکعت بھی اس طرح پڑھواس ذکر کی

مجموعی تعداد تین سو (۲۰۰۰) موجا کے پھرتشہد و جلام پڑھ کراپنا میں مان کی طرف بلند کرو۔ اور تمیں ہار کہو:

﴿ وَمِنْ الْعَبْدِ اللّٰذَ لِیُسِ إِلَى الْمَوْلَى الْمَجَلِیْلِ ﴾ پھر خدا ہے اپنی حاجت طلب کروجو ضروراور جلد پوری

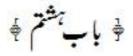
ہوگی انتا عالیٰہ۔

(۱۷)<mark>نماز طلب فرزند</mark>:۔

حضرت امير عليه السلام معمروى ب، فرمايا: جب خدا من فرزند طلب كرما چا بهوتو كامل وضوكر كم مكمل دوركعت نماز پر هواور سجده يش مرركه كراكهتر (الا) با راستغفار پر هو: ﴿اَسْتَ عُفِورُ اللّٰهَ رَبِّي وَ اَتُوبُ اللّٰهَ وَبِي وَ اَتُوبُ اللّٰهَ وَبِي وَ اللّٰهِ وَاللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰم

(۱۸)**نماز اعرابی:**۔

جو شخص بعد مکانی وغیرہ کی وجہ سے نماز جمعہ نہ پڑھ سکے تو اس کے ثواب کو حاصل کرنے کے لیے مخصوص طریقہ پر دس رکعت نماز وارد ہوئی ہے جسے نماز اعرابی کہاجا تا ہے۔ فیر اجع۔



چنر بدنی بیاریال اوران کاجسمانی وروحاجی علاج

یہ ہات کسی وضاحت کی مختاج نہیں ہے کہ ع قید حیات و بندغم اصل میں دونوں ایک ہیں الہذا راحت و رنج اور خوشی وغم اور صحت و تندری اور بیاری و لا چاری اس عالم آب وگل کا ایسا خاصہ ہے جو بھی اس سے جدا نہیں ہوتا ہے

موت سے پہلے آ دی غم سے نجات بائے کیوں؟

بہت ی معتبر صدیثوں میں واردہوا ہے کہ سب سے دیا دہ خت ہلاوہ معینہ انبیاءً کی ہوتی ہے۔ان
کے بعد جو شخص جس قدرا بمان واعمال میں نیا دہ ہوگا ای قدراس کی بلاو آ زمائش بخت ہوگی ۔اورجس قد را بمان
وعمل کمزور ہوگا ای قدراس کی تکلیف ومصیبت کم ہوگی ۔ (علیۃ المتقین) حضرت امام محمد باقر الطبی ہے مروی
ہے، فرمایا: ایک رات کا بخار ایک سال کی عبادت کے برابر ہے ۔اور حضرت امام جعفر صادق الطبی ہے مروی
ہے، فرمایا: بند کا مؤمن کا ایک رات کا بخاراس کے اللے بچھلے گنا ہوں کا کفارہ ہوجا تا ہے۔(ایصاً)

بعض اخبار و آثار میں وارو ہے کہ ایک نبی بیار ہوئے۔ انہوں نے بارگاہ خدا میں عرض کیا: یا اللہ!

یماری کس کی طرف ہے ہے؟ ارشاہ ہوا: میری طرف ہے! عرض کیا: شفاء کس کی جانب ہے ہے؟ ارشاہ ہوا:
میری جانب ہے! عرض کیا: پھر میں طبیب کی طرف رجوع نہیں کروں گا! ارشاہ ہوا: جب تک طبیب کی طرف
رجوع نہیں کرو گے تب تک میں بھی شفاء نہیں دوں گا۔ (احسن الفوائد بحوالہ انواز نعمانیہ) کیونکہ عالم اسباب میں
اسباب کا عارضی سہارالیما پڑتا ہے۔ لہذا خدا نے ہر ہر جسمانی بیاری کا مادی وجسمانی اور روحانی علاج مقرر کیا
ہے۔ جس طرح دواؤں میں بجعل اللی تا شیر ہے ای طرح قرآن اور دعاؤں میں بھی تا شیر ہے ۔

قرآن تو قرآن دعاؤں میں ہے تا ثیر جونہیں کھلتے یہ عامل کی تفضیر!

بے شک قرآن کتاب ہوایت ہے۔ تعویز گذہ کی کوئی کتاب نہیں ہے گر بموجب عموم ﴿ وَنُسْنِوْ لَ مِنَ الْمُعُونَ وَ مَعَادُ اللهُ مُ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اللهُ الله

مختف بياريول كيلي عموى ادعيه وادرا دكاتذكره

چنانچہم پہلے ان چند عمومی اعمال وا دعیہ اور اذکار کا تذکرہ کرتے ہیں جو مختلف بیاریوں کے لیے مفید و کارآمد ہیں اور اس کے بعد مخصوص بیاریوں کے لیے مخصوص اعمال و او را دکا تذکرہ کریں گے انتاء اللہ تعالیٰ۔ (۱) عمل گیند م:۔

جوکہ حضرت امام جعفر صادق الظلیٰ ہے منقول ہے۔ جو آپ نے اپنے صحابی داؤد کو تعلیم دیا تھا اور وہ اس کے مطابق عمل کرنے سے صحت یا ہب ہو گئے تھے۔ بیار کو چاہیئے کہ چت لیٹ جائے اور ایک صاع گندم (قریباً دوسیر ۱۲ چھٹا نک اور چارتو لہ) لے کرا ہے سینہ پر بھیر دے اوراس وقت بیدعا پڑھے:

اَلَـُلْهُا مَّمَ اِنِّى اَسُسَّلُکَ بِساسُدِ مَکَ الَّذِی اِذَا سَسَّلَکَ الْمُضْطَرُّ کَشَفْتَ مَا بِهِ مِنُ ضُرِّ اے معبودا جھے سے سوال کنا ہوں ہواسطہ تیرے اس نام کے جس کے ذریعے کوئی پریثان حال سوال کرے تو اُس کی تکلیف دور وَ مَكَنْتَ لَهُ فِي الْأَرُضِ وَ جَعَلْتَهُ خَلِيفَةَكَ عَلَى خَلْقِكَ أَنْ تُصَلِّى عَلَى مُحَمَّدٍ كَنَا إِن اللهُ فِي الْأَرُضِ وَ جَعَلْتَهُ خَلِيفَةَكَ عَلَى خَلْقِكَ أَنْ تُصَلِّى عَلَى مُحَمَّدٍ اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ اللهُ عَلَى عَل

وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَ أَنُ تُعَافِيَنِي مِنُ عِلَّتِي.

ابل بیتٔ پراورمجھ کواس بیاری ہے صحت عطافر ما۔

بعدا زاں سیرھاہوکر بیٹھ جائے اور دانوں کوا کٹھا کرے اور پھریہی دعا پڑھے اور ان دانوں کے جار حصے کر کے ایک ایک مدایک ایک مسکین کو دے دے اور پھریہی دعا پڑھے۔ شافی مطلق اسے شفا عطا فر مائے گا انٹا ءاللہ۔ (الکافی)

(۲) عمل گوسفندو کبوتر:۔

اس سلسلہ میں کو مفند اور کبور کا مخصوص طریقہ پر ذیج کرنا اور مسکینوں کو کھلانا بھی کہا جاتا ہے کہ صحت کے لیے مجرب ہے مگر چونکہ اس کا وہ مخصوص طریقہ جو کتب ادعیہ میں مذکورہے کسی معصوم سے منقول نہیں ہے لہذا

اے یہاں درج آئیں کیا جاتا ۔ SIBTAIN COM

حضرت امام جعفر صادق الطبی ہے منقول ہے، فرمایا: قرآن مجید کے کسی مقام ہے بیار پر سوآ بیتیں پڑھواور پھر سات مرتبہ کہو: ﴿ يَا اَللَّهُ ﴾ (پھر بیار کی صحت کے لیے دعا کرو)۔ (مجمع الحسنات) حضرت امام موک کاظم الطبی ہے منقول ہے کہ اگر کسی بلا ومصیبت کا اندیشہ ہوتو قرآن مجید کے کسی مقام ہے ایک سوآ بیتیں پڑھ کر تین بارید دعا پڑھو: ﴿ اَ اَلْهُ مَا اَ اَكُشِفُ عَنِي الْبَلاءَ ﴾ ۔ (ایضاً)

انہی حضرت الطبی اسے منقول ہے کہا گر کوئی شخص کسی بیاری میں مبتلا ہوتو اپنے گریبان میں منہ ڈال کر سات مرتبہ سورۂ حمد پڑھے اور اگر اس سے صحت حاصل نہ ہوتو پھر ستر بار پڑھے انثا ءاللہ صحت یاب ہوجائے گا۔ (کتاب مکارم الاخلاق)

(*)ھر قسم کے دردو الم کے ازالہ کی عمومی دعائیں:۔

(۱) حضرت امام محمد باقر الظیلائے مروی ہے،فر مایا: جس شخص کواپنے جسم میں کسی قتم کا کوئی دردوالم لائل ہوتو اسے چاہیئے کہ خلوص نبیت کے ساتھ بید دعا پڑھےاور مقام درد پر ہاتھ پھیرے: اَعُوٰذُ بِعِزَّةِ اللَّهِ وَ قُدُرَتِهِ عَلَى الْاشْيَاءِ أُعِيدُ نَفُسِى بِجَبَّارِ السَّمَاءِ أُعِيدُ

نَفُسِى بِمَنُ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ دَاءٌ أُعِيدُ نَفُسِى بِالَّذِى اسْمُهُ بَرَكَةٌ وَشِفَاءً.

جب و ہ ایسا کرے گاتو اے کوئی در دوالم ضرر نہیں پہنچائے گا۔ (بحا رالانوار)

(۲) حضرت امام جعفر صادق الظليلائے مروی ہے، فر مایا: جس بند ہ مؤمن کوکوئی تکلیف پنچے تو اسے چاہیے کہ خلوص نبیت کے ساتھ میہ آبیت پڑھتا جائے اور مقام تکلیف پر ہاتھ بھی پھیرنا جائے ۔اس تکلیف سے نجات یا جائے گاانشا ءاللہ۔(ایضاً)

وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرُانِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحُمَةٌ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا يَزِيُدُ الظَّلِمِيُنَ اللَّ اعتمادة من النَّالِمِينَ النَّالِ مِن اللَّهِ مِنْ اللَّهِ وَالْحُمَةُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا يَزِيدُ الظَّلِمِينَ اللَّهُ خَسَارًا ـ

اورہم جنوبل قرآن کے سلسلہ میں وہ بچھینازل کررہے ہیں جوائل الدان کے لئے شفاہ اور رحت ہےاور ظالموں کیلیے شمارہ کے سوا ورکسی چیز میں اضافہ میں کرنا۔

(۳) حفرت امام جعفر صادق القلیم ہے منقول ہے، فرمالا: حض سے رہول خدا ہے مروی ہے فرمالا کہ جس شخص کوکوئی بیماری ہوتو وہ نمازی کے بعد چالیس بازیدور دکرے اور بیماری کی جگہ پر برابر ہاتھ پھیرنا جائے۔خداوند عالم اسے صحت عطافر مائے گا:

بِسُمِ اللّٰهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ ٱلْحَمَٰدُ لِللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ حَسُبُنَا اللّٰهُ وَ نِعُمَ الُوَكِيْلُ فَدَاكَ مَامِ سے جو بڑا رقم والا مهريان ہے تم ہے اللہ كے ليے جو جانوں كا رب ہے ہميں اللہ كافى ہے وہ بہترين

تَبَارَكَ اللَّهُ أَحُسَنُ الْحَالِقِينَ وَلا حَولَ وَلا فُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ - (أَحَ الدعوات) كارماز إلا كت بالله جوسب المجافالق باورتين بحركت وقوت مُرجوفدائ بلندوي رك سب-

(۴) نیز حضرت امام جعفر صادق القلیلائے مروی ہے ،فر مایا: جس شخص کو بدن کے کسی حصد میں در دہو تو وہ وہاں ہاتھ رکھ کر کے: ﴿ بِسُسِمِ اللّٰهِ ﴾ پھراس جگد پر برابر ہاتھ پچیسرتا جائے اور بید عاپڑ ھتا جائے سات ہار ایسا کرے شفاء یائے گاانشا ءاللہ۔

اَعُودُ بِعِزَّةِ السَّلِهِ وَ اَعُودُ بِعَدرةِ اللَّهِ وَ اَعُودُ بِجَلالِ اللَّهِ وَ اَعُودُ بِعَظَمَةِ اللَّهِ وَ اَعُودُ فَ بِعَلالِ اللَّهِ وَ اَعُودُ اللَّهِ وَ اَعُودُ اللَّهِ وَ اَعُودُ اللَّهِ وَ اَعُودُ اللهِ وَ اللهُ وَ اللهِ وَ اللهِ وَ اللهُ وَ اللهُ وَ اللهُ وَ اللهُ وَ اللهُ وَ اللهِ وَاللهِ وَاللهُ وَاللهِ وَاللهُ وَاللهِ وَاللهُ وَاللهِ وَاللهُ وَاللهِ وَاللّهُ وَاللّهِ وَاللّهُ وَاللّهِ وَاللّهِ وَاللّهِ وَاللّهُ وَاللّهِ وَاللّهِ وَاللّهِ وَاللّهِ وَاللّهُ وَاللّهِ وَاللّهِ وَاللّهِ وَاللّهُ وَالللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَال

بِ جَسَمِ عِ اللّٰهِ وَ اَعُودُ بِرَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَ اَعُودُ بِاَسُمَاءِ اللّهِ مِنُ إِنَّا اللّهِ مِنْ إِنَّا اللّهِ مِنْ إِنَّا اللهِ مَنْ إِنَّا اللهِ مَنْ إِنَّا اللهِ مَنْ اللهِ عَلَيْهِ وَ آلِهِ فَي اور بِنَاهُ لِيمًا اللهِ عَلَيْهِ وَ آلَهِ فَي اور بِنَاهُ لِيمًا اللهِ عَلَيْ فَي اللّهِ عَلَيْهِ وَ آلَهِ فَي اور بِنَاهُ لِيمًا اللهِ عَلَيْ فَي اللّهِ عَلَيْهِ وَ آلَهِ فَي اور بِنَاهُ لِيمًا اللهِ عَلَيْهُ فَي اللّهِ عَلَيْهِ وَ آلَهُ فَي اور بِنَاهُ لِيمًا اللهِ عَلَيْهِ وَ آلِهُ فَي اللّهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ فَي اللّهُ عَلَيْهِ وَ آلِهُ فَي اللّهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ فَي اللّهُ عَلَيْهِ وَ آلِهُ فَي اللّهُ عَلَيْهُ وَ آلِهُ فَي اللّهُ عَلَيْهُ وَ آلِهُ فَيْ اللّهُ عَلَيْهُ وَ آلِهُ فَي اللّهُ عَلَيْهُ وَ آلِهُ فَا عَلَيْهِ وَا اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَا الللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَالّا اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عِلْمُ اللّهُ عَلَيْهُ وَلّهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَاللّهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ

شَرِّ ما أَحُذُرُ وَ مِنْ شَرِّ ما أَخَافُ عَلَى نَفْسِى (مَفَاتِّ الجَان) شَرِّ ما أَخُاف عَلَى نَفْسِى (مَفَاتِّ الجَان) المُركر بس الى جان كے ليد درنا اور خوف كھانا ہوں۔

(۵) حضرت امام رضا عليه السلام عمروى ب، فرمايا: برقتم كے درداد ريمارى كے ازاله كے ليے

يماريه دعايزه:

يَا مُنْزِلَ الشِّفَاءِ وَ مُذُهِبَ الدَّاءِ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آلِهِ وَ ٱنْزِلُ عَلَى وَجُعِى الشِّفَاءَ.

اے شفا کے مازل کرنے والے اورا سے بیاری کے دور کرنے والے رحمت فرما محمد اوران کی آل پر اور میرے اس درد کی شفا مازل کر۔

(الباقیات الصالحات) (نوٹ): ۔ اوراگر کوئی مخص کسی دوسرے بیار کے لیے بیددعا پڑھے تو ﴿عَسَلَسِی

وَجُعِي﴾ كَي بَهِا عُرُعَلْنِي وَجُعِهِ ﴾ يا ﴿عَلْنِي وَجُعِهَا ﴾ يؤهـ

(۱) حضرت امام جعفر صادق القائل ہے منقول ہے، فرمایا: جس شخص کے بدن میں کسی تنم کا کوئی در دہو تو و در د کی جگہ پر ہاتھ رکھ کرسات مرتبہ یہ کیے اوراس پر ہاتھ پھیرنا جائے:

الله وَ اللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَا اللهِ وَاللهِ وَاللهُ وَاللهِ وَالللهِ وَالللهِ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهِ وَاللهِ

بدن كى مختلف مخصوص بياريوں كيليج مخصوص ادعيه وادراد

(۱) سرکے درد کیلئے:۔

(۱) حضرت امام محمد باقر الطبي سے مروى ہے كہ جس كے سر ميں درد ہووہ سر ير ہاتھ چيرانا جائے اور

سات مرتبه بيده عايره هتا جائے:

اَنْحُودُ بِاللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ مَسَكُنَ لَـهُ مَـا فِي الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ وَمَا فِي السَّمْوَاتِ وَ الْاَرْضِ پناہ لیتا ہوں خدا کی جس کے عم ہے ہر چیز تھیری ہوئی ہے جو تھی و تری آسانوں اور زنین میں ہے

وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ - (الباقيات الصالحات) اوروه ينفوالاجان والاب -

ایعنداح: مخفی ندرے کہ کان کے در دکے لیے بھی ای دعا کا سات بار پڑھناوار دے۔ (۲) حضرت امام جعفر صادق القایلائے ہے منقول ہے ، فر مایا : جس شخص کے سر میں در دہویا اس کا پیٹا ب بند ہوتو در دکی جگہ رہے ہاتھ رکھ کریہ کہے :

السُّكُنُ سَكَّنُةُ كَ بِالَّذِي سَكَنَ لَهُ مَا فِي اللَّيْلَ وَ النَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ - (صة التين)

(۳) حضرت امام محمد با قرائظ یکا سے منقول ہے کہ در دسر کے ازالہ کے لیے کسی کاغذیر بید دعا لکھ کربطور تعویذ سریر با ندھی جائے دردزائل ہو جائے گا انشاءاللہ تعالیٰ ۔ دعابیہ ہے:

اَللُّهُمَّ إِنَّكَ لَسُتَ بِاللهِ اِسْتَحُدَثُناهُ وَلا بِرَبِّ يَبِينُهُ ذِكُرُهُ وَلا مَعَكَ شُرَكَاءُ يَقُضُونَ

مَعَكَ وَلا كَانَ قَبُلَكَ اللهُ نَدُعُوهُ وَ نَتَعَوَّدُ بِهِ وَ نَتَضَرَّعُ اللَّهِ وَ نَدُعُكَ وَلا أعانك

SIBTAIN.COM عَـلَى خَـلَقِنا مِنْ اَحَدٍ فَنَفَكَ فِيْكَ لا اِللهَ اِلَّا اَنْتَ وَحُدَكَ لا شُرِيُكَ اَكَ عَافِ

فُلانَ بُنَ فُلانَةٍ (يهان مريض اوراس كان كان كان كانم الساجاء) و صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ أَهُلِ بَيْتِه ﴾ ـ (ايضاً)

دردِ شقیقہ (آ دھاسیسی کے درد) کیلئے

(۱) حضرت امام محد با قرائظ الله سے مروی ہے ، فرمایا : جس طرف درد ہواس پر ہاتھ رکھ کرتین بار یہ پڑھو: یَسا ظَساهِ رَّا مَسوُ جُسوُدًا وَ یَسا بَساطِئًا غَیْسُرَ مَفْقُودٍ اُرُدُدُ عَلَی عَنْدِ کَ الطَّعِیُفِ اَیادِیُکَ

الْجَمِيْلَةَ وَ اَذُهِبُ عَنْهُ مَا بِهِ مِنْ اَذًى إِنَّكَ رَحِيْمٌ وَدُودٌ قَدِيْرٌ ﴾ - (كتاب الدعاو الزياره)

(٢) يد دعالطورتعويذ لكه كرسر كاس طرف باندهے جس طرف ورد بو: بِسُسِمِ اللُّسِهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ بِسُمِ اللَّهِ مِنَ الْآرُضِ اِلَى السَّمَاءِ وَكَانَ هَبَطَ جِبُرَئِيُلُ فَسَاسُتَقَبَلَهُ الْآجُدَا فَقَسَالَ آيُنَ تُرِيُدُ قَالَ اَذُهَبُ إِلَى الْإِنْسَانِ فَاكُلُ شَحْمَ عَيُنَيُهِ وَ ٱشُرِبُ مِنُ دَمَهِ فَقَالَ بِاللَّهِ الَّذِي لَا إِلَّهَ إِلَّا هُوُ لَا تَــذُهَـبُ إِلَـى الْإِنْسَــانِ وَلا تَــأُكُلُ شَحْمَ عَيُنيُــهِ وَلا تَشُرِبُ مِنُ دَمِــهِ آنَــا الرَّاقِيُ وَاللُّهُ الشَّافِيُ وَ صَلَّى اللُّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ اَهُلَبَيْتِهِ ﴾ ـ (مكارم الاخلاق) (۳) کان کے درد کیلئے: اکم تفلا کے دی وردوارد ہے جو ای اور دردم سے سلسلہ میں كَمَا جَاچِكَا بِ يَعِنَ ﴿ أَعُولُهُ بِاللَّهِ الَّذِي سَكَّنَ لَهُ مَا فِي الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ ﴾ ـ (٣) بھر سے پن كىلئے: -كان بر باتھ ركھ كے سورة حشركى درج ذيل آيات براھ: لَوُ ٱنْنَزَلْنَا هَٰذَا الْقُرُانَ عَلَى جَبَلِ لَّرَايُتَهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنُ خَشْيَةِ اللَّهِ وَ تِلُكَ اگر ہم اس قرآن کو کئی پہاڑ پر نا زل کرتے تو تم و کچھتے کہ وہ خدا کے خوف سے جنگ جانا ادریاش باش ہو جانا ادریہ مثالیں ہم اس لئے الْآمُشَالُ نَضُرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ٥ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَآ اِللَّهِ الَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ لوكوں كيلتے بيا ن كرتے بين t كه وه غور و فكر كرين وى وه الله ب جس كے سواكو فى الدنيين ب ہر غائب اور حاضر كا جاتے والا ب وَ الشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحُمَانُ الرَّحِيْمُ ٥ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَآ اِلَّهَ الَّا هُوَ ٱلْمَلِكُ الْقُدُّوسُ (اور) وہی رطن ورجیم ہے۔وہی اللہ ہے جس کے سواکوئی الدنہیں ہےوہ (حقیقی کا وشاہ، (ہرعیب سے) مقدس (یاک) بسر ایا سلامتی ،اس و امان السَّلامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيُمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبُحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشُركُونَ ٥ وين والاء تلهباني كرف والاء غالب آف والا زورا ور (ما سركتول كوزير كرف والا) اوركبرما في ويرد افي والا ب(اور) الله اس شرك سے باك ب جو

هُوَ اللّٰهُ الْنَحَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسُمَآءُ الْحُسُنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمُواتِ وَكَرَ تَيْنِ دوى الله (برجِز؟) فَيك امَادَ حَصَمَط بِنْ بِيراكِرْ فِوالا (وجود مِن لا فِي والا) اور صورت كري كرف والا جاى كيلے

وَالْاَرُضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِينُمُ - (الباقيات الصالحات)

ا بیھے میں (اور)ای کی شیخ کرتی ہے ہروہ چیز جوآ سانوں میں ہے اور جوز مین میں ہے اوروہ غالب آئے والا (اور) یو انتخب والا ہے۔

(a) دانت کے درد کیلئے:۔

(۱) حضرت امیر الظی اسے مروی ہے کہ جس کو دانت میں در دہو وہ پہلے مقام ہجو دیر ہاتھ پھیرے اور پھر دانت پر ہاتھ پھیرتے ہوئے میہ پڑھے:

بِسُمِ اللَّهِ وَالشَّافِي اللَّهُ وَلا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ـ

خداکے نام کے ساتھا وراللد شفا دینے والا ہے اور ٹیل حرکت وقوت مگر جو بلند و ہز رگ خدا ہے۔

(۲) نیز دانتوں کے درد کے ازالہ کے لیے سورۂ حمر، سورۃ الفلق ، سورۃ الناس اور سورہ تو حید پڑھے

اور ہر سورہ کے ساتھ ﴿ بِسُسِمِ اللّٰهِ الرَّحْ مَنِ الرَّحِيْمِ ﴾ برا ھے اور پھر ہے:

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ وَلَهُ مَا سَكُنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيمُ قُلْنَا

خدا کے نام سے جو بردا رحم والامہر بان ہے اور ای کے لیے ہے جو رات اور دن میں گھرا ہوا ہے اور وہ سننے والا ہے ہم نے کہا

يَا نَارُ كُونِي بَرُدًا وَ سَلامًا عَلْى إِبْرَاهِيْمَ وَ اَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْآخُسِرِيْنَ

اے آگ ایرائیم کیلئے مختذی اور سلامتی والی ہو جا انہوں نے اسے فریب دینا جاہا تو ہم نے ان کو زیوں حال کر دیا

نُوُدِيَ اَنُ بُورِكَ مَنُ فِي النَّارِ وَ مَنُ حَوْلَهَا وَ سُبُحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِيُنَ ﴾ -

ندا ہوئی کہ بابرکت ہے وہ جو آگ میں ہے اور جو اس کے اطراف میں ہے اور باک ہے اللہ جو جہانوں کا رب ہے۔

اس ك بعد كم: ﴿ اللَّهُ مَّ يَا كَافِيًا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّالا يَكُفِي مِنْكَ شَيْءٌ اِكُفِ عَبُدَكَ

اے معبود اے جو ہر چیز کی نببت کافی ہے اور کوئی چیز تیری نببت کافی نہیں کفایت اینے بندے

وَابُنَ اَمَتِكَ مِنْ شَرّ مَا يَخَافُ وَ يَحُذُرُ وَ مِنْ شَرّ الْوَجَعِ الَّذِي يَشُكُوهُ اللَّهُك.

اور اپی با ندی کے بیٹے کی جس کے شر سے خوف کھاٹا اور ڈرٹا ہے اور اس درد سے جس کی شکایت تھے سے کر رہا ہے۔

نیز مردی ہے کہ چھری یا تھجور کا پتالے کراس جگہ پر چھیرے جہاں در دہواور سات مرتبہ کے:

بِسُسِمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِينِمِ بِسُمِ اللَّهِ وَ بِاللَّهِ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ وَ إِبُواهِيمَ خَلِيْلُ اللَّهِ فداكِنام ع جويزارَم والام ران عناكمام عندائ ذات ع مُمَّذاك رسول بين اورايرا يم فداك ع دوست بين اعداد من الله الله من الله من

اُسُكُنُ بِالَّذِي سَكَنَ لَهُ مَا فِي الَّيُلِ وَالنَّهَارِ بِإِذُنِهِ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ _(الباقيات الصالحات) وردرك جاس كِمَّم ب جس كاذن ب مات دن من مرجز تُمْهري مونَى باوروه برجز برقدرت ركمّا بـ

(۱) درد چشم کے ازالہ کیلئے:۔

(۱)حضرت امیر المؤمنین الظیار سے مروی ہے،فر مایا: جبتم میں ہے کسی شخص کو دردچیثم کی تکلیف ہو تو وہ اس پر آیۃ الکری پڑھے اور دل میں بیہ یقین رکھے کہوہ ٹھیک ہو جائے گاتو صحت یاب ہو جائے گاانٹاء اللہ۔(کتاب الدعا والزیارہ)

(۲) آیت الکری پڑھنے سے پہلے یا اس کے بعد آنکھ پر ہاتھ پھیر تے ہوئے بید دعاپڑھی جائے: اُعِیدُ نُورَ بَصَرِی بِنُورِ اللّٰهِ الَّذِی لاَ یُطُفَاءُ۔ اُس اِن آنکھوں کے نور کوفدا کے نور کی جات ہیں دیتا ہوں جو بھتا تھیں۔ (۳) نماز منح اور مغرب کے بعد بید دعائز ہے:

اَللْهُم إِنِّى اَسْتُلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ عَلَيْكَ أَنُ تُصَلِّى عَلَى مُحَمَّدٍ الله مُحَمَّدٍ عَلَيْكَ أَنُ تُصَلِّى عَلَى مُحَمَّدٍ الله مَ الله عَلَى مُحَمَّدٍ الله عَلَى الله عَلَمَ الله عَلَم عَلَم الله عَلَم عَلَم عَلَم الله عَلَم عَلَم عَلَم عَلَم عَلَم عَلَم عَل

وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَّانُ تَحْعَلَ النُّوْرَ فِي بَصَرِى وَ الْبَصِيْرَةَ فِي دِيْنِي وَ الْيَقِيْنَ فِي و آل مُمَّ رِدور بِهِ كَد مِيرِى آجُمُون مِن روْنَ قرار دے ميرے دين مِن سجھ عطا كر ميرے ول مِن

قَـلُبِـیُ وَالْاِنْحُلاَصَ فِـیُ عَـمَـلِـیُ وَ السَّلاَمَةَ فِـیُ نَـفُسِـیُ وَ السَّعَةَ فِیُ رِزْقِیُ وَ الشَّكُرَ ایتین پیرا فرا ممل میں فلوں دے میرے دل کو مطمئن رکھ میرے رزق میں کثارگ دے اور جب تک

لَکَ اَبَدًا مَّآ اَبُقَیْتَنِی ـ

زندہ ہوں مجھے اپناشکر گزار بنائے رکھ!

(٤) لقوہ کے ازالہ کیلئے:۔

مکارم الاخلاق میں مذکورے کہ جس شخص کولقو ہ کی تکلیف ہوو ہ دو رکعت نماز پڑھ کر اپنے منہ پر ہاتھ

پھیرتے ہوئے حضرت پیغمبر اسلام صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے نوسل ہے خدا سے شفا طلب کرےاور تین مرتبہ بیہ کے:

بِسُمِ اللّٰهِ أَحَرِّ جُ عَلَيُكَ يَا وَجُعُ مِنُ عَيْنِ إِنْسِ اَوُ عَيْنِ جِنِّ اُحَرِّ جُ عَلَيُكَ بِالَّذِئ اتَّخَدَ إِبْرَاهِيهُمَ خَلِيُلاً وَ تَكَلَّمَ مُوسِلى تَكْلِيُمًا وَ خَلَقَ عِيسْلى مِنُ رُوحِ الْقُدْسِ لَمَّا هَدَأْتَ وَ طَفَئْتَ كَمَا طُفِئتُ نَارُ إِبْرَاهِيُمَ خَلِيْلِ اللَّهِ ﴾ ـ

(A) مرگی کے ازالہ کیلئے:۔

(۱) مروی ہے کہ حضرت امام رضالظای نے مرگی کے ایک مریض کو دیکھا جو ہے ہوش پڑا تھا۔ آپ انظیں نے پانی کاایک جام طلب فر ما کراس پرسورۂ حمد، سورۂ فلق اور سورۂ والناس پڑھی اور حکم دیا کہ بیہ پانی مریض کے سراور چیرہ پرچیڑ کا جائے چنا گچرجب ایسا کیا گیا تو وہ مجھی ہوڑ گئی گئی۔ آپ نے اس سے فر مایا: اب مجھے بھی مرگی کا دورہ نہیں پڑے گا۔ (مجمع الحسنات)

(٢) حضرت امير الظيرات منقول ٢ كهرگي والے خص پريدوعاروهي جائے:

عَزَمُتُ عَلَيُكَ يَا رِيْحُ بِالْعَزِيُمَةِ الَّتِي عَزَمَ بِهَا عَلِيُّ ابُنُ اَبِي طَالِبٍ عَلَيْهِ السَّلأُمُ

وَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللُّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ وَسَّلَمَ عَلَى جِنِّ وِ ادِى الصَّفُرَاءِ وَ اَجَابُوُا وَ

اَطْاعُوْا لَـمًا اَجَبُتِ وَ اَطَعُتِ وَ خَرَجُتِ عَنُ فلان بن فلانة ﴾ ـ (علية المثنين)

(٣)مروى ٢ كم حفرت امام محمر باقر الفيلان فحد بن بارون كے ليے يتعويذ لكها تها:

بِسُمِ اللَّهِ وَ بِاللَّهِ وَ إِلَى اللَّهِ وَ كَمَاشَاءَ اللَّهُ وَ أُعِيدُهُ بِعِزَّةِ اللَّهِ وَ جَبَرُوتِ اللَّهِ

وَ قُدُرَدِةِ اللَّهِ وَ مَلَكُوْتِ اللَّهِ هَذَا الْكِتَابُ اَجُعَلُهُ شِفَاءً مِّنَ اللَّهِ لفلان بن فلان

عَبُدِكَ وَ ابُنِ اَمَةِكَ عَبُدِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلْى مُحَمَّدٍ وَ آلِهِ ﴾ - (الكافي)

(۴) اس مرض کے لیے سورہ رحمٰن کالکھ کر باندھنا بھی مفید ہے۔ (مجمع الحسنات)

(٩) دردِ سينه کيلئے:

(۱) حضرت رسول خداصلی الله علیه و آله وسلم ہے مروی ہے کہ ایک شخص نے آپ سے سیند کے دردی شکایت کی۔ آپ نے فرمایا: قرآن مجید کے ذریعہ سے خدا سے شفاء طلب کر۔ چنانچ خدا فرما تا ہے کہ قرآن شفاء لما فی الصدور ہے۔ (الکافی)

(۲) مروی ہے کہ در دسینہ کے لیے بیا آبت بڑھی جائے:

وَإِذُ قَسَلْتُ مُ نَـ فُسُكُ الْكَادُرَةِ ثُكُمُ فِيْهِ } وَاللَّكُهُ مُخُوجٍ مُكَّ كُنتُ مُ تَكْتُمُ وَنَ

اور(وہ وقت یا وکرو) جب تم نے ایک شخص کوئل کرڈالاقعا۔اور پھراس کے بارے میں باہم جنگڑنے گئے (ایک دوسرے پر قبل کا الزام نگانے گئے) اور للد اس

فَــقُــلُـنَــا اصُـرِبُــوهُ بِهَ عُضِهَا كَـذَٰ لِكَ يُـحُـي الـلُّــةُ الْـمَـوُتُلَى

چیز کوخاہر کرنے والاقعاجے تم چھپار ہے تھ۔ (اس لئے) ہم نے کہا کہ اس گائے کا کوئی مکٹرااس (مقتول کی لاش) پر مارد۔ای طرح اللہ مرود ل کوزندہ کرتا

وَ يُرِيُكُمُ اياتِهِ لَعَلَّكُمُ تَعُقِلُونَ - (مكارم الاخلاق)

بداور همين افي قدرت كي نشانيان وكهانا بهنا كرتم عقل سي كا ماو

(١٠) درددل اور اختلاج قلب كيلئے: ـ

(۱) سونے سے پہلے دَن بارید دعا پڑھے: ﴿لاَ إِلٰهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحُدَهُ لاَ شَرِیْکَ لَهُ یُحْہِی وَ یُمِیتُ وَیُمِیتُ وَیُمِیتُ وَیُحْہِی وَهُوَ حَیُّ لاٰ یَمُونُ ﴾۔اس کے بعد جناب سیرہ کی تبیح اور آیتہ الکری اور سورہ قل حواللہ احد پڑھے۔(طب الائمة)

(٢) يهاران آيات كوپانى بربر هكروه بإنى بيط اور باتھ دل برر كھے نيز ان آيات كولكھ كرگرون ميں

والے وہ آیات یہ ہیں:

بِسُمِ اللّٰهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ رَبَّنَا لَا تُرْعَ قُلُو بَنَا بَعُدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبُ لَنَا مِنُ (جودعا كرتين) اعماد = يوددگا ما يمين سيد حدمات ير لگانے كا بعد ماد حدول كوئيز ما نابون و حداد ديمن افي جناب عدمت

لَّدُذُكَ رَحُمَةً إِذَكَ آنُتَ الْوَهَابُ رَبَّنَ آنَتَ الْوَهَابُ وَيُبِ فِيْهِ النَّاسِ لِيَوُم لَا رَيُبَ فِيْهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّالِي الللَّالِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّالِمُ الللْمُلْمُ اللَّهُ الللْمُلْمُ اللَّهُ اللللْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّالِمُ الللَّا اللَّاللَّالِمُ الللَّا اللَّالِمُ اللْمُلْمُ اللَّالِمُ اللللْمُ اللْ

إِنَّ اللَّهَ لَا يُسْخُلِفُ الْمِيْعَادَ الَّذِيْنَ الْمَنْوُا وَ تَسَطُّمَتِنَ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ اللهِ بِذِكْرِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَا يُخِرِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ

اللّٰهِ تَسَطُّمَتُنُّ الْقُلُوبُ اللَّذِينَ المَنُوا وَ عَمِلُوا الصَّلِحْتِ طُوبلى لَهُمْ وَ حُسُنُ مَالِ اللَّهِ تَسَطُّمَ مَالِ الصَّلِحَتِ طُوبلى لَهُمْ وَ حُسُنُ مَالِ

لَئِنُ ٱنْجَيْتُنَا مِنُ هَلِدِهٖ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّهِرِيُنَ ۔ (مُجِمَع الحنات) ال (معیت) نام اللہ و بعد منظر ورتی مشرقر البندوں میں سے موں گے۔ (۳) سترہ روز تک سنجو وشام ایک ایک بار مورد المنظر کے کی علاوے کی جائے ۔ (مکارم الاخلاق)

(۱۱) دردِ شکم کیلئے:۔

(۱) حضرت امير القليلائے منقول ہے، فرمايا: جس شخص کو دردشکم لاحق ہو وہ گرم پانی پے اور بيروعا

2

يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا رَحُمْ مَنُ يَا رَحِيهُم يَا رَبُّ الْاَرُبَابِ يَا اِللَّهُ الْآلِهَةِ يَا مَلِكَ الْمُلُوكِ لِمَا الله لِمَا الله لِمَا الله الله الله الله يهت رقم والے الے مهريان الے بالتے والوں كے بالتے والے الے معودوں كے معود

یا سَیّد السَّادَاتِ اِللَّهِنِی بِشِفْ إِنَّ مِنْ کُلِّ داء وَ سُقُم فَانِی عَبُدُکَ وَابُنُ اللهِ اللهِ وَ سُقُم فَانِی عَبُدُکَ وَابُنُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَبُدُکَ وَابُنُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ

عَبُدِكَ أَتَقَلُّبُ فِي قَبُضَةِكَ (كَتَابِ الدَعَاو الزياره)

بندول كاميا بول تير يقض من عي ادهرأدهم بونا بول .

ایسساح:۔ مخفی ندرے کددر دِمعدہ کیلئے بھی یہی عمل حضرت امیر الطفی سے منقول ہے۔ (مصباح كفعی)

(۱۲) درد کسر کیلئے۔ دخر سام محد باقرالی سے مروی ہے، فرمایا: بی ہدان کے ایک خص کو دروی ہے، فرمایا: بی ہدان کے ایک خص کو دروی کمری تکیف ہوئی اوراس نے حضر سام مرائی کی خدمت میں حاضر ہوکرا پی تکیف کی شکایت کی اور عرض کیا کہ وہ دات جمراس کی وجہ سے سونیس سکا ۔ آپ نے فرمایا: وروی جگہ پر ہاتھ رکھ کرتین ہاریم آیت پڑھ:

وَمَا کُانَ لِنَفُ سِس اَنُ تَسَمُّوتَ اِلَّا بِعِادُنِ اللَّهِ كِتَابًا مُّوَجُلًا وَمَنُ يُودُ ثُوابَ اللَّهُ نُعَا وَلَا اللَّهُ كِتَابًا مُّوَجُلًا وَمَنُ يُودُ ثُوابَ اللَّهُ نُعَا وَلَ اللَّهِ كِتَابًا مُوّا جُلًا وَمَنُ يُودُ ثُوابَ اللَّهُ نَعَا اللَّهِ كِتَابًا مُوّا جُلًا وَمَنُ يُودُ ثُوابَ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ ال

وَ إِنَّـهُ لَـكِتَـابٌ عَـزِيْبُ إِلا يَ أَيْبُ والْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْدِهِ وَلا مِنْ خَلْفِهِ تَنُوزِيُلُ وه ايك زيردت (معزز) كتاب ب- بإطلى كاس كياس كزرتين جوه نداس كرآئ سر آسكا جاور ند يجهج سياس

> مِنُ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ - (مصباح لفعمى) قات كى طرف سے ازل شدہ ہے جوہر ى حكمت والى ہے (اور) قابل ستائش ہے -

> > (۱۳) بواسیر کے از الہ کیلئے:۔

(۱)مروی ہے کہا کی شخص نے حضرت امام رضاالظی کی خدمت میں بواسیر کی شکابیت کی۔ آپ نے فرمایا: کہسورۂ کیلین شہد کے ساتھ لکھ کر پیؤ تندرست ہو جا ؤگے۔(مکارم الاخلاق)

(۲) اس مقصد (بواسیر) کے لیے سورہ سبح اسم دبک الاعلی کا پڑھنا بھی منقول ہے۔ (۳) نیز بواسیر اور در دِ مقعد کے لیے حضرت امیر القابی کے اس وعا کا پڑھنا بھی مروی ہے:

يَا جَوَادُ يَا مَاجِدُ يَا رَحِيْمُ يَا قَرِيْبُ يَا مُجِيْبُ يَا بَارِئُ يَا رَاحِمُ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وّ آلِ

مُحَمَّدٍ وَارُدُدُ عَلَيَّ نِعُمَةًكَ وَ اكْفِنِي وَجُعِي، - (مصباح كَفعمي)

(۱۵) تلی اور پته کیلئے:۔

(۱) این ہاتھ کی تھیلی پر تین ہارسور کا ادا جاء نصر اللّٰه پڑھے اور بعد ازاں یہ آیت تین مرتبہ پڑھے: إِنَّ الَّـذِیْسُنَ قَــالُـوُ ا رَبُّنَــا اللّٰہ ثُمُ اسْتَقَـامُو ا تَتَنَـزُلُ عَلَیْهِمُ الْمَلْئِکَةُ الّا تَحَافُو ا بِ مُل جَن لوگوں نے کہا کہ مارا پر وردگاراللہ ہاور پھراس پرقائم اور فابت قدم رہان پرفرشتے ما زل ہوتے ہیں (ان سے کہتے ہیں

وَلا تَحُزَنُوا وَ اَبُشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمُ تُوعَدُونَ.

كر) تم ندورواور ندهم كرواوراس جنت كي بنارت يرخوش بوجاؤجس كاتم سے وعده كيا كيا ہے۔

اور پھراپنے ہاتھوں کوسات ہاراپنے سر پر ملے ۔ (مکارم الاخلاق ومجمع الحسنات)

(٢) ايك كاغذ بريدآيات لكه كراور تكليف والے مقام بر باندھ:

إِنَّ اللَّهَ يُسْمِسِكُ السَّمُواتِ وَالْاَرُضَ أَنْ تَنزُولًا وَ لَئِنُ زَالَتَا إِنْ أَمُسَكَّهُمَا مِنُ أَحَدٍ

(بے شک الله (اچی قدرت کامله) سے آسانوں اور زمین کو تھامے ہوئے ہے کہ وہ اچی جگہ سے ہٹ نہ جائیں اور اگر وہ

مِّنُ بَعُدِهِ إِنَّهُ كَانَ مُحَلِيْكُا غَفُوْلَا إِنَّهُ بِشَمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ - (ايناً)

(بالفرض) ہٹ جائیں تو اس کے سوا انہیں کون تھام سکتا ہے؟ بے شک وہ (اللہ) بڑا ہر دبار (اور) بڑا بخشے والا ہے۔

(٣) جس محض کوتلی کی تکلیف ہوتو وہ زعفران اور آب زمزم سے بیر آیتیں لکھ کر پیٹے با ذن اللہ بیاری

وورجوجائے گی انتاء الله:

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحُمٰنَ آيًّا مَّا تَدْعُوا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسُنَى

کے ویجیےا کراے اللہ کھر پکارویا رحمٰن کھر کر پکاروجس مام ہے بھی اسے پکارو۔اس کے سارےمام اچھے ہیں اور ندبی اپنی تماز زیادہ

وَلا تَجْهَـرُ بِصَلادِكَ وَلا تُخَافِتُ بِهَا وَابْتَع بَيْنَ ذالكَ سَبِيلاً وَ قُلِ الْحَمُدُ

بلند آوازے پڑھواور نہ بی بالکل آ ہتہ ہے بلکہان دونوں کے درمیان کا راستہ اختیار کرو۔اور کہہ دیجے! سب تعریفیں اللہ کے لئے ہیں

لِلْهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذُ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنُ لَّهُ شَرِيُكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنُ لَّهُ وَإِنَّ

جس نے شکسی کو بیٹا بنایا ہے اور شدی کسی کوشریک بنایا ہے اور شدی درماندگی اور عاجزی کی وجہ سے اس کا کوئی مددگارہے اور اس کی

مِّنَ الذُّلِّ وَ كَبِّرُهُ تَكْبِيرًا - (الفِنا)

كبريا في اوريزاني كابيان كروجس طرح يزاني بيان كرفي حابية -

(۱۲) گھٹنوں کے درد كيلئے: حضرت امام محد باقرالي سے مروى ب فرمايا: جس محض كو

تُصَنُّون ميں در دہووہ نماز کے بعد بید عاربا ھے:

يَا اَجُودُ مَنُ اَعْطَى وَ يَا خَيْرَ مَنُ سُئِلَ وَ يَا اَرُحَمَ مَنِ اسْتُرُحِمَ إِرُحَمُ ضَعُفِى

ے ہر دینے والے سے زیادہ تی اے بہترین ذات جس سے ماٹکا جاتا ہے اے بہت رقم والے جس سے رقم ماٹکا جاتا ہے رقم كرميرى

وَ قِلَّةَ حِيْلَتِي وَ عَافِينِي مِنْ وَجُعِيْ (مصاح القعمي)

کمزوری و بے بسی پر اور مجھے اس دردے عافیت دے۔

(۱۷) عرق النساء بعنی جوڑوں کے درد کیلئے: دھزت امر اللی ہمروی ہ

كه جس شخص كوعرق النساء يعني جو ژول كا در ومحسول جو تو وه مقام در دير باتحد ركه كريد براهه:

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسُمِ اللَّهِ وَ بِاللَّهِ اَعُوُدُ بِاسْمِ اللَّهِ الْكَبِيْرِ اَعُوُذُ بِاسْمِ اللَّهِ

الْعَظِينُ مِ مِنْ شَرِّ كُلِ عِرقِ نَعَادٍ وَ مِنْ شَرِ حَرِّ النَّادِ ﴾ بادن الله ال م محفوظ بوجائ گا۔

(مصباح كفعمي وطب الائمه)

(۱۸) درد قدولت كيلئ الهاية المرت امام رضالظي المنقول م فر مايا: سورة فاتحدة حيداور

معوذ تنین لکھی جائیں اوراس کے بعد بیدعالکھی جائے:

اَعُوُذُ بِوَجُدِهِ اللَّهِ الْعَظِيْمِ وَبِعِزَّتِهِ الَّتِي لا تُدَامُ وَ بِقُدُرَتُكَ الَّتِي لا يَمُتَنِعُ

پناہ لیتا ہوں خدائے ہزرگ کی ذات اور عزت کی جس تک رسمائی نہیں اور اس کی قدرت کی پناہ جے کوئی چیز روک نہیں سکتی اس درد کی تنگی

مِنْهَا شَيْءٌ مِنُ شَرّ هَذَا الْوَجُعِ وَ مِنْ شَرّ مَا فِيبُهِ وَ مِنْ شَرٍّ مَآ اَجِدُ مِنْهُ.

سے جو چھاس میں ہاس کی اذبیت سے اور جو محسوس کر رہا ہوں اس کی تکلیف ہے۔

پھراہے دھوکرنہا رمنہ بیار کووہ بانی پلایا جائے۔(المصباح لفعمی)

(۱۹) دردِ گرده کیلئے:۔

(۴) تپ کے ازالہ کیلئے:۔

(۱) ہرفتم کے بخار کے ازالہ کے لیے دعائے نورضج و شام پڑھی جائے جوحضرت زہراسلام اللّٰہ علیہا نے سلمان محمدیؓ کوتعلیم دی تھی۔جوبیہے:

بِسُسِمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسُمِ اللَّهِ النُّورِ بِسُمِ اللَّهِ نُورِ النُّورِ بِسُمِ اللَّهِ نُورٌ عَلَى نُؤرٍ

بِسُمِ اللَّهِ الَّذِي هُوَ مُدَبِّرُ الْأُمُورِ بِسُمِ اللَّهِ الَّذِي خَلَقَ النُّورِ مِنَ النُّورِ اَلْحَمُدُ لِللَّهِ

الَّذِي خَلَقَ النُّورَ مِنَ الدُّورِ وَإَنْزَلَ النُّورَ عَلَى الطُّؤ رَفَى كِتَابٍ مَسُطُورٍ فِي رِقٍ

مَنْشُورٍ بِقَدَرٍ مَقُدُورٍ عَلَى نَبِيّ مَحْبُورٍ ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي هُوَ بِالْعِزِّ مَذْكُورٌ وَ

بِ الْفَخُرِ مَشُهُورٌ وَ عَلَى السَّراءِ وَ الضَّرَاءِ مَشُكُورٌ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا

مُحَمَّدٍ وَ آلِهِ الطَّاهِرِينَ ﴾ - (مج الدعوات وغيره)

(۲) حضرت امام رضالظی سے مروی ہے کہ بخار کے ازالہ کے لیے بیار کاغذ کے نین ککڑے لے اور

يه يريه لكه:

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ لا تَخَفُ إِنَّكَ أَنْتَ الْاعْلَى.

دوسرے پر میں لکھے:

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ لا تَخَفُ نَجَوُتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِيْنَ.

اور تیسرے پر لکھے:

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ اللَّهُ الْخَلْقُ وَالْاَمُرُ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ ــ

پھر ہالتر تبیب ہرروزا یک فکڑے پر تنین ہارسورہ تو حید پڑھ کرنگل جائے بخاراتر جائے گا۔ (مصباح کفعمی)

(۳) بخاروالا آ دمی قمیص کے بٹن کھول کراورگر یبان کے اندرسر لے جا کراؤان وا قامت کہد کرسات مرتبہ سورہ حمد کی تلاوت کرے ہرفتم کا بخاراتر جائے گاانٹاءاللہ۔ بیدوہ ممل ہے کہ جو حضرت امام جعفر صادق الطبیعی نے مفضل کو تعلیم ویا تھا۔ (طب الائمہ)

(۴) حضرت امام حسن عسكرى القليلائ سے مروى ہے كہ بارى كے بخار کے ليے كسى ہے يا كاغذ پر كھے: ﴿ يَمَا نَارُ كُونِنَى بَرُدُا وَ مُذَلِّمُا عَلَى إِبْوَاهِيم ﴾ (كل ل كل الله على فلان) - (يہاں اس آ دى كامام كھاجائے) اور پھروہ پيتديا كاغذ بخاروالے آ دى پر باندھ ویا جائے - (مكارم الاخلاق)

(n) برص و جذام کیلئے:۔

(۱) مکارم الاخلاق میں مذکور ہے کہ جسے جذام کی بیاری ہواس پرید دعا پڑھواوراہے لکھ کراس پر

﴿ بِسُسِمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ يَمُحُوا اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَ يُثْبِثُ وَ عِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ اَلْحَمُدُ شروحُ الله كمايركت ام سے جوہ ام بران نهایت رحم والاہے

لِلْهِ فَاطِرِ السَّمْوَاتِ وَالْاَرُضِ جَاعِلِ الْمَلْآثِكَةِ رُسُلًا أُولِي ٓ اَجْنِحَةٍ مَّثُنَى وَ ثُلَكَ وَ رُبَاعَ

بِاسْمِ فلان بن فلانة ﴾ (يهال ياراوراس كى مال كانام كحاجات)-

(۳) حضرت امام جعفر صادق الظلی ہے مروی ہے، فر مایا: جسے برص کی بیاری ہو وہ وضو کرکے دو رکعت نماز ریاھے اور اس کے بعد بیہ دعاریا ہے:

﴿ يَا اَللَّهُ يَا رَحُمْنُ يَا رَحِيْمُ يَا سَامِعَ الْآصُواتِ يَا مُعُطِى الْخَيْرَاتِ اَعُطِيى خَيْرَا الدُّنْيَا

وَ الْاخِرَةِ وَقِنِيُ شَرَّ الدُّنْيَا وَ الْاخِرَةِ وَ اَذُهِبُ عَنِّيُ مَا اَجِدُ فَقَدُ غَاظَنِيُ وَ اَحُزَنَنِي ۖ ـ

(مصباح كقعمى)

(۲۲)ھر قسم کی خارش اور پھوڑ ہے پھنسیوں کیلئے:۔

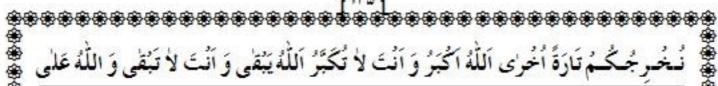
(۱) حفرت امام عفر ما ق من من قول من المار المنظم المن المنظم المن المنظم المنظ

﴿ أَعُودُ بِوَجُهِ اللَّهِ الْعَظِيْمَ وَ كَلِمَاتِهِ التَّامَاتِ الَّتِي لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ مِنُ شَرٍّ

كُلِّ ذِي شَرٍّ ﴾ - (مصباح كفعمى)

(۲) مروى ہے كه ايسے مريض يربيه وعا يڑھى جائے اور لكھ كراس كے گلے ميں بھى والى جائے: ﴿ بِسُسِمِ اللّٰهِ السرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ وَ مَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِينَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِينَةًةٍ وِالْجَتُثَثُ مِنُ فَوُقِ

الْآرُضِ مَالَهَا مِنُ قَرَادٍ (آخرآيت تك) مِنْهَا خَلَقُنَاكُمُ وَ فِيْهَا نُعِيُدُكُمُ وَ مِنْهَا



كُلِّ شَيْءٍ قَدِيُرٌ ﴾ - (مكارم الاخلاق)

(۲۳) شانگوں کے درد کیلئے: حضرت امام جعفرصا دق القلی ہے مروی ہے جے ناگوں میں

ورد مووه ان پر بيآيات پڙها:

﴿ وَاتُلُ مَا أُوْحِى اِلَيُكَ مِنُ كِسَابٍ رَبِّكَ لا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَلَنُ تَجِدَ مِنُ دُونِ ﴿

مُلْتَحَدًا﴾ ۔ (مصباح کفعی)

(۳۳)ضيق النفس يكنى ممكنيلامي (۲۳)

(۱) شیخ بہائی علیدالرحمدفر ماتے ہیں کہ خیق النفس کے لیے بدآ بت پڑھی جائے:

﴿ بِسُسِمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ تَبَارَكَ الَّذِيْكِنُ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنُ ذٰلِكَ جَنّْتٍ

تَجُرِيُ مِنْ تَحْتِهَا الْآنُهَارُ وَ يَجْعَلُ أَكَ قُصُولُ إِلَاكَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ا

(۲) حضرت امام جعفر صادق الظائرة ہے اس بیاری کے ازالہ کے لیے اس اونٹنی کا بپیٹا ب بییا مروی ہے جس کے وضع حمل کو دو تین ما مگز رکھے ہوں۔ (مجمع الحسنات)

(۲۵)وضع حمل کی آسانی کیلئے:۔

(۱) حضرت امام جعفرصا دق الطبي ہے مروی ہے ، فرمایا : جسعورت پرولا دے مشکل ہوجائے اس کی آسانی کیلئے بیہ آیا ہے کسی کاغذ پر لکھ کراس کی دائیں ران پر باندھی جائیں اور ولا دے کے بعد کھول دی جائیں : ﴿ بِسُسِمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ كَانَّهُمْ يَوُمَ يَرُونَ مَا يُوْعَدُونَ لَمُ يَلْبَثُواْ إِلَّا سَاعَةً مِّنُ نَّهَارٍ

كَانَّهُمْ يَوُمَ يَرَوُنَهَا لَمُ يَلُبَثُو ۚ إِلَّا عَشِيَّةً أَوُ ضُحْهَا إِذْ قَالَتِ امْرَاتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي

نَذَرُتُ لَكَ مَا فِي بَطُنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلُ مِنِّج إِنَّكَ ٱنْتَ السَّمِينُ الْعَلِيُمُ -

(كتاب الدعا و الزيارة و المصباح لكفعمي)

(۲) جناب عيسي القليلا مروى ہے كہ جس عورت پر وضع حمل مشكل ہوجائے اس پر بيدو عابر هي جائے:

﴿ يَا خَالِقَ النَّفُسِ مِنَ النَّفُسِ وَ مُخُرِجَ النَّفُسِ مِنَ النَّفُسِ وَ مُخَلِّصَ النَّفُسِ مِنَ

النَّفُسِ خَلِصُهَا﴾ - (﴿ وَالْمِي الصَّالِ عَالِمَ اللَّهِ الصَّالِحَ المَّالِكَ المَّالِكَ المَّالِكَ المّ

(۲۱)نظر بد کیلئے:۔

نظر بد کا لگنا حق ہے جوقر آن وسنت ہے ثابت ہے اوراس سے بیچنے کے لیے کئی ا دعیہ واحراز مروی ہیں،مثلاً:

(۱) حضرت امام جعفر صا دق الظیلائے ہے منقول ہے کہ جب کسی شخص کو اندیشہ ہو کہ اسے کسی کی نظر بد لگ جائے گی یا اس کی نظر بدکسی کولگ جائے گیاتو تین ہار ریہ پڑھے:

﴿ مَا شَآءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ﴾ - (مكارم الاخلاق)-

(۲)مروی ہے کہ جب کوئی شخص بن سنور کر گھر ہے باہر نگلے تو سورۂ فلق اور سورۂ والناس پڑھ لے تو اے کوئی چیز نقصان نہیں پہنچائے گی۔(ایصاً) (٣) حضرت امام حسن الظليلات منقول ب كفظر بدس بجاؤ كے ليے بير آيت براهي جائے:

﴿ وَإِنْ يَكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوا لَيُزُلِقُونَكَ بِٱبْصَارِهِمُ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ ﴿

لَمَجُنُونٌ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكُرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴾ - (مصاحَ تعمى)

(۳) نظر بد کے آثارے بیجنے کے لیے اس دعا کا پڑھنا بھی واردہاور یہ بھی واردہ کہ حضرت رسول خدا اللہ حضرات حسنین شریفین علیماالسلام کے لیے بید دعا پڑھتے تھے اوراصحاب کو بھی تلقین فر ماتے تھے کہ و ہ بھی اپنے بیوی بچوں کی سلامتی کے لیے بطور تعویذ پڑھا کریں:

﴿ اَللَّهُ مَ يَا ذَا السُّلُطَانِ الْعَظِيْمِ وَ الْمَنِّ الْقَدِيْمِ وَالْوَجُهِ الْكَرِيْمِ ذَا الْكَلِمَاتِ التَّامَّاتِ

وَ الدَّعَوَاتِ الْمُسْتَجَابَاتِ عَافِ الْحَسَلُ وَ اللَّحَمَانُ فِي الْفُسِلِ الْجَنِّ وَ اَعْيُنِ الْلِنْسِ

(الحنّ والحسينَ كى حَكَما سُخْصَ كاما م ليا جائے جسے نظر بدہے بچامامقصود ہو)۔(ایضاً)

(٤٤)جانوروں کو نظر بد سے بچانے کیلئے:۔

جانوروں كۇظرىدے بچانے كے ليے حضرت امير الطفيات يتعويذ منقول ب:

﴿ بِسُسِمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيُمِ بِسُمِ اللَّهِ الْعَظِيُمِ عَبَسٌ عَابِسٌ وَّ شَهَابٌ قَابِسٌ وَّ حَجَرٌ

يَّابِسُ رَّدَدُتُ عَيْنَ الْعَايِنِ عَلَيْهِ مِنْ رَّأْسِهْ اللي قَدَمَيْهِ أَخَذَ عَيْنَاهُ قَابِضٌ بِكَلاهُ وَ عَلى

جَارِهٖ وَ اَقَارِ بِهِ جِلْدُهُ دَقِيْقٌ وَ دَمُهُ رَقِيْقٌ وَ بَابُ الْمَكُرُوهِ تَلْيِقُ فَارُجِعِ الْبَصَرَ هَلُ تَرِي

(الباقيات الصالحات)

(m)سحر و جادو سے بچاؤ کیلئے:۔

جادو کی کسی حد تک تا ثیر ما قابل انکار ہے مگراس حد تک نہیں ہے کہ اس سے قلب ماہیت ہو جائے یا موت و حیات کے نظام میں خلل پڑ جائے اوراس کا اثر بھی عموماً کمزورا بیان ویفین والے لوکوں پر ہوتا ہے۔
کامل الا بیان والیقین لوکوں پر اس کا کوئی اثر نہیں ہوتا ۔ تفصیل کے لیے ہماری کتاب قوانین الشریعہ جلد دوم کا مطالعہ کیا جائے۔ بہرحال جا دو کے اثر کو زائل کرنے کے لیے گئی قتم کی وعائیں اور تعویذ ات ائمہ طاہرین علیہم السلام سے منقول ہیں۔ ہم یہاں بعض کا تذکرہ کرتے ہیں:

(۱) حفرت امیر الظیادے مروی ہے کہ جادو کے برے آٹارہے بیچنے کے لیے بیتعویذ ہرن کی کھال پرلکھ کراپنے پاس رکھیں: SIBTAIN.COM

﴿ بِسُسِمِ اللَّهِ وَ بِاللَّهِ بِسُمِ اللَّهِ وَمَا شَآءَ اللَّهُ بِسُمِ اللَّهِ وَلا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ اللَّهِ بِاللَّهِ قَالَ

مُـوُسْـى مَـا جِئْتُمُ بِهِ السِّحُرُ إِنَّ اللَّهَ سَيُبُطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لاَ يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفُسِدِيُنَ فَوَقَعَ

الُحَقُّ وَ بَطَلَ مَساكَسانُوا يَعُمَلُونَ فَعُلِبُوا هُنَسالِكَ وَانْقَلَبُوا صَاغِرِيُهُ ـ

(۲) نیز جا دوگروں اور شیطا نوں کے شرہے بیچنے کے لیے آیات سر ہ کاپڑاھنا بھی حضرت رسول خدا صلی اللہ علیہ و آلہ وسل<mark>م سے مروی ہے جو بیہ ہی</mark>ں:

﴿إِنَّ رَبُّكُمُ اللُّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمُواتِ وَالْاَرُضَ فِيُ سِتَّةِ آيَّامٍ ثُمَّ اسْتَواى عَلَى الْعَرُشِ

يُغُشِى الَيُلَ النَّهَارَ يَطُلُبُهُ حَثِيثًا وَّالشَّمُسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّراتٍ، بِاَمُومَ اَلا لَهُ

الْحَلُقُ وَالْاَمُرُ تَبَارَكَ اللُّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ٱدْعُوا رَبَّكُمُ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً آِنَّا لَيُحِبُّ

الْمُعْتَدِيْنَ وَلا تُنفُسِدُوا فِي الْارُضِ بَعُدَ اصلاحِهَا وَادْعُوهُ خَوُفًا وَطَمَعًا

إِنَّ رَحُمَتَ اللَّهِ قَرِينٌ مِنَ الْمُحُسِنِينَ ﴾ ـ (التقيم)

(۲۹)جنات کے شر سے بچاؤ کیلئے:۔

(۱)حفزت رسول خداصلی الله علیه و آله سلم میروی به فرمایا اگر شیاطین تم پر پقر پھینکیس آوتم وہ پقراٹھا کرا دھر پھینکو جدھرے آیا ہے اور میہ پڑھو:

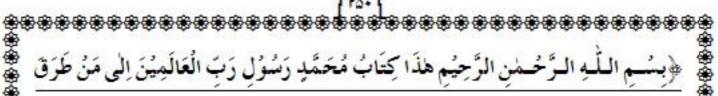
﴿ حَسُبِيَ اللَّهُ وَ كُفِي وَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنُ دَعَا لَيْسَ وَ رَآءَ اللَّهِ مُنْتَهَا ﴾ ـ (الكافي)

(۲) حضرت امام جعفر صادق القلیلائے ہے مروی ہے کہ جہاں جنات کے ضررو زیاں پہنچانے کا اندیشہ ہو ہاں سریر ہاتھ رکھ کربا وا زبلند کہو:

﴿ اَفَ عَيْسَ رَ دِيْسِ السُّلِيهِ يَبُعُونَ وَكَسَهُ اَسُلَمَ مَنُ فِي السَّمَواتِ وَالْآرُضِ

طَوْعًا وَ كُرُهًا وَ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ﴾ ـ

(۳) شیاطین انسی و جنی کے ضرر و زیاں ہے بیچنے کے لیے اس حرز کا پاس رکھنا بھی بہت مفید ہے جو حضرت رسول خداصلی اللّٰدعلیہ و آلہ وسلم نے ابو دجانہ کوتعلیم دیا تھا،اوروہ بیہ ہے:



اللَّذَارَ مِنَ الْعَمَّارِ وَ الزُّوَّارِ إِلَّا طَارِقًا يَطُرُقُ بِخَيْرٍ آمًّا بَعُدُ فَإِنَّ لَنَا وَلَكُمُ فِي الْحَقِّ سَعَةً

فَإِنْ تَكُ عَاشِقًا مُولِعًا أَوُ فَاجِرًا مُقُتَحِمًا فَهٰذا كِتَابُ اللَّهِ يَنُطِقُ عَلَيْنَا وَ عَلَيْكُمُ بِالْحَقِّ

إِنَّا كُنَّا نَسْتَنُسِخُ مَا كُنتُمُ تَعُمَلُونَ وَ رُسُلُنَا يَكُتُبُونَ مَا تَمُكُرُونَ ٱتُرُكُوا صَاحِبَ كِتَابِي

هذَا وَ انْطَلِقُوا إِلَى عَبَدَةِ الْآصُنَامِ وَ إِلَى مَنُ يَزُعَمُ أَنَّ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا اخَرَ لا إِلهَ إِلاَّ هُوَ كُلُّ

شَىءِ هَالِكُ اِلَّا وَ لَهِهَا لَلُهُ الْمُحَكُّمُ وَإِلَيْهِ لَرُ جَعُونَ خَوْ لِلْمُحُووُنَ خَمْ غَسْقَ تَفَرَّقَتُ

اَعُدَاءُ اللَّهِ وَ بَلَغَتُ حُجَّةُ اللَّهِ وَلا حَوُلَ وَ قُوَّةَ اِلَّا بِاللَّهِ فَسَيَكُفِيُكَهُمُ اللَّهُ وَ هُوَ السَّمِيعُ

الْعَلِيْمُ ﴾ - (مجمع الحنات)

(٣٠) شر اعداء اور هر قسم كى آفات و بليات سے بچاؤ كيلئے: ـ

(۱) حضرت امام زین العابدین الظیلائے مروی ہے، فرمایا: جب میں یہ کلمات پڑھ اوں تو پھر مجھے کوئی پروانہیں ہوتی اگر چیتمام جن وانس جمع ہوکر مجھے ضررو زیاں پہنچانا چاہیں:

﴿ بِسُمِ اللَّهِ وَ بِاللَّهِ وَ مِنَ اللَّهِ وَ إِلَى اللَّهِ وَ فِيُ سَبِيُلِ اللَّهِ اَللَّهِ مَا لِلَّهِ وَ بِاللَّهِ وَ فِي سَبِيُلِ اللَّهِ اَللَّهُمَّ إِلَيُكَ اَسُلَمُتُ نَفُسِي ﴿

وَمِنُ خَلْفِيٌ وَ عَنُ يُلمِيُنِيُ وَعَنُ شِمَالِيُ وَمِنُ فَوُقِيُ وَمِنُ تَحْتِيُ وَ ادْفَعُ عَنِي بِحَوُلِكَ

وَ قُوَّتِكَ فَإِنَّهُ لَا حَوُلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْكِمِ -

(۲) حضرت رسول خداً ہے مروی وہ دعاجس کا پڑھنا تمام جن وانس کے شروضررہے امن وامان کا

باعث ہے اوروہ دعامیہے:

﴿ بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيُمِ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللَّهُ عَلَيْهِ تَوَكَّلُتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرُشِ الْعَظِيْمِ

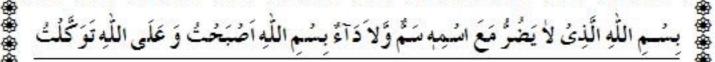
مَا شَآءَ اللَّهُ كَانَ وَمَا لَهُ يَكُنُ اللَّهَ عَلَى كُلِّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيءٍ قَدِيرٌ وَ اَنَّ اللَّهَ قَدُ

اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا اَللَّهُمَّ اِنِّيُ اَعُوُذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَ مِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ

ا خِلْد بِسَسَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّسي عَلْسى صِرَاطٍ مُّسُتَقِيبٍ ﴿ وَمُجَ الدعوات ابن طاؤوسٌ)

(۳) نیز حضرت رسول خداصلی الله علیه و آله وسلم سے مروی ہے ، فر مایا : جو محض سیح بیہ وعارہ صلیا کر ہے تو خدائے تعالی اس کی حفاظت کے لیے چار فرشتے مقرر کرتا ہے جواس کے آگے بیچھے اور دائیس بائیس طرف سے اس کی اس طرح حفاظت کرتے ہیں کہ اگر تمام جن وانس مل کر بھی اسے نقصان پہنچا ما چاہیں تو نہیں پہنچا سکیں گے انشاء الله ۔ اور وہ وعابیہ ہے:

﴿ بِسُسِمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيُمِ بِسُمِ اللَّهِ خَيْرِ الْاَسُمَآءِ بِسُمِ اللَّهِ رَبِّ الْاَرُضِ وَالسَّمَآءِ



بِسُمِ اللَّهِ عَلَى قَلْبِيُ وَ نَفُسِيُ بِسُمِ اللَّهِ عَلَى دِيُنِيُ وَ عَقُلِيُ بِسُمِ اللَّهِ عَلَى اَهُلِيُ وَ مَالِيُ

بِسُسِمِ اللَّهِ عَلَى مَا آعُطَانِي رَبِّي بِسُمِ اللَّهِ الَّذِي لِأَيَضُرُّ مَعَ اسُمِهِ شَيءٌ فِي الْآرُضِ

وَلا فِي السَّمَآءِ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ اللَّهُ اللَّهُ وَبِّي لا أُشُرِكُ بِهِ شَيْئًا اللَّهُ اكْبَرُ اللَّهُ اكْبَرُ

وَ اَعَزُّ وَ اَجَلُّ مِمَّآ اَخَافُ وَ اَحُـذَرُ عَزَّ جَارُكَ وَ جَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلاَّ اِللَّهَ غَيْرُكَ اَللَّهُمَّ

اَعُوٰذُ بِكَ مِنْ شَرِّ لَمُهُ لِلَى إِنْ شَلِّ كُلِّ سُلُطُانِ شَلْيًا ﴿ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْطَانِ مَّرِيْدٍ

وًّ مِنُ شَرِّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيُدٍ وَّ مِنُ شَرِّ قَضَآءِ السُّوْءِ وَ مِنُ كُلِّ دَآبَّةٍ ٱنْتَ اخِذُ م بِنَاصِيَتِهَآ

إِنَّكَ عَلَى صِرَاطٍ مُّسُتَقِينُمٍ وَّ ٱنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِينُظٌ إِنَّ وَلِيِّيَ اللَّهُ الَّذِي

نَزَّلَ الْكِتَابَ وَ هُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِيُنَ فَإِنْ تَوَلُّوا فَقُلُ حَسْبِىَ اللَّهُ لَا إِلَّهَ إِلَّا هُوَ

عَلَيْهِ تَوَكَّلُتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرُشِ الْعَظِيْمِ ﴾ ـ (الينأ)

(۴) صبح وشام سورهُ قبل هو الله احد كاشش جہات كى طرف منه كر كے بيڑ هنا يعنى دائيں بائيں اور

آ گے بیچھے اور او پروینچے یہی تا ثیر رکھتا ہے بیخی تمام جن وانس کے شرے محفوظ رہنے کا ذریعہ ہے جبیبا کہ حضرت امام جعفر صاوق الطابی سے مروی ہے۔

(۵) حضرت امام زین العابدین القلیلاً کے صحیعهٔ سجادیدگی وہ دعا پڑھنا بھی اس مقصد کے لیے مجرب ہے جو شراعداء سے بیچنے کے لیخصوص ہے۔ بید دعا اس سے پہلے صفح نمبر ۲ کا پر آپھی ہے۔ ہے جو شراعداء سے بیچنے کے لیخصوص ہے۔ بید دعا اس سے پہلے صفح نمبر ۲ کا پر آپھی ہے۔ (۲) اس مقصد کے لیے حضرت امام رضا القلیلا کا رقعۃ الحبیب بھی بہت مفید ہے جو بیہ ہے:

﴿ بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيُمِ بِسُمِ اللَّهِ إِنِّى آعُوُذُ بِالرَّحُمْنِ مِنْكَ إِنْ كُنُتَ تَقِيًّا

أَوُ غَيْرَ تَقِيَّ اَخَذُتَ بِاللَّهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ عَلَى سَمْعِكَ وَ بَصَرِكَ لا سُلُطَانَ لَكُو

عَلَىَّ وَلا عَلَى سَمُعِى وَلا عَلَى بَصَرِى وَلا عَلَى شَعْرِى وَلا عَلَى شَعْرِى وَلا عَلَى بَشَرِى وَلا

SIBTAIN.COM

عَـلَى لَـحُـمِـى وَلا عَـلَى دَمِـى وَلا عَـلى مُخِي وَلا عَلى مُخِي وَلا عَلَى عَصَبِي وَلا عَلَى عِظَامِي وَلا

عَلَى مَالِيُ وَلا عَلَى مَا رَزَقَنِي رَبِّي سَتَرُتُ بَيْنِي وَ بَيْنَكَ بِسِتُرِ النُّبُوَّةِ الَّذِي اسْتَتَرَأُ

أَنْبِيَآهُ اللَّهِ بِهِ مِنُ سَطَوَاتِ الْجَبَابِرَةِ وَ الْفَرَاعِنَةِ جِبُرَ آئِيُلُ عَنْ يَّمِيْنِي وَ مِيْكَآئِيُلُ

عَنُ يَّسَارِيُ وَ اِسُرَ آفِيُلُ عَنُ وَرَآئِيُ وَ مُحَمَّدٌ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ اِمَامِيُ وَ اللَّهُ مُطَّلِعٌ

عَلَىَّ يَـمُنَعُكَ مِنِّي وَ يَمُنَعُ الشَّيُطَانَ مِنِّي اللَّهُمَّ لا يَغُلِبُ جَهُلَّهُ نَاتَكَ اَنُ يَسُتَفِزَّ نِي وَ

يَسْتَخِفَنِيُ اَللَّهُمَّ اِلَّهُمَّ التَّجَاتُ اللَّهُمَّ اِلَّهُمَّ الدُّكَ التَّجَاتُ اَللَّهُمَّ الدُّكَ التَّجَاتُ

(۳)سانپوں، بچھوؤں اور دوسریے حشرات الارض کے ضرر وزیاں سے بچاؤ کی دعائیں:۔

(۱) سانپ، بچھواور دوسرے حشرات الارض سے بیچنے کے لیے بیدو عاربا ھے:

﴿ بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمُنِ الرَّحِيْمِ بِسُمِ اللَّهِ وَ بِاللَّهِ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

وَ آلِـهٖ اَعُـوُذُ بِعِزَّةِ اللَّهِ وَ اَعُوُذُ بِقُدُرَةِ اللَّهِ عَلَى مَا يَشَآءُ مِنُ شَرٍّ كُلِّ هَامَّةٍ تَدُبُّ بِاللَّيُلِ

وَ النَّهَارِ إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيبٍ ﴿ وَطِهِ الاَئمة)

SIBTAIN.COM

(۲) حضرت امام جعفر صا دق الطبي ہے مروی ہے، فر مایا: جو خص رات کے وقت پیرکلمات پڑھ لے تو

میں ضامن ہوں کہ مجمع تک کوئی سانپ یا کوئی دوسراحشرات الارض اے ضررتہیں پہنچائے گا:

﴿ أَعُودُ لَهِ كِلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ الَّتِي لَا يُجَاوِزُهُنَّ بِرٌّ وَلَا فَاجِرٌ مِنْ شَرٍّ مَا ذَرَءَ وَمِنْ شَرٍّ

مَا بَوَءَ وَ مِنْ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ ٱنْتَ اخِذٌ مِينَاصِيَتِهَآ إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُّسُتَقِيُمٍ ﴾ ـ

(الفقيه)

(٣) جو خص صبح وشام بيه وعا پڙھ لے اے کوئي چيز ضرروزياں نہيں پہنچائے گی:

﴿ بِ السُّمِ اللُّهِ الَّذِي لا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيَّةً فِي الْاَرُضِ وَلا فِي السَّمَاءِ

وَ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِينَهُ - (حيواة الحيوان)

(۴) جۇخص صبح و شام بە د عابرا ھے و ہ سانپ اور بچھو وغیر ہ کے ضرر ہے محفوظ رہے گا:

﴿ عَلَى لَهُ إِنَّا نِيَ الْعَقَرَبِ وَ لِسَانَ الْحَيَّةِ وَ يَدَ الشَّارِقِ بِقَوْلِ اَشْهَدُ اَنُ لَا إِلَّهَ اللَّهُ

وَ اَشُهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللَّهِ ﴿ (مُحِمَّ الحنات)

(۵) جو مخص مررات بيرآيت براهي:

﴿ سَلامٌ عَلَى نُوحٍ فِي الْعَالِمِيْنَ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجُزِي الْمُحُسِنِيُنَ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤُمِنِينَ

تووه سانپ اور بچھو کے ڈیسنے محفوظ ہے گا۔ (ایناً) SIBTAIN. COM

(۳۲)جلنے، ڈوبنے اور ھر طرح کے تقصان سے بچاؤ کی دعا:۔

ابو دردا عضرت پینمبر اسلام ملی الله علیه و آله وسلم سے روایت کرتے ہیں ،فر مایا کہ جو محض صبح کے وقت بید دعا پڑھے تو وہ اس دن اور جورات کے وقت پڑھے تو وہ اس رات جلنے ، ڈو بنے اور دوسرے ہرفتم کے نقصان ہے محفوظ رہے گا۔ دعا بیہ ہے :

﴿ اَللَّهُمَّ اَنْتَ رَبِّيُ لَا اِللَّهَ اِلَّا ۚ اَنْتَ عَلَيُكَ تَوَكَّلْتُ وَ اَنْتَ رَبُّ الْعَرُشِ الْعَظِيْمِ وَلَا حَوُلَ

وَلا قُوَّةً إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ مَاشَآءَ اللَّهُ كَانَ وَمَا لَمُ يَشَا لَمُ يَكُنُ اَعُلَمُ اَنَّ اللَّهَ عَلَى

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَ أَنَّ اللَّهَ قَدُ إِحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا اَللَّهُمَّ اِنِّي اَعُودُ بِكَ مِنُ شَرِّ نَفُسِي

دَآبَيةِ أَنُتَ اخِذٌ مِبِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلْى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿ ـ (عدة الداع ابن فهد على)

(۳۳)وسعترزق کیلئے:۔

(۱) ابن ممارنے حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام کی خدمت میں عرض کیا کہ مجھے وسعت رزق کے لیے کوئی دعاتعلیم دیں۔ چنا نچہ آپ نے اسے بید دعاتعلیم دی۔ موصوف کا بیان ہے کہ میں نے اس سلسلہ میں اس دعا ہے بہتر کوئی چیز نہیں یائی:

﴿ اَللَّهُ مَّ ارُزُقُنِكُ مِنُ فَضُلِكَ الْوَاسِعِ الْحَلالِ الطَّيِّبِ رِزْقًا وَّاسِعًا حَلالاً طَيِّبًا

بَلاغًا لِلدُّنْيَا وَ الْأَحِرَةِ طَبَّاصَبًا هَنِيْئُا مَّلِيْئًا مِّلْ غَيْلٍ كَيْ وَلا مَيْ مِنُ اَحَدٍ مِّنُ خَلُقِكَ

إِلَّا سَعَةً مِّنُ فَصُلِكَ الْوَاسِعِ فَإِنَّكَ قُلْتَ وَاسْتَلُوا اللَّهَ مِنْ فَصُلِهِ فَمِنُ فَصُلِكَ اَسُطُّ

وَمِنُ عَطِيَّةِ كَ اَسُمَّلُ وَمِنُ يَّدِكَ الْمَالَّا اَسُهَلُ اَسُهُلُ

(٢) حضرت امام محد باقر الطبي ہے مروی ہے کہ وسعت رزق کے لیے ہر نماز فریضہ کے آخری سجدہ

میں میروعا پڑھی جائے:

﴿ يَسَا خَيُسَ الْمَسْشُولِيُسَ وَ يَسَا خَيُسَ الْمُعُطِيُسَ أَدُزُقُنِيُ وَادُزُقْ عِيَالِيُ مِنُ فَضُلِكَ

فَإِنَّكَ ذُو الْفَضُلِ الْعَظِيْمِ.

(كتاب الدعاد الزياره)

(٣) حضرت امام جعفر صادق الطيلاحضرت رسول خداصلی الله عليه و آله وسلم ہے نقل کرتے ہیں، فرمایا: فقر و فاقہ کے دورکرنے کے لیے بکثرت بیدور دکیاجائے: ﴿ لا حَوْلَ وَ لا قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ ﴾ ۔ (ایضاً)

(۳۲) ادائے قرض کیلئے:۔

(۱) حضرت امام محمد باقرائل این آباء و اجداد کے سلسائر سند سے حضرت امیر اللہ اس روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے بارگاہ رسمالت میں قرضہ کی شکایت کی فرمایا: یاعلی اید وعایو مود ﴿ اَلَـلَّهُ مَ اَعُسِنِنَى وَ مِعَالِمِهُ وَ اَلَّهُ مُعَالِمُ اَعُسِنِنَى اَلَّهُ اَلْمُ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمَ اللّٰمَ اللّٰمِ اللّٰمُ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمُ اللّٰمَ اللّٰمُ اللّٰمَ اللّٰمُ اللّٰمُ

﴿ اَللَّهُ مَّ لَحُظَةً مِّنُ لَحَظَاتِكَ تُيَسِّرُ عَلَى غُرَمَائِي بِهَا الْقَضَاءَ وَتُيَسِّرُ لِي بِهَا

الْإِقْتِضَاءَ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيهُ -

(۳۵) طلب اولاد کیلئے: ۔

(۱)ایک شخص نے حضرت امام علی الطابی کی خدمت میں اولا دند ہونے کی شکامیت کی ،فر مایا: جاندی کی انگوشی ہنوا وَجس کا تگینہ فیروزہ کا ہواوراس پریہ آیت کندہ کرا وَ:

﴿رَبِّ لا تَذَرُنِي فَوُدًا وَ أَنْتَ خَيْرُ الْوارِثِينَ ﴿ كَتَابِ الدعاوالرياره)

(۲) حضرت امام جعفر صادق الطي سے مروى ہے، فرمایا: جس کے ہاں اولا دند ہوتی ہوتو میاں بیوی

صَحِ وشَام بِيمُلَ كُرِين: (١) استغفار يعني ﴿ أَسُتَغُفِورُ اللَّهَ رَبِّي وَ ٱتُّوبُ إِلَيْهِ ﴾ ستر بار-

(٢) ﴿ سُبُحَانَ اللَّهَ ﴾ وَل إر- (٣) كِر استغفارنو إر- (٣) كِر ﴿ سُبُحَانَ اللَّهَ ﴾ ايك إر- (الكافي)

(۳۱)قیدی کی رہائی کیلئے:۔

(۱) حضرت امام جعفر صادق الطبيع سے مروی ہے فر مایا: قیدی کو چاہیئے کہ ہر روز سات مرتبہ یہ دعا پڑھے، انشاءاللہ تعالی رہائی یائے گا:

﴿ يَا مَنُ كَفَانِي مِنُ جَمِيتُ عِ خَلُقِهِ وَ لَمُ يَكُفِنِي مِنُ خَلُقِهِ سِواْهُ يَا اَحَدُ مَنُ لا اَحَدَ

لَهُ إِنْقَطَعَ الرَّجَاءُ إِلَّا مِنْكَ يَا اَللَّهُ فَاغِثْنِي يَا غِيَاتَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ يَا اَمَانَ الْخَائِفِيُنَ STRTA IV COM

اَدُرِكُنِي بِحَالًالِ المُشَاكِلِ اَمِيْرِ المُؤْمِنِينَ ﴿ - (الجنة الواقيه للكفعميّ)

(۲) ان کلمات کا پڑھنا بھی بڑا مفید ہے:

﴿ اللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ الْعَفُو وَ الْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ فِي الدُّنْيَا وَ الْاحِرُةِ - (ايشاً)

نيز ﴿ لا إلهُ إلا اللهُ الْحَقُّ الْمُبِينَ ﴾ كا بكثرت براهنا بهى وارد بـ - (ايضاً)

﴿ بابْنَمْ ﴾

سال کے بارہ مہینوں کے مختصر مگر منتند اعمال وعبادات

﴿ يه باب ايك مقدمه اورباره فصول يرمشمل ب ﴾

مقدمه

اگرچہ علاء کرام کے اندراس سلسلہ میں فی الجملہ اختلاف ہے کہ اسلامی سال کا پہلاممینہ ماہ رمضان کے بامحرہ الحرام؟ مگر کتب عبادات کی جو میں ہوں ہے کہ سال کی جو ہمینوں میں اسے پہلاممینہ بھی رجب المرجب ہے کرتے ہیں اور غالباس کی دید ہیے کہ سال کے چارمحتر م مہینوں میں سے پہلاممینہ بھی رجب المرجب ہے جس میں کفار ہے بھی جنگ وجدال اور قل و قال کرنا حرام ہے جبکہ دوسرا ماہ شعبان، تیسرا ماہ رمضان اور چو تھامحرم الحرام ہے لہذا ہم بھی اعمال کا آغازا کی مقدس مہینہ کے اعمال سے کرتے ہیں۔ واضح ہو کہ رجب ہوی عظمت و جلالت کا مہینہ ہے اور میدا میر المؤمنین القیار کا مہینہ ہے اور شعبان پیغیمر اسلام کی عظمت و جلالت کا مہینہ ہے جسیا کہ پیغیمر اسلام کی ہوی ہے۔ اور اس مقدس مہینہ میں روز ہوکے کی ہوی فضیلت وارد ہوئی ہے چنانچ جھنرت امام موئ کاظم القیار ہے مروی ہے، فرمایا: رجب جنت میں رکھنے کی ہوی فضیلت وارد ہوئی ہے چنانچ جھنرت امام موئ کاظم القیار ہے مروی ہے، فرمایا: رجب جنت میں ایک روز دھ سے زیادہ سفید اور شہد سے زیادہ میشوں کی ہو ماہ رجب میں ایک روز دہ بھی رکھی کے خودودھ سے زیادہ سفید اور شعبات شیخ طوئی)

نیز انہی جناب ہے مروی ہے ،فرمایا: بیدہ مقدس مہینہ ہے کہ جس میں نیکیوں کی جزا بھی دوگئی ملتی ہے اور ہرائیوں کی سزابھی دوگئی ۔اور جواس میں ایک روز ہ رکھے تو جہنم اس سے سوسال کی مسافت تک دور ہو جاتی ہے اور جو تین روزے رکھے اس کے لیے جنت واجب ہو جاتی ہے ۔ (ایصنا و کتاب الزیار ہ) نیز اسے ہرروزے کے عوض ایک سال کے روزوں کا ثواب ملتا ہے۔(زا دالمعاد)اور جواس ماہ میں سات روزے رکھے اس پر جہنم کے ساتوں دروازے بند کر دیئے جاتے ہیں۔(ایصناً)

نیز دارد ہے کہ جو تفص کسی دید ہے روزہ ندر کھ سکے تو وہ ہرروز سوبار تسبیحات اربعہ پڑھے تو اسے روزہ رکھنے کا تواب اللہ ہوئے گا۔ای طرح چا رروزہ ہے لے کرپورے مہینہ کے روزے رکھنے کے بے پایاں ثواب وارد ہوئے وارد ہوئے ہیں اورای طرح اس مقدس مہینہ میں صدقہ دینے اور خیرات کرنے کے بھی بڑے ثواب دارد ہوئے ہیں اگر چدا یک روٹی ہی کسی مسکین کودی جائے۔(کتاب الدعاوالزیارہ)

﴿ فصل اول ﴾

مخفی نہ رہے کہ اس مہینہ کے اعمال دوقتم کے ہیں: ایک مشتر کہ ہیں جو کسی خاص شب و روز اور کسی خاص وفت کے ساتھ مخصوص نہیں ہیں۔ دوسرے وہ جواس کے اوقات مخصوصہ کے ساتھ مختص ہیں۔ تو ہم پہلے

ا مال مشتر کہ کا تذکرہ کرتے ہیں۔ بعد ازاں اعمال مخصوصہ کاذکریں گے انتاء اللہ SIBTAIN.COM رجب کے مقدی مہینہ کے اعمال مشتر کہ کا تذکرہ

اگر چیاں مقدس مہینہ کے مشتر کہا عمال بہت زیادہ ہیں مگرہم بنظراختصار بعض اہم اعمال کے ذکر پر اکتفا کرتے ہیں ۔

(۱) مروی ہے کہ محد بن ذکوان سجاد نے حضرت امام جعفر صادق الطبیح کی خدمت میں عرض کیا کہ مجھے کوئی الیسی دعاتعلیم دیں جس کے ذریعیہ سے خدا مجھے فائدہ پہنچائے! امام الطبیح نے فرمایا: رجب کے مہینہ میں ہر روز میددعا پڑھا کر:

یا مَنُ اَرُجُوهُ لِکُلِ خَیْرٍ وَ امَنَ سَخَطَهُ عِندُ کُلِ شَرِّ یَا مَنُ یُعُطِی الْکَثِیْرَ بِالْقَلِیْلِ اے وہ جس سے بر بھلائی کا امیدرکھا ہوں اور ہر برائی کے وقت اس کے فضب سے امان میں ہوں اے وہ جو تھوڈے کمل پر زیادہ اجر دیتا یہ ا مَن یُعُطِی مَن سَسَلَهُ یَا مَن یُعُطِی مَن لَهُ یَسْسَلُهُ وَمَن لَمُ یَعُوفُهُ. تَحَنُّناً مِنهُ ہے اے وہ جو ہر سوال کرنے والے کو دیتا ہے اے وہ جو اے ہی دیتا ہے جو سوال نہیں کرتا اور اے ہی دیتا ہے جو اے نہیں پہلے ان و رَحْدَمَةً اَعُطِنِسَى بِسَمَسُسَلَسَ لَيَسَاکَ جَسِمِیُعَ خَیْسِ الدُّنْسَا وَ جَمِینُعَ حَیْسِ الْاَحِرَةِ ال پہمی دَم وکرم کرتا ہے تو بچھ بھی میرے سال پر ونیا اورآ فرت کی تمام بھلائیاں اورنیمیاں عطا فرما دے اور میری طبرگاری پر ونیا و وَاصُسِ فَتُ عَنِدَی بِسَمَسُسَسَلَسَ لَیْسَ مُنْسَفَّلَتِ می إِیَّسَاکَ جَسِمِیْسَعَ شَرِّ اللَّهُ نُیْسَا وَ شَرِّ الْاَحِرَةِ فَاِنَّهُ غَیْرُ مَنْقُوْصِ آفرت کی تمام تکیفیں اور مشکلیں دور کرکے مجھے محفوظ فرما دے کیونکہ تو چتنا عطا کرے تیرے ہاں کی نہیں پڑتی

> مَا أَعُطَيُتَ وَ زِدُنِسَى مِنُ فَطُلِكَ يَا كُويُهُ. تواكريم مِحرراني فعل من اضافه فرار (كتاب الاقبال ابن طاؤول)

راوی کہتا ہے کہ اس کے بعد امام علیہ السلام نے اپنی ریش مبارک کو دائنی مٹھی میں لے لیا اور اپنی انگشت شہادت کو ہلاتے ہوئے نہایت گریہ وزاری کی حالت میں یہ دعاریا ہی:

يَا ذَا الْحَكُلُ وَ الْإِنْحُرَامِ يَا ذَالنَّهُ مُلَآءِ وَ الْجُودِ يَا ذَالْمَنِّ وَ الطَّولِ اللهُ الْمُحَدِّدِ يَا ذَالْمَنِّ وَ الطَّولِ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَا عَلَا عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْ

SIBTIALERILICOM

بالول كوآ گرجرام فرماوے

(٢) مرروزيد وعايره عاري جائے جوامام زين العابدين الفايل يراحة تھے:

یا مَنُ یَـمُلِکُ حَوَ آئِے السَّآئِلِیُنَ وَ یَعُلَمُ ضَمِیْرَ الصَّامِتِیْنَ لِکُلِّ مَسْئَلَةٍ مِّذُکَ سَمُ

حَاضِرٌ وَّ جَوَابٌ عَتِيُدٌ اَللّٰهُمَّ وَ مَوَاعِيُدُكَ الصَّادِقَةُ وَ اَيَادِيُكَ الْفَاضِلَةُ وَ رَحُمَةً ،

کان اے منتاہے اور اس کا جواب تیارہے اے معبو و تیرے سب وعدے بقیناً سچے ہیں تیری تعییں بہت عمدہ ہیں اور تیری رحمت

الُوَ اسِعَةُ فَاسُشَلُکَ اَنُ تُسَلِّیَ عَلَی مُحَمَّدٍ وَّ الِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تَقُضِیَ حَوَ آئِجِی لِلدُّنْیَا ﴿ اللهُ نُیا ﴿ اللهُ لَیَا ﴿ اللهُ اللهُ لَا اللهُ لَا اللهُ لَا اللهُ اللهُ لَا اللهُ اللهُ لَا اللهُ ا

وَ الْلَاخِرَةِ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيُرٌ. بِثناة برچيز پر قادر ہے۔

(m) ہر روز بید دعا ریاهی جائے جو حضرت امام جعفر صادق الطبی ریا ها کرتے تھے: خَابَ الْوَافِدُونَ عَلَى غَيْرِكَ وَ خَسِرَ الْمُتَعَرِّضُونَ إِلَّا لَكَ وَضَاعَ الْمُلِمُّونَ ما اميد ہوئے تيرے فير كى طرف جانے والے كھائے ميں رہے تيرے فيرے سوال كرنے والے جاہ ہوئے تيرے فير كے مال جائے بِكَ وَ اَجَـدُبَ الْـمُنْتَجِعُونَ إِلَّا مَنِ انْتَجَعَ فَضُلَكَ بَابُكَ مَفْتُوحٌ لِلرَّاغِيرُ ﴿ والے قط كا شكار ہوئے روزى طلب كرنے والے مكر و ونيس جنبول نے تير فعل سے رزق مانكا تيرا در الل رغبت كے ليے كھلا ب وَ خَيْرُكَ مَبُدُولٌ لِلطَّالِيئِنَ وَ فَضُلُكَ مُبَاحٌ لِلسَّآئِلِيُنَ وَ نَيُلُكَ مُتَاحٌ لِّلُامِا تیری بھلائی طلبگاروں کو بہت بہت ملتی ہے تیرا فعنل سائلوں کے لیے عام ہے اور تیری عطا امیدوں کے لیے آمادہ ہے وَ رِزْقُكَ مَبُسُوطٌ لِمَـنُ عَـصَـاكَ وَ حِـلُمُكَ مُعُتَرِضٌ لِمَنُ نَـاوَاكَ عَـالْكُكَ تیرا رزق مافرمانوں کے لیے بھی فراواں ہے تیری بردباری وخمن کے لیے ظاہر و عمیاں ہے گناہگاروں پر الْإِحْسَانُ إِلَى الْمُسِيُئِيُنَ وَ سَبِيلُكَ الْإِبْقَآءُ عَلَى الْمُعْتَدِيْنَ اَللَّهُمَّ فَاهْدِنِي هُدَى احمان کرنا تیرا مستقل فعل کیے اور ظالموں کو باتی کہنے دینا تیر شیوہ ہے اے معبود مجھے ہدایت یافتہ لوگوں کی الْـمُهُتَـدِيُـنَ وَ ارُزُقُنِـيُ اجُتِهَادَ الْـمُـجُتَهِـدِيُـنَ وَلاٰ تَـجُـعَلْنِيُ مِنَ الْعَافِلِيُنَ الْمُبُعَدِيُنَ راہ پر لگا اور مجھے کوشش کرنے والوں کی می کوشش نصیب فرما اور غافل و <u>دور ک</u>یے ہوئے لوگوں میں سے قرار نہ دے

وَاغُفِرُ لِنَى يَوُمَ اللَّهِ يُنَ. اوريم جزاص جُهي بشرد ___

(۴) مروی ہے کہ حضرت امام جعفر صا دق النظام نے معلی کو بید وعاتعلیم دی تھی کہ رجب میں ہر روز برا صاکریں:

ا ہے معبود میں جھے سے سوال کرتا ہوں کہ مجھے شکر گزاروں کا صبر ڈرنے والوں کاعمل اور عبادت گزاروں کا یقین عطا فرما اے معبود

لَكَ اللُّهُمَّ انْتَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ وَ انَّا عَبُدُكَ الْبَآئِسُ الْفَقِيْرُ انْتَ الْعَنِي الْحَمِيدُ وَ أ

تو بلندىز بزرگ يز ہے اور ميں تيرا حاجت مند اور بے مال ومنال بنده ہوں تو بے حاجت اور تعريف والا ہے اور ميں تيراپت مر بنده ہوں

الْعَبُـدُ اللَّذِلِيُـلُ اَللَّهُـمَّ صَـلِّ عَـلـى مُـحَمَّدٍ وَّ اللهِ وَامْنُنُ بِغِنَاكَ عَلَى فَقُرِي وَ بِحِلْمِكُمْ

ا معبودر حت مازل فرما محمد اور ان کی آل پر اور میری محتاجی پر اپنے مال سے میری ما دانی پر اپنی ملائمت سے اور اپنی قوت سے

عَلَى جَهُلِكُ وَ بِقُوِّيكَ عَلَى ضَعْفِي يَا قَوِيُّ يَا عَزِيْزُ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الِهِ میری کمزوری پر احسان فرما اے قوت والے اے زبردست اے معبود رحت فرما محمد اور ان کی آل پر جو پہندیدہ اوصیا و جانشین ہیں

الْآوُصِيَآءِ الْمَرُضِيِّيُنَ وَاكْفِنِيُ مَاۤ اَهَمَّنِيُ مِنُ اَمُر الدُّنْيَا وَ الأَخِرَةِ يَاۤ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ.

اور دنیا و آخرت کے اہم معاملوں میں میری کفانیت فرما اے سب سے زیادہ رقم کرنے والے۔ (مصباح استجد)

(۵) حضرت رسول خدا 📸 ہے مروی ہے، فرمایا: جو شخص ماہ رجب میں ایک سومرتبہ بیراستغفار

رُ عِي ﴿ اَسْتَغُفِرُ اللَّهُ الَّذِي لا إِلهُ إِلَّا هُوَ وَحُدَهُ لا شَرِيْكَ لَهُ وَ آتُونُ إِلَيْهِ ﴾ اوراس ك

بعد پھے صدقہ دے تو اللہ تعالیٰ اس پراپی تمام تر رحمت ومغفرت مازل کرتا ہے اور جو حیار سوبا رپڑھے تو خدائے تعالی اے سوشہیدوں کا جروثواب عطاکرتا ہے۔ (مصباح تقعمی)

(١) حضرت رسول خدا على سے رجب كے بورے مهينہ ميں ايك ہزار بار ﴿ لا إِلْهَ إِلَّا اللَّهُ ﴾

رِ منے کی بڑی فضیلت داردہ وئی ہے۔ (زاوالمعاد) SIBTAIN (فرائست فرائست کے اور است فرائست فرائست فرائست فرائست فرق اللّٰه و اَتُوبَ اِللّٰهِ ﴾ برا صنح دشام ستر بار ہوائست فرق اللّٰه و اَتُوبَ اِللّٰهِ ﴾ برا صنح اور اس کے بعد ہاتھ بلند کر کے

ایک بار﴿ اَللَّهُ مَا عُنْفِرُ لِیُ وَ تُبُ عَلَیَّ﴾ رِرُحنے کی بھی بہت فضیلت دارد ہوئی ہے کہاگر رِرُحنے والااس مہینہ میں مرگیا تو خدااس پر راضی ہو گااور جہنم کی آگ اے چھوئے گی بھی نہیں۔(ایضاً)

(۸)اس مہدینہ میں جمعرات، جمعہاور ہفتہ کے دن تین روز روزہ رکھنے کی بڑی فضیلت وارد ہوئی ہے۔

(٩) مروی ہے کہ حضرت امیر الطبی نے حضرت رسول خدا اللہ ہے تقل فر مایا ہے کہ آپ نے فر مایا

که جو خص رجب، شعبان اور ماہِ رمضان کی ہر رات اور ہر دن میں سورۂ الحمد، آیۃ الکری، سورۂ کافرون، سورهٔ

ا خلاص ، سورہ فلق اور سورہ ماس میں ہے ہرایک تین تین مرتبہ پڑھے اور پھر تین مرتبہ کہے:

سُبُحَانَ اللَّهِ وَالْحَمُدُ لِللَّهِ وَلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اكْبَرُ وَلاْ حَوُلَ وَلَاقُوَّةَ الَّا بِاللَّهِ

خدا باک ہے اور حمدای کے لیے ہے نہیں کوئی معبود سوائے اللہ کے اور اللہ ین رگ تر ہے اور نہیں کوئی حرکت و قوت مگروہ جو بلندین رگ

الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ - پُرِتْيْن مرتبكِ: اللَّهُمُّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ آل مُحَمَّدٍ بُرِتْيْن مرتبكِ: المصعبودا رحمت مازل فرما محمد اور آل محدّ برب

اَللَّهُمَّ اغْفِو لِللَّمُؤُمِنِيْنَ وَالْمُؤُمِنَاتِ اور بعدا زال چارسوم تبه كے: اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ رَبِّي وَ اَتُوبُ اللَّهِ . اے معودا مؤمن مردول اور مؤمز عولا ول كِيْش دے۔ بخشش چاہتا ہوں خداے اوراس كى طرف پائتا ہوں۔

}

پس خدائے تعالیٰ اس کے گناہ بخش دے گاچاہے وہ ہارش کے قطروں، درختوں کے پتوں اور دریاؤں کی جھاگ کے ہراہر بھی ہوں۔(زا دالمعا د)

(۱۰) ای طرح اس مقدس مہینہ میں ایک ہزار مرتبہ سور 6 قبل هو اللّٰہ احد پڑھنے کی بھی بڑی فضیلت وار دہوئی ہے۔ (کتاب الد عاوالزیا رہ)

(۱۱) خداتو فیق دے تواس مقدس مہینہ میں عمر ہُ مفردہ بجالایا جائے۔اور خانۂ خداکے پاس شب و روز نماز کے بعد سجدہ میں بیدعا بکثرت پڑھی جائے جیسا کہ حضرت امام زین العابدین الطی پڑھتے تھے:﴿عَـظُـمَ الذَّنُبُ مِنْ عَبُدِ کَ فَلْیَـنُحسُنِ الْعَفُو مِنْ عِنْدِکَ﴾ ۔(المصباح)

(۱۲) اس مقدس مہدینہ میں مختلف قتم کے نوافل کا پڑھ منا بھی وارد ہے جو کتب مبسوطہ میں مروی ہیں مہن

اراد فليرجع اليها. والله المرافق SIBTAIN.C

رجب كے مقدى مبينہ كے اعمال مخصوصه كاتذكره

اس مقدس مہینہ کے بعض مخصوص او قات کے مخصوص اعمال بھی بہت مروی ہیں جن میں ہے ہم یہاں بعض اہم اعمال کا تذکرہ کرتے ہیں ۔

(۱) رجب كى پہلى دات كے اعمال جے ليلة الرغائب كما جاتا ہے: -اورايك روايت ك

مطابق بیران چار راتوں میں ہے پہلی رات ہے جن میں جاگ کراللہ کی عبادت کرنامستحب ہے۔ دوسری بیمهٔ شعبان کی رات، تیسری عیدالفطر کی رات اور چوتھی عیدالاضیٰ کی رات ۔ (مصباح المجهجد)

(٢) جب آ دمى رجب كاچاند و كي في يدوعاير هے: ﴿ اَللّٰهُ مَّ اَهِلُهُ عَلَيْنَا بِالْاَمُنِ وَ الْإِيْمَانِ اے معبودا نیا چاند ہم پر طلوع كر امن ايمان

> وَ السَّلاَمَةِ وَ الْإِسُلاَمِ رَبِّي وَ رَبُّكَ اللَّهُ عَزَّ وَ جَلَّى - (ايضاً) سلامتى اوراسلام كساته (اسهام) تيرااور بيرارب وه الله عِزت وجلال والا

نيز اس ونت بيدوعا پڙھ جوحفرت رسول خدا 🏶 پڙھتے تھے:

﴿ اَللَّهُ مَ بَادِکُ لَنَا فِی رَجَبٍ وَ شَعْبَانَ وَ بَلِغُنَا شَهُرَ رَمَضَانَ وَ اَعِنَّا عَلَى الصِّيَامِ اے معبودا رجب اور شعبان میں ہم پر برکت نازل فرما اور ہمیں رمضان کے مہینے میں واطل فرما اور بھاری مددکر ون کے روزے

وَ الْقِيسَامِ وَ حِفْظِ اللِكسَانِ وَ غَضِ الْبَصَرِ وَلا تَجُعَلُ حَظَنَا مِنْهُ الْجُوعُ وَ الْعَطَشَ ﴾ - الت ك قيام زبان كوروكنا ورنگاين بي في ركن ين اوراس مين ين جارا حد محض بيوك بياس بى قرار ندو _ -

> شکم مادرہے پیدا ہوا ہے۔ (ایضاً) SIBTAIN.CO (۵) نمازعشاء کے بعدید دعا پڑھے جبیہا کہ حضرت امام محد تقی اللے ہے مروی ہے:

﴿ اَللّٰهُ مَّ إِنِّى اَسُئَلُكَ بِاَذَّكَ مَلِكٌ وَ اَذَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّقُتَدِرٌ وَ اَذَّكَ مَا تَشَاءُ مُ اے معود! میں تھے سے مانگا ہوں کہ تو با دشاہ ہے اور بے شک تو ہر چیز پر اقتدار رکھتا ہے نیز تو جو پھے بھی جا ہے وہ ہو جاتا ہے

يَّكُونُ اَللَّهُمَّ إِذِى اَتَوَجَّهُ اِلَيُكَ بِنبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحُمَةِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ يَا مُحَمَّدٍ اعْمِودامَيْن تيرے حضور آيا مول تيرے ني مُحرِّك ذريع جوني رحمت جي خداك رحمت موان يران كى آل پريامُمرٌ اعذا

يَسا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّى آتَسوَ جَسهُ بِكَ إِلَى اللَّهِ رَبِّكَ وَ رَبِّى لِيُنْجِعَ بِكَ طَلْمِيَةٍ ﴾ كربول مِن آپ كے داسطے سے خدا كے حضور آيا ہول جو آپ كا در ميرا رب ہتا كه آپ كى خاطر وہ ميرى حاجت پورى ہوجاۓ

اَللَّهُمَّ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ وَ الْآئِمَةِ مِنُ اَهُلِ بَيْتِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمُ اَنْجِحُ طَلِبَةِ فَيُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَالْمِلَانَ مِن اللَّهُ عَلَيْهِ وَالْمَالِقِينَ مِن اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَالمُنْ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ مَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ مَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ مَا اللَّهُ عَلَيْهِ مَلَالِقُولَ عَلَيْهِ فَيْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَالْمُلُولِةُ مَا اللَّهُ عَلَيْهِ مَا اللَّهُ عَلَيْهِ مَا اللَّهُ عَلَيْهِ مَا اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ مَا اللَّهُ عَلَيْهِ مَا اللَّهُ عَلَيْهِ مَاللَّهُ عَلَيْهِ مَا اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْ

اس کے بعدا پی حاجتیں طلب کرے۔

(۱) بعض علماء نے حصرت پیغمبر اسلام صلی الله علیہ و آلہ وسلم ہے ایک منقولہ روایت کی بنام رجب کی پہلی رات کونسل کرنامستحب قر ار دیا ہے۔

(۷) نیز رجب کی پہلی رات اور پہلی تا ریخ کو حضرت امام حسین الطبیح کی زیارت کرما بھی مستحب ہے جو با ب الزیارات میں بیان کی جائے گی انتا ءاللہ تعالی ۔

ماورجب كى يملى تاريخ

پہلی رات کی طرح رجب کا پہلا دن بھی بڑا ہا ہر کت دن ہے اوراس میں چند عمل مستحب ہیں: (۱) عنسل کرما:۔ چنانچے پیغیم راسلام علی ہے مروی ہے، فر مایا: جوشخص ماہ رجب کو درک کرے او راس کی پہلی تا ریخ ،اس کے وسط اور آخر میں عنسل کرے تو وہ گنا ہوں سے اس طرح پاک ہوجا تا ہے کہ کویا آج شکم مادر سے پیدا ہوا ہے۔ (مصباح کفعمی)

(۲) روزہ رکھنا: ۔مروی ہے کہ جو محض اس دن روزہ رکھے تو جہنم کی آگ اس ہے ایک سال کی

ما فت تک دور روو جاتی SIBTAIN.CO

(۳) حضرت امام حسین علیہ السلام کی زیارت کرنا :۔ چنانچے حضرت آمام جعفر صادق القلیلا ہے مروی ہے، فرمایا: جو شخص رجب کی پہلی تاریخ کو حضرت امام حسین القلیلا کی زیارت کرے تو خداوند عالم اسے بخش ویتا ہے۔ (بحار۔ کتاب المزار)

(۴) جناب سلمان محدی والی دی رکعت نماز دو دو رکعت کرکے پڑھی جائے جو کہ حضرت پیغیمرا سلام صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے انہیں تعلیم دی تھی۔ ہر رکعت میں سورۂ حمر کے بعد تین مرتبہ تو حیداور تین مرتبہ سورۂ کافرون کی تلاوت کی جائے اور سلام کے بعد ہاتھوں کو بلند کر کے کہا جائے:

﴿ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمُدُ يُحْيِيُ وَيُهِيثُ وَهُ نيس كولَ معود روائ الله كي جويكانه باس كاكولَ الى نيس حكومت اس كي اورحماى كي به وه زنده كرتا اورموت ديتا به و حَتَّى لَا يَسَمُونُ ثَيْ بِيدِهِ الْمُحَيُّرُ وَ هُو عَلَى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيُرُ ﴿ لَهُ كَالِهُمَ لَا هَانِعَ ايبازنده به جے موت نيس بھلائى اى كي باس به اوروه برچيز پرقدرت دكھتا ہے۔ الے معودا جو پجھ تُو و دے

لِــمَــآ اَعُسطَيُــتَ وَلا مُعُطِى لِـمَا مَنعُتَ وَلا يَنُفعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَهِّــ اسے كوئى روكنے والانہيں اور جو پھاتو روكے وہ كوئى دے نہيں سكتا اور نفع نہيں ديتاكى كا بخت سوائے تيرى دى ہوئى خوش بختى كـــ اس كے بعد ہاتھوں كومند پر پھيرے۔

پندره رجب كون بحى يجى نماز بجالائے ،ليكن بعد من دعار عقم موئے ﴿عَلَى كُلِّ شَيْعٍ قَدِيُرٌ ﴾ ك بعد يہ كبى: ﴿ إِلَهًا وَّاحِدًا أَحَدًا فَوُدًا صَمَدًا لَهُ يَتَّخِذُ صَاحِبَةً وَّلاً وَلَدُ ﴾ ـ

وہ معبود لگانہ میکا تنہا بے نیازے نہاں نے کوئی زوجہ کی نہاس کی کوئی اولادہے

نیز رجب کے آخری دن بھی یہی نماز اوا کرےاور دعایر ﷺ موئے ﴿عَلَى مُحُلِّ شَیْعِ قَلِدِیْرٌ ﴾

﴿ وَ صَلَى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ اللهِ الطَّاهِرِيْنَ وَ لا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ إلاَ بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ الْعَظِيْمِ اللهِ الطَّاهِرِيْنَ وَ لا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ إلاَ بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اللهِ الرادنين كوئى حركت وقوت مَروه جو بكند و يزرك خداس ب-

پھراپنے ہاتھوں کومنہ پر پھیرےاورا پی حاجت طلب کرے،اس نماز کے فوائد و پر کات بہت زیادہ ہیں پس اس سے خفلت نہ برتی جائے ۔ (زارالمعادیلی SIBTAIN . C

(۵) چونکہ معتبر روایت کے مطابق کے چی بین بمقام مدینۂ منورہ حضرت امام محمد باقر علیہ السلام کی ولا دت باسعادت ہوئی ہے۔ اس لیے محبانِ اہل بیت کواس دن امام کا جشن میلاد منانا چاہیئے اور شرق طریقہ پراپی روحانی مسرت وشاد مانی کا اظہار کرنا چاہیئے۔ اور بقولے ارجب المرجب برا البھے کوامام علی نقی علیہ السلام کی ولا دت ہوئی ہے جبکہ معتبر قول کے مطابق 16 ی الحجیز البھے کو واقع ہوئی ہے۔

٣رجب كى تاريخ

ہاں البتہ حضرت امام علی نقی القلیلا کی شہا دت ۳ رجب المرجب ۱۸<u>۳۶ جے بمقام سامراء واقع ہوئی ہے</u> لہذا میہ تاریخ شیعیان حیدر کراڑ کے لیے حزن وملال کا دن ہے اس لیے اس دن مجالس عزا منعقد کرکے امام القلیلا کا سوگ منانا چاہیئے ۔

بقولے ۱۰ رجب ۱۹<u>۹ جیل</u> بمقام مدینه منوره حضرت امام محمد تقی النظیادی و لا دت واقع ہوئی مگر معتبر روایت کے مطابق آپ کی و لا دت ۱۹ رمضان المبارک ۱۹۹<u>ج میں ہوئی ہے۔</u>

تيره، چوده اور پندره رجب المرجب كے اعمال

حضرت امام جعفر صادق الظیالات مروی ہے، فر مایا: اس امت محدید اس کوالیے تین مہینے دیے گئے ہیں جواس ہے پہلے کسی امت کوئیں دیئے گئے: (۱) رجب ۔ (۲) شعبان اور (۳) ماہ رمضان ۔ اور اس امت کوالی تین را تیں دی گئی ہیں جواس ہے پہلے کسی امت کوئیں دی گئیں: ۱۳، ۱۳، اور ۱۵ رجب و شعبان اور ماہ ورمضان کی را تیں ۔ اور اس امت کوئین ایس سورتیں دی گئی ہیں جواس ہے پہلے کسی امت کوئیں دی گئی ہیں: (۱) یا سیسن ۔ را تیں ۔ اور اس امت کوئین الی سورتیں دی گئی ہیں جواس ہے پہلے کسی امت کوئیں دی گئی ہیں: (۱) یا سیسن ۔ (۲) تبدر ک الذی بیدہ الملک (۳) قبل ہو الله احد ۔ فر مایا: پس جو خص ان تین مہینوں میں اس نے کویا تین افضل چیز وں کو یکجا کر دیا ہے ۔ عرض کیا گیا کہ کس طرح کیجا کرے؟ فر مایا: ان تین مہینوں میں سور کا تو حد اور اس کی رات کو دو رکعت نما زاس طرح پڑھے کہ ہر رکعت میں الحمد کے بعد سور کا لیسین، سور کا ملک اور سور کا تو حدا کی رات ای طرح چور کعت پڑھے اور ۱۵ کی رات ای طرح چور کعت بڑھے در مایا: جو خص میٹل کرے گا تو وہ کویا ان تین مہینوں کا فضل و شرف حاصل کرلے گا اور شرک کے سوا خدا

اس كابر گناه معاف كروكال التال التال

اس دن کو حضرت امیر المؤمنین علی الطبیخ کی عام الفیل کے ۲۰ سال بعد خانهٔ کعبہ کے اندرولادت کا شرف حاصل ہے اہذا ہے دن شیعیانِ حیدر کراڑ کیلئے بڑی روحانی مسرت وشادمانی کا دن ہے اورانہیں اس میں بڑے جوش وخروش کے ساتھ جشن میلا دمنانا چاہیئے اور شریعت کے حدود کے اندرر ہے ہوئے اپنی خوشی کا اظہار کرنا چاہیئے۔ نیز بیایام بیش (۱۳،۱۳)، ۱۵) میں سے پہلا دن ہے جن میں روزہ رکھنے کا بڑا اجمہ و ثواب وارد ہے اورا گرکوئی شخص عمل ام واؤڈ کرنا چاہے تو اس کیلئے تو ۱۳،۱۳ اور ۱۵ رجب کا روزہ رکھنا ضروری ہے اور بیمل مفاتے البخان اور زاد المعادوغیرہ میں تفصیل سے نہ کور ہے جوشن سے عمل کرنا چاہے وہ ان کتب مبسوطہ کی طرف میں جوشنے کی ر

۵ارجب المرجب كاون

اس رات مذکورہ بالاطریقہ پر چھ رکعت نماز پڑھنی چاہیئے اور حضرت امام حسین الطبیح کی زیارت کرئی چاہیئے اورعبا دے خدا میں شب بیداری بھی کرنی چاہیئے ۔ (زا دالمعاد) نیز اس دن مسل کرنا ، حضرت امام حسین الطبی کی زیارت کرنا اور جناب سلمان محمدی والی و ہ دس رکعت نما زیڑھنے کا بھی تھم ہے جس کا تذکر ہ شب اول رجب میں کیا جا چکاہے۔

نیز مزید چار رکعت نما زبدوسلام پڑھنااوراس کے بعد ہاتھ پھیلا کرید دعاپڑھنا بھی وارد ہے:

﴿ اَللّٰهُ مَ يَا مُلِلَّ اللّٰهِ مَلِلَ مَحْلًا جَبَّادٍ وَ يَا مُعِزَّ الْمُؤْمِنِيُنَ اَنْتَ كَهُفِي حِيْنَ تُعْيِينِي الْمَذَاهِبُ السَّعَ بَعُهِ مَا مُعَدِدًا لَهُ أَوْمِن اللّٰهُ وَمِنْ اللّٰهُ الْمِدُونِ اللّٰهِ مَعْدِدا اللهِ مَرْسُ كُوسُرُكُول كَرْخُ واللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰمِلْمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمِ الللّٰمُ اللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ اللّ

وَ اَنْتَ بَارِئُ خَلَقِی رَحْمَةً م بِدی وَقَدْ کُننتَ عَنُ خَلَقِی غَنِیًّا وَّلُولاً رَحْمَتُکَ لَکُنُتُ ا اورتوبی اپی رحت سے مجھے پیدا کرنے والا ہے جب کہتو میری پیدائش سے بے نیا زتھا اورا گرتیری رحت میرے ثامل حال نہ

مِنَ الْهَالِكِيْنَ وَ اَنْتَ مُوَيِّدِى بِالنَّسُرِ عَلْى الْحُدُابِي وَلَوُلا نَصُرُكَ إِيَّاىَ لَكُنْتُ موتی تو میں جاہ ہونے والوں میں موتا اور تو بی دشمنوں کے مقابل میری لفرے کرکے مجھے طاقت دینے والا ہے اوراگر تیری مدد

مِنَ الْمَفْضُوْحِيُنَ يَا مُرُسِلَ الرَّحْمَةِ مِنْ مَعَادِنِهَا وَمُنْشِيَّ الْبَرَكَةِ مِنْ مَوَاضِعِهَا عاصل ندموتی تویں رسواشدہ الوں المراس وتا الے النظر اول معالمت تصفیق الدورا برکت جگہوں سے برکت ظاہر

يَا مَنُ خَصَّ نَفُسَهُ بِالشَّمُوحِ وَ الرِفْعَةِ فَأُولِيَآ وَهُ بِعِزِّهٖ يَتَعَزَّزُونَ وَ يَا مَنُ وَضَعَتُ كَا مَنُ خَصَ لَا مَنُ وَضَعَتُ كَا مَنُ وَضَعَتُ كَا مَنُ وَصَعَتُ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَدوستال كاعزت ك دريع عزت دار

كَهُ الْمُلُوكُ نِيْسَ الْمَدَلَّةِ عَلَى اعْنَاقِهِمُ فَهُمُ مِنُ سَطَوَ اتِهِ خَآئِفُونَ اَسُئَلُكَ بِكَيْنُونِيَّةِ كُلُّ إِن اورا ہے وہ جس كى غلامى كاطوق إدشاموں نے اپن گردنوں میں ڈال ركھا ہے اور وہ اس كے دہراوں سے ڈرتے ہيں مميں تھ

الَّتِسى الشُتَفَ قُتَهَا مِنُ كِبُوِيَاآئِكَ وَ اَسْسُلُكَ بِكِبُوِيَآئِكَ الَّتِى الشُتَفَقَّتَهَا مِنُ عِزَّتِهِ سے موال كرنا مول تيرى آفرينش كے ذريع جوثو نے اپن بردائی سے ظاہر كيا اور موال كرنا مول تيرى بردائی كے ذريع جے تونے

وَ السُسُلُكَ بِعِزَّةِكَ الَّتِي السُتَويُتَ بِهَا عَلَى عَرُشِكَ فَخَلَقُتَ بِهَا جَمِيعِ خَلَقِيًّ اپی عزت سے نمایاں کیا اور سوال کرتا مول تیری عزت کے ذریع جس سے تو اپنے عرش پر عاوی ہے پس اس سے تو نے ساری

فَهُمُ لَكَ مُذُعِنُونَ أَنْ تُصَلِّي عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ أَهُلِ بَيْتِهِ

مخلوق کو پیدا کیا جوسب تیرے فرمانبر دار ہیں ہے کہ تو رحمت فرماحضرت محمداً وران کے اہل بیٹ پر۔

مروى ہے كہ جوغم زده شخص بينماز اور بيد دعارا ھے گا توخداوند عالم اس كارنج وغم دوركردے گا۔ (المصباح)

۲۵ر جب المرجب

اس دن المراج ميں بمقام زندانِ بغداد صفرت امام موئ كاظم الطين كى شهادت واقع ہوئى ۔اس ليے بيد دن اہل بيت نبوت اوران كے مام ليواؤں كے ليے براے حزن و ملال كا دن ہے لہذا اس دن مجالس عزا كا انعقاد كرما چاہئے اور اس مظلوم كے حالات زندگى اوران بر وُھائے جانے والے مظالم كا تذكرہ كرما چاہئے اور ظالموں كو بے نقاب كرما چاہئے ۔ ﴿ لا يُحِبُّ اللّٰهُ اللّٰجِهُوّ بِالسُّوّءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلاَّ مَنْ ظُلِمَ ﴾ ۔

٧٤ر جب المرجب، شب وروز كا عمال

ید رات سال بھر کی منبرک راتوں میں ہے ایک ہے کیونکہ اس کی صبح کو حضرت خاتم الانبیاء محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مبعوث اور مامور ہر سالت ہوئے اور اس رات کے چند اعمال ہیں:

(۱) حضرت ا مام محد تقی الطبی ہے مروی ہے، فر مایا: ماہ رجب میں ایک ایسی رات ہے جوان تمام

چیزوں ہے بہتر ہے جن پر ہوری چیک ہے اوروہ ستا ہو کی ارائے ہے جس کی ان ہے جس کی صبح کو صفرت رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم مبعوث ہر سالت ہوئے اوراس رات میں عمل کرنا ساٹھ سال کے عمل کے ہما ہر ہے۔ پھر عمل کی تفصیل بیان کرتے ہوئے فرمایا کہ آ دمی نماز عشاء پڑھ کر سوجائے پھر نصف شب ہے پہلے اٹھ کر بارہ رکعت نماز دو دورکعت کرکے پڑھے اور ہر رکعت میں سورہ حمد کے بعد قرآن کی آخری مفصل سورتوں میں ہے کوئی سورہ پڑھے (سورہ حمد، سورہ فلق ، سورہ والناس ، سورہ تو حید، سورہ کافرون اور سورہ قدرسات سات بار پڑھے اور

سب کے آخر میں میدعارا ھے:

﴿ اَلْتَحَمُّدُ لِللَّهِ الَّذِي لَمُ يَتَّخِذُ وَلَدًا وَ لَمُ يَكُنُ لَّهُ شَرِيُكُ فِي الْمُلُكِ وَلَمُ يَكُنُ لَهُ وَلِيُّ اللَّهُ وَلِيُّ اللَّهُ لَكُو اللَّهُ عَلَيْكُ لَلَهُ وَلِيُّ اللَّهُ وَلِيُّ اللَّهُ اللَّهُ وَلِيُّ اللَّهُ وَلِيُّ اللَّهُ اللَّهُ وَلِيُّ اللَّهُ اللَّ

مِّنَ اللذُّلِّ وَ كَبِّرُهُ تَكُبِيرًا اَللَّهُمَّ إِنِّى اَسْسُلُكَ بِمَعَاقِدِ عِزِّكَ عَلْى اَرُكَانِ عَرُشِكُ كا عامى مواورتم اس كى بردائى خوب بيان كروا معود! بن موال كنا مول تحدے عرش پر تيرے مقامات عزت كے واسطے سے

arana ka arang arang

وَ مُسنَتَهَ لَى السرَّ حُسمَةِ مِسنُ كِتَسابِكَ وَ بِسِاسُهِ كَ الْاَعْظَمِ الْاَعْظَمِ الْاَعْظَمِ الْاَعْظَ اوراس انتهائی رحمت کے واسطے سے جو تیرے قرآن میں ہاور بواسط تیرے ام کے جو بہت بڑا بہت بڑا بہت ہی بڑا ہے

وَ ذِكْرِكَ الْاعْلَى الْاعْلَى الْاعْلَى بِكَلِمَ بِكَلِمَ النَّآمَّاتِ أَنْ تُصَلِّى عَلَى مُحَمَّدٍ بواسط تیرے ذکر کے جو بلند تر بلند تر بہت ہی بلند تر ہے اور بواسط تیرے کال کلمات کے سوالی موں کرتو رحمت فرماحضرت محمداً ور

وَّ الِهِ وَ اَنُ تَفُعَلَ بِسَىٰ مَا آنُتَ اَهُلُهُ ﴾ - ان كاآل يراور بحدے وه سلوک فرماجو تيرے شايانِ شان ہے -

اس کے بعد جو جاہے دعاریہ ھے۔ (مصباح شیخ طوی)

(۲) اس رات اوراس ون حضرت امیر القلیلا کی مخصوص زیارت پڑھنا بڑی فضیلت رکھتا ہے۔ وہ زیارت باب الزیارات میں ذکر کی جائے گی انتا ءاللہ۔

اگرچدای شب وروز کے لیے تین زیارتیں منقول ہیں گربہتریہ کہ زیارت رجیبہ پڑھی جائے جو ﴿ اَلْحَدَمُدُ لِلْهِ الَّذِی اَلْمُهُ اَلَى مُنْعُهُ اَوْلِيَا لِهِ اِلْدِی اَلْمُهُ اَلَّهُ اِلْدِی اَلْمُهُ اَلْمُ اَلْدِی اَلْمُهُ اَلْمُ اَلْمُ اللّٰهِ اللّٰذِی اَلْمُهُ اَلْمُ اَلْمُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰذِی اَلْمُهُ اَلْمُ اللّٰمِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰذِی اَلْمُهُ اَلْمُ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰمِ اللّ

(س) ستائیس رجب کا دن عید کا دن ہے۔ای دن حضرت رسول خدا اللہ مبعوث برسالت ہوئے اور اس دن وحی نبوت کا آغاز ہوا۔اس دن چند عمل مستحب ہیں:

- (۱) عشل کرنا۔
- (۲) روزہ رکھنا کہ بیسال کے ان چار دنوں میں ہے ایک دن ہے جن میں روزہ رکھنا ایک انتیازی شان رکھتا ہے۔ چنانچہاس دن کاروزہ سترسال کے روزہ کا ثواب رکھتا ہے۔ (مصباح)
 - (۳) حضرت رسول خدا 🗱 اورحضرت امير المؤمنين الظيلا كي زيارت كرما 🗕
 - (١٧) كبثرت درودشريف يراهنا ـ (مفاتح البنان)
- (۵) اس دن اس دعا کاریا هناخصوصی فضیلت کا حامل ہے۔مروی ہے کہ حضرت امام موک کاظم الطبیع السامی کی السامی کا خطم الطبیع کی السامی کا میں دعاریا ہی تھی کیونکہ وہ ۲۷ رجب کا دن تھا۔بہر حال وہ دعا بیہ ہے:

﴿ يَا مَنُ آمَرَ بِالْعَفُو وَ التَّجَاوُزِ وَ ضَمَّنَ نَفُسَهُ الْعَفُوَ وَ التَّجَاوُزَيَا مَنُ عَفَى وَ تَجَاوَزُ ے وہ جس نے عفوو درگز رکا تھم دیا ہے اور خود کوعفوو درگز رکا ضامن قرار دیا ہے اے وہ جس نے معاف کیا اور درگز رکی مجھے معافی دے اُعُفُ عَنِيى وَ تَحَاوَزُ يَا كَرِيْمُ اَللَّهُمَّ وَقَدُ اكُدَى الطَّلَبُ وَ اَعْيَتِ الْحِيْلَةُ وَ الْمَذُهَبُ اور درگز رفرما اے بزرگتر اے معبود! طلب نے مجھے مشقت میں ڈال دیا جارہ سازی ختم اور ماستہ بند ہوگیا آرزو ئیں پرانی ہوئیں اور وَ دَرَسَتِ الْأَمَالُ وَ انْقَطَعَ الرَّجَآءُ إِلَّا مِنْكَ وَحُدَكَ لا شَرِيْكَ لَكَ اَلْلَهُلَجَالِيِّي شُبُلَ امید ٹوٹ گئی مگر چھ سے نییں ٹوٹی تو ہی میکا ہے تیرا کوئی ساجھی نہیں اے معبود! میں اپنے مقاصد کے رائے تیری طرف ہوئے یا تا ہوں الْـمَـطَالِـبِ اِلَيُكَ مُشُرَعَةً وَ مَنَاهِلَ الرَّجَآءِ لَدَيُكَ مُتُرَعَةً وَ اَبُوَابَ الدُّعَآءِ لِمَنُ دَعَا اورا مید کے سرچشے تیری طرف لبالب مجرے ہوئے ہیں اور جو تھو سے دعا کرے اس کیلئے دعا کے دروا زے کھلے ہوئے ہیں تھوسے مدد کے مُـفَتَّحَةً وَّ الْإِسْتِعَانَةَ لِـمَن اسْتَعَانَ بكَ مُبَاحَةً وَّ اَعُلَمُ اَنَّكَ لِدَاعِيُكَ بمَوْضِع إجَ دروازے کھے ہوئے ہیں جھے سے مدد مانگنے والے کے لیے تیری مددعام ہے اور میں جا نتا ہوں کہ بے ٹنگ تو پکارنے والے کیلئے مرکز قبولیت وَّ لِلصَّارِ خِ الَّيْكَ بِشَرُ صَلِهِ إِغَاثَةٍ قَ انَّ فِي اللَّهُفِ إِلَى جُورٍ كُ وَ الضَّمَانِ بِعِدَتِكَ عِوَ ہے تو فریا دکرنے والے کیلئے دا دری کا محکانہ ہے اور یقیناً تیری عطامیں رغبت اور تیرے وعدے پر اعتما دی ہے جو کنجوسوں کی طرف سے مِّنُ مَّنُعِ الْبَاخِلِيْنَ وَ مَنُدُوْحَةً عَمَّا فِي آيُدِي الْمُسْتَأْثِرِيْنَ وَ آنَّكَ لا تَحْتَجِبُ عَنُ خَلْقِكَ ر کاوٹ کا مداوا اور مالدروں کے قبضے میں آئے ہوئے مال پر رہے سے بچانے والا ہے بے شک تو اپنی مخلوق سے اوجھل ٹیٹل ہے مگر بات یہ ہے إِلَّا أَنُ تَـحُجُبَهُمُ الْاَعْمَالُ دُوْنَكَ وَ قَدُ عَلِمُتُ أَنَّ اَفْضَلَ زَادِ الرَّاحِلِ الديكَ عَزُمُ إِرَادَ کران کے ہرے اعمال نے ان کی آئٹھوں پر پر دہ ڈالا ہوا ہے اور میں جا نتا ہوں کہ تیری طرف سفر کرنے والے کا بہترین زادراہ ستجھے با يُّخُتَارُكَ بِهَا وَقُدُ نَاجَاكَ بِعَزُمِ الْإِرَادَةِ قَلْبِيُ وَ اَسْئَلُكَ بِكُلِّ دَعُوةٍ دَعَاكَ بِهَيَلَلْفُئَآيَ لینے کا پکا را دہ بی ہے ہے شک یکسوئی کے ساتھ تیری یا دمیں لگا ہوا ہے اور میں چھ سے سوال کرتا ہوں الیبی دعا کے ذریعے جو کسی امیدوا رقے اَمَلَهُ اَوْ صَارِحٌ اِلَيُكَ اَغَثُتَ صَرُ خَتَالُوْ مَلْهُوفْ مَّكُرُوبٌ فَرَّجُتَ كَرُبَهَ اَوْ مُذُنِبٌ کی اور قبول ہوئی یا ایسے فریادی کی می فریاد جس کی تو نے دادری کی ہے یا اس رنجیدہ دکھی کی می فریاد جس کی تکلیف تو نے دور کی ہے یا ایسے خَـاطِئٌ غَفَرُتَ لَهُ أَوُ مُعَـافًـي ٱتُـمَمُتَ نِعُمَةَكَ عَلَيْهِ اَوُ فَقِيُرٌ اَهُدَيْتَ غِنَاكَ اِلَيْهِ وَ لِتِلْه خطا کارگنٹھارکی می پکار جھے تو نے بخش دیا ہے یا ایسے ہا آ رام جیسی دعا جھے تو نے سب تعتیں عطا کی ہیں یا اس متاج جیسی دعا جھے تو نے دولت

الـدُّعُوهَ عَلَيُكَ حَقٌّ وَّ عِنْدَكَ مَنْزِلَةٌ اِلَّا صَلَّيْتَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَ قَضَيُ عطا کی ہے اورالیں دعاجس نے چھے پر اپناحق پیدا کیا اور تیرے حضورگرای ہوئی وہ بھی ہے کہ تو رحمت ما ز<mark>ل فرما محمدُ و آل محمدُ</mark> پر اور دنیا و حَوَ آئِجِيُ حَوَ آئِجَ الدُّنْيَا وَ الْأَخِرَةِ وَ هَذَا رَجَبٌ إِ الْمُرَجِّبُ الْمُكَرَّمُ الَّذِي آكُرَ مُتَنَا بِهَ آخرت میں میری تمام حاجات پوری فرما اور یہ ماہ رجب ہے کہ عزت و شان والا ہے جس سے ٹو نے ہمیں سرفراز کیا جو اَوَّلُ اَشُهُرِ الْحُرُم اَكُرَمُتَنَا بِهِ مِنُ مِ بَيْنِ الْاُمَـم يَا ذَ الْجُودِ وَ الْكَرَم فَنَسُئَلُكَ بِإ حرمت والے معینوں میں پہلا ہے اس سے تونے ہمیں امتوں میں سے متاز کیا ہے اسے عطا و پیخشش کے مالک پس میں سوالی ہوا اس کے وَ بِاسُـمِكَ الْاَعْظَمِ الْاَعْظَمِ الْاَعْظَمِ الْاَجْلِ الْاَكْرَمِ الَّذِي خَلَقْتَهُ فَاسْتَقَرَّ فِي ظِلِّكَ فَا واسطے سے اور تیرے ام کے ذریعے جوبہت بڑا بہت بڑا بہت ہی بڑا ہے روش تر اور برزرگی والا کرجے تو نے خلق کیا ہی وہ تیرے بلند سما ہے يَخُرُجُ مِنْكَ إِلَى غَيُـرِكَ أَنُ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ أَهُلِ بَيْتِهِ وَ تَجْعَلَنَا مِنَ الْعَامِلِيُنَ میں گھہرا اور تیرے ہاں سے کسی اور کی طرف نہیں گیا میں سوالی ہوں کہ رحمت فرما محمد پر اور ان کے باکیز ورز اہل بیت پر اور ہمیں اپنی بِطَاعَتِكَ وَ الْأَمِلِيُّنَ فِيُ وِبِشَفَاعِتِكَ اللَّهُمَّ وَاهْدِنَا إِلَى سَوَلَ السَّبِيُلِ وَ اجْعَلُ مَقِيلًا فرما نبرداری پر کار بنداورا پی شفاعت کا طلبگاراورا میدوارینا و سامیعبود! جمیس راه راست کی طرف مداین فرما اور بهاری روزمره زندگی عِنُدَكَ خَيْرَ مَقِيبُلِ فِي ظِلَّ ظَلِيْل فَإِنَّكَ حَسُبُنَا وَ نِعُمَ الْوَكِيْلُ وَالسَّلامُ عَلى عِبَا کواچی جناب سے بہترین زندگی قرار دے جوتیرے بلندر بن سامیہ میں ہو پس تو ہمارے لیے کافی اور بہترین کام بنانے والا ہے اور سلام ہو الْـمُـصُـطَفَيُـنَ وَ صَـلَواتُهُ عَلَيُهِمُ اَجُمَعِيُنَ اللَّهُمَّ وَ بَارِكُ لَنَا فِي يَوْمِنَا هٰذَا الَّذِي فَضَّلْتَهُ اس خدا کے پینے ہوئے افراد پر اوران سمھوں پر اس کی رحمت ما زل ہوا ہے معبود! آج کادن جارے لیے مبارک فرما کہ جے تو نے فضیلت وَ بِكُرَامَةِكَ جَلَّلُتَهُ وَ بِالْمَنُولِ الْعَظِيْمِ الْاعْلَى ٱنْزَلْتَهُ صَلَّ عَلَى مَنُ فِيُهِ اللي عِبَادِكَ دی اورا پی مهر بانی سے اس کوزیباکش دی اوراہے بلندمر مقام پر اٹا راہے اس دن میں اس ذات پر رحمت فرما جھے تو نے اپنے بندوں کی اَرُسَلْتَهُ وَ بِالْمَحَلِّ الْكَرِيْمِ اَحُلَلْتَهُ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَيْهِ صَلوةً دَآئِمَةً تَكُونُ لَكَ شُكُرًا وَ لَنَا طرف رسول بنا كربهيجا اورائع زت والى عكريرا ناراب المعبودا رحمت فرما آنخضرت كرجميشه كى رحمت كه جوتير يشكر كاموجب بين ذُخُرًا وَّ اجْعَلُ لَّنَا مِنُ اَمُرِنَا يُسُرًا وَّ انْحِتِمُ لَنَا بِالسَّعَادَةِ اِلَى مُنْتَهَى اجَالِنَا وَ قَدُ قَبَلْتَ اور ہمارے لیے ذخیرہ ہواور ہمارے کاموں میں آسمانی وسہولت قراردے اور ہماری زند گیوں کوسعادت مندی و نیک بختی کے ساتھ انجام پر

الْيَسِيسُرَ مِنُ اَعْمَمَالِنَا وَ بَلَغُتَنَا بِرَحُمَةِ كَ اَفْضَلَ امَالِنَاۤ إِذَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَّ صَلَّمُ الْمَالِنَاۤ إِذَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَّ صَلَّمَ عَلَى عَلَى عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَقَدَرت رَحَمَةً كَهُ إِن اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الله وَسَلَمَ ﴾ - (كتاب الاقبال والمصباح) الله عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الله وَسَلَمَ ﴾ - (كتاب الاقبال والمصباح) جاور درو دوسلام ، ومُحمَّا وران كى ياكرو آل ير.

رجب كا آخرى دن

اس دن عسل کرنا ، روزه رکھنااور جناب سلمان محمدیؓ والی و مخصوص نماز پڑھنا جس کا تذکر ہ وطریقہ کم رجب کے اعمال میں کیاجا چکا ہے بڑی فضیلت رکھتا ہے۔و اللّٰہ المعوفق۔

SIBTAIN.COM

ما وشعبان المعظم كي فضيلت ادراس كے اعمال كا تذكره

(۱) ماہ شعبان بڑی عظمت وجلالت والامہدینہ ہے اور بیرحضرت پیغمبراسلام 🧱 کامخصوص مہدینہ ہے۔ آ یے نے فرمایا: جو خص اس مقدس مہینہ میں ایک روزہ بھی رکھے گاتو اس کے لیے جنت واجب ہو جائے گی۔ (مفاتع الجنان)

(۲) مروی ہے کہ جب شعبان کا جاندنظر آجاتا تھا تو حضرت رسول خدا 📽 کا مناوی ندا کرتا تھا: اے بیر ب والوا بیر میرامبیدر ہے خداای جندہ پر الم فرمائے جو بیر ہے اس مبید میں روزہ رکھ کرمیری اعانت کرے۔حضرت امیر الظاملیٰ بیان کرتے ہیں کہ جب ہے میں نے پیغیبر اسلام 🛍 کے مناوی کی بیرندائی ہے میں نے بھی ماہ شعبان کا کوئی روز ہ تر کے بیس کیااور نہ ہی آئندہ تر کے کرنے کاارا دہ ہے۔ (زا دالمعا دوغیرہ) (۳) حضرت امام جعفر صادق الطفيلا بيان كرتے ہيں كہ جب شعبان كا جاند نظر آ جانا تھا تو حضرت امام زین العابدین الطین اسے اصحاب واحباب کوجمع کر کے فرمایا کرتے تھے کہتم جانتے ہو کہ بیہ کون سامہینہ ے؟ پھراپنے آباءواحداد کے سلسلۂ سند ہے حضرت رسول خدا 🏙 کا بیار شادُقل فرماتے تھے کہ بیرمیرا مہینہ ہے لہذا جو خص میری محبت اورتقر ب خدا کی نبیت ہے اس میں روزہ رکھے گا تو خدا اسے اپنا قرب عطا فرمائے گا اور قیا مت کے دن اسے عزت و تو تیر ملے گی اور جا گیر جنت اس کے لیے واجب ہوجائے گی۔ (مصباح تقعمی) (۳) پیغیبر اسلام 🕮 ہے مروی ہے فرمایا کہ شعبان میرا خاص مہینہ ہے لہٰذائم اس میں مجھ پر اور میری آل پر درودجھیجو ۔ای لیےاس مقدس مہینہ کوشفاعت کامہینہ بھی کہاجاتا ہے کیونکہ آنخضرت 📸 کاارشاد ہے کہ جو تحص اس مہینہ میں آپ رواور آپ کی آل پر درو دوسلام جیج گاتو آپ اس کی شفاعت فرما کیں گے۔ (مجمع الحينات)

ماہ شعبان کے اعمالِ مشتر کہ کابیان

رجب کی طرح اس مقد س دید کے اعمال بھی دوقتم کے ہیں: (۱) مشتر کداور (۲) مخصوصد تو یہاں پہلے
اسکے چندا ہم اعمال مشتر کد کا تذکرہ کیا جاتا ہے۔ بعدا زال چندا ہم اعمال مخصوصد کا تذکرہ کیا جائیگا انتاء اللہ۔

(۱) اس ماہ میں بہترین عمل صدقہ دینا اور استغفار کرہا ہے چنا نچہ حضرت امام جعفر صادق النظیلا ہے
مروی ہے کہ جو شخص اس مقدس مہینہ میں کچے صدقہ دینو خدا اس کی اس طرح نشو ونما کرتا ہے جس طرح تم اپنے
جانور کے بچہ کی کرتے ہو حتی کہ جب قیامت کے دن صدقہ دینے والا اس سے دوجیار ہوگا تو وہ کوواحد کی مانند ہو
چکا ہوگا۔ (مصباح المجم دوزا دالمعاد)

(۲) دوسرا بہترین عمل استغفار کرنا ہے۔ چنانچہ مروی ہے کہ اس مہینہ میں ستر مرتبہ استغفار کرنا دوسرے عام مہینوں میں ستر ہزا رہا راستغفار کرنے کے ہرا ہر ہےاور پھر بیراستغفار دوطرح واردہے:

(١) ﴿ اَسْتَغُفِرُ اللَّهَ وَ اَسْتُلُهُ التَّوْبَةَ ﴾ سرّ بار_(زاوالمعاد)_

(٢) ﴿ اَسْتَغُفِهُ اللّٰهَ اللّٰهِ اللّٰهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِي اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اله

(٣) اس بورے مهینہ میں ایک ہزارہار ﴿ لا إللهَ إلا اللّٰهُ وَلا نَعُبُدُ إلاَ إِيَّاهُ مُخْطِطِينَ لَهُ اللّٰهِ وَلا نَعُبُدُ إلاَّ إِيَّاهُ مُخْطِطِينَ لَهُ اللّٰهِ وَلَوْ كَوْهَ اللّٰهُ عُبُدُ إلاَّ إِيَّاهُ مُخْطِطِينَ لَهُ اللّٰهِ يَهُ وَلَوْ كَوْهَ اللّٰهُ عُرُورَ اللّٰهِ عَلَى بِرُى فَضِيلت وارد بوئى ہے يہاں تک وارد ہے کہ ہزار مہینہ کی عوامت کا اورائی علی سے انشاء عبادت کا تواب اس کے مامد اعمال میں کھا جائے گا اورائیک ہزار مہینہ کے گناہ معاف کروئے جائیں گے انشاء الله ۔ (ایفناً)

(۴) ہروایت حضرت امیر الظاہر تی تغیبراسلام اللہ ہے مروی ہے کہ ماہ شعبان کی ہرجمعرات کوآسان سجائے جاتے ہیں البذا جوش اس ون اس طرح دور کعت نماز پڑھے کہ ہررکعت میں الحمد کے بعد ایک سومر تنبہ قل حواللہ احد پڑھے اور سلام کے بعد ایک سومر تنبہ درود شریف پڑھے تو خدا اس کی دینی اور دنیاوی سوحاجتیں پوری کرےگا۔ (ایسناً)

(۵) یہ دعا حضرت امام زین العابدین الفیلائے ہمروی ہے اور ماہ شعبان میں ہرروز زوال کے وقت اور نیم استعبان کی رات راھی جاتی ہے:

*********************** ٱللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ شَجَرَةِ النُّبُوَّةِ وَ مَوْضِعِ الرِّسَالَةِ وَ مُخْتَلَفِ ا ہے معبو دارحت ما زل فرمامحداً ورآل محمد یر جونبوت کا درخت رسالت کا مقام فرشتوں کی آمد ورفت کی جگه علم کے فرزانے اور خانہ وحی الْمَلَائِكَةِ وَ مَعُدِن الْعِلْمِ وَ اَهُلِ بَيْتِ الْوَحْيِ اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ ال مُحَمَّدِ میں رہنے والے ہیں اے معبو دار حمت ما زل فر مامحمہ وآل محمہ پر جوبے پناہ پھنوروں میں چلتی ہو کی گشتی ہیں کہ پچ جائے گا جواس میں الْـفُـلُكِ الْـجَـارِيَةِ فِـي اللَّجَجِ الْغَامِرَةِ يَامَنُ مَنُ رَّكِبَهَا وَ يَغُرَقُ مَنُ تَرَكَهَا الْمُتَقَدِّمُ لَهُمُ سوا رہواا ورغرق ہوگا جواسے چھوڑ دےان سے آ گے نگلنے والا دین سے خارج اوران کے پیچھے رہ جانے والا مابو دہو جائے گا اوران مَّارِقٌ وَّ الْمُتَاجِّرُ عَنْهُمُ زَاهِقٌ وَّ اللَّازِمُ لَهُمُ لأَحِقُّ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدِ کے ساتھ رہنے والا حق تک پہنچے گا اے معبودا رحمت نازل فرما محمدٌ و آل محمد * پر جو پائدار جائے پناہ الُكَهُفِ الْحَصِيُنِ وَ غِيَاثِ الْمُضَطَرِّ الْمُسْتَكِيُنِ وَ مَلْجَاِ الْهَارِبِيُنَ وَ عِصْمَةِ اور پریشان و بے جارہ کی فریاد کو چنچنے والے بھاگے ڈرتے کے لیے جائے امان اور ساتھ رہے والوں الْـمُعْتَصِمِيْنَ اللَّهُمَّ طَلَّ عُلَى مُحْمَدٍ وَ إِلْ مُحَمَّدٍ صَلُوةٌ كَثِيْرُةً تَكُونُ لَهُمُ رضًا وَ لِحَقّ کے گلہدار جیں اے معبود! رحمت نازل فرما محمدٌ و آل محمدٌ مريب بہت رحمت كه جوان كے ليے وجه خوشنودي اور محمدٌ و آل مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ اَدَآءً وَّ قَضَآءً ، بحَوُل مِّنُكَ وَ قُوَّةٍ يَّا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى ا محمد کے وا جب حق کی اوا لیکی اور اس کے بورا ہونے کا موجب ہے تیری قوت وطاقت سے اے جہانوں کے مرورد گارا مے معبود! مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدِ إِ الطَّيِّبِيُ لَ الْاَبُرَارِ الْاَحْيَارِ اللَّذِيْنَ اَوْجَبُتَ حُقُوفَهُمُ وَ فَرَضُتَ رجمت نا زل فرما محمداً ورآل محمد مرجو یا کیز ورخوش کردار نیکو کار بین جن کے حقوق تو نے واجب کیے اور تو نے ان کی اطاعت اور طَاعَتَهُمُ وَ وَلاٰيَتَهُمُ ٱللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّاعُمُرُ قَلْبِي بِطَاعَةِكَ وَلاٰ ووی کوفرض قر اردیا ہےا ہے معبود! رحمت ما زل فر مامحمداً ورآل محمد پراور میر ہےدل کواپنی اطاعت سے آبا دفر مااپنی ما فر مانی سے مجھے تُخُزنِيُ بِمَعُصِيَةِ كَ وَارُزُقُنِيُ مُوَاسَاتَ مَنُ قَتْرُتَ عَلَيْهِ مِنُ رِّزُقِكَ بِمَا وَسَّعُتَ عَلَيَّ مِ ر سواوخوار نہ کراورجس کے رزق میں تو نے تنگی کی ہے جھے اس سے ہدر دی کرنے کی توفیق دے کیونکہ تو نے اپنے فضل سے میرے فَضُلِكَ وَ نَشَرُتَ عَلَيَّ مِنْ عَدُلِكَ وَ احْيَيْتَنِي تَحْتَ ظِلَّكَ وَ هَذَا شَهُرُ نَبِيَّكَ ﴿ رزق میں فراخی کی مجھ پر اپنے عدل کا چھتر پھیلایا اور مجھے اپنے سامیہ تلے زندہ رکھا ہے اور یہ مہینہ تیرے نبی کا ہے

رُسُهِ لِكَ شَعُبَانُ الَّذِی حَفَفُتهٔ مِنْکَ بِالرَّحْمَةِ وَ الرِّضُوانِ الَّذِی كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّ

جریرے وال کر ماری بیا ایشوان نے وَ ایْ ایْ استان میں اللّه عَلَیٰهِ وَ اَیّامِه بُحُوعًا لَکَ قَلْکُرَامِهِ

اللّه عَلَیٰهِ وَ اللّه وَسَلّم یَدُابُ فِی صِیَامِه وَ قِیَامِه فِی لَیَالِیٰهِ وَ ایّامِه بُحُوعًا لَکَ قِلْکُرَامِهِ

اللّه عَلَیٰهِ وَ اللّه وَسَلّم یَدُابُ فِی صِیَامِه وَ قِیَامِه فِی لَیَالِیٰهِ وَ ایّامِه بُحُوعًا لَکَ قِلْکُرَامِهِ

اللّه عَلَیٰهِ وَ ایّامِه بُحُوعًا لَکَ قِلْکُرَامِهِ

اللّه عَلَیٰهِ وَ ایک مَحلٌ حِمَامِهَ اللّهُ مَ فَاعِنَا عَلَی الْاستِنَانِ بِسُنَتِه فِیهِ وَ نَیْلِ الشَّفَاعَةِ لَدَیْهِ

وراغ عظامِه إلی مَحلٌ حِمَامِه اللّهُ مَ فَاعِنَا عَلَی الْاستِنَانِ بِسُنَتِه فِیهِ وَ نَیْلِ الشَّفَاعَةِ لَدَیْهِ

وراغ عظامِه وائه وَسَدَّی الشَّفَاعِ وَ طَوِیْقًا اللّهُ مَعَالِ حِمَامِهُ اللّهُ مَعْ وَالْمُوسِينَ اللّهُ مَعْ وَاللّهُ اللّهُ مَا اللّهُ اللّهُ مَعْ وَاللّهُ اللّهُ مَعْ وَاللّهُ مُعَالِمُ اللّهُ مَعْ وَاللّهُ اللّهُ مُعَالِمُ اللّهُ مُ وَاجْعَلُهُ لِی شَفِیْعا مُشَفَّعا وَ طَوِیْقًا الدِیکَ مَهُیّعًا وَ اجْعَلُیٰ لَهُ مُتَبِعًا حَتَّی الْقَاکَ یَهُ اللّهُ مَا وَاجْعَلُهُ لِی شَفِیْعا مُشَفَّعًا وَ طَوِیْقًا الدِیکَ مَهُیّعًا وَ اجْعَلُیٰ لَهُ مُتَبِعًا حَتَّی الْقَاکَ یَهُ اللّهُ مُولِ اللّهُ مُن وَاجْعَلُهُ لِی شَفِیْعا مُشَفَّعًا وَ طَوِیْقًا الدِیکَ مَهُیّعًا وَ اجْعَلُیٰ لَلَهُ مُتَبِعًا حَتَّی الْفَقَاکِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَالْ وَاللّهُ وَالْمُولِ اللّهُ وَاللّهُ وَلَولَ وَاللّهُ وَالللللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللللللللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللللللْعُولُ وَلَا الللللللّهُ وَالللللللللّهُ وَالللللللّهُ وَاللّه

ماہ شعبان کے اعمال مخصوصہ کابیان

شعبان کی پہلی رات

(۱) ماہ شعبان کی پہلی رات میں پیغیبراسلام اسے خصوص طریقہ پردورکعت نماز پڑھنا وارد ہے کہ ہررکعت میں المحمدایک باراوراس کے بعد سور و اللّف احد تمیں بار پڑھے اور سلام کے بعد سیر کہ:
﴿ اَللّٰهُم مَّا اَ عَهُدِی عِنْدَ کے فرمایا: جَوْفُ سِیمُل کرے گاوہ شیطان او راس کے انصار واعوان کے شرے محفوظ رہے گا اوراسے صدیقین کا جرو ثواب عطاکیا جائے گا۔ (کتاب الدعا والزیارہ)

شعبان کی پہلی تاریخ

(۱) مکم ماہ شعبان کا روزہ رکھنے کی بڑی فضیات وا رد ہوئی ہے جتی کہ حضرت امام جعفر صادق القلیمی سے مروی ہے کہاں شخص کے لیے جنت واجب ہے۔(زا والمعاو)

کتاب مفاقیج البخان میں محدث نوری کی کتاب کلہ طیبہ کے حوالہ سے ایک طویل وعریض روایت نقل کی گئے ہے جو کہ پاپنچ صفحات پر مشمل ہے جس میں اس دن نیکی کرنے ،صدقہ و سے ، خلق و خالق کا کوئی حق ا وا کرنے کی بے حدر ذیلت بیان کی گئی ہے بہاں اس کے نقل کرنے کی بے حدر ذیلت بیان کی گئی ہے بہاں اس کے نقل کرنے کی بے حدر ذیلت بیان کی گئی ہے بہاں اس کے نقل کرنے کی گئواکش نہیں ہے۔ شائفین تفصیل کتاب فہ کور کی طرف رجوع کریں البتہ اہل ایمان کو چاہیئے کہ اس مبارک دن میں زیادہ سے زیادہ نیک عمل بجا لائیں اور اس دن ہر قتم کے برے کام کرنے سے اپنے آپ کو بچائیں۔ و اللّٰہ المعوفق۔

تيسرى يا پانچو يں شعبان

بنابرمشہور سوشعبان سم ھے۔ کو بمقام مدینہ منورہ حضرت امام حسین الطبیح کی ولا دت باسعا دت واقع ہوئی۔ (ارشاد شیخ مفید ؓ وغیرہ) مگر شخفیقی قول کے مطابق ۵ شعبان سم ھے میں واقع ہوئی۔ (اصول کافی وغیرہ)

لهذا اس دن امام عالى مقام الطيعة كاجشن ميلاد مناما حابيئه اوربيه دعا تجمى بريهنى حابيئه جو حضرت امام حسن عسكرى الطفية كوكيل قاسم بن علا بهداني كي طرف سے جاري ہوئي ہے: للُّهُمَّ إِنِّي آسُئَلُكَ بحَقّ الْمَولُودِ فِي هذَا الْيَوُم الْمَوْعُودِ بشَهَادَتِهِ قَبُلَ اسْتِهُ اللّه ا ہے معبودا بے شک میں جھے سے سوال کرنا ہوں بواسطہ آج کے دن پیدا ہونے والے مولود کے کہ جس کے پیدا ہونے اور دنیا میں آنے سے و لأَدَتِهِ بَكَتُهُ السَّمَآءُ وَ مَنُ فِيُهَا وَالْآرُصُ وَمَنُ عَلَيُهَا وَلَمَّا يُطَأُ لاَبَتَيُهَا قَتِيل الْعَبُرَةِ وَ پہلے اس سے شہادت کا وعد ہ لیا گیا ،رویا ہے اس پر آسان اور جو بھھا س میں ہے اور روئی زمین اور جو بھھا س پرہے جبکہ اس نے زمین مدینہ سَيِّدِ الْاسْرَةِ الْمَمُدُودِ بالنَّصْرَةِ يَوْمَ الْكَرَّةِ الْمُعَوَّضِ مِنْ قَتْلِةٍ أَنَّ الْاَئِمَةَ مِنْ نَسْلِهِ وَ پر قدم نہ رکھا تھاوہ گریہ والاشہیداور کامیاب و کامران خاندان کا سیدوسر دارہے رجعت کے دن، بیا**ں** کی شہادت کا بدلہہے کہ باک آئمہ الشِّفَآءَ فِيُ تُرُبِّتِهِ وَالْفَوْزَ مَعَهُ فِي اَوْبَتِهِ وَالْآوُصِيَآءَ مِنْ عِتْرَتِهِ بَعُدَ قَائِمِهِمُ وَ غَيْبَتِهِ حَتَّى اس کی اولا دمیں ہے ہوئے اس کی خاک قبر میں شفاء ہے اور اس کی ہا زگشت میں کامیا نی اس کیلئے ہے اور اوصیاءای کی اولا دمیں ہیں يُسدُركُو الْاَوْتَارَ وَ يَثْاَرُوا النَّارَ وَيُرُخُوا الْجَبَّارَ وَايَكُواْنُوُ احَيْرًا اَنْصَارِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِمُ کہ ان میں سے قائم غیبت محم ہوئے کے بعد وہ اپنے خوٹوں کا بدلیہ اور انقام کے کر تلاقی کرنے والے خدا کو راضی کریں گے اور مَعَ اخْتِلافِ اللَّيْل وَ النَّهَارِ اَللَّهُمَّ فَبحَقِّهمْ اِلَيُكَ اَتَوَسَّلُ وَ اَسْئَلُ سُؤَالُ مُقُتَرفِ بہترین مددگارہا بت ہوں گے درود ہوان سب پر جب تک رات دن آتے جاتے رہیں گے اے معبودان کے حق جو چھھ پر ہے اسے وسیلہ مُّعُتَرِفٍ مُّسِّيُءٍ اللي نَفُسِهِ مِمَّا فَرَّطَ فِيُ يَوْمِهِ وَ ٱمُسِهِ يَسُئَلُكَ الْعِصُمَةَ اللي مَحَلً بنا تا ہوں اور سوال کرنا ہوں اپنا گیا وسلیم کرنے والے کی طرح کہ جس نے اپنے نفس سے برائی کی ہے آج کے دن اور گزری ہوئی رات رَمُسِيةَ اَللَّهُمَّ فَصَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ عِتُرَتِهِ وَاحْشُرُنَا فِي زُمُرَتِهِ وَ بَوِّئُنَا مَعَهُ دَارَ الْكَرَامَةِ میں آو وہ سوال کرنا ہے اپنی موت کے دن تک کیلیجا ہے معبو دا پس رحت فرما محمآوران کے خاندان پر اور ہمیں ان کے گروہ میں محشور فرمااور وَ مَحَلُّ الْإِقَامَةِ اَللُّهُمُّ وَ كَمَآ اَكُرَمُتَنَا بِمَعُرِفَتِهِ فَٱكُرِمُنَا بِزُلُفَتِهِ وَ ارُزُقْنَا مُرَافَقَتَهُ وَ میں برزگ والے گھراورجائے قیام کے سلسلے میں ان کے ساتھ جگہ دے اے معبودا جیسے تُو نے اکم معرفت کے ساتھ ہمیں عزت دی ای طرح ان سَابِقَتَهُ وَاجْعَلْنَا مِمَّنُ يُسَلِّمُ لِآمُرِهِ وَ يُكْثِرُ الصَّلُوةَ عَلَيْهِ عِنْدَ ذِكُرِهِ وَ عَلَى جَمِيُع

ا وُصِيَائِهِ وَ اَهُل اَصُفِيَائِهِ الْمَمُدُودِيْنَ مِنْكَ بالْعَدَدِ الْأَثْنَى عَشَرَ النَّجُوم الزُّهر وَ کے وقت ان پر بکثر ت درو دہیجتے ہیں نیز ان کے سارے جاشینوں پر اور برگزیدہ اٹل خاندان پر جن کی تعداد کوئو نے ہارہ تک پورا فرمایا ہے جو چیکتے الْحُجَجِ عَلَى جَمِيُعِ الْبَشَرِ ٱللَّهُمَّ وَهَبُ لَنَا فِي هَذَا الْيَوُم خَيْرَ مَوُهِبَةٍ وَّ ٱنْجِحُ لَنَا فِيْهِ ہوئے ستارے ہیں اور وہ تمام انسانوں پر خدا کی جمتیں ہیں اے معبو دا آج کے دن ہمیں بہترین عطاوی سے سرفراز فر مااور بھاری بھی حاجات پوری كُلُّ طَلِبَةٍ كَمَا وَهَبُتَ الْـحُسَيْنَ لِمُحَمَّدٍ جَدِّهٍ وَ عَاذَ فُطُرُسُ بِمَهْدِهِ نَحُنُ عَآئِذُوْنَ کر دے جیسے تُونے حسینً کے نانا حضرت محمر کوخود حسینً عطا فرمائے تھے اورفطری نے ان کے گہوارے کی پناہ لی لیس ہم ان کے روضہ کی پناہ بِقَبُرِهِ مِنُ مِ بَعُدِهِ نَشُهَدُ تُرُبَعَهُ وَ نَنْتَظِرُ اَوْبَتَهُ المِيْنَ رَبَّ الْعَالَمِيْنَ. لیتے ہیں ان کے بعد ہم ان کے روضہ کی زیارت کرتے ہیں اوران کی رجعت کے منتظر ہیں ایسا بی ہواے جہانوں کے بالتے والے۔ اس کے بعدوہ دعاریو ھی جائے جو حضرت امام حسین الطبی نے میدان کربلا میں عاشوراء کے دن اس وقت روهي تھي جبآ پرغهُ اعداء ميں گھرے ہوئے تھے: ٱللُّهُمَّ أنْتَ مُتَعَالِى الْمَكَّانِ عَظِيمُ الْحَبَرُ وَبِ شَدِيْدُ الْمِكَالِ عَنِي عَنِ الْحَلَاثِقِ عَرِيْضُ اے معبود! تو بلند تر منزلت رکھتا ہے تو ہڑے ہی غلبے والا ہے زیر دست طاقت والا مخلوقات سے بے نیاز بے حد صاب الُكِبُرِيَآءِ قَادِرٌ عَلَى مَا تَشَآءُ قَرِيُبُ الرَّحْمَةِ صَادِقُ الْوَعْدِ سَابِغُ النِّعُمَةِ حَسَنُ الْبَلاءِ یڑا تی والا جو چاہے ا**س پر قا** در رحمت کرنے میں قریب وعد ہے میں سچا کامل نعتوں والا بہترین آ زمائش کرنے والا تو قریب قَريُبٌ إِذَا دُعِيُتَ مُحِيُطٌ بِـمَا خَلَقُتَ قَابِلُ التَّوْبَةِ لِمَنْ تَابَ إِلَيْكَ قَادِرٌ عَلَى مَ ہے جب پکا را جائے جس کو پیدا کیا تو اسے تھیرے ہوئے ہوئے ہوئے اس کی تو بہ قبول کرنا جوتو بہ کرے تو جو ارا دہ کرے اس پر اَرَدُتُ وَ مُسدُركٌ مَّسا طَلَبُتَ وَ شَكُورٌ إِذَا شُكِرُتَ وَ ذَكُورٌ إِذَا ذُكِرُتَ اَدُعُوكَ قا درہے جے تو طلب کرےاہے پالینے والا ہےاور جب تیراشکر کیا جائے تو قد رکرتا ہے تھے یا دکیا جائے تو بھی یا دکرتا ہے مُحْسَاجًا وَّ اَرُغَبُ اِلَيُكَ فَقِيُسرًا وَّ اَفْزَ عَ اِلَيُكَ خَائِفًا وَّ اَبُكِلِلَيُّكَ مَكُرُوبًا منیں حاجت مندی میں تھے پارتا اورمفلسی میں تیری رغبت کرتا ہوں تیرے خوف سے گھرا تا ہوں مصیبت میں تیرے آ سے روتا وَّاسُتَعِيُنُ بِكَ ضَعِيُـفًا وَّ اَتَـوَكُلُ عَلَيُكَ كَافِيًا أَحُكُمُ بَيُنَنَا وَ بَيُنَ قَوْمِنَا فَإِنَّهُمْ غَرُّ وُنَا ہوں کمزوری کے باعث جھے سے مدد ما تکتا ہوں تھے کافی جان کرتو کل کرتا ہوں فیصلہ کر دے ہمارے اور ہماری قوم کے چ کہ

خَدَعُونَا وَ خَذَلُونَا وَ غَدَرُوا بِنَا وَ قَتَلُونَا وَ نَحُنُ عِتْرَةُ نَبِيّكَ وَ وَلَدُ حَبِيبُكَ مُحَمَّلًا المعدد المعرف المعدد على المعرجة على المعرجة المعدد المعرفة أن المعرفة المعرفة المعرفة المعرفة المعرفة المعرفة

انہوں نے ہمیں فریب دیا اور ہم سے دھوکا کیا ہمیں چھوڑ دیا اور بےوفائی کی اور ہمیں قبل کیا جبکہ ہم تیرے نبی کا گھرانہ اور

فَرَجًا وَ مَخُرَجًا بِرَحُمَةِكَ يَاۤ أَرُحَمُ الرَّاحِمِيْنَ

ہمیں کشا دگی اور فراخی وےاپی رحمت ہے اے سب سے زیا دہ رحم والے ۔

تير موي شعبان كى رات

یہ شعبان کی شب ہائے بین (روشن راتوں) میں سے پہلی رات ہے اور ان راتوں میں پڑھی جانے والی نمازوں کی شب ہائے بیش میں گزرچکی ہے۔اس مقام کی طرف رجوع کر کے اس کے مطابق عمل کیا جائے۔

SIBTAJ COM

یدرات بردی مترک ہے۔ حضرت امام جعفر صادق الطبیخ اپنے والد ماجد الطبیخ سے دائید اس کرتے ہیں کہ آپ نے فرمایا: بیرات لیلۃ القدر کے علاوہ ہاتی تمام راتوں ہے افضل ہے۔ البذا اس رات میں عباوت خدا کر کے اس کا تقرب حاصل کرنا چاہیئے کیونکہ اس رات خداوند عالم اپنے بندوں پر اپنا خاص فضل و کرم فرما تا ہے۔ اور ان کے گناہ معاف فرما تا ہے اور بہت می روایات میں وارد ہے کہ خدائے علیم و کلیم اس رات سال بجر میں ہونے والے واقعات لکھتا ہے۔ جب کہ اکثر حدیثوں میں بیروارد ہے کہ بیرواقعات لیلۃ القدر میں لکھے جاتے ہیں اور علما مختقین نے ان روایات میں اس طرح جمع کی ہے کہ سال بجر کے واقعات کا ابتدائی خاکہ اس رات تارکیا جاتا ہے اور ان میں رنگ لیلۃ القدر میں بجرا جاتا ہے لینی ان کی آخری منظوری لیلۃ القدر میں دی جاتی ہیں جبرحال جس جیز نے اس رات کی عظمت واجمیت کومزید اجاگر کیا ہے اور اس کی جلالت قدر میں اضافہ کیا ہے وہ بیہ کہ اس رات کو آخری جمت خدا لینی امام العصر والزمان عجل اللہ تعالی فرجۂ الشریف کی ولا دت ہے وہ بیہ کہ اس رات کو آخری جمت خدا لینی امام العصر والزمان عجل اللہ تعالی فرجۂ الشریف کی ولا دت بی سیادت کا شرف حاصل ہے جو 20 ہے صادق بمقام سام رائی واقع ہوئی۔

اس رات کے مخصوص اعمال یہ ہیں

(۱) عسل كرما جوكة تخفيف كنا مان كا ذريعه ٢٠-

(۲) اس رات کو جاگ کرنماز، دعا اورتو بدو استغفار میں گزارنا چنانچ چھنرت امام زین العابدین القیادی القیادی کے مروی ہے کہ جو شخص بیرات بیدار رہے گا تو اس کا دل اس (قیامت کے) دن نہیں مرے گا جبکہ عام لو کوں کے دل مرجا کمیں گے۔ (زادالمعاد)

(س) حضرت امام حسین الظیلا کی زیارت کرنا جیسا کہ باب الزیارات میں اس رات کی مخصوص زیارت بیان کی جو کہ بخشش گنا ہان کا ذریعہ ہے۔

(٣) اس رات وه وعايرُ هناجو حضرت امام جعفر صاوق الطَّيْلاً في اساعيل بن فضل باشى كِتعليم فرما فَي تَعَى جويب : اَلْلْهُدَّمَّ اَنْدَ الْسَحَدِّى الْسَقَيُّ وُمُ الْسَعَلِيُّ الْعَظِيْمُ الْخَالِقُ الرَّازِقُ الْمُحْيِي الْمُمِيْثُ الْبَدِّى عُ السَمْعُود! تَوْ زَدْه و بِاكِد ه بلند تريز رگر خلق كرنے والا رزق ديے والا زنده كرنے موت ديے والا آغازكرنے ايجاد كرنے

البَدِينُعُ لَكَ الْجَلَالُ وَلَكَ الْفَضُولُ وَ لَكَ الْفَضُولُ وَ لَكَ الْحَدُودُ وَلَكَ الْمَنُ وَ لَكَ الْ

لَکَ الْسَكَورَمُ وَ لَکَ الْاَمُورُ وَ لَکَ الْسَمَعِدُ وَ لَکَ الْسَمَعِدُ وَ لَکَ الشَّمُکُرُ وَ حُدَکَ لا شَرِيْكُمْ الْسَرِيْكُمْ وَحُدَکَ لا شَرِيْكُمْ الْسَرِيْكُمْ وَكَامِ وَلَا اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المُلْ اللهِ اللهِ اللهُ الله

يَا وَاحِدُ يَآ أَحَدُ يَا صَمَدُ يَا مَنُ لَمُ يَلِدُ وَلَمْ يُولَدُ وَلَمْ يَكُنُ لَّهُ كُفُواً أَحَدُ صَلِّ عَلَى اللهِ وَالمُ يُولَدُ وَلَمْ يَكُنُ لَّهُ كُفُواً أَحَدُ صَلِّ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى ال

مُسحَمَّدٍ وَّ اللِ مُحَمَّدٍ وَّاغُفِرُ لِي وَارُحَمُنِي وَاكْفِنِي مَآ اَهَمَّنِي وَاقُضِ دَيْنِي وَ وَسِّعُ عَلَيً و بهر رحت فرما تَضَن كامول مِن مِيرى كفايت فرما ميرا قرض اواكرد يمير الدق مِن كثالَش فرما كرة اى رات مِن مِر

فِی رِزُقِی فَاِذَک فِی هلده اللَّیسَلَة کُلَّ اَمْرِ حَکِیْم تَفُرُقُ وَمَنُ تَشَاءُ مِنُ خَلْقِکَ تَرُزُ فَا حَمت والے کام کی قریر کرنا ہے اور اپی تلوق میں سے جے جا ہے رزق روزی دیتا ہے ہی جھے بھی رزق دے کیونکہ توجی سب

فَارُزُقُنِيى وَ اَنُتَ خَيُسُ الرَّازِقِيسُنَ فَإِنَّكَ قُلْتَ وَ اَنْتَ خَيْرُ الْقَآئِلِيُنَ النَّاطِقِينَ وَاسْتَلُوا أَ

سے پہتر رزق دینے والا ہے بقیناً میہ تیرا ہی فرمان ہے اورتو بہتر ہے سب کہنےوالوں بولنے والوں میں کہ مانگواللہ تعالیٰ ہے اس

اللُّهَ مِنُ فَضُلِهِ فَمِنُ فَضُلِكَ اَسْتَلُ وَإِيَّاكَ قَصَدُتُ وَابُنَ نَبِيِّكَ اعْتَمَدُتُ وَ ﴿ الْحَيْ

کے فضل میں سے پس میں تیرے فضل کا سوال کرنا ہوں او ربس تیرا ہی ا را وہ رکھتا ہوں تیرے نبی کے فر زند کواپنا سہارا بنا تا ہوں

رَجَوُتُ فَارُحَمُنِيُ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ.

اور بخجی ہے امید رکھتا ہوں اس رحم فر ما مجھ پرا ہے سب سے زیا دہ رحم کرنے والے۔

(۵) وه دعايره هنا جوهفرت رسول خدا 🏙 يوصح تنے:

اَللَّهُمَّ اقْسِمُ لَنَا مِنُ خَشْيَةِ كَ مَا يَحُولُ بَيْنَنَا وَ بَيْنَ مَعُصِيَةِ كَ وَمِ

ا ہے معبو د! ہمیں اپنے خوف کا اتنا حصہ دے جو ہما رے اور ہماری طرف سے تیری نا فرمانی کے درمیان رکاوٹ بن جائے اور

طَاعَةِكَ مَا تُبَلِّغُنَا بِهِ رضُوانَكَ وَ مِنَ الْيَقِيُنِ مَا يَهُوُنُ عَلَيْنَا بِهِ مُصِيْبَاتُ الدُّنُيَأ

فرمانبر داری سے اتنا حصہ دے کراس سے ہم تیری خوشنودی حاصل کر کیس اور اتنا یقین عطا کر کہ جس کی بدولت دنیا کی تکلیفیں

اَللَّهُمَّ اَمْتِعُنَا بِاَسْمَاعِنَا وَ اَبْصَارِنَا وَ قُوَّتِنَا مَاۤ اَحْيَيُتَنَا وَ اجْعَلُهُ الْوَارِثَ مِنَّا

ہمیں سبک معلوم ہوں اے معبود ایجب آئے تبیل زندہ رکھے میں عارے کا نوں ، آگھوں اور قت سے مستفید فرما اور اس قائم کو

وَاجْعَلُ ثَارَنَا عَلَى مَنُ ظَلَمَنَا وَانْصُرُنَا عَلَى مَنُ عَادَانَا وَلا تَجُعَلُ مُصِيبَتَنَا

ہمارا وا رث بتا اوران سے بدلیہ لینے والا قرا ر دے جنہوں نے ہم پرظلم کیا ہمارے دشمنوں کے خلاف ہماری مدد فرما اور ہما رہے دین

فِي دِيُنِنَا وَلا تَجُعَلِ الدُّنْيَا ٱكُبَرَ هَمِّنَا وَلا مَبُلَغَ عِلْمِنَا وَلا تُسَلِّطُ عَلَيْنَا

میں ہما رہے لیے کوئی مصیبت نہ لا اور ہما ر**ی** ہمت اور ہمار ہے کم کے لیے دنیا کوہڑ امتصد قرار نہ دے اور ہم پراں گخض کوغالب نہ

مَنُ لا يَرُحَمُنَا بِرَحُمَةِكَ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ

کر جوہم پر رحم نہ کرے واسطہ تیری رحمت کا اے سب سے زیا وہ رحم والے۔

(٢) دعائے تمیل پڑھنا جس کاپڑھنااس رات اورشب ہائے جمعہ میں خصوصی طور پروارد ہے جو ہا ب

٢ ميں (صفح نمبر ٢ ١١ مير) ذكر كى جا چكى بالبذااس مقام كى طرف رجوع كيا جائے۔

(4) شیخ طوی علیه الرحمه ابو یحیٰ ہے روایت کرتے ہیں ۔موصوف کابیان ہے کہ میں نے حضرت امام

جعفر صادق الطفی سے دریا فت کیا کہ شب نیمۂ شعبان میں بہترین عمل اور دعا کون ی ہے؟ فر مایا: نما زعشاء کے

بعد اس طرح دو رکعت نماز پڑھ، پہلی رکعت میں الحمد کے بعد سورۂ کافرون اور دوسری رکعت میں الحمد کے بعد سورة تؤحيديرُ هاورسلام كے بعد ٣٣٠ بار ﴿ سُبُحَان اللَّهِ ﴾ ٣٣٠ بار ﴿ أَلْبَحَ مُدُ لِلَّهِ ﴾ اور ٣٨ بار ﴿ اَللَّهُ ﴾ أَكْبَرُ ﴾ أَلَ كَانِ كے بعد ميدوعارا ه

يَا مَنُ اِلَيْهِ مَلْجَا الْعِبَادِ فِي الْمُهِمَّاتِ وَ اِلَيْهِ يَفُزَعُ الْخَلْقُ فِي الْمُلِمَّاتِ يَا عَالِمَ الْجَهُرِ وَ اےوہ جومشکل کاموں میں بندوں کی بناہ گاہ ہاورجس کی طرف لوگ ہرمصیبت کےوفت فریا دی ہوتے ہیں اےسب ظاہراور چھپی الُخَفِيَّاتِ يَا مَنُ لاَّ تَخُفٰى عَلَيْهِ خَوَاطِرُ الْاَوُهَامِ وَ تَصَرُّفُ الْخَطَرَاتِ يَا رَبَّ الْخَلاَّثِقِ وَ ہوئی چیزوں کے جاننے والےا ہے وہ جس پر لوگوں کے وہم و خیال اور دلوں میں گر دش کرنے والے اندیشے بھی پوشیدہ نہیں اے مخلو قات و الْبَوِيَّاتِ يَا مَنُ بِيَدِهِ مَلَكُوثُ الْآرُضِيُنَ وَالسَّمُواتِ ٱنْتَ اللَّهُ لَأَ اِلْهَ الَّا ٱنْتَ اَمُثُ موجودات کے پروردگاراے وہ ذات کرزمینوں و آسانوں کی تھمرانی جس کے قبصہ قدرت میں ہےتو ہی معبو دہے تیں کوئی معبود سوائے إِلَيُكَ بِالْا إِلٰهُ آلْأَنُتَ فَيَا لَأَ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ اجْعَلْنِي فِي هَٰذِهِ اللَّيُلَةِ مِمَّنُ نَظَرُتَ إِلَيْهِ

تیرے میں تیری طرف متوجہ ہول اس لیے کہ تیرے سوا کوئی معبود کیل اس اکے وہ ایسی کوئی معبود مگرتا ہی ہے اس رات میں مجھے ان فَرَحِـمُتَـهُ وَ سَـمِـعُـتَ دُعَائَهُ فَاجَبُتَهُ وَ عَلِمُتَ اسْتِقَالَتَهُ فَاقَلْتَهُ وَ تَجَاوَزُتَ عَنُ سَالِفِ

لوگوں میں قرار دے جن پرتو نے نظر فرمائی تونے ان پرمہر مائی کی ان کی دعائی تونے اسے شرف قبولیت بخشاتو ان کی پشیمائی ہے آگاہ ہوا

خَطِيْنَتِهِ وَ عَظِيُم جَرِيُرَتِهِ فَقَدِ اسْتَجَرُتُ بِكَ مِنْ ذُنُوبِيُ وَ لَجَانُ الدُكَ فِيَّر تو انہیں معاف کر دیا اوران کے مب پچھلے گنا ہوں اور پڑے پڑے جرائم پڑعفوو درگز رے کام لیا پس میں اپنے گنا ہوں سے تیری پناہ کا

غُيُوبِيْ ٱللَّهُمَّ فَجُدُ عَلَيَّ بِكُرَمِكَ وَ فَضُلِكَ وَاحُطُطُ خَطَايَايَ بِحِلْمِكَ وَ عَفُولِكُ طالب ہوں اوراپنے عیبوں کی پر دہ پوٹی کے لئے تھے ہے التجا کرتا ہوں اے معبو د! مجھ پر اپنے فضل اور کرم سے عطا و بخشش فرما اورا پی نزم

وَ تَغَمَّدُنِيُ فِي هَذِهِ اللَّيُلَةِ بِسَابِعِ كَرَامَةِكَ وَاجْعَلُنِيُ فِيُهَا مِنُ اَوُلِيَآئِكَ الَّذِي خونی اور درگز رکے ذریعے میری خطا کیں بخش دے اس رات میں مجھ کواینے انتہائی کرم کے سائے تلے لے لے اور اس شب میں مجھے اپنے

الْجَتَبَيْتَهُمُ لِطَاعَتِكَ وَاخْتَرُتَهُمُ لِعِبَادَتِكَ وَ جَعَلْتَهُمُ خَالِصَةَكَ وَ صِفُوتَكَ ان بیاروں میں قرار دے جن کو نے اپنی فر ماہر داری کیلئے بیند کیا اپنی عبادت کے لئے انتخاب کیا اوران کواپنے خاص الخاص اور برگزید ہ متلا ہےا ہے

جُعَلْنِيُ مِمَّنُ سَعَدَ جَدُّهُ وَ تَوَفَّرَ مِنَ الْخَيْرَاتِ حَظَّهُ وَ اجْعَلْنِيُ مِمَّنُ سَلِمَ فَنَعِمَ وَ فَازَ عبود! مجھے ان لوگوں میں قرار دے جن کا نصیبہا چھااور نیک کاموں میں جن کا حصہ زیا دہ ہے اور مجھے ان لوگوں میں رکھ جو تندرست نعت فَغَنِمَ وَاكْنِفِنِيُ شَرَّ مَاۤ اَسُلَفُتُ وَ اعْصِمُنِيُ مِنَ الْإِزْدِيَادِ فِيُ مَعْصِيَةِكَ وَ حَبّبُ اِلَيُّ یاب کامران فائدہ پانے والے ہیں اور جو کچھ میں نے کیااس کے شرسے بچا مجھے اپنی نا فرمانی میں پڑھ جانے سے محفوظ و مامون رکھ مجھے طَاعَةَكَ وَمَا يُقَرِّبُنِي مِنُكَ وَ يُزُلِفُنِيُ عِنُدَكَ سَلِلَادُكَ يَلْحَا الْهَارِبُ وَ مِنُكَ ا پی فرمانبرداری کا شوق دےاوراس کا جو مجھے تیرے قریب کرےاور مجھے تیرا پیندیدہ بنائے میرے سردار بھا گنے والا تیرے ہاں پناہ لیتا يَـلْتَـمِـسُ الطَّالِبُ وَ عَـلَى كَرَمِكَ يُعَوِّلُ الْمُسْتَقِيُلُ التَّآئِبُ اَذَّبُتَ عِبَادَكَ بالتَّكُرُّ م ہے طلبگار تیرے حضور عرض کرنا ہوں اور پشیمان ہونے تو بہکرنے والا تیرے فعنل وکرم بر بھروسر کرنا ہے تو اپنی کریمی ومہر بانی سے بندوں کی أَنُتَ ٱكُرَمُ الْآكُرَمِيْنَ وَ اَمَرُتَ بِالْعَفُو عِبَادَكَ وَ ٱنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيْمُ اَللَّهُمَّ فَال پرورش کرتا ہےاورتو سب سے زیادہ کرم کرنے والا ہے نے اپنے بندوں کومعاف کرنے کا تھم دیا اورتو بہت بخشے والارحم کرنے والا ہے تَحُرمُنِي مَا رَجَوُابُ مِنْ كَيرَمِكَ وَلا تُوْيِهُنِي مِنْ سَابِعْ يَعَمِكَ وَلا تُخَيِّنِنِي مِ ا معبودا پس میں نے تیرے کرم کی جوامیدلگا رکھی ہے اس سے محروم نہکر مجھے اپنی کیرنفتوں سے نا امید نہ ہونے دے اورآج کی رات جَزيُل قِسَمِكَ فِي هَذِهِ اللَّيُلَةِ لِآهُل طَاعَتِكَ وَاجْعَلْنِي فِي جُنَّةٍ مِّنُ شِرَار بَريَّة میں اس بیشتر عطاہے محروم نہ کر جوتو نے اپنے فرمائبر داروں کے لئے رکھی ہوئی ہےاور مجھےا پی مخلوق کی اذبیوں سے امان میں قرار دے رَبِّ إِنْ لِّـمُ ٱكُنُ مِّنُ ٱهُـل ذَالِكَ فَأَنْتَ ٱهُلُ الْكَرَم وَ الْعَفُو وَ الْمَغْفِرَةِ وَجُدُ عَلَيَّ بِمَآ میرے رپوردگارا اگر میں اس سلوک کے لائق نہیں ہی تو مہر ہا فی کرنے معافی دینے اور پخش دینے کا اٹل ہےاور مجھ رپرالیی بخشاکش فر ماجو ٱنُتَ ٱهۡلُـهُ لا بِـمَآ ٱسۡتَحِقَّهُ فَقَدُ حَسُنَ ظَنِّي بِكَ وَ تَحَقَّقَ رَجَآئِي لَكَ وَ عَلَقَتُ نَفُسِه تیرے لائق ہے نہ وہ کرجس کا میں حقدار ہوں اپس میں تھے ہے اچھا گمان رکھتا ہوں میری امید بھی سے گلی ہوتی ہے اور میرانفس تیرے کرم بِكُوَ مِكَ فَانُتَ أَرُحَهُ الرَّاحِمِيُنَ وَ أَكُوَ مُ الْآكُوَ مِيْنَ اللَّهُمَّ وَاخْصُصُنِي مِنْ كَوَمِكَ س تعلق جوڑے ہوئے ہے جبکہ تو سب سے زیادہ رحم کرنے والا اور سب سے برا ھا کرمبر یا ٹی کرنے والا ہے اے معبود! مجھے اپنی مہر باتی و حَزِيْل قِسَمِكَ وَ أَعُوٰذُ بِعَفُوكَ مِنْ عُقُوٰبَةِكَ وَاغُفِرُلِيَ الذُّنْبَ الَّذِي يَحْسُ

الْخُلُقَ وَيُنضَيّقُ عَلَيّ الرّزُقَ حَتُّنَى اَقُوْمَ بِصَالِحِ رِضَاكَ وَ اَنْعَمَ بِجَزِيُلِ عَطَآئِكَ کو برخلقی میں پینسا دیا اورمیری روزی میں بھی کا باعث ہوا تا کہ میں تیری بہترین رضا حاصل کرسکوں تو اپنی مہر بانی سے مجھے نعتیں عنایت ٱسْعَدَ بسَابِعَ نَعُمَآ إِنِكَ فَقَدُ لُذُتُ بِحَرَمِكَ وَ تَعَرَّضُتُ لِكَرَمِكَ وَ اسْتَعَلُّ فرمااورا پی کثیر نعتوں ہے مجھے بہر ہ مند کر دے کیونکہ میں نے تیرے آستاں پر پناہ لی اور تیری پخشش کی امیدنگائے ہوں اور میں تیرے بعَفُوكَ مِنْ عُقُوبَةِكَ وَ بِحِلْمِكَ مِنْ غَضَبِكَ فَجُدُ بِمَا سَئَلُتُكَ وَ أَنِهُمُ مَا عذاب سے تیرے عفو کی پناہ لیتا ہوں اور تیرے غضب سے تیری مزم خوئی کی پناہ لیتا ہوں پس مجھے وہ دے جس کا تجھ سے سوال کیا اس میں الْتَسمَسُتُ مِنْكَ اَسُئَلُكَ بِكَ لا بشَسيُءٍ هُو اَعْظُمُ مِنْكَ کامیاب کرجس کی چھے نے اہش کی ہے میں چھے سے تیرے بی ذریعے سوال کرتا ہوں کرچھ سے ہزرگ تر کوئی چیز ہے جی نہیں۔ پُر تجدے میں جا کرہیں مرتبہ کے:﴿ يَا رَبِّ ﴾، سات مرتبہ ﴿ يَآ اَللَّهُ ﴾ ، سات مرتبہ ﴿ لا حَوُلَ وَ لا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ﴾، وَل مرتبه ﴿ مَاشَآءَ اللَّهُ ﴾ اورون مرتبه ﴿ لا قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ ﴾ كم - (مصباح شيخ طويٌّ) نیز اس رات و مخصوص انما رجھی پڑھی جائے جس کا تذکرہ بھی رجب کی راہے اس کیا جاچکا ہے۔ فو اجعے۔ (^) جناب ابن بابویہ حضرت امام حسن مجتبی الطبی سے روایت کرتے ہیں ، آپ نے فر مایا کہ ایک بار جناب جبرئیل امین الظیار بارگاہ رسالت میں حاضر ہوئے اور کہا کہا پی امت کو تھم دیں کہوہ نیمیهٔ شعبان کی رات اس طرح دو رکعت نماز پڑھیں کہ ہر رکعت میں الحمد ایک با راور سور ہ قبل ھو اللّٰہ احمد دیں بار۔اور سلام کے بعد سجده میں جا کر پیدؤ کر کریں: سَجَدَ لَكَ سَوَادِي وَ خَيَالِي وَ امَنَ بِكَ فُؤَادِي هَذِهٖ يَدَاىَ وَ مَا جَنَيْتُهُ عَلَ سجدہ کیا تیرے آ گے میرے بدن اورمیرے خیال نے اور ایمان لایا ہے تھھ پر میرا دل بیہ ہیں میرے دونوں ہاتھ اور جو تتم میں نے نَفُسِيُ يَا عَظِيُهُ تُرُجِي لِكُلِّ عَظِيهم اغْفِرُلِيَ الْعَظِيْمَ فَالنَّهُ لا يَغْفِرُ الذُّنُبَ خود پر کیاہے اے برانی والے جس سے امید ہے براے کام کی تو میرے براے براے گناہ بخش وے کیونکہ براے گنا ہوں کوسوائے الْعَظِيْمَ إِلَّا الرَّبُّ الْعَظِيْمُ یڑا تی والے بروردگارے کوئی بیش نبیں سکتا۔ میڑا تی والے بروردگارے کوئی بیش نبیس سکتا۔

، پر جوالیها کرے گاتو خداا ہے بہتر ہزار نیکیوں کا ثواب عطا کریگا اور بہتر ہزار گنا ہ معاف کریگا۔(مجمع الحسنات)

پندره شعبان كاون

اس دن کے چند مخصوص عمل بدہیں:

(۱) یدون چونکه آخری جحت خداحضرت امام زمانه مجل الله تعالی فرجهٔ الشریف کی ولا دت با سعادت کا دن بهاندا بیدون چونکه آخری جحت خداحضرت امام زمانه مجل الله تعالی فرجهٔ الشریف کی ولا دت با سعادت کا دن بهاندا اس میں امام زمانه الطاق الحکی الله ومناما عیابیئے اور اس طرح خوشی ومسرت کا اظہار کرما چاہیئے جس طرح ہم نے اپنی کتاب ''اصلاح الرسوم'' میں بیان کیا ہے اور کوئی خلاف شرع کام واقد ام نہیں کرما چاہیئے ۔

(۲) امام زمانه الطفي كى زيارت يوهى جائے جوباب الزيارہ ميں ذكر كى جائے گى انشاء الله۔

(۳) امام زمانہ الظلیٰ کے وجود مسعود کی سلامتی کے لیے صدقہ وخیرات دینا چاہیئے اوران کی تعجیل ظہور کے لیے دعا ئیں مانگنی چاہئیں۔

SIBTAIN.COM ماوشعبان کے آخری دنوں کے اعمال

(۱) حضرت امام رضالظ ﷺ ہے مروی ہے ،فر مایا : جو شخص شعبان کے آخری تین دنوں میں روز ہ رکھے اورانہیں ماہِ رمضان کے روزوں کے ساتھ ملا دیتے خداوند عالم اسے سلسل دو ماہ کے روزے رکھنے کا ثواب عطا فر مائے گا۔ (مصباح کفعمی وغیرہ)

(۲) ابوصلت بیان کرتے ہیں کہ میں ماہ شعبان کے آخری جمعہ کے دن حضرت امام رضالظیٰ کی خدمت میں حاضر ہوا۔امام الظیٰ نے مجھے دکھے کرفر مایا: اے ابوصلت! ماہ شعبان کا زیادہ حصہ گزر گیا تھوڑا ہا تی ہے۔ البذاتم سے گزشتہ دنوں میں جو کوتا ہیاں ہوئی ہیں ان کی ان با قیماندہ دنوں میں تلافی کراو۔اوردہ عمل کرد جو تہمارے لیے مافع و سودمند ہو جیسے قرآن مجید کی تلاوت کرنا، دعا واستغفار کرنا اور ہارگاہ الہی میں اپنے گنا ہوں سے قوبہ کرنا۔تا کہ جب ماہ رمضان کا مقدی مہینہ آئے تو تم اپنے آپ کوخدا کے لیے خالص کر چکے ہو۔اور لوگوں کے حقوق ادا کر چکے ہو۔اور این مائل ایمان کے ہارے میں بغض و کینہ نہ رکھواور گنا ہوں کو ترک کردو۔اور اینے ظاہر و باطن میں خدا پر تو کل واعتماد کرواور ان با قیماندہ دنوں میں بیردعا پڑھا کرو:

اَللْهُ مَّ إِنْ لَكُمْ تَكُنُ عَفَرُتَ لَنَا فِيْمَا مَطْسَى مِنْ شَعْبَانَ فَاغُفِرُ لَنَا فِيْمَا بَقِى مِنْهُ. اعْمِوداالَّرُونَ مِين شعبان كَرَّرُشِة دنوں مِن مَّمَاموں كامعانی نیں دكاؤ بھی اس كياتى دنوں مِن مِين بخش عطاكردے۔ (مصباح شيخ و زادالمعاد جلسی)

ماوشعبان کی آخری رات کی وعا

حضرت شیخ طوی علیه الرحمه بیان کرتے ہیں کہ حضرت امام جعفر صادق القلیلاؤما ہ شعبان کی آخری رات اور ماہ رمضان کی پہلی رات بید دعایر مصاکرتے تھے:

اَللَّهُ مَّ إِنَّ هَلَا الشَّهُوَ الْمُبَارَكَ الَّذِي أَنْ إِلَى فِيهِ الْقُوانُ وَ جُعِلَ هُدًى لِلنَّاسِ وَ بَيَّنَاتِ اللَّهُ مَّ إِنَّ هَذَا الشَّهُوَ الْمُبَارَكَ الَّذِي أَنْ إِلَى فِيهِ الْقُورُانُ وَ جُعِلَ هُدًى لِلنَّاسِ وَ بَيَّنَاتِ السَّامِ اللَّهُ اللَّلْمُ اللللِّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ

مِّنَ الْهُداى وَ الْفُرُقَانِ قَدُ حَضَرَ فَسَلِّمُنَا فِيُهِ وَ سَلِّمُهُ لَنَا وَ تَسَلَّمُهُ مِنَّا فِي يُسُرٍ مِّنُكَ وَ إِ برايت كى دليلين اور فق وباطل كى تغريق ہے آ پہنچا ہے ہمیں اس كے لئے اسے ہمارے ليے سلامت ركھاوراس كو ہم سے

عَافِيَةٍ يَا مَنُ اَخَذَ الْمُقَالِيُ لَ وَشَكَرَ الْكَتْبِيرَ الْكَبْهُرَ الْمُلَامِينَ اللَّهُمَّ إِنِّي السُلُكَ أَنُ آ مانی وامن کے ماتھ لے اے وہ جوتھوڑ الیمّا اور زیا دہ قدردانی کرنا ہے جھے یہ تھوڑا ممل تبول فرما اے معبودا میں سوال کرنا

تَجُعَلَ لِنَى اللَّى كُلِّ خَيْرٍ سَبِيلًا وَمِن كُلِّ مَالا تُحِبُّ مَانِعًا يَّا اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا مَنُ عَفَا بول تھ ے کرمیرے لیے ہر نیکی کا راستہ بنا اور جو چزیں تھے بالبند ہیں ان سے با زرکھ اے سب سے زیادہ رقم کرنے والے

عَنِدى وَ عَمَّا خَلُونُ بِهِ مِنَ السَّيِّنَاتِ يَا مَنُ لَّمُ يُؤَاخِذُنِى بِارُتِكَابِ الْمَعَاصِى عَفُوكَ اےوہ جس نے مجھ معاف كياان كا موں پر جو ميں نے تَهائى ميں كيا ہے وہ جس نے مافر مانيوں پر مير كى گرفت نيس كى معاف

عَفُوكَ عَفُوكَ عَفُوكَ يَا كَرِيْهُمُ اللهِى وَعَظُسَنِى فَلَهُ اَتَّعِظُ وَ زَجَرُ تَنِى عَنُ مَّحَارِهِكَ كردے معاف كردے معاف كردے اے مهر بإن اے معود اتو نے مجھے فيحت كائيں نے پرواندند كا تو نے حرام كاموں ہے

اَنُوزَجِسُ فَهَا عُدُرِی فَاعُفُ عَنِی یَا کَرِیْمُ عَفُوکَ عَفُوکَ اَلْلَٰهُمْ اَفِیْمُنَاکُکَ الرَّاحَةَ دوکا تونمیں ان سے بازنہ آیا ہی میراکِ فَی عذرتیں تو بھی مجھے معاف فرما اےمہربان معاف کردے معاف کردے اے معود!

عِنُدَ الْمَوْتِ وَ الْعَفُو عِنُدَ الْحِسَابِ عَظُمَ الذَّنُبُ مِنُ عَبُدِكَ فَلْيَحُسُنِ التَّجَاوُزُ مِنُ ع مِن بِناه مَاثَلَمَا مِول تَحْدے موت كوفت داحت حماب كتاب كوفت درگز دكاسوال كنا موں تيرے بندے كا كمّاه بهت براے پس تيری

عِنْدِكَ يَآ أَهُلَ التَّقُواي وَ يَآ أَهُلَ الْمَعُفِرَةِ عَفُوكَ عَفُوكَ اللَّهُمَّ إِنِّيُ عَبُ طرف سے بہترین درگز رہوئی چ<mark>ا ہے اے ڈھانپ لینے والے اورا ہے بخش دیے والے معاف کر دے معاف کر دے اے معبو دا</mark> عَبُدِكَ بُنُ اَمَةِكَ ضَعِيُفٌ فَقِيُرٌ إِلَى رَحْمَةِكَ وَ ٱنْتَ مُنُزِلُ الْغِنِي وَ الْبَرَكَةِ میں تیرا بندہ ہوں تیرے بندے اور میزی کنیز کا بیٹا ہوں کمزور ہوں تیری رحمت کا متاج ہوں اور ٹو اپنے بندوں پر ٹروت و برکت الْعِبَادِ قَاهِرٌ مُّقُتَدِرٌ اَحُصَيْتَ اَعُمَالَهُمْ وَ قَسَمُتَ اَرُزَاقَهُمْ وَ جَعَلْتَهُمُ مُخُتَلِفَةً اَلْسِنَتُهُمُ نا زل کرنے والا زہر دست با اختیا رہے تو ان کے اعمال کوشار کرتا اور ان میں روزی باغتا ہے تُو نے انہیں مختلف زبا نوں اور وَ ٱلْوَانُهُمْ خَلْقًا مِّنُ م بَعُدِ خَلْق وَّلا يَعُلَمُ الْعِبَادُ عِلْمَكَ وَلا يَقُدِرُ الْعِبَادُ قَدُرَكَ رنگوں والے بنایا کہ ہرمخلوق کے بعد دوسری مخلوق ہے بندے تیرے علم کوئیں جانتے اور نہ بی بندے تیری قدرت کا اندا زہ کر كُلُّنَا فَقِيُرٌ اِلِّي رَحُمَةِكَ وَلا تَصُرفُ عَنِّي وَجُهَكَ وَاجُعَلْنِي مِنْ صَالِحِي خَلْةِ سکتے ہیں ہم سب تیری رحمت کے تاج ہیں اس ہم سے اپنی توجہ ہرگز نہ بنا مجھے عمل آرزوقسمت اور مقدر کے اعتبارے اپنے صالح فِي الْعَمَلِ وَ الْآمَلِ وَ الْقَصَاءِ وَالْقَدَرِ اللَّهُمَّ ابْقِنِنَي خَيْرَ الْكِفَآءِ وَ اَفْنِنِي خَيْرَ الْفَنَآءِ عَلَى و نیکو کا ربندوں میں سے قرار دے اے معبو دا مجھے زند ہ رکھ بہتر زندگی میں اور موت دیتو بہترین موت دے جو تیرے دوستوں مُوَالاًةِ اَوْلِيَآئِكَ وَ مُعَادَاتِ اَعُدَآئِكَ وَ الرَّغُبَةِ اِلَيْكَ وَ الرَّهْبَةِ مِنْكَ وَ الْخُشُوِّع کی دوستی او رتیرے دشمنوں سے دشنی میں ہونیز میری موت و حیات تیری رغبت تھھ سے خوف تیر ہے سما منے عاجزی و فا داری تیرا وَالْوَفَاءِ وَ التُّسُلِيُـم لَكَ وَ التَّصْدِيُقِ بِكِتَابِكَ وَ اتِّبَاعِ سُنَّةِ رَسُوُلِكَ اَللَّهُمَّ مَا تھم ماننے تیری کتاب کو مجی جاننے اور تیرے رسول کی سنت کی پیروی میں ہوا ہے معبو د! میرے دل میں جوبھی شک یا ممان یا فِيُ قَلْبِيُ مِنْ شَكِّ أَوُ رِيْبَةٍ أَوُ جُحُودٍ أَوْ قُنُوطٍ أَوْ فَرَحِ أَوْ بَذَ خِ أَوْ بَطَر أَوْ خُيَلَاءَ أَوْ ضدیت یا نا اُمیدی یا سرمتی یا تکبر یا بے فکری یا خود بنی یا نمائش یا شهرت طبی یا سنگدلی یا دور کی یا کفر یا بدعملی یا نا فر مانی یا محمندُ یا رِيَآءٍ أَوُ سُسَمُعَةٍ أَوُ شِسَقَاقَ أَوُ نِفَاقَ أَوُ كُفُر أَوُ فُسُوُقَ أَوُ عِصْيَانَ أَوُ عَظَمَةٍ أَوُ شَيْءٍ لأَ تیری کوئی بالبندید ہ بات ہے تو تھے سے سوال کرنا ہوں اے پر و ردگا رکہ ان ہرائیوں کومٹا کران کی جگہ میرے دل میں اپنے نُحِبُّ فَاسْئَلُکَ يَا رَبَّ اَنُ تُبَدِّلَنِي مَكَانَهُ إِيُمَانًا بِوَعُدِکَ وَ وَفَآءً بِعَهُدِکَ وَ

بِ فَصَضَا آئِکَ وَ رُهُدُا فِي الدُّنيُ وَ رَغُبَةً فِيْمَا عِنْدَکَ وَ اَثَوَةً وَ طُمَانِينَةً وَ تَوُبَةً نَصُوحُ وَ اَسَعَلُکَ وَ اَثَوَةً وَ طُمَانِينَةً وَ تَوُبَةً نَصُوحُ وَ اَسَعَلُکَ وَ اَثَوَةً وَ اللهِ اللهُ عَلَى مُحَمَّد وَ اللهُ اللهُ عَلَى مُحَمَّد وَ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ

ماورمضان كي فضيلت واجميت كاتذكره

(۱) حضرت شیخ صدوق علیه الرحمه بسند معتبر حضرت امام رضالطی سے اور وہ اپنے آباء و احدا د طاہرین علیہم السلام کے سلسلئرسند ہے حصرت امیر الظاملاہے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے فرمایا کہ ایک دن پیغیبر اسلام 🏙 نے خطبہ دیتے ہوئے فر مایا: ایہا الناس! تمہاری طرف رحمتوں اور برکتوں والامہینہ آرہا ہے بیہ و ہمہینہ ہے جس میں گنا ہ معاف ہوتے ہیں اور بیروہ مہینہ ہے جوخدا کے بز دیک دوسر ہے سب مہینوں ہے افضل ہے، جس کے دن دوسر مے مہینوں کے دنوں سے افضل، جس کی راتیں دوسر مے مہینوں کی راتوں سے افضل اور جس کی گھڑیاں دوسر مے مہینوں کی گھڑیوں ہے افضل ہیں۔ میدوہ مہینہ ہے جس میں خدا اپنے بندوں کواپنی مہمان نوازی کی طرف بلاتا ہے۔ فرمایا ہیدہ مقدال مہینہ ہے جس میں تبہارا سانس لیا تشہی ہے اور سوما عبادت ہے۔ اس میں عمل قبول ہوتے ہیں اور دعا کیں متجاب ہوتی ہیں۔ پس تم خالص نتیت اور باک دل کے ساتھ خدا سے دعا کرو کہوہ تہمیں اس میں روزے رکھنے اور قرآن بڑھنے کی توفیق دے کیونکہ جو شخص اس مقدس مہینے میں خدا کی بخشش ہے محروم رہ گیا وہ بڑا ہی بد بخت ہوگا۔اس ماہ کی بھوک و پیاس میں قیامت کی بھوک و پیاس کو یا دکرو اورغر باء ومساكين كوصد قه دو - بردول كي تعظيم كرو، چهوڙول پر شفقت كرواو ررشته دارول سے صلهٔ رحمي كرو -ان کہنی باتوں ہےاپنی زبانوں کو بیجاؤ، حرام چیزوں ہے اپنی نگاہوں کو بیجاؤ، جن چیزوں کاسننا جائز نہیں ہےان ے اپنے کانوں کو بیجاؤ، لوکوں کے بتیموں پر رحم کروتا کہ تمہارے بعد تمہارے بتیموں پر بھی رحم کیا جائے۔اپنے گنا ہوں ہے تو بہ کرد ۔ نمازوں کے بعد ہاتھا ٹھا کرخدا ہے دعا مانگو کیونکہ بیہ بہترین وقت ہے جس میں خدا اپنے بندوں پرنظر رحمت کرتا ہے۔خدانے اپنی عزت وجلالت کی قتم کھائی ہے کہ وہ اس مہینہ میں نمازیں پڑھنے اور سجدے کرنے والوں کوعذاب نہیں کرے گا اور قیامت کے دن ان کو آتش دوزخ سے نہیں ڈرائے گا۔ ایہا الناس! جو خص اس مقدس مہینہ میں کسی مؤمن کا روزہ افطار کرائے تو اسے گناہوں کی بخشش اورایک غلام آزا د كرنے كا ثواب ملتا ہے۔اس بريمى نے عرض كيا كہم ميں سے ہر شخص روز وا فطار كرانے كى قدرت نہيں ركھتا

تو؟ فرمایا: تم افطاری میں آ وھی مجور کھلا کر اور پانی کا ایک گھونٹ پلا کراپنے آپ کوآتش دوز نے ہے ہوا ہے۔ گرمایا: جو شخص اس مہینہ میں اپنے افلاق درست رکھے تو خدا تعالیٰ اے آ سانی بل صراط ہے گزارے گا، جو شخص اس مہینہ میں اپنے غلاموں اور کنیزوں ہے کم خدمت لے تو خدا اس کا حساب آ سانی لے گا۔ جو اس مہینہ میں کی میزے کر ہے خدا قیامت کے دن اے عزت کی نگاہ ہے دیکھے گا۔ جو شخص اس مہینہ میں اپنے رشتہ داروں میں رکھے گا دی خوص اس مہینہ میں اپنے رشتہ داروں سے صلہ رحی اور جو اس مہینہ میں اپنے رشتہ داروں سے بدسلوک کر ہے تو خدا قیامت کے دن اے اپنی رحمت سے نوازے گا۔ اور جو اس مہینہ میں اپنے رشتہ داروں سے بدسلوک کرے گا تو خدا قیامت کے دن اے اپنی رحمت سے محروم رکھے گا۔ جو شخص اپنے رشتہ داروں سے بدسلوک کرے گا تو خدا قیامت کے دن اے اپنی رحمت سے محروم رکھے گا۔ جو شخص اس مہینہ میں آئی آن میں گروں میں ختم قرآن کا ثواب عطافر مائے گا۔ ایہا الناس! اس مقدس مہینہ میں تہمارے لیے جنت کے دروازے کھلے ہوئے ہیں۔خدا سے دعا کرو کہ وہ انہیں تمہارے لیے بھی نہ انہیں تم پر بھی بند نہ کرے اور جہنم کے دروازے بند ہیں۔ پی خدا سے سوال کرو کہ وہ انہیں تمہارے لیے بھی نہ کھولے اور شیاطین کو اس مقدس مہینہ میں زنچے دوں میں جکڑ دیا گیا ہے۔خدا سے سوال کرو کہ وہ انہیں تمہارے لیے بھی نہ کھولے اور شیاطین کو اس مقدس مہینہ میں زنچے دوں میں جکڑ دیا گیا ہے۔خدا سے سوال کرو کہ وہ انہیں تمہارے لیے بھی نہ کھولے اور شیاطین کو اس مقدس مہینہ میں زنچے دوں میں جکڑ دیا گیا ہے۔خدا سے سوال کرو کہ وہ دورہ کے دورہ کی ان کوتم پر

ملط نه كري منا آخر رواية بالفق الاتالى المعالى المعالى المعالى SIBTA المعالى ا

یمی وہ مقدس مہینہ ہے کہ جس میں ایک ایسی رات ہے کہ جس میں عباوت خدا کرنا ہزار مہینوں کی عباوت خدا کرنا ہزار مہینوں کی عباوت ہے۔ یہ خشش گنا ہان کامخصوص مہینہ ہے۔ حضرت امام جعفر صادق الطبی فر ماتے ہیں کہ جو شخص اس متبرک مہینہ میں نہ بخشا گیاوہ الگلے ماور مضان تک نہیں بخشا جائے گا۔ (جمال الاسبوع)

نیز فر مایا کہ صرف منداور شکم کوروزہ نہر کھواؤ بلکہ جب روزہ رکھوٹو اپنے کانوں، آئکھوں اور دوسر بے اعضاء بدن کو بھی روزہ رکھواؤ۔ حضرت امام محمد باقر الطبی بیان کرتے ہیں کہ حضرت رسول خدا ہے نے فر مایا: جو شخص ماو رمضان کے دنوں میں روزہ رکھے اور راتوں کے پچھے حصہ میں خدا کی عبادت کرے اور اپنے پیٹ اور شرم گاہ کو حرام سے بچائے اور اپنی زبان پر قابور کھے تو وہ گنا ہوں سے پاک ہوجاتا ہے۔ راوی (جاری بن عبداللہ انصاری) نے عرض کیا: یا رسول اللہ ہے! آپ نے بہت اچھی صدیث ارشاد فر مائی ہے۔ آپ نے فر مایا: وہ شرطیں بھی تو بہت کڑی ہیں جو میں نے بیان کی ہیں۔ (زادالمعادو غیرہ)

ماورمضان كمشتركها عمال كاتذكره

اور بیرا عمال جا رقتم کے ہیں:

(۱) بہلی تنم:۔ماہرمضان کے تمام شب وروز کے اعمال

اور بيه چندامور بين:

(۱) ہر نماز فریضہ کے بعد وہ دعا پڑھی جائے جوحضرت امام جعفر صادق القای وامام مویٰ کاظم القای

ہمروی ہے:

اَللَّهُا مَّ ارُزُقُنِسیُ حَجَّ بَیُةِ کَ الْحَرَامِ فِی عَامِیُ هٰذَا وَ فِی کُلِّ عَامٍ مَّاۤ اَبُقَیْتَذِی فِی یُسُرِ ﴿ اے معبود! اس مال میں اور ہرمال میں مجھانے حرمت والے گر (کعبہ) کے جَّ کی تو نیق ارزانی فرما جب تک تو مجھے

مِنُكَ وَ عَافِيَةٍ وَ سَعَةٍ رِزُقٍ وَّلاً تُسِحِلُنِي مِنُ تِسَلُّكَ الْمَوَاقِفِ الْكَرِيُمَةِ وَ الْمَشَاهِلاَ زنده ركح اپی طرف سے آمانی، آمام اوروسعت رزق نصیب فرما مجھان بزرگی وکرامت والے مقامات اور مقدس و

الشَّرِيُـفَةِ وَ زِيَـارَةِ قَبُـرِ نَبِيِّكَ صَـلَـواتُكَ عَلَيُهِ وَ الِهِ وَ فِيُ جَمِيُعِ حَوَآئِجِ الدُّنُيَا أَ

یا کیز ہ مزا رات اورا پنے نبی کریم کے سبز گنید کی زیا رت کرنے سے محروم ندر کھتیری رحمت ہوان پر اور ان کی آل پر اور

الاحِرَـةِ فَكُنُ لِنَي اللَّهُمْ إِنِّي اسْتَلَكَ فِيكُمَّا لَقُصْ يُ وَتُقَدِّرُ مِنَ الْامُرِ الْمَحْتُومِ فِي

دنیا و آخرت سے متعلق میری تمام حاجات پوری فرما دے اے معبود! نمیں تھے سے سوال کرتا ہوں کرشب قد رمیں تو جو پینی

لَيُلَةِ الْقَدْرِ مِنَ الْقَضَاءِ الَّذِي لا يُسرَدُ وَلا يُبَدُّلُ اَنُ تَكُتُبَنِي مِنْ حُجَّاجٍ بَيُةِكَ

امور طے فرما ٹا او رجو محکم فیلے کرتا ہے کہ جن میں کسی فتم کی تبدیلی ویلیٹ نہیں ہوتی ان میں میرا ما م اپنے محترم گھر (کعبہ) کا

الْحَرَامِ الْمَبُرُورِ حَجُّهُمُ الْمَشْكُورِ سَعُيُهُمُ الْمَعُهُ وَدُنُوبُهُمُ الْمُكَفَّرِ عَنُهُمُ

عج کرنے والوں میں لکھ دے کہ جن کا عج مخطور ہے او ران کی سعی مقبول ہے ان کے گنا ہ بیخشے مجھے اوران کی خطا نمیں مظا

سَيِّئَ اتُهُمُ وَاجْعَلُ فِيُمَا تَقُضِى وَتُقَدِّرُ اَنْ تُطِيلًا عُمْرِى وَتُوسِّعَ عَلَيً

دی گئیں ہیں اور اپنی بست و کشاد میں میری عمر طولائی میری رو زی و رزق کشا دہ فرما اور مجھے ہرا مانت اور ہر قرض اوا

رِزْقِي وَ تُؤدِي عَنِينَ آمَانَتِي وَ دَيُنِي آمِينَ يَا رَبَ الْعَالَمِينَ.

كرنے كى تو نيش د سے ايسا ہى ہوا سے جہا نوں كے بالنے والے۔

(۲) انہی دونوں برزرکواروں سے منقول ہے کہ ماہ رمضان میں ہر نماز فریضہ کے بعدید دعاریاهی

:26

السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ وَ هَلْذَا شَهُرٌ عَظَّمُتَهُ وَ كَرَّمُتَهُ وَ شَرَّفَتَهُ وَ فَضَلْتَهُ عَلَى الشَّهُوْدِ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَسِينِيُ وَهِ الْمَاكَةِ وَ هُوَ السَّمَاءُ وَ هُوَ السَّمَاءُ وَ هُوَ السَّمَاءُ وَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَ اللَّهُ اللَّهُ وَ اللَّهُ اللَّ

الشَّهُوُ الَّذِي فَرَضْتَ صِيامَهُ عَلَى وَهُوَ شَهُو رَمَضَانَ الَّذِي اَنُوَلُتَ فِيْهِ الْقُو انَ هُدًى الشَّهُو اللَّهُو اللَّهُ اللَ

لِلنَّاسِ وَ بَيْنَاتٍ مِّنَ الْهُدَى وَ الْهُرُقَانِ وَ جَعَلْتَ فِيْهِ لَيُلَةَ الْقَدْرِ وَ جَعَلْتَهَا خَيْراً مِنُ الْفِ

شَهُرٍ فَيَاذَا الْمَنِّ وَلاَ يُمَنُّ عَلَيُكَ مُنَّ عَلَيْ عَلَيْ عِلَى بِفَكَاكِ رَقَبَتِي مِنَ النَّارِ فِيُمَنُ تَمُنُّ عَلَيْهِ إ

کرنے والے جھے پر احمال نہیں کیا جا سکا تو حمال فرہا بھے پر میری گردن آگ کے چھڑا کمان کے ساتھ جن پرتو نے احمان کیا اور جھے

اَدُخِلْنِي الْجَنَّةَ بِرَحُمَةِكَ يَا اَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ.

واظل جنت فرماا پی رحمت ہے اے سب سے زیادہ رحم کرنے والے۔

(٣) حضرت رسول خداصلی الله علیه و آله وسلم مے منقول ہے ، فرمایا: ماہ رمضان میں ہرنما زفریضہ کے

بعديد دعاريهي جائے:

اَلْلَهُمَّ اَدُخِلُ عَلَى اَهُلِ الْقُبُورِ السُّرُورَ اَللَّهُمَّ اَغُنِ كُلَّ فَقِيْرِ اَللَّهُمَّ اَشُبِعُ كُلَّ جَائِعِ الصعبودا قبرول مِن دُن شده لوگوں كوشادما في عطافر ما الصعبود البرقتاج كوفن بنا دلا الصعبود البر بهوكے كوشم سركرد

اَللَّهُمَّ الْحُسُ كُلَّ عُرُيانِ اَللَّهُمَّ اقْضِ دَيُنَ كُلِّ مَدِيْنِ اَللَّهُمَّ فَرِّ جُ عَنُ كُلِّ مَكُرُوبِ اعتبودا بر يُظَاوَلاس بِهِنا دعاعة معودا برمقروض كاقرض اداكرا دعاعة معودا برمعيت زده كوآسودگى عطافرماات

اَللْهُمَّ رُدَّ كُلَّ عَسرِيْسِ اَللْهُمَّ فُكَ كُلَّ اَسِيْسِ اَللْهُمَّ اَصُلِحُ كُلَّ فَاسِدٍ مِّنُ اُمُورُ معبود! برسافر كوطن والى لاا معبود! برقيدى كور بإتى بخش دےا معبود! صلمانوں كے امور ميں سے بربگاڑى اصلاح فرما

**** الْـمُسُـلِـمِيْـنَ اَللّٰهُـمَّ اَشُفِ كُـلَّ مَـرِيُضِ اَللّٰهُمَّ سُدَّ فَقُرَنَا بِغِنَاكَ اَللَّهُمَّ غَيْرُ سُوْءَ حَالِنَا دے اے معبود! ہر مریض کوشفا عطافر ما اے معبود! اپنی مروت سے ہما ری بختاجی ختم کر دے اے معبود! ہما ری بد حالی کوخوشحالی بِحُسُنِ حَالِكَ اَللَّهُمَّ اقُصْ عَنَّا اللَّذِينَ وَ اَغْنِنَا مِنَ الْفَقُرِ اِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيُّ قَدِيُ میں بدل وےا ہمعود! ہمیں اپنے قرض اوا کرنے کی تو فیق وےاور مختاجی ہے بچالے بے فک تو ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے۔ (۴) حضرت امام جعفر صادق الطي الصحروي ب كه ماه رمضان مين نماز مغرب كے بعد بيد وعاريوهي ٱللُّهُــمُ إِنِّيُ بِكَ وَ مِنْكَ ٱطُلُبُ حَاجَتِيُ وَمَنُ طَلَبَ حَاجَةً إِلَى النَّاسِ فَإِنِّي لَآ ٱطُلُبُ ا ہے معبود! میں تیرے ہی ذریعے تھے سے اپنی حاجت طلب کرتا ہوں جو کوئی لوگوں سے طلب حاجت کرتا ہے کیا کرے پس میں حَساجَتِنِي إِلَّا مِنْكَ وَحُدَكَ لا شَرِيُكَ لَكَ وَ اَسْئَلُكَ بِفَضْلِكَ وَ رَضُوَّ كُلَّ اَنُ تیرے سواکسی سے طلب حاجت ٹیل کرنا تو بکتا ہے تیرا کوئی ساجھی ٹیل اور سوال کرنا ہوں تھے سے بواسطہ تیری عطاوم ہربا ٹی کے بیر تُصَلِّي عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الْهُولِ لِيَهُ وَ أَنْ تَجُعَلَ لِي فِي عَامِي هَلْالِلِي بَيْرِكَ الْحَرَام کہ رحمت نا زل فر ماحضرت محمداً وران کے اٹل بیٹ پر اور میرے لیے ای سال میں اپنے محترم گھر کعبہ ڈکھنے کا وسیلہ بنا وے وہاں سَبِيُلاً حِجَّةً مَّبُـرُورَةً مُّتَقَبَّلَةً زَاكِيَةً خَالِصَةً لَّكَ تَقَرُّبهَا عَيْنِي وَ تَرُفَعُ بهَا دَرَجَتِي مجھے حج نصیب کرجو درست مقبول پا کیزہ اور خاص تیرے ہی لیے ہو اس سے میری آئیمیں ٹھنڈی کراو رمیرے درج بلند فرما تَـرُزُقَنِيٰ آنُ اَغُطَّ بَصَـرِيُ وَ اَنُ اَحُفَظَ فَرُجِيُ وَ اَنُ اَكُفَّ بِهَا عَنُ جَمِيْعِ مَحَارِمِكَ مجھے تو فیق دے کہ حیا ہے آ تکھیں نیجی رکھوں اپنی شرمگاہ کی حفاظت کروں اور تیری حرام کر دہ ہر چیز ہے نیج کے رہوں یہاں تک حَتُّى لا يَكُوُنَ شَيُّءٌ اثَرَ عِنُدِيُ مِنُ طَاعَتِكَ وَ خَشْيَتِكَ وَ الْعَمَل بِمَآ أَحْبَبُتَ کرمیرے نز دیک تیری فرمانبر داری اور تیرے خوف سے عزیز ترکوئی چیز ند ہوجس چیز کو تُو پیند کرتا ہے اس پڑمکل کروں اور جے تُو التَّـرُكِ لِـمَا كَـرهُـتَ وَ نَهَيُـتَ عَنْهُ وَاجْعَلُ ذَلِكَ فِي يُسُر وَّ يَسَار وَّ عَافِيَةٍ وَّمَآ أَنْعَمُ نے ناپیند کیا او راس سے رو کا ہےاہے چھوڑ دوں اور یہ اس طرح ہو کہ اس میں آسانی فراوانی و تندری ہواو راس کے ساتھ جو ـــه عَــلَــيَّ وَ ٱسُـئَـلُكَ أَنُ تَـجُعَلَ وَفَاتِـيُ قَتُلاً فِـيُ سَبِيُـلِكَ تَـحُتَ رَأُيَّةٍ نَبِيّكَ بھی نعمت تو مجھے عطا کرے اور چھے سے سوالی ہوں کہ میری موت کوالیا قرار دے کویا میں تیری را ہ میں تیرے نبی کے جینڈے تلے

اُوُلِکِ آؤِک وَ اَسْفَلُک اَنُ تَفُدُلَ بِاَنْ ہُدَا آؤک وَ اَعُدَاءَ رَسُولِک وَ اَسْفَلُک وَ اَوْلِیَ آؤِک وَ اَسْفَلُک وَلَا آؤِک وَ اَسْفَلُک وَلَا اَوْلِی آؤِک وَ اَسْفَلُک وَلَا اَوْلِی آؤِک وَلَا اَوْلِی آؤِک وَلَا اَوْلِی آؤِک وَلَا اَوْلِی آؤِک وَلَا اَوْلِی اَوْل کَا اَوْل کَا اَوْل کَا اَوْل کَا اَوْل کَا اَوْل کُروں اَوْل کُروں اَوْل کُرا اوَل کُرا اوْل اَلْمُ اَلْ اَوْل اَلْمُ اَوْل اَوْل اَوْل اَوْل اَوْل اَوْل اَوْل اَلْمُ اَلْمُ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰ اَوْل اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰ اللّٰهُ اللّٰ ا

(٢) دوسرى فتم: ماه رمضان كى راتو سكے اعمال

اور پیچھی چندامور ہیں:۔

(۱) نما زِمغرب پڑھ کرروز ہ افطار کیا جائے مگرید کہ بخت بھوک و پیاس ہویا لوگ اس کے منتظر ہوں۔

(٢) علال اور يا كيزه چيز بروزه افطام كياجائ او رحرام بلكه مشته چيز بهي پر بيز كياجائ -

(۳) افطاری کے دفت وہ دعا کئیں پڑھی جا کیل جوسر کارمحہ و آ ل محمد علیم السلام ہے مروی ہیں جیسے بیہ

دعا جو پیغیبراسلام صلی الله علیه و آله وسلم ہے منقول ہے ، فر مایا : جو شخص افطاری کے وقت بید دعا پڑھے وہ گناہوں ہے اس طرح پاک ہو جانا ہے جیسے اب شکم ما در ہے متولد ہوا ہے :

يَا عَظِيُهُمُ يَا عَظِيهُمُ ٱنُتَ اللهِ يُ لأ اللهَ لِيُ غَيُرُكَ اغْفِرُ لِيَ الذَّنُبَ الْعَظِيرَ

اے عظیم خدا تو ہی میرا معبود ہے تیرے سوا میرا کوئی الدنہیں ہے میرے بڑے گناہ کو معاف فرما کیونکہ بڑے (خدا)

إِنَّهُ لَا يَغُفِرُ الذَّنُبَ الْعَظِينَمَ إِلَّا الْعَظِينُمُ.

کے سوااورکوئی بڑے گناہ کومعاف نہیں کتا۔ (المصباح)

(۴) جناب امام موی کاظم الطفی این آباء طاہرین علیم السلام سے روایت کرتے ہیں کہ افطاری

کے وقت میدوعار پڑھی جائے:

اَ لَلْهُ مَّ لَکَ صُدُمُ تُ وَ عَلَى دِ زُقِکَ اَفُطُ رُثُ وَ عَلَيُکَ تَ وَکَّلُ اے اللہ! تیرے لیے دوزہ رکھا ہوں تیرے رزق سے افطار کنا ہوں اور تھی پر میرا مجروسر ہے۔

(Fan)

(۵) حضرت امیر الطفی کے بارے میں منقول ہے کہ آپ افطاری کے وقت بید و عاربا صاکرتے تھے:

بِسُمِ اللّٰهِ اللّٰهُ مَّ أَكَ صُمْنَا وَ عَلْى رِزُقِكَ اَفُطُرُنَا فَتَقَبَّلُ مِنَّ خداك ام ے اے اللہ! ہم نے تیرے لیے دوزہ رکھا تیرے رزق سے افطار کیا ہی اے ہماری طرف سے تیول فرما

إِنَّكَ آنُتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ.

بے شک تو سننے والا جاننے والا ہے۔

(١) حضرت امام مویٰ کاظم الطبی اپنے آباء طاہرین علیہم السلام ہے نقل کرتے ہیں کہ روزہ دار کو

چاہیئے کہ افطاری کے وقت جب پہلالقمہ اٹھائے تو بید دعاپڑ ھے جس کی پر کت ہے اس کے گنا ہ بخشے جا کمیں گے: پند میں میں انداز کی اور انداز کی اس کے گنا ہ بخشے جا کمیں گے:

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ يَا وَاسِعَ الْمَغُفِرَةِ اغْفِرُلِي .

ا بين ي وسيع بخشش والے حدا إتو ميري مغفرت فرما۔

(٤) سورة انا انولناه في ليلة القدر كاير عنا- چنانچ حضرت امام زين العابدين الطفي سعمروى

ب،فرمایا: جو خص محری اور افطاری کے وقت سور کان انزلناہ فی لیلة القدر کی تلاوت کرے وہ ایہا بیسے

الله كى راه يس البية خون يل و الله على والله . SIBTAIN الله كى راه يس البية خون يل والله .

بِسُمِ اللهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ خداكمام عشروع جورطن ورجم ہے

إِنَّسا اَنُسزَلْسَساهُ فِسى لَيُسَلَةِ الْفَسُورِ (١) وَمَآ اَدُراکَ مَا لَيُسَلَهُ الْفَسُورِ (٢) لَيُسَلَهُ الْفَسُورِ خَيْسرٌ چک ہم نے اے شب قدر میں نازل کیا ہے۔ اور آپ کیا جانیں یہ شب قدر کیا چیز ہے۔ شب قدر ہزار مینوں

مِّنَ ٱلْفِ شَهْرِ (٣) تَسَنَزُلُ الْسَمَالَئِكَةُ وَ الرُّوْحُ فِيْهَا بِاذُنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ آمُرٍ (٣)

ہے۔ اس میں ملا مکنہ اور روح القدس اؤن خدا کے ساتھ تمام امور کو لے کر مازل ہوتے ہیں۔

سَلامٌ. هِمَى حَتُّى مَطُلَعِ الْفَجُوِ (٥) به رات طاوع فجر تک سلامتی عی سلامتی ہے۔

(٨) ابل ايمان كوروز ه افطار كراما كهجس كابے حد اجمد وثواب وار د مواہے۔

(9) خاندانِ نبوت کے بعض افراد سے مردی ہے ، فر مایا : جو شخص ماہ رمضان کی ہررات بیہ دعا پڑھے تو

اس کے جالیس سال کے گنا دمعاف ہوجاتے ہیں:

************** ٱللُّهُــمُّ رَبَّ شَهُـر رَمَضَانَ الَّذِي ٱنْزَلْتَ فِيْهِ الْقُرُانَ وَافْتَرَضْتَ عَلَى عِبَادِكَ فِيْهِ الصَّيَاكِمْ ا سے اللہ!ا ہے اور مضان کے بروردگا رکہ جس میں آؤنے قرآن کریم نازل فرمایا اوراپنے بندوں براس ماہ میں روز ہے رکھنا فرض کیے صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّال مُحَمَّدٍ وَارُزُقُنِي حَجَّ بَيْتِكَ الْحَرَامِ فِي عَامِي هَذَا وَفِي كُلِّ عَا رحمت نا زل فرمامحد وآل محمد پراور مجھے اس سال اپنے عزت والے گھر کصبہ کا حج نصیب فرمااورآ مند ہسالوں میں بھی اورمیرے اب وَاغُفِرُلِي تِلْكَ الذُّنُوْبَ الْعِظَامَ فَإِنَّهُ لاَ يَغُفِرُهَا غَيُرُكَ يَا رَحُمٰنُ يَا عَلَّا تک کے تمام گنا بان کبیر ہ معاف کردے کیونکہ ہوائے تیرے انہیں کوئی معاف نہیں کرسکتاا ہے زیا دہ رخم والے اے زیا دہ علم والے۔ ا (١٠) ہو سکے تو ماہ رمضان کی ہر شب دعائے افتتاح پڑھے جو کہ حضرت صاحب انعصر والز مان الطبیج ہے منقول ہے کہآئے نے اپنے شیعوں کولکھا تھا کہا ہ رمضان کی ہر شب میں بید دعایرہ ھا کریں: ٱللُّهُمَّ إِنِّي ٱفْتَتِحُ الثُّنَاءَ بحَمُدِكَ وَٱنْتَ مُسَدِّدٌ لِلصَّوَابِ بِمَنِّكَ وَ ٱيْقَنْتُ ٱنَّكَ ا ہے معبود! تیری حمد کے ذریعے تیری تعریف کا آغاز کرتا ہوں اورتو اپنے احسان سے راہ راست دکھانے والا ہے اور مجھے یفتین ہے کرتو اَرُحَهُ الرَّاحِمِيْنَ فِهِي مَوْضِعَ الْعَفُو وَ الزَّاحُمَةِ وَ اَشَادُ الْمُعَاقِبِيَ فِي مَوْضِع النَّكَالِ وَ معافی دیے مہربا فی کرنے کے مقام پر سب سے برد ھ کرچم و کرم کرنے والا ہےاور شکنجہ وعذا ب کے موقع پر سب سے خت عذاب دیے النَّقَمَةِ وَ اَعْظَمُ الْمُتَجَبِّرِيْنَ فِي مَوْضِعِ الْكِبُرِيَآءِ وَ الْعَظَمَةِ اَللَّهُمَّ اَذِنْتَ لِي فِي دُعَآئِكَ والاہےاور بڑائی اور ہزرگ کے مقام پرتو تمام قاہروں اور جاہروں سے بڑھا ہوا ہےا ساللہ! تو نے مجھے اجازت دے رکھی ہے کہ جھھ وَ مَسْئَلَةِكَ فَاسْمَعُ يَا سَمِيُعُ مِدْحَةِي وَ اَجِبُ يَا رَحِيُمُ دَعُوتِي وَاقِلُ يَا غَفُورُ عَثُرَتِي ے دعا وسوال کروں پس اے سننے والے اپنی میہ تعریف سن اور اے مہر بان میری دعا قبول فرما اے بخشنے والے میری خطامعا ف کر پس فَكَــهُ يَـا اللهـيُ مِـنُ كُرُبَةٍ قَدُ فَرَّجُتَهَا وَهُمُوم قَدُ كَشَفْتَهَا وَعَثْرَةٍ قَدُ اَقَلُتَهَا وَ رَحُمَةٍ قَدُ ا میرے معبود! کنٹی ہی مصیبتوں کو نے دورکیا اور کتنے ہی اندیشوں کو ہٹایا اور خطاؤں سے درگز رکی رحمت کوعام کیااور بلاؤں کے نَشَـرُتَهَا وَ حَلُقَةِ بَلَآءٍ قَدُ فَكَكُتَهَا ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمُ يَتَّخِذُ صِاحِبَةً وَلاَ وَلَدًا وَلَمُ يَكُنُ تحجیرے کوتو ژا اور رہائی دی حماس اللہ کے لیے ہے جس نے نہ کسی کواپٹی زوجہ بنایا اور نہ کسی کواپنا میں بنایا نہ بسی اس کا کوئی سما جھی ہے لْـهُ شَـرِيُكُ فِـي الْـمُـلُكِ وَلَـمُ يَكُنُ لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرُهُ تَكُبِيُرًا اَلْحَمُدُ لِلَّهِ بِجَمِيٌّ إِ سلطنت میں اور نہ وہ عاجز ہے کہ کوئی اس کا سر پرست ہواس کی بڑائی کرو بہت بڑائی حمداللہ بی کے لیے ہے اس کی تمام خوبیو ں اور اس کی

************** مَحَامِدِهٖ كُلِّهَا عَلَى جَمِيْعَ نِعَمِهِ كُلِّهَا ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي لاَ مُضَآدً لَهُ فِي مُلْكِهِ وَلاَ ساری نعتوں کے ساتھ حماس اللہ کے لیے ہے جس کی حکومت میں اس کا کوئی مخالف ٹیس نہاس کے علم میں کوئی رکاوٹ ڈالنے والا ہے مُنَازِعَ لَـهُ فِـيُ أَمُـرِهِ ٱلْـحَـمُدُ لِلَّهِ الَّذِي لاَ شَرِيُكَ لَهُ فِي خَلْقِهِ وَلاَ شَبِيُهَ لَهُ فِي عَظَمَتِهَ حماس اللہ کے لیے ہے جس کی آ فرینش میں کوئی اس کا ساجھی نہیں او راس کی بڑائی میں کوئی اس جیسا نہیں حماس اللہ کے لیے ہے کہ ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الْفَاشِيُ فِي الْخَلْقِ اَمُرُهُ وَ حَمُدُهُ الظَّاهِرِ بِالْكَرَمِ مَجُدُهُ اَلْبَاسِطِ بالْجُوْدِ يَدَهُ جس کا تھم اور حمداور خلق میں آشکارہاں کی شان اس کی جھشش کے ساتھ خلاجرہے بن مائلے دیے میں اس کا ہاتھ کھلا ہے وہی ہے جس الَّذِيُ لاَ تَنْفُصُ خَزَ آئِنُهُ وَلاَ تَزِيُدُهُ كَثُرَةُ الْعَطَآءِ إِلَّا جُوُدًا وَ كَرَمًا إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيُزُ کے خزائے کم نیل ہوتے اور کثر ت کے سماتھ عطا کرنے سے اس کی پیشش وسخاوت میں اضا فیہونا ہے کیونکدو ہ زبر دست عطا کرنے والا الْوَهَّابُ اَللَّهُمَّ اِنِّيُ اَسْئَلُكَ قَلِيُلاً مِّنُ كَثِيْرِ مَعَ حَاجَةٍ بِيُ اِلَيْهِ عَظِيْمَةٍ وَ غِنَاكَ عَنْهُ قَدِيْمٌ ﴿ ہا ہے معبود ائمیں سوال کرتا ہوں جھ سے بہت میں سے تھوڑے کا جبکہ مجھاس کی بہت زیا وہ حاجت ہاورتو ہمیشہ اس سے بنیا ز هُ وَ عِنْدِى كَثِيْرٌ وَهُ وَ عَلَيْكَ مِهِ لَ يُلِيلِرُ اللَّهُمِّ إِنَّ عَلْوَكَ عَنْ ذَنْبِي وَ تَجَاوُزَكَ فَيْنُ ہو ہ نعت میرے لیے بہت بڑی ہےاور تیرے لیے اس کا دینا آسمان ہےا ہے معبو دیے فٹک تیرا میرے گیا ہ کومعاف کرنا میری خطا خَطِيْئَتِيُ وَ صَفُحَكَ عَنُ ظُلُمِيُ وَ سِتُرَكَ عَلَى قَبِيْحِ عَمَلِيُ وَ حِلْمَكَ عَنُ كَثِيْرِ جُرَيِّهِي ے تیری درگز رمیرے ملے سے تیری چیٹم پوٹی میرے یر مے مل کی پر دہ پوٹی میرے بہت سے جمائم پر تیری بر دباری جبکہ ان میں سے عِنُدَ مَا كَانَ مِنُ خَطَآئُ وَ عَمُدِيُ ٱطُمَعَنِيُ فِي ٱنُ ٱسْئَلَكَ مَا لاَ ٱسْتَوُجِبُهُ مِنُكَ الَّذِي لبعض بھول کراور بعض میں نے جان ہو جھ کر کیے تو اس ہے مجھ طبع ہوئی کہ میں تجھ سے و دما تھوں جس کا میں حقدارٹییں چنانچہ تو نے اپنی رَزَقُتَنِيُ مِنُ رَحُمَتِكَ وَ اَرَيُتَنِيُ مِنُ قُدُرَتِكَ وَ عَرَّفُتَنِيُ مِنُ اِجَابَتِكَ فَصِرُتُ اَدْعُوكَ ﴿ لَكُنَّا وَ رحمت سے مجھے روزی دی اورا پی قدرت کے کر شے دکھائے قبولیت وا جابت کی پیچان کرائی پس اب میں باامن ہو کر تھے پکارتا ہوں ٱسْئَلُكَ مُسْتَأْنِسًا لاَ خَائِفًا وَلاَ وَجلاً مُدِلاً عَلَيْكَ فِيُمَا قَصَدُتُ فِيْهِ اِلَيْكَ فَاِنُ ٱبُطَأَعَ ﴿ يُكُ اور سوال کرتا ہوں الفت سے نہ ڈرتے تھمراتے ہوئے اور مجھے ما زے کہ اس بارے میں تیری بارگاہ میں آیا ہوں پس اگر تونے قبولیت عَتَبُتُ بِجَهُلِيٌ عَلَيُكَ وَلَعَلَّ الَّذِي اَبُطَاءَ عَنِّي هُوَ خَيْرٌ لِيُ لِعِلْمِكَ بِعَاقِبَةِ الْأُمُورِ فَلَمُ میں دیر کی تو میں بوجہ ما دانی تھے سے محکو ہ کروں گا اگر چہوہ تا خیر کاموں کے نتائج سے متعلق تیرے علم میں میرے لیے بہتری کی حامل ہو

****************** مَوُلِّي كَرِيْمًا أَصُبَرَ عَلَى عَبُدٍ لَئِيهِم مِنُكَ عَلَيَّ يَا رَبِّ إِنَّكَ تَدُعُونِي فَأُولِي عَنُكَ ﴿ اس میں نے تیرے سوا کوئی مولائیں دیکھا جومیرے جیسے بہت ہندے پر مہر بان و صابر ہوا ہے پر وردگا راتو مجھے پکارتا ہے قومیں تجھ سے تَتَحَبُّبُ اِلَيَّ فَاتَبَغَّضُ اِلَيُكَ وَ تَتَوَدُّدُ اِلَيَّ فَلاَ اَقْبَلُ مِنْكَ كَانَّ لِيَ التَّطَوُّلَ عَلَيْكَ منه موڑتا ہوں تو مجھ ہے محبت کرتا ہے میں جھھ سے خفلی کرتا ہوں تو میر ہے ماتھ الفت کرتا ہے میں بے رخی کرتا ہوں جیسا کہ میرا تجھ پر کوئی يَمُنَعُكَ ذَٰلِكَ مِنَ الرَّحُمَةِ بِيُ وَ الْإِحْسَانِ اِلَيَّ وَ التَّفَضُّلُ عَلَيٌّ بِجُوْدِكَ وَ كَرَمِكَ فَأَلْحَ حُمُ احسان رہا ہوتو بھی میرا پیطر زقمل تھیے مجھ پر رحمت فرمانے اور مجھ پراپی عطاو بخشش کے ساتھ فغل واحسان کرنے ہے با زخیل رکھتا پس عَبُدَكَ الْجَاهِلَ وَجُدُ عَلَيْهِ بِفَضُلِ إِحْسَاذِكَ إِنَّكَ جَوَادٌ كَرِيْمٌ ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ مَالِكِ الْكَثِّيكِ ا ہے اس ما دان بندے پر رحم کراو راس پراپنے فعل واحسان سے مخاوت فرما بے شک تو بہت دینے والا تنی ہے حمد ہے اس اللہ کے لیے جو مُـجُرى الْفُلُكِ مُسَجِّرِ الرِّيَاحِ فَالِقِ الْإِصْبَاحِ دَيَّانِ الدِّيْنِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ اَلْحَمُدُ لِلّهِ عَلَى سلطنت کا ما لک کشتی کورواں کرنے والا ہوا وک کو قابور کھےوالا میم کوروشن کرنے والا اور قبل مت میں جزا دیے والا جہا نوں کامرور دگار حِلْمِه بَعُدَ عِلْمِهِ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ عَلَى عَفُوهِ بَعُدَ قُدُرَتِهِ وَالْحَمَدُ لِلَّهِ عَلَى طُول آنَاتِهِ فِي ے حدب اللہ کی کہ جانے ہوئے بھی بر دیا ری سے کام لیتا ہے اور حمد ہے اللہ کی قوت کے باوجود معاف کرتا ہے اور حمد ہے اللہ کی کہ غَضَبِهِ وَهُوَ قَادِرٌ عَلَى مَا يُرِيُدُ ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ خَالِقِ الْخَلُقِ بَاسِطِ الرِّزْقِ فَالِقِ الْاصْبَاحِ ذِي حالت غضب میں بھی ہڑا ہر دبار ہےاوروہ جو جا ہے اسے کرگز رنے کی طاقت رکھتا ہے حمد ہے اللہ کی جو مخلوق کو پیدا کرنے والا روز کی الُجَلالَ وَ الْإِكْرَامِ وَ الْفَضُلِ وَ الْإِنْعَامِ الَّذِي بَعْدَ فَلاَيُرِي وَ قَرُبَ فَشَهِدَ النَّجُواي کشا دہ کرنے والامیح کوروشنی بخشے والا صاحب جلالت وکرم اور فعنل وفتمت کاما لک ہے جوابیا دورہے کے نظر نہیں آتا اورا تنا قریب ہے کہ تَبَارَكَ وَ تَعَالَى ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي لَيُسَ لَهُ مُنَازِعٌ يُعَادِلُهُ وَلاَ شَبِيُهٌ يُشَاكِلُهُ وَلاَ ظَهِيْرُ را زکویھی جانتا ہے و دمبارک اور برمز ہے حمد ہے اس اللہ کی جس کا جمسر نہیں جواس سے جنگڑ اکرے نہ کوئی اس جیسا ہے کہ اس کا جمعنکل يُعَاضِدُهُ قَهَرَ بعِزَّتِهِ الْآعِزَّاءَ وَ تَوَاضَعَ لِعَظَمَتِهِ الْعُظَمَآءُ فَبَلَغَ بِقُدُرَتِهِ مَا يَشَآءُ ٱلْحَمُدُ ہونہ کوئی اس کا مددگارو ہمکار ہے و واپی عزت میں سب عزت والوں پر غالب ہےاور سجی عظمت والے اس کی عظمت کے آ سے جھکتے ہیں لِلَّهِ الَّذِيُ يُجِيْبُنِيُ حِيْنَ أَنَادِيُهِ وَ يَسُتُرُ عَلَيَّ كُلُّ عَوْرَةٍ وَآنَا اَعْصِيْهِ وَ يُعَظِّمُ النِّعُمَةَ عَلَيَّ و ہجوجا ہےاس پر قا در ہے حمد ہےاللہ کی جے پکارنا ہوں تو وہ جواب دیتا ہےاور میری برائی کی پر دہ پوٹن کرنا ہے میں اس کی نافر ماٹی کرنا

**** فَلاَ أَجَازِيْهِ فَكُمْ مِّنُ مَوُهِبَةٍ هَنِيْئَةٍ قَدُ أَعُطَانِيُ وَ عَظِيْمَةٍ مَخُوُفَةٍ قَدُ كَفَانِيُ وَ بَهُجَةٍ ہوں تو بھی مجھے بڑئی پڑ گافعتیں دیتا ہے کہ جن کا بدلہ میں اسے ٹیل دیت اپس اس نے مجھ پر کتنی ہی خوشکوارعنا بیتی اور بخشش کی ہیں کتنی مُوْنِقَةٍ قَدُ اَرَانِيُ وَ بَلِيَّةٍ مُوْبِقَةٍ قَدُ دَرَأَعَنِّيُ فَاثْنِيُ عَلَيْهِ حَامِدًا وَاَذُكُرُهُ مُسَبَّحًا اَلُحَمُدُ لِلَّهِ ی خطرنا ک آفتوں سے مجھے بیجالیا ہے گئی جیرت انگیز خوشیاں مجھے دکھائی ہیں پس ان پر اس کی حمد و ڈنا کرنا ہوں اور راگا تا راس کا مام لیتا الَّـذِىُ لاَ يَهُٰتَكُ حِـجَـابُهُ وَلاَ يُغُلَقُ بَابُهُ وَلاَ يُوَدُّ سَآئِلُهُ وَلاَ يُخَيِّبُ امِلُهُ ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي ہوں حمہ ہےاللہ کی جس کارپر دہ مثایا خیس جا سکتا اس کا در رحمت ہندنہیں ہوتا اس کا سائل خالی خیس جاتا اوراس کا امیدوا رما یوں خیس ہوتا حمہ يُـؤُمِنُ الْحَآئِفِيُـنَ وَيُنجى الصَّالِحِيْنَ وَ يَرُفَعُ الْمُسْتَضَعَفِيْنَ وَيَضَعُ الْمُسْتَكُبريُنَ وَ ہاں للہ کی جوڈرتے والوں کو پناہ دیتا ہے نیکو کاروں کونجات دیتا ہے لوگوں کے دبائے ہوؤں کوا بھارتا ہے برا بنتے والوں کو نیجا دکھا تا ہے يُهُـلَكُ مُـلُـوُكًا وَ يَسُتَخُلِفُ اخَرِيُنَ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ قَاصِمِ الْجَبَّارِيُنَ مُبيُر الظَّالِمِيُنَ مُدُرك یا دشاہوں کوتبا ہ کرتا اوران کی جگہ دوسروں کو لیتا ہے حمد ہےاللہ کی کہو ہ دھونسیوں کا زورتو ژنے والا ظالموں کو ہر با دکرنے والا قریا دیوں الُهَادِيسُنَ نَسكالِ الطَّالِمِينَ صَرِيحِ الْمُهْمَعُمُ لِحِيْنَ مَوْضِعٍ حَاجَاتِ الطَّالِبِيُنَ مُعُتَمَدِ کو پینچنے والااور بےانصافوں کوسزا دیجے والا ہے و ہوا دخواہوں کا دا دری حاجات طلب کرنے والوں کا ٹھکا نیاورمؤمنوں کی فیک ہے حمہ الْـمُـؤُمِنِيـُـنَ ٱلْـحَـمُدُ لِلَّهِ الَّذِي مِنُ خَشُيَتِهِ تَرُعَدُ السَّمَآءُ وَ سُكَّانُهَا وَ تَرُجُفُ الْآرُضُ ہے اللہ کی جس کے خوف ہے آسان اور آسمان والے لرزتے کا نیعے ہیں زیکن اور اس کے آبا دکار دہل جاتے ہیں سمندرلرزتے ہیں اور وَعُمَّارُهَا وَ تَمُوُ جُ الْبَحَارُ وَمَنُ يَّسُبَحُ فِيُ غَمَرَاتِهَا ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهٰذَا وَمَا وہ جوان کے پانیوں میں تیرتے ہیں حمہ ہے اللہ کی جس نے ہمیں بیرا ہدایت دکھا تی او رہم ہرگز ہدایت نہ یا سکتے اگر اللہ تعالیٰ ہمیں كُنَّا لِنَهُتَدِيَ لَوُلاَ أَنُ هَدَنَا اللَّهُ ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي يَخُلُقُ وَلاَ يُخُلَقُ وَ يَوُزُقُ وَلاَ يُوزُقُ وَلاَ يُرُزُقُ وَ بدایت نه فرمانا حمد سےاللہ کی جوخلق کرنا ہےاوروہ مخلوق خبیں وہ رزق دیت ا ہےاوروہ مرزوق خبیں و ہ کھانا کھلانا ہےاور کھانا خبیں و ہ يُـطُعِمُ وَلاَ يُطُعَمُ وَ يُمِيُتُ الْاَحْيَآءَ وَ يُحْى الْمَوْتِلَى وَهُوَ حَيٌّ لاَّ يَمُوُتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ زندوں کومارتا اور مردوں کوزند ہ کرتا ہے وہ ایسازندہ ہے جے موت نہیں بھلائی ای کے ہاتھ میں ہےاور وہ ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے اے عَلَى كُلَّ شَيُّ قَدِيْرٌ ٱللَّهُمَّ صِلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبُدِكَ وَ رَسُولِكَ وَ اَمِيْزِكِ وَ صَفِيّ كَيْكُ وَ معبو د!ا پی رحمت ما زل فر ماحضرت محمدً پر جوتیر بے بند ہے تیر ہے رسول تیر ہے امائندار تیر ہے برگزید ہ تیر ہے جبیب او رتیرے پہندید ہ

******** حَبِيبِكَ وَ خِيَرَتِكَ مِنُ خَلْقِكَ وَ حَافِظِ سِرِّكَ وَ مُبَلِّعِ رِسَالاَتِكَ اَفُضَلَ وَ اَحُيِّينَ وَ میں تیری مخلوق میں سے باسدار میں تیرے راز کاور پہنچائے والے میں تیرے پیغاموں کان پر رحمت کر بہترین نیکورین زیبارین ٱجُمَلَ وَ ٱكُمَلَ وَ ٱزْكُى وَ ٱنْمُى وَ ٱنْمُى وَ ٱطْيَبَ وَ ٱطُهَرَ وَ ٱسُنَى وَ ٱكُثَرَ مَا صَلَّيْتَ وَ بَارَكُتَ کامل ترین پا کیزوترین روئید وترین پا ک ترین شفاف ترین روش ترین اورتونے جو بہت رحمت کی برکت دی نوازش کی مہر یا تی کا ور وَ تَرَحُّمُتَ وَ تَحَنَّنُتَ وَ سَلَّمُتَ عَلَى اَحَدٍ مِّنُ عِبَادِكَ وَ اَنْبِيٓآئِكَ وَ رُسُلِكَ وَ صَفُوتِكُيُّ وَ درود بھیجائسی ایک پراپنے بندوں میں اپنے نبیوں اپنے رسولوں اور اپنے برگزیدوں میں سےاور جو تیرے ہاں برزگی والے ہیں تیری اَهُـلِ الْكَرَامَةِ عَلَيْكَ مِنُ خَلْقِكَ اللَّهُمَّ وَصَلِّ عَلَى عَلِيَّ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ وَصِيّ رَسُو ۖ مخلوق میں سے اے معبود! رحمت فر ماامیر المؤمنین علیٰ پر جو جہا نوں کے پروردگار کے رسول کے وصی ہیں تیرے بندے تیرے ولی تیرے رَبِّ الْعَالَمِيُنَ عَبُدِكَ وَ وَلِيِّكَ وَ اَخِيُ رَسُولِكَ وَ حُجَّتِكَ عَلَى خَلْقِكَ وَ ايَتِكَ ﴿ لَأَكُبُراٰى رسول کے بھائی تیری مخلوق پر تیری جمت تیری بہت بروی ناٹانی اور بہت بروی خبر ہیں اور رحمت فرما صدیقتہ طاہرہ فاطمہ پر جوتمام جہانوں وَ النَّبَأُ الْعَظِيْمِ وَصَلِّ عُلَى الصَّهِ يُقَةِ الطَّاهِرَةِ فَاطِمْةَ سَلِدَةٍ ظِلْمًا وَالْعَالَمِينَ وَصَلِّ عَلَى کامورتوں کی سر دار ہیں اور رحمت فرمانجی رحمت کے دونواسوں اور ہدایت والے دواماموں حسنؓ وحسینؓ پر جو جنت کے جوانوں کے سیدو سِبُطِي الرَّحْمَةِ وَ اِمَامَيِ الْهُدَى ٱلْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ سَيَّدَىُ شَبَابِ اَهُلِ الْجَنَّةِ وَصَلّ سردار ہیں اور رحمت فر مامسلما نوں کے اماموں پر کہ وہ علی زین العابدین محمدالیا قریج جعفرالصادق موٹ الکاظم علی الرحقام محمد تقی الجوادعلی عَـلَى اَئِـمَّةِ الْـمُسُـلِـمِيُـنَ عَلِيِّ ابْنِ الْحُسَيُنِ وَ مُحَمَّدِ ابْنِ عَلِيِّ وَ جَعُفَرِ ابْنِ مُحَمَّدٍ وَ کھی الہادی حسن العسکر کی اورخلف ہادی المہدی ہیں جو تیرے ہندوں پر تیری حجتیں اور تیرے شہروں میں تیرےا مین ہیں رحمت ہوا ن پر مُوسْسي ابُنِ جَعُفَرِ وَ عَلِيّ ابُنِ مُوسْني وَ مُحَمَّدٍ ابُنِ عَلِيٌّ وَ عَلِيٌّ ابُن مُحَمَّدٍ وَ الْحَسَنِ بہت بہت ہمیشہ ہمیشہا ہے معبود! رحمت فرماا پنے ولی ا مریر کہ جوقائم امیدگا ہ عا دل اور منتظر ہے اس کے گر داپنے مقرب فرشتوں کا تھیرالگا ابُنِ عَلِيٌّ وَ الْخَلَفِ الْهَادِي الْمَهُدِيِّ خُجَجِكَ عَلَى عِبَادِكَ وَ اُمَنَآ فِكَ فِي بِلاَدِكَ صَلُّوةً و ہاورروح القدس کے ذریعے اس کی تائیر قرما اے جہانوں کے بروردگارا ہے معبود! اسے اپنی کتاب کی طرف دعوت دینے والا اور كَثِيُـرَـةً دَآئِـمَةً اَلـلَّهُـمَّ وَصَـلِّ عَلَى وَلِيِّ اَمُرِكَ الْقَائِمِ الْمُؤَمَّلِ وَ الْعَدُلِ الْمُنْتَظَرِ وَ حُفَّاؤُ ا پنے دین کے لیے قائم قرار دے اسے زین میں اپنا خلیفہ بنا جیسے ان کوخلیفہ بنایا جواس سے پہلے ہوگز رہے ہیں اپنے پہند ہدہ دین کواس

********************* بِـمَـلَـآئِكَةِكَ الْمُقَرَّبِيُنَ وَ آيَّدَهُ بِرُو حِ الْقُدُسِ يَا رَبَّ الْعَالَمِيُنَ اَللَّهُمَّ اجْعَلْهُ الدَّاعِيَ اللَّيُ کے لیے پائیدار بنا دےاں کے خوف کے بعدا ہے امن دے کہ وہ تیرا عبادت گزار ہے کسی کوتیرا شریک نہیں بنا تا اے معبو د!اے معزز كِتَابِكَ وَالْقَآئِمَ بِدِيْدِكَ اسْتَخُلِفُهُ فِي الْاَرُضِ كَمَا اسْتَخُلَفُتَ الَّذِيْنَ مِنُ قَبُلِهِ مَكِّنُ لَكُ فر مااوراس کے ذریعے مجھےعزت دے میں اس کی مدوکرواوراس کے ذریعے میری مدوفرمااے باعزت مدددےاوراے آسانی کے دِيْنَهُ الَّذِي ارُتَضَيْتَهُ لَهُ اَبُدِلُهُ مِنُ بَعُدِ خَوْفِهِ اَمُنًا يَعُبُدُكَ لاَ يُشُرِكُ بِكَ شَيْئًا اَللَّهُمَّ اَعِرُ ﴿ وَ ساتھ فتح دےاورا سے اپی طرف سے قوت والامد دگار عطافر ماا ہے معبود!اس کے ذریعے اپنے دین اوراپنے نبی کی سنت کو ظاہر فر مایہاں اَعُـزِزُ بِـهٖ وَ انْـصُـرُهُ وَ انْتَصِرُ بِهِ وَانْصُرُهُ نَصُرًا عَزِيْزًا وَ افْتَحُ لَهُ فَتُحًا يَسَيُرًا وَ الجُعَلُ لَهُ تک کرفق میں سے کوئی چیز مخلوق کے خوف سے مخلی و پوشیدہ نہ رہ جائے اے معبو دا ہم الیمی ہر کت والی حکومت کی خاطر تیری طرف رغبت مِنُ لَّدُنُكَ سُلُطَانًا نُصِيُرًا اَللَّهُمَّ اَظُهِرُ بِهِ دِيُنَكَ وَ سُنَّةَ نَبِيَّكَ حَتَّى لاَ يَسُتَخُفِي بِشَيُّ ر کھتے ہیں جس سے واسلام وائل اسلام کوقوت دے اور نفاق وائل نفاق کوؤلیل کرے اوراس حکومت میں ہمیں اپنی اطاعت کی طرف الْحَقِّ مُخَافَةَ آحَدٍ مِّنَ الْخَلْقِ ٱللَّهُمَّ إِنَّا نَزْعَبُ إِلَيْكَ فِي دُولَةٍ كَرِيْمَةٍ تُعِزُّ بِهَا الْإِسُلامُ وَ بلانے والے اوراپنے رائے کی طرف رہنمائی کرنے والے قرار دے اورای کے ذریعے جمیں دنیا وآخرت کی عزت دے اے معبود! اَهُـلَـهُ وَ تُـذِلُّ بِهَا النِّـفَاقَ وَ اَهُـلَهُ وَ تَجُعَلُنَا فِيُهَا مِنِ الدُّعَاةِ اِلٰي طَاعَةِكَ وَالْقَادَةِ اِلٰي جس حق کی تونے ہمیں معرفت کرائی اس کے کمل کی توفیق و ہاورجس ہے ہم قاصر رہاں تک پہنچا و ہا ہے معبود! اس کے ذریعے سَبِيُلِكَ وَ تَـرُزُقُنَا بِهَا كَرَامَةَ الدُّنْيَا وَ الْاحِرَةِ اَللَّهُمَّ مَا عَرَّفْتَنَا مِنَ الْحَقّ فَحَمِّلْنَاهُ وَمَا ہم بھروں کوجمع کردے اس کے ذریعے ہمارے جھڑ ہے قتم کراور ہماری پریشانی دورفر ملاس کے ذریعے ہماری قلت کوکٹر شاور ذلت کو قَصُرُنَا عَنُهُ فَبَلِّغُنَاهُ اَللَّهُمَّ الْمُمُ بِهِ شَعُتَنَا وَ اشْعَبُ بِهِ صَدْعَنَا وَارْتُقُ بِهِ فَتُقَنَا وَكَثِّرُ بِهِ عزت میں بدل دےاس کے ذریعے ہمیں نا دارہے تو محمر بنا اور ہمارے قرض ا دا کردے اس کے ذریعے ہمارافقر دور فرما دے ہماری قِلْتَنَا وَاَعُزِزُ بِهِ ذِلْتَنَا وَاَغُن بِهِ عَآئِلَنَا وَاقُض بِهِ عَنُ مَغُرَمِنَا وَاجُبُرُ بِهِ فَقُرَنَا وَسُدَّ بِهِ خَلْتَنَا حاجتیں پوری کردے اور تنظی کوآسانی میں بدل دے اس کے ذریعے ہمار ہے چھرے روشن کراو رہمارے قیدیوں کورہائی دے اس کے وَ يَسِّرُ بِهِ عُسُرَنَا وَبَيِّضُ بِهِ وُجُوهَنَا وَفُكَّ بِهِ ٱسُرَنَا وَٱنْجِحُ بِهِ طَلِبَتَنَا وَانْجزُ ب وریع ہماری حاجات ہر لااور ہما رہے وعد ہے نبھا و ہے اس کے ذریعے ہماری دعائیں قبول فرما او رہمارے سوال پورے کردے اس

**** مَوَاعِيُدَنَا وَاسْتَحِبُ بِهِ دَعُوتَنَا وَأَعْطِنَا بِهِ سُؤَلَنَا وَبَلِّغُنَا بِهِ مِنَ الدُّنُيَا وَ الْأَخِرَةِ امَالَنَا کے ذریعے دنیاو آخرت میں ہماری امیدیں پوری فرمااو رہمیں ہما ری خواست سے زیادہ عطا کرا ہے سوال کیے جانے والوں میں پہترین وَٱعْطِنَا بِهِ فَوُقَ رَغُيَتِنَا يَا خَيُرَ الْمَسْتُولِيُنَ وَ ٱوْسَعَ الْمُعْطِيْنَ اِشْفِ بِهِ صُدُورَنَا وَ ٱذُهِبُ اورا ہے سب سے زیا دہ عطاوالے اس کے ذریعے ہمارے سینوں کوشفا دےاور ہمارے دلوں سے بغض و کیندمٹا دیے جس حق میں ہمارا بِهِ غَيْظُ قُلُوبِنَا وَاهْدِنَا بِهِ لِمَا اخْتُلِفَ فِيُهِ مِنَ الْحَقِّ بِاذُنِكَ إِنَّكَ تَهُدِي مَنُ تَشَآءُ اِ اختلاف ہے اپنے علم سے اس کے ذریعے ہمیں ہدایت عطافر مابے فنگ تو جے جا ہے سیدھے راستے کی طرف لے جاتا ہے اس کے صِرَاطٍ مُّسُتَقِيْم وَانْصُرُنَا بِهِ عَلَى عَدُوّكَ وَعَدُوْنَا اِلْهَ الْحَقّ امِيْنَ اَللَّهُمَّ اِنَّا نَشُكُوُ اِلَيْك ور لیعا ہے اور بھارے دخمن پر ہمیں غلبہ عطافر مااے سچے خدا ایسا بی ہوا ہے معبود! ہم شکایت کرتے ہیں تھے سے اپنے نبی کے اٹھے فَقُدَ نَبِيّنَا صَلَواتُكَ عَلَيْهِ وَالِهِ وَغَيْبَةَ وَلِيّنَا و ْكَثْرَةَ عَدُوِّنَا وَ قِلَّةَ عَدَدِنَا وَ شِدَّةَ الْفِتَنِ بِنَا وَ جانے کی کدان پراوران کی آل پرتیری رحمت ہواو را پنے ولی کی پوشیدگی اور شاکی ہیں ڈمنوں کی کثر سے اورا پی قلت تعدا در فقوں کی گئی تَـظَاهُرَ الزَّمَانِ عَلَيْنَا فَصَلِّ عِلَى مُحَمَّدٍ وَاللهِ وَ أَعِثًا عَلَى ذَلِكَ بِفَصِّح مِذُكَ تُعَجِّلُهُ وَ بِضُ اورحوا دے زمانہ کی بلغار کی شکامیت کرتے ہیں کہل رحمت فرما محماً وران کی آل پراور ہماری مد فرماان پر فقح کے سماتھ اوراس میں جلدی کر تَكُشِفُهُ وَ نَصُر تُعِزُّهُ وَ سُلُطَان حَقَّ تُظُهِرُهُ وَ رَحْمَةٍ مِّنُكَ تُجَلِّلُنَاهَا وَ عَافِيَةٍ مِّنُكَ إِ کہ تکلیف دورکر دیففرت ہے عزت عطا کرحق کے غلبے کاا ظہارفر ماالیسی رحمت فرما جوہم پرسا بیکر ہےاو رامن عطا کرجوہمیں محفوظ بنا تُلْبِسُنَاهَا بِرَحُمَةِكَ يَا أَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ. و ب رحمت فرماا ب سب سے زیا دہ رحم کرنے والے۔

(۱۱) حضرت امام جعفر صادق عليدالسلام معنقول ہے، فرمایا: ماہِ رمضان میں ہررات بدوعا پڑھی

ٱللَّهُمَّ إِنِّيْ ٱسْتَلُكَ أَنُ تَجُعَلَ فِيُمَا تَقُضِيُ وَتُقَدِّرُ مِنَ الْاَمْرِ الْمَحْتُومِ فِي الْاَمْرِ الْحَكِيْر ا ہے معبود! میں تجھ سے سوال کرتا ہوں کہ تو اپنی بست و کشا دمیں محکم امور سے متعلق جولیجنی فیصلے کرتا ہے جو تیری و وقضاء ہے کہ

مِنَ الْقَضَاءِ الَّذِي لاَ يُرَدُّ وَلاَ يُبَدُّلُ اَنْ تَكُتُبَنِيُ مِنْ حُجَّاجٍ بَيْةِ كَ الْحَرَامِ الْمَبُرُ وُرِيَّ ﴿ جس میں کسی بھی طرح کی تبدیلی اور پلیٹ نہیں ہوتی اس میں میرانا م اپنے محترم گھر کصبہ کے حاجیوں میں لکھ دے کہ جن کا مج حَبُّهُ مُ الْمَشُكُورِ سَعُيُهُمُ الْمَغُفُورِ ذُنُوبُهُمُ الْمُكَفَّرِ عَنُ سَيِّمَآتِهِمُ وَ اَنُ تَجُعَلَ فِيُمَا
حَبِّ عَنُورَ إِن كَ سَى تَبُولَ إِن كَنَّا وَيَحْتُ لِحَ بِي اوران كَ خطا كَيْنَ مِناد كُنُ بِي نَيْرَا بِي قضاء وقد ريش ميرى عَرَكَ
تَقُضِي وَ تُنَقَيدُ وُ اَنُ تُطِيلًا عُمُرِى فِي خَيْرٍ وَ عَافِيَةٍ وَ تُوسِّعَ فِي دِرْقِي وَ تَجُعَلَنِي هِمَّنُ
طولِ قرارد بِ مِن بِهِ اللهِ يُنِحَى وَلا تَسُتَبُدِلُ فِي غَيْرِي .

تَنْتَصِورُ بِهِ لِدِينِ كَ وَلا تَسُتَبُدِلُ فِي غَيْرِي .

ا ہے دین کی مد دکرتا ہے اور میری پیر جگہ کسی اور کو نہ دے۔

}

(۱۲) ماہ رمضان کے شب وروز میں قرآن مجید کی بکٹرت تلاوت کی جائے ۔مروی ہے کہ ہر چیز کا ایک موسم بہارہ وتا ہے اورقرآن کاموسم بہار ماہ رمضان ہے۔عام بہینوں میں ہر ماہ میں ایک اورزیا وہ سے زیا وہ چھونوں میں ایک فتم قرآن کاموسم بہار ماہ رمضان میں تین ونوں میں ایک فتم مسنون ہاوراگر ہر روزایک قرآن فتم کیا جائے تو اور بھی بہتر ہے اوراگر ہجھتم قرآن کا ثواب چہاردہ معصومین علیہم السلام کی ارواح مقدسہ کوہدیہ کردیا جائے

تو اور دو گناه موجاتا ب المناقع المحال SIBTAIN. (المناقع المحالة المح

(۱۳) تمام ماہ رمضان میں ایک ہزار رکعت نماز نافلہ پڑھی جائے اگر چہاں کی کیفیت میں فی الجملہ اختلاف ہے گرمشہورومنصورطریقہ بیہ کہ کیم ماہ رمضان سے بیس ماہ رمضان تک ہررات بیس رکعت پڑھی جائے لیعنی آٹھ رکعت مغرب کے بعد اور بارہ رکعت عشاء کے بعد ۔اورا کیس سے تمیں تک ہررات تمیں تمیں رکعت پڑھی جائے بعنی آٹھ رکعت مغرب کے بعد اور با کیس رکعت عشاء کے بعد ۔اور ۱۹۱۹ اور ۲۴ کی راتوں میں مزید برآس ایک ایک سورکعت پڑھی جائے اس طرح مکمل ایک ہزار رکعت ہوجاتی ہے۔

(۱۴) ما ه رمضان کے شب دروز میں عام دنوں سے زیا دہ صدقہ دیا جائے۔

(٣) تيسري فتم: يحرى كوونت كا عمال

(۱) سحری کھانا مستحب ہے اگر چہ کھجور کاایک وا نداور پانی کاایک گھونٹ ہی کیوں ندہواورا ہے ترک نہیں کرنا چاہیئے۔ (۲) سحری کے وقت سورۂ انا انز لناہ فی لیلۃ القدر کی تلاوت کی جائے جیسا کہ دوسری قتم کے اعمال میں اس کا تذکرہ کیا جاچکا ہے۔

(سو) بدوعائے سحری پڑھی جائے جوامام زین العابدین اورامام محد باقر علیبھالسلام سے مروی ہے:

ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ مِنْ بَهَآئِكَ بِٱبْهَاهُ وَ كُلُّ بَهَآئِكَ بَهِيٌّ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِبَهَآئِكَ ﴿ كُلُّ بَهَآئِكَ أَلِهُمْ اللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِبَهَآئِكَ ﴿ كُلُّ بَهَآئِكَ اللَّهُمَّ النَّهُمُ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِبَهَآئِكَ ﴿ كُلُّ بَهَآئِكَ اللَّهُمَّ النَّهُمُ النَّهُ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّالَّالَ اللَّهُ اللَّ امے معبودا میں سوال کرتا ہوں جھے سے تیری روشن میں ہے جوروشن رہے جبکہ تیری تمام روشن بردی بھر پوروشن ہے اسے معبودا میں جھے سے تیری تمام روشن کے ٱللَّهُمَّ إِنِّيُ ٱسْئَلُكَ مِنْ جَمَالِكَ بِأَجْمَلِهِ وَكُلَّ جَمَالِكَ جَمِيْلٌ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُهُ ﴿ ذریع سوال کتا ہوں اے معبودا میں سول کتا ہوں جھے تیرے حمال میں ہے جوبہت زیبا ہاور تیراساراتھال زیبا ہے۔ اے معبودا میں جھے ہے تیرے بِجَـمَالِكَ كُلِّهِ ٱللَّهُمَّ اِنِّي ٱسْتَلُكَ مِنْ جَلاَلِكَ بِأَجَلِّهِ وَكُلَّ جَلاَلِكَ جَلِيْلٌ ٱللَّهُمَّ فَيُ تا می برال کے دریعے سوال کرتا ہوں۔ اے معبودا میں سوال کرتا ہول جھے تیرے جلال میں ہے اس کی پوری جلالت کے ساتھ اور تیراسا ماجلال پر جلالت ٱسْئَلُكَ بِجَلالِكَ كُلِّهِ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ مِنْ عَظُمَتِكَ بِٱغْظَمِهَا وَكُلَّ عَظَمَتِكَ عَيْقُلْيُمَةٌ ہے۔ام معبودا میں جھے ہے تیرے پورے جال کے ذریعے سوال کرتا ہوں۔ام معبودا میں جھے سوال کرتا ہوں تیری عظمت کے ذریعے جویزہ ی عظیم ہے ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْتَلُكَ بِعَظَمَةِكَ كُلِّهَآ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْتَلُكَ مِنْ نُوْرِكَ بِٱنْوَرِهٖ وَكُلَّ نُوْرِيُّكُ نَيْرٌ اورتیری تماع عظمتیں بردی بی عظیم میں اے معبودا میں جھے سوال کرتا ہول تیری عظمت کے داسطے ۔اے معبودا میں جھے سول کرتا ہول تیر بے اور کے ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْتَلُكَ بِلُوْرِكُ كُلِّهِ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱلْسَلَّكَ مِنْ رَحُمْتِكَ بِأَوْسَعِهَا وَكُلّ رَحُهُ كُلَّ يُر نورهونے ساور تيرامار انورتابال ہے۔اميعبو وا ميں موال كرتا ہول تھے۔ بواسط تير ساتما مؤدر كے۔اميعبو وا ميں موال كرتا ہول تھے۔ تيري رحمت ميں وَاسِعَةٌ اَللَّهُمَّ إِنِّيُ اَسْئَلُكَ بِرَحْتَمِكَ كُلِّهَا اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ مِنْ كَلِمَاتِكَ باَتَمِّهَا ﴿ كُلُّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ مِنْ كَلِمَاتِكَ باَتَمِّهَا ﴿ كُلُّولًا ے اس کی وسعقوں کے ساتھ اور تیری ساری رهمت وسیع ہے۔امے عبو واجس سوال کتا ہوں چھے ہے بواسطہ تیری تمام رهمت کے۔امے عبو واجس سوال کرتا ہوں كَلِمَ الِكَ تَامَّةُ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْتَلُكَ بِكَلِمَالِكَ كُلِّهَاۤ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْتَلُكَ مِنُ كَمَ ﴿ كَا چھے تیرے کلمات میں سے جو کا ل تر بیں اور تیرے تمام کلمات کا ل تر بیں ۔اے معبودا میں چھے سے تیرے تما می کلمات کے ذریعے سول کرتا ہوں ۔اے معبودا بِ أَكْمَلِهِ وَكُلُّ كَمَالِكَ كَامِلٌ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِكَمَالِكَ كُلِّهِ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ ﴿ فَهُونُ میں جھے سوال کتا ہوں تیرے کمل میں ہے جو بہت کال جاور تیراہر کمل کی کال تر ہے۔ اے معبودا میں جھے سے تیرے تما کی کمال کے ذریعے سوال کتا ٱسْمَآدِكَ بِٱكْبَرِهَا وَ كُلُّ ٱسْمَآدِكَ كَبِيْرَةٌ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْتَلُكَ بِٱسْمَآدِكَ كُلِّهَا ٱللَّهُمَّ فَي ہول اے معبودا میں چھے تیرے امول میں سے بڑے ام کے ذریعے سول کتا ہول اور تیرے بھی نام پرزگ تر ہیں۔ام معبودا میں چھے تیرے بھی ٱسْئَلُكَ مِنْ عِزَّتِكَ بِاعَزِّهَا وَكُلِّ عِزَّتِكَ عَزِيْزَةٌ ٱللَّهُمَّ اِنِّي ٱسْئَلُكَ بِعِزَّتِكَ كُلِّهَ ﴿ اللَّهُمَّ اللَّهُمُ اللَّهُمَّ اللَّهُمُ اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ اللَّهُمُ اللَّهُمَّ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمَّ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللّلْمُ اللَّهُمُ اللّ نامول كذريع سوال كرنابول مام معبودا من فحصت تيرى عزت من بالمدر عزت كذريع سوال كرنابول اورتيرى عزت بي بلندر ب-اع معبودا

إِنِّيُ ٱسْئَلُكَ مِنْ مَّشِيَّةِكَ بِٱمُضَاهَا وَكُلُّ مَثِيَّةِكَ مَاضِيَةٌ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِمَثِيَّ كُ میں جھے تیری تما می زیت کے ذریعے سول کرتا ہوں اے معبود ایس جھے ہے تیری ما فذہونے والی مرضی کے ذریعے سول کرتا ہول اور تیری ہرمرضی ما فذہونے كُلِّهَاۤ ٱللَّهُمَّ إِنِّيُ ٱسۡئَلُکَ مِنُ قُدُرَةِکَ بِالْقُدُرَةِ الَّتِي اسۡتَطَلُتَ بِهَا عَلَى كُلّ شَئُ وَكُلُّ ولل ہے۔امے معبودا میں جھے سے تیری ہرمزغنی کے ذریعے سوال کرتا ہول۔امے عبو دا میں جھے سے تیری اس قمد رہ کے ذریعے سول کرتا ہول جس سے قوہر قُدُرَةِكَ مُسْتَطِيلُلَةٌ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِقُدُرَةِكَ كُلِّهَا ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ مِنْ عِلْقُوْكَ چز پرتسلط رکھتا ہاور تیری تما ی قدرت تسلط رکھے والی ہے۔ اے معبودا میں جھے سے تیری کی قدرت کے ذریعے سوال کتا ہوں ۔اے معبودا میں جھے سے تیرے بِٱنْفَذِهِ وَكُلُّ عِلْمِكَ نَافِذٌ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِعِلْمِكَ كُلِّهَ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ مِنْ قَرْفُهِكَ بہت افودکرنے والے علم کے ذریعے سول کرتا ہوں اور تیراتما محام نا فذر ہے اسے معبود ایس جھے سے تیرے سارے کا علم کے ذریعے سول کرتا ہوں ۔اسے معبود ا بِ اَرْضَاهُ وَكُلَّ قَوْلِكَ رَضِيٌّ اللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِقَوْلِكَ كُلِّهَ اللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ فَيْكُونُ میں جھے سے تیرے قول سے سول کتا ہوں جو پسندید ہر ہاور تیرا ہر قول پسندید ہ ہائے معبودا میں جھے سے تیرے ہر قول کے ذریعے سول کتا ہوں ۔اے مَسَائِلِكَ بِأَحَبِهَا اِلَيْكَ وَكُلُّهَا اِلَيْكَ خَلِيناةُ اللَّهُمُ إِنَّى اللَّهُ لَكَ بِمَسَآئِلِكَ بُكِّهَا اللَّهُ إِنَّى معبودا میں جھے سول کتا ہوں تیر مے جوب تر مسائل سے کرو ہب کے سب تیر سنز دیکے جوب ومطلوب ہیں۔ام معبودا میں جھے سے تیر سائل ٱسْئَلُكَ مِنْ شَرَفِكَ بِٱشُرَفِهِ وَكُلُّ شَرَفِكَ شَرِيْفٌ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِشَرَفِكَ كُلِّهَ ۖ لَلْهُمَّ كذريع سوال كمناءول دام معبودا مين جحدت تير مشرف من سا وليرز شرف كذريع سوال كمناءول برشرف وليرز بسام معبودا من جحد إِنِّي ٱسْئَلُكَ مِنْ سُلُطَانِكَ بِادُوَمِهِ وَ كُلُّ سُلُطَانِكَ دَآئِمٌ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بسُلُطَ ﴿ كُلُّ سُلُطَا إِنَّى اسْئَلُكَ بسُلُطَ ﴿ كَا سُلُطَ إِنَّا لَهُ مَا لَكُ اللَّهُ مَا لَلَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بسُلُطَ ﴿ كَا لَهُ مَا لَكُ اللَّهُ مَا لَا لَهُمْ اللَّهُ اللللَّهُ الللللَّةُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ الللللَّهُ اللَّهُ الللللَّهُ الللللَّهُ اللللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللللَّهُ الللللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللللَّهُ اللَّهُ اللللللَّهُ الللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّلْهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّ ے تیرے تمائ شرف کے ذریعے سوال کتا ہول۔ام معبودا میں جھے سوال کتا ہول تیری سلطنت سے جو ہمیشہ بمیشہ کے لیے ہورتیری سلطنت ہے جا كُلِّمَ ٱللَّهُمَّ إِنِّيُ ٱسُمَّلُكَ مِنْ مُلْكِكَ بِٱفْخَرِهِ وَكُلُّ مُلْكِكَ فَاخِرٌ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكُ وسنتكى ولل الصعبودا مين جحمات تيري مراري سلطنت كرز سيع سوال كرنا مول الصعبو دايس جحمات تير برير فخر ملك كرز سيع سوال كرنامول اورتيراتها م بِـمُـلُكِكَ كُلِّمْ اَللَّهُمَّ اِنِّي اَسْئَلُكَ مِنْ عُلُوِّكَ بِاعْلَاهُ وَكُلُّ عُلُوِّكَ عَالِ اَللَّهُمّ اِنِّي اَسُرُهُكً ملك ي موجب فرب المعبودا من مجھے تير ساتمام ملک كذر يعسوال كتابول المعبودا من مجھے تيرى باندر باندى كذر يعسوال كتابول بِعُلُوِّكَ كُلِّمَ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ مِنُ مَّنِّكَ بِٱقْدَمِهِ وَكُلُّ مَنِّكَ قَدِيْمٌ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسُكُلُّكَ اورتیری ہربلندی بلندر ہے۔ام معبودا میں چھے تیری تمام تبلندی کے ذریعے سوال کرتا ہول۔ام معبودا میں چھے سے تیرے احسان کی قد امت کے ذریعے بِمَذِّکَ کُلِّةَ اَللَّهُمَّ إِذِی اَسُئَلُکَ مِنُ ایَاتِکَ بِاکْرَمِهَا وَکُلُّ ایَاتِکَ کَرِیْمَةٌ اَللَّهُمَّ إِنِی اَسُظُکَ مِنُ ایَاتِکَ بِاکْرَمِهَا وَکُلُّ ایَاتِکَ کَرِیْمَةٌ اَللَّهُمَّ إِنِی اَسُظُکَ مِنُ ایَاتِکَ بِاکُرَمِهَا وَکُلُّ ایَاتِکَ کَرِیْمَةٌ اَللَّهُمَّ إِنِی اَسُئَلُکَ بِنَ السَّانِ وَالْجَبَرُونِ وَ اَسُئَلُکَ بِنَ اللَّهُمَّ إِنِّی اَسْئَلُکَ بِمَا اَنْتَ فِیهِ مِنَ الشَّانِ وَالْجَبَرُونِ وَ اَسُئَلُکَ بِنَا اللَّهُمَّ إِنِّی اَسْئَلُکَ بِمَا اَنْتَ فِیهِ مِنَ الشَّانِ وَالْجَبَرُونِ وَ اَسُئَلُکَ بِنَا اللَّهُمَّ إِنِّی اَسُئَلُکَ بِمَا اَنْتَ فِیهِ مِنَ الشَّانِ وَالْجَبَرُونِ وَ اَسُئَلُکَ بِنَا اللَّهُمَّ إِنِّی اَسُئَلُکَ بِمَا تُجِیرُنِی وَ مُن الشَّالُکَ فَا جَبُونِی وَ مُن السَّالُکَ فَا مِنْ اللَّهُمُ إِنِی اَسُئَلُکَ بِمَا تُجِیرُنِی وَ مُن السَّالُکُ وَالِی اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُ مَا إِنِی اَسُلَامُ کَامِن مِن اللَّالُونَ وَ اَسُلَامُ کَامِن اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُ مَا اللَّهُمُ اللَّهُ مَا اللَّهُمُ اللَّهُ مَا اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُ مَا اللَّهُمُ اللَّهُ مُا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الْمُعَلِّمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعَلِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُولِ اللَّهُ اللَّهُ اللَ

میں چھے سول کتا ہوں اس چیز کے ذریعے جس سے قوحاجت پوری فرمائے۔ جب میں سول کروں ۔ پس حاجت پوری فرمایا اللہ۔

اس كے بعدا بني ہر حاجت طلب كرے تاكہ خدائے تعالى اے يراائے۔

(۴) خدا زیاده و فیق دے تو مفات البخان ہے دعائے الوحمز ہ ثمالی پڑھی جائے جو حضرت امام زین العابدین الطبی پڑھا کرتے تھے جوخاصی طویل وعریض دعاہے۔ والله الموفق۔

(۵) جناب شیخ طوی علیہ الرحمہ نے لکھا ہے کہ تحری کے وقت میہ دعا پڑھی جائے ظاہر ہے کہ انہوں نے اس کی نسبت کسی معصوم کی طرف دیکھی ہوگی آو ایسالکھا ہوگا۔

یا عُدَّتِی فِی کُوبَتِی وَ یَا صَاحِبِی فِی شِدَّتِی وَ یَا وَلِیِّی فِی نِعُمَتِی وَ یَا غَایَتِی فِی رَغُیَتی است میری فِی است میری فِی است میری فِی است میری فِی است میری فی است میری و المُعْفِیلُ عَشُرتِی فَاغُفِرُ لِی حَطِینَتِی اللّٰهُمَّ اِنِی السُّن السَّاتِ وَ عَوْرَتِی وَ الْمُوفِیلُ عَشُرتِی فَاغُفِرُ لِی خَطِینَتِی اللّٰهُمَّ اِنِی النَّهُ اللهُمَّ اِنِی السُّن کَوجِهان والافوف سے امن دیے والامیری خطاسے درگز درکرنے والائی میرے گنا و بش و حاص معودا میں جھے میری با اَن کوجِهان والافوف سے امن دیے والامیری خطاسے درگز درکرنے والائی میرے گنا و بش و حاسے معودا میں جھے است اَن کُوبِ اللهُ اللهُ

جس نے نہ جنااور نہ جنا گیا اور نہ کوئی اس کا ہمسر ہوسکتا ہے اسو ہ جوا چی مہر یا ٹی اور رحت سے ہرسائل کوعطا کرتا ہے اور اپنے فعنل وکرم

************ بِ الْخَيْرِ مَنُ لَّهُ يَسُئَلُهُ تَفَطُّلاً مِّنُهُ وَ كَرَمًا م بِكَرَمِكَ الدَّآئِمِ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الْ ے اس کوبھی بھلائی نے نوازنا ہے جوسوال ندکر ہاہے بیٹلی والے کرم کے واسطے سے رحمت ما زل فرما محمداً ورآ ل محمد پراور مجھ کو ہر پہلو مُحَمَّدٍ وَّ هَبُ لِي رَحُمَةً وَّاسِعَةً جَامِعَةً اَبُلُغُ بِهَا خَيْرَ الدُّنْيَا وَ الْأَخِرَةَ اَللَّهُمَّ اِنِّي ے کشادہ رحمت سے بہرہ مند فرما کہ جس سے میں دنیا اور آخرت کی بہتری حاصل کریاؤں اے اللہ! میں اس تعل کی معافی جا ہتا ہوں ٱسْتَغُفِرُكَ لِمَا تُبُتُ اِلَيُكَ مِنْهُ ثُمَّ عُدُتُ فِيْهِ وَ ٱسْتَغُفِرُكَ لِكُلِّ خَيْرِ اَرَدُتُ بِهِ وَجُهِيكَ جس سے میں نے تیرے حضورتو بیکی اور پھروئی فعل کرگز رااور میں بخشش جا ہتا ہوں اس عمل پر جومیں نے خاص تیر ہے لیے کرنے کا اراد ہ فَخَالَطَنِيُ فِيُهِ مَا لَيُسَ لَكَلَلُهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّاعُفُ عَنُ ظُلُمِيُ وَ کیا او رکھراس میں تیرے غیر کوبھی شامل کرلیا ہے معبو دا رحمت ما زل فرما حضرت محماً ورآل محمد پراورمعاف کرد ہے میری ہے انصافی اور جُرُمِيُ بِحِلْمِكَ وَ جُودِكَ يَا كَرِيُمُ يَا مَنُ لا يَخِيبُ سَآئِلُهُ وَلا يَنُفَدُ نَآئِلُهُ يَا مَنُ عَلا فَ برائی کا پنے حکم او رجھش سے اے مہر مان اے وہ جس کا سائل نا ا میرٹیل ہوتا اور عطائم نہیں ہوتی اے وہ جو بلند ہے جس کے او پر کوئی چیز شَيُءَ فَوُقَهُ وَ دَنْيِ فَلا شَهِي عُرُونَهُ صَبِلَ عَلَى مُحَمِّدٍ وَإِلَا مُحَمَّدٍ وَارْحَمُنِي يَا فَالِقَ نہیں او رائے تر یب جس کے تحت کوئی چیز نہیں رحمت ما زل فرما حضرت محمداً و رآل محمد پرا ہے موسی کا کے لیے دریا کو چیر دیے الْبَحْرِ لِمُوْسَى اللَّيْلَةَ اللَّيْلَةَ اللَّيْلَةَ السَّاعَةَ السَّاعَةَ السَّاعَةَ اللَّهُمَّ طَهَرُ قَلُبِي مِنَ النِّفَاق والے رخم کرای رات ای رات ای رات ای گفتری ای گفتری ای گفتری اےمعبود! پاک کردے میرے دل کو نفاق سے میرے ممل کو وَ عَـمَلِيُ مِنَ الرِّيَآءِ وَ لِسَانِيُ مِنَ الْكِذُبِ وَ عَيْنِيُ مِنَ الْخِيَانَةِ فَإِنَّكَ تَعُلَمُ خَآئِنَةَ الْآعُيُنِ وکھاوے سے میری زبان کو چھوٹ بولنے سے اور میری آئلے کو ہری نظر ڈالنے سے کیونکہ تو جانتا ہے آئٹھوں کے اشاروں اور دل میں وَمَا تُنخُفِي الصُّدُورُ يَا رَبِّ هٰذَا مَقَامُ الْعَآئِذِ بِكَ مِنَ النَّارِ هٰذَا مَقَامُ الْمُسْتَجِيْرِ بكَ پوشید ہاتوں کوا ہے بالنے والے! یہ ہے جہنم سے تیری پنا ہا تگنے والے کا مقام یہ ہے دوزخ سے تیری امان حیاہے والے کا مقام یہ ہے النَّارِ هٰذَا مَقَامُ الْمُسْتَغِيُثِ بِكَ مِنَ النَّارِ هٰذَا مَقَامُ الْهَارِبِ اِلَيُكَ مِنَ النَّارِ هٰذَا مَقَامُ مَ آ گ ہے بیجنے میں تیری مدد کے طلب گار کا مقام یہ ہے آ گ ہے تیری طرف بھا گ آ نے والے کا مقام یہ ہے خطا وُں کا بارلے کر يُّبُوُّءُ لَكَ بِخَطِيْئَتِهِ وَ يَعُتَرِفُ بِذَنْبِهِ وَ يَتُوبُ اللِّي رَبِّهِ هٰذَا مَقَامُ الْبَآئِسِ الْفَقِيرِ هٰذَا مَقَامُ ﴿ تیرے پاس آنے والے اپنے گنا ہوں کا اقرار کرنے والے او راپنے رب کی طرف لوٹنے والے کا مقام یہ ہے بے چارہ وہا وار کا مقام پیر

************************ الُخَآئِفِ الْمُسْتَجِيُرِ هٰذَا مَقَامُ الْمَحُزُونِ الْمَكْرُوبِ هٰذَا مَقَامُ الْمَغُمُومِ الْمَهُمُومِ هٰذَا ہے ڈرنے والے پناہ لینے والے کا مقام یہ ہے تم کے ستائے ہوئے مصیبت کے مارے ہوئے کامقام یہ ہے رنجید ہو پریشان کا مقام یہ مَقَامُ الْغَرِيُبِ الْغَرِيُقِ هٰذَا مَقَامُ الْمُسْتَوُحِشِ الْفَرِقِ هٰذَا مَقَامُ مَنُ لَا يَجِدُ لِذَنْبِهِ غَافِرًا ہے ہے کس خرق شدہ کامقام یہ ہے ڈرتے کا پیتے ہوئے کامقام یہ ہاں کامقام جس کے گناہ کا بخشے والا تیرے سوا کوئی ٹیس نہ تیرے غَيُـرَكَ وَلا لِـضَعُفِهِ مُقَوِّيًا آلاَتُتَ وَلا لِهَـمِّـهِ مُـفَرِّجًا سِوَاكَ يَآ اَللَّهُ يَا كُريُمُ لا تُحُرِقُ سوا کوئی اس کی کمزوری کوطافت میں بدلنے والا ہے او رنہ تیرے سوا کوئی اس کی پریشانی دورکرنے والا ہے ساللہ اے کرم کرنے والے! وَجُهِيُ بِالنَّارِ بَعُدَ سُجُوْدِيُ لَكَ وَ تَعْفِيْرِيُ بِغَيْرِ مَنِّ مِّنِّي عَلَيْكَ بَلُ لَّكَ الْحَمُدُ وَ میرے چہرے کوآ گ میں نہ جلا جبکہ میں تیرے آ مے مجدہ رہنے ہوا اورا پناچہر ہ خاک پر رکھا کہ اس میں چھے پر میراا حمان نہیں بلکہ تیرے وَ التُّفَضُّلُ عَلَمًا ارْحَمُ أَيُ رَبِّ أَيُ رَبِّ أَيُ رَبِّ أَيُ رَبِّ. بيكِ جائِ جب تك مالس نه أُو في اور پھر ليے حمد ہاور تيرا بي مجھ پرفضل واحسان ہے رحم فر ماا سے مالنے والے اسے مالنے والے اسے مالنے والے ميري كمزوري ميري بي حال كِهِ: ضَعُفِيُ وَ قِلْةً جِبُلَتِي وَرِقَةً جِلْدِي وَ تَبَدُّهُ أَوْصَالِي وَ تَنَاثُرُ لَحُمِيُ وَ جسُمِيُ وَ میرے پوست کی زمیم رے جوڑوں کے ٹوٹے اور میرے کوشت میرے بدن اور میرے ڈھانچے کے ٹوٹ گرنے اور قبر میں میری تنہائی جَسَدِيُ وَ وَحُدَتِيُ وَ وَحُشَتِيُ فِيُ قَبُرِيُ وَ جَزَعِيُ مِنْ صَغِيْرِ الْبَلَاءِ اَسُئَلُكَ يَا رَبّ قُرُ و گھیرا ہناو رچھوٹی تختی پرمیری پریشانی میں مجھ پر رحم فرماا ہے بالنے والے! ممیں افسوس اور شرمند گی کے دن میں تجھ سے خنگی چیٹم اور قاتل الْعَيْنِ وَ الْإِغْتِبَاطَ يَوُمَ الْحَسُرَةِ وَ النَّدَامَةِ بَيِّضُ وَجُهِيْ يَا رَبِّ يَوُمَ تَسُوَدُّ الْوُجُوهُ امِنِّي رفتک ہونے کا سوال کتا ہوں اے پروردگار! جس دن چہر ہے سیاہ ہوں کے میرا چبرہ روش فرما مجھے قیا مت میں بڑے مے سے امن میں مِنَ الْفَزَعِ الْآكُبَرِ اَسُئَلُكَ الْبُشُرِى يَوُمَ تُقَلَّبُ الْقُلُوبُ وَ الْاَبْصَارُ وَ الْبُشُرِى عِنُدَ فِرَاقِ ر کھ میں تجھ سے سوال کرتا ہوں کہ جس دن دل اور آ تھ تھیں تہہ و بالا ہوں مجھے اچھی خبر دے اور دنیا سے جاتے وقت بھی اچھی خبر دے حماس الـدُّنيَا الْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي آرُجُوهُ عَوْنًا فِي حَيْوتِي وَ أَعِدُّهُ ذُخُرًا لِّيَوْمِ فَاقَتِي أَلْحَمُدُ لِلَّهِ حذا کے لیے ہے جس سے زندگی میں مد د کاامیدوار ہوں اور جا جت کے دن وہ میراسر مایہ ہے حمداس حذا کے لیے ہے جسے پکارنا ہوں اور الَّذِيُّ اَدُعُـوُهُ وَلَا اَدُعُو غَيْرَهُ وَلَوُ دَعَوُتُ غَيْرَهُ لَخَيَّبَ دُعَآئِي ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي آرُجُوهُ اس کے غیر کونیس پکارتا اگراس کے غیر کو پکاروں تو میری دعا ضائع ہوجائے حمداس حندا کے لیے ہے جس سے امیدر کھتا ہوں اوراس کے

وَلَاْ أَرُجُو عَيْرَهُ وَلَوُ رَجَوُتُ غَيْرَهُ لَانُحلَفَ رَجَآئِي ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الْمُنْعِمِ الْمُحُسِن غیرے امید نہیں رکھتا اگر اس کے غیرے امید رکھوں تو وہ پوری نہیں ہوگی حمہ ہے اللہ کے لیے جونعت دینے والا بھلائی کرنے والا الْـمُـجُـمِـلِ الْـمُـفُضِلِ ذِي الْجَلالِ وَ الْإِكْرَامِ وَلِيٌّ كُلِّ نِعْمَةٍ وَّ صَاحِبٌ كُلِّ حَسَنَةٍ وَّ سدهارنے والا ہیڑ ھانے والا ہیڑے مرجے اور ہیڑی عزت والا ہر فعمت کا ما لک ہرا چھائی کا حامل ہر رغبت کی انتہاءاور سجی حاجتیں پوری مُنْتَهٰى كُلِّ رَغُبَةٍ وَّ قَاضِينُ كُلِّ حَاجَةٍ ٱللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّارُزُقُنِي کرنے والا ہےا ہے معبو دارحت ما زل فرما حضرت محماور آل محمد پراور مجھ کوتو فیق دے کہ جھھ پر یقین اور تیرے ہارے میں احجا مگمان الْيَقِيُنَ وَ حُسُنَ الظُّنِّ بِكَ وَ ٱثُّبتُ رَجَآتُكَ فِي قَلْبِيُ وَ اقْطَعُ رَجَآئِي عَمَّنُ سِوَاكَ حَا رکھوں میرے دل میں اپنی امید تقش کر دے او رسوائے تیرے ہرا یک سے میری امید کٹ جائے یہاں تک کہ تیرے غیرے امید نہ ٱرُجُوَ غَيُرَكَ وَلاَ اَثِقَ اِلاَّ بِكَيَا لَطِيُفًا لِّمَا تَشَآءُ ٱلْطُفُ لِيُ فِي جَمِيْعِ اَحُوَالِيُ بِمَا تُحِ لگاؤں سوائے تیرے کسی پر بھروسرند کروں اے جس پر جا ہے مہر ہائی کرنے والے مجھ پر مہر ہائی فرما میرے تمام حالات پر جھے تو بہند وَ تَرُضٰى يَا رَبِّ إِنِّي ضَاعِيُفٌ عَلَى النَّهِ ﴿ فَالْا تُعَذِّبُنِي اللَّهِ إِنَّا إِيَّا رَبِّ ارْحَمُ دُعَآئِي وَ کرےاورجس پرتو راضی ہوا ہے یا لئے والے میں دوزخ کی آگ سے کمز ورہوں پس آو مجھے آگ کاعذاب نددےا ہے پرورد گا رامیری تَنضَرُّعِيُ وَ خَوُفِيُ وَ ذَلِّيُ وَ مَسُكَنَتِيُ وَ تَعُوِيُذِيُ وَ تَكُويُذِيُ يَا رَبِّ إِنِّي ضَعِيُفٌ عَنُ دعامیری فریا دمیری خوف میری پستی میری بے جارگ میری پنا وطلی اور آستان بوی پر رحم فرمااے با<u>لنے والے! میں اس دنیا</u> کی طلب میں طَلَب اللُّذُنِّيا وَ أَنْتَ وَاسِعٌ كَرِيُمٌ اَسْئَلُكَ يَا رَبِّ بِقُوِّتِكَ عَلَى ذَالِكَ وَ قُدُرَةِكَ عَلَ بہت ہی ناتواں ہوں اورتو وسعت والاعطا کرنے والا ہے میں چھے ہے سوال کرتا ہوں اے بروردگار کرتو اس بر حاوی اوراس بر قابور کھتا غِنَاكَ عَنُهُ وَ حَاجَتِمْ لَكُيهِ اَنُ تَرُزُقَنِيُ فِي عَامِيُ هَذَا وَ شَهُرِيُ هَذَا وَ يَوْمِيُ هَذَا وَ سَاعَتِيُ ہاورتو دنیا ہے بے نیازاور میں اس کی حاجت رکھتا ہوں سوائی ہوں کہ مجھے دے ای سال میں ای مہینے میں اور آج کے دن میں اوراسی رِزُقًا تُغْنِيُنِيُ بِهِ عَنُ تَكَلُّفِ مَا فِي ٓ أَيُدِى النَّاسِ مِنُ رِّزُقِكَ الْحَلالِ الطَّيّبِ أَي رَبّ مِنُكَ گھڑی وہ رزق عطا کرجو مجھے اس سے بے بروا کردے جودوسرے لوگوں کے ہاتھوں میں ہے اورتو اپنے حلال و باک رزق میں سے مجھے ٱطُـلُبُ وَ اِلَيُكَ ٱرُغَبُ وَ اِيَّاكَ ٱرُجُوُ وَ ٱنْتَ ٱهُلُ ذَٰلِكَ لَاۤ ٱرُجُو ۡ غَيْرَكَ وَلآ ٱثِقُ اِلاّ بِﷺ يَآ دے اے بروردگار! جھے ہے مانگما ہوں تیری طرف توجہ کرتا ہوں اور بھی سے امیدر کھتا ہوں کرتو بی اس لائق ہے میں تیرے غیر سے امید

اَرُحَـمَ الرَّاحِـمِيُـنَ اَيُ رَبِّ ظَـلَـمُتُ نَفُسِيُ فَاغُفِرُلِيُ وَارُحَمُنِيُ وَ عَافِنِي يَا سَامِعَ كُلّ نہیں رکھنااوربس چھے پر مجروسر کرتا ہوں اے سب سے زیا دہ رخم والے اے بالنے والے! میں نے اپنی جان پرظلم کیا اپس مجھے بخش دے مجھ صَوْتٍ وَّ يَا جَامِعَ كُلِّ فَوْتٍ وَّ يَا بَارِيَّ النَّفُوْسِ بَعُدَ الْمَوْتِ يَا مَنُ لاَّ تَغُشَاهُ الظُّلُمَاتُ پرچم فرما اورآ سائش دےا ہے سب آ وا زوں کے سننے والے اے سب ٹمر دوں کوا کٹھا کرنے والے او رموت کے بعدنفوں کو دوبارہ زند ہ وَلاٰ تَشْتَبهُ عَلَيْهِ الْاَصُوَاتُ وَلاٰ يَشُغَلُهُ شَيْءٌ عَنْ شَيْءٍ اَعُطِ مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ کرنے والے اسے وہ وات جے تا ریکیاں ڈھانپ نہیں شکتیں جے طرح طرح کی آوازوں میں غلطی نہیں لگ مکتی اور جے ایک چیز دوسر ک الِهَ ٱفْصَلَ مَا سَئَلَكَ وَ ٱفْضَلَ مَا سُئِلْتَ لَهُ وَ ٱفْضَلَ مَاۤ ٱنْتَ مَسْئُوُلُ ٓ لَٰلِكِي يَوُم الْقِيَامَةِ ے بے خبر میں کریا تی تو حضرت محرصلی اللہ علیہ وآلہ وہلم کواس ہے بہتر انعام دے جس کا تھھ سے سوال کیا ہے اس سے بہتر جو تھھ سے ما نگا وَهَبُ لِيَ الْعَافِيَةَ حَتَّى تَهُنِئَنِيُ الْمَعِيُشَةَ وَاخْتِمُ لِيُ بِخَيْرِ حَتَّى لا تَضُرَّنِي الذُّنُوبَ اللَّهُمَّ ا گیا اوراس ہے بہتر جس کا تھے ہے سوال ہوسکتا ہے آج ہے قیا مت کے دن تک اور مجھے ایسی آساکش دے جس ہے میری زند گی خوشکوار رَضِّنِيُ بِمَا قَسَمُتَ لِيُ حَتَى لَا آسَعَلَ آحَدًا شَيْكًا ٱللَّهُمُ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الِ مُحَمَّدٍ ہوجائے اورمیراانجام بخیر فرمانا کے گمناہ مجھے تنگی میں نہ ڈال سکیں اے معبو دا مجھے اس پر راضی کر دے جوڈنے مجھے دیا تا کہ میں کسی ہے کوئی وَّافْتَحُ لِيُ خَزَآئِنَ رَحُمَةِكَ وَ ارْحَمُنِيُ رَحُمَةً لاَّ تُعَذِّبُنِيُ بَعُدَهَآ اَبَدًا فِي الدُّنْيَا وَ الْاخِرَ چیز ما نگلنے کوآ مادہ زبہوں اے معبود! رحمت ما زل فر ماحضرت محمد اور آل محمد پر اور میر ہے لیے اپنی رحمت کے خزانے کھول دے اور اپنی وَ ارْزُقْنِي مِنْ فَضَلِكَ الْوَاسِعِ رِزْقًا حَلالاً طَيّبًا لا تُفْقِرُ إَلَىٰ آحَدٍ م بَعُدَهُ سِوَاكَ مہر بانی ہے مجھ پر رقم فرما کیاس کے بعد مجھ پر دنیااور آخرت میں کوئی عذاب نہ آئے اور مجھا پنے کشا دہ فضل سے حلال اور با کیزورزق تَـزيُـدُنِيُ بِذَالِكَ شُكُرًا وَ إِلَيُكَ فَاقَةً وَ فَقُرًا وَ بِكَ عَمَّنُ سِوَاكَ غِنًا وَ تَعَفَّفًا يَا مُحْسِ ﴿ يَا عطافر ما کراس کے بعد میں تیرے سواکسی او رکامتاج ندر موں اور مجھے اس پر بہت زیادہ شکرا داکرنے کی توفیق وے اورا بناہی متاج بنائے مُجُمِلُ يَا مُنْعِمُ يَا مُفُضِلُ يَا مَلِيُكُ يَا مُقُتَدِرُ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّاكُفِنِم رکھاس میں تیرے غیرے بے نیا زاورا لگ رہوں اے حسان کرنے والے سنوارنے والے اے تعمت والے اے بڑھانے والے الْـمُهـةَ كُـلَّـهُ وَاقْـض لِـيُ بِـالْـحُسُـنٰي وَ بَارِكُ لِيُ فِي جَمِيُع أَمُوْرِي وَاقْضِ لِي جَمِيُعَ ا ہےا دشاہ اسے صاحب قد رت رحمت فر ماحضر ت محمداً و رآ ل محمداً و رمشکل کاموں میں میری مددفر مامیر سے حق میں بہتر تھم جاری کرمیر ہے

حَوَ آئِجِيْ ٱللُّهُــمُّ يَسِّـرُلِيُ مَاۤ اَخَافُ تَعُسِيُرَهُ فَإِنَّ تَيُسِيُرَ مَاۤ اَخَافُ تَعُسِيُرَهُ عَلَيُكَ سَهُلٌّ تمام معاملوں میں امن وہر کت دے او رمیر کی بھی ضرورتیں پوری فرما تا رہا ہے معبود! جس تنگی سے میں ڈرتا ہوں اس میں فراخی دینا تھھ پر يَسِيُرُ وَ سَهِّلُ لِمَي مَآ أَخَافُ حَزُونَتَهُ وَ نَفِّسُ عَنِّي مَآ أَخَافُ ضِيْقَهُ وَ كُفَّ عَنِّي مَآ أَخَافُ آ سمان اور مہل مزے اور جس محضائی ہے میں ڈرٹا ہوں و ہجھ پر آ سمان کر دے اور جس تنگی کا خوف ہے وہ مجھ سے دور فرما جس معالم هَـمَّـهُ وَ اصْـرِ فُ عَنِــيٌ مَآ اَخَافُ بَلِيَّتَهُ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللَّهُمَّ امُلاءُ قَلْبِي حُبًّا لُكَ وَ میں پریشان ہوں اس میں میری ہمانیت کراورجس مصیب کا مجھے خوف ہے اس مال دے اے سب سے زیا دہ رہم کرنے والے اے اللہ! خَشْيَةً مِّنُكَ وَ تَـصُدِيْقًا لَّكَ وَ إِيْمَانِئِلِكَ وَ فَرَقًا مِّنُكَ وَ شَوْقًا اِلَيْكَ يَا ذَا الْجَلال تجردے میرے دل کواچی محبت اپنے خوف اچی تقدیق اپنے ایمان اپنے ڈراورا پنے شوق سے میرا دل بجر دے اے بڑ کی شان وعزت الْإِكْرَامِ ٱللَّهُمَّ إِنَّ لَكَ خُقُوفًا فَتَصَدَّقَ بِهَا عَلَيَّ وَ لِلنَّاسِ قِبَلِي تَبِعَاتُ فَتَحَمَّلُهَا عَنِّي وَ والے اے معبود! تیرے جوحقوق ہیں ان کو مجھ پر صدقہ کر دے لوگوں کے جوحق مجھ پر ہیں ان میں آو میرا ضامن بن جااورتو نے ہرمہما ن قَدُ اَوْجَبُتَ لِكُلِّ ضَيُفٍ قِرُى وَ اَنَا صَيُفُكَ فَاجُعَلُ قِرَائَ اللَّيْلَةَ الْبَحَنَّةَ يَا وَهَابُ الْجَنَّةِ يَا کی مدارات کا تھم دے دکھاہے جب کہاس وقت تمیں تیرامہمان ہوں آج رات میری مہمانی جنت قرار دے اے جنت عطا کرنے والے وَهَابَ الْمَغْفِرَةِ وَلا حَوْلَ وَلا قُوَّةَ اِلَّا بكَ. ا ہے معافی عطا کرنے والے اور ٹیس کوئی حرکت وقوت مگرو ہی جو تھے ہے۔ (۱) سحری کی دعاؤں میں ہے جومختصرترین دعاہے وہ میہ ہے جناب سیدابن طاؤوں ؓنے کتاب الاقبال مين تقل كياب: يَا مَفُزَعِيُ عِنُدَ كُرُبَتِيُ وَ يَا غَوُثِيُ عِنُدَ شِدَّتِي إِلَيُكَ فَزِعْتُ وَ بِكَ اسْتَغَثُتُ وَ بِكَ لُهِ ﴿ ا ہے مصیبت میں میری پناہ گاہ ا کے تقی میں میرے فریا دریں ڈراہوا تیرے پاس آیا ہوں اور چھے سے فریا دکرتا ہوں تیری طرف دوڑا ہوں اور لاَ ٱلْوُذُ بِسِوَاكَ وَلاَ ٱطُلُبُ الْفَرَجَ إِلَّا مِنْكَ فَاَغِثْنِيُ وَ فَرِّجُ عَنِّيٌ يَا مَنُ يَقُبَلُ الْيَسِيُرَ ﴿ تیرے غیر کی پناہ نیں لیتا تیرے سوائس سے کشائش کا طالب خیں ہوں اس میری فریا دین اور کشائش عطا کرا ہے وہ جو تھوڑا عمل قبول کرتا ہے اور يَعُفُوُ عَنِ الْكَثِيْرِ اِقْبَلُ مِنِّى الْيَسِيْرَ وَاعْفُ عَنِّى الْكَثِيْرَ اِنَّكَ ٱنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيُمُ بہت سے گنا ہ معاف کرتا ہے مجھ سے بھی تھوڑا عمل قبول فر مااور بہت سے گنا ہوں کو معاف کر دے بے شک تو ہی بہت بخشے والامہر بان ہے۔

خوف میں امان دیجے والا اورمیری غلطیاں معاف کرنے والا ہے اس میری خطا کیں بخش دےا ہے سب سے زیا دہ رخم کرنے والے۔

(٣) چوتھی تم: ماورمضان کے دنوں کے اعمال

اورىيدچندامورىين:

(١) هرروزيد دعا پزهي جائے بوك هنرك الم لاين العابدين اور عنزت الم محد باقر عليماالسلام پڑھا

ارتے تھے:

اَللَّهُ مَّ هَذَا شَهُرُ رَمَضَانَ الَّذِی اَنُوَلُتَ فِیهُ الْقُرُانَ هُدًی لِلنَّاسِ وَ بَیّنَاتٍ مِّنَ الْهُدٰی اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ اللَّ

وَالْفُرُقَانِ وَ هَذَا شَهُرُ الصِّيَامِ وَ هَذَا شَهُرُ الْقِيَامِ وَ هَذَا شَهُرُ الْإِنَابَةِ وَ هَذَا شَهُرُ التَّوْبَةِ

حق و باطل کا فرق وا مصح ہے بیرروز ہے رکھنے کا مہینہ ہے بیراتوں کی عبادت کا مہینہ ہےا وریہ نیکی کی طرف والیسی کا مہینہ ہے

وَ هَـٰذَا شَهُرُ الْمَغُفِرَةِ وَ الرَّحُمَةِ وَ هَٰذَا شَهُرُ الْعِتْقِ مِنَ النَّارِ وَ الْفَوْزِ بِالْجَنَّةِ وَ هَٰذَا شَهُرٌ

یوتو بہ قبول ہونے کا مہینہ ہے یہ بخشے جانے اور رحمت نا زل ہونے کا مہینہ ہے یہ جہنم سے رہائی یا جانے اور جنت میں جانے کی

فِيُهِ لَيُسَلَّهُ الْفَدُرِ الَّتِي هِيَ خَيْرٌ مِّنُ ٱلْفِ شَهُرِ ٱللَّهُمَّ فَصَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الِ مُحَمَّدٍ وَ

کامیا بی کامہینہ ہےا وربیہ وہ مہینہ ہے کہ اس میں شب قدرہے کہ جوا یک ہزا رمبینوں سے بہتر اور برتر ہے ہیںا ہے معبو د! رحمت

اَعِنِّى عَلْى صِيَامِهِ وَ قِيَامِهِ وَ سَلِّمُهُ لِيُ وَ سَلِّمُنِي فِيْهِ وَ اَعِنِّي عَلَيْهِ بِاَفُضَلِ عَوْنِكَ و

نا زل فرما محداً وراً ل محد میرا وراس ماه کے روزے رکھنے اورعبا دے میں میری مددفر مااسے میرے لیے پورا کراور جھے اس میں

****** وَقِلَفِنِيُ فِيُهِ لِطَاعَتِكَ وَ طَاعَةِ رَسُو لِكَ وَ اَوُلِيَآئِكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِمُ وَ فَرَغُنِي ﴿ سلامت رکھا وراس ماہ میں میری بہترین مددگاری فر مااس میں اپنی بندگی نیزا پنے رسول اورا پنے دوستوں کی پیروی کی تو فیق لِعِبَادَتِكَ وَ دُعَآئِكَ وَ تِلاُوَةِ كِتَابِكَ وَ اعْظِمُ لِيُ فِيُهِ الْبَرُكَةَ وَ اَحْسِنُ لِي فِيُهِ الْعَافِيَ ﴿ دے رحمت خدا ہوان پر اوراس مہینے میں اپنی عبادت کرنے دعاما نگنے اور تلاوت قر آن کا موقع دے اس ماہ میں مجھے بہت اَصِحَّ فِيُهِ بَدَنِيُ وَ اَوُسِعُ فِيُهِ رِزُقِيُ وَاكُفِنِي فِيُهِ مَآ اَهَمَّنِيُ وَ اسْتَجِبُ فِيُهِ دُعَآئِيُ وَ بَلِّغُنِيُ زیا دہ برکت وے مجھے بہتر سے بہتر آ سائش عطا فرما میرے بدن کوسلامت رکھ میرے رزق میں کشائش کراس میں میری فِيُهِ رَجَآئِييُ ٱللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ ال مُحَمَّدٍ وَ اذْهِبُ عَنِّي فِيُهِ النَّعَاسَ وَ الْكَسَلَ یر بیثانی میں مددگار بن میری دعا کوشرف قبولیت عطافر ماا ورمیری امید پوری کرا ہے معبو د! رحمت نا زل فر ماسر کا رمحمہ وآل محمد میر وَالسَّامَةَ وَ الْفَتُورَةَ وَالْقَسُوةَ وَالْغَفُلَةَ وَالْغِرَّةَ وَجَنِّبُنِي فِيْهِ الْعِلَلَ وَ الْاَسْقَامَ وَالْهُمُوْمَ وَ ا وراس مہینے میں دور رکھ مجھ سے اونکھ ڈھیل جڑجڑا ہٹ ستی سخت دلی بے خبری اور فریب کومجھ سے دور رکھاوراس مہینے میں الْآخُزَانَ وَالْآغُرَاضَ وَالْآمُرَاضَ وَالْلَحَ لَمَا إِنَّ كُلَّايًا ﴿ اللَّذُنُوبُ وَاصْرِفُ عَنِي فِيْهِ السُّوَّةَ وَ در دول بہار یوں پر بیٹانیوں غمول دکھوں اور بہار یوں خطاؤں اور گنا ہوں سے مجھے بچائے رکھاوراس مہینے میں مجھ سے ہر الْفَحُشَاءَ وَ الْجَهُدَ وَ الْبَلَاءَ وَالتَّعَبَ وَالْعَنَاءَ إِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَاءِ اَللَّهُمَّ صَلّ عَلَى برائی بے حیائی رنج کشنائی مختی اور بے دلی دور کردے بے شک تو دعا کا سننے والا ہے اے معبود! رحمت نازل فر ماسر کا رحمہ وآل مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّ اَعِذُنِيُ فِيُهِ مِنَ الشَّيُطَانِ الرَّجِيُم وَ هَمَزِهٍ وَ لَمُزهٍ وَ نَفُثِهِ وَ نَفُخِهِ محمدٌ پر اوراس ماہ میں مجھے د هنکار ہے ہوئے شیطان سے پناہ دےاوراس کےاشارے سرگوشی اس کےمنتز اس کی پھو تک اس وَ وَسُـوَسَتِـهٖ وَ تَثْبِيُـطِـهٖ وَ كَيُدِهٖ وَ مَكُرهٖ وَ حَبَآئِلِهٖ وَ خُدَعِهٖ وَ اَمَانِيّهٖ وَ غُرُورهٖ وَ فِتُنَتِهِ وَ کے ہرے خیال رکاوٹ رکاوٹ وا وَبناوٹ اوراس کے پھندے دھو کے آرزو بھلاوے بہکا وے اوراس کے جالوں ٹولیوں شَرَكِهِ وَ أَخْزَابِهِ وَ أَتُبَاعِهِ وَ أَشْيَاعِهِ وَ أَوْلِيَآئِهِ وَ شُرَكَآئِهِ وَ جَمِيْعِ مَكَآئِدِهِ اَللَّهُمَّ صَلَّ ا ورپیر و کارول ساتھیوں دوستوں اوراس کے ہمکا روں اوراس کے دھوکوں سے پنا ہ دےا مے معبو د! رحمت نا زل فر ماسر کا رحمہ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّارُزُقُنَا قِيَامَهُ وَ صِيَامَهُ وَ بُلُو غَ الْاَمَلِ فِيُهِ وَ فِي قِيَامِهِ وآ ل محدٌ پرا ورجمیں اس ماہ میں نما زروزہ نصیب فرماا وراس میں اسید پوری فرماا وراس ماہ میں عبادت کرنے کی کمال حدجس

***** وَاسْتِكْمَالَ مَا يُرُضِيُكَ عَنِّي صَبُرًا وَ احْتِسَابًا وَ إِيْمَانًا وَ يَقِينًا ثُمَّ تَقَبَّلُ ذَٰلِكَ مِنِّئُ میں تو مجھ سے راضی ہواس میں مجھے ہر دا شت خوش رفتا ری ایمان اور یقین عطا فرما پھرا سے میری طرف سے قبول فرما کئی گئا بِ الْاَضْعَافِ الْكَثِيُـرَـةِ وَ الْاَجُـرِ الْعَظِيْمِ يَا رَبَّ الْعَلَمِيْنَ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ ال یڑھا کرا وراس پر بہت بڑا اجر دےاہے جہا نوں کے پالنے والے اے معبو د! رحمت فر ماسر کارمحد وآ <mark>ل محدّ پر اور نصیب فر ما</mark> مُحَمَّدٍ وَّ ارُزُقُنِي الْحَجَّ وَ الْعُمُرَةَ وَ الْإِجْتِهَادَ وَ الْقُوَّةَ وَ النَّشَاطَ وَ الْإِنَابَةَ وَ التُّوْبَةَ وَ مجھے حج عمر ہ کوشش طاقت جوش ہا زگشت تو بہ تقر ب پہند ہدہ نیکی جا ہت ڈرعاجزی فروتنی نرمی کھری نیت رکھنے اور پچ ہو لئے کی الْقُرُبَةَ وَ الْخَيْرَ الْمَقُبُولَ وَ الرَّغُبَةَ وَ الرَّهُبَةَ وَ التَّضَرُّ عَ وَ الْخُشُوعَ وَ الرَّقَّةَ وَ النِّيَّةَ تو فیق دے اور یول کر کہ میں تھے سے ڈرول تھے سے امیدر کھول تھے پر بھروسہ کروں اور تھے سہا را بنا وَل اور تیری حرام کردہ الصَّادِقَةَ وَ صِدُقِ اللِّسَانِ وَالْوَجَلَ مِنُكَ وَ الرَّجَآءَ لَكَ وَ التَّوَكُّلَ عَلَيُكَ وَ الثِّقَةَ بِكَيُّ وَ چیز ول سے پر ہیز کروں اس کے ساتھ بات میں زمی جو کوشش قبول جو کر دار بلند جوا ورمیری ہر دعا مقبول بارگا ہ جوا ورمیر ے الُورَ عَ عَنُ مُحَارِمِكُ مُعَ صَالِح الْقَوْلِ وَ مَقْبُولِ اللَّهُي وَ مُرُفُّوع الْعَمَلِ وَ مُسْتَجَابِ ا وران چیزوں کے درمیان کوئی رکاوٹ ندآنے وے جیسے دکھ بیاری پر بیثانی رنج تقص بے خبری اور فراموشی وغیرہ بلکہ ان الـدَّعُومةِ وَلا تَـحُـلُ بَيْنِي وَ بَيْنَ شَيْءٍ مِّنُ ذَالِكَ بِعَرَضٍ وَّلا مَرَضٍ وَّلا هَمِّ وَّلا غَمّ وَّلا ﴿ عبا دتوں میں تیری طرف سے تو فیق وحفاظت ہوتیرے لیے ان پر کاربند رہوں تیرے حق کالحاظ کروں اور تو اپنا پیان اورا پنا سُقُم وَلا غَفُلَةٍ وَلا نِسُيَان م بَـلُ بِـالتَّعَاهُـدِ وَ التَّحَفُّظِ لَكَ وَ فِيُكَ وَ الرِّعَايَةِ لِحَقِّكُ ﴿ وعد ہ پورا فرمائے البی اپنی رحمت ہے اےسب سے زیا دہ رحم کرنے والے اے معبود! رحمت فرما سر کا رمحمد وآل محمد پر اور اس وَالْـوَفَآءِ بِـعَهُدِكَ وَ وَعُدِكَ بِرَحُمَةِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَالْحَ ماہ میں تونے جو حصہ اپنے نیک بندوں کے لیے رکھا ہے مجھے اس میں سے زیادہ عطا کراوراس مہینے میں تُونے اپنے قر جی مُحَمَّدٍ وَّاقْسِمُ لِيُ فِيُهِ اَفُضَلَ مَا تَقُسِمُهُ لِعِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ وَ اَعُطِنِيُ فِيهِ اَفُضَلَ مَا تُعُطِيُّ دوستوں کو جو پچھ عطا کیا ہے اس میں سے مجھے زیا و ہ حصہ دے یعنی رحمت بخشش محبت قبولیت اور درگز رنیز ہمیشہ کے لیے بخشش ٱوُلِيَـآئَكَ الْمُقَـرَّبِيُـنَ مِنَ الرَّحُـمَةِ وَ الْـمَغُفِرَةِ وَالتَّحَنُّنِ وَالْإِجَابَةِ وَالْعَفُو وَالْمَغُفِرَةِ ﴿ آ رام آسودگی آگ سے خلاصی جنت میں جانے کی کامیا بی اور دنیا وآخرے کی بھلائی میں زیا دہ حصہ دے اے معبود! رحمت

**** الـدَّآئِـمَةِ وَالْعَافِيَةِ وَالْـمُعَافَاةِ وَالْعِتُقِ مِنَ النَّارِ وَ الْفَوْزِ بِالْجَنَّةِ وَ خَيْر الدُّنْيَا وَ الْاخِرَةِ فر ماسر کا رمحہ و آل محد پرا وراس مہینے میں میری دعا کوا بیابنا کہ تھھ تک پہنچ جائے اور تیری رحمت اور بھلا کی اس میں مجھ پرنا زل ٱللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّاجُعَلُ دُعَآئِيُ فِيْهِ اِلَيُكَ وَاصِلاً وَّ رَحُمَةًكَ ہواوراس ما ہ میں میراعمل تھے قبول میری کوشش تھے بہندا وراس میں تو میرا گنا ہ بخش دے یہاں تک کہاس ماہ میں میرا نصیب خَيْـرَكَ اِلَيَّ فِيُهِ نَازِلاً وَّ عَمَلِيُ فِيُهِ مَقُبُولاً وَّ سَعْيِيُ فِيُهِ مَشُكُورًا وَّ ذَنْبِي فِيهِ مَغْفُورًا حَتَّم یو صحبائے اورمیرا حصہ زیا دہ ہوجائے اے معبو د! رحمت فر ماسر کا رحمد و آل محمد پرا وراس ما ہیں مجھے شب قد رہے بہر وہ ورفر ما يَكُونَ نَصِيْسِيُ فِيهِ الْاَكْثَرَ وَ حَظِّيُ فِيهِ الْاَوْفَرَ اللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ ال مُحَمَّدٍ وَ اس بہترین صورت میں جے تو پسند کرے کہ تیرے دوستوں میں سے ہرایک اس حال میں ہو جو تیرے لیے بہت پسندیدہ ہے وَوَقِفُنِيُ فِيُهِ لِلَيُلَةِ الْقَدُرِ عَلَى أَفُضَلِ حَالِ تُحِبُّ أَنُ يَّكُونَ عَلَيُهَا آحَدُ مِّنُ أَوُلِيَآئِكَ مچرشب قد رکومیرے لیے ہزا رمہینوں سے بہتر قرار دے اوراس میں وہ بہترین روزی دے جوڑونے کسی تحض کو دی اوروہ اس اَرُضَاهَا لَكَ ثُمَّ الْحَعَلَهُ إِلَى خَيْرًا مِّلْ ٱلْفِ شَهْرِ وَّ ارْزُقْنِي فِيْهَا اَفْضَلَ مَا رَزَقْتَ اَحَدً تک پہنچائی اور یوں اس کومر فرا زکیا ہے مجھے اس میں جہنم ہے آزا دیے گئے لوگوں میں قرار دے کہ جو آگ سے خلاصی یا گئے مِّمَّنُ م بَلَّغُتَهَ ۚ إِيَّاهَا وَ ٱكُـرَمُتَهُ بِهَا وَاجُعَلُنِيُ فِيُهَا مِنُ عُتَقَآدِكَ مِنُ جَهَنَّمَ وَ طُلَقَآدِكَ مِ ا ورتیری بخشش وخوشنودی کے ساتھ تیری مخلوق میں سے خوش بخت ہیں اےسب سے زیا دہ رحم کرنے والے اے معبو د! رحمت النَّادِ وَ سُعَدَآءِ خَلُهِكَ بِمَغُفِرَةِكَ وَ رَضُوَانِكَ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَ نا زل فر ماسر کا رمحمہ و آل محمہ پر اور جمیں اس ماہ رمضان میں نصیب کرسعی کوشش طاقت جوش اوروہ چیز جسے تو جا ہے اور پہند مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّ ارُزُقُنَا فِي شَهُرنَا هَذَا الْجَدَّ وَ الْإِجْتِهَادَ وَ الْقُوَّةَ وَ النَّشَاطَ وَمَا کرے اے اللہ! اے ایک صبح اور دس راتوں اور محقع وور کے رہا ورما ورمضان کے مالک اوراس قر آن کے ماک جوتو نے تُحِبُّ وَ تَـرُضَى اَللَّهُمَّ رَبَّ الْفَجُرِ وَ لَيَالِ عَشُرِ وَ الشَّفُعِ وَالْوَتُرِ وَ رَبَّ شَهُرِ رَمَضَانَ اس ماہ میں نا زل کیا اور جبرائیل و میکائیل واسراقیل وعز رائیل اور تمام مقرب فرشتوں کے رب اورا سے حضرت ابرا جیم و وَمَـآ ٱنُـزَلُتَ فِيُهِ مِنَ الْقُرُانِ وَ رَبَّ جَبُرَئِيُلَ وَ مِيْكَآئِيُلَ وَ اِسُرَافِيُلَ وَ عِزُرَآئِيُلَ وَ جَمِيُع ا ساعیلٌ واسحاق ٌ و یعقوبٌ کے رب اورحضر ہ موگ ٌ وعیسیٰ ٌ اورسار بے نبیوں اوررسولوں کے رب اورا بے نبیوں کے خاتم

الْمَالْائِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَ رَبَّ إِبْرَاهِيْمَ وَ اِسْمَاعِيْلَ وَ اِسْحَقَ وَ يَعُقُوْبَ وَ رَبَّ مُوسلى وَ حضرت محمد کے رب تیری رحمتیں ہوں ان پر اور سب پہلے نبیوں پر میں سوال کرتا ہوں تھے سے واسطہ تیرے حق کے جوان پر ہے عِيُسْلِي وَ جَمِيْعِ النَّبِيِّيْنَ وَ الْـمُـرُسَلِيُنَ وَ رَبَّ مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ ا وربوا سطان کے حق کے جو تھے یہ ہے اور تیرے برز رگ ترحق کے واسطے سے کہ ضرور رحمت کران پر اوران کی آل پر اوران عَلَيْهِمُ اَجُمَعِيْنَ وَ اَسْتَلْكَ بِحَقِّكَ عَلَيْهِمْ وَ بِحَقِّهِمْ عَلَيْكَ وَ بِحَقِّكَ الْعَظِيْم لَمَّا صَيِّهِتَ سب پر رحمت کرا ورمجھ پرالیمی نظر فر ما جوم ہر بانی کی نظر ہو کہتو مجھ سے ایسا راضی ہو جائے اوراس کے بعد بھی نا راض نہ ہوا ور عَلَيْهِ وَ الِهِ وَ عَلَيُهِمُ اَجُمَعِيْنَ وَ نَظَرُتَ اِلَيَّ نَظُوَةً رَّحِيْمَةً تَرُضٰي بِهَا عَنِّي رضًى لأ میری تمام مرا دیں خواہشیں آرزوئیں اورا را دے پورے فر ماوہ چیزیں مجھ سے دورکر دے جن سے میں اپنی جان کے لیے سَخَطَ عَلَيٌّ بَعُدَةٌ آبَدًا وَّ أَعُطَيْتَنِي جَمِيْعَ سُؤُلِي وَ رَغْيَتِي وَ ٱمْنِيَّتِي وَ إِرَادَتِيي وَ صَرَفُتَ ڈرتا ا ورخوف کھا تا ہوں ا ورخوف نہیں کھا تا ا ورانہیں میر ہے رشتہ دا رول میر ہے مال میر ہے بھائیو ںا ورا ولا د سے بھی دور عَنِّيُ مَا اكْرَهُ وَ أَحُذَرٌ وَ أَخَافُ عَلَى نَفُسِنَى وَمَا لَا إَخَافُ وَ عَلَ أَهْلِي وَ مَالِي وَ إِخُواذِي فر ما معبودا ہم اپنے گنا ہول سے تیری طرف بھا کے ہیں ہمیں تو بہ کرنے والوں کی بی بنا ود سے اور توجہ کر کہ ہم مجھش کے وَ ذَرِيَّةِيْ اَللَّهُمَّ اِلَيُكَ فَرَرُنَا مِنُ ذُنُوبِنَا فَاوِنَا تَآئِبِيُنَ وَ تُبُ عَلَيْنَا مُسْتَغُفِريُنَ وَاغْفِرُلْنَا طالب ہیں ہمیں بخش دے پنا ہ دیتے ہوئے بناہ دے کہ طالب بناہ ہیں ہمیں بناہ میں لے کہ سرتگوں ہیں ہمیں رسوا نہ کر کہ مُتَعَوِّ ذِيْنَ وَ أَعِذُنَا مُسْتَجِيْرِيْنَ وَ أَجِرُنَا مُسْتَسُلِمِيْنَ وَلاَ تَخُذُلُنَا رَاهِبِيْنَ وَ امِنًا رَاغِبِيْنَ وَ ڈرنے والے ہیں ہم خواہاں ہیں امان دے ہم سائل ہیں شفاعت قبول فر مااور حاجت پو ری کریے شک تو دعا سننے والا ہے شَفِّعُنَا سَآئِلِيُنَ وَ أَعْطِنَآ إِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ اَللَّهُمَّ اَنْتَ رَبّي وَ اَنَا عَبُدُكَ قریب تر قبول کرنے والا اےمعبو د! تو میر اپر وردگا راور میں تیرا بند ہ ہوں ا وربند کےوزیا د ہ حق ہے کہا ہے پر وردگا رہے اَحَقُّ مَنُ سَئَلَ الْعَبُدُ رَبُّهُ وَلَـمُ يَسُئَلِ الْعِبَادُ مِثْلَكَ كَرَمًا وَّ جُوْدًا يَّا مَوُضِعَ شَكُوَى سوال کر ہےا ور بندوں سے تیرے جیسے کرم و پخشش کا سوال نہیں کیا جا سکتا اے سائلوں کے لیے مرکز شکایت اورا سے تا جول السَّآئِلِيُنَ وَيَا مُنْتَهِلِي حَاجَةِ الرَّاغِبِيُنَ وَيَاغِيَاتُ الْمُسْتَغِيُثِيُنَ وَيَا مُحِيُبَ دَعُوَةِ کی حاجت برآ ری کی آخری امیدگاہ اے فریا دکرنے والوں کے فریا دریں اے بے حیاروں کی دعائیں قبول کر

الْمُضْطَرِّيُنَ وَ يَا مَلْجَا الْهَارِبِيْنَ وَ يَا صَرِيْخَ الْمُسْتَصُرِ خِيْنَ وَ يَا رَبَّ الْمُسْتَضُعَفِيْنَ وَ يَآ اے بھا گنے والوں کی جائے پنا واے چنے و پکا رکرنے والوں کے مددگارا وراے دہائے گئے لوگوں کے پروردگاراے دمھی كَاشِفَ كُرُبِ الْمَكُرُوبِينَ وَ يَا فَارِجَ هَمِّ الْمَهُمُومِينَ وَ يَا كَاشِفَ الْكَرُبِ الْعَظِيُمِ يَا لوگوں کے دکھ دورکرنے والے اے پر بیٹا نول کی پر بیٹانی ہٹانے والے اوراے بڑسی معیبت کے دورکرنے والے بااللہ اے ٱللُّـهُ يَا رَحُـمْنُ يَا رَحِيْمُ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّاغُفِرُ لِيُ رحم كرنے والے الم مهر بان ا ب سب سے زیا وہ رحم كرنے والے رحمت ما زل فر ماسر كا رحمة وآل محمد رہ اور بخش و بے مير ب ذُنُوُسِيُ وَ عُيُـوُبِيُ وَ اِسَآئَتِيىُ وَ ظُلُمِيُ وَ جُرُمِيُ وَ اِسُرَافِيُ عَلَى نَفُسِيُ وَ ارُزُقُنِي مِنُ گنا ومیر ے عیب میری برائیاں میری نا انصافی میر اجرم اورا پینانس پرمیری زیا دتی اور مجھ پر اپنافضل وکرم اور رحمت فرما فَنْسِلِكَ وَ رَحْمَةِكَ فَالنَّهُ لا يَـمُـلِكُهَا غَيْرُكَ وَاعْفُ عَيْرُي وَ اغْفِرُلِي كُلُّ مَا سَلَفَ کیونکہ تیرے سواکسی کو بیا ختیار نہیں اور مجھے معاف فرما اور میرے گزشتہ گنا ہ معاف کر دےا وربقایا زندگی میں مجھے گنا ہ ہے ذُنَوْبِيُ وَ اعْصِمْنِيُ فِلِهَمَا لِهِي مِنْ عُهُرِئَ وَ اسْتُرُ عَلَيَّ وَعَلَى وَالْدَابُّ وَ وَلَدِى وَ قَرَايَتِي بچائے رکھاور پر دہ پوشی فر مامیری میرے والدین کی میری اولا دا ورعزیز ول کی میرے ملنے والول کی اور مؤمنین ومؤمنات وَ اَهُـل حُـزَ انَتِـيُ وَمَـنُ كَـانَ مِنِّيُ بِسَبِيُل مِّنَ الْمُؤْمِنِيُنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ فِي الدُّنْيَا وَ الْأَخِرَةِ میں سے جومیر ہے ہمقدم ہیں ان سب کی دنیاا ورآخرے میں پر د ہاہ شی فر ما کیونکہ یہ بات کلی طور پر تیرے اختیا رمیں ہے اور تو فَإِنَّ ذَٰلِكَ كُلُّهُ بِيَدِكَ وَ ٱنْتَ وَاسِعُ الْمَغُفِرَةِ وَلاٰ تُخَيِّبُنِي يَا سَيِّدِي وَلاٰ تَرُدَّ دُعَآئِيُ وَ بخش دینے میں وسعت والا ہے پس نا امید نہ کرمیرے آتا!میری دعا رونہ کرا ورمیرا ہاتھ میرے بینے کی طرف نہ پلٹاحتیٰ کہ يَدِيْ إِلَى نَحُرِيُ حَدِّي تَفُعَلَ ذَٰلِكَ بِيُ وَ تَسْتَجِيْبَ لِيُ جَمِيْعَ مَا سَئَلُتُكَ وَ تَزيُدَنِيُ مِ مجھے وہ سب کچھ دے اور میری سب حاجتیں پوری کردے جومیں نے طلب کیس اوراپے نصل سے مجھے کچھ زیا دہ بھی دے کہ فَـضُـلِكَ فَإِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيُرٌ وَ نَحُنُ إِلَيْكَ رَاغِبُوُنَ اَللَّهُمَّ لَكَ الْاَسُمَآءُ الْحُيَكَيْنِي بے شک توہر چیز پر قدرت رکھتا ہے اور ہم تیری ہی طرف رغبت کرتے ہیں اے معبود! تیرے لیےا چھےا چھےا میں اور بلند وَ الْاَمْشَالُ الْعُلْيَا وَ الْكِبُرِيّاءُ وَ الْأَلْآءُ اَسُئَلُكَ بِاسْمِكَ بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْم ترین شاتیں ہیں بڑا ئیاں اور معتیں ہیں نمیں سوال کرتا ہوں تھے سے بواسطہ تیرے نام (اللہ رحمٰن رحیم) کےاگر تونے اس رات

كُنُتَ قَضَيْتَ فِي هَذِهِ اللَّيْلَةِ تَنَزُّلَ الْمَلْآثِكَةِ وَ الرُّوحِ فِيْهَآ اَنُ تُصَلِّي عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال میں ملا نکہاورروح کوزمین براتا رنے کا فیصلہ کر رکھا ہے تواس رات رحمت فر ماسر کا رقحہ وآل محمد براوریہ کہ میرانا م نیک بختو ں مُحَمَّدٍ وَّانُ تَجُعَلَ اسُمِيُ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوحِيُ مَعَ الشَّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِيُ فِي عِلَيْيُنَ وَ میں میری روح کوشہیدوں کے ساتھ میری نیکی کو درجہ بعلیبی میں اور میرے گنا ہوں کو بخشے ہوئے قرار دےاور ریہ کہ مجھے و و إِسَآئَةِيُ مَغُفُورَةً وَّ أَنُ تَهَبَ لِي يَقِينًا تُبَاشِرُ بِهِ قَلْبِي وَ إِيْمَانًا لَّا يَشُوبُهُ شَكُّ وَّ رِضِّيهِمَا لیقین دے جومیرے دل میں جمارہے وہ ایمان عطا کرجے شک کاخطر ہ ندہو جو پچھتونے دیا اس پر راضی رکھ مجھےاس دنیا میں قَسَمُتَ لِيُ وَ اتِنِيُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنِيُ عَذَابَ النَّارِ وَ إِنْ لَّمُ نیکی اورآ خرے میں خوشی نصیب فر مااور مجھے آ گ کےعذا ب سے بیجائے رکھاورا گرتو نے آج کی راہ میں ملا ککہ اورروح کو تَكُنُ قَضَيْتَ فِي هَذِهِ اللَّيُلَةِ تَنَزُّلَ الْمَلْآئِكَةِ وَ الرُّوحِ فِيُهَا فَأَخِّرُ نِنَّ إلى ذٰلِكَ وَرُزْقُنِي نا زل کرنے کا فیصلہ نہیں کیاتو پھر مجھ کوالیل را ہے تک مہلت دے اور اس میں مجھے اپنے ذکر شکر فر مانبر دا ری اور بہترین عبادے فِيُهَا ذِكُرَكَ وَ شُكْرِكُ وَ طَاعَهُ كِلَ وَ خُسُلُ عِبَادَتِكُ وَ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الْ مُحَجَّةً کی تو قیق دےا وررحت نا زل فر ماسر کا رحمہ و آل محمد پر اپنی بہترین رحمتوں ہے اے سب سے زیا د ہ رحم کرنے والا اے یکا نہ بِـاَفُـضَـل صَـلَوَاتِكَ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ يَآ اَحَدُ يَا صَمَدُ يَا رَبَّ مُحَمَّدٍ اغُضَب الْيَوُمَ اے بے نیازاے رہے محدًا! آج غضبناک ہومحدًا وران کے خاندان کے نیکوکاروں کی خاطرا وران کے دشمنوں کے مکڑے لِـمُـحَـمَّـدٍ وَّ لَاَبُـرَارِ عِتُـرَتِهِ وَاقْتُلُ اَعُدَآئَهُمْ بَدَدًا وَّ اَحْصِهِمْ عَدَدًا وَّلا تَدَعُ عَللي ظَهْر ککڑے کر دےانہیں ایک ایک کرکے کن لے اوران میں ہے کسی کوروئے زمین پر زندہ نہ چھوڑ انہیں بھی بھی معاف نہ فرما الْأَرُضِ مِنْهُمُ أَحَدًا وَّلاٰ تَغُفِرُ لَهُمُ ابَدًا يَّا حَسَنَ الصُّحْبَةِ يَا خَلِيُفَةَ النَّبِيِّينَ أَنْتَ أَرْحَمُ ا بہترین رفیق اے نبیوں کے بعد باقی رہنے والے تو سب سے زیادہ رحم کرنے والا ہے ایسا آغاز کرنے والا ہے پیدا الرَّاحِمِيُـنَ الْبَدِّيءُ الْبَدِيْـعُ الَّـذِي لَيْسَ كَمِثْلِكَ شَيْءٌ وَّ الدَّآئِمُ غَيْرُ الْغَافِل وَ الْحَيُّ کرنے والا ہے کہ کوئی بھی چیز تیرے جیسی نہیں ہے اے ہمیشہ کے بیدا رجوعا فل نہیں ہوتا اوروہ زندہ جےموت نہیں آتی تو وہ الَّـذِيُ لا يَـمُـوُتُ أَنُتَ كُـلً يَوُم فِي شَأَن أَنُتَ خَلِيْفَةُ مُحَمَّدٍ وَّ نَاصِرُ مُحَمَّدٍ وَّ مُفَضِّلُ ہے جو ہر روز نرالیٰ شان رکھتا ہے تو حصر ہے محمد کا پشت پنا ہ ان کا مدد گا راوران کو فضیلت دینے والا ہے میں سوالی ہوں تیرا کہ

مُحَمَّدٍ اَسْئَلُكَ اَنُ تَنْصُرَ وَصِيَّ مُحَمَّدٍ وَّ خَلِيُفَةَ مُحَمَّدٍ وَّ الْقَائِمِ بِالْقِسُطِ مِنُ اَوْصِيَآ ءِهُ حضرت محمدٌ کے وصی ان کے جانشین اوران کے جانشینوں میں سے عدل وانصاف قائم کرنے والے کی مدوفر ماتیری رحمتیں مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمُ إِعْطِفُ عَلَيْهِمُ نَصُرَكَ يَا لَأَ اِللَّهَ اَلَّاتَ بحَقّ لآ اِللَّهِ اللَّآ ہوں اس پر اوران سب پر ان سبھوں کی مد دونصر ہے فر مااے کہ نہیں کوئی معبو دسوائے تیرے بوا سط نہیں کوئی معبو دمگر تو رحمت ٱنُتَ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّا جُعَلَنِي مَعَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَ الْأَخِرَةِ وَاجُعَلُ عَاقِبَةَ فر ماسر کارٹھر وآل محمد میا ور مجھے دنیا اورآخرت میں انہی کے ساتھ قرار دے اور میری زندگی کواپنی بخشش و رحمت کے شمول پر اَهُرِيْ اِلْيِ غُفُرَانِكَ وَ رَحُمَتِكَ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ كَذْلِكَ نَسَبُتَ نَفُسَكَ يَا سَ ا تحتم فرما اے سب سے زیا دہ رحم کرنے والے اور جبیما کہا ہے آپ کولطیف ومہر بان کے نام سےموسوم کیاہے میرے مالک بِاللَّطِيُفِ بَلِّي اِنَّكَ لَطِيُفٌ فَصَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّ الْطُفُ لِمَا تَشَآءُ اَللَّهُمَّ صَ ہاں بے شک تو مہر بان ہے اپس رحمت فرماسر کا رحمدٌ و آ ل محمدٌ پر اور جس پر جاہے لطف وکرم کرا ہے معبو د! رحمت نا زل کرسر کا رحمدٌ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَ (رُزُقُنِي لُحَجَّ وَ الْعُمْرُةَ فِلْيَ عَامِنًا هَذَا وَ تَطَوَّلُ عَلَى بجَمِيع و آل محمدٌ پر اورنصیب فرما مجھے عج اورعمرہ کی ا دائیگی اسی رواں سال میں اور مجھ پرعنایت کرتے ہوئے میری دنیا و آخرے کی حَوَ آئِجِيُ لِلْاٰخِرَةَ وَ الدُّنْيَا۔ كِمُرْتَمْن مرتبہ كے:اَسْتَغُفِرُ اللّهَ رَبّيُ وَ اَتُوْبُ اِلَيْهِ اِنَّ رَبّيُ قَريُبٌ بعشش جابتا مول خداسے جومیرارب ہےاورای کے حضورتو بکتا مول تمام ها جنتی بوری فرما۔ مُّجِيُبٌ ٱسۡتَغُفِرُ اللَّهَ رَبِّيُ وَ ٱتُوبُ اِلَيُهِ اِنَّ رَبِّيُ رَحِيُمٌ وَّدُوُدٌ ٱسۡتَغُفِرُ اللَّهَ رَبِّيُ وَ ٱتُوبُ ويقك ميرا رب نزديك وردعا قبول كرنے والا م بخشش جا بتا ہوں خدا سے جومير ارب ہے وراس كے حضورة به كرتا ہوں بے شك مير ارب مهر بإن محبت إِلَيْهِ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا اَللَّهُمَّ اغْفِرُ لِنِّي إِنَّكَ اَرُحَمُ الرَّاحِمِيْنَ بَ إِنِّي عَمِلُتُ سُوَّءً وَ ظَلَمُتُ والا ہے بخش چاہتا ہوں خدا سے جومیرا رب ہے وہاس کے حضولة برکتا ہوں کیونک وہ بہت بخشے والا ہے اسے معبود الجھے بخش دے بے شک تو سب سے نَـهُسِيُ فَاغُفِرُ لِي ٓ إِنَّـهُ لا يَغُفِرُ الذُّنُوبَ إلا ٓ أنْتَ ٱسْتَغُفِرُ اللَّهَ الَّذِي لآ إلهَ إلاّ هُوَ الْحَيُّ نیا دہ رقم کرنے والا ہے میرے رب میں نے براعمل کیا اورا پی جان برظم کیا ہی مجھ بخش دے کہ تیرے سواکوئی گیا ہوں کا معاف کرنے والائیل بخشش الْـقَيُّـوُمُ الْـحَلِيْمُ الْعَظِيْمُ الْكَرِيْمُ الْغَفَّارُ لِلذَّنْبِ الْعَظِيْمِ وَ آتُوبُ اِلَيْهِ اَسْتَغُفِرُ اللَّهَ اِنَّ اللَّهَ جا ہتاہوں اللہ سے جس کے سوا کوئی معبور کیٹس وہی زند دو یا تند دیر دبا ریزائی والاہر بان پڑ سے بڑ کے گما د کوئش دیے والا ہے میں اس کے حضر

كَانَ غَفُورًا رَّحِيهُمًا - پرتين مرتبك: اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّي

موں اللہ سے بخشش جا بتا موں بے شک اللہ ہے بخش دینے والامہریان اے اللہ! بیس تھے سے سوال کرتا ہوں کہ رحمت

عَـلْي مُـحَـمَّدٍ وَّ الِ مُحَمَّدٍ وَّ أَنُ تَجُعَلَ فِيُمَا تَقُضِيُ وَ تُقَدِّرُ مِنَ الْاَمُرِ الْعَظِيُمِ الْمَحْتُومِ

نا زل فرماسر کارمحد وآل محدّ پرا وریه کرتو شب قد رمیں جن برا ہے اور یقینی امور کے بارے میں بست وکشا د کا حکم لگائے جوتیرے

فِيُ لَيُسَلَّةِ الْقَدْرِ مِنَ الْقَضَآءِ الَّذِي لا يُرَدُّ وَلا يُبَدَّلُ أَنْ تَكْتَبَنِي مِنْ حُجَّاج بَيُةِكَ الْحَرَا

ا پسے فیصلے ہوں جن میں کسی طرح کالتوااور تبدیلی واقع نہیں ہوتی ان کے عمن میں مجھےا پنے محترم گھر کعبہ کےان حاجیوں میں لکھ

الْمَبُرُور حَجُّهُمُ الْمَشُكُورِ سَعُيُهُمُ الْمَغُفُورِ ذُنُوبُهُمُ الْمُكَفَّرِ عَنْ سَيَّنَآتِهِمُ وَ اَنْ تَجْعَلَ

د ہے جن کا مج قبول جن کی سعی پیند ہیرہ جن کے گنا ومعاف شدوا ورجن کی خطا ئیں ان سے دور کردی گئی ہوں اور بیر کہ جن باتوں

فِيُسَمَا تَقُضِىُ وَ تُقَدِّرُ اَنُ تُطِيُلَ عُمُرِىُ وَ تُوَسِّعَ رِزُقِيُ وَ تُوَدِّىَ عَنِّىَ اَمَانَةِيُ وَ دَيُنِيَ امِيُنَ

میں تو بست وکشاد کرےان میں میری عمر کو طانی میرے رزق میں فراوانی فرمااور میری طرف سے امانتیں اور قرضے اوا کر دے ایسا

رَبُّ الْعَالَمِيْنَ اَللَّهُمَّ الجُعَلَ لِلِّي مِنْ الْمَرِي فَرَجًا وَ مُنْخِرَجًا وَالْرُزْقِنِي مِنْ حَيْثُ أَحْتَسِبُ وَ

ہی ہواے جہا نوں کے پالنے والے اے اللہ!میرے معاملوں میں کشا دگی اور سہولت قرار دے اور مجھے رزق دے جہال سے

مِنُ حَيْثُ لا أَحْتَسِبُ وَاحُرُسُنِيُ مِنْ حَيْثُ أَحْتَرِسُ وَ مِنْ حَيْثُ لَأَ أَحْتَرِسُ وَ صَلّ عَلَى

مجھے تو قع ہاں ہے مجھے اس کے ملنے کی تو قع نہیں ہے اور میری حفاظت کر جہاں میں اپنی حفاظت کرسکوں اور جہاں اپنی

مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّ سَلِّمُ كَثِيْرًا.

حفاظت ندكرسكون اوررحت نازل فرمامحدوآ ل محد مراور بهت زيا ده سلام _

(۲) ہرروز بید عابر بھی جائے جسے حضرت امام محرتقی علیہ السلام ماہ رمضان کے شب وروز میں زیادہ سے

زیاده پڑھا کرتے تھے:

يَاذَا الَّذِي كَانَ قَبُلَ كُلِّ شَيُّ ثُمَّ خَلَقَ كُلَّ شَيُّ ثُمَّ يَبُقِي وَيَفُنِي كُلَّ شَيُّ يًّا ذَا الَّذِي لَيُسَ

اے وہ جو ہر چیز سے پہلےمو جو دتھا بھر ہرا یک چیز کو پیدا کیا تو وہ جو ہا قی رہے گاا ور ہر چیز فنا ہو جائے گی تو وہ جس کی ما نند

كَمِشُلِهِ شَيْسٌ قُ يَا ذَا الَّذِي لَيُسَ فِي السَّمُواتِ الْعُلَى وَلاَ فِي الْاَرْضِيُنَ السُّفُلَى وَلاَ

کوئی چیز نہیں اے وہ جوند بلند آسانوں میں ہاورنہ بہت ترین زمینوں میں ہاورندان کے اوپر ہے ندان کے نیج

﴿ ﴿ وَهَا لَا تَلَحْنَهُنَّ وَلاَ بَيْنَهُنَّ اِللَّهُ يُعْبَدُ غَيْرُهُ لَكَ الْحَمُدُ حَمُدًا لَّا يَقُواى عَلَى الْحَصَائِةِ فَعُ

ہے اور نہ درمیان میں ہے وہ معبو دجس کے سوا کوئی معبو دنہیں تیرے لیے حمد ہے وہ حمد کہ کوئی اسے ثنا رنہ کر سکے سوائے

إِلَّا ٱنْتَ فَصَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِ مُحَمَّدٍ صَلوةً لَّا يَقُواى عَلْى إِحْصَآئِهَاۤ إِلَّا ٱنْتَ.

تیرے پس رحمت فر ماحضرات مجمدو آل محمد پر وہ رحمت کہ کوئی اسے ثمار نہ کر سکے سوائے تیرے۔

(۳) جناب شیخ گفعمی نے جناب سیدابن باقی کے حوالہ ہے اس دعا کا ماہ رمضان کے شب و روز میں

يره صناورج كياب اوريدكهاس كرير صف صحاليس سال كركنا ومعاف بوجاتے بين:

اَللَّهُمَّ رَبَّ شَهُرٍ رَمَضَانَ الَّذِي اَنُـزَلُتَ فِيُهِ الْقُرُانَ وَافْتَرَضُتَ عَلَى عِبَادِكَ فِيْهِ الصِّيَامَ ﴿

ا ہے معبود!ا ہے اہ رمضان کے پروردگار کہ جس میں تونے قرآن نا زل کیااورتو نے اپنے بندوں پر اس کے روزے فرض کیے

ارُزُقُنِي حَجَّ بَيُةِكَ الْحَرَامِ فِي هٰذَا الْعَامِ وَ فِي كُلِّ عَامٍ وَاغْفِرُ لِيَ الذُّنُوبَ الْعِظَامَ فَإِنَّا ﴿

مجھے اپنے محترم گھر کعبہ کا حج نصیب فرماای سال میں اور آیند وسالوں میں اور میرے بڑے بڑے گنا و بخش دے کیونکہ تیرے

لا يَغْفِرُهَا غَيْرُكَ يَا أَلُوالْ إِلَا كُولِ الْأَكُولُ وَالْا كُولُوا الْكُولُ وَالْا كُولُوا الْكُولُ وَالْا كُولُوا اللهِ

سوا کوئی انہیں بخش نہیں سکتا اے جلالت اور ہز رگیوں والے ۔

(۴) جناب شیخ مفید علیہ الرحمہ اپنی کتاب مقدمہ میں فر ماتے ہیں کہ ماہِ رمضان کی سنتوں میں سے ایک سنت بیہے کہ ہرروز کم از کم ایک سوبار درو دشریف پڑھا جائے اوراگر زیا دہرڑھا جائے تو افضل ہے۔

ماه رمضان کے اعمال مخصوصہ کا تذکرہ

ماہ مبارک رمضان کے مشتر کہا عمال کا تذکرہ کرنے کے بعد جوکہ چارتیم کے اعمال تھے۔اب ان مخصوص اعمال وعبا دات کا تذکرہ کیا جاتا ہے جواس مقدس مہینہ کے خصوص شب وروز کے ساتھ مختص ہیں۔اوروہ چندامور

ي.

(١) ما ورمضان كاج إندو كي كريد صنى وعا

(۱) ما درمضان کاچاند دیکھنے کی کوشش کی جائے جیسا کہ حضرت امیر المؤمنین علیہ السلام کیا کرتے تھے۔

(٢) جب حيا ندنظر آجائے تو قبله رو موكر بيد وعايزهي جائے جو كه حضرت رسول خداصلي الله عليه وآله وسلم

يراها كرتے تھے:

المنظهم آهِلَه عَلَيْنَا بِالْا مُنِ وَ الْإِيْمَانِ وَ السَّلاَمَةِ وَ الْإِسُلاَمِ وَ الْعَافِيَةِ الْمُجَلَّلَةِ وَ دِفَاعِ السَّلاَمَةِ وَ الْإِسُلاَمِ وَ الْعَافِيَةِ الْمُجَلَّلَةِ وَ دِفَاعِ السَّلاَمَةِ وَ الْعِسَامِ وَ الْعِسَامِ وَ الْقِيامِ وَ الْعَيْوَنِ عَلَى الصَّلوةِ وَ الصِّيَامِ وَ الْقِيَامِ وَ بِلاَوَةِ الْقُرُانِ اللَّهُمَّ سَلِّمُنَا لِشَهُو الْاَسْفَامِ وَ الْعِيَامِ وَ الْقِيَامِ وَ بِلاَوَةِ الْقُرُانِ اللَّهُمَّ سَلِّمُنَا لِشَهُو يَعْلَى الصَّلوةِ وَ الصِّيَامِ وَ الْقِيَامِ وَ بِلاَوَةِ الْقُرُانِ اللَّهُمَّ سَلِّمُنَا لِشَهُو يَعْلَى الصَّلوةِ وَ الصِّيَامِ وَ الْقِيَامِ وَ بِلاَوَةِ الْقُرُانِ اللَّهُمَّ سَلِّمُنَا لِشَهُو يَعْلَى الصَّلوةِ وَ الصِّيَامِ وَ الْقِيَامِ وَ بِلاَوَةِ الْقُورُانِ اللَّهُمَّ سَلِّمُنَا لِشَهُو يَعْلَى الصَّلوةِ وَ الصِّيَامِ وَ الْقِيَامِ وَ بِلاَوَةِ الْقُورُانِ اللهُمُ سَلِّمُنَا لِشَهُو يَعْلَى الصَّلوةِ وَ الصِّيَامِ وَ الْقِيَامِ وَ بِلاَوَةِ الْقُورُانِ اللَّهُمُ سَلِّمُنَا لِشَهُ وَ عَلَى الصَّلُوةِ وَ الصِّيَامِ وَ الْفَيَامِ وَ بِلاَوَةِ الْقُورُانِ اللَّهُمُ اللَّهُ وَالْمُسْلَامِ وَالْمُعَانِ وَ الْمُعَلَى الصَّلُوةِ وَ الصِيلَةُ وَالْمُعَلَى الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِي الْمُعَلِّمُ وَالْمُ الْمُعْمَى عَنَّا شَهُرُ وَمَضَانَ وَ قَدُ عَفُونَ عَلَى الْمُعَلِي وَالْمِينَ الْمُعَلِي الْمُعَالِي الْمُعَلِي وَالْمُعِينَ فِي الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِي وَالْمِينَ الْعَلَى الْمُعْلَى الْمُعْلِى الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعِلَى الْمُعَلِي الْمُعَلِي وَالْمُعِلَى الْمُعَلِى الْمُعْلِى الْمُعْلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِى الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعْلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعْلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِى الْمُعَلِي الْمُعَلِى الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعِلَى الْمُعَلِى الْمُعَلِي الْمُعَلِى الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعَلِي الْمُعْلِي الْمُعَلِي الْمُعْلِى الْمُعَلِي الْمُعْلِي الْمِلْمُ الْمُعْلِي الْمُعْلِي الْمُعْلِي الْمُعْلِي الْمُل

بخش دیا ہوا ورہم پر مہر بانی فرما دی ہو۔

(۳) نیز روبقبله ہوکراور ہاتھا گھا کرید دعاراتھی جائے جوحضرت امام جعفرصا دق علیدالسلام ہےمروی

~

رَبِّى وَ رَبُّكَ اللُّهُ إِنَّ الْعَالَمِينَ ٱللَّهِ مَا أَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْآمْنِ وَالسَّالُامَةِ وَعُ

ميرا پرور دگار تيرا پروردگار الله ہے جوتمام جہانول کا پرور دگار ہےا ہے معبود!اس جاند کو جمارے لیے امن وامان وسلامتی وسلامت

الْإِسُلاَمِ وَ الْمُسَارِعَةِ اللَّي مَا تُحِبُّ وَ تَرُضٰي اَللَّهُمَّ بَارِكُ لَنَا فِي شَهْرِنَا هَذَا وَ ارُزُقُنَا فُ

روی کے ساتھ طلوع کراورا پی پیند بدہ چیزوں کی طرف جلدی کرنے کا ذریعہ بنا دے اے معبود!اس مہینے میں ہم پر خیرو برکت

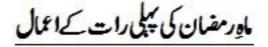
خَيْرَهُ وَ عَوْنَهُ وَ اصْرِفْ عَنَّا ضُرَّهُ وَ شَرَّهُ وَ بَلا نَهُ وَ فِتُنَتَّهُ.

نا زل فرماا ورجمیں فیر وبھلا فی سے ہمکنار کردے اس مہینے میں ہم سے نقصان تکلیف معیبت اور آ زمائش کودورر کھ۔

(٣) هو سَكَانُو صحيفهُ سجاديةُ والى دعائے بلال (دعائمبر٣٣) بڑھے جو حضرت امام زين العابدين الطَّلِيُّةِ بِرُ هاكرتے تھے: ﴿ أَيُّهَا الْنَحَلُقُ الْمَطِينُعُ اللَّهَ آئِبُ السَّبرِيْعُ ﴾ (صحيفهُ سجادية بصفحه ٣٠٠)

(۵) يدوعارو هے جوحفرت امام جعفرصا وق عليه السلام معنقول ب:

اَللَّهُمَّ اَوْجِلُهُ عَلَيْنَا بِالسَّلاَمَةِ وَ الْإِسُلاَمِ وَ الْيَقِينِ وَ الْإِيْمَانِ وَ الْبِرِّ وَ التَّوْفِيْقِ لِمَا تُحِبُّ وَ تَرُضَى اللَّهُمَّ اَوْجُلُهُ عَلَيْنَا بِالسَّلاَمِ لِقَيْنُ وَايُانُ وَيَكُنَا وَالنَّالِ وَ الْكَيْقِيْنِ وَ الْكَيْقِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكِيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِينِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكِيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكِيفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكَيْفِيْنِ وَ الْكِيفِيْنِ وَالْمُولِيْنِ وَالْمُولِيْنِ وَالْمُولِيْنِ وَالْكُولِيْنِيْنِ وَالْمُولِيْنِ وَاللَّهُمُ مِنْ اللَّهُ مِنْ لِمُالِمُ اللّهُ وَالْمُؤْمِنِيْنِ وَالْمُلْفِيْنِ وَ الْكِيفِيْنِ وَ الْمِيْنِ وَالْمُولِيْنِ وَالْمُولِيْنِ وَالْمُلْمِ اللَّهِ وَالْمُلِلْمُ اللَّهُ وَاللَّالِمُ اللَّهِ وَالْمُولِيْنِ وَالْمُلْوِلِيْنِ وَالْمُلِلْمُ وَاللَّهِ وَالْمُولِي وَالْمُولِيْنِ وَالْمُولِيْنِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَالْمُولِيْنِ وَاللَّهِ وَاللَّالِي وَالْمُؤْمِنِيْنِ وَالْمُلْمِالِمِ الللَّهِ وَالْمُؤْمِنِيْنِ وَاللَّهِ وَالْمُؤْمِنِيْنِ وَالْمُؤْمِنِيْنِ وَالْمُؤْمِنِيْنِ وَالْمُؤْمِنِيْنِ وَالْمُؤْمِنِيِنِيْنُ وَالْمُؤْمِنِيْنِ وَالْمُؤْمِنِيْنِيْنِ وَالْمُؤْمِنِيْنِ وَالْمُؤْمِنِيْنِ وَالْمُؤْمِنِيْنِ و



(۱) پہلی رات عنسل کیا جائے تا کہ آئندہ سال تک خارش ہے محفوظ رہے اور باطنی پا کیزگی بھی حاصل ہواوراگر ہو سکے تو نہر ہے بیٹسل کیا جائے۔

(۲)اس رات وہ دعار بھی جائے جس کے شعبان کی آخری رات میں پڑھنے کا تذکرہ کیا جاچکا ہے۔ (۳)حضرت امام حسین علیہ السلام کی زیارت کی جائے۔

قبل ازیں تذکرہ کیاجا چکاہے۔

(۵)اس رات و دو عاريه عائ جو حصرت امام جعفر صا دق عليه السلام مع منقول ب:

اَلِلْهُمَّ قَدْ مَسَمَّرُ شَهُرُ رَمَحَانَ وَقَدِ الْكُرُضُتَ عَلَيْنَا صِيَامَهُ وَ اَنْزَلْتَ

اے معبود! ماہ رمضان آگیا اور تو نے ہم پر اس کے روزے فرض کیے ہیں تو نے اس میں قرآن اٹارا کہ جس میں

فِيهِ الْقُرُانَ هُدًى لِلنَّاسِ وَ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُداى وَ الْفُرُقَانِ اللَّهُمَّ اعِنَّا عَلَى صِيَامِهِ

لوگوں کے لیے ہدایت اور ہدایت کی دلیلیں اور حق و باطل کا فرق ظاہر ہے اے معبود! روزے رکھے میں ہماری مدد فرما اور

وَ تَقَبُّلُهُ مِنَّا وَ سَلِّمُنَا فِيُهِ وَ سَلِّمُنَا مِنْهُ وَ سَلِّمُهُ لَنَا فِي يُسُرٍ مِّذُكَ وَ عَافِيَةٍ فَج

انہیں قبول کر ہمیں ان ماہ میں تندرست رکھ اس سے مستفید کر اس پورے مہینے میں ہمیں آسانی نصیب فرما اور آسائش دے

إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ يَا رَحُمْنُ يَا رَحِيْمُ.

ب شکق ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے اے بڑے رقم والے اسے ہر مان۔

(١) اس رات و ه دو ركعت نماز يرهى جائے جو حضرت امام موى كاظم عليه السلام مے مروى إنا كه

آ دمی آئنده سال تک الله کی حفظ وامان میں رہے۔ پہلی رکعت میں الحمد کے بعد سور کا نسا فتحنا لک فتحاً مبینا

اور دوسری میں الحمد کے بعد جوسورہ جا ہے پڑھے جوابیا کرے گاتو خدا اے اس سال ہرفتم کے شرورو آفات

مے محفوظ رکھے گا۔ (زادالمعاد)

ماورمضان کے پہلے دن کے اعمال

اس دن کے بھی چند عمل ہیں:

- (۱) آب جاری یعنی دریایا نهر سے شل کیا جائے۔
- (۲) ہر ماہ کی مہلی تاریخ والی دو رکعت نما زیڑھ کر پچھ صدقہ ویا جائے۔
 - (m) طلوع فجر کے بعد بید دعا پڑھی جائے:

﴿ اَللّٰهُمَّ قَدُ حَضَرَ شَهُو رَمَضَانَ وَ قَدِ الْحَرَضَتَ عَلَيْنَا صِيَامَهُ وَ اَنْزَلْتَ فِيهِ الْقُوانَ هُدًى السَّاعِمَةِ وَ اَنْزَلْتَ فِيهِ الْقُوانَ هُدًى السِّعِودا ماه رمضان آكيا ہے اور تونے اس کے روزے ہم پرفرض کے جی اس میں ٹونے قرآن اتا ماہے جو لوگول کیلئے ہما ہت

لِلنَّاسِ وَ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَى وَ الْفُرُقَانِ اَللَّهُمَّ اَعِنَّا عَلَى صِيَامِهِ وَ تَقَبَّلُهُ مِنَّا وَ تَسَلَّمُهُ مِنَّا وَ العدامة كانتُ ذاك الدح ما طلك في الله على معدالات كرون ما يحض التي كرون من كان ويم يعقب في الله كريم

اور ہدا ہے کی نٹا نیاں اور حق و باطل کا فرق کرتا ہے اے معبود! اس کے روزے رکھنے میں مدد کراوروہ ہم سے قبول فرمااس کو ہم

سَلِّمُهُ لَنَا فِهِي يُنْ رَبِي كُلُوا عَلَافِيةِ إِنَّكُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْهُرُ

سے پورا لے اور جمارے لیے پورا فرما اپنی طرف سے آ سانی وسہولت کے ساتھ بے شک تو ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے۔

(۴) بید دعا پڑھی جائے جو کہ حضرت امام موی کا کاظم علیہ السلام سے منقول ہے تا کہ پورا سال ہر ہم کے فتندو فسا داور ہر ضرر رساں چیز کے ضرر ہے محفوظ رہے:

﴿ اَللّٰهُ مَّ إِنِّى اَسُسَلُكَ بِالسُمِكَ الَّذِى دَانَ لَهُ كُلُّ شَيْءٍ وَ بِرَحُمَةِكَ الَّتِي وَسِعَتُ المَا عُنُ اللَّهِ وَاللّٰهُ مَا إِنِّى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ ال

شَیْء و بِعَظَمَةِ کَ الَّةِی تَوَاضَعَ لَهَا کُلُّ شَیْء و بِعِزَّةِ کَ الَّتِی قَهَرَتُ کُلُّ شَیء و بِقُوّةٍ کُمُ مولَ ہے یواسط تیری بڑائی کے جس کے آ گے ہر چیز جھی مولَ ہے یواسط تیری عزت کے جوہر چیز پر عاوی ہے بواسط تیری قوت

الَّتِسَى خَصْعَ لَهَا كُلُّ شَيْءٍ وَ بِجَبَرُ وُرِدَكَ الَّتِي غَلَبَتُ كُلَّ شَيْءٍ وَ بِعِلْمِكَ الَّلاَعُاطَ كَجْسَ كَآكَم برجِيْر سرعوں إلى الطرتير عاقد اركے جو برجيزي غالب عاور موالى موں بواسط تير علم كے جو برجيز كو

بِكُلِّ شَيْءٍ يَّا نُورُ يَا قُدُّوسُ يَاۤ اَوَّلَ قَبُلَ كُلِّ شَيْءٍ وَ يَا بَاقِيًا ﴿ بَعُدَ كُلِّ شَيْءٍ يَّاۤ اَللّٰهُ

تھیرے ہوئے ہا نےوراپ پا کیزومز اے وہ اول جو ہر چیز سے پہلے تھا اے وہ ہاتی جو ہر چیز کے بعد رہے گا اے اللہ يَا رَحُمْنُ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّاغُفِرُ لِيَ الذُّنُوْبَ الَّتِي تُغَيِّرُ النِّعَمَ وَاغُفِرُ لِيَ اے رحمٰن رحمت فر ماسر کارمجمہ و آل محمہ میراور میرے وہ گنا ومعاف فرما جونعتوں کو پلٹا دیتے ہیں اور میرے وہ گنا ومعاف فر ماجو الذُّنُوُبَ الَّتِيُ تُنُزِلُ النِّقَمَ وَاغُفِرُ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِيُ تَقُطَعُ الرَّجَآءَ وَاغُفِرُ لِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي نزولِ عذابِ کاباعث ہیں میرے و وگنا ومعاف فرما جوا میدرحت کوتو ژتے ہیں میرے وہ گنا و معاف فرما جو مجھ پر دشمنوں کوج مز ھا تُبدِيْلُ الْاَعُدَاءَ وَاغْفِرُلِيَ الذُّنُوبَ الَّتِيُ تَرُدُّ الدُّعَاءَ وَاغْفِرُلِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي يُسُتَحَقُّ بِهَا لاتے ہیں میرے وہ گنا ہ معاف فرما جو دعا قبول نہیں ہونے دیتے میرے وہ گناہ معاف فرما جن کے باعث معیبت نُـزُوُلُ الْبَـلَآءِ وَاغُـفِـرُلِـيَ الـذُنُوُبَ الَّتِيُ تَحْبِسُ غَيْثَ السَّمَآءِ وَاغُفِرُلِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي آن پڑتی ہے میرے وہ گناہ معاف فرما جو آسان سے بارش کو روکتے ہیں میرے وہ گناہ معاف فرما جن سے تَكُشِفُ الْغِطَآءَ وَاغُفِرُلِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تُعَجِّلُ الْفَنَآءَ وَاغُفِرُلِيَ الذُّنُوبَ الَّتِي تُورثُ پر دہ دری ہوتی ہے میرے وہ گنا ومعاف فرماج جلد زندگی فتح کردیے ہیں میں تھے سے سوالی ہوں میرے وہ گنا و معاف فرماجو وجہ النُّدَمَ وَاغُفِرُلِيَ الذُّنُوْبَ الَّتِي تَهُةِكُ الْعَصَمَ وَ ٱلْبِسْنِي دِرُعَكَ الْحَصِينَةَ الَّتِي لأ تُر شرمندگی ہیں اور میرے وہ گنا ہ معاف فرما جو پر دہ جا ک کرتے ہیں اور مجھے اپنی وہ پائیدار زرہ پہنا دے جسے کوئی ا تار نہ سکے وَ عَـافِنِيُ مِنُ شَرِّ مَاۤ أَحَاذِرُ بِاللَّيُلِ وَالنَّهَارِ فِيُ مُسْتَقُبَلِ سَنَةِيُ هَٰذِهِ اَللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوٰتِ مجھاس آنے والے سال کے شب وروز میں جن چیز وں کا ڈرہان کے شرسے حفاظت میں رکھا ہے معبو د! اے سات آسانوں السَّبُع وَ رَبَّ الْاَرَضِيُسَ السَّبُع وَمَا فِيُهِنَّ وَمَا بَيُسَهُنَّ وَ رَبَّ الْعَرُشِ الْعَظِيُمِ وَ رَبَّ اورسات زمینوں اور جو پچھان میں ہےاور جو پچھان کے درمیان ہےاس کے پرور دگارا ورعرش عظیم کے پرورد گارا ور دوباریا زل السَّبُعِ الْمَشَانِيُ وَ الْقُرُآنِ الْعَظِيبُ مِ وَرَبَّ اِسُرَافِيُلَ وَ مِيُكَآئِيُلَ وَ جِبُرَئِيُلَ وَ رَبّ شدہ سات آیتوں اور قرآن عظیم کے پروردگار اوراسرافیل میکائیل وجبرائیل کے پروردگار اور حضرت مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيُهِ وَ الِهِ سَيَّدِ الْمُرُسَلِيُنَ وَ خَاتَمِ النَّبِيَيْنَ اَسُئَلُكَ بكَ وَ بمَا سَمَّيُ محمصلی اللہ علیہ وآلہ کے پر وردگار کہ جو رسولوں کے سر دا را ورنبیوں میں آخری ہیں تیرے واسطے سے تھے سے سوالی ہوں اور

·**** بِهِ نَـفُسَكَ يَـا عَـظِيُمُ ٱنُتَ الَّذِي تَمُنَّ بِالْعَظِيْمِ وَ تَدُفَعُ كُلَّ مَحُذُورٍ وَّ تُعُطِي كُلّ جَزيُل بواسطان کے جس سے تُونے خود کوموسوم کیاا ہے ہز رگتر تو وہ ہے جو براا احسان کرنے والا ہرخطر ہے کو دور کرنے والا برہ می برہ می وَّ تَـضَاعِفُ الْـحَسَنَاتِ بِـالْـقَلِيُل وَ بِالْكَثِيُرِ وَ تَفْعَلُ مَا تَشَآءُ يَا قَدِيُرٌ يَآ اَللَّهُ يَا رَحُمْنُ عطاؤل والاسم اور زیادہ نیکیوں کو دگنی کر دینے والا اور تو جو چھاہے وہی کرنے والا ہے اے قدریر اے اللہ اے رحمٰن صَلِّ عَـلَى مُـحَمَّدٍ وَّ اَهُلِ بَيُتِهِ وَ ٱلْبِسُنِيُ فِي مُسْتَقُبَلِ سَنَتِي هَذِهٍ سِتُرَكَ وَ نَضِّرُ وَجُهِ رحمت فر ماحصرت محمد کر اوران کے اہل میت پر اوراس آنے والے سال میں اپنی طرف سے میری پر دہ پوشی فرما میرے چیرے بِنُـوُرِكَ وَ أَحِبَّنِـيُ بِـمَحَبَّةِكَ وَ بَلِّغُنِيُ رِضُوانَكَ وَ شَرِيُفَ كَرَامَةِكَ وَ جَسِيُمَ عَظٍّ کواپنے نور سے شا دمال کراپنی محبت سے مجھے محبوب فرما اپنی رضاء وخوشنودی اپنی بہترین بخشائشوں اپنی بڑی بڑی عطاؤل وَ أَعْطِنِيُ مِنْ خَيْرٍ مَا عِنُدَكَ وَمِنْ خَيْرِ مَآ أَنْتَ مُعْطِيُهِ أَحَدًا مِّنُ خَلُقِكَ وَ ٱلْبَسْنِ سے حصہ دے اور مجھے اپنی طرف سے بھلائی عطافر مااوراس بھلائی میں سے عطافر ما جوتو اپنی مخلوق میں سے کسی کوعطافر مائے مَعَ ذَالِكَ عَافِيَةَ كَ يَا مَوْضِعَ كُلِّ شَكُولِي وَيُواشَاهِدَ كُلِّ نَجُولِي وَ يَا عَالِمَ كُلّ خَفِيًّ اوران نوازشوں کے ساتھ ہی تکدری بھی دے اے تمام شکانیوں کے بننے والے اے ہر روز کے گوا واے ہر پوشیدہ چیز کے جانے وَّ يَا دَافِعَ مَا تَشَاءُ مِنُ بَلِيَّةٍ يَّا كَرِيْمَ الْعَفُو يَا حَسَنَ التَّجَاوُزِ تَوَفَّنِي عَلَى مِلَّةِ اِبُوَاهِيْمَ والے اور جس کو جاہے دور کر دینے والے اے باعزت معاف کرنے والے اے بہترین درگز روالے مجھے اہما ہیم کے دین وَ فِطُرَتِهِ وَ عَلَى دِيُنِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ وَ سُنَّتِهِ وَ عَلَى خَيْرِ الْوَفَاةِ فَتَوَفَّنِي اوران کی سیرت پرموت دے اور مجھے حضرت محمصلی الله علیه وآله کے دین اور طریقے پرموت دے اور اچھ طریقے موت دے مُوُ الِيًا لِلَوْلِيَآئِكَ وَ مُعَادِيًا لِّاعُدَآئِكَ اَللَّهُمَّ وَ جَنِبُنِيُ فِي هٰذِهِ السَّنَةِ كُلَّ عَمَل اَوْ قَوْ پی موت دے جبکہ میں تیرے دوستوں کا دوست اور تیرے دشمنوں کا دعمن ہوں اے معبود! اس سال میں مجھے ہراس قول وفعل اَوُ فِعُل يُبَاعِدُنِيُ مِنُكَ وَ اجُلِئِنَى للى كُلِّ عَمَل اَوُ قَوُل اَوْ فِعُل يُقَرّبُنِي مِنُكَ فِي هذِهِ سے پر کنار رکھ جو مجھے تھے سے دور کر دینے والا ہے اور مجھے اس سال میں ہرا یہے قول اور عمل کی طرف لے جاجو مجھ کوتیری قربت السَّنَةِ يَاۤ اَرُحَهُ الرَّاحِمِيُنَ وَامُنَعُنِيُ مِنُ كُلِّ عَمَلِ اَوُ قَوُلٍ اَوُ فِعُلِ يَكُونُ مِنِّي آخَافُ

میں پہنچانے والا ہے اے سب سے زیادہ رحم کرنے والے مجھے ہرایے قول یاعمل یا فعل سے دور رکھ جس کے نقصان اور ضَرَرَ عَاقِيَتِهِ وَ اَحَافُ مَقُةَكَ إِيَّاىَ عَلَيْهِ حِذَارَ اَنْ تَصُرِفَ وَجُهَكَ الْكُرِيُرُ انجام سے میں ڈرنا ہوں اور خاکف ہوں کہ تو اس کو بہند نہ کرے تو میری طرف سے اپنی پا کیزہ توجہ ہٹا لے گا عَنِّيٰ فَاسْتَوْجِبَ بِهِ نَـقُصًا مِّنُ حَظٍّ لِّي عِنْدَكَ يَا رَءُوْثُ يَا رَحِيْمُ اَللَّهُمَّ اجُعَلُنِي ﴿ لیں اس سے تیرے بال میرے جھے میں کی ہوجائے گی اے محبت والے اے رحم والے اے معبود! اس سال میں مجھے فِيُ مُسْتَقُبَلِ سَنَةِيُ هَذِهٍ فِي حِفُظِكَ وَفِيٌ جَوَارِكَ وَفِيُ كَنَفِكَ وَ جَلِّلُنِيُ سِتُرَ عَافِيَ فَيُكُّكَ ا پنی حفاظت و گلہداری میں قرار دے اپنی بناہ میں اپنے آستاں پر رکھ اور مجھے اپنی حفاظت کا لباس پہنا مجھے اپنی طرف سے وَهَبُ لِيُ كَرَامَةًكَ عَزَّ جَارُكَ وَ جَلَّ ثَنَآؤُكَ وَلآ اِللهَ غَيْرُكَ اَللَّهُمَّ اجُعَلْنِي تَابِعًا لِصَالْكِيمِي بزرگ دے تیرا قریبی باعزے ہا اور تیری تعریف بلند ہا اور تیرے سوا کوئی معبود نہیں اے معبود اتیرے دوستوں میں جو نیکوکار مَنُ مَّضٰى مِنُ اَوُلِيَآئِكَ وَ اَلْحِقُنِيُ بِهِمُ وَاجْعَلْنِيُ مُسَلِّمًا لِّمَنُ قَالَ بِالصِّدُقِ عَلَيُكَ مِنْهُ ﴿ گزرے ہیں جھے ان میں شار کواوران کے ماتھ ملادے اوران میں سے جس نے تیری طرف سے جو کی بات کی جھے اس کا وَ اَعُوْذُ بِكَ اَللَّهُمَّ اَنُ تُحِيُطَ بِي خَطِيْئَتِي وَ ظُلُمِي وَ اِسْرَافِي عَلَى نَفُسِي وَ اِتِّبَاعِي مانے والا بنا اورا معبود! میں تیری پنا ولیتا ہوں اس سے کہ تھیرے مجھ کومیری خطا میراظلم اورا پنے نفس پرمیری زیادتی اورا پنی لِهَوايَ وَاشْتِغَالِيُ بِشَهَوَاتِي فَيَحُولُ ذَٰلِكَ بَيْنِي وَ بَيْنَ رَحْمَةِكَ وَ رِضُوَانِكَ فَاكُو خواہش کی پیروی اوراین جا ہت میں محویت کہ یہ چیزیں میرے اور تیری رحت وخوشنو دی کے درمیان حاکل ہو جا تیں اس میں مَنُسِيًّا عِنُدَكَ مُتَعَرِّضًا لِّسَخَطِكَ وَ نِقُمَةِكَ اَللَّهُمَّ وَفِقُنِي لِكُلِّ عَمَل صَالِح تَرُطُ تیرے ہاں فراموش ہوجاؤں اور تیری ما راضی وسختی میں پھنس جاؤں اے معبود! مجھے ہراس نیک عمل کی تو فیق دے جس سے تو مجھے بِهِ عَنِّيُ وَ قَرِّبُنِيْ إِلَيُكَ زُلُفَى اَللَّهُمَّ كَمَا كَفَيْتَ نَبِيَّكَ مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ هَوُلُّ سے خوش ہواور مجھے بہلحاظ مقام اپنے قریب کر لے اے معبودا جیسے تونے مدد فرمائی اپنے نبی محد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خوف عَدُوَّهِ وَ فَرَّجُتَ هَمَّـٰهُ وَ كَشَفُتَ غَمَّـٰهُ وَ صَدَقُتَـٰهُ وَعُدَكَ وَ ٱنْجَزُتَ لَـٰهُ عَهُدَكَ دشمناں میں اوران کی پریشانی دور کی اوران کا رہے وغم ہٹا دیا اور تو نے اپنا وعد ہ جیا کر دکھایا اوران سے کیا ہوا پیان پورا فرمایا تو

ٱللُّهُمَّ فَبِذَالِكَ فَاكُفِنِي هَوُلَ هِذِهِ السَّنَةِ وَ افَاتِهَا وَ ٱسْقَامَهَا وَ فِتُنَتَهَا وَ شُرُورَهَا اے معبود! اسی طرح اس سال کے خوف میں میری مدوفر مااس کی مصیبتوں بیار یوں آ زمائشوں تکلیفوں عمول اوراس میں وَ أَحُزَانَهَا وَ ضِيُقَ الْمَعَاشِ فِيُهَا وَ بَلِّغُنِي برَحُمَةِ كَ كَمَالَ الْعَافِيَةِ بِتَمَام دَوَام معاش کی تنگی وغیرہ پر اور مجھے اپنی رحمت سے بہترین آسائش دے مجھے تمام نعتیں ملتی رہیں یہاں تک کہ میری موت النِّعُمَةِ عِنْدِيْ إِلَى مُنْتَهْلِي أَجَلِيُ ٱسْئَلُكَ سُؤَلَ مَنْ ٱسَآءَ وَ ظَلَمَ وَاسْتَكَانَ وَاعْتَرَفَ کا وقت آجائے میں سوال کرتا ہوں تھے سے اس کی طرح جس نے گنا واورظلم کیا اور وہ مختاج ہے گنا و کا اعتراف کرتا ہے وَ ٱسُئَلُکَ ٱنْ تَغُفِرَلِيُ مَا مَطْبِي مِنَ الذُّنُوبِ الَّتِيُ حَصَرَتُهَا حَفَظَةُكَ وَ ٱحُصَةُ اور سوالی ہوں تھے سے کہ میرے پچھلے گناہ معاف کر دے جن کو تیرے تلہبانوں نے لکھا ہے اور تیرے معزز كِرَاهُ مَلْأَثِكَةِكَ عَلَيَّ أَنْ تَعْصِمَنِكَ لله يُ مِنَ الذُّنُوْبِ فِيْمَا بَقِيَ مِنْ عُمُرِي إلى فرشتوں نے شار کیا جو مجھ پر مقرر میں اور میرے اللہ! باقی مائدہ زندگی میں مجھے گناہوں سے بچا اس وقت تک کہ میری عمر مُنْتَهِي أَجَلِي يَآ ٱللَّهُ يَا رَحْمَلُ يَا وَحِلَّمُ صَلَّ عَلَى مُلَحَمِّدٍ وَّ أَهُلَ بَيْتِ مُحَمَّدٍ وّ اتِّنِي تمام ہوجائے اے اللہ اے رحمان اے رحیم رحمت فرما حضرت محمد اوران کے اہل بیت پر اور مجھے وہ سب کچھے كُلُّ مَا سَئَلُتُكَ وَ رَغِبُتُ اِلَيُكَ فِيهِ فَاِنَّكَ اَصَرُتَنِيُ بِالدُّعَآءِ وَ تَكَفَّلُتَ لِيُ بِالْإ عطا كرجويس في مانگااورجس كى تھے سے خوامش كى بے پس تو في دعاكرفي كا علم ديا اورميرى دعا قبول كرنے كى ذمه دارى في

يَّ أَرُحَمُ الرَّاحِمِينَ﴾.

اے سب سے زیادہ رحم والے۔

تیر ہویں، چود ہویں اور پندر ہویں ماہر مضان کے اعمال

(۱) لیالی اورامام بیض میں سے پہلی تاریخ ہے۔اس میں وہی مخصوص دو رکعت نماز پڑھی جائے جس کا تذکرہ رجب اور شعبان کی تیرہویں تاریخ میں کیا جا چکا ہے کہ ہر رکعت میں الحمد کے بعد سورۂ لیلین ،الملک اور تو حید پڑھی جائے۔

(۲) اس رات میں وہ چار رکعت نماز بدوسلام پڑھی جائے جوحضرت امیر علیہ السلام ہے مروی ہے کہ ہر

^

رکعت میں الحمد ایک باراورسورۂ تو حید بچپس بار کہاس کا پڑھنے والافر دائے قیامت بل صراط ہے اس طرح گزر جائے گا جس طرح بجلی کی روگز رجاتی ہے۔(المصباح)

- (۳) چودہویں کی رات وہی مخصوص نماز بڑھی جائے جو چودہ رجب و شعبان میں گزرچکی ہے اور جس کا تذکرہ ابھی او بر ہواہے یعنی جا ررکعت بڑھی جائے۔
- (۴) اوروہی چھرکعت نماز جو پندر ہویں رجب کی رات پڑھی جاتی ہے۔ پندر ہویں ماہِ رمضان کی رات چھرکعت نماز پڑھی جائے۔
 - (۵) نیز پندره ماه رمضان کوحفرت امام حسین علیه السلام کی زیارت کی جائے۔

پندره ماه رمضان كاون

چونکہ نیمہ کاہ رمضان سے ہمقام مدینہ منورہ حضرت امام حسن مجتبی علیہ السلام کی ولادت باسعادت کی تاریخ ہے اس کے شدھیان سے ہمقام مدینہ منورہ حضرت امام حسن کی تاریخ ہے اس کے شدھیان حیدر کرار کے لیے بیدون بڑی مسرت وشاد مانی کا دن ہے لہٰذااس دن امام حسن علیہ السلام کاجشن میلاد منایا جائے اور مفلوک الحال الله اسلام والیمان کی خوج کے اور خیرات وصد قد دیا جائے اور اہل ایمان کو فوش کیا جائے۔

شب بائے قدر لیعنی شب ۱۹،۱۹۱ور۲۳ کے مشتر کہ اعمال

واضح ہوکہ شب ہائے قدر بعنی ماہ رمضان کی انیسویں ،اکیسویں اور تھیبویں شب کے انمال دوشم کے ہیں: ایک مشتر کہ جوان تینوں راتوں میں بجالائے جاتے ہیں اور دوسر مے خصوصہ جوان میں سے ہرایک رات میں بجالائے جاتے ہیں اور دوسر مے خصوصہ جوان میں سے ہرایک رات میں بجالائے جاتے ہیں ۔تو ہم پہلے مشتر کہ اعمال کا تذکرہ کرتے ہیں اور وہ چندامور ہیں:

- (۱) عنسل کرنا۔ بہتر ہے کہ پیشل غروب آفتاب کے وقت کیا جائے تا کہ نماز مغرب ای عنسل کے ساتھ مصر پر
- (۲) دورکعت نمازاس طرح پڑھی جائے کہ ہررکعت میں الحمد کے بعد سات مرتبہ سورہ تو حید پڑھی جائے۔ اور سلام کے بعد ستر ہار

ٱسْتَغُفِرُ اللَّهَ وَ ٱتُوبُ إِلَيْهِ

Fri

حداہے بخشش جا ہتا اوراس کے حضورتو بہکرتا ہوں

حضرت پیغمبراسلام صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم ہے مروی ہے کہ بیٹمل کرنے والا اپنی جگہ ہے نہیں اٹھے گا کہاس کےاوراس کے والدین کے گنا ہ معاف ہو جا کیں گے۔ (زادالمعاد)

(٣) قرآن مجيد كھول كرائي سائے ركھے اور كے جيبا كہ حضرت امام محد باقر عليہ السلام ہے مروى ہے:

اَلسَّلْهُ مَّ إِنِّى اَسُسَلَکُ بِ کِسَسَاهِ کَ الْسُسُنَوَلِ وَمَسَا فِیسُهِ وَ فِیسُهِ اسْسُمُکَ الْاَکُسَ اے معبود! بے ٹک سوال کرنا ہوں ہواسطہ تیری نازل کردہ کتاب کے اور جو پچھ اس عمل ہے اور اس عمل تیرا ہزدگتر نام ہے

وَ ٱسُمَآ أَوُّكَ الْحُسُنٰى وَمَا يُخَافُ وَ يُرُجِّى اَنُ تَجُعَلَذِي مِنُ عُتَقَآ ذِكَ مِنَ النَّادِ

اور تیرے دیگرا چھھا چھھام بھی ہیں اوروہ جو خوف وامید دلاتا ہے سوالی ہوں کہ مجھے ان میں قرار دے جن کوقے نے آگ ہے آزا دکر دیا۔

اس کے بعد جوچاہے دعاکرے۔

(۴) اس کے بعد قرآن مجید سر پر رکھے اور میہ ذکر کرے جبیبا کہ حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام ہے

IRTAIN COM

اَلَـ الْهُدَّمَ بِحَقِي هَلَدُ الْلَقُرُانِ وَ بِحَقِي مَنْ أَرْسَلْتَهُ بِهِ وَ بِحَقِي كُلِّ مُؤْمِنٍ السَلْمُ اللهِ وَ بِحَقِ كُلِّ مُؤْمِنٍ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ مَوْمَيْن كَ اللهِ الله الله اللهُ مَوْمَيْن كَ اللهِ الله اللهُ اللهُ مَوْمَيْن كَ

مَّــدَحُتَـــهُ فِيُـــهِ وَ بِـحَــقِّكَ عَـلَيُهِـمُ فَلْا اَحَـدَ اَعُـرَ فُ بِـحَـقِّكَ مِـنُك

جن کی تو نے اس میں مدح کی ہے اور ان پر تیرے حق کا واسطہ پس کوئی خیس جانتا تیرے حق کو تھھ سے پڑھ کر

سَ رِبَكِ: بِكَ يَآ اَللَّهُ اللَّهُ اللِّهُ اللَّهُ اللَّ

// بِالْحُجَّةِ عَلَيْهِ السَّلامِ

اس کے بعد خدا ہے اپنی حاجت طلب کرے۔

- (۵) حضرت امام حسین علیه السلام کی و مخصوص زیارت براهی جائے جولیالی قدر میں براهی جاتی ہے۔
- (۲) ان راتوں میں عبادت خدا کرتے ہوئے شب بیداری کی جائے کیونکہ بھی قرآن اس ایک لیلۃ القدر میں عمل کرنا ایک ہزار مہینہ کے عمل ہے بہتر و ہرتر ہے۔
 - (4) ان راتول میں ایک ایک سور کعت نماز ریاهی جائے۔
- (۸) ان راتوں میں حصرت امام زین العابدین علیہ السلام والی دعا پڑھی جائے جو آپ ان راتوں میں قیام وقعو داور رکوع وجو دکی حالت میں پڑھا کرتے تھے:

﴿ اللّٰهُمَّ إِنِّي ٓ اَمُسَيْتُ لَكَ عَبُدًا دَاخِرًا لَآ اَمُلِكُ لِنَفُسِي نَفُعًا وَلاَ ضَرًّا وَلاَ اَصُرِف عَنْهَ اللهُمَّ إِنِّي آمُسِيتُ لَكَ عَبُهُمْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ عَلَيْهُمْ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُمْ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُمُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ اللَّهُ عَلَيْهُمُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُمُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّلْمُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ ال

سُوُّاً اَشُهَدُ بِذَالِكَ عَلَى نَفُهِ فَي اَعْتَرِفُ لَكِ بِطَعْفِ قُرَّتِنَى وَقِلَة حِيُلَةِ يَ فَصَلِّ عَلَيْ برانی کواس سے دورکرسکتا ہوں میں اپنے نفس پر خود ہی کوا ہوں اور تیرے سامنے اعتراف کرتا ہوں اپنی بے طاقتی اور بے جارگ

مُسحَمَّدٍ وَّالِ مُحَمَّدٍ وَّانُجِزُ لِى مَا وَعَدُتَّنِى وَ جَمِيعَ الْمُؤُمِنِيْنَ وَ الْمُؤُمِنَاتِ مِنَ الْمَغُفِرَةِ وبه بى كاپس رحت نازل فرما سركار مُحدَّ وآل مُحدَّرٍ اور يورا فرما اپنا وعدة مغفرت اس رات مين مير سه ليها ورثمام موثين و

فِي هلذِهِ اللَّيُسَلَةِ وَ اَتُسِمُ عَلَىَّ مَاۤ اَتَيُتَذِي فَاإِنِّى عَبُدُكَ الْمِسْكِيْنَ الْمُسْتَكِيُنَ الطَّعِيُفُ فَيَ مومنات كے لئے جو تُونے عمومی طور پر كرركھا ہے اور مجھ پر اپنی عطاء ورحت پوری فرما دے كہ بے شک میں تیرا بے كس اجار

الُفَقِيْسُ الْمَهِيْسُ اللَّهُمَّ لا تَسَجُعَلَنِى نَاسِيًا لِّذِكُرِكَ فِيْمَاۤ اَوُلَيْتَنِى وَلا َ لِإحْسَاذِكَ فِيُهُ

اَ عُمطَيُتَ ذِي وَلا اَيسًا مِّنُ إِجَابَةِ كَ وَإِنُ اَبُطَاتُ عَذِي فِي سَرَّاءَ اَوُ ضَرَّاءَ اَوُ شِدَّةٍ اَوُ رَخَاءٍ اورتيرى طرف سے قبول دعا كا اميدوارندرمول اگرچه ميں غفلت شعارمول خوشي وَثم مِين يا تخي وا سودگي مين يا اَ ساني وظي مين

اَوُ عَافِيَةٍ اَوُ بَلاَءٍ اَوْ بُؤُسٍ اَوْ نَعُمَآءَ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآهِ ـ

(Frs)

بامحرومی و نعمت میں بے شک تو دعا کا سننے والا ہے۔

شبهائ قدر كخصوص اعمال كالذكره

اب ہم ذیل میں ان تین راتوں میں ہے ہرایک رات کے مخصوص اعمال کا ذکر کرتے ہیں اوروہ چند

امورين:

انيسوي ماه رمضان كى رات كے مخصوص اعمال

- (١) سوم رتبك: ﴿اللَّهُمَّ الْعَنُ قَتَلَةَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيُنَ﴾ -
 - (٢) ﴿ سُومُرْتُهُ كَبِي ﴿ اَسُتَغُفِورُ اللَّهَ رَبِّنِي وَ اَتُّوبُ اِلَيْهِ ﴾ ــ
- (٣) وہ دعا پڑھے جو ماہ رمضان کے مشتر کہ اعمال میں سے چوتھی قتم کے نمبر ۲ میں ذکر کی جا چکی

إِن ﴿ يَاذَا الَّذِي كَانَ قَبُلَ كُلِّ شَيُّ ثُمَّ خَلَقَ كُلَّ شَيٍّ ﴾ فراجع-

(٣) نیز ان راتوں میں وہ دعارا ہے جوحفرت امام موی کاظم علیہ السلام ہے منقول ہے:

﴿ اَلَكُهُمَّ اجْعَلُ فِيهُمَا تَقُضِي وَ تُقَدِّرُ مِنَ الْاحْرِ الْمَحْتُومُ وَ فَهُمَا تَغُرُقُ مِنَ الْاَمْرِ الْحَكِيمِمِ الْحَكِيمِ الْحَكِيمِ الْحَكِيمِ الْحَكِيمِ الْحَكِيمِ الْحَكِيمِ الْحَكِيمِ الْحَكِيمِ الْحَكِيمِ اللَّهُ مُورَيْنَ مِنْ الْآمُورِينَ مِنْ الْآمُورِينَ مِنْ اللَّهُ مُورَيْنَ مَا وَرَبُولُ اورَبُولُ اورَبُولُ اللَّهُ لَرَا اور جوبي يُرحَمَت حدو بَرْ و

فِي لَيُلَةِ الْقَدُرِ وَ فِي الْقَضَآءِ الَّذِي لا يُرَدُّ وَلا يُبَدَّلُ اَنْ تَكُتُنِنِي مِنْ حُجَّاجٍ بَيُتِكَ الْحَرَادِ مَقَ فَل مَالِ لِهِ فَهَا كَانِهِ مِنْ لَكُونُ لا يُرَدُّ وَلا يُبَدِّلُ اَنْ تَكُتُنِنِي مِنْ حُجَّاجٍ بَيُتِك

مقرر فرمائے اورایے جو فیلے کرے جن میں کوئی ردو بدل نہیں جو پاتا ان میں جھے اپنے محترم گرکعبہ کے عاجبوں میں لکھ دے

الْـ مَبُرُورِ حَبُّهُـمُ الْمَشُكُورِ سَعُيهُمُ الْمَغُفُورِ ذُنُوبُهُمُ الْمُكَفَّرِ عَنُهُمُ سَيِّئَاتُهُمُ وَاجْعَلُ كدجن كاحجُ مَقِول جن كى كوشش ببنديده جن كَيَّناه بِخش ديد كُنَاورجن كى برائيال منائى جاحكى مول اورايبا كركدجن

فِيُسَمَا تَقُضِى وَ تُقَدِّرُ أَنُ تُطِيلً عُمُوى وَ تُوسِعَ عَلَى فِي دِرُقِي وَ تَفْعَلَ بِي كَذَا وَ كَذَهِ جِيرُول مِن وَ نَهِ بِهِ وَكِثَادِ كَيْ إِن مِن مِن مَعْرِ مِن اضافه اور مير حدزق مِن فراخي قرارد حاور ميري بيدعاجتين برلا-

(كذاوكذا كى بجائے اپنی حاجات كامام لے)۔

اکیسویں ماہ رمضان کی رات کے مخصوص اعمال

بدرات فضیلت میں انیسویں سے بڑھ کر ہے اور بہت ی روایات سے مستفا وہوتا ہے کہ لیلۃ القدر

- (۱) خدا تو فیق دینق دیائے جوش کبیر پڑھی جائے اوراس رات شب بیدا ری کی تا کید زیا دہ ہے اور وہ دعا مفاتیج البخان وغیرہ کتابوں میں مذکورہے۔
 - (٢) بيد دعايرهي جائے جوحضرت رسول خداصلي الله عليه وآله وسلم عمروي ب:

اَشْهَدُ اَنُ لَا إِلْسَهَ إِلَّا اللُّمَّ وَحُدَهُ لاَ شَرِيُكَ لَهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبُدُهُ وَ رَسُولُهُ ﴿

میں گواہی دیتا ہوں اللہ کے سواکوئی معبود نہیں وہ واحد لاشریک ہے اور میں گواہی دیتا ہوں کے حضرت محماس کے عبد خاص اور اس کے رسول

وَ اَشُهَدُ اَنَّ اللَّهَ مَتَّ وَالنَّارَ حَقٌّ وَ اَنَّ السَّاعَةَ الِّيَةُ لاَّ رَيْبَ فِيهُا وَ اَنَّ اللَّهَ يَبُعَثُ مَنُ

ہیں اور میں گواہی دیتا ہوں کہ جنت و دوز خرحق ہیں اور قیامت یقیناً آئے والی ہے اس میں کوئی شک ٹیک میں ہے اور بے شک الله قبر والوں

فِي الْقُبُورِ وَ اَشُهَدُ اَنَّ الرَّبَ رَبِّي لا شَرِيُكَ لَهُ وَلا وَلَدَ لَهُ وَلا وَالِدَ لَهُ وَ اشْهَدُ آنَّهُ

کونندہ کرے گا۔اور میں گوائی دینا ہوں کر بیر پرورد کار ہے اس کا کوئی شرک ایس سے اس کی شرک اولاد ہے اور شرک فی

الْفَعَّالُ لِمَا يُرِيدُ وَ الْقَادِرُ عَلَى كُلِّ شَيْءِ وَالصَّانِعُ لِمَا يُرِيدُ (كَتَابِ الدعا)

ماں باپ اور میں گواہی دیتا ہوں کہ وہ جو چاہتا ہے کرگز رتا ہے اوروہ ہر چیز پر قا درہے اور جو چاہتا ہے وہ کرتا ہے۔

(۳) و دوعاریاهی جائے جو حضرت امام جعفر صادق الطفی سے مروی ہے کہ ماہ رمضان کے آخری عشر ہیں ہررات ریاهی جائے:

يَا مُولِجَ اللَّيُلِ فِي النَّهَارِ وَ مُولِجَ النَّهَارِ فِي اللَّيُلِ وَ مُخْرِجَ الْحَيِّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ مُخُرِجَ

ا بے رات کو دن میں داخل کرنے والے اور دن کورات میں داخل کرنے والے اے زندہ کومر دہ میں سے تکالئے والے اور مردہ کو زندہ میں

الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ يَا رَازِقَ مَنُ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ يَّآ اللهُ يَا رَحُمْنُ يَّآ اللهُ يَا رَحِيهُم يَآ اللهُ

ے لکا لئے والے اے جے جاہے بغیر حماب کے رزق وینے والے اے اللہ اے رحمان اے اللہ اے رحیم اے اللہ اے اللہ اے اللہ

يَا آللُهُ يَا آللُهُ لَكَ الْاَسُمَاءُ الْحُسُنِي وَالْاَمُثَالُ الْعُلْيَا وَ الْكِبُرِيَاءُ وَ الْالْآءُ آسُئَلُكَ

تیرے بی لیے ہیں اچھے اچھے نام بلند ترین نمونے اور تیرے لیے ہیں بڑائیل اور مہر نیال سوالی ہوں تیرا کہ رحمت نازل فرما

تُسَصَلِی عَلی مُسحَمَّدٍ وَّالِ مُسحَمَّدٍ وَّانُ تَجُعَلَ السُمِی فِی هٰذِهِ اللَّيُلَةِ فِی السُّعَدَآءِ مراد مُرَّدَ آل مُرَّدُ آل مُرَّدُ السُمِی فِی هٰذِهِ اللَّيُلَةِ فِی السُّعَدَآءِ وَ رُوُحِی مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحسَانِی فِی علییسُن وَ اِسَآئِتی مَعُفُورَةً وَّانُ تَهَبَ لِی وَ رُوُحِی مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحسَانِی فِی عِلییسُن وَ اِسَآئِتی مَعُفُورَةً وَّانُ تَهَبَ لِی عَلین بِهِ پَهَ وَسِی بِهُ فَاوَدَةً وَ اِحْسَانِی فِی عَلییسُن وَ اِسَآئِتی مَعُفُورَةً وَّانُ تَهَبَ لِی عَلین بِهِ پَهَ وَسِی بِهِ فَالُهِی وَ اِیُمَا فَا یُذُهِبُ الشَّکَ عَنِی وَ اُسَاآئِتی مِنْ عَلَی اِسَاء وه ایمان دے کہ بوٹل کو این بہا اور ایس ایس منا ایس بر جو صوت نے جھے دیا ہے اور ایس ویا میں بھرین زندگی دے آخرے میں فِی اللَّذُنِیا حَسَنَةً وَ فِی الْسُانِ الْحَرِیْقِ وَ ارْزُقْنِی فِیهَا فَی اللَّانِ الْحَرِیْقِ وَ ارْزُقْنِی فِیهَا فِی اللَّانِ الْحَرِیْقِ وَ ارْزُقْنِی فِیهَا فِی اللَّانِ الْحَرِیْقِ وَ الْسَانِ الْحَرِیْقِ وَ ارْزُقْنِی فِیهَا فَی اللَّانِ الْحَرِیْقِ وَ اللَّانِ الْحَرِیْقِ وَ الْسَانِی الْحَدِیْقِ وَ الْسَانِی فِی اللَّانِ الْحَرِیْقِ وَ الْسَانِ اللَّانِ الْحَرِیْقِ وَ الْسَانِ الْحَدِیْقِ وَ الْسَانِ اللَّانِ الْحَرِیْقِ وَ الْسَانِ اللَّانِ الْحَدِیْقِ وَ الْسَانِ اللَّانِ الْحَدِیْقِ وَ الْسَانِ اللَّانِ الْحَدِیْقِ وَ اللَّانِ اللَّانِ الْکُورِیْقِ وَ اللَّانِ اللَّانِ اللَّانِ اللَّانِ الْحَدِیْقِ وَ اللَّانِ الْحَدَّى وَ الْسَانِ وَلَا اللَّانِ الْحَدِیْقِ وَ الْسَانِ وَیْ اللَّانِ اللَّانِ اللَّانِ اللَّانِ اللَّانِ الْحَدِیْقِ وَ الْسَانِ وَلَا اللَّانِ اللَّالَا اللَّانِ اللَّانِ اللَّالِيَّ اللَّالَالَا اللَّانِ اللَّالِي الللَّالِيَّالَا ا

مُحَمِّدًا قَالَ مُحَمِّدٍ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ اللَّهُ لَأَهُ

محماورة ل محمر كوسلام موة مخضرت مراوران كي آل ير .

(۷) و ہ دعا پڑھی جائے جو حضرت امام جعفر صاوق علیہ السلام ماہ رمضان کے آخری عشرے میں ہر رات پڑھتے تھے:

اَعُودُ بِسَجَلَالِ وَجُهِكَ الْكرِيسَمِ اَنُ يَّنُقَضِى عَنِّى شَهْرُ رَمَضَانَ اَوُ يَطُلُعَ الْفَجُرُ تيرى ذات كريم كى بناه ليمًا بول اس سے كر جب ميرا ماه رمضان افتيام بذير بو يا جب ميرى اس رات كى فجر طلوع كرے

مِنْ لَيُلَتِي هَٰذِهِ وَلَكَ قِبَلِي ذَنُبٌ أَوْ تَبِعَةٌ تُعَذِّبُنِي عَلَيْهِ.

تو میرے ذمے کوئی گنا ھااس پر گرفت ہاتی ہوجس پرتو مجھے عذاب دے۔

نيزيدد عاراه عجوآ نجاب عيم منقول ع:

**** وَّلاٰ تُـوَاٰخِذُنَا بِاِسُرَ افِنَا عَلَى ٱنْفُسِنَا وَاجْعَلْنَا مِنَ الْمَرُحُوْمِيْنَ وَلاٰتَجْعَلْنَا مِنَ الْمَحُرُومِيْنَ میں ہم نے اپنے نفس پر جوزیا دتی کی ا**ں** پرہمیں نہ پکڑ اور ہمیں ان لوگوں میں رکھ جن پر رقم ہو چکا اور ہمیں نا کام **لوگوں میں قرار** نہ دے۔ ۵) و دوعا پڑھی جائے جو حضرت امام جعفر صادق علیدالسلام ماہ رمضان کے آخری عشر ہ کی ہر رات پڑھا اَللُّهُمَّ إِنَّكَ قُلُتَ فِي كِتَابِكَ الْمُنْزَلِ شَهُرُ رَمَضَانَ الَّذِي ٱنُولَ فِيْهِ الْقُرُانُ هُدًيٌّ ا ہے معبو دانو نے اپنی نا زل کرد ہ کتاب میں فرمایا ہے کہ رمضان و ہمبینہ ہے جس میں قر آن کریم نا زل کیا گیا جولوگوں کیلئے ہدا ہے لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَى وَ الْقُرُقَانِ فَعَظَّمْتَ حُرُمَةَ شَهُر رَمَضَانَ بِمَآ اَنْزَلْتَ فِيُهِ مِنَ ہے اور اس میں ہدایت کی دلیلیں اور حق و باطل کا امتیا زہے ہیں تو نے ماہ رمضان کو اس بات سے برا تی دی کہ اس میں قرآن کریم کا الْقُرُان وَ خَصَـصُتَهُ بِلَيْلَةِ الْقَدُر وَ جَعَلْتَهَا خَيْرًا مِّنُ ٱلْفِ شَهُر اَللَّهُمَّ وَهلاِمْ اَيَّامُ شَهُر نزول فر مایا اورا سے شب قد رکیلئے خاص کیا اوراس رات کو ہزار مہینوں سے بہتر قر ار دیا اے معبو داییہ ماہ رمضان المبارک کے دن ہیں رَمَضَانَ قَدِ انْقَضَتُ وَ لَيَالِلِهِ قَدُ تَصَرُّمَتُ وَقَدُ صِرْتُ يَا اللهِ لِمِنْهُ إِلَى مَا أَنْتَ أَعُلُمُ بِهِ کہ جوگز رہے جا رہے ہیں او راس کی راتیں ہیں جو بیت رہی ہیں اے میر سے اللہ ان گز رہے شب و روز میں میری جو حالت رہی تو مِنِّيُ وَ أَحُطَى لِعَدَدِهِ مِنَ الْخَلُق آجُمَعِيْنَ فَاسْتَلُكَ بِمَا سَئَلَكَ بِهِ مَلَآئِكَةُ ا ہے مجھ سے زیادہ جانتا ہے اور تمام لوگوں ہے ہوڑھ کرتو اس کا حماب رکھتا ہے پس سوال کرتا ہوں جس کے ذریعے تجھ سے تیرے الْـمُـقَـرَّبُـوُنَ وَ ٱنْبِيَـآؤُكَ الْـمُرُسَلُونَ وَ عِبَادُكَ الصَّالِحُونَ اَنُ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ مقرب فرشح سوال كرتے ہيں اور تيرے بيسج ہوئے انبياء اور تيرے نيك بندے سوال كرتے ہيں كدرهت ما زل فر ماسر كا رفحہ و آل مُحَمَّدٍ وَّانُ تَـفُكَّ رَقَيَتِي مِنَ النَّارِ وَ تُـدُخِلَنِي الْجَنَّةَ بِرَحُمَةِكَ وَانُ تَتَفَطَّلَ عَلَ محمر پر اور پہ کر مجھے جہنم کی آ گ ہے رہائی عطا کراور مجھے جنت میں داخل فرماا چی رحمت سے نیز پیر کہ مجھ پر اپنی درگز راو را حمان ہے بِعَفُوكَ وَ كَرَمِكَ وَ تَتَقَبَّلَ تَقَرُّبِيُ وَ تَسُتَجِيْبَ دُعَآئِيُ وَ تَمُنَّ عَلَيَّ بِالْاَمُنِ يَوُ نعل کرمیر ہے قرب حاصل کرنے کو قبول فرمااو رمیری دعا کو قبولیت بخش او رمجھ پر احسان کرتے ہوئے اس خوف کے دن ہر دہشت الُخَوُفِ مِنُ كُلِّ هَوُلٍ اَعُدَدُتُسَهُ لِيَوُمِ الْقِيَسامَةِ اللهِىُ وَ اَعُوُذُ بِوَجُهِكَ الْكَرِيْمِ وَ

ے محفوظ رکھ جوتو نے روز قیا مت کے لیے تیار کی ہوئی ہے اے اللہ! میں پناہ لیتا ہوں تیری ذات کریم اور تیرے ہن رگ تر جلال کی بِجَلاَلِكَ الْعَظِيْمِ أَنْ يَّنُقَضِيَ آيَّامُ شَهُر رَمَضَانٍ وَ لَيَالِيُهِ وَلَكَ قِبَلِي تَبَعَةُ أَوُ ذَنُبُ اس سے کہ جب ماہ رمضان المبارک کے دن اور راتیں گز رجا کیں تو میرے ذمے کوئی جوابدی ہو یا کوئی گناہ ہوجس برتو میری تُـوَّاحِـذُنِـىُ بِـهِ اَوُ خَـطِيْــَئَةٌ تُـرِيُـدُ اَنُ تَقُتَصَّهَا مِنِّىُ لَمُ تَغُفِرُهَا لِيُ سَيِّدِيُ سَيِّدِيُ سَيِّدِيُ گرفت کرے یا کوئی لغزش ہوجس کی سزا تو مجھے وینا جا ہتا ہواوراس کی معافی نہ دی ہومیرے مالک میرے آتا میرے سردار میں اَسُسَلُكَ يَا لَا إِلْهَ إِلَّا ٱنْتَ إِذُ لاَ إِلْهَ إِلَّا ٱنْتَ إِنْ كُنْتَ رَضِيْتَ عَيْنَى فِي طَذَا الشَّهُ سوال کرنا ہوں اے کہ خیل کوئی معبو د گرتو کیونکہ خیل کوئی معبو د گرتو ہی ہے کہ اگر تو اس مہینے میں مجھ سے راضی ہوگیا ہے تو میر ہے فَازْدَهُ عَنِّي رضًا وَّإِنْ لَّمُ تَكُنُ رَّضِيتٌ عَنِّي فَمِنَ الْأِنَ فَارُضَ عَنِّي يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ لیے اپنی خوشنودی میں اضافہ فرمااور اگر تو مجھ سے راضی خیل ہواتو اب اس گھڑی مجھ سے راضی ہوجا اے سب سے زیا دہ رحم کرنے يَا اللهُ يُا آخَدُ يَا صَمَدُ يَا مَنُ لَمُ يَلِدُ وَلَمُ يُولَدُ وَلَمُ يَكُنُ لَهُ كُفُوا آحَدٌ _ والے اے اللہ اے بکتا اسم بے نیاز اسے وہ جس نے نہ جنا ہے اور نہ جنا گیا اور نہ کوئی اس کا جمسر ہے۔ تخفی نہ رہے کہانیسویں ماہ رمضان حضرت امیر علیہالسلام کی شب ضربت بھی ہے جبکہا کیسویں آپ کی شہادت عظمیٰ کا دن ہے جس میں محبان اہل ہیت ہے عم نازہ ہوتے ہیںلہٰذا اس دن میں حضرت امیر علیہ السلام کی شہا دے کے طور پرمجلس عزا کا انعقاد کرنا چاہئے اور جس قد رہو سکے جزن وملال کا ظہار کرنا چاہئے ۔ تيكوي شب كخصوص اعمال ان مشتر کہا عمال کےعلاوہ جولیا کی قدر کےمشتر کہا عمال کے خمن میں بیان کئے گئے اور آخری عشرہ کی

ان مشتر کدا عمال کےعلاوہ جولیا کی قدر کے مشتر کدا عمال کے عمن میں بیان کئے کئے اور آخری عشرہ کی ان دعا وُں کےعلاوہ جواکیسویں کی رات کے اعمال میں بیان کی گئی ہیں۔۲۳س کی رات کے خاص اعمال میہ ہیں: (۱) مید دعاریا ھی جائے جواس رات کی مخصوص دعاہے:

********************* يَا رَبَّ لَيُلَةَ الْقَدُرِ وَ جَاعِلَهَا خَيُرًا مِّنُ ٱلْفِ شَهْرِ وَ رَبَّ اللَّيُلِ وَ النَّهَارِ وَ الْجِبَالِ وَ اے شب قدر کے پروردگا راورای کو ہزارمہینوں سے بہتر قرا ردیج والے اے رات اور دن کے رب اے پہاڑوں اور دریا وَل الْبِحَارِ وَ الظُّلَمِ وَ الْآنُوَارِ وَ الْآرُضِ وَ السَّمَآءِ يَا بَارِئُ يَا مُصَوِّرُ يَا حَنَّانُ يَآ مَنَّانُ يَا اَللَّهُ نا ریکیوں اور روشنیوں اور زین اور آسمان کے رب اے پیدا کرنے والے اےصورت گرا ہے محبت والے اےاحسان والے اللہ اللہ يَا رَحُمْنُ يَا اَللَّهُ يَا قَيُّوُمُ يَا اَللَّهُ يَا بَدِينُعُ يَا اَللَّهُ يَا اَللَّهُ يَا اَللَّهُ لَكَ الْاَسُمَآءُ الْحُسُنَى ا برحمان ا بالله المعتمر الله المعالم الله المعالم المعالم الله الله الله الله المعالم المعالم المعام المعا الْاَمُشَالُ الْعُلْيَا وَ الْكِبُرِيَآءُ وَ الْأَلَاءُ اَسْئَلُكَ اَنُ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّالِ مُحَمَّدٍ وَاَرْ مموتے تیرے لیے ہیں بڑا ئیاں او رمہر بانیاں چھ سے سوال کرتا ہوں کہ رحمت ما زل فرما سر کا رمحہ وآل محمر میراو رہیا کہ آج کی رات میں تَجُعَلَ اسْمِيُ فِي هَٰذِهِ اللَّيُلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِي مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِي فِي عِلِّييُنَ میرانا م نیکوکاروں میں ثا رکرمیری روح کوشہیدوں کے ساتھ قرار دے میری اطاعت کومقام علیین میں پہنچا اورمیری براقی کومعاف شدہ وَ إِسَآ نَتِى مَغُفُورَةً ۚ وَأَنَّ لَهَ ﴾ لِي يَقِيلُه كُلَاهِرُ ﴿ قَلْلِي وَ إِلْمَانَا يُكُوهِبُ الشَّكَ عَنِي وَ قرار دےا وربیر کہ مجھےو ہیفتین دے جومیرے دل میں بسار ہےاو رو ہائمان دے جوٹنگ کومجھے دورکر دےاور مجھے راضی بٹااس پر تُـرُضِيَـنِـيُ بـمَا قَسَمُتَ لِيُ وَاتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْأَخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّار جوصہ تو نے مجھے دیا او رہمیں دنیا میں بہترین زندگی وے آخرت میں خوش ترین اجرعطا کراورہمیں جلانے والی آگ کےعذاب سے بچا الْحَرِيْقِ وَارُزُقْنِيُ فِيُهَا ذِكُرَكَ وَ شُكُرَكَ وَالرَّغُبَةَ الدُيكَ وَالْإِنَابَةَ وَالتَّوْبَةَ وَالتَّوْفِيُقَ اوراس ما ه میں مجھے ہمت دے کہ تھے یا وکروں تیراشکر بجالاؤں تیری طرف توجہ رکھوں تیری طرف پلٹوں اورتو بہ کروں اورتو فیق دے وَفَقُتَ لَهُ مُحَمَّدًا وَّالَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلاَّمِ مجھاں عمل کی جس کی تو فیق دی تونے محمرو آل محمر کو کدان سب پر سلام ہو۔ اس رات بيتين سورتيس پرهني حيامكيس: (١) سوره عنكبوت _ (٢) سورهُ ردم _اور (٣) سورهُ دخان جن

(۲) ای رات بیدین سورٹیل پڑھٹی چاہلیں: (۱) سورہ کھلبوت ۔ (۲) سورہ روم ۔اور (۳) سورہ دخان جن کے پڑھنے کابڑا تواب دارد ہے۔ (سو) ایس را مدہ قدامہ قعد دادن کو عربی رغوض میں دالہ ہو میں بندا کی کیرا کی روم کارمی میں ایجے علیم السلام ر

﴾ (۳) اس رات قیام وقعو داور رکوع و ہجو دغر ضیکہ ہر حالت میں خدا کی کبریائی اور سر کارمحد ًو آل محد علیہم السلام پر ﴾ درودوسلام کے بعدید دعایڑھی جائے: اَللّٰهُمَّ كُنُ لِوَلِيٌكَ الْحُجَّةِ بُنِ الْحَسَنِ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَعَلَى آبَائِهِ فِي هَذِهِ السَّاعَةِ وَ فَا اللهُمَّ كُنُ لِوَلِيٌكَ الْحُجَّةِ بُنِ الْحَسَنِ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَعَلَى آبَائِهِ فِي هَذِهِ السَّاعَةِ وَ فَا اللهُ عَنَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ

دےاورمدتوں اس پر برقرار دکھے۔

جبیا کہ صالحین ہے مروی ہے۔ (کتاب الدعاوالزمارة)

(۴) نیز بیدعاریٔ هی جائے:

اَللْهُ مَّ امُدُدُ لِیُ فِی عُمُرِی وَ اَوُسِعُ لِیُ فِی دِرْقِی وَ اَصِحَ لِیُ جِسُمِی وَ بَلِّغُنِی آمَلِی وَ اےاللہ! میری عمر میں اضافہ کردے میرے رزق میں وسعت دے میرے بدن کو تندرست رکھاور میری آرزو پوری فرما اوراگر میں

إِنْ كُنُتُ مِنَ الْاَشْقِيمَ إِ فَاصْحِنِي مِنَ الْاَشْقِيمَ عِلَى الْكُلْنِي لِمَا السُّعَدَآءِ فَإنَّكَ قُلُتَ فِي

بدبختوں میں ہے ہوں تو میرانا م بدبختوں میں ہے کاٹ دےاور میرانا م خوش بختوں میں لکھ دے کیونکہ تونے اپنی اس کتاب میں فرمایا

كِتَابِكَ الْمُنْزَلِ عَلَى نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ الِهِ يَمُحُوا لِلَّهُ مَا يَشَآءُ وَ يُثْبِكُمُ

ہے جو تُو نے اپنے نبی مرسل پریا زل کی کہ تیری رحمت ہوان پر اوران کی آل پر یعنی خدا جوچا ہے مٹا دیتا ہےاو رجوچا ہے لکھ دیتا ہےاو ر میں میں میں

عِنُدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ.

ای کے پاس ہام الکتاب۔

۵) بیددعاریاهی جائے جو حضرت امام جعفر صادق علیه السلام سے مروی ہے:

اَللَّهُمَّ اجْعَلُ فِيْمَا تَقُضِى وَ تُقَدِّرُ مِنَ الْاَمُوِ الْمَحْتُومِ وَ فِيْمَا تَفُوقٌ مِنَ الْاَمُوِ الْحَكِيمِ فِي الصعبود! ايما كركرة جن يقيق معاملول كى بست وكشادفرما تا بهاورجن پرحكمت كامول يمن قو شب قدرين انتياز قائم

لَيُسَلَةِ الْسَقَدُرِ مِنَ الْقَضَآءِ الَّذِي لا يُورَدُّ وَلا يُبَدَّلُ اَنُ تَكْتُبَنِي مِنْ حُجَّاجٍ بَيُتِكَ الْحَوَامِ فِي لَيُّ كرتا ہے جواس طرح كے نصلے بيں جن بين كونى تغيرا ورتبر بلي تبين مونى ان كے عمن بين ميرانا م ان عاجوں بين لكھ دے عَامِیُ هٰذَا الْمَبُرُورِ حَجُّهُمُ الْمَشُكُورِ سَعُیُهُمُ الْمَغُفُورِ ذُنُوبُهُمُ الْمُكَفَّرِ عَنُهُمُ سَیِّئاتُهُمُ جواس سال عج کریں گے کہ جن کا عج مقبول جن کی کوشش پندید و جن کے گنا و معاف شدہ جن کی برائیاں منادی گئی ہیں

وَاجْعَلُ فِيْمَا تَقُضِى وَ تُقَدِّرُ أَنُ تُطِيلً عُمْرِى وَ تُوسِّعَ لِي فِي دِرْقِي.

اورجن امور کی تو نے بہت وکشا د کی ہے ان میں میر می عمر طویل اور میر ارزق فرا واں کر دے۔

- (۲) نیز حضرت امام جعفر صادق علیه السلام ہے اس رات میں ایک ہزار مرتبہ سور ہُ انا انزلناہ کے پڑھنے کی بڑی فضیلت وارد ہوئی ہے۔
 - (٤) واردے کہ جولیلۃ القدر کودرک کریدہ خداہے عافیت طلب کرے۔
- (۸) نیز اس رات دعائے مکارم الاخلاق اور دعائے تو بدوغیرہ مقدس ادعیہ جات کے خشوع وخضوع کے ساتھ پڑھنے کی کوشش کرے۔ ساتھ پڑھنے کی کوشش کرے۔

ماہ رمضان کے آخری عشرہ کی دعا تیں

- (۱) آ فرى عشره ميں الرائم بادعا يوسى باغ جو طرت الم جعفر صادقاعا يا الحام پڑھتے تھے: ﴿اَلَـلْهُ مَّ إِذَّكَ قُلُتَ فِي كِتَابِكَ الْمُنذَوَلِ شَهُورُ رَمَضَانَ الَّذِي اُنُوِلَ .. ﴾ - (نوث: - بيدعا اكسويں ماہ رمضان كى رات مخصوص اعمال كے ذیل ميں نمبر ۵ازصفی نمبر ۱۸۸۷ - ؟ - - برملاحظ كجيئے) -
- ﴿ (٢) ہر رات بید دعا پڑھی جائے جوانہ تی حضرت ہے مروی ہے:﴿ اَنْحُسُونُ فَی بِسِجَالالِ وَ جُبِهِ کَ ﴿ الْکَوِیُمِ ﴾ (نوٹ: - بید عالبھی اکیسویں ماہ رمضان کی رات کے خصوص اعمال کے ذیل میں نمبر ۱۲ ازصفی نمبر ﴾ ۱۸۱۔ ؟ - - پر ملاحظہ کیجئے) -
- (٣) ہررات بیدوعاریوهی جائے جوانہی حضرت ہے منقول ہے:﴿ اَللَّهُمَّ اَدِّعَنَّا حَقَّ مَا مَضَى﴾ (نوٹ: میدوعا بھی اکیسویں ماہ رمضان کی رات کے خصوص اعمال کے ذیل میں نمبر ۴ از صفح نمبر ۲۸۲۔ ؟۔۔پر ملاحظ کیجیئے)۔
 - (۴) ہررات کی مخصوص دعا:۔ ہررات کی مخصوص دعا کیں بیر ہیں:

﴿ الكيسويس شب كى دعا ﴾ يَا مُولِجَ اللَّيُلِ فِى النَّهَارِ وَ مُولِجَ النَّهَارِ فِى اللَّيُلِ وَ الكيلِ وَ الكيلِ وَ اللهُ اللَّهُ اللَّ

مُخْرِجَ الْحَيِّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ مُخُرِجَ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ يَا رَازِقَ مَنُ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ يَآ

زنده كومر ده ميں سے لكالتے والے اور مرده كوزنده ميں سے لكالتے والے اسے جے جاہے بغير حماب كے رزق دينے والے اسے اللہ ا

اَللَّهُ يَمَا رَحُمْنُ يَّآ اَللَّهُ يَا رَحِيُمُ يَآ اَللَّهُ يَآ اَللَّهُ يَآ اَللَّهُ لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسُنَى وَالْاَمُثَالُ الْعُلْيَا ﴿

رحمان اے اللہ اے رحیم اے اللہ اے اللہ اے اللہ تیرے ہی لیے ہیں اجھے اجھے نام بلند ترین نمونے اور تیرے لیے ہیں بڑائیاں اور

وَ الْكِبُوِيَآءُ وَ الْاٰلَآءُ اَسُئَلُكَ اَنُ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَالِ مُحَمَّدٍ وَانُ تَجُعَلَ اسْمِي فِيُ

مهر بانیاں سوالی ہوں تیرا کے رحمت ما زل فرما سر کا رفحہ و آل محمد پر اور مید کد آج کی رات میں میرا مام نیکوکاروں میں شار کرمیری روح کو

هٰذِهِ اللَّيٰلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوحِيُ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ إِحْسَانِي فِي عِلِّيِّيْنَ وَ اِسَآئَتِي مَغُفُورَةً

شہیدوں کے ساتھ قر اردےمیری اطاعت کو مقام علیین پر پہنچا دے میری بدی کومعاف شد ہ قرار دے اور یہ کہ مجھے وہ یقین عطا کر جو

وَّانُ تَهَبَ لِدَى يَقِيْنًا لَبُلِيدُ لِهِ قَلْبِي وَإِيْلَمَانًا يُلْهِدُ اللَّمَكَ عَنِي تُرُضِيَنِي بِمَا قَسَمُتَ

میرے دل میں بساموو ہائیان دے کہ جو شک کومجھ سے دو رکر دے اور مجھے راضی بنااس پر جو حصہ تو نے مجھے دیا ہے اور ہمیں دنیا میں

لِيُ وَ اتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْأَخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ الْحَرِيْقِ وَارُزُقُنِي فِيهَا

بہترین زندگی دے آخرت میں خوش ترین اجرعطا کراو رہمیں جلانے والی آگ کی گئی سے بچااوراس مبینے میں مجھے ہمت دے کرتیرا ذکر

ذِكُرَكَ وَ شُكُرَكَ وَ الرَّغُبَةَ اِلَيُكَ وَ الْإِنَابَةَ وَ التَّوُفِيُقَ لِمَا وَقَقُتَ لَهُ مُحَمَّدًا وَّ الَ مُحَيِّكِ

کروں تیراشکر کروں تیری طرف توجہ رکھوں اور تیرے حضورتو بہکروں اور مجھے تو فیق دے اس ممل کی جس کی تو فیق دی تو نے محماً و راآ ل

عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمُ السَّلاَمُ۔

محر کوسلام ہوآ مخضرت پراو ران کی آ ل پر۔

﴿بِائْيِسُويِسُ شَبِ كَى دَعَا ﴾ يَا سَالِخَ النَّهَارَ مِنَ اللَّيْلِ فَإِذَا نَحُنُ مُظُلِمُونَ وَ مُجُرِى

اےوہ جودن کورات پرے تھینج لے جاتا ہےتو ہم تا ریکی میں گھرجاتے ہیں اور تواپیخا

الشَّمُسِ لِمُسْتَقَرِّهَا بِتَقُدِيُرِكَ يَا عَزِيُزُ يَا عَلِيْمُ وَ مُقَدِّرَ الْقَمَرِ مَنَازِلَ حَتَّى عَاثَةٍ

ا ندا زے سے سورج کواس کے راستے پر چلا دیتا ہے اے زہر دست اے دانا تونے جاند کی منزلین تھیرائیں کہ وہ تھنے تھی تھی کورکی پر افی

**** كَالُعُرُجُوُن الْقَدِيْمِ يَا نُوُرَ كُلِّ نُورٍ وَ مُنْتَهٰى كُلِّ رَغْبَةٍ وَّ وَلِيَّ كُلِّ نِعُمَةٍ يَّآ اَللَّهُ يَا رَحُمْنُ سوتھی شاخ جیسارہ جاتا ہے ہر روشنی کی روشنی اے ہرجا ہت کے مرکز ومحور اور ہر نعمت کے مالک اے اللہ اے رحمان اے اللہ اے يَآ اَللَّهُ يَا قُدُّوُسُ يَآ اَحَدُ يَا وَاحِدُ يَا فَرُدُ يَاۤ اَللَّهُ يَاۤ اَللَّهُ يَاۤ اَللَّهُ لَكَ الْاَسُمَآءُ الْحُسُنٰي وَ یا کیزہ اے بکتا اے نگاندا ہے تنہا اے اللہ اے اللہ اے اللہ تیرے ہی لیے ہیں اچھے اچھے م بلند مرین نمونے اور تیرے ہی لیے ہیں الْاَمُشَالُ الْعُلْيَا وَ الْكِبُرِيَآءُ وَ الْأَلْآءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ اَهُلِ بَيُتِهِ وَ اَنْ یوا ئیاں اور مہر یا نیاں چھے سے سوال کرتا ہوں کہ رحمت نا زل فر ما محمداورا ن کے اٹل بیت پراور مید کر آج کی رات میں میرا نا م نیکوکا روں تَجُعَلَ اسُمِيُ فِي هٰذِهِ اللَّيُلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيُ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِي فِي عِلِّيِّيْنَ میں شارکرمیری روح کوشہیدوں کے ساتھ قرار دیے میری اطاعت کومقام علیین میں پہنچااورمیری برائی کومعاف شدہ قرار دےاور ریہ کہ وَ إِسَآ نَتِى مَعُفُورَةً وَّ أَنُ تَهَبِ لِي يَقِينُنَا تُبَاشِرُ بِهِ قَلْبِي وَ إِيْمَانًا يُذُهِبُ الشَّكُ عَنِّي مجھے وہ یقین عطا کر جومیرے دل میں بسار ہےاو روہ انمان دے جوشک کومجھ سے دو رکردےاو رمجھے راضی بنا اس پر جوھے تو نے مجھے تُسرُضِيَنِيُ بِمَا قَسَمُتُ لِي وَاتِنَا فِي الدُّلْيَا تُحَلِّنَةً وَ فِي أَلَا خِرَةٍ خَلِنَةً وَ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ویااو رہمیں دنیا میں بہترین زندگی دے آخرت میں خوش ترین اجر عطا کراو رہمیں جلانے والی آگ کے عذاب سے بچااورای ماہ میں الْحَرِيْقِ وَ ارُزُقُنِيُ فِيُهَا ذِكُرَكَ وَ شُكُرَكَ وَ الرَّغُبَةَ اِلَيُكَ وَ الْإِنَابَةَ وَ التَّوْفِيُقَ لِمَا وَأَ مجھے ہمت دے کہ تھے یا دکروں تیراشکر بجالاؤں تیری طرف توجہ رکھوں اور تیرے حضورتو بہکروں اور مجھے تو فیق دے اس عمل کی جس کی لَهُ مُحَمَّدً وَ الَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلامُ تو فیق دی تو نے محمد و آل محمد کو کدان سب برسلام ہو۔ ﴿ تَسِسُسُويِ شِبِ كَى دَعَا ﴿ يَا رَبِّ لَيُـلَّةَ الْقَدُرِ وَ جَاعِلَهَا خَيْرًا مِّنُ ٱلْفِ شَهُرِ وَ رَبّ اے شب قدر کے پروردگاراورای کو ہزا رمہیوں سے بہتر قرار دیے والے اے رات

السلَّيُ لِ وَ السَّهَادِ وَ الْحِبَالِ وَ الْبِحَادِ وَ الظُّلَمِ وَ الْآنُوادِ وَ الْآدُضِ وَ السَّمَآءِ يَا بَادِئُ يَا السَّمَآءِ يَا بَادِئُ يَا اللَّهُ يَا وَرَدُن كَرِبا مِ بِيا كُرِ وَ السَّمَآءِ يَا بَادِئُ يَا اللَّهُ وَاللَّهُ عَالَى اللَّهُ وَاللَّهُ عَالَى اللَّهُ وَاللَّهُ عَالَى اللَّهُ عَالَى اللَّهُ عَالَى اللَّهُ عَالَى اللَّهُ عَالَى اللَّهُ عَالَى اللَّهُ عَا اللَّهُ عَا اللَّهُ عَالَى اللَّهُ عَالَاللَّهُ عَالَى اللَّهُ عَالَا اللَّهُ عَالَى اللّهُ عَالَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَا اللّهُ عَلَى اللّهُ عَا اللّهُ عَلَى الل

*********************** لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسُنْيِ وَ الْاَمْشَالُ الْعُلْيَا وَ الْكِبُرِيَآءُ وَ الْالْآءُ اَسْئَلُكَ اَنُ تُصَلِّيَ عَلَيْ تیرے بی لیے ہیں اچھے اچھے م بلندر بن نمونے تیرے لیے ہیں بڑا ئیاں اور مہر پانیاں تھے سے سوال کرتا ہوں کہ رحمت ہا زل فرماسر کا ر مُحَمَّدٍ وَّالَ مُحَمَّدٍ وَّانُ تَجُعَلَ اسْمِيُ فِي هَذِهِ اللَّيُلَةِ فِي الشَّعَدَآءِ وَ رُوجِي مَعَ محرّواً ل محرّ براو ربیرکه آج کی رات میں میرانا م نیکوکا روں میں شار کرمیری روح کوشہیدوں کے ساتھ قرار دے میری اطاعت کو مقام الشُّهَدَآءِ وَ اِحُسَانِيُ فِيُ عِلِّيَيْنَ وَ اِسَآئَتِيُ مَغُفُوْرَةً وَّانُ تَهَبَ لِيُ يَقِيُنًا تُبَاشِرُ به قَلُهِيُ وَ علیین میں پہنچااو رمیری پرائی کومعاف شدہ قرا ردےاور یہ کہ مجھےو ہیقین دے جومیرے دل میں بسارہاورو ہا بمان دے جوشک کو إِيْمَانًا يُّلُهِبُ الشَّكَّ عَنِّيُ وَ تُرُضِيَنِيُ بِمَا قَسَمُتَ لِيُ وَاتِنَا فِي الدُّنُيَا حَسَنَةً وَّفِي مجھے دور کردے او رمجھے راضی بنااس پر جو حصہ تونے مجھے دیا اور ہمیں دنیا میں بہترین زندگی دے آخرت میں خوش ترین اجرعطا کراو ر الْاٰخِـرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ الْحَرِيُقِ وَارُزُقُنِيُ فِيُهَا ذِكُرَكَ وَ شُكُرَكَ وَالرَّغُبَةَ اِلَيْكِي ہمیں جلانے والی آ گ کے عذاب سے بچااو راس ماہ میں مجھے ہمت دے کہ تھے یا دکروں تیراشکر بجالا وُں تیری طرف توجہ رکھوں تیری وَالْإِنَابَةَ وَالتَّوْبَةَ وَالتَّوْفِيُقَ لِمَا وَفَقْتَ لَهُ مُحَمَّدًا وَّالَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِم السَّلام طرف پلٹوں اور تو بہ کروں اور تو فیق دے مجھے اس عمل کی جس کی تو فیق دی تو نے محمد و آل محمد کو کہ ان سب پر سلام ہو۔ ﴿ حِوبِيسويِ شِب كَى دِعا ﴾ يَا فَالِقَ الْإِصْبَاحِ وَ جَاعِلَ اللَّيُلِ سَكَّنًا وَّ الشَّمُسَ ا ہے جبح کی سفیدی کو ظاہر کرنے والے اے رات کوو فت وآ رام بنانے والے اور وَالْقَـمَرَ حُسُبَانًا يَّا عَزِيُزُ يَا عَلِيُمُ يَا ذَا الْمَنِّ وَ الطُّولِ وَالْقُوَّةِ وَ الْحَوُلِ وَالْفَضُل سورج او رچا ند کوروال کرنے والے اے زیر دست اے دانا اے احسان وقعت والے اے قوت وحرکت کے ما لک اے مہر یا فی و عطا وَالْإِنْعَامِ وَالْجَلالِ وَالْإِكْرَامِ يَآ اَللَّهُ يَا رَحُمٰنُ يَاۤ اَللَّهُ يَا فَرُدُ يَا وتُرُ يَآ اَللَّهُ يَا ظَاهِرُ يَا بَاطِئُ يَا حَيُّ لَا إِلٰهَ اِلَّا ٱنْتَ لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنَى وَالْاَمْثَالُ الْعُلْيَا وَالْكِبُرِيَآءُ وَ الْالْآلِ کوئی معبو دگرتو ہے تیرے لیے ہیں اچھے چھے ما مبند ترین نمونے اور بڑا ئیاں اور مہر بانیاں سوال کرنا ہوں جھے سے کر رحمت ما زل فر ما ٱسُــئَـلُكَ أَنُ تُـصَـلِّـيَ عَـلْـي مُـحَـمَّدٍ وَّالِ مُحَمَّدٍ وَّانُ تَجُعَلَ اسُمِيُ فِي هٰذِهِ اللَّيُلَةِ فِي سر کا رٹھ و آل محمد پراور ہے کہ آج کی رات میں میرانا م نیکو کاروں کے زمرے میں شار کرمیری روح کوشہیدوں کے ساتھ قرار دے میری

السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيُ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِيُ فِيُ عِلِّيْيُنَ وَ اِسَآئَةِيُ مَغُفُوْرَةً وَّانُ تَهَبَ لِيُ ا طاعت کومقام علمین میں پہنچا اورمیری بدی کومعاف شدہ قر اردے اور بیا کہ ججھے و دیقین دے جومیرے دل میں بسا رہے اورو وا ہما ن يَقِيُنَا تُبَاشِرُ بِهِ قَلُبِيُ وَ إِيْمَانًا يَّذُهَبُ بِالشَّكِّ عَنِيُ وَ رَضَّيْ ِمَا قَسَمُتَ لِيُ وَ اتِنَا فِي وے جو شک کو مجھ سے دور کردے اور مجھے راضی بنا اس پر جو حصہ تونے مجھے دیا اور ہمیں دنیا میں خوش ترین زندگی دے اور آخرت میں اللُّهُ نُيَا حَسَنَةً وَّفِي ٱلأَخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ الْحَرِيْقِ وَ ارُزُقْنِي فِيُهَا ذِكُرَكَ بہترین اجرعطا کرا ورہمیں جلانے والی آ گ کے عذا ب ہے بیجا اور اس ماہ میں مجھے ہمت دے کہ تھے یا دکروں تیراشکر بجالاؤں تیر کی شُكْرَكَ وَ الرَّغُبَةَ اِلَيُكَ وَالْإِنَابَةَ وَالتَّوْبَةَ وَالتَّوْفِيُقَ لِمَا وَقُقُتَ لَهُ مُحَمَّدًا وَّ الَ مُحَ طرف توجه رکھوں تیری طرف پلٹوں اورتو بہ کروں اورتو فیق دے مجھے اس عمل کی جس کی تو فیق دی تو نے محماً و رآ ل محماً و تیری رحمت ہو صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ آ تخضرت رياو ران کي آل ري -چيسوير شب كلى دعا ﴿ يَا جَاعِلُ اللَّيْلِ لِيَاسًا وَالنَّهَارِ مَعَاشًا وَ الْاَرْضِ مِهَادًا

ا ہے بنانے والے رات کو پر دہ دن کووقت کارو با رزمین کوجائے آ رام او رپہا ژوں کو

وَّالُحِبَالِ اَوْتَادًا يَّا اَللَّهُ يَا قَاهِرُ يَا اَللَّهُ يَا جَبَّارُ يَاۤ اَللَّهُ يَاسَمِيُعُ يَاۤ اَللَّهُ يَا قَرِيُبُ يَاۤ اَللَّهُ يَا

میخین اے اللہ اے غالب اے اللہ اے دہد ہوا لے اے اللہ اے سننے والے اے اللہ اے نز دیک تر اے اللہ اے قبول کرتے والے

مُحِيُبُ يَاۤ اَللَّهُ يَآ اَللَّهُ يَآ اَللَّهُ لَكَ الْاَسُمَآءُ الْحُسُنٰي وَ الْاَمُثَالُ الْعُلْيَا وَالْكِبُرِيَآءُ وَالْالاَ

ا ےاللہ اےاللہ اےاللہ تیرے لیے ہیں اچھے اچھے نام بلند مزین نمونے اور برز ائیاں اور مہر بانیاں سوال کرتا ہوں تھے ہے کہ رحمت

ٱسْئَلُكَ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَال مُحَمَّدٍ وَأَنْ تَجْعَلَ اسْمِيُ فِي هَٰذِهِ اللَّيْلَةِ فِي

نا زل فر ماسر کار محدّ وآل محدّ براو ربید که آج کی رات میں میرانا م نیکوکاروں کے زمرے میں شار کرمیری روح کوشہیدوں کے ساتھ قرا ر

السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِييُ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ إِحْسَانِيُ فِي عِلِّيِّيْنَ وَ إِسَآئَتِيْ مَغُفُوْ رَةً ۚ وَ أَنْ تَهَبَ

و مے میری اطاعت کومقام علیین میں پہنچا اورمیری بدی کومعاف شدہ قرا روے اور بیا کہ مجھے وہ یقین دے جومیرے دل میں بسارے

لِيُ يَقِيُنَا تُبَاشِرُ بِهِ قَلُبِيُ وَ إِيُمَانًا يُّذُهِبُ الشُّكَّ عَنِّيُ وَ رضَّيْهِمَا قَسَمُتَ لِيُ وَ اتِنَا فِي

وروہ ایمان دے جوشک کومجھ ہے دورکر دےاور مجھے راضی بنا اس پر جوحصہ توئے مجھے دیا اور ہمیں دنیا میں خوش ترین زندگی دےاور

اللذُنيَ حَسَنَةً وَفِي الأَحِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ الْحَرِيْقِ وَ ارُزُقَنِي فِيهَا ذِكُرَكَ وَأَ آخرت من بهترين اجرعط كراوز مين جلانے والى آگ كعذاب سے بچااور جُھے مت دے كراس او من جُھے ياوكروں تيراشكر بجا شُكُركَكَ وَ الرَّعُهُمَةَ إِلَيْكَ وَ الْإِنَابَةَ وَالتَّوْبَةَ وَالتَّوْفِيْقَ لِمَا وَقَقْتَ لَهُ مُحَمَّدًا وَ اللَّهُ اللَّهُ مِن عَلَيْهِمُ اللَّهُ ال

رحت نا زل ہوان سب ہستیوں پر ۔

﴿ چِهبيسويس شب كى دعا ﴾ يَا جَاعِلَ اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ ايَتَيْنِ يَا مَن مَّحَآ أَيَةَ اللَّيْلِ

ا مات اوردن کوا پی نشانیال بنائے والے اسامات کی نشانی کونار بیک اوردن کی

وَجَعَلَ ايَةَ النَّهَارِ مُبُصِرَةً لِتَبُتَغُوا فَضُلاً مِّنُهُ وَ رِضُوانًا يَّا مُفَصِّلَ كُلِّ شَيُّ تَفُصِيلاً يَّا

نثانی کوروشن بنانے والے تا کہ لوگ اس میں تیرے فعل اور خوشنو دی کی حلاش کریں اے ہر چیز کی حداور فرق مقر رکرنے والے اے شان

مَاجِدُ يَا وَهَابُ يَا ٱللَّهُ إِلَا جُوادٌ يَا ٱللَّهُ يَا ٱللَّهُ يَا ٱللَّهُ لَكَ الْأَسْمَاءُ الْحُسُنَى وَالْاَمْثَالُ

والے اے بہت دینے والے اے اللہ اے عطا کرنے والے اے اللہ اے اللہ اے اللہ تیرے لیے ہیں ایجھے ایجھے نام بلندر مین فمونے اور

الْـعُلْيَا وَ الْكِبُرِيَاءُ وَالْآلَاءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّى عَلَى مُحَمَّدٍ وَّالِ مُحَمَّدٍ وَّانُ تَجُعَلَ اسْمِئُ ﴿

ہڑا ئیاں اور مہر با نیاں سوال کرنا ہوں تھھ سے کر رحمت ما زل فر ماسر کا رحمہ و آل محرّ پر اور پید کر آج کی مات میں میراما م نیکو کا روں کے زمر ہے

فِيُ هَذِهِ اللَّيُلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيُ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِيُ فِي عِلِّيِّينَ وَ اِسَآئَةِي

میں شار کرمیری روح کوشہیدوں کے ساتھ رکھ میری اطاعت کومقام علیوں میں پہنچا اورمیری بدی کومعاف شدہ قر اردے اور رید کہ مجھے وہ یقین

مَغُفُورَةً وَّ أَنُ تَهَبَ لِي يَقِينًا تُبَاشِرُ بِهِ قَلْبِي وَ إِيْمَانًا يُلْدُهِبُ الشَّكَّ عَنِي وَ تُرُضِيَنِي بِمَا ﴿

دے جومیرے دل میں بس جائے اوروہ ایمان دے جو ٹنگ کومجھ سے دور کرد ہےاور مجھے راضی بنا اس پر جو حصہ تو نے مجھے دیا اور ہمیں دنیا

قَسَمُتَ لِيُ وَ اتِنَا فِي الدُّنُيَا حَسَنَةً وَّفِي الْأَخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارَ الْحَرِيُقِ وَ

میں خوش برین زندگی دےاور آخرت میں بہترین اجرعطا کراور ہمیں جلانے والی آگ کےعند اب سے بچا اور مجھے ہمت دے کہاس ماہ میں

ارُزُقُنِيىُ فِيُهَا ذِكُرَكَ وَ شُكُرَكَ وَ الرَّغُبَةَ اِلَيْكَ وَ الْإِنَابَةَ وَالتَّوُبَةَ وَالتَّوُفِيْقَ لِمَا وَقُقُتَ ﴿

تقحیا دکروں تیراشکر بجالا وَں تیری طرف توجہ لگائے رکھوں تیری طرف پلٹوں اور تو بہ کروں اور مجھے تو فیق دے اس ممل کی جس کی تو فیق دی

مُحَمَّدًا وَّ الَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ.

تونے سر کا رقمہ اور آل محمد کو وخدار حمت کرے آنخضرت میاوران کی آل پر ۔

﴿ستائيسويس شبكى دعا ﴾ يَا مَآدًا الظِّلِّ وَلَوْ شِئْتَ لَجَعَلْتَهُ سَاكِنًا وَّ جَعَلْتَ

ا ہے ماریہ کو پھیلانے والے اوراگر تو جا ہتا تو اس کوا یک جگٹھیرا دیتا تو نے سورج کو

الشُّمْسَ عَلَيُهِ دَلِيُلاَّ ثُمَّ قَبَضُتَهُ قَبُضًا يَّسِيرًا يَّاذَا الْجُوْدِ وَ الطَّوُلِ وَ الْكِبُريَآءِ وَالْأَلَاءِ لاَ

سماییہ کے لیے رہنما قرار دیا پھرا سے قابو میں کیاتو آ سانی ہے قابو کیا اے خاوت و عطاوا لےاور بڑا ئیوں اورفعتوں والے نیس کوئی معبو دنگر

اِلٰهَ اِلَّا ٱنْتَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَ الشُّهَادَةِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمُ لَا اِللَّهَ اِلَّا ٱنْتَ يَا قُدُّوسُ يَا سَلاَّمُ يَا

تو كرچچچى تحلى باتوں كا جاننے والا برا مهر بان نہايت رحم والا ہے نہيں كوئى معبود تكرتو ہے اے باك ترين اے سلامتى والے اے امن دينے

مُؤُمِنُ يَا مُهَيُمِنُ يَا عَزِيُزُ يَا جَبَّارُ يَا مُتَكَّبِّرُ يَآ اَللَّهُ يَا خَالِقُ يَا بَارِئُ يَا مُصَوّرُ يَآ اَللَّهُ يَآ اَللَّهُ

والےائے تھمیدا راے زہر دست اے فلیروالےا ہے بیڑا تی والے اے اللہ اے خلق کرنے والے اسے پیدا کرنے والے اسے صورت بنانے

يَا آللُهُ لَكَ الْاسْمَاءُ الْحَسَدَى الْآمُعَالُ الْعُلَيْا وَ الْكِيْرِيَّاءُ وَ الْآلَاءُ اَسْمَلُكَ انْ تُصَلِّعُ

والے اے اللہ اے اللہ اے اللہ تیرے لیے بین اجھے اجھے الم ملند ترین خمونے اور بردائیاں اور مہر یا نیاں سوال کرنا ہوں تھے ہے کر رحمت

عَـلَى مُـحَـمَّدٍ وَّالِ مُحَمَّدٍ وَّأَنُ تَجُعَلَ اسُمِى فِي هٰذِهِ اللَّيُلَةِ فِي السُّعَدَآءِ وَ رُوحِيُ مَعَ

نا زل فرماسر کارمحمرو آل محمر پراور بیرکر آج کی رات میں مجھے نیکوکاروں کے زمرے میں شارکرمیری روح کوشہیدوں کے ساتھ کردے میری

الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِي فِي عِلِّيِّيُنَ وَ اِسَآئَتِي مَغُفُورَةً وَّانُ تَهَبَ لِي يَقِيُنًا تُبَاشِرُ بِهِ قَلْبِي

ا طاعت کومقام علیین میں پہنچااورمیری بدی کومعاف شدہ قر اردےاو ریہ کہ مجھےو ہیقین عطا کرجومیرےول میں بس جائے اوروہ ایما ن

وَإِيْمَانًا يُلذُهِبُ الشُّكُّ عَبِّي وَ تُرُضِيَنِي بِمَا قَسَمُتَ لِيُ وَاتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي

وے جو شک کو مجھے دور کر دے اور مجھے راضی بنااس پر جو حصر تونے دیا اور ہمیں دنیا میں خوش ترین زندگی دے اور آخرت میں بہترین

الْأَخِـرَةِ حَسَنَةً ۚ وَ قِنَا عَذَابَ النَّارِ الْحَرِيْقِ وَ ارْزُقُنِيُ فِيْهَا ذِكُرَكَ وَشُكُرَكَ وَ الرَّغُلِّم

اجر دےاو رہمیں جلانے والی آگ کے عذاب سے بچااور مجھے ہمت دے کہاں ماہ میں تھے یا دکروں تیراشکر بچالا کال تیری طرف توجہ

إِلَيُكَ وَالْإِنَابَةَ وَ التَّـوُبَةَ وَالتَّـوُفِيُقَ لِمَا وَقُقُتَ لَهُ مُحَمَّدًا وَّالَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَ

ر کھوں تیری طرف پلٹوں اورتو بہ کروں او رمجھتو فیق دے اس ممل کی جس کی توفیق دی تو نے محمدو آل محمد کوخدا کی رحمت ہوآ تخضرت اور

(m)

عَلَيْهِمُ۔

ان کی آ ل پر۔

﴿ الشَّمَانِيسويِ شَب كَى دِعا ﴾ يَا خَازِنَ اللَّيْلِ فِي الْهَوَآءِ وَ خَازِنَ النُّورِ فِي السَّمَآءِ وَ

اے رات کوہوا میں مجگہ دیے والے اوراے روشنی کوآسان میں مجگہ دیے والے اور

مَانِعَ السَّمَآءِ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْآرُضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ وَحَابِسَهُمَا أَنْ تَزُولًا يَا عَلِيهُم يَا عَظِيهُم يَا

آسمان کورو کنے والے کرو ہ زیمن پر نہ آپڑ ہے لیکن اس کے حکم ہے اوران دونوں کے تگہدا رکہ ٹوٹ نہ جائیں اے جاننے والے اے عظمت

غَفُورُ يَا دَآئِمُ يَآ اَللَّهُ يَا وَارِتُ يَا بَاعِتَ مَنْ فِي الْقُبُورِ يَآ اَللَّهُ يَآ اَللَّهُ يَآ اَللَّهُ لَكَ الْاَسْمَآءُ

والے اے بہت بخشے والے اے بیشکی والے اے اللہ اے ورثہ والے اے قبروں سے اٹھا کھڑا کرتے والے اے اللہ اے اللہ اے اللہ

الْحُسُنْيِ وَ الْاَمُثَالُ الْعُلْيَا وَالْكِبُرِيَاءُ وَ الْاَلْآءُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَالِ

تیرے لیے ہیں اچھے اچھے نام بلندرترین نمونے اور برز ائیاں اور مہر با نیاں سوال کرنا ہوں تھے ہے کہ رحمت نا زل فر ماسر کارمحمرو آل محمر پراور

مُحَمَّدٍ وَّانُ تَجُعَلَ اللَّهِ مِي فِي هِلْهِ اللَّهُ فِي السُّعَدَاءِ وَ زُوْحِي مَعَ الشُّهَدَاءِ وَ

یہ کہ آج کی دات میں مجھے نیکو کا روں کے زمرے میں شار کرمیری روح کوشہیدوں کے ساتھ کر دےاو رمیری اطاعت کومقا معلمین پر پہنچا

اِحْسَانِيُ فِي عِلِّيْيُنَ وَ اِسَآئَتِي مَغُفُورَةً وَّانُ تَهَبَ لِي يَقِيْنًا تُبَاشِرُ بِهِ قَلْبِي وَإِيْمَانًا يُلُهِبُ

اورمیری برانی کومعاف شده قرار دےاور یہ کہ مجھے وہ یقین دے جومیرے دل میں بس جائے اورو وائیان دے جو شک کومجھ سے دورکر

الشَّكَّ عَبِّيى وَ تُرُضِيَنِي بِمَا قَسَمُتَ لِيُ وَاتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْأَخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا

وے او رمجھے راضی بنااس پر جو حصر تو نے دیا اور ہمیں دنیا میں خوش ترین زندگی دے اور آخرت میں بہترین اجرعطا کراور ہمیں جلانے والی

عَـذَابَ النَّارِ الْحَرِيْقِ وَارُزُقْنِيُ فِيُهَا ذِكُرَكَ وَشُكُرَكَ وَ الرَّغْبَةَ اِلَيُكَ وَالْإِنَابَةَ وَ التَّ

آ گ کے عذاب سے بچا اور مجھے ہمت دے کہ اس ماہ میں تھے یا دکروں تیراشکر بجا لاؤں تیری طرف توجہ رکھوں تیری طرف پلٹوں او ر

وَالتَّوْفِيٰقَ لِمَا وَقُقُتَ لَهُ مُحَمَّدًا وَّالَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ

تو به کروں اور مجھے تو فیق دے اس ممل کی جس کی تو فیق دی تو نے محمد و آل محمد کوخد ارحت کرے آئے خضرت مراہ مان پر ۔

﴿ انتيسوي، شب كى دعا ﴾ يَا مُكُوّرَ اللَّيُل عَلَى النَّهَارِ وَ مُكُوّرَ النَّهَارِ عَلَى اللَّيُل يَا

اے رات کو دن پر لیٹنے والے اور دن کورات پر لپیٹ دینے والے اے دایا اے حکمت

*** عَلِيْهُ يَا حَكِيُهُ يَا رَبُّ الْاَرُبَابِ وَ سَيَّدَ السَّادَاتِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَآ اَقُوَبَ اِلَيَّ مِنْ حَبُل والے اے پالنے والوں کے بالنے والے اور سر داروں کے سر دا رئیس کوئی معبو دسوائے تیرے اے مجھ سے میری رگ جان سے زیا دہ الْـوَرِيْـدِيَا اَللَّهُ يَا اَللَّهُ يَا اَللَّهُ لَكَ الْاَسُمَاءُ الْحُسُنٰي وَ الْاَمْثَالُ الْعُلْيَا وَالْكِبُرِيَاءُ وَ الْأَلَاءُ قريب الساللدا ماللدا مالله تيري لي بين الجها جهام بلندر بن نمونه اوربرا ئيال اورمهر بإنيال سوال كرنا مول تجه س كررحت ٱسْئَلُكَ أَنْ تُصَلِّي عَلَى مُحَمَّدٍ وَالِ مُحَمَّدٍ وَأَنْ تَجْعَلَ اسْمِي فِي هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فِي نا زل فر ماسر کارمجماً و رآل محمَّر پراور میرکد آج کی رات میں میرانا م نیکوکاروں کی فہرست میں درج کر دےمیری روح کوشہیدوں کے ساتھ السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيُ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِيُ فِي عِلِّيِّيْنَ وَ اِسَآئَتِي مَغُفُوْرَةً وَّانُ تَهَبَ لِيُ رکھ میری نیکی کومقام علیین تک پہنچااور میری برائی کومعاف شدہ قرار دےاو رہ کہ مجھے وہ یقین دے جومیر ہے دل میں بس جائے اورو و يَقِيُنُا تُبَاشِرُ بِهِ قَلُهِيُ وَإِيْمَانًا يُّذُهِبُ الشَّكَّ عَنِّيُ وَ تُرُضِيَنِيُ بِمَا قَسَمُتَ لِيُ وَاتِنَا فِي ا یمان دے جوشک کومجھ سے دور کر دے اور رضامند کرای جھے پر جوٹو نے دیا ہے اور جمیں دنیا میں خوش ترین زندگی دے اور آخرت میں اللُّهُ نُيَا حَسَنَةً وَّفِي الْأَخِلَةِ حَسَيَةً وَقِينًا عَذَاكِ اللَّارِ الْحَرِيقِ وَارُزُقُنِي فِيُهَا ذِكُرَكَ بہترین اجر عطا کراو رہمیں جلانے والی آ گ کےعذاب سے بچااور مجھے ہمت دے کہاں ماہ میں تھے یا دکروں تیراشکر بجالاؤں تیری وَشُكُورَكَ وَ الرُّغُبَةَ اِلَيُكَ وَالْإِنَابَةَ وَ التُّوْبَةَ وَالتُّوْفِيُقَ لِمَا وَقُقُتَ لَهُ مُحَمَّدًا وَّالَ مُحَمَّ طرف توجہ کے رموں تیری طرف پلٹوں اورتو برکروں اور مجھے تو فیق دے اس عمل کی جس کی تو فیق دی تو نے محماً ورآ ل محمر کوخدا رحت کرے صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ۔

آتخضرت پراو مان کی آل پر۔

﴿ تَيسويس شب كَى دَعا ﴾ ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ لاَ شَرِيُكَ لَهُ الْحَمُدُ لِلَّهِ كَمَا يَنْبَغِيُ لِكَرَمِ وَجُهِم

حمہ ہاں خدا کے لیے جس کا کوئی ساجھی نہیں حمہ ہےخدا کیلئے وہ حمہ جواس کی ہز رگ تر ڈات

وَ عِنْ جَلالِهِ وَكَمَا هُوَ اَهُلُهُ يَا قُدُّوسُ يَا نُورُ يَا نُورُ الْقُدُسِ يَا سُبُّوحُ يَا مُنتَهَى التَّسُبِيحِ
اور عن جَلال كَالْنَ جِاور جَس كاوه الل جائزة النوراك إلى فرة نوراك بعيب الله يَخ فَل كَم كزاك عن الله يَا وَرَحْمَة يَا الله يَا عَلِيمُ مَا كَبِيرُ يَا الله يَا لَطِيفُ يَا جَلِيلُ يَآ الله يَا عَلِيمُ مَا كَبِيرُ يَآ الله يَا لَطِيفُ يَا جَلِيلُ يَآ الله يَا الله ي

سَمِيْعُ يَا بَصِيُرُ يَا اَللَّهُ يَا اَللَّهُ يَا اَللَّهُ لَكَ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنَى وَ الْاَمْثَالُ الْعُلْيَا وَالْكِبُرِيَاءُ وَ و يجضے والے اے اللہ اے اللہ اے اللہ تيرے ليے بين اجھے اچھے نام بلندر بن نمونے اور برائياں اور مهر مانياں سوال كرنا موں جھے ہے كہ الْأَلَاءُ اَسُـئَـلُكَ اَنُ تُـصَلِّي عَلَى مُحَمَّدٍ وَّاهُل بَيْتِهِ وَاَنُ تَجْعَلَ اسْمِي فِي هٰذِهِ اللّيلَةِ فِي رحمت نا زل فرماحضرت محمداً و ران کے اٹل بیت پراور مید که آج کی رات میں میرانا م نیکوکاروں کی فہرست میں درج کر دے میری روح کو السُّعَدَآءِ وَ رُوْحِيُ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ اِحْسَانِيُ فِي عِلِّيْيُنَ وَ اِسَآئَتِي مَغُفُورَةً وَّانُ تَهَبَ لِيُ شہیدوں کے ساتھ رکھ میری نیکی کومقام علیین تک پہنچااورمیری ہری کومعاف شدہ قراردےاوریہ کہ مجھے وہ یقین دے جومیرے دل میں بس يَقِيُنًا تُبَاشِرُ بِهِ قَلْبِيُ وَإِيْمَانًا يُّذُهِبُ الشَّكَّ عَيِّيُ وَ تُرُضِيَنِيُ بِمَا قَسَمُتَ لِيُ وَاتِنَا فِي جائے اوروہ انمان دے جوشک کومجھ سے دور کر دےاور مجھے راضی بنا اس پر جوحصہ تو نے دیا اور ہمیں دنیا میں خوش ترین زندگی دےاور اللُّهُ نُيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْأَخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ الْحَرِيْقِ وَارُزُقُنِي فِيُهَا ذِكُرَكَ آ خرت میں بہترین اجر عطافر مااور ہمیں جلانے والی آ گ کےعذاب سے بچااور مجھے ہمت دے کہ اس ماہ میں تجھے یا دکروں تیراشکر بجا

وَشُكُرَكَ وَ الرَّغُبَةَ الِيُكِكُ وَالْإِنَايَةَ وَالثَّالِيَّةَ وَالتَّوْفِلِقَ لِمَا وَأَفْقُكَ لَهُ مُحَمَّدًا وَالْ مُحَمَّ

لاؤں تیری طرف قوجہ کے رہوں تیری طرف پلٹوں اور تو بہروں اور مجھتو نیق دے اس عمل کی جس کی تو نیق دی تو نے سر کارمحماور آل محمدُ و

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ-

خدارهت کرے آنخضرت پراوران کی آل پر۔

ماورمضان كي ستائيسوي كي رات

- اں رات بھی خصوصی طور پر شسل کرنے کا حکم ہے۔
- اور بید دعاریاهی جائے جسے حضرت امام زین العابدین علیہ السلام اس رات پہلے پہرے لے کر پچھلے پہر تك برابر باربار راها كرتے تھے:

ٱللُّهُمَّ ارُزُقُنِي التَّجَافِيَ عَنُ دَارِ الْغُرُورِ وَ الْإِنَابَةَ اِلَى دَارِ الْخُلُودِ وَالْإِسْتِعُدَادِ لِلْمَوْتِ

اے معبو دا مجھے نصیب کر فریب کے گھرسے دوری اختیار کرنا ہمیشہ کے مسکن کی طرف لوٹ کے جانا اورموت کے آنے سے پہلے

قَبُلَ خُلُولُ الْفَوُتِ.

موت کے لیے تیارہ وہا نصیب فرما۔

ماورمضان کی آخری دات

يد بروى بايركت رات إوراس رات مين چندهمل واردين:

(۱) عنسل کرنا۔ (۲) حضرت امام حسین علیدالسلام کی زیارت کرنا۔

سورهٔ انعام ،سورهٔ کهف اورسورهٔ کیلین کی تلاوت کرنا اورسوبا راستغفار کرنا:

﴿ اَسۡتَغُفِرُ اللَّهَ رَبِّيُ وَ اَتُوْبُ اِلۡيُهِ ﴾ ـ

(٧) وه دعاروه خاجو حفرت امام جعفر صادق عليدالسلام من فقول ب:

اَللَّهُمَّ هٰذَا شَهُرُ رَمَضَانَ الَّذِي ٓ اَنُزَلُتَ فِيُه القرآن وَ قَدُ تَصَرَّمَ وَ اَعُوٰذُ بِوَجُهِكَ الْكَرِيْمِ

ا ہے معبود! یہ ماہ رمضان المبارک ہے جس میں تونے قر آن کریم ما زل فرمایا اور وہ گز رگیا ہے اور پناہ لیتا ہوں میں تیری ذات کریم

يَا رَبِّ اَنْ يَطُلُعَ الْفَجُرُ مِنْ لَيُلَتِي هَاذِهَ اَوْ يَتَصَرَّمَ شَهُرُ رَمَضَانَ وَ لَكَ قِبَلِيُ تَبِعَةٌ اَوْ ذَنُبٌ

کیا ہے پر وردگاراس سے کہ آج کی رات شم ہوا ورقیح ہوجائے یا رمضان المبارک کامہینڈگز رجائے اور مجھ پر تیری کوئی سز اباقی ہو یا

تُرِيْدُ أَنْ تُعَذِّبِنِي بِهِ يَوْلُهُ الْقَاكِ SIBTAIN.C

كونى كنا وہوكاتو مجھاس پرعذاب ديناجا ہتا ہوجس دن ميں پيش ہوں گا۔

(۵) آخری جمعداورآخری رات میں ماہ رمضان کوالوداع کرنا جا بیئے اوراس سلسلہ میں سب ہے بہتر وعاصحیفہ ا

كالمله كي نمبر ٧٥ وعاء الوداع ب يا پھر ميختصر دعاء و داع پريھي جائے جوصرت امام جعفر صا وق القليلا سے مروى ب:

ٱللُّهُمَّ لا تَـجُعَلُهُ اخِرَ الْعَهُدِ مِنُ صِيَامِي لِشَهُرِ رَمَضَانَ وَ اَعُوُذُ بِكَ اَنُ يُطُلُعَ فَجُرُ هٰذِهِ ﴿

ا ساللہ!اس مہینے کورمضان کے روزے رکھنے میں میرے لیے آخری قرار ندد ساور میں بنا ہ لیتا ہوں تیری اس سے کہاس رات کی

اللَّيُلَةِ إِلَّا وَقَدُ غَفَرُتَ لِيُ.

مجمج ہوجائے لیکن ریا کرتو نے مجھے بخش دیا ہو۔

نيزيدِعارِيُّ عَاجَاءٌ: ٱللَّهُمَّ لا تَـجُعَلُهُ اخِرَ الْعَهُدِ مِنْ صِيَامِنَاۤ إِيَّاهُ فَإِنُ جَعَلْتَهُ فَاجُعَلْنِيُ

ا ساللہ! رمضان کے اس مہینے کے روز سے میرے لیے آخری روز بے قرار نہ دیے پس اگر تو ایسا ہی کر بے تو

مَرُحُومًا وَّلاٰ تَجُعَلْنِي مَحُرُومًا.

جُھےرتم کیا گیا قرار دے اور دحمت سے محروم کیا ہوا نہیا۔

ماورمضان کا آخری دن

اگر کسی وجہ ہے و وائے ماہ رمضان کی وعائیں آخری جمعہ یا آخری رات نہ پڑھی جا سکیں تو ماہ رمضان کے آخری دن بھی پڑھی جا سکتی ہیں۔ نیز چونکہ اکثر و بیشتر اہل ایمان اس ون قرآن ختم کرتے ہیں لہذا ختم قرآن کے بحد بہتر تو رہے کہ صحیفہ کا ملہ کی بیالیسویں وعارہ ھی جائے اور اگر کسی وجہ ہے وہ وعانہ پڑھی جائے تو پھر صفرت امیر علیہ السلام والی اس مختصر وعارہ اکتفا کیا جا سکتا ہے جو رہے:

اَلَـُلْهُــةً الشُـرَحُ بِـالْـقُـرُانِ صَــدُرِیُ وَ اسْتَعُـمِـلُ بِـالْـقُرُانِ بَدَنِیُ وَ نَوِّرُ بِالْقُرُانِ بَصَرِیُ اے معود! میرے بینے کا آن کیلے کشادہ کردے میرے بدن کا آن پڑھل پیرا بنادے میری آ تھوں کا آن سے دوش کردے اور میری

وَ اَطُلِقُ بِالْقُرُانِ لِسَانِي وَ اَعِنِي عَلَيْهِ مَا اَبْقَيْتَنِي فَانَّهُ لا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ إلا بِكَ نبان كوَرْ آن كِلِحُ مِدال كرد مادر جب من خص زنده رخيال من ميرا مدة ارده كريس كنَّ حرّت وقوت مَرجو تيري طرف سے

نیزید دعائجی پڑھے جوامیر المؤمنین علیہ السلام ہے منقول ہے:

اَلَـلْهُــمَّ اِنِّیُ ٓ اَسُــئَـلُـکَ اِنُحِــَاتَ الْـمُـنُحِیتِیـُـنَ وَ اِنْحَلاصَ الْـمُـوُقِینِیُنَ وَ مُــرَافَقَةَ الْاَبُــرَارِ ﴿ اللّٰهُ لِللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ الللّٰ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰ

وَ اسْتِ مُ فَاقَ مَ فَا الْهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ

وَّ وُجُوْبَ رَحُمَةِ كَ وَ عَزَ آئِمَ مَغُفِرَةِ كَ وَ الْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَ النَّجَاةَ مِنَ النَّادِ } لازی ہونے تیری طرف سے اپی چیش کے بیٹی ہونے جت میں داخل ہونے اور چنم سے رہائی کا سالی ہوں۔

ماہ شوال کے اعمال کا تذکرہ

شوال المكرم كى مهلى رات جوكة عيد الفطركى رات ب_سال كى مقدى ومتبرك راتول ميں سے ايك بي الله عند المال كا بجالا نامستحب ب: (١) غروب كے وقت عنسل كرنا - (٢) نماز، وعا، استغفا راور تو بدو انا بد كے ساتھ شب بيدارى كرنا - (٣) نماز مغرب اور اس كے نوافل سے فارغ ہوكر ہاتھ بلند كر كے بيد عارب هنا جوكہ حضرت امام جعفر صادق عليد السلام سے منقول ہے:

ينا ذَا الْهَمَنِّ وَ الطَّوْلِ ينا ذَا الْبُورِ ينا مُصطَفِى مُحَمَّدٍ وَ ناصِرَهُ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ السَّعُونَ وَالْمُوالُونَ عَلَى مُحَمَّدٍ السَّعُونَ وَالْمُوالُونَ عَلَى مُحَمَّدٍ السَّعَلَ وَالْمُوالُونَ عَلَى اللَّهُ وَالْمُوالُونَ عَلَى اللَّهُ وَالْمُورَ وَالْمُوالُونَ عَلَى اللَّهُ وَالْمُورَ وَالْمُوالُونَ عَلَى اللَّهُ وَالْمُورَ وَالْمُوالُونَ عَلَى اللَّهُ وَالْمُورَ وَالْمُوالُونَ اللَّهُ وَاللَّهُ وَمِنْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَالِمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَالِمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِي وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِمُ اللْمُولِقُلُولُولُولُولُلِلْمُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِمُ وَاللَّالِمُ اللَّالِمُ اللْمُولِلِي اللْمُولِقُلِي الللْمُولِقُلِلِمُ الللْمُولُولُ لِلللْمُولِقُلِي الللْمُولُولُ لِللْمُولِمُ لِلْمُ الللْمُولُولُ لِلللْمُولِ لَلْمُولُولُولُ لَلْمُ اللْمُولُول

وَالِ مُسحَسَمَدٍ وَاغْتُ فِي أَلِى مُحَلَّ فَنُلِ الْحُلَيْمَ وَهُ وَهُ وَهُ وَعُلَدَى فِي كِتَابٍ مُبِينِينَ وآل مُرَّرُ اور مير عام مَّناه بَشَ وع جوتير عهال عاربو عِلَى بين كروه اس كتاب والتي مين ورق بين جوتير عهاس عد اس كے بعد سجد عين جاكر سوم رتبہ كے: ﴿ أَتُونُ لِ إِلَى اللّٰهِ ﴾ (توبه كرتا ہوں پیش خدا) ۔ پس اب خدا ہے جو حاجت بھی طلب كر سانٹا ءاللہ و ديورى ہوگى ۔

- (٧) حضرت امام حسين عليه السلام كى زيارت كرنا-
- (۵) نمازمغرب وعشااورنما زصح اورنما زعید کے بعد یہ تکبیریں کہنا:

﴿ اَلَـلَهُ اَكْبَرُ اللّٰهُ اكْبَرُ لا إِلهَ إِلاَ اللّٰهُ وَاللّٰهُ اكْبَرُ اللّٰهُ اكْبَرُ وَ لِللّٰهِ الْحَمَدُ الْحَمَدُ لِلّٰهِ عَلَى خدابِ رَكْرَ إِللّٰهِ الْحَمَدُ اللّٰهِ عَلَى خدابِ رَكْرَ جِ فدابِ رَكْرَ جِ فَدابِ رَكْرَ جَ فَدابِ رَكْرَ فَيْ اللَّهُ وَاللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ

مَا هَدَينًا وَلَهُ الشُّكُرُ عَلَى مَا أَوُلَينًا﴾ ـ

اس پر کہ ہمیں ہدایت دی اور شکر ہے اس پر جو پچھاس نے ہمیں بخشا۔

(۱) حضرت امير القليلات مروى ب، فرمايا: جو خض عيد الفطر كى رات اس طرح دو ركعت نماز پڑھے كه پہلى ركعت ميں الحمد كے بعد سومرتبہ قل هو الله احد اور دوسرى ركعت ميں الحمد كے بعد ايك مرتبہ قل هو الله احد اور سلام

شوال کی پہلی تاریخ کے اعمال

یہ عیدالفطر کا دن ہے جو سلمانوں کی دوسری ہوئی عید سعید ہے۔ مروی ہے کہ ایک بارعیدالفطر کے دن حضرت امام حسن مجتبی علیہ السلام ہا ہر تشریف لائے اور دیکھا کہ لوگ ہنس رہے ہیں۔ فرمایا: خداوند عالم نے ماو رمضان کو اپنے بندوں کے لیے کوئے سبقت لے جانے کا میدان قرار دیا ہے پس اطاعت کرنے والے کوئے سبقت لے گئے اور ما فرمانی کرنے والے ماکام ہوگئے۔ مجھے اس دن بہننے والے سے تعجب ہے جبکہ نیکوکار کامیاب اور بدکار خسارہ میں ہیں۔ اگر پر دہ ہٹا دیا جائے تو نیکوکارا پی نیکی میں اس طرح مشغول ہوں گے اور بدکار اپنی برائی میں اس طرح مصروف ہوں گے کہ انہیں اپنے بالوں میں کنگھی کرنے کی بھی فرصت نہیں بوگے۔ (ابھناً)

بېرمال اى د ك د ك اي اي SIBTAIN.

- (۱) عشل عيد كرما -
- (۲) نماز صبح اورنماز عید کے بعد وہ تکبیرات پڑھنا جن کا شب عید میں تذکرہ کیا جاچکا ہے۔
 - (۳) عيرالفطر کي نماز پڙهنا۔
- (۴) مراس سے پہلے گھر کے ہر چھوٹے بڑے کا فطرہ اوا کرنا۔ جس کی تفصیل قوانین الشریعہ اورو مگر فقہی کتابوں میں مذکورہے۔
 - (۵) ہو سکے توعشل کرتے وقت ہے:
- ﴿ اَللّٰهُمَّ إِيْمَانًا بِكَ وَ تَصُدِيْقًا بِكِتَابِكَ وَاتِبَاعَ سُنَّةِ نَبِيَّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ ﴾ اللَّهُ الصمعودا تھ پرائمان رکھا موں تیری کتاب کی تقدیق کتا موں اور تیرے نی صفرت محمّطی الله علیدة آله کی عنت وروش کا پیروکا رموں۔

اور شل کے بعد کے:

﴿ اللَّهُمَّ اجْعَلُهُ كَفَّارَةً لِّذُنُوبِي وَ طَهِّرُ دِينِي اللَّهُمَّ اذُهِبُ عَنِي الدَّنَسَ ﴾ ـ

ا ہے معبود!اس عنسل کومیر ہے گیا ہوں کا کفارہ بنااورمیر ہے دین کو پاکٹر مااہے معبو دا مجھ سے نا با کی کو دورکر دے۔

﴿ اَللَّهُمَّ مَنُ تَهَيّاً فِي هَذَا الْيَوُمِ اَوُ تَعَبّاً اَوُ اَعَدُ وَاسْتَعَدَّ لِوِفَادَةٍ اِلَى مَخُلُوقٍ رَّجَآءَ رِفُدِهِ المُعودا بَوْضَ آماده ٢٠ تَح كون المربعة ٢٠ الله على المربعة ٢٠ الله على الل

وَ نَـوَافِلِه وَ فَـوَاضِلِه وَ عَطَايَاهُ فَإِنَّ إِلَيْكَ يَا سَيّدِى تَهْيِئَتِى وَ تَعْبِئَتِى وَ إِعُدَادِى وَ نَعْرِيَ اللهُ وَ فَعُرِئَتِي وَ اعْدَادِى وَ نَعْرِي اللهُ وَ مَعْدِي اللهُ وَمِيرَى اللهُ وَمِيرَى اللهُ وَمِيرَى اللهُ وَمِيرَى اللهُ وَمَيرَى اللهُ وَمِيرَى اللهُ وَمُعْرَالِ اللهُ وَمِيرَى اللهُ وَمِيرَى اللهُ وَمِيرَى اللهُ وَمُعْرَالِ اللهُ وَمِيرَى اللهُ وَمِيرَى اللهُ وَمُعْرَالِ اللهُ وَمِيرَى اللهُ وَاللّهُ وَمِيرَى اللهُ وَمِيرَالِي اللهُ وَاللّهُ ولِي اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّ

اسْتِعُدَادِی رَجَاءَ رِفُدِکَ وَ جَو آئِزِکَ وَ نَوَافِلِکَ وَ فَوَاضِلِکَ وَ فَصَائِلِکَ وَ فَصَائِلاً كَ عَطايَا كَ السَّتِعُدَادِی رَجَاءَ وَفَضَائِلِکَ وَ عَطايَا كَ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى ا

غَدَوُتُ اللّٰى عِيْدٍ مِّنُ اَعْيَادِ اُمَّةِ نَبِيّ كَ مُحَمَّدٍ صَلَوَ اثُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَ عَلَى اللهِ وَلَمُ اَفِدُ اِلَيُكَمَّ نے ایک میدے دن جوان میدوں سے ہے جو تقر رکیس تیرے نبی محد ّنے کی کہ خدا کی رحشیں جوں ان پر اور ان کی آل پر اور میں

الْيَوُمَ بِعَدَ مَلِ صَسالِلِ إِلَيْقُ بِهِ قَلْ مُتُلِهُ وَالا تَرَبِّجُهُ فَي مَنْ لَكُوقَ اَمَّلُتُهُ وَلكِنُ اَتَيْتُكَ أَنْ تِيرِ مَصْوركولَى صالح عمل لَ كُرنيس آيا مول جس كوليتنى طور بر بيش كرول ندكسى قلوق كاطرف توجه اورا ميدركة امول بال عمر

خَاضِعًا مُّقِرًّا بِذُنُوبِی وَ اِسَآفَتِی ٓ اِلٰی نَفُسِی فَیَا عَظِیْمُ یَا عَظِیْمُ یَا عَظِیْمُ اِغُفِرُلِی تَرِی جَنابِ مِن عَاجِزِیَن کَرَایِ مَن اللهِ اور خطاول کااقراری ہوکر آیا ہول آوا عظمت والے اعظمت والے اعظمت والے اعظمت والے اعظمت والے اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ ال

أنُتَ يَآ أَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ﴾ -

سوااےسب سے زیا دہ رحم والے۔

- (2) حضرت امام حسین علیه السلام کی زیارت کی جائے یا کم از کم پڑھی جائے۔
- (۸) بعض آثار میں دعائے ند بدکا پڑھنا بھی وار دہاور بید دعابا بالزیارات میں حضرت امام زماندالظیہ ا کی زیارت کے ضمن میں بیان کی جائے گی انشاءاللہ۔

*** صحیفهٔ کامله کی وه دعا پڑھی جائے جوحضرت امام زین العابدین علیه السلام پڑھا کرتے تھے: يَا مَنُ يَرُحَمُ مَنُ لاَ يَرُحَمُهُ الْعِبَادُ وَ يَا مَنُ يَقُبَلُ مَنُ لاَ تُقُبَلُهُ الْبلادُ وَ يَا مَنُ لاَ يَحُتَقِرُ أَهُلَ ا۔ وہ جو ایسے مخض پر رحم کرتا ہے جس پر بندے رحم نہیں کرتے۔ اے وہ جوایسے (عمینگار) کو قبول کرتا ہے جے کوئی قطعہ زمین (اس کے گنا ہوں کے باعث) الْحَاجَةِ اِلَيْهِ وَ يَا مَنُ لَا يُخَيِّبُ الْمُلِحِّيُنَ عَلَيْهِ وَ يَا مَنُ لَا يَجْبَهُ بِالرَّدِّ اَهُلَ الدَّالَّةِ عَلَيْهِ وَ قبول نیل کرتا۔ اے دوجواپنے حاجتندکو حقیر نیل مجتنا۔ اے دوجو گر کڑانے والوں کونا کا م نیل مجیسرتا۔ اے دوجو بازش بے جا کرنے والوں کو محکرا تاخیل ۔ اے دو يَا مَنُ يَجُتَبِيُ صَغِيْرَ مَا يُتُحَفُّ بِهِ وَ يَشُكُرُ يَسِيْرَ مَا يُعْمَلُ لَهُ وَ يَا مَنُ يَشُكُرُ عَلَى الْقَلِيُل جو چھوٹے سے چھوٹے تختہ کوسی ایندید کی کی نظروں سے و کھتا ہاورجومعول سے معوق عمل اس کے لئے بجالا یا عما ہواس کی جزاویتا ہے۔ اے وہ جواس سے وَ يُحَازِيُ بِالْجَلِيُلِ وَ يَا مَنُ يَدُنُوا اِلَى مَنُ دَنَا مِنْهُ وَ يَا مَنُ يَدُعُوُ اِلَى نَفُسِهِ مَنُ اَدُبَرَ عَنْهُ قریب ہود واس سے قریب ہوتا ہے۔ا ہے دو کہ جواس سے روگر دانی کرے اسے اپنی طرف بلاتا ہے۔ ادر دہ جو نعت کو بدلیا نبیل ادر ندسزا دیے میں جلدی کرتا وَ يَا مَنُ لا يُغَيِّرُ النِّعُمَةَ وَلا يُبَادِرُ بالنَّقِمَةِ وَ يَا مَنُ يُثُمِرُ الْحَسَنَةَ حَتَّى يُنُمِيَهَا وَ يَتَجَاوَزُ ے۔ اے وہ جو شکل کے نہال کو بارا ورکمارے اور کا اے بول وے اور گنا موں ہے واگر زکرا کرے اگر ما بدر کر وہے۔ امیدین تیم می سرحد کرم کو چھونے سے عَنِ السَّيِّئَةِ حَتَّى يُعَفِّيَهَا انْصَرَفَتِ الْأَمَالُ دُوُنَ مَذَى كَرَمِكَ بِالْحَاجَاتِ وَامْتَلَاثُ پہلے کا مران ہوکر پلٹ آ سی اور طلب و آرز و کے ساغر تیرے فیضان جو وہ چھک اٹھے اور صفیق تیرے کمال ڈاٹ کی منزل تک جینچنے سے ور ماتد ہ ہوکر منتشر بِـفَيُـض جُـوُدِكَ اَوْعِيَةُ الطُّـلِبَاتِ وَ تَـفَسَّخَتُ دُوُنَ بُلُوُ غَ نَعُتِكَ الصِّفَاتُ فَلَكَ ا ہوگئیں اس لئے کہ بلندر ین رفعت جو برکنگر وبلندے بالات ہے اور ہزرگ ترین عقمت جو برعظمت سے بلندر ہے، تیرے لئے مخصوص ہے۔ بریزرگ تیری الْاَعْـلَى فَوْقَ كُـلِّ عَالِ وَ الْجَلالُ الْاَمْجَدُ فَوْقَ كُلِّ جَلالٌ كُلَّ جَلِيُلٌ عِنْدَكَ صَغِيْرٌ یز رگی کے سامنے جھونا اور ہرؤ ک شرف تیر سیشرف کے مقابلہ ٹل حقیر ہے۔جنہوں نے تیرے غیرکا رخ کیادہ ناکام ہوئے۔جنہوں نے تیرے سواد دسرول سے كُلُّ شَرِيُفٍ فِينَ جَنُسِ شَرَفِكَ حَقِيُرٌ. خَابَ الْوَافِدُوْنَ عَلَى غَيُـرِكَ وَ خَدِ طلب کیا دہ نقصان میں رہے۔جنہوں نے تیرے سوا دہروں کے ہاں منزل کی دہ تیا ہ ہوئے۔ جو تیرے فعنل کے بھائے وہروں سے رزق و نعت کے طلب گار الْـمُتَـعَـرٌضُـوُنَ اِلَّا لَكَ وَ ضَاعَ الْـمُلِمُّوُنَ اِلَّا بِكَ وَ اَجُدَبَ الْمُنْتَجِعُونَ اِلَّا مَن انْتَجَ ہوئے وہ قبط و مصیبت سے وہ جار ہوئے تیرا وروازہ طلبگا رول کے لئے وا ہے اور تیرا جود وکرم سائلول کے لئے عام ہے۔ تیری فریاوری واوخواہول سے نز و یک

******************* فَضُلَكَ بَابُكَ مَفُتُوحٌ لِلرَّاغِبِيُنَ وَجُودُكَ مُبَاحٌ لِلسَّآئِلِيُنَ وَ اِغَاثَتُكَ قَرِيُرُ فَي ب اميدوار جحد عدر وم بيل رج اورطاب كار خيرى عطا و بخشش س مايي تبيل موت، اورمفقرت چا ب والي يرخير عداب كيد بخي نبيل آتى - خيرا خوان الْـمُسْتَغِيَّتِيْنَ لا يَخِيُبُ مِذُكَ الْامِلُونَ وَلا ييُئَـسَ مِنْ عَطَآئِكَ الْمُتَعَرَّضُونَ وَ نعت ان کے لئے بھی بچھا ہوا ہے جو تیری بافر مانی کرتے ہیں۔اور تیری ہروباری ان کے بھی آ ڑے آتی ہے جو تھے سے وشمنی رکھتے ہیں۔ بروں سے ٹیکی کرنا تیری يَشُقِي بِنَقِمَةِكَ الْمُسُتَغُفِرُونَ رِزْقُكَ مَبُسُوطٌ لِمَنُ عَصَاكَ وَ حِلْمُكَ مُعْتَكُ روش، اورسركتول يرمهر بافى كرما جراطريد بيان ك كرزى وللم في اليس (حق كاطرف) رجوع موف عافل كرويا اورجرى وى مولى مبلت في اليس لِمَنُ نَاوَاكَ عَادَتُكَ الْإِحْسَانُ اِلَى الْمُسِيئِيْنَ وَسُنَّتُكَ الْإِبْقَاءُ عَلَى الْمُعْتَذِ جتناب معاصی سے روک ویا۔ حالا تکاف نے ان سے زی اس لئے کی تھی کر وہ تیر فرمان کی طرف پلٹ آئیں اور مہلت اس لئے وی تھی کہ تھے اپنے تسلط و حَتَّى لَقَـٰدُ غَرَّتُهُـمُ اَنَاتُكَ عَنِ الرُّجُوعِ وَ صَدَّهُمُ اِمُهَالُكَ عَنِ النُّزُوُعِ وَ إِنَّمَا تَانَّيُه ا فتدار کے دوام پر امتا وقعا (کہ جب چاہے اُٹیل اپنی گرفت میں لے سکتا ہے) اب جو فوش نصیب تفاء اس کا خاتمہ بھی فوش نصیبی پر کیا۔ اور جو برنصیب تفا اسے بهم لِيَفِيننُوْ اللَّي آهُركَ ﴿ وَ آمُهَا لَهُ لَهُ أَلَهُ لَمْ يُهَدُّ إِلَاهًا مَلُكِكَ ۖ فَهَنُ كَانَ مِنُ آهُل السَّعَادَ ا كام ركها- (وو فوش فعيب مول يا برفعيب) سب كرسب تير عظم كاطرف يلت والع ين - ادران كاماً ل تير عدامر دايسة ب-ان كاطويل مدت خَتَـمُتَ لَـهُ بِهَا وَ مَنُ كَانَ مِنُ اَهُلِ الشُّقَاوَةِ خَذَلْتَهُ لَهَا كُلُّهُمُ صَآئِرُ وُنَ اِلٰي حُكْمِكَ وَ مبلت سے تیری دلیل وجمت میں ممزوری رونمائیں ہوتی (جیسے اس فض کی دلیل ممزور ہوجاتی ہے جوابے حق کے حاصل کرنے میں تا خیر کر سے) اور فوری گرفت کو ٱمُورُهُمُ ائِلَةٌ اِلَى ٱمُركَ لَمُ يَهِنُ عَلَى طُول مُدَّتِهِمُ سُلُطَاذُكَ وَلَمُ يَدُحَضُ لِتَرُ نظر اغداز کرنے سے تیری ججت ویر ہان باطل نہیں قرار پائی (کہ ہے کہا جائے کہ اگر اس کے پاس ان کے ظاف ولیل ویر ہان ہوتی تو وہ مہلت کیوں دیتا) تیری مُعَاجِلَتِهِمُ بُرُهَانُكَ حُجَّتُكَ قَائِمَةٌ وَ سُلُطَانُكَ ثَابِتٌ لا يَزُولُ فَالُوَيُلُ الدَّآئِمُ لِ ججت برقرار ہے جو باطل نہیں ہو مکتی اور خیری ولیل محکم ہے جو زائل نہیں ہو مکتی۔ لبندا واگی صرت و اندوہ ای تحض کے لئے ہے جو جَنَحَ عَنُكَ وَ الْخَيْبَةُ الْخَاذِلةُ لِـمَنُ خَابَ مِنْكَ وَالشُّقَآءُ الْاَشْقَايِ لِمَنِ اغْتَرَّ بِكَ تھے سے روگروان موا اور رسوا کن نامرادی ای کے لئے ہے جو تیرے ہاں سے محروم رہا اور برزین بیٹنی ای کے لئے ہے جس نے تیری (چھم ٱكُثَرَ تَـصَـرُّ فَـهُ فِـيُ عَـذَابِكَ وَمَا اَطُول تَرَدُّدَهُ فِيُ عِقَابِكَ وَ مَا اَبُعَدَ غَايَتَهُ مِنَ الْفَرَ یقی سے)فریب کھایا۔ ایبا خض کس قدر تیرے عذاب میں الے پلنے کھا تا اور کتناطویل زمانہ تیرے عقاب میں گروش کرتا رہے گا اوراس کی رہائی کا مرحلہ کتنی وور

وَمَآ ٱقُنَطَهُ مِنُ سُهُولَةِ الْمَخُرَجِ عَدُلاً مِنُ قَضَآدِكَ لا تَجُورُ فِيهِ وَ إِنْصَافًا مِرُ اورباً سانی نجات حاصل کرنے سے کتنامایی ہوگا۔ یہ تیرافیصلراز روئے عدل ہے جس میں ذرا بھی ظلم نیس کرنا۔ اور تیرایہ تھم بنی برانصاف ہے جس میں اس پر حُكْمِكَ لا تَحِيُفُ عَلَيْهِ فَقَدُ ظَاهَرُتَ الْحُجَجَ وَ ٱبُلَيْتَ الْاَعْذَارَ وَ قَدُ تَقَدَّمُتَ نیاوتی نیس کرتا۔اس لئے کرتونے ہے ورب ولیلیں قائم اور قائم قبول جمتی آشکارا کروی میں اور پہلے ہے ڈرانے والی چیزوں کے ذریعہ آگا و کرویا ہے اور لطف و بِـالْـوَعِيْدِ وَ تَلَطَّفُتَ فِي التَّرُغِيُبِ وَ ضَرَبُتَ الْآمُثَالَ وَ اَطَلْتَ الْإِمُهَالَ وَ اَخُرُتَ وَ اَنْتَ ہر بانی ہے (آخرے کی) تر غیب ولائی ہاورطرح طرح کی مثالیں بیان کی ہیں مہلت کی مدت ہو حادی ہاور(عذاب میں) تا فحرے کا مالیا ہے، حالا کا آت مُسْتَطِيُعٌ لِلْمُعَاجَلَةِ وَ تَانَّيُتَ وَ اَنُتَ مَلِئًى بِالْمُبَادَرَةِ لَمُ تَكُنُ اَنَاتُكَ عَجُزًا وَلا فوری گرفت پر اختیا ررکتا تھا۔اورزی ومدارات سے کام لیا ہے، باوجو و کی آہ تعجیل کرنے پر قاورتھا۔ بیزم مردی، عاجزی کی بینا پر اور مہلت وہی کمزوری کی وجہ سے نہ اِمُهَالُكَ وَهُنًا وَلا اِمُسَاكُكَ غَفُلَةً وَلا انْتِظَارُكَ مُدَارَلةً بَلْ لِتَكُونَ خُجَّتُكَ تھی اور ندعذاب میں تو قف کرنا خفلت و بے خبری کے باعث اور ندنا خبر کرنامزی و ملاطفت کی بنا پر تھا۔ بلکہ بیاس کے تھا کہ خبری ججت ہر طرح سے پوری ہو۔ خبرا وَ كَرَمُكَ أَكُمَلَ وَالْحُسَمَةُ كَ أَوْفِي وَ لِعُمَةُ كَالْأَلِيمَ كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ وَلَمْ تَوَلُ عُهُوَ كرم كافل رد ، تيرااحدان فرادال ، اور تيرى فعت تما م ترجي مورية تما م جيزي تحيي اور رين كلدورة محاليد و جيشر سے اور جيشدر ہے كا م تيرى ججت اس سے بالاتر كَائِنٌ وَلاٰ تَوَالُ حُبَّتُكَ اَجَلُّ مِنُ اَنْ تُوْصَفَ بِكُلِّهَا وَ مَجُدُكَ اَرُفَعُ مِنْ اَنْ تُحَأُّ ہے کہ اس کے تمام کوشوں کو پوری طرح بیان کیا جا سکے اور خیری عزت ویز رگی اس سے بلندر ہے کہ اس کی کنذوحقیقت کی حدیں قائم کی جا کی اور خیری انعتیں اس بـكُنُهـ إِ وَ نِعُـمَتُكَ اكْتُورُ مِنُ اَنْ تُحُطى باَسُرِهَا وَ اِحْسَانُكَ اكْثَرُ مِنُ اَنْ تُشُكّرَ عَلَيْ معفروں تریں کران سب کا شار ہو سکے اور خیرے احدا نات اس سے کین زیاد ور یں کران میں کے اوٹی احدان پر بھی خیرا شکرے اوا کیاجا سکے۔ (میں خیری حدو اَقَلِّهِ وَ قَدُ قَصَّرَ بِي السُّكُوُتُ عَنُ تَحْمِيُدِكَ وَ فَهَّهَنِيُ الْإِمْسَاكُ عَنُ تَمُحِيُدِكَ سپاس سے عاجز اور درمائد و موں ۔ گویا) خامو تی نے تیری ہے ور ہے جمد و سپاس سے مجھے ماتو ال کرویا ہے اوراد قف نے تیری تجیر و ستائش سے مجھے گگ کرویا قُصَارَايَ الْإِقُرَارُ بِالْحُسُورِ لا رَغُبَةً يَآ اِلْهِيُ بَلُ عَجُزًا فَهَا أَنَا ذَا اَوُمُّكَ بالُوفَادَةِ وَ ہے۔اوراس سلسہ میں میری او انائی کی حدیہ ہے کرافی ورمائد گی کا اعتراف کروں ۔یہ ہے رغبی کی وجہ سے میل ہے اسے میر معبودا بلکہ مجز وا انائی کی منایہ ٱسُئَلُكَ حُسُنَ الرِّفَادَةِ فَصَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ اللهِ وَاسْمَعُ نَجُوَايَ وَاسْتَجِبُ دُعَآئِيُ ہے۔اچھا تو نمیں اب خیری ہارگاہ میں حاضر ہونے کا قصد کرتا ہوں اور کھو سے حسن اعاشت کا خواہتگا رہوں ۔تو محمدًا دران کی آ ل پر رحمت مازل فر مااور میر کی راز و

وَلاٰ تَسَخُتِمُ يَـوُمِـى بِخَيْبَةِى وَلاٰ تَجُبَهُنِي بِالرَّدِّ فِي مَسْئَلَتِي وَ اَكُومُ مِنُ عِنْدِكَ مُنْصَرَ فِيُ

نیاز کی ہاتوں کوئن اورمیری وعاء کوشرف قبولیت پخش اورمیرے ون کونا کا می کے ساتھ ختم ندکراورمیرے سوال میں مجھے محکرانہ وے، اورا فی ہارگاہ سے پلنے اور پھر

وَ إِلَيْكَ مُنْقَلِبِي إِنَّكَ غَيْرُ ضَآئِقٍ بِمَا تُرِيْدُ وَلا عَاجِزٍ عَمَّا تُسْئَلُ وَ ٱنْتَ عَلَى كُو

پلے کرآنے کومزت واحر ام سے ممکنا رفر ما۔ اس لئے کر مجھے تیرے ارادہ میں کوئی وثو ارق حاکل نہیں ہوتی اورجو چیز تھے سے طلب کی جائے اس کے دیے سے

شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَلا حَولَ وَ لا قُوَّةَ إلاَّ بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

عاج البیل ہوتا۔ اوراق ہر جن پر قاور ہاوراق ت وطا قت نیل سواللہ کے مہارے کے جوبلند مرتبہ و تھیم ہے۔

(۱۰) لباس فاخرہ اور پا کیزہ زبیب بدن کیا جائے اورفقراءومسا کین کوصد قد دیا جائے اوران کوبھی ان عید کی خوشیوں میں شامل کیا جائے۔

ماه شوال کی بچیسویں تاریخ

اگر چەمشہور يہ ہے كلا خرت الم جعگر صادل عليه البلام كى شہا كے اثوا كرااچ ميں واقع ہوئى گر تخفیق قول يہ ہے كد ۲۵ شوال (۱۲ اچ ميں واقع ہوئى اس ليے بيد دن محبانِ اہل ہيت كے ليے حزن و ملال كا دن ہے لہذا اس ميں مجالس عزا كا انعقاد كر كے جہال رنج وغم كا اظہار كرما چاہيئے وہاں آپ كے فضائل ومنا قب اور حالات ِ زندگى اورآپ كے مصائب و آلام ہے بھى اہل ائمان كوآگاہ كرما چاہيئے ۔

ذيقعده كے مبينہ كے اعمال كاتذكره

(۱) یہ مہینہ محترم مہینوں میں ہے ہے۔حضرت پیغیبراسلام صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم سے مروی ہے ،فر مایا: جو شخص حرمت والے مہینوں میں ہے کسی مہینہ میں جمعرات، جمعہاور ہفتہ کے دن تین روزے رکھے تو خداوند عالم اے سوسوسال کی عبادت کا ثواب عطا کرتا ہے۔ (کتب الدعاو الزیارہ)

(۲) نیز حضرت رسول خداصلی الله علیه و آله وسلم ایک بار ماه ذی القعده میں اتوار کے دن بیت الشرف سے کرآ مد ہوئے اور فرمایا: ایباالناس! تم میں سے کون تو بہرنے کا اراده رکھتا ہے؟ حاضرین نے عرض کیا کہ یا رسول اللہ ؟ ہم سب تو بہرنا چاہتے ہیں! فرمایا: پھر سب عنسل کرو اور وضو کرو اور چار رکعت نماز (بدوسلام) اس طرح پڑھو کہ ہر رکعت میں الحمد ایک بار ورسورہ قل صواللہ احد آن بار اور معود تین کیا ایک باراور بعد از سلام ستر بار استخفار کرو: ﴿ اَللّٰهَ مَوْلُ وَ لاَ قُوعً إِلاَّ بِاللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ مَوْلُ وَ لاَ قُوعً إِلاَّ بِاللّٰهِ اللّٰهِ بِاللّٰهِ مِن الْعَظِيْم ﴾ ۔ اس کے بعد گہو: ﴿ لاَ حَوْلٌ وَ لاَ قُوعً إِلاَّ بِاللّٰهِ اللّٰهِ مِن اللّٰهِ مَا رُبِّ فَي اَتُوبُ اِلَيْهِ ﴾ ۔ اس کے بعد گہو: ﴿ لاَ حَوْلٌ وَ لاَ قُوعً اِلاَّ بِاللّٰهِ اللّٰهِ مِن اللّٰهِ مَا اللّٰهِ مِن مَا رُبِّ اللّٰهِ مِن اللّٰهِ مِن مَا اللّٰهِ مَا اللّٰهِ مِن مَا اللّٰهِ مِن اللّٰهِ مِن مَا اللّٰهِ مَا اللّٰهِ مِن اللّٰهِ مِن مَا اللّٰهِ مَا اللّٰهُ وَ اللّٰهِ وَ اللّٰهِ مِن اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ مَا اللّٰهِ مَا اللّٰهُ وَ اللّٰهِ مَا اللّٰهُ وَ اللّٰهِ مِن اللّٰهِ مَا اللّٰهِ مَا اللّٰهِ مِن اللّٰهِ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهِ وَ اللّٰهِ مِن اللّٰهِ وَ اللّٰهِ وَاللّٰهِ وَاللّٰهِ مِن اللّٰهِ مَا اللّٰهِ وَ اللّٰهِ مِن اللّٰهُ وَ اللّٰهِ مَا اللّٰهِ وَاللّٰهِ وَ اللّٰهُ مَا اللّٰهِ مِن اللّٰمَ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا مُن اللّٰهُ مَلْ اللّٰهِ مَا اللّٰهِ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ مَا مِن اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا مُنْ اللّٰهُ مَا مُنْ اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا مُنْ اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا مُنْ اللّٰهُ مَا مُنْ اللّٰهُ مَا مُنْ اللّٰهُ مَا مُنْ اللّٰهُ مَا مُلْا مُنْ اللّٰهُ مَا مُنْ اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا مُنْ مُنْ اللّٰهُ مَا مُنْ اللّٰمُ اللّٰمُ مُلْ اللّٰمُ اللّٰهِ اللّٰهُ مَا مُنْ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّ

يَسا عَنِ يُدُوُّ يَسا غَفَارُ اغْفِرُ إِلَى ذُنُوُهِى وَ ذُنُوُبَ جَمِيعَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ اے غالب اور اے بہت بخشے والے خدا! میرے اور تمام مؤمنین و مؤمنات کے گناہ معاف فرما کیونکہ تیرے سوا اور کوئی

الذُّنُوبَ إِلَّا ٱنْتَ ـ (الفِنَا)

گنا ومعاف خیس کرنا ۔

فرمایا: جو خص بیمل بجالاتا ہے اسے آسمان سے ندا دی جاتی ہے کدا ہے بندہ خدا! ازمر نوعمل کر کہ تیری تو بہ قبول ہے اور گناہ معاف ہیں اور ایک فرشتہ اسے ندا کرتا ہے کہ اے بندہ خدا تھے میں اور تیرے اہل وعیال میں ہر کت ہے۔ اور اسے ایک اور فرشتہ ندا ویتا ہے کہ تیرا خاتمہ ایمان پر ہوگا اور قیامت کے دن تیرے خالف تھے سے راضی ہوں گے۔ اور تیرے اور تیرے والدین اور اولاد کے گناہ معاف ہیں المخ ۔۔۔ (ایسناً)

گیار ہویں ذی انقعدہ کی تاریخ

اس تاریخ کو صفرت امام رضالظی کی ۱۹۷۱ جویش بمقام مدینه منوره ولادت با سعات و اقع ہموئی ہے اس لیے بیدون شیعیانِ علی کیلئے روحانی مسرت و شاومانی کا دن ہے لہذا اس میں اس امام عایم تنام کا جشن میلاد مناما چاہیئے اور حدو دشرع مقدس کے اندر رہتے ہوئے اپنی خوشی و کڑی کا اظہار کرما چاہیئے کیونکہ قانون قدرت اور آئین فطرت بیہے کہ ہرمحت صادق اپنے محبوب کی خوشی میں خوش اور اس کے فم میں غمنا کے ہوتا ہے۔

تيئىوي (٢٣) ذى القعده كادن

تحقیق قول کے مطابق سوم میں حضرت امام علی بن موکی القلیلا کی شہادت واقع ہوئی ہے اہذا بیدن محبانِ اہل ہیت کے لیے بڑے حزن و ملال کا دن ہے اس لیے اس میں امام القلیلا کی زیارت پڑھنی چاہیئے اور مجالس عزا کا انعقاد کر کے اپنے قلبی رنج وغم کا اظہار کرنا چاہیئے اور اس مظلوم امام کے مناقب و مصائب اور حالات زندگی بیان کر کے لوگوں کو ماجورومثاب ہونے کاموقع فراہم کرنا چاہئے۔

المادى القعده كى دا تداس كادن ا

(۱) یہ رات اور دن دونوں بڑے متبرک ہیں۔ محمد بن عبداللہ الفیقل بیان کرتے ہیں کہ ایک بار ۲۵ ذی القعد ہ کو حضرت امام رضا القایم بمقام مرو باہر تشریف لائے اور فر مایا: آج روزہ رکھو کیونکہ میں بھی آج روزہ سے ہوں۔ ہم نے عرض کیا: ہم آپ پر قربان ہوجا کیں۔ یہ کون سا دن ہے؟ فر مایا: یہ وہ دن ہے جس میں رحمت الہی نشر ہوئی۔ زمین کا فرش بچھایا گیا۔خانہ کعبرنصب کیا گیا اور حضرت آدم القلیم فرمین پر اتا رہے گئے۔

(كتاب الدعاد الزياره)

- (۲) حضرت امير المؤمنين الطيلائي مروى ہے، فرمایا: جوشن اس رات عبادت كرے اور اس دن روز ہ ركھے تو اے ایسے سوسال كی عبادت كا ثواب ملے گا جس كے دنوں ميں روز ہ ركھا جائے اور رات عبادت خدا ميں بسر كى جائے ۔۔۔ تا آخر روايت جوبڑے ثواب بے صاب پر مشتمل ہے۔ (الیفناً)
- (۳) اس دن کاروزہ سال کے ان چار دنوں میں ہے ایک ہے جس میں روزہ رکھنا ثواب میں ستر سال کے روزوں کے براہر ہے۔(مفاتیح البحان)
 - (۴) اس دن اس دعا كاير هنا جهي واردي:

ٱللُّهُمَّ دَاحِيَ الْكَعْبَةِ وَ فَالِقَ الْحَبَّةِ وَ صَارِفَ اللَّزْبَةِ وَ كَاشِفَ كُلِّ كُرُبَةٍ اَسُئَلُكَ فِي ﴿ ا الله! اے زمین کعبہ کے بچھانے والے دانے کوشگافتہ کرنے والے مختی دورکرنے والے اور ہر شکی ہے نکالنے والے سوال کرتا هٰذَا الْيَوُم مِنُ آيَّامِكَ الَّتِكَيُّعُظُمُتَ حَقَّهَا وَ ٱقُدَمُتَ سَبُقَهَا وَ جَعلْتَهَا عِنْدَ الْمُؤْمِنِيُنَ ہوں تھے سے اس دن میں جو تیر ہےان دنوں میں سے ہے ٹو نے جن کاحق عظیم قرار دیاان کے شرف کوبڑ ھایا ورانہیں مؤمنوں کے وَدِيْعَةً وَّ اِلَيُكَ دْرِيْعَةً وَّ بِرَحْمَةِكَ الْوَسِيْعَةِ اَنْ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبُدِكَ الْمُنْتَجَم پاس اپنی امانت بنایا اوراپنی جانب ذر ربعهٔ تشهرایا اور بواسطه تیری وسیع رحمت کے سوالی موں کدرحمت نا زل فرماا پنے بند ومحمد پر جو الْمِينَاقِ الْقَرِيْبِ يَوْمَ التَّلَاقِ فَاتِقِ كُلِّ رَتُقِ وَ دَاعِ اللَّي كُلِّ حَقِّ وَ عَلْي اَهُل بَيْتِهِ برگزیدہ بیں اور میثاق میں تیر سےز دیک تر بیں قیا مت میں برگرفقار کوچیٹر انے والے اور برحق کی طرف بلانے والے بین نیز رحمت الْاَطُهَارِ الْهُـدَاـةِ الْـمَنَارِ دَعَآئِمِ الْجَبَّارِ وَ وُلاَةِ الْجَنَّةِ وَ النَّارِ وَ اَعْطِنَا فِي يَوُمِنَا هَذَا مِنُ فرماان کے پاکیز دامل بیت پر جوج اغیرایت خدا کے بنائے ہوئے ستون اور جنت وجہم کے حاکم ہیں اور یہ کہ آج جما ری عید کے عَـطَآئِكَ الْمَخُزُون غَلِرَ مَقْطُوع وَلا مَمُلُوع تَاجُمَعُ لَنَا بِهِ اللَّوْلِهُ وَكُسُنَ الْا وُبَةِ يَا خَيْرَ روز جمیں اپنی عطاؤں کے خزانے سے وہ عطا کر جو بھی ختم نہ جواور نہایں سے روکا جائے اس کے ساتھ جمیں تو بیاورا چھی بازگشت بھی مَـدُعُـوٍّ وَّ ٱكُـرَمَ مَـرُجُـوٍّ يَّا كَفِيُّ يَا وَفِيُّ يَا مَنُ لَّطُفَّهُ خَفِيٌّ ٱلْطُفْ لِي بلُطُفِكَ وَ ٱسْعِدُنِي ۗ وےا ہے بہترین پکارے گئے اور مہریان تر امید کیے گئے اے پورا کرنے والےا ہے وفا کرنے والےا ہے وہش کا کرم نہال ہے بِعَفُوكَ وَ اَيَّدُنِيُ بِنَصُرِكَ وَلاٰ تُنُسِنِي كَرِيْمَ ذِكُركَ بِوُلاٰةِ اَمُركَ وَ حَفَظَةِ سِرِّكَ وَ ﷺ فَفُظُدِي ا پی کر بی سے مجھ پر کرم فرمااورا پی پر دہ پوشی ہے مجھے نیک بختی دےا پی نصر ہے سے مجھے تو ی کراور بواسطا پنے والیانِ امراورا پنے مِنُ شَوَايِبِ الدَّهَرِ إِلَى يَوُمِ الْحَشُرِ وَالنَّشُرِ وَ اَشُهِدُنِيَّ اَوُلِيٓ آذَكَ عِنُدَ خُرُوج نَفُسِي را زداروں کے مجھے اپنا ذکر ہا کے بھلانہ دے حشر ونشر کے دن تک مجھے زمانے کی تختیوں سے اپنی حفاظت میں رکھ زیارت کروا مجھے حُلُولِ رَمُسِيٌ وَ انْقِطَاعِ عَمَلِيُ وَانْقِضَآءِ اَجَلِيُ اَللَّهُمَّ وَ اذْكُرُنِيُ عَلَى طُولِ الْبِلِّي إِذَا ا ہے اولیاء کی اس وقت جب میری جان لگلے جب مجھے قبر میں اتا راجائے ، جب میرانمل بند جوجائے اور میری عمرتمام ہوجائے اے حَـلَلُتُ بَيُنَ اَطُبَاقِ الْثَراى وَ نَسِيَنِي النَّاسُوُنَ مِنَ الْوَراى وَ اَحُلِلْنِيُ دَارَ الْمُقَامَةِ وَ بَوَّئُنِيُ معبود! مجھے یا درکھنا جب مجھ پرلمبی مدے گز رجائے کہ میں زمین کی تہوں میں پڑا رہوں گااورلوگوں میں سے بھولنے والے مجھے بھول

***** مَنْزِلَ الْكَرَامَةِ وَ اجْعَلْنِي مِنْ مُّرَافِقِي اَوْلِيَآئِكَ وَ اَهْلِ اجْتِبَآئِكَ وَ اصْطِفَآئِكَ و بَارِكَ ﴿ إِنَّ الْمُ جا ئیں تب مجھے رہنے کی جگہ دےاور باعزت ٹھکا نہ عطا فرما مجھے اپنے اولیاء کے رفیقوں میں رکھاپنے منتخب افراد میں قرار دےاور فِيُ لِـقَـآئِكَ وَارُزُقُنِيُ حُسُنَ الْعَمَلِ قَبُلَ حُلُولِ الْاَجَلِ بَرِيْئًا مِّنَ الزَّلَلِ وَ شُوُ الْخَطَل ا ہے بہندید ہلوگوں میں داخل کراپی ملا قات میرے لیے مبارک کرموت سے پہلے اجھھا چھھا تال بعالانے کی توفیق و لے فزشوں ٱللَّهُــمَّ وَ اَوْرِدُنِـيُ حَوُضَ نَبِيَّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ وَاسْقِنِي مِنْهُ مَشُرَبًا رُّويًّ سے بچائے رکھاور ہرے کامول سے دورکرا مے معبو دا مجھے واردفر مااپنے نبی حضرت محمصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حوش کوژیراور پلا سَآئِغًا هَنِيْنًا لَّا آظُمَا بَعُدَهُ وَلَا أَحَلَّا ورُدَهُ وَلا عَنْهُ أَذَادُ وَاجْعَلُهُ لِي خَيْرَ زَادٍ وَ أَوُفَى اس میں سے سیری کے خوش مز دیا نی جو گوا را ہو کہان کے بعد نہ مجھے بیاس گے اور نہان سے رو کا جا وَل نہان سے ہٹایا جا وَل اور مِيُعَادٍ يَّـوُمَ يَقُوُمُ الْاَشُهَادُ اَللَّهُمَّ وَالْعَنُ جَبَابِرَةَ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ وَ بِحُقُوقِ اَوُلِيَآئِكَ اے میرا بہترتو شرقرار دے اس دن کے لیے جب وعدے کادن آپنچے گاا معبود العنت کر پہلے اور پچھلے تم گا راوگول براوران بر الْـمُسْتَـاُثِـرِيْنَ اللَّهُمَّ وَاقْطِمْ ذَعَائِمَهُمُ وَ الْهَلِكُ الشَّيَاعَهُمُ وَعَامِلُهُمُ وَعَجِلُ مَهَالِكُهُ جنہوں نے تیرے اولیاء کے حقوق غضب کیے اے معبود! تو ڑ دے ان کے سہارے اور ہلاک کر دے ان کے پیرو کا رول اور وَاسُلْبُهُ مُ مَّمَالِكَهُمُ وَ ضَيَّقُ عَلَيْهِمُ مَّسَالِكَهُمُ والْعَنُ مُسَاهِمَهُمُ وَ مُشَارِكَهُمُ اللَّهُمَّ وَ کارندول کواور جلدی کران کی بتاہی میں ان کی حکومتیں چھنے میں اور تک کر دے ان کے لیے راستے اور لعنت کران کے ہمکا رول اور عَجِّلُ فَرَجَ اَوُلِيَـآئِكَ وَارُدُدُ عَلَيْهِمُ مَّظَالِمَهُمُ وَ اَظُهِرُ بِالْحَقِّ قَآئِمَهُمُ وَاجُعَلُهُ لِدِيْنِكَ حصد دا روں پراے معبود! اپنے اولیاء کوجلد کشا دگی دے ان کے چھنے ہوئے حقوق واپس دلا قائم آل محمد کا جلد ظہور فر مااورانہیں اپنے مُنْتَصِرًا وَّ بِٱمُرِكَ فِيَاعُدَآئِكَ مُوْتَمِرًا اَللَّهُمَّ احْفُفُهُ بِمَلْآثِكَةِ النَّصَرِ وَبِمَآ اَلْقَيْتَ اِلَيْهِ دین کامد دگارا وراپنے اون سے اپنے ڈیمنوں پر مسلط فرما اے معبو د! ان کے اطراف میں نصر فرشتوں کو کھڑا کر دے اور شب قدر میں مِنَ الْاَمُرِ فِي لَيُلَةِ الْقَدُرِ مُنْتَقِمًا لَّكَ حَتَّى تَرُطٰى وَ يَعُوُدَ دِيْنُكَ بِهِ وَ عَلَى يَدَيُهِ جَدِيُكُمُ جوتکم تُونے ان کو دیا اس کے مطابق انہیں اپنی طرف سے بدلہ لینے والا قرار دے یہاں تک ٹو کہ راضی ہو تیرا دین ان کے ذریعے غَـضًا وَّ يَـمُـحَضَ الْحَقَّ مَحُضًا وَّ يَرُفِضَ الْبَاطِلَ رَفُضًا اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَيْهِ وَ عَلَى جَمِيْع بلیا آئے اوران کے ہاتھوں ٹی قوت وغلبہ بائے حق تلھر کرسا ہے آئے اور باطل پوری طرح مٹ جائے اے معبو دارحمت فرماا مام

(Fig)

ابَآئِه وَاجُعَلُنَا مِنُ صَحْبِه وَ أَسُرَتِه وَ ابْعَثْنَا فِي كَرَّتِه حَتَّى نَكُونَ فِي زَمَانِه مِنُ اعُوانِه فَي الْحَرَّيَاوان كَمَا مِن صَحْبِه وَ أَسُرَتِه وَ ابْعَثْنَا فِي كَرَّتِه حَتَّى نَكُونَ فِي زَمَانِه مِنُ اعْوَانِه فَي الْحَرَّيَاوان كَمَام يَر رُول يِ اور مُعِين ان كَ مَد وكارول اور ما تيول عَلَيْهِ وَ ارْدُدُ الْكُنَا سَلاَمَهُ وَ السَّلاَمُ عَلَيْهِ وَ الْدُهُ لِلنَّنَا سَلاَمَهُ وَ السَّلاَمُ عَلَيْهِ وَ الْدُهُ وَ النَّهُمُ اللهُ مَا اللهُ وَ السَّلاَم وَ السَّلاَم عَلَيْهِ وَ الْمُدُوكِ بِنَا قِيامَهُ وَ السَّلاَم عَلَيْهِ وَ الْمُدُوكُ الْكُنَا سَلاَمَهُ وَ السَّلاَم عَلَيْهِ وَ الْمُدُوكِ بِنَا قِيامَهُ وَ السَّلاَم وَ عَلَيْهِ وَ الْمُدُولُ اللهُ وَ اللهُ عَلَيْهِ وَ اللهُ عَلَيْهِ وَ اللهُ عَلَيْهِ وَ اللهُ عَلَيْهِ وَ الْمُؤْمَة عَلَيْهِ وَ السَّلاَم وَ السَّلاَم وَ اللهُ وَ الْمُؤْلِدُ وَ اللهُ وَالِهُ وَ اللّهُ وَاللّهُ وَ اللّهُ وَاللّهُ وَ اللّهُ وَاللّهُ وَ اللّهُ وَ اللّهُ وَاللّهُ وَلَا اللّهُ وَاللّهُ وَلَا اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ

ان پر اوران کی دعا ہم تک پہنچاا ورسلام ہوان پراوراللہ کی رحمتیں اور پر کتیں ہوں۔

SIBTAIN.COM

ذى الحجه كے مقدى مبينه كے اعمال كاتذكره

یہ بات کسی وضاحت کی مختاج نہیں ہے کہ اسلامی مہینوں میں ذی المجہ بڑی عظمت و جلالت والامہینہ ہے۔ قرآن مجید میں اس کی ابتدائی دل راتوں کی قتم کھائی گئی ہے اوران ایا م معلومات میں خاص طور پر عبادت اللی بجالانے کا تھم دیا گیا ہے۔ پیغیبر اسلام علی ہے مروی ہے کہ ان دنوں سے بڑھ کر اللہ کوکوئی دن محبوب نہیں ہے جس میں اس کی عبادت بجالائی جائے۔ یہی وجہ ہے کہ جب بلال ذی المجہ نابت ہوجاتا تھا تو صحابہ کرام اور تابعین عظام عبادت خدا کرنے میں خصوصی اہتمام کرتے تھے۔ بہر حال اس مقدس مہینہ کے اعمال دوقتم کے بیں۔ ایک وہ اعمال جومشتر کہ طور پر ان دی شب و روز میں بجالائے جاتے ہیں اور دومرے وہ اعمال جواس مہینہ کے خصوص اوقات کے ساتھ مختص ہیں۔ یہیں جروقتم کے اعمال جواس محبینہ کے حصوص اوقات کے ساتھ مختص ہیں۔ یہیں جروقتم کے اعمال میں ان کا اجمالاً تذکرہ میں۔

ماوذى الحجدك مشتركه اعمال كابيان

اوروه چنرامور بین:

- (۱) اس مہینہ کے پہلے دن کا روزہ رکھنا خدا کے نز دیک ای (۸۰) مہینہ کے روزوں کے ہراہر ہے۔اور جو ان پورے نو(۹) دنوں میں روزہ رکھے تو وہ ثواب میں صائم الدھر کے ہراہر ہے۔
- (۲) اس دیں دنوں میں نما زمغرب وعشا کے درمیان دو رکعت نماز اس طرح پریھی جائے کہ ہر رکعت میں الحمدا یک با رادرا الحمدا یک با رادراس کے بعد سورۂ قل ھواللہ احدا یک با رادرآ بیت مبارکہ

﴿ وَ وَاعَدُنَا مُوسَى ثَلَاثِيْنَ لَيُلَةً وَ اتُّمَمُناهَا بِعَشُرٍ فَتَمَّ مِيُقَاتُ رَبِّهَ اَرْبَعِيْنَ لَيُلَةً وَقَالَ

ورہم نے موی سے (توراہ مینے کیلئے) تمیں مانوں کا دھرہ کیا تھا اور اے مزید دی (رانوں) سے کمل کیا۔ اس طرح ان کے پر درگار کی مدے چالیس رانوں میں پوری ہوگئی اور

مُوسلى لِآخِيتُ و هُرُونَ اخْلُفُنِي فِي قَوْمِي وَاصْلِحُ وَلَا تَتَبِعُ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ﴾

جناب مول نے (کواطور پر جاتے وقت) اپنے بھائی ہادن سے کہاتم میری توم میں میر سے جانشین بن کر رہوادر اصلاح کرتے رہواور خبروار) مضدین کے راستہ پر نہ جانا۔

(۳) سید دعا نماز صبح کے بعد اور نماز مغرب سے پہلے پڑھی جائے جو کہ بروایت ابوحمز ہ ثمالی حضرت امام جعفر صاد**ق الطبیجائر ب**ڑھا کرتے تھے:

فَانُوْلُ عَلَيْنَا مِنُ بَرَكَاتِكَ وَ أَوُسِعُ عَلَيْنَا فِيْهَا مِنُ نَعُمَادِّكَ اَللَّهُمَّ إِنِّيُ اَسُئلُكَ اَنُ تُصَلَّ وَهَائَ مِينِ پُسَانَ دُول مِن جَم رِانِي برُكتِين ازل كراورا في نعتول مِن وسعت فرماا معبودا مَين سوال كرتا مول تحق سے كه

عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَ أَنُ تَهُدِينَا فِيها لِسَبِيلِ الْهُدَىٰ وَالْعَفَافِ وَالْعِنىٰ وَالْعَملِ فِيها رحت ان فرماسر كارتُدُّ وآل مُديراوريد كران دول من جارى رضائى كرراه بدايت، بإكداشى اورسير چشى كى طرف اوران من

بِمَا تُحِبُّ وَ تَوُطْهِى اَللَّهُمَّ إِنِّى اَسْتُلُکَ يَامَوُرُضِعَ کُلِّ شَكُوى وَيَاسَامِعَ کُلِّ نَجُوى بمیں اپنالپندیدہ عمل کرنے کا ویش دے اے معبودا میں سوال کرتا ہوں تھے سے اے برشکایت کی امیدگاہ اے برسر کوشی کے

وَ يَاشَاهِدَكُلِّ مَلَإٍ وَ يَا عَالِمَ كُلِّ خَفِيَّةٍ أَنْ تُصَلِّى عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَأَنْ تَكُشِفَ يَنْ والے اے ہر جماعت پر عاضر كوا واوراے ہر را زے جائے والے سوالی موں كدرجت ازل فر ماسر كا رُحَدٌ وآل مُحدِّ پراور يه كه

عَنَّا فِيهُا الْبَلاءَ وَتَسُتَجِيبُ لَنَا فِيهَا الدُّعَاءَ وَتُقَوِّيُنَا فِيهَا وَتُعِينَنَا وَ تُوَفِّقَنَا فِيهَا لِمَا تُحِبُّ ان دنول بن بم سے معیبت دورکران ایام بن جاری دعا قبول فر مااور قوت عطا کران دنول بن جمین اس عمل پر مدداور توفیق

رَبَّنَا وَتَسُوطُ مِي وَ عَلَى مَا افْتَرَ ضُتَ عَلَيْنَا مِنُ طَاعَتِكَ وَطَاعَةِ رَسُولِكَ وَ اَهُلِ وِلا يَتِهَكُ دے جس سے تو راضی ہے اور اس میں بھی کہ جو بطورا پنی اطاعت اور اپنے رسول اور اپنے اہل ولایت کی پیروی کے ہم پر فرض کیا

اَللْهُمَّ إِنِّى اَسُئَلُكَ يَا اَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ اَنُ تُصَلِّى عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنُ تَهَبَ لَنَا فَعَ اعْمَعُودا سوال كنا مول تحديدا عسب سے زیادہ رخم كرنے والے يہ كراتو رحت ازل فرما محمَّد وآل محمَّ براور يه كران ونوں

******************************** اللُّهُ نُوبِ يَا عَلَّامَ الْغُيُوبِ وَأَوْجِبُ لَنَا فِيُهَا دَارَالْخُلُودِ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلى مُحَمَّدٍ وَ آل ہمارے گنا ہ دھو ڈال اے نیمیوں کے جانے والے اوران دنوں ہمارے لیے بیکٹگی والی جنت وا جب کردےا ہے معبو دا رحمت نا ز**ل** مُـحَمَّدٍ وَلاٰ تَتُرُكُ لَنَا فِيُهَا ذَنُبًا إِلَّا غَفَرُتَه ۚ وَلاَهَمَّا إِلَّا فَرَّجْتَهُ وَلاَدَيْنًا إِلَّا قَضَيْتَهُ وَلاَ غَائِبًا فرمامحمدٌ وآل محمدٌ پراور بهارا کوئی گناه ندرہے دے گریہ کہتو اسے بخش دے ندکوئی اندیشہ گریہ کہتو اسے دورکر دے ندکوئی قرض گر إِلَّا اَدُنَيْتُهُ وَلاَ حَاجَةً مِنُ حَوَائِجِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ إِلَّا سَهَّلْتَهَا وَيَسَّرُتَهَا إِنَّكَ علىٰ كُلِّ یہ کہ تو اسے ادا کرا دے نہ کوئی تمشدہ چیز تگریہ کہ تو دلوا دےاور نہ دینا اور آخرے کی کوئی حاجت ہا تی ہو تگریہ کہ تو اسے پو را فرمائے شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللَّهُمَّ يَاعَالِمَ الْخَفِيَّاتِ يَارَاحِمَ الْعَبَرَاتِ يَامُحِيْبَ الدَّعَوَاتِ يَارَبَّ اورآ سان کردے بے شک قو ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے اے معبودا اے چھپی چیزوں سے واقف اے کرتے آنسووں پر رحم کھانے الْارَضِينُنَ وَالسَّمْوَاتِ يَامَنُ لَا تَتَشَابَهُ عَلَيْهِ الْاَصُوَاتُ صَلَّ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ والے اے دعائمیں قبول کرنے والے اے زمینوں وآسانوں کے پروردگاراے وہ جس کو آوازیں شبہ میں نہیں ڈال سکتیں رحمت فرما وَاجُعَلْنَا فِيُهَا مِنُ عُنَقَائِكِ وَظُلَقَائِكَ مِنَ النَّارِ وَالْفَائِرِينَ بِخُدِيكَ وَالنَّاجِينَ بِرَحُمَةِ سرکار محد و آل محد میراوران دنول میں جمیں اپنی طرف سے آتش جہم سے آزاد کیے اور رہا کیے ہوئے قرار دے نیز اپنی جنت میں واخل يَا أَرْحَهُ الرَّاحِمِيُنَ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَىٰ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ أَجُمَعِيُنَ ﴾ ـ شدہ او رنجات یا فیٹٹا رکراپی رحمت ہے اے سب سے زیا وہ رخم کرنے والے او رحد ارحمت فرمائے ہمارے سر دار حضرت محمداً وران کی سماری آل پر۔ ان ایام میں روزانہ دیں ہار میہلیل پڑھی جائے جو حضرت امیر الطابی سے مروی ہے: ﴿ لَا إِلَّهَ إِلَّا اللَّهُ عَدَدَ اللَّيَالِي وَاللَّهُ هُورٍ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ عَدَدَ اَمُوَا جِ الْبُحُورِ لَا إِلَّهَ إِلَّا اللَّهُ خییں معبود سوائے اللہ کے راتوں اور زبا توں کی تعدا دمیں خییں معبود سوائے اللہ کے سمندروں کی اجروں کی تعدا دمیں خییں معبود سوائے اللہ کے

وَ رَحُمَتُ اللَّهُ حَيُرٌ مِمَّا يَجُمَعُونَ لاَ إِللَهَ إِلاَّ اللَّهُ عَدَدَ الشَّوُكِ وَالشَّجَرِ لاَ إِللَهَ إِلاَّ اللَّهُ عَدَدَ الشَّوُكِ وَالشَّجَرِ لاَ إِللَهَ إِلاَّ اللَّهُ عَدَدَ السَّعُو وَاللَّهُ عَدَدَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَدَدَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللهُ إِلَّهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَدَدَ اللهُ عَدَدَ اللَّهُ عَدَدَ اللَّهُ عَدَدَ اللَّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَدَدَ اللهُ ا

&**********************************

إلا الله في الله إلا الله عَسْعَسَ وَ فِي السَّبُحِ إِذَا تَنَفَّسَ لاَ إِلهَ إِلاَ اللهُ عَدَدَ الرِّيَاحِ الله الله عَدَدَ الرِّيَاحِ الله أَلِي الله عَدَدَ الرِّيَاحِ الله عَدَدَ الرِّيَاحِ الله عَدَدَ الرِّيَاحِ الله عَدَدَ الله عَدَدَ الرِّيَاحِ الله عَدَدَ الله عَدَدَ الله عَدَدَ الله عَدَدَ الله عَمَا الله عَدَدَ الله عَمَا ال

فِی الْبَرَادِیُ وَالسَّخُورُ لَا اِلْـهَ اِلَّا اللَّـهُ مِنَ الْیَوْمِ اِلْی یَـوُمِ یُنْفَخُ فِی الصَّوْرِ ﴾۔ بیابانوں اور صحرائل کی تعداد میں نہیں معود سوائے اللہ کے آج سے صور پھوتکنے کے دن کک کے دنوں میں۔

ال مقدى مبينك اعمال مخصوصه كالذكره

سانؤیں ذی الحجہ

اس تاریخ کو سم 9 ہے میں بمقام مدینہ منورہ حضرت امام محمد باقر الطبی کی شہادت واقع ہوئی اس لیے میں بہان کے میں بمقام مدینہ منورہ حضرت امام محمد باقر الطبی کی شہادت واقع ہوئی اس لیے میں جہان آل محمد علیہ السلام کے لیے رنج وغم کا دن ہے البندا اس میں مجالس عزا کا انعقا دکر کے اپنے مظلوم امام کے سوگ میں اپنی سو کواری کاعملی ثبوت پیش کرنا جا بہئے ۔

SIBTAIN COM

میتر وید کا دن ہے۔اس دن خصوصی طور پر روز ہ رکھنے کی بڑی فضیلت وار دہوئی ہے۔

نویں ذی الحجہ کی رات

یدرات بڑی باہر کت اور عظمت والی رات ہے اور قاضی الحاجات سے دعاو مناجات کرنے کی رات ہے۔جس میں عبا دت خدا میں شب بیداری کرنے کی بڑی فضیلت وار دہوئی ہے۔اس رات خصوصی طور پر چند عمل بجالانے کی تاکیدوار دہوئی ہے۔

- (۱) وعائے اللّٰهم من تعبأ و تھيأ... النع جوشب جمعہ كے ائمال ميں گزرچكى ہے وہ پڑھى جائے۔
- (٢) دعائے اللّٰهم يا شاهد كل نجوى ... والى طويل وعريض اور عظيم دعارياهى جائے جوشب جمعه كى
 - دعاؤں میں گزرچکی ہے۔
- (٣) حضرت امام حسین الطای کی خصوصی زیارت براهی جائے جو با ب الزیارات میں ذکر کی جائیگی انتا ءاللہ۔

نوي ذى الحجر يعنى عرفه كاون

نویں ذی الحجہ کا دن بڑا عظیم الثان دن ہے اورخدا کی عبادت واطاعت کامخصوص دن ہے۔اس میں خدانے اپنے بندوں کواپی عبادت کی طرف بلایا ہے اوران کے لیے جودوسخا اورفضل و کرم کا دسترخوان بچھایا ہے۔اورشیطان کوراند کا بارگاہ بنایا ہے۔ بیخدا سے دعاو پکاراورراز و نیاز کرنے کامخصوص دن ہے اوراس میں بہت ہے کمل وارد ہوئے ہیں۔ ہم ذیل میں چندا ہم اعمال کا تذکرہ کرتے ہیں۔

- (۱) عنسل كرما جوكة سنت مؤكده إوربهتر ب كهزوال آفتاب كوفت كياجائ -
- (۲) روزہ رکھنا جیسا کہ بل ازیں ذی المحبہ کے مشتر کہ اٹمال میں گزر چکاہے ۔ بعض روایات میں وارد ہے کہ اس دن روزہ رکھنے کا استحباب اس شرط ہے مشروط ہے کہ آ دمی کے لیے دعاو مناجات سے کمزوری کا باعث نہ ہو۔۔
- (٣) حضرت امام حسین القایم کی زیارت کرنا جس کاعظیم ثواب منقول ہے اور کی جے وعمرہ کے ہراہر ہے۔

 بکٹر ت روایات میں وارد ہے گہا جا ما مالی مقام القایم کے قبہ شریفہ کے تحت قیام کرنے والے کا ثواب مقام
 عرفات میں قیام کرنے والوں ہے کم نہیں ہے۔ مگریہ بات ملحوظ رہے کہ یہ ثواب اس شرط کے ساتھ مشروط ہے
 کہ آدی پر جے واجب نہ ہو یا اگر واجب ہوتو وہ اسے اوا کر چکا ہو۔ آج کے دن کی مخصوص زیارت باب
 الزیارات میں آئے گی انشاء اللہ۔
- (۴) ظہر وعصر کی نماز زیر آسان پورے آ داب و مستجبات کے ساتھ بجالائے اوراس کے بعد دور کعت نماز باس سے بعد ایک ہارسور ہوئے ہوئے کہ پہلی رکعت میں الحمد کے بعد ایک ہارسور ہوئے تو حیداور دوسری رکعت میں الحمد کے بعد ایک ہارسور ہوئے و حیداور دوسری رکعت میں الحمد کے بعد ایک ہارسور ہوئے و خدا اس کے گناہ معاف کروے گا جیسا کہ حضرت امام جعفر صادق الطبیح ہے مروی ہے۔ (کتاب الدعاء)
 - (a) عرفہ کے دن یہ دعاریاهی جائے جو کہ حضرت امام جعفر صادق القابلات مروی ہے:

﴿ لا إِلَّهَ إِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لا شَرِيُكَ لَهُ لَهُ الْمُلُكُ وَ لَهُ الْحَمُدُ يُحْيِيُ وَ يُمِينُ وَ هُوَ

تَـقُـوُلُ وَ خَيْـرً مِـمًا نَـقُـوُلُ وَ فَـوُقَ مَا يَـقُـوُلُ الْقَائِلُونَ اللّٰهُمَّ لَكَ صَلوتِي وَ نُسُكِي

وَ مَحْيَاىَ وَ مَمَاتِي وَ لَكَ بَرَآئَتِي وَ لَكَ حَوْلِي وَ مِنْكَ قُوَّتِي اَللَّهُمَّ اِنِّي اَعُوْذُ بِي

مِسنَ الْسَفَسَةُ رِوَمِنُ وَسُوَاسِ السَّدُرِ وَمِنُ شَسَّاتِ الْاَمُرِ وَمِنُ عَذَابِ الْقَهُرِ

اَللّٰهُمَّ إِنِّى اَسْئَلُكَ خَيْرَ الرِّيَاحِ وَ اَعُوٰذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا يَجِينُ بِهِ الرِّياحُ وَ

ٱسْئَلُکَ خَيْرَ اللَّهُ إِلَى النَّهُ إِلَى اللَّهُ اللَّ

نُورًا وَ فِي لَحْمِي وَ عِظَامِي نُورًا وَ فِي عُرُوقِي وَ مَقْعَدِى وَ مَقَامِي وَ مَدْخَلِي وَ

مَخُرَجِي نُورًا وَ اَعْظِمُ لِي نُورًا يَا رَبِّ يَوُمَ الْقَاكَ اِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَلِيمُو

(۲) ہیہ دیں تنبیجات پڑھی جائیں جو کہ حضرت رسول خدا اللہ ہے مروی ہیں اور جناب سید ابن طاؤوں آ دستہ سیات میں میں میں دوریں بینڈ وریس میں اور دوریں اور میں ایک میں جہ سرو ڈی و ویس بینڈ وریس

ن كتاب الاقبال من درج كى بين: ﴿ سُبُحَانَ اللَّذِي فِي السَّمَآءِ عَرُشُهُ سُبُحَانَ الَّذِي فِي

پاک ہے وہ خداجس کاعرش آسان میں ہے پاک ہے وہ خداجس کا تھم زمین میں

الْاَرُضِ حُكُمُهُ سُبُحَانَ الَّذِي فِي الْقُبُورِ قَضَاؤُهُ سُبُحَانَ الَّذِي فِي الْبَحْرِ سَبِيلُهُ سُبُحَانَ رواں ہے پاک ہے وہ خدا جس کا فیصلہ قبروں میں نافذ ہے پاک ہے وہ خدا جس کا دریا میں راستہ ہے پاک ہے وہ خدا جو

الَّـذِيُ فِي النَّارِ سُلُطَانُهُ سُبُحَانَ الَّذِي فِي الْجَنَّةِ رَحُمَتُهُ سُبُحَانَ الَّذِي فِي الْقِيامَةِ عَدُلُهُ ہم پر اختیار رکھتا ہے پاک ہے وہ خدا جنت میں جس کی رحمت ہے پاک ہے وہ خدا قیامت میں جس کا عدل ہے سُبُحَانَ الَّذِي رَفَعَ السَّمَآءَ سُبُحَانَ الَّذِي بَسَطَ الْآرُضَ سُبُحَانَ الَّذِي لا مَلُجَا وَلا یا ک ہے وہ خداجس نے آسان بلند کیا ہا ک ہے وہ خداجس نے زمین بچھائی یا ک ہے وہ خداجس سے پنا ہ و نجات نہیں گر مَـنُجَا مِنُهُ اِلَّا اِلَيُهِ ﴾ ـ پجرسوم تبہ كے: ﴿ سُبُحَانَ اللَّهِ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ وَلاَ اِللَّهَ اللَّهُ وَاللَّهُ الله بإك ہے اللہ ہى كے لئے حمد ہے نہيں كوئى معبود سوائے اللہ كے اور اللہ الكُبَوُّ ﴾ - نيز سوره توحيد و آيت الكرى اورصلوات سوسوم تنبه يراهي، پھر دَل مرتنبه كيے: ﴿ لاَ إِلْكَ وَالْكَ اللَّهُ وَحُدَهُ لاَ شَرِيُكَ لَهُ لَهُ الْمُلُكُ وَ لَهُ الْحَمُدُ يُحْيِيُ وَ يُمِينُتُ وَيُمِينُتُ وَيُحِييُ وَهُوَ حَيًّ اللہ کے وہ یکتا ہے کوئی اس کا ٹانی نہیں اس کے لیے حکومت اور حمد وہ زندہ کرتا ہے اور موت دیتا ہے اور موت دیتا اور زندہ کرتا ہے يَـمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْعٍ قَدِيْرٌ - ورس حريك ﴿ أَسْتَغُفِرُ اللَّهَ الَّذِي الْ اوروہ ایسازند ہے جےموت نہیں اس کے ہاتھ میں ہے بھلائی اوروہ ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے۔ سمجھش جا ہتا ہوں اس اللہ سے

الله والله هُو الْحَدِيُّ الْفَيْسُومُ وَ اَتُوْبُ اللهِ ﴾ -اوردن مرتبه كي: ﴿يَا اللهُ ﴾ -دن مرتبه كي: كَنْبِينَ كُولَ مَعُودَ مَرُوى جَوزنده وبإئنده إورئين اس كے حضورة بكنا مون الله

﴿ يَا رَحُمْنُ ﴾ وَلَ مُرتبكِ : ﴿ يَا رَحِيهُ ﴾ وَلَ مُرتبكِ : ﴿ يَا بَدِيْعَ السَّمْوَاتِ وَ الْآرُضِ يَا الدين عَمِران اللهِ اللهُ الله

ذَا الْعَلَالِ وَ الْإِكْرَامِ ﴾ وَل مرتبركِ: ﴿ يَا حَيَّ يَا قَيُّوهُ ﴾ وَل مرتبركِ: ﴿ يَا حَسَّانُ يَا اللَّهِ اللَّهُ ال

مَنَّسانُ ﴾ -وَل مرتبہ كي: ﴿ يَسا لَأَ إِلْسهَ إِلاَّ أَنْستَ ﴾ -وَل مرتبه كي: ﴿ اهِيْسنَ ﴾ - يَهربيد كي: اے احسان والے اے كہ نبيل كوئى معبود سوائے تيرے

اَللَّهُمَّ إِنِّيُ اَسْتَلُکَ يَا مَنُ هُوَ اَقُوَبُ اِلَيَّ مِنُ حَبُلِ الْوَرِيْدِ يَا مَنُ يَّحُولُ بَيُنَ الْمَرُءِ وَ قَلْبِهِ يَ اے معبود! حال کرتا ہوں تھے سے اے وہ جوشہ رگ سے زیادہ میر ہے قریب وز دیک ہے اے وہ جوانیا ان اوراس کے دل کے

مَنُ هُوَ بِالْمَنْظَرِ الْآعُلَى وَ بِالْآفُقِ الْمُبِينِ يَا مَنُ هُوَ الرَّحُمْنُ عَلَى الْعَرُش اسْتَواى يَا مَنُ درمیان حاکل ہوجاتا ہےا ہے وہ جو بلند مقام اور واضح افق میں ہےا ہے وہ جو بڑ ہے رحم والا ہےا ورعرش پر مسلط ہےا ہے وہ جس لَّيُسَ كَمِشُلِهِ شَيُّةً وَّ هُوَ السَّمِينُعُ الْبَصِيْرُ اَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ کی مثل کوئی چیز نہیں ہے اور وہ سننے و کیلنے والا ہے سوال کرنا ہوں تھھ سے کہ رحمت نا زل فرما سرکار محمد و آل محمد پر۔ بعدازاں اپنی حاجت طلب کرے کیانشاء اللہ یوری ہوگی۔ (٤) يصلوات يراهي جوكه حضرت امام جعفرصا دق الطي الم عمروي ب: ﴿ ٱللَّهُ مَّ يَاۤ اَجُودَ مَنُ اَعُطٰي وَ يَا خَيُرَ مَنُ سُئِلَ وَ يَاۤ اَرُحَمَ مَنِ اسُتُرُحِمَ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى ا باللہ! اے بہت زیا وہ عطا کرنے والے اے سب سے بہتر سوال شدہ اور اے سب سے زیادہ رحمت کرنے والے ا سے اللہ مُحَمَّدٍ وَ آلِهِ فِي الْاَوَّلِيُنَ وَ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آلِهٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ وَ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ رحمت نا زل فر ماحفزے محمد کیا وران کی آل پر پہلوں کے ساتھا ور رحمت نا زل کرحفزے محمد اوران کی آل پر پیچپلوں کے ساتھا ور آلِهِ فِي الْمَلَاءِ الْآعُلَى وَ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدِ وَ آلِهِ فِي الْمُرُسَلِينَ اَللَّهُمَّ اعْطِ مُحَمَّدًا وَ اللَّه رحمت نا زل كرحفزت محدًا وران كي آل برعالم بإلا مين اوررحت نا زل كرحفرت محدًا وران كي آلٌ برمرسلول كے ساتھ اے اللہ! الُوَسِيُلَةَ وَاللَّهَ ضِيلَةَ وَالشَّرَفَ وَ الرِّفَعَةَ وَ الدَّرَجَةَ الْكَبِيرَةَ اَللَّهُمَّ إِنِّي امَنْتَ بِمُحَمَّدٍ عطا كرسر كارمحد وآل محد كوذرايعه ووسيله بروائي بزرگى بلندى اور بهت بروا درجه ومقام اسالله! بي شك مين ايمان لايا هول حضرت صَـلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ اللهِ وَلَمُ اَرَهُ فَلا تَحُرمُنِي فِي الْقِيامَةِ رُوِّيَتَهُ وَ ارُزُقُنِي صُحُبَتَهُ وَ تَوَقَّنِي محمصلی الله علیہ وآلیہ یراورانہیں دیکھانہیں ہی قیا مت میں مجھے ان کے دیدار سے محروم ندر کھنااوران کی صحبت نصیب کرنا نیز مجھے عَلَى مِلْتِهِ وَ اسْقِنِيُ مِنْ حَوُضِهِ مَشْرَبًا رُّويًا سَائِغًا هَنِيْئًا لاَّ اَظُمَأَ بَعُدَهُ اَبَدًا إِنَّكَ عَلَى كُلَّ ان کے دین برموت دے ان کے حوض کور میں سے پانی پلانا جو سیر کردینے والاخوش مزہ وشیریں ہو کہاں کے بعد میں بھی پیاسا ندہوں شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللَّهُمَّ إِنِّي امَنُتُ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ اللهِ وَلَمُ اَرَهُ فَعَرَّفُنِي فِي الْجَنَان بے شک تو ہر چیز پر قدرت رکھتا ہےا ہے اللہ! بے شک میں ایمان لایا ہول حضرت محد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر اورانہیں و یکھانہیں وَجُهَاهُ اَللَّهُمَّ بَلِّعُ مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ مِنِّي تَحِيَّةً كَثِيْرَةً وَ سَلامًا ع پس جنت میں مجھےان کی پیجان کرا دیناا سےاللہ! پہنچا دے حضرت محد صلی اللہ علیہ وآلہ کومیری طرف سے بہت بہت آ واب اور سلام _

(9) ای طرح وہ طویل دعائے عرفہ پڑھی جائے جو حضرت امام زین العابدین الظی الا پڑھا کرتے تھے جو کہ صحیفۂ کاملہ کی سینمالیسویں (۴۷) دعا ہے اور چونکہ بید دعا بھی بہت طویل ہے لہٰذا اسے بھی یہاں نقل کرنے کی سینمالیسویں (۴۷) دعا ہے اور چونکہ بید دعا بھی بہت طویل ہے لہٰذا اسے بھی یہاں نقل کرنے کی شخاکش نہیں ہے۔ جن حضرات کو اس کے پڑھنے کی خدا تو فیق عطا فرمائے وہ صحیفۂ کاملہ کی طرف رجوع فرمائیں۔

(۱۰) جس قدر ہو تکے اپنے اور اپنے دینی بھائیوں کے لیے دینی اور دنیوی معاملات کے لیے بکثرت دعا کرے۔

(۱۱) اس دن کے آخری حصد میں بید دعارا هے:

يَا رَبِّ إِنَّ ذُنُوبِي لا تَنضُرُّكَ وَ إِنَّ مَغُفِرَتَكَ لِي لا تَنْقُصُكَ فَاغْطِنِي مَا لا يَنْقُصُكُ

ا بروردگار بے شک میر ہے گیا ہ تھے نقصان نہیں دیتے اور یقینا مجھے بخش دینے سے ہرگز کوئی کی ٹیس پڑتی ہیں مجھے عطا کر کہاں سے تھے

وَاغُفِوْ لِي مَالاً يَضُوُّكَ - پَريه وعا بَهِي رِبُّ هے: ﴿ اَللّٰهُ مَّ لا تَـحُوِ مُنِي خَيْرَ مَا عِنُدَكَ لِشَرِّ مَا كَيْرِ مَا عِنُدَكَ لِشَرِّ مَا كَيْرِ مَا عِنُدَكَ لِشَرِّ مَا كَيْرِ مَا يَكُو مِن مَر بِهِ مِن اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَيْ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰمِ اللّٰمُ الل

عِنْدِی فَانُ اَنْتَ لَمُ تَرُحَمُنِی بِتَعَبِی وَ نَصَبِی فَلا تَحْرِمُنِی اَبُو الْمُصَابِ عَلَی مُصِیبَتِهِ۔ عِنْدِی فَان اَنْتَ لَمُ مَرْحَ مُنِی بِتَعَبِی وَ نَصَبِی فَلا تَحْرِمُنِی اَبُورَ مُنِی اَبُورِ مَنْ مُنْ اِللهُ عَلَی مُصِیبَتِهِ۔ جو میں نے کی پس اگرتونے بھے اس رنج اور تکلیف میں جھ پر رقم نیس کیا تو بھے اس شخص بھے اور سے دوم ندفر ماجس نے فی پر تی جھیل ہے

(۱۲) نیز آج حضرت امام حسین الظیلا کے وکیل جناب مسلم بن عقیل الظیلا اوران کے میز بان ذی شان جناب ہائی بن عروہ کی شہادت کا دن ہے جس ہے مجانِ اہل ہیت کے رنج وغم نازہ ہوتے ہیں لہذا آج کے دن ان مظلوموں کے مراسم عزامھی بجالانے چاہئیں۔

^

وموين ذى الحجه كى رات يعنى عيد الاضخى كى رات

یدرات سال کی ان چار راتوں میں سے ایک ہے جن میں عبا وت خدامیں بیداری کرنامستحب ہے۔ اس رات حضرت امام حسین النا کی زیارت کرنا اور دعائے ﴿ یَا دَائِمَ اللّٰفَ صُلّ عَلَى الْبُوِیَّةِ ﴾ پڑھنامستحب ہے جو کہ شب جمعہ کے اعمال میں گزرچکی ہے۔فواجع۔

وموين ذى الحجه كاون لعنى عيد الاصحىٰ كاون

بیدون مسلمانوں کی دوسری بڑی اسلامی عید (عیدالاضحٰ) کا دن ہے اور بڑی عظمت و جلالت والا دن ہے اوراس میں چندعمل مستحب ہیں:

- (۱) عنسل عيد كرما جوكه سنت مؤكده ٢-
- (۲) جولوگ منی میں ہوں وہ پندرہ نمازوں کے بعد یعنی عید قربان کے دن نمازظہر سے لے کرتیر ہویں ذی المجبد کی نمازظیر سے لے کرتیر ہویں ذی المجبد کی نمازظیر سے ہار ہویں ذی المجبد کی نمازظیم سے ہار ہویں ذی المجبد کی نمازظیم تک میں تکبیرات پڑھیں :

هَدَانَاۤ اللّٰهُ اكْبَرُ عَلَى مَا رَزَقَنَا مِنُ بَهِيْمَةِ الْانْعَامِ وَ الْحَمُدُ لِلّٰهِ عَلَى مَا اَبُلانَا ﴾ -

ہمیں ہدا ہے وی اللہ ہز رگعر ہے کراس نے ہمیں روزی دی ہے زبان جو بایوں میں سے اور حمر ہے اللہ کیلیج کراس نے ہماری آ زماکش کی۔

- (۳) نمازعید قربان پڑھی جائے جس کی کیفیت اور دیگر متعلقہ احکام کے لیے ہماری فقہی کتاب''قوانین الشریعۂ'' کی طرف رجوع کیا جائے۔
- (٣) نمازعير بهلي باس كيعد صحيفة كالمدكى اثناليه وين دعا يرهى جائے جو ﴿ اللَّهِم هـذا يـوم مبارك و المسلمون فيه مجتمعو ﴾ تشروع بوتى جاور ﴿ وصل ذلك بخير الاخرة و العيمها يا ارحم الواحمين ﴾ يرخم بوتى بــ

نیز جب نمازعید پڑھنے کے لیے گھرے لکنے لگے تو یہ دعا پڑھے جو کہ حضرت امام محمد باقرالط اللہ سے

- (۵) قربانی کرما جوکہ جاج کے لیے بمقام منی واجب ہے اور عام اہل ایمان کے لیے عام شہروں میں سنت مؤکد دے۔
- (۲) حضرت امام حسین الطایع کی مخصوص زیارت کرما اور براهنامتحب ہے جو کہ باب الزیارات میں بیان کی جائے گی انشاء اللہ۔
 - لعض اٹا رکے مطابق اس موقع پر دعائے ندبہ کاپڑ ھنا بھی وارد ہے۔

بدر موين ذي الحجد كاون

اس دن الالاج میں بمقام مدینه منوره حضرت امام علی نقی الفیلا کی ولادت باسعادت واقع ہوئی ہے۔ لہذا محبانِ خاندان نبوت کے لیے بیدون مسرت وشادمانی کادن ہے۔اس لیے اس دن میں امام الفیلا کاجشن

اشاره ذی الحجہ کا ون عید غدیر کا ون ہے جو خاندان نبوت اوران کے محبول کے لیے تمام اسلامی عیدوں سے بڑی عید سعید ہے چنانچے عبدالرحمٰن بن سالم اپنے والد (سالم) ہے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے حضرت امام جعفر صا دق الطبی ہے ہو چھا کہ آیا جمعہ عید الفطر اور عیدالاضی کے علاوہ بھی مسلمانوں کی کوئی عید ہے؟ فرمایا:
ہاں ایک اور عید ہے جو ان عیدوں سے بھی زیا وہ عزت و تو قیر کی حامل ہے! راوی نے عرض کیا کہ وہ کون کی عید ہے؟ فرمایا: وہ اشارہ ذی الحجہ کا دن ہے جس میں حضرت رسول خدا میں نے حضرت علی الطبی کا با زوتھا م کراور ﴿ مَن سُلُ مُن سُلُ مُن اللّٰ اللّٰ اللّٰ کہ اللّٰہ اللّٰ اللّٰ کہ اللّٰہ کی عباوت کرواور رس کا رحمد و الدیت کا اعلان کیا تھا۔ راوی نے عرض کیا کہ میں اس دن کیا عمل کروں؟ فرمایا: اللّٰہ کی عباوت کرواور رس کا رحمد و آل محمد (عیبم السلام) پر ورد دوسلام بھیجو۔
میں اس دن کیا عمل کروں؟ فرمایا: اللّٰہ کی عباوت کرواور رس کا رحمد و آل محمد (عیبم السلام) پر ورد دوسلام بھیجو۔

اس دن چند عمل بجالا مامتحب بين:

(۱) عنسل كرنا _ بهتر ب كدزوال سي آ ده گفته بهلي كياجائ اور دو ركعت نماز (شكرانه) پرهي جائے

اگرچہ بینمازاس دن ہرونت رہھی جا سکتی ہے مگر بہتر ہے کہ زوال کے نز دیک رہھی جائے کیونکہ بہی وہ وقت ہے جس میں پیغیبراسلام 🗱 نے حضرت امیر الطاب کی خلافت کا اعلان کیا تھا۔ پہلی رکعت میں الحمد کے بعد سور ہ انا انزلناہ اور دوسری میں الحمد کے بعد سورہ تو حید پڑھے بہر حال سلام کے بعد سجدہ میں جا کرایک سوہا رہ شکھ ًا ا شُكُوًا ﴾ كم اور پهرسرا شاكريد دعايز هے: ﴿ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمُدَ وَحُدَكَ لاَشَرِيُكَ لَكَ وَ ٱنَّكَ وَاحِدٌ اَحَدٌ صَفَّمَدٌ لَمُ ا معبودا سوال كنا مول جھ سے اس ليے كه تير بي ليے حمدتو تنها ہے تيرا كوئى ساجھى نييں اور يدكه يكانه يكرا بي نياز ہے نه تَلِـدُ وَلَمْ تُولَدُ وَ لَمْ يَكُنُ لَكَ كُفُوًا اَحَدٌ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُكَ وَرَسُولُك صَلَوَاتُكَ تو نے جنا نہ بی تو جنا گیا اور نیس ہے تیرا کوئی جمسراور یہ کر حضرت محمد تیرے بندےاور تیرے رسول ہیں تیری رحمت ہوان پر اور ان کی وَ آلِهِ يَا مَنُ هُوَ كُلُّ يَوُمِ فِي شَأَن كَمَا كَانَ مِنُ شَأَذِكَ اَنُ تَفَضَّلْتَ عَلَيَّ بِاَنُ جَعَلْتَنِي مِنُ آل رہا ہےوہ جو ہر روزکسی نے کام میں ہے جو تیری شان کے لائق ہے یعنی تو نے مجھ پر فضل و کرم کیا اس طرح کے قرار دیا مجھ کوان میں اَهُـلِ اِجَـابَةِكَ وَ اَهُـلِ دِيُنِكُ وَ اَهُلُ دَعُورٌ كَ وَ وَقُفُتِنِي لِذَا الْكَوفِي مُبُتَدَءِ خَلُقِي تَفَعِيلًا جن کی دعا قبول فرمائی جو تیرے دیں پر ہیں جو تیرے پیغام کے حامل ہیں اور بھے میری پیدائش کے آغاز میں اس کی تو فیق دی اپنی مهر بانی مِنُكَ وَكَرَمًا وَجُوْدًا ثُمَّ اَرُدَفُتَ الْفَصْلَ فَضُلاً وَالْجُوْدَجُوْدًا وَالْكَرَمَ كَرَمًا رَأْفَةً مِنُكَ عنایت اورعطا ہے پھرتو نے متواتر مہر بانی پرمہر بانی عطا پرعطا اورنوازش پر نوازش کی اپنی محبت اور رحمت سے ہے اس وقت تک کرتا زہ کیا رَحْمَةً اِلَى اَنُ جَدَّدتَّ ذَالِكَ الْعَهْدِ لِيي تَجْدِيُدًا بَعُدَ تَجْدِيُدِكَ خَلْقِي وَكُنُتُ نَسُةٌ میرے لیے بندگی کا بیرعمد پھرے جب میری تی پیدائش ہوئی تب میں بھولا بسرا بھولتے والا بے دھیان بے خبر تھاتو نے اپی نعمت تمام کرتے مَنْسِيًا نَاسِيًا سَاهِيًا غَافِلاً فَٱتُـمَـمُتَ نِعُمَةَكَ بِٱنْ ذَكُّرُ تَذِي ذَالِكَ وَ مَنَنْتَ بِهِ عَلَيُّ ہوئے مجھے وہ عہد یا دولا دیا اور یوں مجھ پراحسان کیا اور اس کی طرف میری رہنمائی کی پس یہ تیری بی شان کر بی ہےا ہے میرے معبود وَهَــدَيْتَذِيْ لَهُ ۚ فَلْيَكُنُ مِنُ شَأْذِكَ يَاالِهِي وَسَيِّدِيُ وَمَوْلَايَ اَنُ تُتِمَّ لِيُ ذَالِكَ وَلاَ تَسُلُبُنِيهُ میرے سردا راور میرے مالک کرای عہد کوانجام تک پہنچائے اے مجھ سے جدا نہ کرے یہاں تک کرای پر مجھے موت دے جبکہ تو مجھ سے حَتَّىٰ تَتَوَفَّينِيُ عَلَىٰ ذَالِكَ وَ ٱنْتَ عَنِّيُ رَاضٍ فَإِنَّكَ اَحَقُّ الْمُنْعِمِيْنَ اَنُ تُتِمَّ نِعُمَةَكَ عَلَا راضی ہو کیونکہ تو نعمت دینے والوں میں زیادہ حقدار ہے کہ مجھ پر اپی نعمت تمام کرے

للَّهُمَّ سَمِعُنَا وَ اَطَعُنَا وَ اَجَبُنَا دَاعِيَكَ بِمَذِّكَ فَلَكَ الْحَمُدُ غُفُرَانَكَ رَبَّنَا وَ معبودا ہم نے سنا ہم نے اطاعت کی اور تیرے واعی کا فرمان قبول کیا تیرے احسان مند ہوکر اس حمد ہے تیرے لیے جھھ سے بخشش الْـمَصِيُرُ آمَنًا باللَّهِ وَحُدَه ُ لاَشَرِيُكَ لَهُ وَبرَسُوْلِهِ مُحَمَّدِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَ صَدَّقُنَا جاہے ہیں اے ہمارے رب اوروالیسی تیری طرف ہی ہے ایمان رکھتے ہیں ہم اللہ پر جو بکتا ہے کوئی اس کا ٹانی خیس اوراس کے رسول محمر پر وَ اَجَبُنَا دَاعِيَ اللَّهِ وَاتَّبَعُنَا الْرَّسُولَ فِي مُوَالاَةٍ مَوُلاَّنَا وَ مَوْلَى الْمُؤْمِنِيُنَ اَمِيُرالْمُؤُمِنِيُنَ کر شدا کی رحمت ہوان پر اوران کی آل پر ہم نے مان لیااور قبول کیا اللہ کے اس واعی کواور ہم نے پیروی کی رسول کی اینے اور مومنوں کے عَبِليَّ بِينِ أَبِي طَالِبٍ عَبُدِ اللَّهِ وَ أَخِيُ رَسُولِهِ وَ الصِّدِّيُقِ الْأَكْبَرِ وَ الْحُجَّةَ عَلَى بَريَّتِه مولا سے دوستی کرنے میں کہ و ہمومنوں کےامیر علی ابن ابیطالب ہیں جواللہ کے ہندےاس کے رسول کے بھائی سب سے بڑے صدیق اور الْـمُـوَيِّد بِهِ نَبِيَّهُ وَ دِيْنَهُ الْحَقُّ الْمُبِينُ عَلَمًا لِدِيْنِ اللَّهِ وَخَازِنًا لِعلْمِهِ وَعَيْبَة غَيْبِ اللَّهِ وَ تفعدیق کنندہ اورمخلو قات پر حدا کی ججت ہیں ان سے خدا کے نبی اوراس کے سپچے اور واضح دین کوقوت ملی و ہاللہ کے دین کے میر چم اس کے مَوْضِعَ سِراللَّهِ وَ آمِيُسَ اللَّهِ عَلَىٰ خَلُقِهِ وَشَاهِدَهُ فِي يَرِيَّتِهِ ٱللَّهُمَّ ﴿رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعُنَا علم کے خزینہ داراس کے غیبی علوم کا گنجینہ اوراس کے را زدار ہیں وہ خدا کی مخلوق پر اس کے اما نترا راور کا نئات میں اس کے گواہ ہیں اے اللہ! مُنَادِيًا يُنَادِئُ لِلْإِيْمَانِ أَنُ آمِنُوا بِرَبَّكُمُ فَامَنَّا رَبَّنَا فَاغُفِرُلَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرُ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَ اے ہمارے رب یقیناً ہم نے سامنا دی کوائمان کی صدا دیتے ہوئے کرائمان لاؤاپنے رب پر پس ہم ایمان لائے اپنے رب پراب بخش تَـوَقُنَا مَعَ الْآبُوَارِ ٥ رَبَّـنَـا وآتِـنَـا مَـا وَعَـدتُّنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَ لَاتُخُونَا يَوُم الْقِيَامَةِ اِنَّكَ دے ہمارے گناہوں کومٹا دے ہماری پرائیوں کواور ہمیں نیکوکاروں جیسی موت دےا ہے ہمارے رب عطا کرہمیں جس کاوعد ہتو نے اپنے لاتُخُلِفُ الْمِيْعَادَ﴾ فَإِنَّا يَارَبَّنَا بِمَذِّكَ وَ لُطُفِكَ اَجَبُنَا دَاعِيَكَ وَاتَّبَعُنَا الْرَّسُولَ وَ صَدَّ ر سولوں کے ذریعے کیااور قیامت کے روز ہم کورسوا نہ کچیو بے شک وعدے کی خلاف ورزی نہیں کتا کیس اے ہمارے رب ہم نے تیرے وَ صَدَّقُنَا مَوْلَى الْمُؤْمِنِيُنَ وَكَفَوْنَا بِالْجِبْتِ وَ الطَّاغُوْتِ فَوَلَّنَا مَا تَوَلَّيْنَا وَ احْشُونَا مَعَ طف واحسان سے تیرے داعی کی مات ماتی تیرے رسول کی پیروی کی اس کوسچا جانا اورمومنوں کےمولا کی بھی تفیدیق کی اورہم نے بت اور آئِـمَّتِـنَا فَإِنَّا بِهِمُ مُؤُمِنُونَ مُوُقِنُونَ وَ لَهُمُ مُسُلِمُونَ آمَنَّا بِسِرَّهِمُ وَ عَلاَئِيَهِمُ وَ شَاهِدِهِمُ

ہیں اوران کے فرمانبر دار ہیں ایمان لائے ہیں ہم ان کے ماطن اوران کے ظاہر ریان میں سے حاضر پر اور غائب ریر اوران میں سے زندہ و مُ بَيُسَسَا وَ بَيُسنَ السُّهِ دُونَ حَسلُهِ لاَنْبُسَغِسى بِهِمُ بَدَلاً وَلا نَتَّخِذُ متو فی پراورہم ماضی ہیں اس پر کہ وہ ہمارے امام پیشوا وسر دار ہیں اور کافی ہیں وہ ہمارے اور خدا کے درمیان اس کی مخلوق میں سے خبیں مِنُ دُوْنِهِمُ وَلِيُسجَةً وَبَسرتُسَا إِلَى السَّبِهِ مِنُ كُلِّ مَنُ نَصَبَ لَهُمُ حَرُبًا چاہتے ہم ان کی جگہ کسی اور کواور نہان کے سوا ہم کسی کوواسطہ بناتے ہیں اور حدا کے حضورہم ان سے اپنی علیحد گی ظاہر کرتے ہیں جوائمہ مِسنَ الْسجِسنَ وَ الْإِنْسِسِ مِسنَ الْاَوَّلِيْسِنَ وَ الْسآخِسِرِيْسِنَ وَ كَفَرُنَسًا طاہرین کے مقابلے میں آ کر لڑے کرو و پہلوں پھیلوں جنوں انسانوں میں سے جو بھی ہیں اور ہم اٹکا رکرتے ہیں ہریت کا ثیز ہم دور ہیں بِالْحِبُتِ وَ الطَّاعُوْتِ وَ الْآوُثَانِ الْآرُبَعَةِ وَ اَشْيَاعِهِمُ وَ ٱتَّبَاعِهِمُ وَ كُلِّ مَنُ وَالاّهُمُ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ مِنْ أَوَّلِ الدُّهُو إِلَىٰ آجِرِهِ اللَّهُمِّ إِنَّا نَشْهَدُكَ أَنَّا نَدِيْنُ بِمَا ذَانَ میں سے زمانے کے آغاز سے اختیام تک کے عرصے میں اے اللہ! ہم تھے گیا ہر کھتے کہ ہم اس دین پر ہیں جس پر تھے محمرو آل محمر کہ خدا مُسحَمَّدٌ وَ آلُ مُسحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمُ وَقَوْلُنَا مَاقَالُوُا رحمت کرمے ان ہر اور ان کی آل ہر ہمارا قول وہ ہے جو ان کا قول تھا ہمارا دین وہ ہے وَ دِيُنْنَا مَا دَانُوُا بِهِ مَاقَالُوُ بِهِ قُلُنَا وَمَا دَانُوُا بِهِ دِنَّا وَمَا ٱنْكَرُوُا ٱنْكَرُنَا وَمَنُ جوان کا دین تھا ان کا قول ہی ہما ما قول اوران کا دین ہی ہما ما دین ہے جس سے ان کونفرت اس سے ہمیں نفرت جس سے ان کی محبت اس وَالْوُا وَالْيُنَا وَ مَنْ عَادُوُا عَادَيْنَا وَمَنْ لَعَنُو لَعَنَّا وَ مَنْ تَبَرَّ نُوُا تَبَرَّ أَنَا منهُ سے ہماری محبت جس سے ان کی دختنی اس سے ہماری دختنی جس ہر ان کی لعنت اس ہر ہماری لعنت جس سے وہ دوراس سے ہم بھی دور ہیں وَ مَنُ تَرَجُّمُوا عَلَيْهِ تَرَجُّمُنَا عَلَيْهِ آمَنًا وَ سَلَّمُنَا وَ رَضِيْنَا وَ اتَّبَعُنَا مَوَ اليُّنَا صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيُهِمُ اَللَّهُمَّ فَتَهِمُ لَنَا ذَالِكَ وَلاتَسْلُبُنَاهُ وَاجْعَلُهُ مُسْتَقَرًّا فَ ابتًا عِنُدَنَا وَلاَتَجُعَلُهُ مُسُتَعَارًا وَ اَحْينَا عَلَيْهِ وَ اَمِتُنَا إِذَا اَمَتَنَا وَالْآبُعُعَلُهُ مُسُتَعَارًا وَ اَحْينَا عَلَيْهِ وَ اَمِتُنَا إِذَا اَمَتَنَا وَالْمَيْنَ قُراد نه وے جب تک نده بین ہمیں ای پر نده دکھ اور ہمیں ای عقیرے پر موت دے کر آل مُحَ جادے عَلَیْہِ آلُ مُسحَمَّدٍ آئِسَمَّتُ نَا فَبِهِم نَسَأْتَ مُّ وَ إِیَّاهُم نُوالِی وَ عَدُوّهُم مُ الله و پیژوا ہیں ہم ان کی بیروی کرتے اور ان کو دوست دکھے ہیں ان کا وَثَن خدا کا وَثَن ہِ الله عَدُو اللّٰهِ نُعَادِی فَا جُعَلَنَا مَعَهُم فِی اللّٰذِیْسَا وَالْمَا خِرَةِ وَ مِنَ الْمُقَرّبِینَ عَمَالُ فَرا کہم الله مُعَلَيْهِم الله عَدِی اللّٰهِ مُعَلَيْهِ مَا ان کے ماتھ دنیا و آخرت ہیں اور ہمیں ایے مقربوں میں داخل فرا کہم ای

فَإِنَّا بِذَالِكَ رَاضُونَ يَا أَرُحَمَ الرَّاحِمِيُ ﴿

عقیدے پر راضی ہیں اے سب سے زیادہ رحم کرنے والے۔

مردی ہے کہ جو شخص بیمل بجالائے و ہ ثواب میں اس شخص کے برابر ہو گا جو <u>واجے میں</u> بمقام غدیر خم بار گاہِ رسالت میں حاضر تھااور حصرت امیر الظامی کے دست مقدس پر بیعت کی تھی۔ (مصباح المہنجد)

- (۲) اس دن روزه رکھاجائے جس کی پڑی فنیلت وارد ہوئی ہے جتی کی ہروی ہے کہاں دن روزه رکھنا ساٹھ سال کے روزہ کے ہراہر ہے۔ (المصباح)
- (٣) آج كے دن آدى جہال كہيں بھى ہو پورى كوشش كرے كدائي آپ كونجف اشرف ميں روضة امير المومنين الظيارات كا ورآپ كى آج كے دن كى مخصوص زيارت پڑھے جو باب الزيارات ميں مذكور ہے اوراگرو بال نہ پہنچ سكن كم زيارت كا پڑھنا تو ترك نہ كرے۔
- (۴) آج کے دن حاجت مند دینی بھائیوں کی حاجت برآ ری کرنا اوران کی مالی امدا د کرنا بڑی فضیلت کا حامل ہے حتی کہ برنظی کی روابیت میں حضرت امام رضا الطبی ہے مردی ہے کہ آج کے دن کسی حاجت مند مؤمن کوایک درہم دینا عام دنوں میں ایک ہزار درہم دینے کے برابر ہے۔ (جمال الاسبوع)
- (۵) آج کے دن جب اہل ایمان ایک دوسرے سے ملاقات کریں تو ایک دوسرے کو مبارک با د کہتے ہوئے کہیں:

﴿ ٱلْحَدُمُ لُـ لِلْهِ اللَّهِ مَا لَكُمْ جَعَلَنَا مِنَ الْمُتَمَسِّكِينَ بِوِلايَةِ آمِيرِ الْمُؤُمِنِينَ وَالْائِمَةِ عَلَيْهِمُ السَّامِ اللَّهِ مَا اللَّهِ عَلَيْهِمُ السَّامِ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُ اللَّهُمُ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلْمُ السَّامِ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ عَلَيْهُمُ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُمُ عَلَيْهُمُ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ عَلَّالِمُ عَلَيْهُمُ عَلَيْهُ عَلَيْهُمُ السَّامِ عَلَيْهُ عَلَ

السَّلاَمُ ﴾ ۔ اور يہمى پڑھے: ﴿ اَلْدَى مَلْدُ لِللهِ الَّذِى اَكُو مَنَا بِهٰذَا الْيَوُمِ وَجَعَلَنا مِنَ الْمُوْفِيُنَ السَّلاَمُ ﴾ ۔ اور يہمى پڑھے: ﴿ اَلْدَى مُدُوفِا لَا مُدَوفِا

بِعَهُدِهِ اِلْيُنَا وَمِيُشَاقِهِ الَّذِي وَاتَفَنَا بِهِ مِنُ وِلاَيَةِ وُلاَةَ اَمُرِهِ وَ الْقُوَّامِ بِقِسُطِهِ وَ لَمُ

کرنے والے بنایا جو ہمارے سپر دکیااوروہ پیان جوہم ہےولا ہے امیر الموثنین اپنے والیان امراورعدل پر قائم رہنے والوں کے بارے میں

يَجْعَلْنَا مِنَ الْجَاحِدِيُنَ وَ الْمُكَذِّبِيْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ } ـ

لیااورہمیں روز قیامت کااٹکا رکرنے والوں اورا سے تجٹلانے والوں میں نہیں رکھا۔

(٢) ايك سوم تبديد ذكر كياجائ: ﴿ ٱلْحَدَمُ لُهُ لِللَّهِ الَّذِي جَعَلَ كَمَالَ دِيْنِهِ وَ تَمَامَ نِعُمَتِهِ

حمہ ہے اللہ کے لیے جس نے اپنے دین کے کمال اور نعت کے اتمام کوامیر المومنین

بِوِلايَّة آمِيْرِ الْمُؤْمِنِينَ عَلِيِّ بُنِ آبِي طَالِبٍ عَلَيْهِ السَّلاَّ ﴿ وَاللَّهِ السَّلاَّ

صفرت على ابن ابي طالب عليه السلام كي ولايت كے مما تحص و طقر ارديا۔

SIB POR THE TOTAL SIB OM

یہ دن عید مبابلہ کا دن ہے لین آج نصاری نجران کے مقابلہ میں اسلام کی فتح و فیروزی کا مبارک دن ہے جس میں حضرت رسول خداصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بحکم خدا اپنے ہمراہ حضرت علی و بتول و صنین شریفین علیہم السلام کومیدان مبللہ میں لے گئے تھے اور نصاری نے جزید دینا قبول کرلیا تھا مگر خمسۂ نجباء ہے مبابلہ کرنے کی جرائے نہیں کی تھی جس کی تفصیل آیت مبابلہ ﴿فَهُمَنُ حَاجَّہ کَ فِیْهِ مِنْ بَعُدِ مَا جَاءً کَ مِنَ الْعِلْمِ ... الآیہ ﴾ کی تفصیل آیت مبابلہ ﴿فَهُمَنُ حَاجَّہ کَ فِیْهِ مِنْ بَعُدِ مَا جَاءً کَ مِنَ الْعِلْمِ ... الآیہ ﴾ کی تفصیل کتب فریقین کے اندر مذکور ہے اور ہم نے بھی بقد رضرورت اپنی تفسیر فیضان الرحلیٰ میں اس کی پھے تفصیل درج کر کے اس برتبرہ کیا ہے اور جس چیز نے اس دن کی عظمت اور جلالت کو دو بالا کر دیا ہے وہ یہ ہے کہ اسی مقدس تاریخ میں حضرت علی القابلہ نے رکوع کی حالت میں سائل کو اپنی گرانقد را تکوشی عطا فر مائی تھی جس برخدا نے آیت ولایت مازل کی ۔

إِنْسَمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَ رَسُولُهُ وَالَّذِيْنَ امَنُوا الَّذِيْنَ يُقِينُمُونَ الصَّلُوةَ وَ يُؤْتُونَ الزَّكُوةَ وَهُمُ والِحُونَ. احالان والناتها داحاكم ومريرست الله ب-اس كا دول باوروه صاحبان المان بين -جونما زيرُحة بين اورحالت دكوع من زكرة اواكرت بين

ببرحال آج کے دن کے چند عمل میں:

(۱) عسل کیاجائے۔ و د دعاریاهی جائے جو حضرت امام جعفر صا دق الطبی سے منقول ہے: اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ مِنُ بَهَائِكَ بِاَبُهَاهُ وَ كُلُّ بَهَائِكَ بَهِيٌّ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِبَهَائِكَ ﴿ كُلُّ بَهَائِكَ اللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِبَهَائِكَ ﴿ كُلِّهِ اللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِبَهَائِكَ ﴿ كُلِّهِ اللَّهُ مَا إِنِّي السَّئَلُكَ بِبَهَائِكَ ﴿ كُلِّهِ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَ ا معبود! طلب كرنا موں جھے سے تير ماروش ترين نوريس سے اور تيرا ہر نور درخشاں ہے اے معبود! سوال كرنا موں بواسطہ تير مائى نور للَّهُمَّ إِنِّيُ ٱسْئَلُكَ مِنْ جَلاَلِكَ بِاجَلِّهِ وَ كُلَّ جَلاَلِكَ جَلِيْلٌ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُ ﴿ کا معبو داخلب کرنا ہوں تھے سے تیرے بہت بڑے جلوے میں سے اور تیرا ہر جلوہ بہت بڑا جلوہ ہے اے معبو دا سوال کرنا ہوں تھے سے بِجَلاَلِكَ كُلِّهِ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ مِنْ جَمَالِكَ بِأَجْمَلِهِ وَ كُلَّ جَمَالِكَ جَهِلًا بواسطہ تیرے تمامی جلوے کے اےمعبود! طلب کرتا ہوں چھھ سے تیرے پہترین جمال میں سے اور تیرا ہر جمال پیندیدہ وبہترین ہے ٱللُّهُمَّ إِنِّيُ ٱسْئَلُكَ بِجَمَالِكَ كُلِّهِ ٱللَّهُمَّ إِنِّيُ ٱدْعُوٰكَ كَمَا ٱمَرُتَنِي فَاسْتَجِي اے معبو دامیں سوال کرتا ہوں بواسط تیرے تمامی جمال کے اے معبود! میں پکارنا ہوں تھے جیسا کرتو نے تھم کیا اپس میری دعا قبول کر لِيُ كَمَا وَعَدتَّنِي اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسُئَلُكَ مِنْ عَظَمَةِكَ بِأَعْظَمِهَا وَكُلُّ عَظَمَةِكَ عَظِينًا جیما کہ تو نے وعدہ کیا ہے اے معبود! سوال کرتا ہوں تھھ سے تیری بردگی بن رنگ میں سے اور تیری ہر بزرگ جی بردی ہے ٱللَّهُــَّمَ إِنِّيُ ٱسْتَلُکَ بِعَظَمَتِکَ كُلِّهَا ٱللَّهُمَّ إِنِّيُ ٱسْتَلُکَ مِنْ نُوْرِکَ بِٱنْوَرِهِ وَ كُلُّ نُوْرِكُ فَيُرِّ ا معبودا سوال کتا ہوں جھے سے بواسطہ تیری تمامی ہزرگی کے اسے معبو دا سوال کرتا ہوں جھے سے تیرے روشن تر نور میں سے اور تیرا ہر نور ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِنُورِكَ كُلِّهِ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ مِنْ رَحْمَةِكَ بِٱوْسَعِيْكًا وَ روش ہے اے معبود! سوال کمنا ہوں تھے ہے بواسط تیرے تمامی نور کے اے معبود! سوال کرنا ہوں تھے ہے تیری وسیع تر رحمت میں ہے اور كُلُّ رَحُمَةِكَ وَاسِعَةٌ اَللَّهُمَّ إِنْسَى اَسْئَلُكَ بِرَحُمَةِكَ كُلِّهَا اَللَّهُمَّ إِنِّيُ اَدُعُولِكَ تیری ہررحت وسیع ہا معبودا سوال کرتا ہوں تھے سے بواسط تیری تمای رحت کے اے معبودا میں دعا کتا ہوں تھے سے جیسے و قے كَمَا اَمَرُتَنِي فَاسْتَجِبُ لِي كَمَا وَعَدتَّنِي اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ مِنُ كَمَالِكَ باكُمَلِيٌّ کیا پس میری دعا قبول کر جب کرتو نے وعدہ کیا ہے اے معبودا طلب کرنا ہوں چھے سے تیرے کامل مرین کمال میں سے اور تیرا ہر کمال ہی وَ كُلَّ كَمَالِكَ كَامِلُ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ بِكَمَالِكَ كُلِّهِ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُ ﴿ کامل ہے اے معبود اسوال کتا ہوں چھے ہواسط تیرے تمامی کمال کے اے معبود اطلب کرتا ہوں چھے سے تیرے سالم ترین کلمات میں

مِنْ كَلْمَاتِكَ بِلَتَمْهَا وَ كُلُّ كَلْمَاتِكَ تَامَّةٌ اَلْلُّهُمَّ انِّي اَسْئَلُكَ بِكَلْمَاتِك ے اور تیرے سب کلمات ہی سالم تر ہیں اے معبود! سوال کرتا ہوں تھے ہے بواسطہ تیرے تمامی کلمات کے اے معبود! طلب کرتا ہوں تھے ُللُّهُمَّ إِنَّى اَسْئَلُكَ مِنُ اَسْمَائِكَ بِاكْبَرِهَا وَكُلُّ اَسْمَائِكَ كَبِيْرَةٌ اَللَّهُمَّ ے تیرے بہت بڑے امول میں سے اور تیرے سرارے بی مام بڑے ہیں اے معبودا سوال کتا ہول تھے سے بواسط تیرے تمام تر مامول ٱسْئَلُکَ بِٱسْمَائِکَ كُلِّهَا ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱدْغُوٰکَ كَمَا ٱمَرْتَنِي فَاسْتَجِبُ لِيُ کے اے معبود! میں دعا کڑا ہوں جھے سے جیسے تو نے تھم کیا پس قبول کر میری دعا جیساکہ تو نے وعدہ کیا ہے وَعَدتَّنِيٰ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ مِنْ عِزَّتِكَ بِاعَزَّهَا وَ كُلُّ عِزَّتِكَ عَزِيْزَةٌ اَل ے معبو دا طلب کرنا ہوں تھے سے تیری بہت بڑی عزت میں سے اور تیری ہرعزت بہت بڑی ہے اے معبود! سوال کرنا ہوں تھے سے انِّيُ ٱسْئَلُکَ بِعِزَّةِکَ كُلِّهَا ٱللَّهُمَّ إِنِّيُ ٱسْئَلُکَ مِنُ مَشِيَّةِکَ بِٱمُضَ واسط تیری تمام مرعزت کے اے معبود! طلب کرنا ہول تھے سے تیرے ارادے میں سے جو بافذ ہوئے والا ہے اور تیرا ہر ارادہ كُلُّ مَشِيَّةِكَ مَاصِيَةٌ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْعَلُكَ بِلْمَشِيِّعِكَ كُلِّهَا اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسُنَا نافذ ہونے والا ہے اے معبودا سوال كرتا ہوں تھھ سے بواسط تيرے تمائى ارادے كے اے معبودا ميں سوال كرتا ہوں تھھ سے تيرى بِـقُـدُرَةِكَ الَّتِـي اسْتَطَـلُتَ بِهَـا عَـلـي كُـلِّ شَـيْءٍ وَ كُلُّ قُدُرَةِكَ مُسْتَطِيُلَةُ اللَّهُ قدرت کے جس سے تو ہر چیز پر قبصہ وغلبہ رکھتا ہے اور تی**ری** ہر قدرت قابض اور غالب ہے إِنَّــىُ ٱسْئَلُكَ بِقُدُرَتِكَ كُلِّهَــا ٱللَّهُــمَّ إِنِّــىُ ٱدْعُوْكَ كَمَا اَمَرْتَنِنَى فَاسْتَجِبُ سوال کتا ہوں چھے سے تیری تمام ترقد رہ کے اے معبود! میں دعا کتا ہوں چھے سے جیسے تو نے علم کیا پس قبول کرمیری دعا جیسا کہ كَمَا وَعَدِتَّنِينُ ٱللَّهُ مَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ مِنْ عِلْمِكَ بِٱنْفَذِهِ وَ كُلُّ عِلْمِكَ نَا و نے وعدہ کیا ہے اے معبودا میں طلب کرنا ہوں تھھ سے تیرے بہت جاری ہونے والے علم میں سے اور تیرا ہر علم جاری ہے ٱللَّهُــةَ انَّـىُ اَسْئَلُكَ بِعِلْمِكَ كُلِّـهِ اَللَّهُــةَ انِّيُ اَسْئَلُكَ مِنْ قَوْلِكَ بِـاَرُضَـاهُ وَ ﴿ معبو دا سوال کرنا ہوں تھے ہے بواسطہ تیرے تمام بڑھلم کے ۔ اے معبودا طلب کرنا ہوں تھے سے تیرے بڑے خوش آیند قول میں قَوْلِكَ رَضِيٌّ اَللَّهُمَّ إِنِّيُ اَسْئَلُكَ بِقَوْلِكَ كُلِّهِ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ مِنْ مَسَائِكُكَ

بِ اَحَبِّهَا وَ كُلُّ مَسَائِلِكَ حَبِيبُةً اَللَّهُمِّ إِنِّي اَسْمَلُكَ بِمَسَائِلِكَ كُلَّهَا محبوب تزین سوالوں میں سے اور وہ سمجی تیرے نز دیک محبوب ہیں اے معبو دا سوال کرنا ہوں جھھ سے بواسطہ تیرے سمجی سوالوں کے اے إِنِّـيُ اَدْعُوكَ كَمَـااَمَـرُتَنِـيُ فَـاسُتَجـبُ لِـيُ كَمَا وَعَدتَّنِـيُ اَللَّهُمَّ إِنِّيُ اَسْئَلُك معبودا میں دعا کرنا ہوں تھے ہے جیسے وقے تھم کیا ہی قبول کرمیری دعا جیسا کرتو نے وعد ہ کیا ہے مِنُ شَـرَفِكَ بِـاَشُـرَفِـهِ وَ كُـلُ شَـرَفِكَ شَـرِيْفٌ اَللَّهُمَّ اِنِّيُ اَسُئَلُكَ بِشَـرَفِك تھے سے تیری سب سے بوئی بن رق میں سے اور تیری ہر بن رق بی سب سے بوئی ہا معبود! سوال کرتا ہوں تھے سے بواسط تیری تمائ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ مِنُ سُلُطَ إِنكَ بِـاَدُوَمِـهِ وَ كُلُّ سُلُطَانِكَ دَائِمٌ ٱللَّهُمَّ إ ہر: رگی کے اے معبو دا طلب کرنا ہوں تھھ سے تیری سب سے دوا می سلطانی میں سے اور تیری ہر سلطانی ہی دوا می ہے ٱسْئَلُکَ بِسُلُطَانِکَ کُلِهِ ٱللَّهُمَّ إِنِّيُ ٱسْئَلُکَ مِنْ مُلْکِکَ بِٱفْخُرِهِ وَ کُلُّ مُلْکِکَ ﴿ وَا سوال كرتا موں تجھے ہوا سط تيرى تمام تر سلطانى كے اے معبود! ميں طلب كرتا موں تجھے سے تيرى سب سے بردى حكومت ميں سے اور تيرى ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِمُلْكِكَ كُلِّم ٱللَّهُمَّ إِنِّي أَدُعُوكَ كَمَا اَمَرُتَنِي فَاسْتَجها تمام تر حکومت بردی ہے اے معبو دا سوال کرنا ہوں تھے ہے بواسط تیری تمامی حکومت کے اے معبو دامیں دعا کرنا ہوں تھے ہے جیے تو نے علم لِيْ كَمَا وَعَدتَّنِينِيُ ٱللَّهُمُّ إِنِّيُ ٱسْئَلُكَ مِنْ عَلاَئِكَ بِاعْلاَهُ وَ كُلُّ عَلاَئِكَ عَلَمُّ كيالي قبول كرميرى دعاجيها كرتونے وعده كيا ہےا معبود! طلب كرنا موں تجھے سے تيرى سب سے بردى بلندى ميں سے اور تيرى مربلندى ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِعَلاَئِكَ كُلِّهِ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ مِنُ آيَاتِكَ بِأَعْجَهِ بہت بڑی ہے اے معبودا سوال کرتا ہوں چھے سے بواسط تیری تمام تربلندی کے اے معبودا میں طلب کرتا ہوں چھے سے تیری سب سے عجیب وَ كُلُّ آيَاتِكَ عَجِيْبَةٌ ٱللَّهُمَّ إِنَّهُ ٱسْئَلُكَ بِآيَاتِكَ كُلِّهَا ٱللَّهُمَّ إِنَّى ٱسْئَلُكِكَ تر آیت میں سے اور تیری بھی آیات عجیب ہیں اے اللہ! سوال کرنا ہوں تھے سے بواسطہ تیری تمامی آیتوں کے اے معبود! طلب کرنا ہوں تھے مِنُ مَنِّكَ بِاَقْدَمِهِ وَ كُلُّ مَنِّكَ قَدِيْمٌ اللَّهُمِّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ بِمَنِّكَ كُلِّهِ سے تیرے سب سے قدیم احسان میں ہے اور تیرا ہراحسان قدیم ہے اے معبود! سوال کرنا ہوں تھھ سے بواسطہ تیرے تمامی احسان کے إِنِّيُ ٱدْعُوٰكَ كَمَااَهَرُ تَنِيئُ فَاسْتَجِبُ لِيُ كَمَا وَعَدَتَّنِي ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱسْئَلُكَ ب

بِهِ مِنَ الشُّمُونِ وَ الْجَبَرُونِ ٱللَّهُمِّ إِنَّهُ ٱسْئَلُكَ بِكُلِّ شَأْنِ وَكُلِّ جَبَرُوهُ واسطراس کے جس میں تیری شان اور تیراغلبہ ظاہر وعیاں ہے اے معبود! میں سوال کرتا ہوں تھھ سے بواسطہ تیری ہرشان اور تیرے ہرغلبہ لُّهُمَّ إِنِّي ٱسْتَلُكَ بِمَا تُجِيُبُنِيُ بِهِ حِيْنَ ٱسْتَلُكَ يَا ٱللَّهِ يَا لاَ اللَّهِ إِلَّا ٱنْتَ ٱسْتَلُكَ بِيَهَ کیا ہے معبود! میں سوال کرتا ہوں تجھ سے بواسطیاس نام کے جس ہے قول کرتا ہے جب تجھ سے ماٹکا جائے اسے اللہ! اسے وہ کرٹیس کوئی الله الَّا أَنْتَ يَا لاَّ اللهَ الَّا أَنْتَ اَسْتَلْكَ بِجَلالَ لاَللهَ الَّا أَنْتَ يَا لاَّ اللهَ الَّا أَنْتَ اَسْتَلُكَ بِلَّا معبو دسوائے تیرے سوالی ہوں تیرا واسطہ لا اللہ الاانت کے نور کے اے وہ کرٹیس کوئی معبو دسوائے تیرے سوالی ہوں تیرا بواسطہ لا اللہ الا انت إِلَّهَ إِلَّا ٓ أَنْتَ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱدْعُوكَ كَمَآ ٱمَرُتَنِي فَاسْتَجِبُ لِي كُمَا وَعَدْتَّنِي ٱللَّهُمَّ إِنِّي کے جلال کے اے وہ کرفیل کوئی معبو دسوائے تیرے سوائی ہوں تیرا بواسطہ لا اللہ الا انت کے اے معبود! میں دعا کرتا ہوں تھے ہے جیسے تو نے اَسْئَلُکَ مِنُ رِزْقِکَ بِاعَمِّے وَ كُلُّ رِزْقِکَ عَامٌّ اَللّٰهُ مَّ إِنِّیُ اَسْئَلُا علم کیا اس قبول کرمیری دعا جبیها کرتونے وعدہ کیا ہے اے معبود! طلب کرتا ہوں تھے سے تیرے وسیع مزرزق میں سے اور تیرا ہررزق وسیع كُلِّسهِ ٱللَّهُ مَّ إِنِّنَى ٱسْتَلُكَ مِنْ عَطَائِكَ بِأَهْنَائِسهِ وَ كُلُّ عَطَانَ ہے اے معبود! میں سوال کرنا ہوں بواسطہ تیرے تما می رزق کے اے معبو دامیں طلب کرنا ہوں تھھ سے تیری خوشکوارعطامیں سے اور تیری ہر هَنِيٌّ اَللَّهُمَّ إِنِّي بِعَطَائِكَ كُلِّهِ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِكَ بِأَعْجَلِهِ وَ كُلُّ خَيْرِكَ عَلْهُ خوشکوارہے اے معبود! سوال کرنا ہوں تجھ سے بواسط تیری تمامی عطا کے اے معبود! طلب کرنا ہوں تجھ سے تیری بھلائی میں سے جلد للهُـمَّ إِنَّى اسْئَلُكَ بِخَيْرِكَ كُلِّهِ اللَّهُمِّ إِنِّي اسْئَلُكَ مِنْ فَضُلِكَ بِأَفْضَلِهِ ملنے والی کا اور تیری ہر بھلائی جلد ملنے والی ہے اے معبو دا سوال کرتا ہوں تھھ سے بواسطہ تیری تما می بھلائی کے اے معبو دا طلب کرتا ہوں تھھ حضُلِكَ فَساضِلٌ اَللَّهُمِّ إِنِّي اَسْشَلُكَ بِـفَـضُلِكَ كُلِّ سے تیرے فعل میں سے بہت بڑا فعنل اور تیرا ہر فعنل بہت بڑا ہے اے معبود! سوال کرنا ہوں تھھ سے بواسطہ تیرے تمامی فعنل کے لُّهُــمَّ إِنِّــيُ اَدُعُــوُكَ كَــمَــا اَمَــرُتَـنِــيُ فَـاسْتَجـبُ لِــيُ كَـمَـا وَعَـدتَّنِـ معبودا میں دعا کرتا ہوں تھھ سے جیسے تو نے علم کیا کیں قبول کر میری دعا جیبا کہ تو نے وعدہ کیا ہے لَّهُــةً صَـلٌ عَـلــى مُـحَـمَّـدٍ وَ آل مُـحَـمَّـدٍ وَابُـعَثُنِــى عَلَـى الْإِيْـمَـان

بِكَ وَ التَّـصُـدِيْـقِ بِـرَسُوُ لِكِ عَلَيْهِ وَ آلِهِ السَّلاَّمُ وَالْوِ لاَيَّةِ لِعَلِيٌّ بُن اَبِي طَالِبٍ وَ الْبَرَ تفدیق کروں سلام ہو ان پر اور ان کی آل پر اور تفدیق کروں علی ابن ابی طالب کی ولایت کی دوری ہو ان کے عَدُوٍّ هِ وَالْإِيْتِمَام بِالْآئِمَةِ مِنُ آل مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلامُ فَاإِنِّي قَدُ رَضِيتُ دھمن سے اور ان ائمہ کی پیروی کہ جو آ**ل محمد می**ں سے ہیں سلام ہو ان سب پر پس میں ماضی ہوں بــذَالِكَ يَــا رَبِّ ٱلـلّٰهُــمُّ صَـلٌ عَــلـى مُحَمَّدٍ عَبُـدِكَ وَ رَسُولِكِ فِي الْأَوَّلِ ال بات پر اے بروردگارا اے معبودا رحمت فرما حضرت محمد پر جو تیرے بندے اور تیرے رسول ہیں پہلے لوگوں میں وَ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ فِي الْآخِرِيُنَ وَ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ فِي الْمَلَاِ الْاَعُلَى وَ صَلَّ رحمت فرما حضرت محرَّ پر پچھلے لوگوں میں رحمت فرما حضرت محمَّ پر افلاک اور عرش ہرین میں عَــلـى مُحَمَّدٍ فِي الْمُرُسَلِيُنَ اللَّهُمَّ اعْطِ مُحَمَّدَهِ الْوَسِيُلَةَ وَ الشَّرَفَ وَ لَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ وَ قَنِّعُنِي بِمَا رَزَقَتَنِي آے معبودا رحمت فرما سرکار محمد و آل محمہ پر اور قائع کر اس رزق پر جو تو نے دیا وَ بَارِكُ لِيُ فِيُمَا آتَيُتَنِي وَ احْفَظُنِيُ فِي غَيْبَتِي وَ فِي كُلِّ غَائِبٍ هُوَ لِي اَللَّهُمَّ صَلّ برکت دے اس میں جوتوئے مجھے دیا میری حفاظت کرمیری غیبت میں اوراس میں جومجھ سے غائب ہے ۔ اے معبو وا رحمت فرما عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آل مُحَمَّدٍ وَ ابْعَثُنِيُ عَلَى الْإِيْمَان بِكَ وَ التَّصْدِيُق بِرَسُولِكَ محرّ و آل محمد " پر اور اٹھا کھڑا کر مجھے جبکہ تھے پر ایمان ہو اور تیرے رسولؓ کی تقدیق کروں ٱللَّهُمَّ صَلَّ عَلْي مُحَمَّدٍ وَ آل مُحَمَّدٍ وَ ٱلسَّئَلُكَ خَيْرَ الْخَيْرَ رضُوَانَكَ وَ الْجَ اے معبودا رحمت مازل فرما محمد و آل محمر پر اور طلب کرتا ہوں تھھ سے بہتر سے بہتر تیری خوشنودی اور جنت وَ أَعُوٰذُ بِكَ مِنْ شَرِّ الشُّرِّ سَخَطِكَ وَ النَّارِ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آل مُحَمَّ اور پناہ لیما ہوں تیری تیرے بخت سے سخت غضا وَاحُفَظُنهُ مِنْ كُلِّ مُصِيبَة وَمِنْ كُلِّ بَلِيَّة وَمِنْ كُلِّ مِليَّة وَمِنْ كُلِّ عُقُوْبَة وَمِنُ كُلّ فِتُنَةٍ وَمِنْ

لَّ بَلاَءٍ وَ مِسنُ كُلِّل شَرِّ وَ مِنُ كُلِّ مَكُرُوهِ وَ مِنُ كُلِّ مُصِيبَةٍ وَ مِنُ كُلِّ آفَا ہرا یک ہرائی سے ہرا یک مالیک مخطف کے اور ہر ایک آفت سے نَسزَلَتُ أَوْ تَنُسزِلُ مِنَ السَّمَساءِ إِلَى الْآرُضِ فِسيُ هَذِهِ السَّاعَةِ وَ فِي هَذِهِ اللَّيُلَةِ جو نازل ہوتی یا نازل ہو آسان سے زنین کی طرف اس موجودہ گھڑی میں آج کی رات میں وَ فِيُ هٰذَا الْيَوُم وَ فِيُ هٰذَا الشُّهُر وَ فِيُ هٰذِهِ السُّنَةِ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آج کے دن میں اوراس مہینے میں اوراس رواں سال میں اے معبود! رحمت ما زل کر سرکار محمدؓ و مُسحَسَّدِ وَاقْسِمُ لِيُ مِنُ كُلِّ سُرُور وَ مِنُ كُلِّ بَهُجَةٍ وَ مِنُ كُلِّ اسْتِقَامَا اورنصیب کر مجھے ہرایک راحت ہرایک سرت ہر طرح کی تابت قدمی وَكُلِّ فَسرَجٍ وَمِسنُ كُلِّ عَسافِيَةٍ وَ مِسنُ كُلِّ سَلاَمَةٍ وَ مِنُ كُلِّ كَرَامَةٍ وَ مِنُ كُلّ ہرا یک کشادگی ہرا یک آ مام ہر طرح کی سلامتی ہر طرح کی عزت اور ہر قسم رِزُقٍ وَاسِبِعِ حَلاَلٍ طَيِّبِ وَمِنْ كُلِّ نِعْهَةٍ وَمِنْ كُلِّ مَعَةٍ صَرَلَتْ اَوْتَنُولُ مِنَ ہر طرح کی تعمت اور ہر ایک وسعت جو مازل ہوئی یا مازل ہو السَّـمَـاءِ إِلَـى الْأَرُضِ فِـى هـذِهِ السَّاعَةِ وَ فِي هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَ فِي هٰذَا الْيَوُم زیمن کی طرف اس موجودہ گھڑی میں آج کی رات میں آج کے دن وَ فِسيُ هَاذَا الشَّهُ رِ وَ فِسيُ هَاذِهِ السَّنَةِ اَللَّهُمَّ إِنْ كَسانَتُ ذُنُـ وُبسيُ اس مہنے میں اوراس روال سال میں اے معبودا اگر میرے گناہوں نے تیرے سامنے ، ٱخُسلَقَتُ وَجُهِيُ عِنْدَكَ وَحَالَتُ بَيْنِيُ وَ بَيْنِكُ وَ خَالَيُ عِنْد بیرا چیرہ پڑمردہ کر دیا وہ میرے اور تیرے درمیان حائل ہوگئے اور تیرے ماننے میرا حا**ل** خماب کر دیا ہے إِنَّهُ ٱسُئَلُكَ بِنُورُ وَجُهِكَ الَّذِي لا يُطُفَأُ بِوَجُبِهِ مُحَمَّدٍ حَبِيبُكَ الْمُصْطَ میں سوانی ہوں بواسطہ تیرے نور ذات کے جو بچھتا خییں اور بواسطہ محرکی عزت کے جو تیرے چنے ہوئے دوست میں ـوَجُــهِ وَلِيَّكَ عَـلِـيّ ن الْـمُرُتَضَىٰ وَ بحَقّ اَوُلِيَـائِكَ الَّـذِيْنَ انْتَجَبُتَهُـهُ

تُصَلِّى عَلْى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ وَ أَنْ تَغُفِرَلِى مَا مَضَى مِنْ ذُنُوبِي وَ أَنْ لَعُفِرَلِي مَا مَضَى مِنْ ذُنُوبِي وَ أَنْ لَعَمِّد وَ أَنْ تَعُفِرَلِي مَا مَضَى مِنْ ذُنُوبِي وَ أَنْ لَعَمِّد وَ أَنْ لَعَمْ اللّهِ عَلَى اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّه

تَعُصِهَ مِنِهِ فِيهُمَا بَقِهِ مِنْ عُمُورِي وَ اَعُودُ بِكَ اَللَّهُمَّ اَنُ اَعُودَ فِي شَيءٍ مِنُ اللَّهُم ندگ من مجھ گناہوں سے محفوظ رکھ اور تیری پناہ لیتا ہوں اے اللہ اس سے کہ تیری نافرمانی کے

مَعَاصِیُکَ ابَدًا مَاابُقَیْتَنِی حَتَّیٰ تَتَوَفَینِی وَ اَنَا لَکَ مُطِیعٌ وَ اَنْتَ عَنِی رَاضِ وَ اَ سی کام کی طرف پاوں جب تک تو مجھ زندہ رکھے یہاں تک کہ مجھ موت دے تو میں تیرا اطاعت گزار اور تو مجھ سے راضی ہو

تَخْتِمَ لِسَى عَدَمَ لِسَى بِسَاحُسَنِم وَ تَسَجُعَلَ لِسَى ثَوَابَهُ الْجَنَّةَ وَ أَنُ تَفُعَلَ اوريه كرة ميرے اعال نامے كوئكى برخم كرے اور اس كے ثواب ميں مجھے جنت عطا كرے نيز ميرے ماتھ وہ سلوك كر

بِیُ مَا أَنْتَ اَهُلُهُ يَا اَهُلَ التَّقُویٰ وَ يَا اَهُلَ الْمَعُفِرَةِ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آلِ جو تیرے ثالیں ہے اے بچانے والے اور اے پردہ پٹی کرنے والے رضت نازل کر سرکار مُمَّ و آل

> مُحَمَّد وَ ارْحَمَّتِي بِرَاحُ مَنت مَا الْرَحَمَة الْرَّاحِمْنَ مُحَرِّرِاور بَهِ يررَمَ فرما في رحمت ساك سب سنا دورتم كن والي.

(۳) حضرت امیر الظایمانی تقلید و تا کی میں آج کے دن اہل ایمان کو چاہیئے کہ دل کھول کرصد قد وخیرات کریں اوراہل ایمان کی اعانت کریں۔ (کتاب المصباح لیشنج و کتاب الاقبال لابن طاؤوں ؓ)

يجيبوين ذي الحجه كاون

یدون اس وجہ سے عظیم الثان ون ہے کہ بنا ہر مشہورای ون خاندانِ رسالت کوعظیم کارکردگی کی بنا پر خدائے تعالیٰ نے سور کا دھرابل ہیت نبوت کی شان میں مازل فر مائی تھی جسے اس خاندان کاخدائی قصیدہ کہا جانا ہے۔۔

آخرذى الحجه كادن

ید دن اسلامی سال کا آخری دن ہے۔ جناب سید ابن طاؤوں ؓ نے روایت کی ہے کہ جو محض اس دن

دو رکعت نماز پڑھے اور ہر رکعت میں الحمد ایک بار اور سور ہ قل ھو اللہ احد دیں بار اور آبیت الکری دیں بار۔اور سلام کے بعد سے دعا پڑھے:

﴿ اَللّٰهُ مَّ مَا عَدِمِلْتُ فِي هَذِهِ السَّنَةِ مِنْ عَمَلِ نَّهَيْتَنِي عَنْهُ وَلَمْ تَرُضَهُ وَ نَسِيتُهُ وَلَمْ السَّنَةُ وَلَمُ

تَسنُسَهُ وَ دَعَوْتَنِي إِلَى التَّوْبَةِ بَعُدَ اجُتِرَ آئِي عَلَيُكَ اللَّهُمَّ فَانِيْكُولُكُو بحولا اورَّوْ نَهُ مَاه رِمِرى اس دليرى كربعد مجھاتو برى طرف بلايا ہے اس معودا ميں تھے سے اس مَّنا وى معانى ما تَنا اموں پس مجھے بخش

وَمَا عَمِلْتُ مِنْ عَمَلٍ يُّقَرِّبُنِي إِلَيْكَ فَاقْبَلْهُ مِنِّى وَلا تَقُطَعُ رَجَآئِى مِنْكَ يَا كَرِيهُمُ وَمَا عَمِلْتُ مِنْ عَمَلٍ يُقَرِّبُنِي إلَيْكَ فَاقْبَلْهُ مِنْهُ وَلا تَقُطعُ رَجَآئِهِ مِنْ عَمَلٍ يَعَلَى مِنْكَ يَا كَرِيهُمُ وَمِا وَمِي اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الل

مروی ہے کہ جب کوئی بند ہ بیٹمل کرنا ہے تو شیطان کہتا ہے کہانسوس کہ میں نے اس شخص کوسال بھر گمراہ کرنے کی جوکوشش کی تھی و ہ اس عمل کی دجہ ہے ضائع ہوگئی اوراس کے سا<mark>ل</mark> کاانجام بخیر ہوگیا۔

(كتابالاتال) SIBTAIN.COM

اورظاہرے کہ ع

کام وہ اچھا ہے جس کا کہ انجام اچھا ہے

محرم الحرام كاعمال كابيان

سے پورامہینہ ہی خاندان نبوت اوران کے حبداروں کے لیے حزن و ملال اورر نج و کاال کامہینہ ہے۔
حضرت امام رضالظی فرماتے ہیں کہ ماہ محرم وہ محترم مہینہ ہے جس کا جابلی دور کے لوگ بھی احترام کرتے تھے
اوراس میں قبل و قبال کوحرام بیجھتے تھے گرای میں ہمارا خون بہایا گیا اور ہماری ہتک حرمت کی گئی۔ ہمارا سامان لوٹا
گیا اور ہمارے خیام کو آگ لگائی گئی۔ فرمایا: امام حسین القی کی مصیبت نے ہمارے آنسوؤں کو بہا دیا اور
آئی کو دیا۔ اور واقعہ کر بلا یوم لقاء تک ہمارے لیے کرب و بلا کا موجب بن گیا۔ حسین جیسے مظاوم پر
دنیا والوں کو رونا چاہیئے کیونکد ان کے مصائب پر رونا ہوئے کرب و بلا کا موجب بن گیا۔ حسین جیسے مظاوم پر
بلال محرم نمووار ہو جاتا تھا تو میں کے والدین آگوار کو کوئی ہتا ہوانہیں دکھتا تھا اور جوں جوں محرم کے دن گزرتے
جاتے تھے آپ پر حزن و ملال کا غلبہ ہوتا جاتا تھا یہاں تک کہ جب روز عاشوراء آجا تا تو یہان کے گرید و بکا اور
مصیبت وعزا کا دن ہوتا تھا۔ اور فرماتے تھے کہا کی دن امام حسین الفی کوشہید کیا گیا تھا۔ (امالی صدوق، عاشر معارفی ما فیمرہ)

بہرحال اس ماہ کے اہم اعمال ذیل میں درج کئے جاتے ہیں۔

(۱) پہلی محرم کی رات: -حضرت رسول خداصلی الله علیه و آله وسلم سے مروی ہے، فرمایا: ماہ محرم میں ایک شرافت والی رات ہے جو کہ اس ماہ کی پہلی رات ہے جس میں سور کعت سور ہ الحمد اور سور ہ قبل ہو اللّٰہ احمد کے ساتھ بڑھی جاتی ہے۔ (کتاب الاقبال)

(۲) اس رات مزید دو رکعت نماز مروی ہے۔ ہر رکعت میں الحمد ایک باراور سورہ تو حید گیارہ بار۔حضرت رسول خداصلی اللہ علیہ و آلہ وسلم سے مروی ہے کہ جو محض محرم کی پہلی رات بید دو رکعت پڑھے اور پہلی تاریخ کو رسول خداصلی اللہ علیہ و آلہ وسلم سے مروی ہے کہ جو محض می پہلی رات بید دو رکعت پڑھے اور پہلی تاریخ کو روزہ رکھے تو وہ اس شخص کی مانند ہوگا جو سال بھر عمل خیر بجالائے اور وہ سال بھر محفوظ رہے گا اور اگر مرگیا تو جنت میں وافل ہوگا۔ (ایعناً)

محرم کی پیلی تاریخ

اس دن کے چند عمل ہیں:

- (۱) روز ہ رکھنا: حضرت امام رضالظ اللہ ہے مروی ہے کہ اس دن روز ہ رکھ کرخدا ہے جود عاما تکی جائے تو و ہاہے قبول فرما ناہے۔ (کتاب الاقبال والمصباح)
- (۲) حضرت امام رضالظ الله ہے مروی ہے، فرمایا کہ حضرت رسول خدا اللہ محرم کی پہلی تاریخ کو دور کعت نماز پڑھ کرا ہے ہاتھ آسان کی طرف بلند کرتے تھے اور تین بارید دعا پڑھتے تھے:

﴿ اَللَّهُ مَّ انْتَ الْإِلْهُ الْقَدِيْمُ وَ هَذِهِ سَنَةٌ جَدِيْدَةٌ فَاسْئَلُكَ فِيْهَا الْعِصْمَةَ مِنَ الشَّيْطَانِ ﴿

اے اللہ! تو قد می معبود ہے اور یہ نیا سال ہے جو اب آیا ہے اس سال کے دران میں شیطان سے بچاؤ کا سوال کرتا ہوں

وَالْفُوَدةَ عَلَى هَذِهِ النَّفُسِ الْاَمَّارَةِ بِالسُّوْءِ وَالْإِشْتِعَالَ بِمَا يُقَرِّبُنِي ٓ إِلَيْكَ يَا كَرِيهُمُ اللَّهُ وَالْإِشْتِعَالَ بِمَا يُقَرِّبُنِي ٓ إِلَيْكَ يَا كَرِيهُمُ اللَّهُ وَالْإِشْتِعَالَ بِمَا يُقَرِّبُنِي ٓ إِلَيْكَ يَا كَرِيهُمُ اللَّهُ وَجُعَ عَرِيزِي َ إِلَيْكَ يَا اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَجُعَ عَرِيزِي َ اللَّهُ مِن اللَّهُ وَجُعَ عَرِيزِي كَرِيها عَمِرانَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللِّهُ اللَّهُ اللَّلِي اللَّهُ الللللْلُلُولُ الللْلِلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللْلِلْمُ اللَّهُ اللَّهُ الللللْلُلُولُ الللللْلُولُ الللْلِلْمُ اللللْلِي اللللللْلِي اللللللْمُ الللللْلُولُ اللللْمُ اللللْمُ اللَّالِمُ اللللْمُ اللللللْمُ الللللْمُ اللَّا الللللْمُ الللللْمُ

يَا ذَالُجَلَالِ وَ الْإِكْرَامِ يَا عِمَادُ مِنْ لَا عِلَمَادَالُهُ يَا ذَكِرُوا مَنْ لا ذَخِيرُةَ لَهُ يَا حِرُزَ

اے جلالت اور یز رگی کے مالک اے لیے سہاروں کے سہارے اے جی دست لوگوں کے خزائے اے بے کس لوگوں کے محمہان

مَنُ لاَّ حِرُزَ لَهُ يَا غِيَاتَ مَنُ لاَّ غِيَاتَ لَهُ يَا سَنَدَ لَهُ يَا كُنُزَ مَنُ لاَّ كَنُزَ

اے بے ہم لوگوں کے فریادری اے بے حیثیتوں کی حیثیت اے بے فزانہ لوگوں کے فزانے

لَهُ يَا حَسَنَ الْبَلْآءِ يَا عَظِيْمَ الرَّجَآءِ يَا عِزَّ الضَّعَفَآءِ يَا مُنْقِذَ الْغَرُقَى يَا مُنُجِىَ الْهَلْكُي

ے بہتر آنائش كرنے والے اے سب سے براي اميداے كمزوروں كى عزت اے دوبتوں كوتيرانے والے اے مرتوں كو بچانے والے

يَا مُنُعِمُ يَا مُجْمِلُ يَا مُفْضِلُ يَا مُحْسِنُ آنُتَ الَّذِى سَجَدَ لَكَ سَوَادُ اللَّيْلِ

الے فتمت والے اے جمال والے الے فعل والے اسے احسان والے تو وہ ہے جس کو سجدہ کرتے ہیں رات کے اندھیر ہے

وَ نُـوُرُ النَّهَـارِ وَ ضَـوُءُ الْقَـمَرِ وَ شُعَاعُ الشَّمَسِ وَ دَوِيُّ الْمَآءِ وَ حَفِيْفُ الشَّجِرِ وَ نُورُ النَّهَانِ وَ دَرِقُولَ كَا سِرِرائِينَ اللهِ عَالَى اللهِ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ الله

يَآ اَللَّهُ لا شَرِيُكَ لَكَ اَللَّهُمَّ اجُعَلُنَا خَيْرًا مِّمَّا يَظُنُّونَ وَاغْفِرُ لَنَا مَالا يَعُلَمُونَ

اے اللہ تیرا کوئی ساجھی نہیں اے اللہ! ہمیں بنا جیسا لوگ ہم کواچھا بچھتے ہیں ہمارے وہ گیا ہ بخش جن کووہ نہیں جانتے

و لا تُسؤخ دُنَا بِسَمَا يَقُولُونَ حَسُبِسَى اللّهُ لَآ اِللَهُ اللّهُ اللّهُ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلُثُ وَ هُوَ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ ال

SIBTINGUISIOM

حضرت امام جعفر صادق الطبی ہے مروی ہے، فرمایا: تاسوعا وہ دن ہے جس میں حضرت امام حسین الطبی خزند اعداء میں پوری طرح گھر گئے تھے ۔اورا بن زیادو پسر سعد نے آپ کوضعیف سمجھا تھا اور خیال کیا تھا کہا ب ان کی نصرت و مدد کے لیے کوئی نہیں آئے گا۔فرمایا: میرے والداس ضعیف برقر ہا ن ہوجا کیں۔

وموين محرم كى رات

یہ وہی قیامت خیز رات ہے جس کی امام حسین الظی نے بڑی کوشش کر کے مہلت کی تھی تا کہ اس میں ول کھول کراللہ کی عباوت کرسکیں اور کر بلا والوں نے بیرات میدان کر بلا میں اس طرح گزاری تھی کہ کوئی قرآن پڑھ رہا تھا تو کوئی نماز، کوئی قیام میں تھا تو کوئی قعود میں، کوئی رکوع میں تھا تو کوئی ہجود میں ۔ لہذا محبان اہل ہیت کو بھی یہ رات کر بلا والوں کی تا تھی میں عباوت خدا میں بسر کرنی چاہیئے ۔ اس رات میں مختلف قتم کی نمازوں کا پڑھناوارد ہے ۔ مجملہ ان کے ایک سورکعت نماز بھی ہے ہر رکعت میں الحمد ایک با راور قبل ہو الله احد تین بار اور یورک نمازے کا اور یورک نمازے فارغ ہوکرستر بار یہ بڑھے:

****************************** ﴿سُبُحَانَ اللَّهِ وَالْحَمُدُ لِللَّهِ وَلا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اكْبَرُ باک تر ہے اللہ حمد اللہ بی کے لیے ہے نہیں کوئی معبود سوائے اللہ کے اللہ بزرگھر ہے

وَلا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ﴿ ـ

اور نییں ہے کوئی حرکت وقوت گروہی جوخدائے بلندو ہر تر ہے ملتی ہے

نیز اس رات کے آخری حصہ میں جا ررکعت نماز مروی ہے۔ بدوسلام ۔ ہر رکعت میں الحمد ایک بار۔ اورسورهٔ حمہ کے بعد دیں بار آینہ الکری، دی مرتبہ سورۂ اخلاص، دیں مرتبہ سورۂ فلق اور دیں بارسورۂ ماس اورسلام کے بعد سوم تبہ سورہ تو حید پڑھی جائے۔(کتاب الاقبال)

نیز اس رات جار رکعت نماز بدوسلام بھی بایں طور وار دہوئی ہے کہ ہر رکعت میں الحمد ایک باراورسورہ قل ھواللّٰداحد پیچاس بار۔اوراس کے بعد سر کارمحد و آل محدّ پر بکثر ت درود وسلام پڑھا جائے اوران کے دشمنوں یر بکثر تالعنت کی جائے۔

SIBTATA COM

یہ دن ساری دنیا کے دنوں میں سے بڑھ کرر کج و بلا اور گریہ و بکا کا دن ہے اور کا مُنات کا کوئی دوسرا دن شدت حزن و ملال اور حدت رنج وغم میں اس کے برابر نہیں ہے۔لہذا اس روز ول کھول کر حصرت مظلوم کر بلاالظی اور دوسرے شہداء کر بلا پر گریہ و وبکاء کرنا چاہیئے اور مراسم عزا بجالانے چاہئیں۔اس کے علاو ہاس ون چند عمل کرنے جاہئیں:

جب اہل ایمان وعز اایک دوسرے ہے ملیں تو بیہ کہیں:

منانے اوران کے مصائب ریگر بیرو بکا کرنے کا اہتمام کیا جائے۔

﴿ أَعُظُمَ اللَّهُ أَجُورُنَا بِمُصَابِنَا بِالْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَ جَعَلَنَا وَ إِيَّاكُمُ مِنَ الله زبارہ کرے ہمارے اجر و ثواب کو اس پر جو بچھ ہم امام حسین علیہ السلام کی سوگاری میں کرتے ہیں اور ہمیں حمہیں السطَّالِبِيُنَ بِشَارِهِ مَعَ وَلِيِّهِ الْإِمَامِ الْمَهُدِيِّ مِنُ الِ مُحَمَّدٍ عَلَيُهِمُ السَّلامُ ﴾ ـ امام حسین ؑ کے خون کا بدلہ لینے والوں میں قرار دے اپنے ولی امام مہدی کے ہمر کاب ہو کر کہ جو آل محمد علیم السلام میں سے ہیں۔

اس) قاتلانِ امام يرباي الفاظ بكثر تلعنت كي جائے:

﴿ اللَّهُمَّ الْعَنُ قَتَلَةَ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلامَ

ا الله إا مصين عليه السلام كے قاتلوں برلعت كر

- (٣) ایک ہزار ہار سورہ قل ھواللہ احدیرا ھا جائے۔
- (۵) حضرت امام حسین علیه السلام کی زیارت کی جائے اور زیارت عاشو راء براهی جائے جو که باب الزیارات میں مذکورے۔
 - (۲) اس دن پورے دن کاروزہ رکھنامکروہ ہے۔

﴿ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَارِتَ آدَمَ صِفُو َ قِ اللّٰهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَارِتَ نُوْحِ نَبِي اللّٰهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ نُوْحِ نَبِي اللّٰهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُوسَلى كَلِيْمِ اللّٰهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدٍ حَبِيْبِ اللّٰهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْمُعَلِي اللّٰهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْحَسَلِ اللّٰهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْحَسَلِ اللّٰهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْحَسَلِ اللهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْمُولَى اللّٰهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْمُعَلِي اللّٰهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْمُولِ اللّٰهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا اللّٰهِ السَّلِي اللّٰهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اللّٰهِ السَلَّهُ وَالْمَالِهِ اللّٰهِ السَلَّهُ عَلَيْكَ يَا اللّٰهِ السَلَّهُ السَلَّهُ عَلَيْكَ يَا اللّٰهِ السُلِهُ السَلَّهُ عَلَيْكَ يَا اللّٰهِ السَلَّهُ السَلَّهُ عَلَيْكَ يَا اللّٰهِ السَلَّهُ عَلَيْكَ اللّٰهِ السَلَّهُ عَلَيْكَ اللّٰهِ السَلَّهُ السَلَّهُ السَلَّهُ السَلِيْ الْمُعَلِي الْمَالِمُ اللّٰهِ السَلِّهِ السَلِّهُ السَلِهُ السَل

شہید ہیں اللہ کے رسول کے نواسے ہیں سلام ہو آپ پر اے خدا کے رسول کے فرزند سلام ہو آپ پر اے بشیر و

النَّـذِيُـر وَابُنَ سَيِّـدِ الْـوَصِيِّيُـنَ السَّلامُ عَلَيْكَ يَــابُـنَ فَـاطِمَةَ سَيَّدَةِ نِسَـآءِ الْعَالَمِيْرَ و تذریر اور وصول کے سردار کے فرزند سلام ہو آپ ہر اے فرزند فاطمہ جو جہانوں کی عورتوں کی سردار ہیں ٱلسَّلاَّمُ عَلَيْكَ يَآ اَبَا عَبُدِ اللَّهِ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا خِيَرَةَ اللَّهِ وَابْنَ خِيَرَتِهَ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ ۗ سلام ہو آپ پر اے ابو عبداللہ سلام ہو آپ پر اے خدا کے بہند کیے ہوئے اور بہندیدہ کے فرزند سلام ہو آپ پر اے ثَارَ اللَّهِ وَ ابُنَ ثَارِةٍ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ ٱيُّهَا الْوِتُرُ الْمَوْتُوْرِ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ ٱيُّهَا الْإِمَامُ الْهَادِي شہید راہ خدا اورشہید کے فرزند سلام ہوآپ پراے و متنول جس کے قاحل قتل ہو گھے سلام ہوآپ پراے ہدا ہے و ہا کیزگی والے امام الزَّكِيُّ وَعَلْي اَرُوَاحِ حَلَّتُ بِفِنَآئِكَ وَ اَقَامَتُ فِي جَوَارِكَ وِ وَفَدَتُ مَعَ زُوَّار اورسلام ان روحوں پر جوآپ کے آستاں پرسوکٹیس اورآپ کی قربت میں رور بی ہیں اور سلام ان پر جوآپ کے زائزوں کے ہمراہ آئیں ٱلسَّلامُ عَلَيُكَ مِنِّيٌ مَا بَقِيُتُ وَ بَقِيَ اللَّيُلُ وَ النَّهَارُ فَلَقَدُ عَظُمَتُ بِكَ الرَّزيَّةُ وَجَ میراسلام ہوآپ پر جب تک میں زندہ ہوں اور رات دن کاسلسلہ قائم ہے یقیناً آپ پر بہت بردی مصیبت گزری ہے اور اس سے بہت الْـمُـصَـابُ فِـى الْـمُورُمِنِيُـنَ وَ الْتُمُسُلِمِينَ وَ فِي اَهُلِ الرَّسَوْتَ اَجُمَعِيْنَ وَ فِي سُكَّان نیادہ سوگواری ہے مومنوں اور مسلمانوں میں آسانوں میں رہنے وائی ساری محلوق میں اور زمین میں رہنے والی الْاَرَضِيُّنَ فَإِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ وَ صَلَوَاتُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ وَ تَحِيَّاتُهُ عَلَيُكَ وَ عَلْمِ خلقت میں اللہ بی کے بین اور ہم ای کی طرف لوٹ جائیں سے خدا کی رحمتیں موں اس کی برستیں اور سلام آپ پر اور آپ کے ابَآئِكَ الطَّاهِرِيُنَ الطَّيِّبِيُنَ الْمُنْتَجَبِيُنَ وَ عَلَى ذَرَارِيُهِمُ الْهُدَاةِ الْمَهُدِيِّيُنَ السَّلامُ عَلَيْكُ آباء و احداد پر جو باک نہاد نیک سیرت و برگز مدہ ہیں اور ان کی اولا د پر کہ جو ہدایت یافتہ بیشوا ہیں سلام ہو آپ پر اے يَا مَوُلاٰيَ وَ عَلَيْهِمُ وَ عَلَى رُوْحِكَ وَ عَلَى أَرُوَاحِهِمُ وَ عَلَى تُرُيِّةِكَ وَ عَلَى تُرُبِّة میرے آتا اور ان سب پر سلام ہو آپ کی روح پر اور ان کی روحوں پر اور سلام ہو آپ کے مزار پر اور ان کے مزاروں پر لَّهُمَّ لَقِّهِمُ رَحُمَةً وَّ رضُوَانًا وَّ رَوُحًا وَّ رَيُحَانًا ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا مَوُلاٰيَ يَآ اَبَا عَبُدِ اللَّهِ اے اللہ! ان سے پیش آ مہر باتی خوشنودی مسرت اور خوش روتی کے ساتھ سلام ہو آپ پر اے میرے سردار اے ابو عبداللہ يَـابُـنَ خَاتَـم النَّبِيِّيْنَ وَ يَابُنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّيْنَ وَ يَابُنَ سَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ السَّلاَمُ عَلَيُكَ يَ

شَهِيُـدُ يَـابُـنَ الشُّهِيُـدِ يـآ اَ حَ الشُّهِيُـدِ يَاۤ اَبَا الشُّهَدَآءِ اَللَّهُمَّ بَلِّغُهُ عَنِي فِي هٰذِهِ السَّ شہید اے برادر شہید اے بدر شہیدال اے اللہ! پہنچا ان کو میری طرف سے اس گھڑی میں وَ فِي هٰذَا الْيَوُم وَ فِي هٰذَا الْوَقْتِ وَفِي كُلِّ وَقُتِ تَحِيَّةً كَثِيُرَةً وَّ سَلاٰمًا سَلاٰمُ اللّهِ آج کے دن میں اور موجودہ وقت میں اور ہر ہر وقت میں بہت بہت درود اور سلام اللہ کا سلام ہو عَـلَيُكَ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ يَابُنَ سَيِّدِ الْعَالَمِيْنَ وَ عَلَى الْمُسْتَشُهَدِيْنَ مَعَكَ سَ آپ ہر اللہ کی رحمت اور اس کی برکات اے جہانوں کے سردار کے فرزند اور ان ہر جو آپ کے ساتھ شہید ہوئے سلام ہو لگانا ر مُّتَّ صِلاً مَّا اتَّصَلَ اللَّيُلُ وَ النَّهَارُ اَلسَّلامُ عَلَى الْحُسَيُنِ بُنِ عَلِيٍّ والشَّهيُدِ اَلسَّلامُ عَلَى دن با ہم علتے رہیں سلام ہو حسین این علی شہید پر سلام ہو عَـلِيّ بُنِ الْحُسَيُنِ الشَّهِيُدِ اَلسَّلامُ عَلَى الْعَبَّاسِ بُنِ اَمِيُرِ الْمُؤْمِنِيُنَ الشَّهِيُدِ اَلسَّلامُ عَلَى لشُّهَدَآءِ مِنْ وُلُدِ آمِيُرِ الْمُؤْمِنِيُنَ ٱلسَّلامُ عَلَى الشُّهَدَآءِ مِنْ وُلُكِ الْحَسَنِ ٱلسَّلامُ عَلَى شہیدوں پر جو امیر المونین میں اولاد سے ہیں سلام ہو ان شہیدوں پر جو اولاد حسن مے ہیں سلام ہو ان لشُّهَدَآءِ مِنُ وُّلُدِ الْحُسَيُنِ اَلسَّلامُ عَلَى الشُّهَدَآءِ مِنْ وُّلُدِ جَعُفَرٍ وَّ عَقِيُل اَلسَّلامُ عَلَى شہیدوں پر جو اولادِ حسین ؑ ہے ہیں سلام ہو ان شہیدوں پر جو جعفر اور عقیل کی اولاد ہے ہیں سلام ہو كُلِّ مُسْتَشُهَدِ مَّعَهُمُ مِنَ الْمُؤْمِنِيُنَ اللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّ بَلِّغُهُمُ عَنِّي مومنوں میں ہے ان سب شہیدوں پر جوان کے ساتھ شہید ہوئے اے اللہ! رحمت نازل کرمجہ و آل محمد کر اور پہنچا ان کومیری طرف سے نَحِيَّةً كَثِيْرَةً وَ سَلامًا ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ ٱحْسَنَ اللَّهُ لَكَ الْعَزَ آءَ فِي وَلَدِغُ بہت بہت درو د اور سلام، سلام ہو آپ پر اے خدا کے رسول خدائے تعالی آپ کے فرزند حسین کے بارے میں آپ کے الْحُسَيْسِ اَلسَّلامُ عَلَيُكِ يَا فَاطِمَةُ اَحُسَنَ اللَّهُ لَكِ الْعَزَ آءَ فَيُ وَلَدَكِ الْحُ ساتھ بہترین تعزیت کرے سلام آپ پراے فاطمہ ٔاحداے تعالیٰ آپ کے فرزندھین کے بارے میں آپ کے ساتھ بہترین تعزیت کرے اَلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا آمِيُو الْمُؤْمِنِيُنَ اَحْسَنَ اللَّهُ لَكَ الْعَزَآءَ فِي وَلَدِكَ الْحُمَ

السَّلاُمُ عَلَيْكَ يَآ اَبِ الْمُحَمَّدِ الْحَسَنَ اَحُسَنَ اللَّهُ لَکَ الْعَزَآءَ فِی فَیْ الْحُسَنِ اللَّهُ لَکَ الْعَزَآءَ فِی فَیْ الْحُسَنِ اللَّهُ لَکَ الْعَزَآءَ فِی فَیْ الْحُسَنِ اللَّهُ لَکَ الْعَزَآءَ فِی فَیْ اللَّهِ وَ اللَّهُ اللَّ

(۱۰) اہل عزا والی شکل وصورت بنائی جائے تعنی قبیص کے بٹن کھو<mark>ل دیئے جائیں اور سرو ریش میں خاک</mark> ملائی جائے اور شہداء کر بلا پر گریدو بکا کیاجائے ۔وغیر دوغیر ہ۔

يجيبوي محرم الحرام كاون

ائن دن هو هی میں حضرت امام زین العابدین القلیلا کی شہادت واقع ہوئی ہے۔ اس لیے اس دن میان اہل ہیت کے زخم تازہ ہوتے ہیں۔ لہذا اس دن اس امام مظلوم کی مجالس عزا منعقد کر کے مراسم حزن و میان اہل ہیت کے زخم تازہ ہوتے ہیں۔ لہذا اس دن اس امام مظلوم کی مجالس عزا منعقد کر کے مراسم حزن و ملال اواکرنے چاہئیں اوراس امام القلیلا کی زیارت بھی پڑھنی چاہیئے اور حضرت سید الشہد ا عالقائلا کے سب سے بڑے عزا وارامام پرول کھول کرگریہ و بکا کرنا چاہیئے۔ ﴿ إِنّا لِلْلِهِ وَ إِنّا إِلَيْهِ دَاجِعُونَ ﴾۔

صفرالمظفر كے مبینہ كے اعمال كاتذكره

نعمادم بہ بات اوکوں میں کیوں مشہور ہے کہ صفر کا مہینہ نموں ہے جب کہ قرآن وسنت کی کوئی ایمی انھی موجود نہیں ہے۔ بہر حال اس وہمی نموست کے ازالہ کے لیے صدقہ دینے اور دعا کرنے سے بہتر کوئی چیز نہیں ہے۔ جناب محدث کاشانی "نے اس ماہ میں ما زل ہونے والی بلاؤں اور مسیبتوں سے محفوظ رہنے کے لیے لکھا ہے کہ ہر روز ورج ویل وعا کووں بار پڑھنا چاہیے۔ واللہ العالم ۔

ہے کہ ہر روز ورج ویل وعا کووں بار پڑھنا چاہیے۔ واللہ العالم ۔

﴿ يَمَا شَدِينَدَ اللَّهُ وَى وَ يَمَا شَدِينَدَ اللَّمِ حَمَالِ يَا عَزِينُو يَمَا عَزِينُو يَمَا عَزِينُو مَنَ بِعَظَمَةِ کَ اللہ العالم ۔

اے زیروست قوقوں والے اے خت گرفت کرنے والے اے غالب اے غالب اے غالب تیری برائی کے آگے تیری ماری جمہوئے کے خلیق کی فیل کے آگے تیری ماری جمہوئے کے خلیق کی فیل کی اللہ کی اللہ والی اس نمورہ والے اے نمورہ کی ایک کی کہ کھور کی ایک کی ایک کی کھورہ کی ایک کی ایک کی کو ایک ایک کی کہ کی کہ کی کو کہ کے کہ کا کہ کی کہ کے کہ کی کو کہ کی کہ کہ کو کہ کی کہ کہ کو کہ کی کو کہ کی کہ کو کہ کی کو کہ کو کہ کا کہ کی کو کہ کو کہ کہ کہ کو کہ کی کو کہ کی کو کہ کا کہ کی کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کے کہ کو کہ کی کو کہ کو کہ

بیسویں صفر کا دن اور اس کے اعمال

اور ہم مومنوں کو ای طرح نجات دیتے ہیں اور خدا رحمت مازل کرے محمد اور ان کی آل پر جو پاک و پاکیزہ ہیں۔

تشریف لے گئے۔ اس ون حضرت امام حسین القایل کی زیارت کرنا اور پڑھنا چاہیے۔ چنانچہ حضرت امام حسن عشری القلیلائے مروی ہے کہ مؤمن کی پانچ علامتیں ہیں: (۱) شب و روز میں فریضہ اور ما فلہ ملا کرا کیاون رکعت نماز پڑھنا۔ (۲) زیارت اربعین کرنا (اور پڑھنا)۔ (۳) وائیں ہاتھ میں انگوٹھی پہننا۔ (۳) ہجدہ میں فاک پر پیٹائی رکھنا۔ (۵) اور نماز میں بالجمر ﴿ بسُسِمِ اللّٰهِ السّرِ مُحسنِ الرَّ حِینُم ﴾ پڑھنا۔ (خصال شُخ صدوق) وہ زیارت با بالزیارات میں بیان کی جائے گی انتاء الله۔ جو ﴿ السسلام علمی ولی الله و حبیبه ﴾ سے شروع ہوتی ہے جو حضرت امام جعفر صادت القیلی سے منقول ہے جواس روز سورج بلند ہونے کے بعد روز عمون ہے جو حضرت امام جعفر صادت القیلی سے منقول ہے جواس روز سورج بلند ہونے کے بعد پڑھی جاتی ہے اور اس کے بعد دور کعت نماز زیارت پڑھ کردعا کی جاتی ہے۔

(مصباح شيخ طوی و زادال<mark>معا دمج</mark>لسيّ)

المحاكيسوين صفر كادن

اس دن حضرت سيد الانبياء سلى الله عليه وآله وسلم كى السيد مين عقام مدينه منوره بروز سومواروفات حسرت آيات واقع بهوئى اوراس ون وهي ين آپ كے بڑے نوا سے حضرت امام حسن مجتبى عليه افضل الحية والثنا كى شہادت واقع بهوئى -لبذا بيدن عام مسلمانوں كے ليے بالعموم اور هي جيان حيدر كراڑ كے ليے بالحضوص بڑے رئے والم اور حزن وغم كا ون ہے لہذا اس ون مجالس عزا كا نعقاد كر كے است قلبى و كا دردكا ظهار كرنا چاہيئے اوران ذوات مقدسه كى سيرت و كروار بر چلنے كا عزم بالجزم كر كے اپنى عقيدت وارادت كا كلدستدان كى بارگاہ ميں پيش كرنا چاہيئے -

رہیج الاول کے مہینہ کے اعمال کا تذکرہ

ریج الاول کی پیلی رات

جناب شیخ مفید ّاور دوسر سے علماءاعلام کے بیان کے مطابق بعثت کے تیرہویں سال رئیے الاول کی پہلی
رات کو پیغیبر اسلام اللہ نے کفار ومشر کیین مکہ کی ایذ ارسانیوں سے تنگ آ کر بحکم خدا حیدر کرار الظیم ہو کوا ہے بستر
پر سلا کرخود مدینہ کی طرف ہجرت فر مائی اور بیر رات غارِ ثور میں گزاری تھی اور بیر کیم رئیے الاول کی رات اور
جعرات تھی۔

آ تھویں رہے الاول کا دن SIB میں رہے الاول کا دن SIB میں رہے الاول کا دن اللہ کا دن اللہ کا دہ دواقع اس مہیدند کی آٹھویں تاریخ کو والا تاج میں بمقام سامراء حضرت امام حسن عسری اللہ کا کہ شہادت واقع

اس مہینہ کی آٹھویں تاریج کو والا تاج میں بمقام سامرا وصفرت امام حسن مسکری الظفیاؤ کی شہادت واقع میں اس مہینہ کی آٹھویں تاریخ کو والا تاج میں بمقام سامرا وصفرت امام حسن مسکری الظفیاؤ کی شہادت واقع موفی البندا میں دن اس امام عالی مقاتم کے مراسم عزا بجالانے چاہئیں۔

نوي ريح الاول

اس تاریخ کوولا مع بیس حضرت ججة ابن الحسن الظیلا پانچ سال کی مختصر عمر میں ظاہری منصب امامت پر فائز ہوئے لہذا اس ون امام زمانہ مجل اللہ تعالی فرجۂ الشریف کا جشن تا جپوشی مناما چاہیئے اور حدووشر ع انور کے اندررہتے ہوئے اپنی روحانی مسرت وشاد مانی کا ظہار کرنا چاہیئے۔

سر ہویں رہے الاول کی رات

جناب سیدابن طاؤوس اور دیگرا کثر علماء کرام کے ول کے مطابق ہجرت نبوی سے ایک سال پہلے یعنی بعثت کے ہارہویں سال ای رات کو پیغمبر اسلام ایک کو معراج جسمانی کی سعاوت وشاومانی نصیب ہوئی لہذا ہیہ بڑی متبرک رات ہے۔

ستر ہویں رہے الاول کاون

نیزای تاریخ یعنی ستره رقع الاول کی رات بوقت طلوع فجر عام الفیل بروزجمعة المبارک حضرت سید
الانبیاء و خاتم الانبیاء محمصطفی صلی الله علیه و آله وسلم کی اس عالم آب وگل میں بمقام مکه مکرمه ولادت باسعا دت
واقع بهوئی اور بیظلمت کده بقعهٔ نوروسر وربنا۔ اورجس چیز نے اس دن کی عظمت وجلالت میں مزید اضافه کیاوه بی
ہے کہ ۱۸ جی میں ای تاریخ کواقلیم امامت کے چھٹے تا جدار حضرت امام جعفر صادق القلیج کی بمقام مدینه منوره
ولادت باسعادت واقع بهوئی۔ لبندا عام مسلمانوں کو بالعموم اور محبانِ الل بیت کو بالحضوص اس دن جشن میلا و
منانے کا اجتمام کرنا چاہیئے اور شرع شریف کے حدود کے اندر رہتے ہوئے اپنی روحانی مسرت و شادمانی کا مظاہرہ کرنا چاہیئے۔

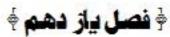
اس دن دوعمل وارد ہوئے ہیں: ایک روزہ رکھناجو کہاجمد و تواب میں ساٹھ سال کے روزوں کے ہراہر ہے۔ (الوسائل)۔ کیونکہ آج کا دن سال کے ان چار افول میں سے ایک ہے جن میں روزہ رکھنا خصوصی فضیلت کا حال ہے۔ دوسرا حضرت رسول خدا ہے اور حضرت مرتضی النے کی زیارت پڑھنا جو کہ باب الزیارات میں ذکر کی جائے گی انتاء اللہ۔



رہیجالثانی کے اعمال کا تذکرہ

اس ماہ کی دیں تاریخ کو توسیع ہیں حضرت امام حسن عسکری الظیمانی کی ولا دت باسعا دت واقع ہوئی۔ لہذا بیہ دن محبانِ اہل ہیت کے لیے انتہائی سروراورخوشی کا دن ہے۔لہذا اس میں امام یاز دہم کا جشن میلا دمنا کر اپنی مسرت اورخوشی کا ظہار کرنا چاہیئے اور جناب شیخ مفید نے لکھا ہے کہا گرشکرانۂ نعمت کے طور پر اس دن روز ہ رکھا جائے تو بہتر ہے۔(الارشاد)

SIBTAIN.COM

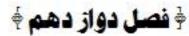


جادی الاولی کے اعمال کا تذکرہ

مخدومہ کا کتات حضرت فاطمہ زہراسلام اللہ علیہا کی و فات کے سلسلہ میں دورواییتیں ہیں ایک میہ کہ آپ ایپ عظیم والد ماجد کی و فات حسرت آیات کے بعد پچھڑ دن دنیا میں زندہ رہیں اور چونکہ آنخضرت کی و فات مراجع کی و فات مراجع کی و فات مراجع کی و فات کہ اور کا الم کی تیر ہویں یا چود ہویں یا پندر ہویں کی و فات کا صفر الجھ کو و آقع ہوئی ہے تو اس طرح پچھڑ دن جما دی الاولی کی تیر ہویں یا چود ہوئی ہے۔ لہذا کو پورے ہوتے ہیں۔ بناہریں بی بی بی کی شہادت ان تین دنوں میں سے کسی ایک دن میں واقع ہوئی ہے۔ لہذا ان دنوں میں اس مخدومہ مظلومہ بی بی کے مراسم عزاجھی بجا لانے چاہئیں اور آپ کی زیارت بھی کرنی اور یراھنی چاہئے۔

SIB پندر مول مادى الادكى كادن

پندرہ جما دی الاولی الاسم ہے کو جنگ جمل میں بھرہ فتح ہوا اور پھی ہیں اس دن حضرت امام علی بن الحسین زین العابدین الطبی کی ولا دت باسعادت واقع ہوئی ۔لہٰذا اس دن مراسم مسرت اوا کرنے چاہئیں اور بقول بعض علماءاس دن ان دونوں ہزر کواروں کی زیارت کرنا اور پڑھنا مناسب دموزوں ہے۔



جادى الثانيك اعمال كالذكره

جناب سیدابن طاؤوں ؓ نے واسطی سے ایک روایت نقل کی ہے کہ جو خص اس مہینہ میں اس طرح چار
رکعت نماز (بدوسلام) پڑھے کہ پہلی رکعت میں الحمد ایک باراور اس کے بعد آیت الکری ایک باراور سورہ قدر
پچیس بار۔ دوسری رکعت میں الحمد ایک باراور اس کے بعد سورہ الہا کم الوکاثر ایک باراور سورہ تو حید پچیس بار۔
تیسری رکعت میں الحمد ایک باراور اس کے بعد سورہ کافرون ایک باراور سورہ فلق پچیس باراور چوتھی رکعت میں
الحمد ایک باراور اس کے بعد سورہ تھر ایک باراور سورہ والناس پچیس بار پڑھے اور سلام کے بعد تسبیحات اربعہ
﴿ سُنہ حَدانَ اللّٰهِ وَ الْحَدَمُدُ لِلّٰهِ وَ لا إِلْهَ إِلاَّ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ الْحُبَرُ ﴾ ستر بار۔ اس کے بعد درد و شریف

الله بإكراب حمالله ى كه ليم يستري كوفي معمود وائه الله كه اودالله يزركو به SIB معمود وائه الله كالموالله يزركو بالله كالمحاللة المحالية والمستريخ والمستريخ والمستريخ والمستريخ والمستريخ والمركزة والمعرود والمومن المعمود والمعمود والم

لِلْمُوْمِنِيْنَ وَ الْمُوْمِنَاتِ ﴾ پرسجده میں جائے اور تین ہار کے: ﴿ یَا حَدِیُ یَا قَیُّوُمُ یَا ذَا الْجَلاٰلِ مردوں اور مومز مورتوں آوں کو بخش دے

وَ الْإِكْرَامِ يَا اللَّهُ يَا رَحُمْنُ يَا رَحِيْمُ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ﴿ لِعِدَازَالِ اپْي طاجات طلب كر _ _

ما لک ا ساللہ اے برائے وقع والے اسے مہر مان اسب سے زیادہ رقم کرنے والے۔

مروی ہے کہ جو شخص بیمل کرے تو خداوند عالم آئندہ سال تک اسے اورائے خانوادہ کواوراس کے مال اوراس کے دین وائیان کومحفوظ فر مائے گااورا گروہ اس اثناء میں مرگیا تو شہادت کی موت مرے گا۔ (کتاب الاقبال)

تيسري جمادي الثانيه

چونکہ دوسری روایت بیہ ہے کہ مخدومہ کا کنات حضرت فاطمہ زہرا علیم السلام اپنے عظیم والد کے بعد پچانویں دن زندہ رہیں اس کے بعد و فات پائی۔ بنا ہریں اس مخدومہ ومظلومہ بی بی گی شہادت کیم، دویا تین جمادی الثانیہ کو واقع ہوئی ہے۔ لہذا ان دنوں میں محبانِ اہل ہیت کو بی بی عالم کی صف ماتم بچھا کرم اسم عز اا دا کرنے چاہئیں ۔اوراس مخدومہ کی زیارت بھی کرنی اور پڑھنی چاہیئے اور جنا ہے سید بن طاؤوں ؒنے آج کے دن کی بیزیارت نقل کی ہے:

﴿ اَلسَّلاُمُ عَلَيْكِ يَا سَيِّدَةَ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلاُمُ عَلَيْكِ يَا وَالِدَةَ الْحُجَجِ عَلَيْ علام ہو آپ پر اے جانوں کی عودوں کی سردار علام ہو آپ پر اے ان کی والدہ جو لوگوں پر النَّاسِ اَجُ مَعِیْنَ اَلسَّلاُمُ عَلَیْکِ اَیَّتُهَا الْمَظُلُومَةُ الْمَمْنُوعَةُ حَقَّهَ ﴾ پجریہ کے: خدا کی جُتی ہیں علام ہو آپ پر اے وہ مظاومہ جس کا حق چین لیا گیا

﴿ ٱللّٰهُ مَّ صَلِّ عَلْمَ اَمَةِ كَ وَابُنَهِ نَبِيّ كَ وَ زُوْجَهِ وَصِيّ نَبِيّكَ صَلُوةً تُزُلِفُهَا فَوُق زُلُقًا اعتبودارهت ازل فرما افي كنرائ في وفرّ اورائي أي كوصى كاثريك عيات يرايكي رهت جوز ديك كرع اس كويزه كر

عِبَ ادِكَ الْسُمُ كَرَّمِيسُنَ مِنُ اَهُلِ السَّمُواتِ وَ اَهُلِ الْاَرْضِيلُ فَي - (كَتَابِ الاقبال) عَبِي وَ الْمُلِي الْالْوَقِيلُ فَي الْمُلِينَ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ

بيسوي جمادي الثانيه كاون

بعثت کے دوسرے یا پانچویں سال جمادی الثانیہ کی بیس تاریخ کوصد بقة کبری طاہرہ مطہرہ حضرت فاظمة الز ہراسلام الله علیہا کی ولادت باسعادت بمقام مکہ مکرمہ واقع ہوئی ہاور افا اعطیناک الکو ٹوک پہلے مملی تفییر ظاہر ہوئی ہے لہٰذا حدو دشریعت کے اندررہتے ہوئے اس دن اہل ایمان کو اسلامی و روحانی مسرت و شاد مانی کے وظائف ادا کرنے چاہئیں جن میں سے اعلی وظیفہ ستحق وحاجت ندائل ایمان کی مالی اعانت اوران کی ہرضم کی حاجت برآری ہے۔ والله الموفق لکل خیو۔

تتم سمداسلامی بار مبینوں میں سے ہر ماہ کی پہلی تاریخ کے اعمال کے بیان میں

جب سال بھر کے اعمال شرعیہ کے مقدی تذکرہ ہے ہم فارغ ہو چکے تو مناسب معلوم ہوتا ہے کہ یہاں ان چنداعمال کا تذکرہ کر دیا جائے جن کاتعلق ہر اسلامی قمری مہینہ کی پہلی تاریخ ہے ہے۔اوروہ چندامور یہ ہیں: (۱) ہر نے ماہ کا چاند دیکھتے وقت صحیفۂ کاملہ کی دعائے رؤیت ہلال پڑھی جائے جو کہ صحیفہ کی تینتالیسویں

}

دعا ہے۔(۲)اس موقع پر سات بارسورہ الحمد پڑھی جائے ۔(۳)ہرمہینہ کی پہلی تاریخ کو دورکعت نما زبایں طور پڑھی جائے کہ پہلی رکعت میں الحمد کے بعد تعیں با رسورہ تو حیداور دوسری رکعت میں الحمد کے بعد تعیں مرتبہ سورہُ انا انے کیناہ اور سلام کے بعد حسب تو فیق کچھ صدقہ دیا جائے۔جوابیا کرے گاتو کویاوہ خداہے اس ماہ کی سلامتی خرید لے گا۔اورا یک روایت کے مطابق اس نماز کے بعد ایک باراس دعا کار مطابعی وارد ہے: ﴿ بسُم اللَّهِ الرَّحُمُنِ الرَّحِيُمِ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرُضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَ يَعُلَمُ خدا کے نام سے شروع جور حمٰن ورحیم ہے اور نہیں زمین میں حرکت کرنے والی کوئی چیز گلر بید کہ اس کی روزی حدا کے ذمہ ہے وہ اس کی مُسْتَقَرَّهَا وَ مُسْتَوُدَعَهَا كُلُّ فِي كِتَابٍ مُّبِيْنِ بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ وَ إِنْ يَمُسَسُكَ قیام گاہ اور مقام حرکت کو جانتا ہے بیرسب کچھے واضح کتاب میں درج ہے خدا کے نام سے جورحمان و رحیم ہے اوراگر خدا کسی وجہ سے کچھے اللُّـهُ بِـضُرَّ فَلا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَ إِنْ يُردُكَ بِخَيْرِ فَلا رَآدٌ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَآ کوئی نقصان پہنچائے تو سوائے ا**ں کے کوئ**ی اسے دورٹییں کرسکتا اوراگر وہ تیر**ی** بھلائی کا امادہ کرےتو کوئی ا**ں** کےفضل کوروک ٹییں سکتا مِنُ عِبَادِهِ وَ هُوَ الْفَافُولُ الرَّحِيْمَ عِسُمَ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعُدَ عُسُوا وہ اپنے بندوں میں جے جا ہے نوازنا ہے اوروہ ہے برا معاف کرنے والامہر بان خدا کے نام سے شروع جورشن و رقیم ہے بہت جلد خدائشی يُّسُرًا مَاشَآءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ حَسُبُنَا اللَّهُ وَ نِعُمَ الْوَكِيُلُ وَ أَفَوّ ضُ اَمُرى إِلَى اللَّهِ إِنَّ کے بعد آسانی عطا کرے گا جواللہ جاہے گاوہ ہوگائیں کوئی قوت سوائے اللہ کے کافی ہے ہمارے لیے اللہ اوروہ بہترین کارسمازہے اور میں اللُّهَ بَصِيْدٌ م بِالْعِبَادِ لاَ إِلَّهَ إِلاَّ أَنْتَ سُبُحَانَكَ إِنِّهِ كُنْتُ مِنَ الظُّلِمِيْر ا پنا ہر کام خدا کے سپر دکرنا ہوں بے شک خدا اپنے بندوں کوخوب جانتا ہے تین کوئی معبو دسوائے تیرے تو یا ک تر ہے بے شک میں ہی رَبِّ إِنِّـى لِـمَــآ ٱنْـزَلُـتَ إِلَــىَّ مِنُ خَيْرٍ فَقِيْرٌ رَّبِّ لا تَذَرُنِي فَرُدًا وَّ ٱنْتَ خَيْرُ الُوارِثِيْرَ ﴾ ــ صوروارتھاا ہے بروردگار اتو مجھ کو جو بھی نعمت عطا کرے گا میں اس کی حاجت رکھتا ہوں میرے رب مجھ کوا کیلا نہ چھوڑ اور بہترین وارث تو بی ہے (مصباح شيخ وتفعمي و زا دالمعا دو كتاب الاقبال وغيره ما)

﴿ باب والم ﴿

سركار محدوآ ل محمطيهم السلام كى زيارات مقدسه كاتذكره

ا باب بھی باب نم کی طرح ایک مقدمہ اور چند فصول اور ایک خاتمہ برمشمثل ہے

مقدمہ جوآ داب سفراورآ داب زیارت پرمشمل ہے

- (۱) عام حالات میں بھی سفر کرنا شرعاً ایک بسندید ہ امر ہے چہ جائیکہ جب وہ کسی واجب یا مستحب امر کی ا دائیگی کے لیے کیاجائے کہاس صورت میں وہ اور بھی زیادہ مرغوب ہوجا تا ہے۔
- (٢) مر المر المراح كي المان ومستحبات الوقع بين جن كامد نظر ركهنا بهتر الوناب منجمله ان عايك بيد

ے کہ کسی خس ون میں سفر عاکمیاجا کے جیسے قبر وہ عقر ہے فیرہ - SIBTA

- (٣) بہتر ہے کہ ہفتہ کے دن سفر کیا جائے کیونکہ روابیت میں وارد ہے کہ اگر کوئی پھر بھی ہفتہ کے دن پہاڑ
 - ے حدا ہوتو اے بھی خدا اپنی جگہ لوٹا ویتا ہے۔
 - (۴) سفر پر جاتے وقت وصیت کی جائے کیامعلوم بیاس کی زندگی کا آخری سفر ہو۔
- - فرمایا كه ﴿ تصدق و اخرج اى يوم شئت ﴾ كمدقد و عدو پرجس دن چاهوسفر كرو _
- (۱) پیغمبراسلام 📽 ہے مروی ہے کہ آ دمی جب سفر کرنے کا ارادہ کر ہے تو دورکعت نماز پڑھے اوراس

کے بعدیہ دعارہ ھے:

﴿ اَللَّهُمَّ اسْتَوُدِ عُكَ نَـفُسِى وَ اَهْلِى وَ مَالِى وَ ذُرِّيَتِى وَ ذُرِّيَتِى وَ ذُنْيَاىَ وَ اَخِرَتِى ﴿

اے اللہ! میں آج کے دن اپی جان، اپنے الل و عیال اور اپنا مال اور اپی اولاد اور اپی دنیا و آخرت

وَ آمَانَتِي وَ خَاتِمَةَ عَمَلِي ﴾

اوراپیغمل کا خاتمه تیرے سپر د کرنا ہوں۔

فرمایا: جوشخص ایبا کرے گاتو خدااہے وہ سب پچھءطا کرے گا جووہ خدا سے طلب کرے گا۔

(كتاب الدعاد الزياره)

(4) اچھے ساتھیوں کے ہمراہ سفر کیا جائے اور حتی الامکان تنہا سفر کرنے سے احتر از کیا جائے کیونکہ حضرت پیغمبرا سلام ﷺ نے تنہا سفر کرنے ، تنہا کھانا کھانے اور تنہا مکان میں سونے کی ممانعت فر مائی ہے۔

(۸) حضرت امام زین العابدین الطابی والی دعایر اهی جائے جس کے بارے میں امام الطابی فرماتے ہیں کہ جب میں بید دعایر الحالی فرماتے ہیں کہ جب میں بید دعایر الحالی فرماتے ہیں ہوتی اگر چہ مجھے ضرر پہنچانے کے لیے سب جن وانس ہی جمع کیوں ند ہوجائیں، جوبیہ ہے:

بِسُسِمِ السُّلِهِ وَ بِسالسُّهِ وَ مِسنَ اللَّهِ وَ إِلَى اللَّهِ وَ فِى سَبِيُلِ اللَّهِ اَللَّهُمَّ إِلَيُكَ اَسُلَمُتُ نَفُسِى مُ خدا كهام سے خداكى ذات سے خدا كے اذن سے خداكى طرف اور خداكى داہ مِثْ السِمعِودا مَيْن نے اپى جان تَجْے سوپ دى

وَ اِلدُّكَ وَجَّهُتُ وَجُهِيُ وَ اِلدُّكَ فَوَّضُتُ آمُرِيُ فَاحُفَظُنِي بِحِفُظِ الْإِيْمَانِ مِرْيُنِ

اپنا رخ تیری جانب کر لیا اور بنا معالمہ تیرے بیرد کر دیا ہے اس میری گلماری کر ایمان کی حفاظت کر کے میرے آگے ہے

يَدَىً وَ مِنُ خَلْفِيُ وَ عَنُ يَسِمِينِنِي وَ عَنُ شِسَمَالِيُ وَ مِنُ فَوُقِي وَ مِنُ تَحْتِي وَ ادْفَعُ

میرے چکھیے سے میرے داکیں سے میرے باکیں سے میرے اور یہ اور میرے نیچے سے اور اپی پیخشش وقوت سے میرا دفاع کرنا

عَنِّيُ بِحَوْلِكَ وَ قُوَّتِكَ فَإِنَّهُ لا حَوْلَ وَلا قُوَّةَ اِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

رہ کیونکٹیس کوئی حرکت وقوت مگروہ جو بلندر تریز رگ تر عندا ہے ہے۔

- (9) اگر با دام تلخ کی چیر ی باتھ میں ہوتو حفاظت سفر کے لیے مفید ہے۔

پالی ہے۔

(۱۱) تحت الحنك كے ساتھ پكڑى باندھ كرسفر كے ليے گھرے رواند ہوما چاہيئے تا كدآ دى سفر ميں چورى ،

ڈا کہاورغرق وحرق ہے محفوظ رہے۔

(۱۳) راستہ میں لڑائی جھگڑ ہے اور سب وشتم سے اجتناب کیا جائے۔

(۱۴) راستہ میں نماز ہائے فریضہ کی ادائیگی میں کوتا ہی نہ کی جائے۔

الى غير ذلك من آداب السفر الكثيرة و اكتفينا بهذا القدر روماً للاختصلو سركارمحروآل محميم السلام كى زيارات كة واب

جب سفرزیارات کا تذکرہ ہو چکاتو اب ذیل میں اصل زیارات کے پھھ آ داب کا تذکرہ کیا جاتا ہے۔

اوروه چندامور بين:

(۱) عنسل زیارت کیا جائے ۔اور بہتر ہے کہاس کے بعد وہ دعا پڑھی جائے جوثقفی نے حضرت امام جعفر صاوق الطابی نے نقل کی ہے:

﴿ اَللَّهُ مَ اجْعَلُهُ لِـ يُ نُوراً وَّطَهُ وُراً وَّحِرُزاً وَكَافِيًا مِنْ كُلِّ دَاءٍ وَسُقُمٍ وَمِنُ

كُلِّ آفَةٍ وَعَاهَةٍ وَ طَهِرُ إِنهِ قُلْنِي وَ جَوَارِحِي وَلَلْحُمِيْ وَدَمِي وَشَعْرِي وَ بَشَرِي

وَ مُنِحًى وَ عِظَامِى وَ عَصَبِى وَمَا اَقَلَّتِ الْاَدُضُ مِنِى وَاجْعَلُهُ لِى شَاهِدًا

يَوُمَ الْقِيَامَةِ وَ يَوُمَ حَاجَتِنيُ وَ فَقُرِي﴾ - (كتاب الدعا والزياره)

(۲) زائر کوچاہیئے کہ جس بزر کوار کی زیارت کے لیے جائے ان کی قبر مقدس کی زیارت کرنے میں ان تمام آ داب کو طوظ خاطر رکھے جوان کے ظاہر ی حین حیات میں مدنظر رکھے جاتے تھے کیونکہ وہ اب بھی اپنے پروردگار کی ہارگاہ میں زندہ ہیں اوراس سے رزق یاتے ہیں۔

(۳) ہرمشہدمقد س پر پہنچ کرخدا کے احسان پر کہ اس نے اسے زیارت کی تو فیق عطا کی ہے خدا کے حضور سجدہ شکر بجالائے۔ مگروہ اس طرح کہ صاحب قبر کے جانب سراوروہ بھی روبقبلہ ہوکر بجالائے کہ کوئی بیر نہ سمجھے کہ یہ نہ بھی اور ہے جانب سراوروہ بھی ہویا تعبیدی خداوند عالم کی ذات کہ بیر نبی یا امام کو بحدہ کر رہا ہے۔ کیونکہ شریعت اسلامیہ میں ہر شم کا سجدہ تعظیمی ہویا تعبیدی خداوند عالم کی ذات

سے مختص ہے اور کسی بھی مخلوق کو کسی قتم کا سجدہ کرما نہ صرف میہ کہا جائز اور حرام ہے بلکہ ما قابل معافی گناہ کبیرہ ہے لہذا زائر کے لئے اس شرک جلی ہے اجتناب کرما واجب ہے اورعوام کالانعام کی طرح ہرگز سجدہ نہیں کرما چاہئے۔

- (٣) ہر معصوم کی زیارت کے بعد جانب سر دورکعت نماز زیارت پڑھی جائے۔
- (۵) زائر کو چاہیئے کہ مشاہد مقدسہ میں جس قد رہو سکے قرآن مجید کی تلاوت کرے اور اس عمل کا ثواب

صاحب قبر کی بارگاہ میں ہدیہ کر دے کہ ایسا کرنے سے ثواب دو چند ہوجاتا ہے۔

- (١) جوزائرين پہلے ہے موجود ہوں ان كى اجازت كے بغيران كى جگه بر قبضه نه كياجائے۔
- (۷) کھڑے ہو کرزیارت پڑھی جائے اوراگر کوئی عذر ہوتو پھر بیٹھ کر بھی بڑھی جاسکتی ہے۔ نیز زیارت پڑھتے وقت آواز کوبلند نہ کیا جائے بلکہ آ ہتہ آواز میں پڑھی جائے۔
- (۸) اگرم دوں اور عورتوں کے لیے زیارت کے الگ الگ او قات مقرر کئے جائیں مثلاً مردوں کے لئے دن اور عورتوں کے لئے دن اور عورتوں کے لئے دارت تو ہے۔ بہتر ہے اور اگر اچا یہ ہو سکے تو پھر اور کے ایکٹے زیارت کرنے میں کوئی مضا لکتہ نہیں ہے بشر طبکہ عورتیں بردہ کی پابندی کریں اور اس طرح بن سنور کروہاں نہ جائیں کہمردوں کے دین و ایمان برؤا کہ زنی کی مرتکب قرار پائیں۔ ورنہ وہ نیکی بربا دوگناہ لازم کی مستوجب قرار پائیں گی۔
 - (9) احوط یہ ہے کہ حدث اکبروا صغرے پاک ہوکر زیارت کی جائے۔
- (۱۰) صرف وہ زیارات پڑھی جائیں جوخودائمہ طاہرین علیم السلام ہے مردی ہوں اورخود ساختہ زیارتوں کے پڑھنے سے اجتناب کیا جائے جن میں فدکور ہے کہ حرم کے بیرونی دروازہ پر بیر پڑھے اورا ندرونی پر بیر پڑھے ۔ گئی ہے جن میں فدکور ہے کہ حرم کے بیرونی دروازہ پر بیر بیر ہے ۔ گئی ہے جن میں کے سامنے بیر پڑھے ۔ گئی ہے باہر بیہ پڑھے اوراندر بیاور پھرضر کے مقدس کے سامنے بیر پڑھے اوراندر بیاور پھرضر کے مقدس کے سامنے بیر پڑھے اوراپس پشت بیدوغیرہ وغیرہ ۔ جبکہ ائمہ طاہرین علیم السلام کے دور میں ان تمام چیزوں کا کوئی وجود ہی نہیں بڑھے اوراپس پشت بیدوغیرہ وغیرہ ۔ جبکہ ائمہ طاہرین علیم السلام کے دور میں ان تمام چیزوں کا کوئی وجود ہی نہیں
- (۱۱) نماززیارت ہو یا دوسری نمازیں وہ جانب سر پڑھی جائیں تو افضل واولی ہے جیسا کہ علامہ مجلسیؓ اور دوسرے علماءِ اعلام نے وضاحت وصراحت فر مائی ہے۔
- (۱۲) ان مقامات مقدسه میں لا یعنی گفتگو ہے احتر از کیا جائے اور دعا واستغفاراور تو ہو انا بہ پر اکتفا کی

جائے تا کہ ایک زائر کی روش و رفتاراورسیرت و کردار میں زیارت سے پہلے اور اس کے بعد فرق نظر آئے۔ ما تکی جائے البنته اس مرقد مقدس والے برز رکوار کا واسطہ دیا جائے اوران کے وسیلے سے دعا کی جائے۔ایسا نہ ہو کہ دوسرے مقامات پرتو ان ہستیوں کے وسیلہ ہے خدا ہے دعا کی جائے اور مشاہد مقدسہ پر خودان ہے دعا کی جائے کہ پیشرک ہے۔

(۱۴) جبزیارت سے فارغ ہوتو صاحب مرقد سے الوداع کرے۔

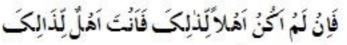
(۱۵) زائرین کوچاہیئے کہ سفر زیارت میں جس مشہد مقدس پر جائیں تو وہاں کے علماء اعلام کی خدمت میں حاضری دیں اوران سے علمی استفادہ کریں اوران ہے اپنے عقائد واعمال کی اصلاح کرائیں۔ نیز وہاں کے غربیب علماء وطلبها ورمختاج مؤمنین کی کچھ مالی امدا دبھی کریں۔

الى غير ذلك من الآداب الكثيرة و قداكتفينا منها بهذه الآداب اليسيره.

<u>یہہ</u> = SIBTAIN COM ہم نے جس قدراحادیث اہل ہیت کا نتیج وقص کیا ہے ہمیں اذن دخول کے بارے میں کوئی حدیث نہیں ملی ۔ ویسے بھی اون وخول کسی کے مکان میں وافل ہوتے وقت طلب کیا جاتا ہے اور مقاہر کا مکانات ہرِ قیاس کرما قیاس مع الفارق ہے جسے قیاس کو جائز: جاننے والے بھی ما جائز: جاننے ہیں۔علاوہ ہریں ان حضرات کے ظاہری حین حیات میں ملنے والے کوئی ا ذن دخو<mark>ل طلب نہیں کیا کرتے تھے۔گراس کے باو جوداگر کسی بھی</mark> معصوم کی زیارت سے پہلےوہ اون دخول ہرجاء مطلوبیت پڑھ لیا جائے جسے شیخ تقعمی نے ذکر کیا ہے تو اچھاہی

﴿ ٱللَّهُ مَّ إِنَّـ يُ قَلَّهُ وَقَفْتُ عَلَى بَابٍ مِنْ اَبُوَابِ بُيُوْتِ نَبِيَّكَ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَ قَ اے معبود! میں حاضر ہوں ایک دروا زے پر جو تیرے نبی کے گھروں کے دروا زوں میں سے ہے تیری رحمت نا زل ہوان پر او ران کی آل پر مَنَعُتَ النَّاسَ أَنُ يَدُخُلُوا إِلَّا بِاذْنِهِ فَقُلُتَ: ﴿ يَا أَيُّهَا الْذِيْنَ آمَنُو لاَ تَدُخُلُوا بُيُوتَ اورتو نے منع کیا ہے لوگوں کوان گھروں میں دا خلے سے تگر آنخضرت کی اجازت سے پس تو نے فرمایا ہے اسےایمان والوداهل نہ ہوا کرو نہی

*********************** النَّبِيِّ إِلَّا أَن يُّؤُذَنَ لَكُمُ ﴾ ٱللُّهُمَّ إِنِّي ٱغْتَقِدُ حُرُمَةَ صَاحِب هٰذَا الْمَشُهَدِ الشّريُفِ کے گھروں میں مگر اس وقت جب حمہیں اجازت مل جائے اے اللہ بے فنک میں اس حرم شریف میں مدفون ہتی کا فِيُ غَيْبَتِهِ كَمَا أَعْتَقِدُهَا فِي حَضُرَتِهِ وَ أَعْلَمُ أَنَّ رَسُولَكَ وَ خُلَفَائَكَ عَلَيُهمُ السَّلا ان کی غیبت میں معتقد ہوں جیسے میں ان کے ظہور میں ان کا معتقد تھا اور میں جانتا ہوں کرتیرا رسول اور تیرے خلفاء کہ ان سب پر سلام ہو ٱحْيَاءٌ عِنْدَكَ يُرُزَقُونَ يَرَوُنَ مَقَامِيُ وَ يَسْمَعُونَ كَلاَمِيُ وَ يَرُدُّونَ سَلاَمِيُ وَ اَنَّكَ وہ زندہ بیں اور تیرے ہاں رزق باتے ہیں وہ مجھے دیک<u>ہ</u> رہے ہیں میری معروضات س رہے ہیں اور میرے سلام کا جواب دے رہے ہیں اور حَجَبُتَ عَنْ سَمُعِي كَلامَهُمُ وَ فَتَحْتَ بَابَ فَهُمِي بِلَذِيْذِ مُنَاجَاتِهمُ وَ إِنِّي بے شک تو نے میرے کانوں کوان کا کلام سننے ہے روکا ہے اور ان سے راز و نیا زکرنے میں میرے فہم کو کھول رکھا ہے اورا ہے میرے ٱسْتَـأَذِنُكَ يَـا رَبّ اَوَّلاً وَ اَسْتَـأَذِنُ رَسُـوُلَکَ صَـلًـى الـلّـهُ عَلَيُـهِ وَ آلِـهِ ثَانِيً رب پہلے میں جھے سے اجازت مانکتا ہوں چر تیرے رسول سے اجازت مانکتا ہوں کہ خدا رحمت کرے ان پر اور ان کی آل پر وَ اَسْتَاذِنُ خَلِيهُ فَا كُلُ الْإِمْهَامُ الْمِهَامُ الْمُعَلَّى طَلَاعَ الْعَلَّا عَلَي طَلَاعَ الْمُعَامَ الْمُعَامَ الْمُعَامَ الْمُعَامِ الْمُعَمِّلُ الْمُعَمِّ الْمُعَامِ الْمُعَمِّ الْمُعَمِّ الْمُعَمِي الْمُعَمِّ الْمُعَمِ اور اجازت مانکتا ہوں تیرے خلیفہ و امام سے جن کی اطاعت مجھ پر واجب ہے۔ (قلال بن فلال) فلال بن فلال کی بجائے ان امام کانا م مع ان کے والد برز رکوار کے اسم گرامی کے زبان بر لائے کہ جن کی زيارت كررباب مثلاً: ﴿ ٱلْحُسَيْنَ بُنَ عَلِيٍّ عَلَيْهِ السَّلاٰمُ ﴾ اور ﴿ عَلِتَى بُنَ مُوْسَى الرِّضَا عَلَيْهِ السَّلاٰمُ ﴾ اور پجري على بن موئي الرضاعليهالسلام يُ هِ: ﴿ وَالْـمَـلَآئِـكَةِ الْـمُـوَكَّـلِيُـنَ بِهِـذِهِ الْبُـقُعَةِ الْمُبَارَكَةِ ثَالِثًا ءَ اَدُخُلُ يَا رَسُولَ اللَّهِ اورہ و فرشتے جواس بارگاہ کے تکہباں ہیں جو پُر برکت ہے بارعوم آیا میں اندر آجاؤں اے اللہ کے رسول ءَ اَدُخُلُ يَسا حُجَّةَ اللُّهِ ءَ اَدُخُلُ يَسا مَلْآئِكَةَ اللُّهِ الْمُقَرِّبِيُنَ الْمُقِيُّمِينَ فِي هذَا آیا میں اندر آجاؤں اے حدا کی جحت آیا میں اندر آجاؤں اے حدا کے مقرب فرشتو کہ جواس بارگاہ عالی میں رہنے والے ہو الْمَشْهَدِ فَاذَنُ لِلِّي يَا مَوُلَايَ فِي الدُّخُولِ اَفْضَلَ مَاۤ اَذِنْتَ لِاَحَدٍ مِنُ اَوْلِيَائِكَ اس اے میرے مولا مجھے الدرآئے کی اجازت دیجے اس سے بہترین کرجیسی اجازت آپ نے اپنے وستوں میں کسی کو دی ہو



پس اگر میں اس کے لائق نہیں ہوں تو بھی آپ ایسا کرنے کے اہل ہیں۔

پھراس کے بعد بیردعارا جے ہوئے اندرجائے:

﴿ بِسُسِمِ السُّنِهِ وَ فِی سَبِیْسِلِ السُّنِهِ وَ عَلَی مِلَّةِ رَسُولِ السُّهِ صَلَّی اللَّهِ عَلَیْهِ وَ الِهِ فَدَاکَ مَا مَا مِنْ اللَّهِ عَلَیْهِ وَ اللهِ فَاللَّهِ عَلَیْهِ وَ اللهِ فَاللَّهِ عَلَیْهِ وَ اللهِ فَا اللَّهِ عَلَیْهِ وَ اللهِ فَا اللَّهِ عَلَیْهِ وَ اللهِ فَا اللَّهِ عَلَیْ اللَّهِ عَلَیْ اللَّهِ عَلَیْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ

SIBTAIN.COM

حضرت سيد الانبياء والمرسلين و خاتم النبيين صلى الله عليه و آلبه وسلم كى زيارت ،اس كى فضيلت اور كيفيت كابيان

واضح ہو کہ عام اہل اسلام کے لیے عموماً اور حجاج ہیت اللہ کے لیے خصوصاً حضرت رسول خداصلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی زیارت کرنا سنت مؤکدہ ہے۔

- (۱) چنانچہ ابن ابی نجران حضرت امام محمد با قرائیلی ہے سوال کرتے ہیں کہ جوشخص پیغیبر اسلام 🕵 کی زیارت کرےاس کے لیے کیا ثواب ہے؟ فرمایا:اس کے لیے جنت ہے۔ (بحار الانوار، کتاب المورار)
- (۲) پیغیراسلام کی ہے مردی ہے، فرمایا: جو تحض میری حیات میں یا میری ممات کے بعد میری زیارت کرے گا میں اس کی بروز قیامت کروں گا۔ وہ میں روایت میں اور وہ کے گفر مایا: وہ قیامت کے دن میرے جوار میں ہوگا۔ (ایفنا)
- (۳) اسلمی حضرت امام جعفر صادق الظیلائے ہے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے فرمایا: حضرت رسول خدا اللہ ارشاد ہے کہ جو خض (جج کے لیے) مکہ آئے مگر مدینہ میں میری زیارت نہ کرے (تو اس نے کویا مجھ برظلم کیا ہے اور جو مجھ برظلم کرے گاتو) میں بھی قیامت کے دن اس سے بے تو جن برتوں گا۔اور جو میری زیارت کے لیے آئے گاتو اس کی شفاعت کرنا مجھ برلازم ہوجائے گی اور جس کی شفاعت مجھ برلازم ہوگئی تو وہ جنت کا مستحق قراریائے گا۔(ایسناً)

اليناح

مخفی ندرے کہ یہ زیارت دورونزدیک سے ہر طرح اور ہروقت نصرف پڑھنا جائز ہے بلکہ مستحب ہے بالحضوص شب و روز جمعہ میں اور دوسرے متبرک دنوں اور راتوں میں۔ چنانچہ حضرت رسول خدا علی سے مردی ہے، فرمایا: جو محض میری و فات کے بعد میری قبر کی زیارت کرے گاتو وہ اس محض کی مانند ہوگا جومیری زندگی میں میری طرف ہجات کرکے آجائے پھر فرمایا: اوراگرتم خودنہ آسکوتو تم میری طرف سلام تو بھیج دیا کرو

چنانچ متعددروایات میں وارد ب کہ ﴿ ان لَلْه ملائکة سیاحین فی الارض يبلغون عن المتعنى الله عن المسلام ﴾ يعنى الله كے زمين ميں گشت كرنے والے كھا يسے فرشتے موجود ہیں جومیرى امت كاسلام مجھے پہنچاتے ہیں۔ (زادالمعاد بحوالہ امالی صدوق)

(۲) نیز بیر با ہمتعد دومعتر روایات میں وارد ہے کہ آپ فرماتے ہیں کہ جوشخص میری قبر کے نز دیک ہے مجھ پرسلام کرے تو میں خود منتا ہوں اور جو دور ہے کرے تو وہ مجھ تک پہنچ جاتا ہے۔ (کامل الزیارات)

(۳) حضرت امام جعفر صادق النظائي نے فرمایا کہتم آنخضرت کی قبر کے باس آپ پر صلوات بھیجو۔ اگر چدامل ایمان جہاں کہیں بھی ہوں ان کی صلوات آپ تک پہنچ جاتی ہے۔ (الکافی)

حضرت رسول خداصلى الله عليه وآله وسلم كى مختلف زيارات اوران كى كيفيت كابيان

واضح رہے کہ حضرات ائر طاہرین علیم السلام ہے حضرت رسول خدا می مختلف زیارات منقول ہیں۔ہم ان میں سے چند زیارات کے ذکر کرنے کی سعادت حاصل کرتے ہیں۔

(۱) ابن البی نفر بیان کرتے ہیں کہ میں نے حضرت امام رضالطی کی خدمت میں عرض کیا کہ ہم کس طرح حضرت رسول خدا ﷺ پر ورودوسلام بھیجیں (یعنی کس طرح زیارت کریں)۔ فرمایا: کہو

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَسا رَسُولُ السُّبِهِ وَرَحُمَةُ السُّبِهِ وَبَرَكَاتُـهُ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا يا رسول الله! آپ پر (خدا كا) علام اور الل كى رحمت اور الل كى بركتيں نازل ہوں۔ يا محمد بن

مُحَدِمَّدَ بُنَ عَبُدِ اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَيْکَ يَا خِيَرَةَ اللَّهِ السَّلامُ عَلَيْکَ يَا حَبِيْبَ اللَّهِ مِمالله! آپ رِ الله كا سلام اے اللہ كے برگزيرہ نِيَّ آپ رِ الله كا سلام اے اللہ كے حبيب آپ رِ الله كا سلام

اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا صِفُواَ اللهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا أَمِيْنَ اللهِ أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ ال

اورا الله كفتن بندے آپ إلله كاسلام الالله كاستن آپ إلله كاسلام، من كواي ديتا مول كر آپ الله كے پيغامبر بين

وَ أَشُهَدُ أَنَّكَ مُحَمَّدُ بُنُ عَبُدِ اللَّهِ وَ أَشُهَدُ أَنَّكَ قَدُ نَصَحُتَ لِأُمَّةِ كُلُّ

اور میں گواہی دیتا ہوں کہ آپ محمد بن عبداللہ ہیں اور میں گواہی دیتا ہوں کہ آپ نے اپنی امت کو نصیحت کی ہے

\$ وَ جَساهَــدُتَ فِسي سَبيُــلِ رَبّكَ وَ عَبَــدُتَــهُ حَتَّــي أَتَــاكَ الْيَقِيُـنُ فَجَزَاكَ اللّ اوراپنے پروردگار کے راستہ میں جہاد کیا ہے اورا پی موت کے آنے تک اس کی عبادت کی ہے یا رسول اللہ! اللہ آپ کوبہترین جزا دے يَا رَسُولَ السُّهِ أَفُصَلَ مَا جَزَى نَبِيًّا عَنُ أُمَّتِهِ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ جو وہ کمی نبی کو اس کی امت کی طرف سے ریتا ہے اے اللہ سرکار محمدٌ و آل محمد " پر درود و سلام وَ آلِ مُحَمَّدٍ أَفُضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ وَ آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنْكَ حَمِيُدٌ مَّجِيُّهُ ــ ما زل فرما افضل مزین درود وسلام جوتوئے جناب ایرائیم اور ان کی آل پر ما زل فرمایا ہے بے فکک تو حمید و مجید ہے۔ و ہ زیارت پڑھی جائے جو ہروایت ابن عمار حصرت امام جعفر صادق الطبی سے منقول ہے کہ اس ستون کے باس قبلدرخ اس طرح کھڑا ہوکر جوقبر مقدس کے دائیں طرف ہے کہاس کا داباں کندھامنبر کی طرف اور بایال کندھا قبر مقدل کی طرف ہو جوکہ آتخضرت 🏙 کے سر اقدی کا مقام ہے۔ زیارت یہ ہے: وَ اَشُهَـٰدُ اَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ وَ اَنَّكَ مُحَمَّدُ بُنُ عَبُدِ اللَّهِ وَ اَشُهَدُ اَنَّكَ قَدُ بَلَغُتَ رَسَالاً ﴿ اور گوائی دیتا ہوں کہ آپ اللہ کے رسول ہیں اور آپ محر بن عبداللہ ہیں گوائی دیتا ہوں کہ آپ نے اپنے رب کے احکام رَبِّكَ وَ نَصَحُتَ لِاُمَّةِكَ وَ جَاهَـدتُ فِي سَبِيُـلِ اللَّهِ وَ عَبُدتُ اللَّهَ حَتَّى اَتَاكَ الْيَقِي لوگوں تک پہنچائے اچی امت کونصیحت فرمائی آپ نے خدا کی راہ میں اچھی طرح جہا دکیا اور الله تعالیٰ کی عبادت کی بیہاں تک کرآپ کو بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ اَذَيْتَ الَّذِيُ عَلَيْكَ مِنَ الْحَقِّ وَ اَنَّكَ قَدُ رَؤُ فُتُ اپی پُر تھمت تبلیغ اور بہترین پند و نصیحت پر اطمینان ہوگیا اور حق سے متعلق اپی ہر ذمہ داری نبھائی بے شک آپ مومنوں کے بِ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ غَلْظُتَ عَلَى الْكَافِرِيْنَ فَبَلَّغَ اللَّهُ بِكَ ٱفْضَلَ شَرَفٍ مَحَلِّ الْمُكَرَّمِيْنَ ﴿ ساتھ بزم فو اور کافروں کے لیے سخت و شدید رہے ہی خدا نے آپ کو عزت تکریم کے بلند مقام پر پہنچا دیا ٱلْحَـمُـدُ لِـلَّـهِ الَّذِي اسْتَنُـقَذَنَا بِكَ مِنَ الشِّرُكِ وَالضَّلاَّلَةِ اَللَّهُمَّ فَاجُعَ ﴿ حمد ب ال خدا كى جس نے ہم لوگوں كو آپ كے وسلے سے شرك اور مرابى سے بچايا ب اے معبودا قرار دے

_

*********************************** صَلَوَاتِكَ وَ صَلَوَاتِ مَلَائِكَتِكَ الْمُقَرَّبِيُنَ وَ ٱنْبِيَائِكَ الْمُرْسَلِيُنَ وَ عِبَادِك الصَّالِيُّيُنَ ا پی رحمتیں اور ایے تمام مقرب فرشتوں ایے بھیج ہوئے سارے نبیوں ایے سارے نیک بندوں وَ أَهُـلِ السَّـمْوَاتِ وَ الْاَرْضِيُنَ وَ مَنُ سَبَّحَ لَكَ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ مِنَ الْاَوَّلِيُنَ وَالْآخِرِيْنَ کہ جو آسان والوں اور زمین والوں میں ہیں اور جو تیری شبیع کرتے ہیں اے جہانوں کے رب پہلوں اور پیچیلوں میں عَــلـــىٰ مُــحَــمَّـدٍ عَبُـدِكَ وَ رَسُـوُلِك وَ نَبِيّكَ وَ اَمِيُـذِكَ وَ نَـجيبُكَ وَ -سب کی طرف سے ورود قرار دے محمد پر جو تیرے بندہ و رسول تیرے نبی تیرے امانتدار تیرے رازدار تیرے دوست وَ صَفِيِّك وَ خَاصَّةِكَ وَ صِفُوةِكَ وَ خِيَـرَةِكَ مِنْ خَلْقِكَ اَللَّهُمَّ اَعْطِهِ ا تیرے چنے ہوئے تیرے خاص کردہ تیرے منتخب اور تیری مخلوق میں تیرے پہندیدہ بیں اے معبود! آتخضرت کو اونچا درجہ الرَّ فِيُعَةَ وَآتِيهِ الْوَسِيُلَةَ مِنَ الْجَنَّةِ وَابْعَثُهُ مَقَامَا مَحْمُوْدًا يَغُبِطُهُ بِهِ الْاَوَّلُوْنَ وَالْآخِرُوْنَ عطا فرما ان کو جنت کی طرف وسیلہ بنا اور انہیں مقام محمود پر فائز: فرما کہ جس پر سبھی پہلے اور پچھلے رشک کریں ٱللُّهُمَّ إِنَّكَ قُلُتَ ﴿ وَلِوْ اتَّهُمْ إِنَّ ظَلَّهُ وَا ٱللَّهُمَّ اللَّهُمُ جَلَّا أُورُكَ فَ اسْتَغُفَرُوا اللَّ اے معبودا یقیناً تو نے کہا ہے اور اگر وہ خود رہتم کر بیٹھے تھے تو تیرے باس آتے پھر وہ اللہ تعالیٰ سے بخشش طلب کرتے وَ اسْتَغُفَ رَلَهُمُ الْرَّسُولُ لَوَجَدُواللَّهَ تَوَّابًا رَحِيْمًا﴾ وَإِنِّي أَتَيُدُكَ مُسْتَغُفِرً اوررسول بھی ان کے لیے بخشش طلب کرتا تو ضرورہ ہاللہ کو بہ بچول کرنے والامہر مان ماتے ،میں آپ کے حضور بخشش کا سوالی ہوکر آ ماہوں تَسائِسًا مِنُ ذُنُوبِيُ وَ إِنِّيُ اتَوَجَّهُ بِكَ إِلَى اللَّهِ رَبِّيُ وَ رَبِّكَ لِيَغُفِرَلِيُ ذُنُوبِهِي گنا ہوں سے توب کرتا ہوا ہے شک میں آپ کے ذریعے اپنے اور آپ کے پروردگار کے سمانے آیا ہوں تا کروہ میرے گنا ہ بخش دے۔ اگر زائر کوئی حاجت طب کرنا جاہے تو اس طرح قبلہ رخ ہوکر کہ قبر مبارک اس کے کندھے کے بیجھیے ہو ہاتھ بلند کر کے طلب کرے کہ پوری ہوگی انٹا ءاللہ۔ (مصباح شیخ طوی) (٣) ایرا ہیم بن ابوالبلا دبیان کرتے ہیں کہ حضرت امام مویٰ کاظم الطبیۃ نے مجھ سے فر مایا کہتم حضرت ر سول خدا 🗱 کی زیارت کس طرح کرتے ہو؟ راوی نے عرض کیا کہ جو پچھ میں جانتا ہوں اور جس طرح ہم

تک روایت پیچی ہے! فر مایا: کیا میں حمہیں وہ طریقہ تعلیم نہ دوں جواس سب سے بہتر ہے؟ عرض کیا: ضرور! پس

امام الطیلانے اپنے خط مبارک ہے مجھے بیرزیا رت لکھ کردی کہ جب آنخضرت 🏶 کی قبر مقدس کے باس جاؤ اَشُهَدُ اَنُ لَآ اِلْـهَ اِلَّا اللُّـهُ وَحُدَهُ لاَ شَرِيُكَ لَـهُ وَ اَشُهَـدُ اَنَّكَ مُحَمَّدُ بُنُ عَبُدِ اللَّهِ میں گواہی دیتا ہوں کہ اللہ کے سوا کوئی الدخیس ہوہ واحدہ اس کا کوئی شریک خیس ہے اور میں گواہی دیتا ہوں کہ آپ محمد بن عبداللہ ہیں وَ اَشُهَادُ اَنَّكَ خَالَامُ النَّبِيِّنَ وَ اَشُهَادُ اَنَّكَ قَادُ بَالَّغُتَ رِسَالَتَاهُ رَبِّكَ اور میں گواہی دیتا ہوں کہ آپ تمام نبیوں کے فتم کرنے والے ہیں اور میں گواہی دیتا ہوں کہ آپ نے اپنے پروردگار کا پیغام پہنچا دیا ہے وَ نَصَحُتَ لِاُمَّةِكَ وَ جَاهَدُتُ فِي سَبِيُلِ رَبِّكَ وَ عَبَدُتُّهُ حَتَّى آتَاكَ الْيَقِيْنَ وَ أَذَيْتَ الَّذِيُّ اورا پی امت کونفیحت کی ہے اور اپنے ہروردگار کے راستہ میں جہاد کیا ہے اور اپنی موت کے آئے تک اس کی عبادت کی ہے اور آپ کے عَلَيُكَ مِنَ الْحَقِّ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبُدِكَ وَ رَسُولِكَ وَ نَجِيبُكَ وَ اَمِيكًكَ ومه جو حق تحا وه آپ نے اوا کر دیا ہے اے اللہ! اپنے بندہ خاص، اپنے رسول، اپنے نجیب، اپنے ایمن وَ صَفِيُّكَ وَ خِيَرَتُكَ مِنْ خَلُقِكَ الْعَصَلَ مَا صَلَّيْتِ عَلَى اَحَدٍ مِنْ اَنْبِيَائِكَ وَ رُسُلِيُّكَ اور ساری مخلوق سے برگزیدہ دختصیت مفترت محمد پر درود و سلام بھیج افغال نزین درود و سلام جوتو اپنے انبیاء و مرسلین پر بھیجا ہے ٱللُّهُمَّ سَلِّمُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آل مُحَمَّدٍ كَمَا سَلَّمْتَ عَلَى نُوْحٍ فِي الْعَالَمِيْنَ وَامْنُنُ عَلَى ا الله! حضرت محمد اوران کی آل پر اس طرح سلام بھیج جس طرح تو نے عالمین میں سے جناب نوٹ پر بھیجا ہے اور حضرت محمد اور مُحَمَّدٍ وَ آل مُحَمَّدٍ كَمَا مَنَنُتَ عَلَى مُوُسلى وَ هَارُوْن وَ بَارِكُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آل ان کی آ ل پر اس طرح احسان کرجس طرح تو نے جناب موی " و ہادون پر احسان کیا تھا اورا ، الله! حصرت محمد اوران کی آ ل پر مُحَمَّدٍ كُمَا بَارَكُتَ عَلَى إِبْرَاهِيُمَ وَ ال إِبْرَاهِيُمَ إِنَّكَ حَمِيُدٌ مَحِيُدٌ اَللَّهُمَّ صَلّ اس طرح بركت ما زل كرجس طرح تونے جناب ابرائيم اوران كى آل پر بركت ما زل كى بے فتك تو حميد و مجيد ہے اے اللہ! محمد آل محمد عَلَى وَ آلَ مُحَمَّدٍ وَ تَـرَحُمُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آلَ مُحَمَّدٍ اَللَّهُمَّ رَبَّ الْبَيْتِ الْحَرَام پر درود و سلام بھیج اور ان پر رحمت ماز**ل فرما اے** اللہ! اے بیت الحرام وَ رَبَّ الْمَسْجِدِ الْسَحَرَامِ وَ رَبَّ السُّرُّكُونِ وَ الْمَقَامِ وَ رَبَّ الْهَلَدِ الْحَرَامِ

(۴) وہ زیارت پڑھی جائے جو برنطی نے حضرت امام رضالظ ﷺ نے قال کی ہے کہ پینمبر اسلام ﷺ کی قبر اقدس کے پاس پڑھی جائے:

﴿ اَلسَّلامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ حصرت رسول الله بر درود و سلام بو۔ آپ بر درود و سلام اور اس کی رحمت اور برکتیں ہوں اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ بُنُ عَبُدِ اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَيْ اے رسول خدا! آپ پر درود و سلام! یا محمد بن حبرالله "! آپ پر درود و سلام يًا خِيَرَةَ اللَّهِ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللَّهِ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا صَفُوَةَ اللَّهِ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيْهُ اے اللہ کے برگزیرہ نی آپ مردووو سلام، اے حب شا آپ پر درووو سلام، اے اللہ کے فتن بندے آپ پر درو دوسلام يَا اَمِيُنَ اللَّهِ اَشُهَدُ اَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ وَ اَشُهَدُ اَنَّكَ مُحَمَّدُ ابْنُ عَبُدِ اللَّهِ وَ اَشُهَدُ اَنَّكَ ا الله كالله كالمان آب برالله كاسلام، مين كوابي ديتا مول كرآب الله كرسول بين اوركوابي ديتا مول كرآب محمرين عبدالله بين اوركوابي قَدُ نَصَحُتَ لِاُمَّةِكَ وَ جَاهَدُتَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَ عَبَدُتَهُ مُخُلِصًا حَتَّى اَيٰكَ ﴿ دیتا ہوں کرآپ نے اپن امت کوفعیعت کی ہے اور اللہ کی را ومیں جہا دکیا ہے اور اخلاص کے ساتھ اللہ کی عبادت کی ہے پہال تک کرآپ کو الْيَقِيُنُ فَجَزَاكَ اللَّهُ ٱفْضَلَ مَا جَزَاي نَبيًّا عَنُ أُمَّتِهِ ٱللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ ال مُحَمَّدٍ ﴿ موت آ گئی ہے پس اللہ آپ کوو ہ بہترین جزاءدے جو کسی نبی کواس کی امت کی طرف سے دیتا ہے اے اللہ سر کا رقحہ و آل محر پر افعل ترین أَفْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبُوَاهِيُمَ وَ ال إِبُوَاهِيُمَ إِنَّكَ حَمِينُدٌ مَجِيُّهُ . (كَتَابِالدعاوالزياره)

درودوسلام مازل كرجوة في جناب ابرائيم اوران كي آل برنا زل كياب بي فتك وحميد ومجيد ب-

پیغمبراسلام صلی الله علیه وآله وسلم سے الوداع کی وعا

یونس نے حضرت امام جعفر صا دق الطبی ہے ہو چھا کہ میں جب حضرت رسول خدا علی ہے و داع کرنا جا ہوں تو کیا کہوں؟ فرمایا: یوں کہد:

﴿ اَلَـلَهُ مَ لَا تَـجُ عَـلُــهُ آخِـرَ الْعَهُـدِ مِنُ زِيَـارَـةِ قَبُـرِ نَبِيّكَ فَـاِنُ تَـوَقَيْتَنِـي اے اللہ اس زیارت کو این نی کی قبر مقدس کی آخری زیارت قرار نہ دے اور اگر تو نے مجھے اس سے پہلے وفات

قَبُـلَ ذَٰلِکَ فَالِدِّیُ اَشُهَـدُ فِـیُ مَـمَـاتِـی عَـلی مَا اَشُهَدُ عَلَیْهِ فِیُ حَیَاتِی اَنُ لَا اِللهَ اِلاَ اَنْتُ دے دی تو میں مرکز بھی وہی کوہی دوں گا جو زندگی میں دیتا رہا ہوں کہ تیرے سوا اور خدا کوئی نہیں ہے

وَ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُكَ وَ رَسُولُكِكَ (الفِمَا)

اور حضرت محرتیرے عبد خاص اور رسول ہیں۔

SIBTAIN.COM

صدیقهٔ کبری انسیه حورا وحفرت فاطمه زبراعلیماالسلام کی زیارت کی فضیلت اوراس کی کیفیت کابیان

(۱) حضرت سیرہ نیا ءالعالمین علیہاالسلام کی زیارت کی ہڑی فضیلت واردہوئی ہے چنانچ عبدالملک این ہاپ سے اوروہ این ہاپ سے روایت کرتے ہیں۔ان کابیان ہے کہایک ہار میں حضرت سیرہ عالم کی ہارگاہ میں حاضر ہوا تو بی بی نے سلام کرنے میں پہل فر مائی اور مجھ سے آنے کا سبب پوچھا؟ عرض کیا کہ خیر و ہرکت کی طلب کے لیے حاضر ہوا ہوں! اس پر مخدومہ نے فر مایا کہ میں نے اپنے والد ماجد سے سنا ہے کہ فر ما رہے تھے کہ جو شخص تین دن تک مجھ پر اور تجھ پر سلام کر سے خدا اس کے لیے جنت کو واجب قر اردے و بتا ہے۔ راوی نے عرض کیا کہ آیا یہ ہا گیا ۔ ان کی اور آپ کی زندگی تک ہے باجد اس تھی ہے؟ فر مایا: بلکہ ہماری موت کے بعد بھی ہے۔ (کتاب الدعاو الزیارہ للشیر ازی)

(٢) حضرت امير الطين الكرتے بين كه حضرت فاطمه زبرا عليها السلام نے فرمايا كه مير ب والد حضرت رسول خدا الله في المحتلف الله الله الله و الحقه بي حيث رسول خدا الله في الله في الحقه بي حيث كنست حين المجنف الله في المحالم المجتمع في درو دوسلام بجيج گاخداات بخش و سكا او راسي مير سساتھ جنت ميں شامل كر سكا الله و دزيارتيں پيش كى جنت ميں جہاں بھى ہوں گا۔ (ايفناً) يبال مخدومة كائنات كى دو زيارتيں پيش كى جاتى ہيں:

(۱) ایک وہ زیارت ہے جو حضرت امام محمد باقر علیہ السلام نے اپنے اصحاب کو تعلیم دی تھی کہ جب اس معصومہ ومظلومہ کے مزار پر جاؤ تو یوں کہو:

﴿ يَا مُمُتَحَنَةُ أُمُتَحَنَّكِ اللَّهِ الَّذِي خَلَقَكِ قَبُلَ أَنُ يَخُلُقَكِ فَوَجَدَكِ لِمَا أُمُتَحَنَّكِ اعْ مَا نَالَى كُنِّى تِجْهِ آ زَالِ اللهِ إِنْ جَلْ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ عَلِيمًا كِيال عَلَيْ يَعْلَمُ اللهِ وَ زَعَدهُ خَدا أَنَّا لَكِ أَوُلِيَاءُ وَ مُصَدِّقُونَ وَ صَابِرُونَ لِكُلِّ مَا أَتَانَا بِهِ أَبُوكِ وَ وَال بِإِ اور بَمَ يَحِتَ بِن كَهُمَ آبِ كَ مُبُ مائِ والمعتقد بِن براس تعليم مِن جوآپ كے بإ جان ملى الله عليہ صَلَّى الله عَدَى الله عَلَيْ اور بم يَحِت بِن كهم آپ كَ مُبُ مائِ وال اور معتقد بين براس تعليم مِن جوآپ كے بإ جان ملى الله عليه صَلَّى الله عَدَى الله عَدَى الله عَلَيْ الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَيْ الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَيْ الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَيْ الله عَلَى الله

(٢) جناب شيخ طوي في مخدومه كي بيزيارت بھي درج كي ہے:

﴿ اَلسَّلاَمُ عَلَيُكِ يَا بِنُتَ رَسُولَ اللَّهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيُكِ يَا بِنُتَ نَبِيِّ اللَّهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيُكِ سلام ہو آپ ر اے خدا کے رسول کی دختر سلام ہو آپ ر اے اللہ کے نبی کی بٹی سلام ہو آپ ر اے بنُتَ حَبيُب اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكِ يَا بِنُتَ خَلِيل اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكِ يَا بِنُتَ صَفِيِّ اللّ اللہ کے حبیب کی وختر سلام ہو آپ پر اے خدا کے واست کی وختر سلام ہو آپ پر اے خدا کے برگزیدہ کی وختر ٱلسَّلاَّمُ عَلَيْكِ يَا بِنُتَ آمِيُنِ اللَّهِ ٱلسَّلاَّمُ عَلَيُكِ يَا بِنُتَ خَيْرِ الْخَلْقِ اللَّهِ ٱلسَّلاَّمُ عَلَيْهَ سلام ہو آپ پر اے اللہ کی وحی کے این کی وخر سلام ہو آپ پر اے مخلوق میں بہترین کی وخر سلام ہو آپ پر يَا بِنُتَ اَفُضَلَ اَنْبِيَاءِ اللَّهِ وَ رُسُلِهِ وَ مَلاَئِكَتِهِ اَلسَّلاُّمْ عَلَيُكِ يَا بِنُتَ خَيُر الْبَرِيَّةِ اے نبیوں رسولوں اور فرشتوں سے برتر ہتی کی ذخر سلام ہو آپ پر اے خلق میں بہترین کی ذخر اَلسَّلاَّمُ عَلَيُكِ يَا سَيِّدَةَ نِسَآءِ الْعَالَمِيْنَ مِنَ الْاَوَّلِيُنَ وَ الْاخِرِيْنَ اَلسَّلاَّمْ عَلَيُكِ يَا زَوْجَ سلام ہو آپ پر اے جہان میں کہلی کیچیلی سجی عورتوں کی سیدہ و سردار سلام ہو آپ پر اے خدا کے ولی وَلِيِّ اللَّهِ وَ خَيْرِ الْخَلْقِ بَعُدَ رَسُولِ اللَّهِ اَلسَّلاَّمُ عَلَيْكِ يَا أُمَّ الْحَسَن وَ الْحُسَيْن سَيّدَىُ ۖ کی زوجہ جو رسول کے بعد ساری مخلوق میں بہترین ہیں سلام ہو آپ پر اے اے حسن و حسین کی والدہ جو شَبَابِ اَهُلِ الْحَنَّةِ اَلسَّلامُ عَلَيُكِ اَيُّنَهَا الصِّدِّيُقَةُ الشُّهِيُدَةُ اَلسَّلامُ عَلَيُكِ اَيُّنَهَا جنت کے جوانوں کے سردار ہیں سلام ہو آپ پر کہ آپ صدیقہ و شہیدہ ہیں سلام ہو آپ پر کہ آپ

الـرَّضِيَّةُ الْـمَـرُضِيَّةُ اَلسَّلاَّمُ عَـلَيْكِ ايَتُهَا الْفَاضِلَةُ الـزَّكِيَّةُ اَلسَّلاَّمُ عَلَيْكِ ايَتْ خدا سے راضی خدا آپ سے راضی ہے سلام ہو آپ پر کہ آپ فضیلت والی با کیزہ ہیں سلام ہو آپ پر کہ آپ الُـحُـوُرَآءُ الْإِنْسِيَّةُ اَلسَّلاَمُ عَـلَيُكِ اَيَّتُهَـا التَّـقِيَّةُ السَّقِيَّةُ اَلسَّلاَمُ عَلَيُكِ اَيَّتُهَ نوع انسانی میں حور صفت ہیں سلام ہو آپ پر اے پربیزگار باکباز سلام ہو آپ پر اے الْمُحَدَّثَةُ الْعَلِيُمَةُ اَلسَّلاَمُ عَلَيُكِ اَيَّتُهَا الْمَظْلُوْمَةُ الْمَغْصُوْبَةُ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكِ وحی کی رازدان علم و دانش والی سلام ہو آپ رہ اے بی بی جس رہ ظلم ہوا جس کا حق چھینا گیا سلام ہو آپ رہ آيُّتُهَا الْـمُـطُتَهَـدَةُ الْمَقُهُورَةُ السَّلامُ عَلَيُكِ يَا فَاطِمَةُ بِنُتَ رَسُولُ اللَّهِ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ کہ آپ نے منتکی بائی حاکموں کا قبر دیکھا سلام ہو آپ ہر اے اللہ کے رسول کی ڈنٹر فاطمہ زہرا آپ ہر اللہ کی رحمت و وَ بَرَكَاتُهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْكِ وَ عَلَىٰ رُوْحِكِ وَ بَدَنِكِ اَشْهَدُ اَنَّكِ مَضَيْتِ عَلَى ﴿ يَكَنّ برکات ہوں خدا رحمت فرمائے آپ پر اور آپ کی روح اور آپ کے جسم پر محابی دیتا ہوں کہ آپ خدا کی طرف روشن دلیل پر مِنُ رَبِّكِ وَ أَنَّ مَنْ سَرَّكِ فَقَدُ صَرَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ إِلَّهِ وَ مَنْ جَفَاكِ فَقَدُ گزری ہیں گواہی دیتا ہوں جس نے آپ کوخوش کیااس نے خوش کیارسول اللہ یکی کوخدار حمت کرے آن پراوران کی آل پراورجس نے آپ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ وَ مَنُ اَذَاكِ فَقَدُ اَذٰى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ ﴿ پہتم کیا اس نے ہم کیا رسول اللہ پراورخدار حت کرے ان پراوران کی آل پراورجس نے آپ کوستایا اس نے رسول اللہ کوستایا خداکی رحمت وَ مَنُ وَصَلَكِ فَقَدُ وَصَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ وَ مَنُ قَطَعَكِ فَقَأَةً موان ہر جوآپ کے ساتھ ہواوہ رسول اللہ کے ساتھ مواحدا کی رحمت ہوان براو ران کی آل پراور جوآپ سے کتر ایا وہ رسول اللہ سے کتر ایا قَطَعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ لِاَنْكِ بِضُعَةٌ مِّنُهُ وَ رُوحُهُ الَّذِي بَيُنَ جَنُبَيْهِ خداکی رحمت ہوان رہر اور ان کی آل براس لیے کر آپ ان کی گوشر جگراور ان کی روح ہیں جوان کے بدن میں ہے گواہ کرتا ہوں اللہ کواس ٱشُهدُ اللُّسهَ وَ رُسُلَهُ وَ مَلَاثِكَتَهَ آنِّي رَاضٍ عَمَّنُ رَّضِيُتِ عَنُسهُ سَاخِطٌ عَلَى مَنُ کے رسولوں اور فرشتوں کو کہ میں خوش ہوں اس ہے جس ہے آپ خوش ہیں اور خفا ہوں اس ہے جس ہے آپ خفا ہیں الگ ہوں اس سے سَخِطُتِّ عَلَيْهِ مُتَبَرَّةً مِّمَّنُ تَبَرَّئُتِ مِنْهُ مُوَالِ لِمَنْ وَالَيْتِ مُعَادٍ لِمَنْ عَادَيْتِ مُبُغِضُ

لِّهَ مَنُ اَبُنَعُ صُّبِ مُحِبٌّ لِهَمَنُ اَحُبَبُتِ وَ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا وَّ حَسِيبًا وَ جَازِيًا وَ مُثِيبًا ﴾ -آپ كفرت م جابتا موں اے جس كوآپ جابتى ہيں اور كافى م الله كوابى من جوصاب لينے والا اور مزا ديے والا اور جزا ديے والا ہے اس كے بعد سر كارمحد وآل محمليہم السلام پر درودو سلام جيجے ۔ (اليفاً)

حضرت سيده كي قبر مقدس كي تعيين كامعامله؟

یہ بات قدیم الایام ہے معرکۃ لاآ راء چلی آ رہی ہے کہ مخد ومد کا نئات کی قبر مبارک کہاں ہے؟

(۱) جوقول عوام میں مشہور ہے وہ یہ ہے کہ بی بی جنت البقیع میں وفن ہیں ۔حالانکہ یہ بات درست نہیں ہے۔وہاں جومزار ہے وہ حضرت فاطمہ بنت اسدوالد و حضرت امیر القلیلا کا ہے۔

(۲) دوسرا قول ہے ہے کہ بی بی روضۂ رسول اورمنبر کے درمیان وفن ہیں جبکہ اس قول کی بھی کوئی

سندنہیں ہے۔ (۳) تیسرااورمتند قول سے ہے کہ بی آپ نے گھر میں فین ہیں جبکہ پیغیم اسلام ﷺ اپنے تجرہ میں مدنون ہیں جو کہ ہاہم قریب تھے۔اور جب روضۂ رسول کی توسیع کی گئی تو ٹی کی تیر بھی روضۂ رسول میں داخل

ہوگئ ۔لہذا تحقیقی قول میہ ہے کہ اس وفت بی بی کی قبر روضة رسول کے اندر ہی ہے لہذا و ہیں آپ کی زیارے کرنی

اور پڙهڻي ڇاپيئے واللّه العالم و العاصم-

﴿ فصل سيوم و چمارم و پنجم و ششم ﴾

ائمة بقیج لیخی حضرت امام حسن مجتبی و حضرت امام علی زین العابدین و حضرت امام علی زین العابدین و حضرت امام محمد باقر اور حضرت امام جعفر صا دق علیهم السلام کی زیارات مقدسه کی فضیلت اوراس کی کیفیت کابیان

(۱) وظاء حضرت امام رضالظ الله سے روایت کرتے ہیں، فرمایا: ہر امام کا اپنے دوستوں اورشیعوں کی گردن پر ایک عہدوییان ہوتا ہے اوراس عہدوییان کی شخیل ان کے قبور مقدسہ کی زیارت کرنے ہے ہوتی ہے تو جو بند و مؤمن خلوص نیت کے ساتھ ان کی زیارت کرے گا تو انکہ اطہار عیبم السلام قیامت کے دن اس کے شفیع ہوں گے۔ (کتاب الدعا والزیارہ)

(۲) ابوشہاب روایہ کرتے ہیں کر چھڑے امام سین کے لیے کیا جمہ احجد حضرت رسول اللہ اسے بو چھا: بابا جان! جو شخص آپ کی زیارت کرے اس کے لیے کیا اجمہ و تواب ہے؟ فر مایا: جو شخص میری حیات میں یامیری ممات کے بعد میری زیارت کرے یا تمہارے باپ یا بھائی یا تمہاری زیارت کرے گا تو مجھ پر لازم موگا کہ قیا مت کے دن میں اس کی زیارت کروں اور اس کے گنا ہوں ہے اس کی گلوخلاصی کراؤں۔ (ایفناً) موگا کہ قیا مت کے دن میں اس کی زیارت کروں اور اس کے گنا ہوں ہے اس کی گلوخلاصی کراؤں۔ (ایفناً) مفترض اطاعہ کی زیارت کرے اور ان کے باس چار رکعت (بدوسلام) پڑھے تو اسے جج وعمرہ کا ثواب ملتا مفترض الطاعہ کی زیارت کرے اور ان کے باس چار رکعت (بدوسلام) پڑھے تو اسے جج وعمرہ کا ثواب ملتا

ان ائدار بعدى زيارت كى كيفيت كابيان

ان ذوات مقدسہ کی دو زیار تیں منقول ہیں جو ذیل میں درج کی جاتی ہیں: (۱) عمرو بن ہاشم بعض معصومین علیہم السلام ہے نقل کرتے ہیں، فرمایا: جب ائمہ بقیع کی قبور مقدسہ کی زیارت کے لیے جاؤ تو یوں کہو:

﴿ ٱلسَّلامُ عَلَيْكُمُ آئِمَّةَ الْهُدَىٰ ٱلسَّلامُ عَلَيْكُمُ ٱهْلَ التَّقُوٰى ٱلسَّلامُ عَلَيْكُمُ أَيُّهَ سلام ہو آپ ہر اے ہدایت دینے والے ائمہ سلام ہو آپ ہر اے صاحبانِ تقویٰ سلام ہو آپ ہر جو دنیا والوں الْحُجَجُ عَلَى اَهُلِ الدُّنُيَا اَلسَّلامُ عَلَيْكُمُ أَيُّهَا الْقُوَّامُ فِي الْبَرِيَّةِ بِالْقِسُطِ اَلسَّلامُ عَلَيْكُمُ کے لیے خدا کی حجتیں اور دلیلیں ہو سلام ہو آپ پر جو مخلوقات میں عدل و انصاف قائم کرنے والے ہو سلام ہو آپ پر اے اَهُـلَ الصَّفُوةِ اَلسَّالامُ عَلَيْكُمُ الَ رَسُولِ اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكُمُ اَهُلَ النَّجُوك اَشُهَدُ اَنَّكُمُ صاحبانِ صفا سلام ہو آپ پر جو رسول اللہ کی آل باک ہو سلام ہو آپ پر جو خدا کے رازواں ہو میں گواہی دیتا ہوں کہ آپ قَدُ بَلَّغُتُمُ وَ نَصَحْتُمُ وَ صَبَرُتُمُ فِي ذَاتِ اللَّهِ وَ كُذِّبُتُمُ وَ ٱسِيءَ اللَّهُ فَ فَغَفَرُتُمُ وَ ٱشْهَدُ ب نے بہترین تبلیغ کی اور نصیحت فرمانی آپ نے حدا کی را ومیں صبر کیا جب آپ جو جھٹلایا گیا اور آپ نے درگز رکی جب آپ کی تو ہین ٱنَّكُمُ الْآئِمَةُ الرَّاشِـدُونَ الْمُهُتَـدُونَ وَ آنَّ طَاعَتَكُمُ مَّفُرُوضَةٌ وَّ آنَّ قَوْلَكُمُ الصِّدُقُ کی گئی اور میں گواہی دیتا ہوں کہ آپ سب ہدایت یافتہ و ہدایت دینے والے امام ہیں یقیناً آپ کی اطاعت واجب ہے اور آپ کا قول وَ ٱنَّكُمُ دَعَوْتُمُ فَلَمُ تُجَابُوا وَ آمَرُتُمُ فَلَمُ تُطَاعُوا وَ ٱنَّكُمُ دَعَائِمُ الدِّين وَ ٱرْكَانُ الْارْض منی برحق ہے بے شک آپ نے پکارا لوگوں نے اطاعت نہ کی اور آپ نے علم دیا آنہوں نے مکل نہ کیا بچھیق آپ سب دین کے ستون اور لَـمُ تَـزَالُو بِعَيْنِ اللَّهِ يَنُسَخُكُمُ مِّنُ اَصُلابٍ كُلِّ مُطَهَّرٍ وَّ ينْقُلُكُمُ مِّنُ اَرْحَامِ الْمُطَهَّرَاتِ زمین کے بائے ہیں خدا کی گلہداری میں آپ سب باک و طاہر پشتوں سے باک و با کیزہ رحموں کے سوا کہیں منتقل نہیں ہوئے ہیں لَـمُ تُمدَنِّسُكُمُ الْجَاهِلِيَّةُ الْجَهُلَّاءُ وَلَمُ تَشُرَكُ فِيْكُمُ فِتَنُ الْاَهُوَآءِ طِبُتُمُ وَ طَابَ مَنْبَتُكُ آپ جاہلوں کی جاہیت سے آلودہ نہیں ہوئے اور خواہشوں کے فقٹے آپ پر الر نہیں ڈال سکے آپ باک آپ کی اصل باک مَّنَّ بِكُمْ عَلَيْنَا دَيَّانُ الدِّيُنِ فَجَعَلَكُمْ فِي بُيُوتٍ آذِنَ اللَّهُ أَنْ تُرُفَعَ وَ يُذُكَّرَ فِيُهَا اسُمُهُ جڑا دینے والے نے آپ کے ذریعے ہم پراحمان کیا پس اس نے آپ کوان گھروں میں بھیجا جن کوخدانے بلند کیا ان میں اس کا ذکر ہوتا وَ جَعَلَ صَلُوتَنَا عَلَيْكُمُ رَحُمَةً لَّنَا وَ كَفَّارَةً لِّلْذُنُو بِنَآ إِذِ اخْتَارَكُمُ اللَّهُ لَنَا وَ طَيَّبَ خَلْقَنَا ہے اور ہمارا درودا ٓ پ کے لیے قرار دیا جو ہمارے لیے رحمت ہے اور ہمارے گما ہوں کا کفارہ ہے کہ خدانے آپ کو ہمارے لیے چنا آپ کی بِمَا مَنَّ عَلَيْنَا مِنُ وَ لِأَيَتِكُمُ وَ كُنَّا عِنُدَهُ مُسَمِّيُنَ بِعِلْمِكُمُ مُعُتَرِفِيُنَ بِتَصْدِيُقِنَآ إِيَّاكُمُ وَ

هــذَا مَقَامُ مَنُ ٱسُرَفَ وَ ٱخُطَا وَاسْتكَانَ وَ ٱقَرَّ بِمَا جَنِي وَ رَجِي بِمَقَامِهِ الْخَلاصَ وَ ٱنْ ہیں اوراب اس حرم میں و چھن آیا کھڑاہے جو گنہگار خطا کار اور مسکین ہے اپنے گنا ہوں کا اقراری ہے اس جگرا چی نجات کا امیدوارہے اور يَسُتَنُقِدَةَ بِكُمْ مُّسُتَنُقِذُ الْهَلُكُي مِنَ الرَّدِى فَكُوْنُوْا لِيُ شُفَعَآءَ فَقَدُ وَفَدُتُ اِلْيُكُمُ اِذُ جا ہتا ہے کہ آپ کی شفاعت سے حدااس کو ہلا کت و ہر ہا دی ہے بچائے اپس آپ سب میرے شفیع بن جا کیں میں آپ کی ہارگاہ میں اس رَغِبَ عَنُكُمُ اَهُلُ الدُّنْيَا وَ اتَّخَذُوٓ اليَاتِ اللَّهِ هُزُوًا وَّاسُتَكُبَرُوُا عَنُهَا يَا مَنُ هُوَ قَائِمٌ لَّا وقت آیا ہوں جب دنیاوالے آپ سے مزموڑ گئے انہوں نے آیات الی کامذاق اڑایا اوران کے آگے اکڑ گئے اے وہ ذات جوقائم ہے يَسُهُوُ وَ دَآئِمٌ لاَ يَلُهُوُ وَ مُحِيُطٌ بكُلِّ شَيْءٍ لَكَ الْمَنُّ بِمَا وَقُقُتَنِي وَ عَرَّفَتَنِي بِهَ جے بھول نہیں پڑتی اوروہ دائم جو غافل نہیں ہوتا اور ہر چیز کا گھیرے ہوئے ہے تیراا حسان ہے کرتو نے مجھے تو فیق دی زیارت کی معرفت بخشی ٱقَــمُتَـنِــيُ عَلَيُهِ إِذْ صَدَّ عَنُهُ عِبَادُكَ وَ جَهِلُوا مَعُرِفَتَهُ وَاسْتَخَفُّوا بِحَقِّهٍ وَ مَآلُؤلي سِوَاهُ کہ مجھے یہاں کھڑا کیاہے جب تیرے بندےاں ہے مخرف ہو گئے اس کی پیچان نہ کر بائے اس کے حق کوسبک سمجھ لیااور غیر کی طرف فَكَانَتِ الْمِنَّةُ مِنْكَ عَلَلَ مِعَ أَقُوا وَ خَصَطْتِهُمُ لِمَا خَصَطْتِلُي بِهِ فَلَكَ الْحَمُدُ إِذْ كُنُ مائل ہو گئے پھر مجھ پر تیرافعنل و کرم ہوااور ڈونے مجھ کوان گروہوں کے ساتھ ملا دیا جن کوؤنے اپنے خاص قرار دیا ہے اس حمد ہے تیرے لیے عِنُدَكَ فِيُ مَقَامِيُ هَذَا مَذُكُورًا مَّكُتُوبًا فَلا تَحُرِمُنِيُ مَا رَجَوُتُ وَلا تُخَيِّبُنِي فِيُمَا دَعَوُتُ جب میں اس حرم میں ہوں مجھے تیرے ہاں یا دکیا گیا اور میرانام لکھا گیا ہے اس مجھے میری آرزو سے محروم ندفرہا جوما نگآ ہوں اس میں نا کام بِحُرُمَةِ مُحَمَّدٍ وَ الِهِ الطَّاهِرِيُنَ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الِ مُحَمَّدٍ﴾ ـ نہ کر واسط ہے بھے حضرت محر اور ان کی آل باک کا اور رحمت کرے اللہ سرکار محر و آل محمد " یہ۔ دوسری زیارت جومصباح تقعمی میں ندکورہ کہ قبور مقدسہ کی طرف رخ کر کے بیرزیا رت پڑھے: ﴿ اَلسَّلامُ عَلَيْكُمُ يَا خُوزًانَ عِلْمِ اللَّهِ وَ حَفَظَةَ سِرِّهِ وَ تَرَاجِمَةَ وَحُيهِ اَتَيُتُكُمُ يَا بَنِي اے علم خدا کے خزینہ دارہ اور اس کے رازوں کے رازدارہ اور اس کی وحی کے ترجما تو تم پر سلام اے اولاد رسول! رَسُولِ السَّبِهِ عَسارِفًا بِسَحَقِّكُمُ مُسْتَبُصِرًا بِشَأْنِكُمُ مُعَادِيًا لِآعُدَائِكُمُ میں اپنے حق کی معرفت رکھتے ہوئے آپ کی شان کو پیچانتے ہوئے اور آپ کے ڈھنوں سے دشنی کرتے ہوئے حاضر ہوا ہوں

بِاَبِي أَنْتُهُ وَ أُمِّي صَلَّى اللَّهُ عَلَى أَرُواحِكُمُ وَ أَبُدَانِكُمُ اللَّهُمَّ إِنِّى أَتَوَلَّى آخِرَهُمُ كَمَا مِيرِ مال باب آب پر قربان مول خدا آپ كارداح وابدان پر درد دوملام بهج اسالله مين ان كاول و آخر سميت كرنا مول

تَوَلَّيُتُ أَوَّلَهُمُ وَ أَبُوا مِنْ كُلِّ وَلِيُحَةٍ دُونَهُمُ آمَنُتُ بِاللّهِ وَ كَفَرُتُ بِالْجِبُتِ

وَ الطَّاغُوٰتِ وَ اللَّاتِ وَالْعُزْى وَ كُلِّ نَدٍّ يُدُعَى مِنُ دُوْنِ اللَّهِ ﴾ ـ

ائم الم الم عالم على عالم المرت كى وعا

اورجب زائر زیارت سے فارغ ہوجائے اورالوداع کرنا جائے اول کے:

﴿ اَلسَّالَامُ عَلَيْكُمُ اَئِمَّةَ الْهُدَى وَ رَحُمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ اَسْتَوُدِعُكُمُ اللَّهَ وَ اَقُرَءُ

سلام ہو آپ سب پر اے مراجع کے اخراوں اس کی جست ہو اور اس کی رکتی آج کو وداع کتا اور پرد خدا

عَـلَيُـكُـمُ السَّلامُ الْمَـنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولُ وَبِمَا جِنْتُمُ بِهِ وَ دَلَلُتُمُ عَلَيْهِ

كرنا ہوں اور آپ يرسلام بھيجنا ہوں ايمان ركھنا ہوں خدا اور اس كے رسول پر اور جو آپ لائے اور جس كى طرف آپ نے رہنمانى فرمانى

اَللَّهُمَّ فَاكُتُبُنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴾ -

امے معبودا ہمیں میں گواہی دیے والوں میں لکھ دے۔

حضرت رسول خداً وحضرت فاطمه زبرًا اور حضرت امير المؤمنين اور

ووسر ائم بقیع یا ویگرائم طاہرین کی دور سے زیارت کرنے کاطریقہ؟

(۱) جناب علامہ مجلسی بیان کرتے ہیں کہ بسند معتبر حضرت امام جعفر صادق الظیالا سے مروی ہے، فرمایا: جو شخص حضرت رسول خدا، امیر المؤمنین و فاطمہ زہرا، امام حسن اور امام حسین علیم السلام اور دوسرے بچے اللہ کی قبور مقدسہ کی اپنے شہر سے زیارت کرنا چاہتو اسے چاہیئے کہ جمعہ کے دن عسل (زیارت) کرے اور دو صاف ستھرے کیڑے زیب بدن کرے اور کسی صحراء کی طرف نکل جائے (اور دوسری روایت کے مطابق اپنے مکان کی

حجیت پر جاکر) چاررکعت نماز (بدوسلام) جس سورہ سے جائے پڑھے پھررو بقبلہ ہوکر بیزیارت پڑھے: ﴿ اَلسَّلاَمْ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَ رَحُمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ اَلسَّلاَمْ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ الْمُرْسَ ہو آپ رہے اے پیٹیبر رحمت ہو اللہ کی اور اس کی برکتیں ہوں سلام ہو آپ رہے اے خدا کے بھیجے ہوئے پیٹیبر وَ الْوَصِيُّ الْمُرْتَحْسِي وَ السَّيِّدَةُ الزَّهُرَآءُ وَ السِّبُطَانِ الْمُنْتَجَبَانِ وَ الْأَوْلاَدُ الْأَعُلامُ ورسلام ہوآ پ کے بیند بدہ وصی پرسلام ہو بی بی خدیجۂ کبریؓ ،اور بی بی فاطمۂ زہرًا پرسلام ہوآ پ کے نواسوں حسنٌ وحسینٌ پر اوران کے وَ ٱلْأَمُنَاءُ الْمُنْتَجَعُونَ جِئُتُ انْقِطَاعًا إِلَيْكَ وَ إِلَّى آبَآئِكُمُ وَ وَلَدِكُمُ الْخَلَفِ عَلْم فرز ندوں پر جو دین کی نشانیاں اوراس کے این ہیں ممیں حاضر ہوا ہوں آپ کے آپ کے آباءاور آپ کے فرزند قائم " کے حضورجو برکت بَرَكَةِ الْحَقِّ فَقَلْدِيُ لَكُمُ مُسَلِّمٌ وَ نُصُرَتِيُ لَكُمُ مُعَدَّةٌ حَدَّى يَحُكُمَ اللَّهُ لِدِيْدِهِ پارے ہیں اس میرا ول آپ کے لیے جھکا ہوا اورمیری نفرت آپ کے لیے آمادہ ہے بیہاں تک کرخداظہور قائم کا تھم فرمائے اس آپ فَمَعَكُمُ مَعَكُمُ لا مَعَ عَدُوَّكُمُ إِنِّي لَمِنَ الْقَآئِلِيُنَ بِفَضْلِكُمُ مُقِرٌّ ، بِرَجُعَتِكُمُ لا کے ساتھ، آپ کے ساتھ ہول عرآب کے وقی کے ساتھ ب اللہ آپ کی بزر کا کا آل وراآپ کی رجعت کا اقرار کتا ہول أُنْكِرُ للَّهِ قُدُرَةً وَلاَ أَزْعُمُ إِلَّا مَا شَآءَ اللَّهُ سُبُحَانَ اللَّهِ ذِي الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ حدا کی قدرت کا اٹکارٹیس کتا ہوں اور وہی اعتقاد رکھتا ہوں جو حدا جا ہتا ہے باک ہے اللہ کہ جو کا نئات کا مالک اور حکمران ہے ئُ اللُّهَ بِأَسُمِ إِلِهِ جَهِينُعُ خَلُقِهِ وَ السَّلاٰمُ عَلَى أَرُوَاحِكُمُ وَ أَجْسَادِكُهُ اللہ کی سار**ی محلوق اس** کے ماموں کی تشیع کرتی ہے اور سلام ہو آپ کی روحوں پر اور آپ کے جسموں پر وَالسَّلامُ عَلَيْكُمُ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ ﴿ ((اوالمعاد) سلام ہوآ پ برخدا کی رحمت ہواوراس کی برستیں ہوں۔

مدینه منوره اوراس کے اروگر دمیں ویگر بعض متبرک قیور کی زیارت کابیان

مخفی ندرے کہدینہ منورہ میں بعض ساوات کرام اور مخدرات کے مزارات ہیں جیسے: (۱) پیغیبر اسلام ﷺ کے والد ماجد جناب عبد الله بن عبد المطلب۔ (۲) جناب عباس بن

عبدالمطلب (٣) جناب عقیل بن ابی طالب - (٣) جناب عبدالله بن جعفرطیار - (۵) جناب محد بن حفیه - (۲) جناب ابی بن رسول الله (۵) جناب فاطمه ام (۲) جناب ابرا بیم بن رسول الله (۵) حفرت فاطمه بنت اسد والدهٔ امیر المؤمنین ، (۸) جناب فاطمه ام البنین زوجه حفرت امیر المؤمنین اور (۹) جناب صفیه بنت عبدالمطلب ، (۱۰) جناب حلیمه سعدیه ، (۱۱) جناب نینب عالیه بنایر تحقیق الی غیر ذلک من القبواور جناب حز ه سیدالشهد اعم رسول جن کے بارے میں نینب عالیه بنایر تحقیق الی غیر ذلک من القبواور جناب حز هسیدالشهد اعم رسول جن کے بارے میں

ریب عالیہ بنام محصیق النی عیب و دلک من القبواور جناب مر ہ سیرا البر اءم رسون ان مے بارے من العبواور جناب مر ہمر بعض علاء نے پیغیر اسلام اللہ ہے ہیں دوایت نقل کی ہے، فرمایا کہ جو خص میری زیارت کرے مگر میرے م

بزرگوار حمز ہ کی نہ کرنے قو اس نے مجھ پر جفا کی ہے۔(کتاب الدعاء)۔(۱۲) آزواج النبی اور (۱۳) ووسرے

شهداءرضوان الله عليهم اجمعين لهذاان كے قبور كى زيارت كى جائے اوران برسلام كيا جائے: ﴿ اَلْسَلامُ عَلَيْكُمُ

يَا أَهُلَ الدِّيَارِ أَنْتُمُ لَنَا فَرَطٌ وَ إِنَّا بِكُمُ لأَحِقُونَ ﴾ - (كتاب الدعاوالزياره)ان كيائر آن فوانى

کی جائے ، نما زیر بھی جائے اوران اعمال کا ثواب ان کے ارواح مقدسہ کوہدید کیا جائے ۔ویسے ان حضرات میں

ے بعض کی زیارات بھی وار دہوئی ہیں جیسا کہ مفاتے وغیرہ میں مذکور ہیں جیسے جناب حز "ہ کی بیزیارت:

﴿ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا عَمَّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَ خَيْرَ الشَّهَدَاءِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ ۗ علام ہو آپ پر اے صرت رسول اللہ علی اللہ علیہ و آلہ وَلم کے کِما اور اے شہداء میں بہترین علام ہو آپ پر

يَا اَسَدَ اللَّهِ وَ اَسَدَ رَسُولِهِ اَشُهَدُ اَذَّكَ قَدُ جَاهَدُتٌ فِي اللَّهِ وَ نَصَحْتَ رَسُولَ اللَّهِ ﴿

اے اللہ کے شیر اور اس کے رسول کے شیر میں گوائی دیتا ہوں کہ آپ نے راہ خدا میں جہاد کیا خدا کے رسول کی خمر خوائی فرمائی

وَ جُدتُ بِنَفُسِكَ وَ طَلَبُتَ مَا عِنُدَ اللَّهِ وَ رَغِبُتَ فِيُمَا وَعَدَ اللَّهِ ـ (كَابِالدعاء)

مدینه منوره کی بعض متبرک مساجد اوران میں نماز یوسنے کی فضیلت کا تذکره

مدینه منوره میں بعض بڑی عظمت و ہز رگی والی مساجد موجود ہیں جیسے:

مسجد نبوی: ۔جس میں متند روایا ت کے مطابق ایک نماز پڑھنے کا نواب ویں ہزار نمازوں کے ہرا پر (1)

(۲) مسجد قبانہ جس کا تذکرہ قرآن مجید میں موجود ہے کہ اس کی بنیا دلقویٰ ویر ہیز گاری پر رکھی گئی ہے اس

میں دو رکعت نماز رہوئے برعمرہ کا ثواب ملتا ہے لہٰذا اس میں کم از کم دورکعت نماز تحییہ مسجد ہی پڑھی جائے۔

(۳) مىجد تقييح : _ جےمىجد" روشمن" بھی کہا جاتا ہے جومىجد قبا کے قریب ہی ہے اس میں بھی کم از کم دو

رکعت تحیهٔ مسجد ہی روهی جائے۔

(۴) مىجد فتح : ـ اى مىجد كومىجدا تر اب بھى كہا جا تا ہے ـ يہيں جنگ احز اب كاميا بي ہے ہمكنا رہوئي تھى

اس میں بھی دو رکعت نماز پڑائی جائے اور اس سے فراغ ت کے بعد پیدوعا پڑھی جائے

﴿ يَا صَرِيْخَ الْمَكُرُولِينَ وَ يَا مُحِيُبَ دَعُوَةِ الْمُضْطَرِّيْنَ وَ يَا مُغِيْثَ الْمَهُمُومِيْنَ إِكْشِفُ

اے دکھی لوگوں کی فریا دکو تی بنجنے والے اے بے قراروں کی دعا قبول کرنے والے اورائے م کے ماروں کی مدد کرنے والاے میری مختی ،

عَـنِّيُ ضُرِّيُ وَ هَمِّيُ وَ كَرُبِيُ وَ غَمِّيُ كَمَا كَشَفُتَ عَنُ نَّبِيّكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ هَمَّهُ

تنگی، پریثانی، تکلیف اور رنج وغم دور کر دے جیباکہ تو بین اپنے نبی سلی اللہ علیہ وآلبہ وسلم کی پریثانی دور فرماتی

وَ كَفَيْتُهُ هُولَ عَدُوٍّهِ وَ اكْفِنِي مَآ اَهَمَّنِي مِنْ اَهُر الدُّنْيَا وَ الْأَخِرَةِ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ﴾

اور وخمن سے خوف میں ان کا مددگار ہوا دنیا و آخرت کی پریشانیوں میں میری کفانیت فرما اور مدد کرا ہے سب سے زیا وہ رحم کرنے والے۔

کیونکہ پیغیبرا سلام صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے ان مساجد میں نما زیں پڑھی ہیں۔بعض علماءنے ان مساجد کےعلاوہ

بھی بعض مساحد وامکنہ کا تذکرہ کیاہے۔

- (۵) جيسے مجدسلمان محدیّ۔
- (۲) مجدالغدير جوكه جحفه كقريب -



- (۷) مسجد مبابله۔
- (٨) مسجدامير المؤمنين جو جناب حزة كى قبر كے بالقابل ہے۔
 - (9) حضرت امام زين العابدين القليلا _
- (۱۰) اور حضرت امام جعفر صاوق الطبيع کے مکانات اور ان مقامات مقدسہ میں نمازیں پڑھنے کا ذکر بھی کیا

-

معلوم اب بيتمام مساحداوربيمكانات مقدسه موجود بهي بين - يا انبين منهدم كرديا گيا ب-و السي الله المشتكي و الله العالم-

SIBTAIN.COM

امير المؤمنين وامام المتقين حضرت على الكفية كي زيارت كي فضيلت اور كيفيت كابيان

(۱) ابوشعیب نے حضرت امام رضا الطبی کی خدمت میں عرض کیا کہ آیا حضرت امیر الطبی کی زیارت کرنا افضل ہے یا حضرت امام حسین الطبی کی؟ امام نے فر مایا: چونکہ حضرت امام حسین الطبی رخج و کرب کی حالت میں شہید ہوئے البندا خدا کے شایانِ شان میہ ہے کہ جو بھی رخج و کرب زودہ آدمی آپ کی زیارت کر بے تو خدا اس کے کرب کو دور فر مائے اور جہاں تک فضیلت کا تعلق ہے تو جو فضیلت حضرت امیر الطبی کو حضرت امام حسین الطبی کی زیارت کو بھی فضیلت آپ کی زیارت کو امام حسین الطبی کی زیارت کو امام حسین الطبی کی زیارت کو بھی فضیلت آپ کی زیارت کو امام حسین الطبی کی زیارت کو دور فرمان کے دیارت کو امام حسین الطبی کی زیارت کو دور فرمان کے دیارت کو دور فرمان کو دور فرمان کے دیارت کو دور فرمان کیارت کو دور فرمان کو دور کو دور فرمان کو دور فرمان کو دور فرمان کو دور کو دور کو دور کو دور کو دور کو دور

(۲) محمد بن مسلم حضرت امام جعفر صادق القلیلات روایت کرتے ہیں، فرمایا: جو محف حضرت امیر القلیلا کے حق کی معرفت رکھتے ہوئے ہوئے ہوئے کی زیارت کرتے ہواورت مسلم القبارات کی سامید کے برابر اجمد عطا فرما تا ہے اورخدا اس کے الکے پچھلے گناہ معاف کر دیتا ہے اوروہ بروز قیا مت اس کی حالت میں محشور ہوگا۔ اور

اس كا حساب و كتاب آسان موگا اور ملا تكه اس كا ستقبال كريس محالخ --- (ايضاً)

(۳) ابن مارد نے حضرت امام جعفر صادق الطبیح کی خدمت میں عرض کیا کہ جو تحض آپ کے جدامجد حضرت امیر الطبیح کی زیارت کرے اس کے لیے کیا اجمد و ثواب ہے؟ فر مایا: اے فر زند مارد! جو تحض میرے جدنامدار کے حق کی معرفت رکھتے ہوئے آپ کی زیارت کرے تو خدا اسے ہر ہرقدم پر جج مقبول اور عمر ہ مبرورہ کا ثواب عطا فرما تا ہے۔ پھر فر مایا: اے پسر مارد! بخدا دوزخ کی آگ بھی اس قدم کو نہیں جلائے گی جس کا رنگ حضرت امیر الطبیح کی بیادہ یا سواری پر سفر زیارت کرتے ہوئے متغیر ہوا ہوگا۔ (الیفاً)

حفرت امير اليني کازيارات دوستم کی ہيں: (۱)ايک مطلقہ جو کسی خاص وفت سے مختص نہيں ہے۔ (۲) دومری مخصوصہ جو کسی خاص وفت سے مختص ہیں۔

تو ہم پہلے جناب کی بعض اہم زیارات مطلقہ کا تذکرہ کرتے ہیں اوراس کے بعد زیارات مخصوصہ کا

تذكره كياجائے كاانثاءاللد-

ليلى زيارت مطلقه

﴿ جوزيارت المين الله كمام مصمهور م

مخفی نه رہے کہ حضرت امیر القلیق کی زیارات مطلقه بکثرت ہیں جن میں چندا ہم زیارات کا ہم تذکرہ

کرتے ہیں:

(۱) حضرت امام رضالظ البنا البنائي اب وجد سے روایت کرتے ہیں کہ حضرت امام زین العابدین الظی نے حضرت امام زین العابدین الظی نے حضرت امیر المؤمنین الظی کی قبر مقدس کی یوں زیارت کی کہ قبر مقدس کے قریب کھڑے ہو کرروئے اور (روتے

ہوئے) یوں زیارت پڑھی:

﴿ اَلسَّلاَمُ عَلَيُكَ يَا اَمِيْنَ اللَّهِ فِي اَرُضِهِ وَ حُجَّتَ عَلَى عِبَادِم اَلسَّلاَمُ عَلَيُكَ ﴿ السَّلاَمُ عَلَيُكَ اللهِ اللهِ عَلَيْكَ اللهِ اللهِ عَلَيْكَ ﴿ اللهِ اللهِ عَلَيْكَ اللهِ اللهِ عَلَيْكَ اللهِ اللهِ عَلَيْكِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ اللهُ اللهُ

یا اَمِیُسَ الْسُمُ وُمِنِیُنَ اَشُهَدُ اَذَّکَ جَاهَدُتَ فِی اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِم وَعَمِلُتَ بِکِتَابِهِ وَاتَّبَعُتَ ﴿ اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِم وَ عَمِلُتَ بِکِتَابِهِ وَاتَّبَعُتَ ﴿ اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِم وَ اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّ

سُنَنَ نَبِيّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَالِهِ حَتَّى دَعَاكَ اللَّهُ اللى جِوَارِهِ فَقَبَضَكَ اللَّهُ عِلَيْهِ بِإِخْتِيَارِهِ وَ اَلْزَقَّ نِي مَلَى اللهُ عَليه وآله وَمَلَم كَ سَنُول كَى يِرُوك كَى هٰذا رحمت كران مِن اللهُ اللهِ عَرِهٰذائے آپ كوالي باله ليا اللهِ اختيارے

اَعُـدَاؤَکَ الْحُجَّةَ مَعَ مَا لَکَ مِنَ الْحُجَجِ الْبَالِغَةِ عَلَى جَمِيعِ خَلْقِهِ اَللَّهُمَّ فَاجُعَلُ نَفُسِيُّ آپ کی جان قبض کر لی اور آپ کے ڈینوں پر جمت قائم کی جبھہ تمام محلقو کے لیے آپ کے وجود میں بہت ی کامل جمیّں ہیں اے اللہ!

مُطُمَئِنَّةً بِفَدَرِكَ رَاضِيَةً بِفَضَآئِكَ مُولَعَةً بِذِكْرِكَ وَ دُعَآئِكَ مُحِبَّةً لِصَفُوةِ أَوُلِيَّ مير _نُس كوايبا بنا كرتيرى تقدير برمطنن موتير _ نِصل بر ماضى وفوش رہے تير _ ذكر كا مشاق اور دعا ميں حريس موتير _ بركزيده

مَـحُبُوبَةً فِـى اَرُضِكَ وَ سَـمَـآئِكَ صَابِرَةً عَلَى نُزُولِ بَلَآئِكَ شَاكِرَةً لِفَوَاضِلِ نَعُمَآئِكُ دوستوں ہے مجت كرنے والا تيرى زئن وآسان مين مجوب ومظور ہوتيرى طرف ہے مصائب كى آ مدرٍ مبركرنے والا ہوتيرى بهترين فعتوں

ذَاكِرَةً لِسَوَابِعِ الْأَدِّكَ مُشُعَاقَةً إلى فَرُحَةِ لِقَائِكَ مُتَزَوِّدَةً التَّقُواى لِيَوُمِ جَزَ آدِكَ مُسُكُّ پِشَرَكِنَ والاتِيرِيَ ثِيْرِمِهِ إِنْوِل كو إِدَرِنَ والا موتيرى لا قات كى فوشى كا خوابال يوم جزاء كے ليے تقوى كوزا دراه منانے والا موتيرے

بسُنَن اَوُلِيَآ ذِكَ مُفَارِقَةَ لِلَاخُلَاقِ اَعْدَآ ذِكَ مَشُغُولَةً عَنِ الدُّنْيَا بِحَمُدِكَ وَ ثَهَآ فِكَ دوستوں کے نقش قدم پر چلنے والا تیرے ڈمنوں کے طور طریقوں سے نفورو دوراور دنیا سے 🥳 بچا کرتیری حمد و ثناء میں مشغول رہنے والا ہو۔

پھرآپ نے اپنارخسار قبرمبارک بررکھااور فرمایا:

﴿ اَللَّهُ مَّ إِنَّ قُلُوبَ الْمُخْتِينُ لِلَّهُ كَ وَالِهَةُ وَ سُبُلَ الرَّاغِبِينَ اِلَيُكَ شَارِعَةٌ وَ اعُلاَّ اے معبودا بے فک ڈرنے والوں کے دل تیرے لیے باب بین شوق رکھے والوں کے لیے رائے کھے ہوئے ہیں تیری طرف الْقَاصِدِيْنَ اِلَيْكَ وَاضِحَةٌ وَّ اَفْئِلَهُ اَلْعَارِفِيْنَ مِنْكَ فَازِعَةٌ وَّ اَصُوَاتَ الدَّاعِيْنَ اِلَيُكُ بڑھنے والوں کے جینڈ ہے بہت اونچے ہیں معرفت رکھے والوں کے دل جھ سے کا پیتے ہیں تیری بارگاہ میں دعا کرنے والوں کی آوازیں صَاعِلَةٌ وَّ اَبُوَابَ الْإِجَابَةِ لَهُمُ مُفَتَّحَةٌ وَّ دَعُوةَ مَنْ نَاجَاكَ مُسْتَجَابَةً وَّ تَوْبَة مَنُ اَنَابَ بہت ہیں اور ان کے لیے قبول دعا کے دروازے کھلے ہیں تھھ سے رازو نیاز کرنے والوں کی دعا قبول ہوتی ہے جو تیری طرف پلٹ آئے إِلَيُكَ مَقُبُولَةٌ وَ عَبُرَةَ مَنْ يَكَى مِنْ خَوُفِكَ مَرُحُومَةٌ وَ الْإِغَاثَةَ لِمَنِ اسْتَغَاتَ بِكُو اس کی تو بہ متبول ومنظور ہے تیرے خوف میں رونے والے کے آنسوؤں پر رصت ہوتی ہے جو چھے سے قریا د کرے اس کے لیے دادری مَوُجُودَةً وَّ الْإِعَانَةَ لِمَن اسْتَعَانَ بِكَ مَبُذُولَةٌ وَّ عِدَاتِكَ لِعِبَادِكَ مُنْجَزَةٌ وَ زَلَلَ موجود ہے جو چھ سے مدد طلب کرے اس کو مددملتی ہے اپنے بندوں سے کیے گئے تیرے وعدے پورے ہوتے ہیں تیرے ہاں اسْتَـقَـالَكَ مُقَالَةٌ وَّ اَعُمَالَ الْعَامِلِيُنَ لَدَيُكَ مَحْفُو ظَةٌ وَّ اَرُزَاقَكَ اِلِّي الْخَلاَئِق مِنُ لَّذُنَّكُ عذر خواہوں کی خطائمیں معاف اور عمل کرنے والوں کے اعمال تیرے حضور محفوظ ہوتے ہیں مخلوقات کے رزق و روزیاں تیری جناب سے نَازِلَةٌ وَّ عَوَآئِدَ الْمَزِيُدِ اِلَيُهِمُ وَاصِلَةٌ وَّ ذُنُوُبَ الْمُسْتَغُفِرِيُنَ مَغُفُورَةٌ وَّ حَوَآئِجَ خَلْقِكَ ہی آتی ہیں اوران کومز مدعطائیں حاصل ہوتی ہیں طالبان بخشش کے گنا وبخش دیئے جاتے ہیں ساری کلوق کی حاجتیں تیرے ہاں سے پوری عِنْدَكَ مَقُضِيَّةٌ وَّ جَوَآئِزَ السَّآئِلِيُنَ عِنْدَكَ مُوَقَّرَةٌ وَّ عَوَآئِدَ الْمَزِيْدِ مُتَوَاتِرَةٌ وَّ مَوَآ ہوتی ہیں جھ سے سوال کرنے والوں کو بہت زیا دہ ملتا ہے اور پے در پے عطائیں ہوتی ہیں کھانے والوں کے لیے دسترخواں الْـمُسُتَـطُعِـمِيُـنَ مُعَـدَّةٌ وَ مَنَاهِلَ الظِّمَآءِ مُتُرَعَةٌ اَللَّهُمَّ فَاسْتَجِبُ دُعَآئِي وَاقْبَلُ ثَنَآئِي تیارہ اور پیاسوں کی خاطر چشے بحرے ہیں ہاء کو بیند

وَ اجْمَعُ بَيُنِيىُ وَ بَيُنَ اَوُلِيَ آئِى بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَ عَلِيّ وَ فَاطِمَةَ وَ الْحَسَن وَ الْحُسَيُن فرما مجھے اینے دوستوں کے ساتھ کر دے کہ واسطہ دیتا ہوں محمہ "و علی "و فاطمہ "و حسن " و حسین " کا إِنَّكَ وَلِـيُّ نَعُمَـآئِـيُ وَ مُنْتَهِلِي مُنَاكِ وَ غَايَةٌ رَجَآئِيُ فِي مُنْقَلَدِي وَ مَثُوَاكِكَ بے فٹک تو مجھے نعتیں دیے والا میری آرزوؤں کی انتہا میری امیدوں کا مرکز ہے سفر اور حضر میں۔

کامل الزیا رات میں اس زیارت کے بعد بیفقرات بھی ہیں:

﴿ اَنُتَ اِلْهِيُ وَ سَيِّدِى وَ مَوُلاَىَ اغْفِرُ لِآوُلِيَ آئِنَا وَكُفَّ عَنَّا اَعُدَآئَنَا وَاشُعَلُهُمُ تو میرا معبود میرا آقا اور میرا مالک ہے ہمارے دوستوں کو معاف فرما ڈھنوں کو ہم ہے دور کر ان کو ہمیں عَـنُ اَذَانَـا وَ اَظُهِـرُ كَلِمَةَ الْحَقِّ وَاجْعَلُهَا الْعُلُيَا وَ اَدُحِصْ كَلِمَةَ الْبَاطِلِ ایڈا دیجے سے باز رکھ کلمۂ حق کو ظہور میں لا اور اسے بلند قرار دے کلمۂ باطل کو دبا دے وَاجُعَلُهَا السُّفُلِي إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيُّو ۗ ـ

اورای کوبت قراردے کے بیات تر بینتر رہتے رکھتا ہے۔ بعض روایات کے مطابق جناب جائد صفرت اما محمد با فرائے کا ہے روایت کرتے ہیں فرمایا کہ ہمارے شیعوں میں ہے جو شخص حضرت امیر الظفیٰ کی قبر مبارک یا دوسرے ائمیہ طاہرین علیہم السلام کی قبور مقدسہ کے پاس بیرزبارت پڑھے اور دعا کر نے تو وہ زیارت و دعا ایک نورانی نوشتہ میں عالم بالا کی طرف لے جائی جاتی ہے اوراس برحضرت رسول خدا 🗱 کی مہر ثبت کی جاتی ہے اور حضرت قائم آل محد کے ظہور تک اسے محفوظ رکھا جائے گا پہاں تک کہاہے ان کے حوالے کیا جائے گا۔اوروہ جناب جنت کی بٹارت،سلام خاص اورعزت و تو قیر کے ساتھ زائر سے ملاقات کریں گے انشاء اللہ تعالی ۔ (مصباح طوی)

بناہریں بیرزیارت جہاں مطلقہ ہے وہاں زیارت جامعہ بھی ہے۔ نیز بیغدیر کے دن بھی پڑھی جاتی ہ۔(ایضاً)

جناب امير اللي كى دوسرى زيارت مطلقه

صفوان جمال بیان کرتے ہیں کہ حضرت امام جعفر صادق الطبی منصور دوائقی عبای کے باس تشریف لے جاتے وفت جب کوفیہ میں وار دہوئے جبکہ میں بھی آپ کے ہمراہ تھاتو فر مایا: اے صفوان! یہاں اونٹ بٹھا دو کہ یہاں میرے جدنامدار حضرت امیر القیلاکا مزار ہے۔ چنانچہ آپ اونٹ ہے اترے عسل کیا اور لباس تبدیل فرمایا اور برہند یا ہوگئے اور مجھ سے فرمایا: جس طرح میں کرتا جاؤں تو بھی ای طرح کرتا جا پھر ذکوہ (نجف) کی طرف روانہ ہوئے اور مجھ سے فرمایا کہ چھوٹے قدم اٹھا وَاور چہرہ زمین کی طرف جھکا کے چلوتا کہ تمہارے نامہ اٹھال میں ایک لاکھ نیکیاں کھی جا کمیں اور ایک لاکھ درج بلند ہوں، اور ایک لاکھ داکیاں مٹائی جا کمیں اور ایک لاکھ درج بلند ہوں، اور ایک لاکھ حاج کی ہوں، اور ایک لاکھ حاج کے پھر آپ اور میں سکیند و موں، اور ایک لاکھ حاج کی ہوں آپ اور میں سکیند و مقارکے ساتھ خدا کی تبیج و تقدیس اور تبلیل کرتے ہوئے مقام ذکوات (نجف) تک پنچ اور آپ نے وہاں رک کروائیں با کمیں نگاہ دوڑائی اور پھر اپنی چھڑی سے زمین پر لکہ کھینچی اور مجھ سے فرمایا کہ تلاش کرو۔ چنانچہ جب میں نے وہاں جہوگی تو مجھے ایک قبر کا نشان نظر آیا۔ یہ منظر دیکھ کرآپ کے دخیاروں پر آنو جاری ہوگئے اور میں فرمایا: ﴿ إِنَّا لِلْلّٰهِ وَ إِنَّا إِلَيْهِ رَاجَعُونَ ﴾ ۔ اس کے بعد یہ زیارت پراھی:

ہم الله بى كيليج بين اوراس كى طرف بلكتے والے بين -

﴿ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا الْوَصِيُّ الْبَرُّ التَّقِيُّ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّهَا الْعَظِيْمُ اَلسَّلامُ عَلَيْكُ الله بو آپ پر اے وسی نیکوار و پریزگار الله بو آپ پر اے بہت بینی فر الله بو آپ پر

أَيُّهَا الْسِيِّدِيُ فَى الرَّشِيْدُ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا الْبَرُّ الزَّكِيُّ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا وَصِيَّ رَسُوُلِ اے صاحب صدق و ہدایت یافتہ سلام ہوآپ پر اے نیکوکار پاکباز سلام ہوآپ پر اے جہانوں کے رب کے رسول کے وصی و

رَبِّ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا خِيرَةَ اللَّهِ عَلَى الْخَلْقِ اَجُمَعِيْنَ اَشُهَدُ اَنَّكَ حَبِيبُ اللَّهِ جانفین سلام ہو آپ ر اے ساری مخلوق ر خداکی طرف سے باافتیار میں کوائی دیتا ہوں کر آپ خدا کے دوست اس کے

وَ خَاصَّةُ اللَّهِ وَ خَالِصَتُهُ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللَّهِ وَ مَوْضِعَ سِرِّهِ وَ عَيْبَةَ عِلْمِهِ

بندہ خاص اور مخلص ہیں سلام ہو آپ ہر اے خدا کے ولی اسرار الّٰہی کے ایمن اس کے علم محجینہ اور اس

و خَاذِنَ وَحُمِهِ ﴾ - پھر آپ قبراطهر سے ليك گئے اور فر مایا: ﴿ بِاَبِ يُ اَنْتُهُ وَ اُمِّيُ يَآ اَمِيُو الْمُوْمِنِيْنَ وَوَى كَوْرَيْهُ وَالْمَا اِبِا سامِرالمُونِيْنَ وَيَ كَوْرَيْهُ وَالْمَا اِبِا سامِرالمُونِيْنَ وَيَ

بِسَابِسِیُ اَنْشُدُهُ وَ اُمِّدِی یَسَا حُسِجَّةَ الْسِحِصَامِ بِاَبِیُ اَنْشُهُ وَ اُمِّی یَا بَابَ الْمَقَامِ بِاَبِیُ اَنْشُهُ وَ اُمِّی قربان ہوں آپ پرمیرے ماں باپ اے ڈمنوں پر جمت قربان ہوں آپ پرمیرے ماں باپ اے داہ پرمتھ دقربان ہوں آپ پرمیرے

******* يَا نُوُرَ اللُّهِ التَّامَّ اَشُهَدُ اَنَّكَ قَدُ بَلَّغُتَ عَنِ اللَّهِ وَ عَنُ رَّسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ ماں باپ اے حدا کے کامل نور تمیں کوائی دیتا ہوں کہ آپ نے حدا اور اس کے رسول سلی اللہ علیہ وآلیہ وہ کم کے وہ احکام وَ الِسِهِ مَسا حُمِّلُتَ وَ رَعَيُتَ مَسا اسْتُحُفِظُتَ وَ حَفِظُتَ مَسااسُتُودِعُتَ وَ حَلَّلُتَ لوگوں تک پہنچائے جوآپ نے حاصل کیے جوعلوم ملے ان کی عمہبانی کی جوامور آپ کے سپر دہوئے انہیں فراموش نہیں کیا اور آپ نے حَلَالَ اللَّهِ وَ حَرَّمُتَ حَرَامَ اللُّهِ وَ اَقَمُتَ اَحُكَامَ اللَّهِ وَلَمُ تَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ حلال خدا کو حلال اور حمام خدا کو حمام ٹھیرایا آپ نے احکام الہی کو نافذ کیا خدا کی حدوں سے تجاوز نہیں کیا اور وَ عَبَدُتَّ اللَّهَ مُخُلِصًا حَتَّى اَتَاكَ الْيَقِينُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيُكَ وَ عَلَى الْاَئِمَّةِ مِنُ بَعُهُ كَ خدا کی خالص بندگی کرتے رہے یہاں تک کہ آپ شہادت یا گھے خدا رحمت کرے آپ پر اور آپ کے جانشین ائر ؓ پر۔ اس کے بعدامام الطبی نے جانب سر کھڑے ہوکر چند رکعت نما زیریھی اورفر مایا: اے صفوان! جو خض حضرت امیر انظیٰ کی بیرزبارت اس طرح پڑھے تو جب وہ لوٹ کراینے گھر جائے گاتو اس کے گنا ہ معاف ہو چے ہوں گے اوراس کی سعی مشکورہوگی اوراس کے امرا تمال میں وہ والے کھاجا نے گا جوزیارت کرنے والے فرشتوں کوماتا ہے۔اس کے بعد آپ میہ کہتے ہوئے الٹے باؤں واپس ہوئے: ﴿ يَسَا جَدَّاهُ يَسَا سَيِّدَاهُ يَسَا طَيِّبَسَاهُ يَسَا طَسَاهِ رَاهُ لَا جَعَلَـهُ اللَّهُ اخِرَ الْعَهُدِ مِنْكَ اے میرے واوا اے میرے سروار اے فوش کروار اے باکیزہ تر خدا آپ کی اس زیارت کو میرے لیے آخری نہ بنائے وَ رَزَقَنِسي الْعَوْدَ اِلَيُكَ وَ الْمَقَامَ فِي حَرَمِكَ وَ الْكُوْنَ مَعَكَ وَ مَعَ الْآبُ اور مجھے دوبارہ حاضر ہونا اور آپ کے حرم میں گھہرنا نصیب کرے آپ کی حدمت میں آئے اور آپ کی باک اولاد مِنْ وُلُدِكَ صَلَّى اللُّسهُ عَلَيُكَ وَ عَلَى الْمَلْاثِكَةِ الْمُحُدِقِيُنَ ﴾كَ کے حضور حاضری کی توفیق دے خدا رحمت کرے آپ رہ اور ان ملائکہ رہر جو آپ کی قبر کا طواف کرتے ہیں۔ صفوان بیان کرتے ہیں کہ میں نے امام القلیلا کی خدمت میں عرض کیا کہ آپ مجھے اجازت دیں کہ میں کوفہ کے برا درانِ ایمانی کواس واقعہ کی اطلاع دوں۔امام نے اجازت بھی دی اور قبر مبارک کی اصلاح اور مرمت کے لیے پچھ درہم بھی عطافر مائے ۔ (فرحة الغرى سيدعبدالكريم بن طاؤس و كتاب الدعاو الزيارہ)

تيسرى زيارت مطلقه

حسن بن ولید بیان کرتے ہیں کہ حضرت امام علی نقی الطبیع حضرت امیر الطبیع کی اس طرح زیارت پڑھا کرتے تھے:

﴿ اَلسَّالاُمُ عَلَيْكَ يَا وَلِي اللَّهِ اَنْتَ اَوَّلُ مَظُلُومٍ وَّ اَوَّلُ مَنُ غُصِبَ حَقَّهُ صَبَرُتُ وَ السَّمِ اوَ بِراحِهُ اللَّهِ عَلَيْكَ اللَّهِ عَلَيْكَ اللَّهُ وَ اَنْتَ شَهِيدٌ عَذَّبَ اللَّهُ قَاتِلَكُ الْعَلَيْمِ اللَّهُ قَاتِلَكُ اللَّهُ قَاتِلَكُ اللَّهُ عَلَيْهِ الْعَذَابِ وَ جَدَّدَ عَلَيْهِ الْعَذَابِ جِنْتُكَ عَالِوا آبِ وَهُ جِيدِ بِيلَ رَآبِ عَقَالَ وَمُواحِ اللَّهُ قَاتِلَكُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَالْمَعُومُ اللَّهُ اللَّهُ وَالْمَعُومُ اللَّهُ وَالْمُعُومُ اللَّهُ وَالْمُعَلِّلُومُ اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَيْمُ اللَّهُ وَالْمُعُومُ اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَيْكُ وَ مَنْ طَلَمَكَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْعَذَابِ وَ جَدَّدَ عَلَيْهِ الْعَذَابِ جِنْتُكَ عَالِوا آبِ وَهُ جِيدٍ عِلَى اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَيْكُ وَاللَّهُ عَلَيْكُومُ اللَّهُ وَالْمُعُلُومُ وَ اللَّهُ عَلَيْكُومُ اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَيْكُومُ اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَلَا عَلَيْكُومُ اللَّهُ عَلَيْكُومُ وَ اللَّهُ عَلَيْكُومُ اللَّهُ وَلَا عَلَيْكُومُ اللَّهُ وَلَا عَلَيْمُ وَ مَنْ طَلَمَهُ عَلَيْكُمُ اللَّهُ عَلَيْكُمُ وَ مَنْ طَلَمُ مَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ وَ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَلَا عَلَيْكُمُ وَ اللَّهُ عَلَيْلُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْكُومُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُومُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ

چوتھی زیارت مطلقہ

متدرک میں مزار سے نقل کیا گیا ہے کہ ہمارے مولاحضرت امام محمد باقر الظی سے مروی ہے کہ فرمایا: میں اپنے والد بزرگوار کے ساتھ اپنے واوا امیر المؤمنین الظی کی زیارت قبر کے لیے نجف اشرف گیا۔ پس و ہاں میرے والد قبر کے نز دیک کھڑے ہوکرروئے اوریوں کویا ہوئے:

﴿ اَلسَّالَامُ عَلَى آبِى الْاَئِسَةِ وَ خَلِيْلِ النُّبُوَّةِ وَالْمَخْصُوصِ بِالْاُخُوَّةِ اَلسَّلَامُ عَلَى اللهُ عَلَى الل

يَسعُسُوُب الْإِيُسمَسان وَ مِيُسزَان الْآعُسمَسال وَ سَيُفِ ذِى الْجَلاٰل اَلسَّلاٰمُ عَلْسى اسلام و ایمان کے سردار اجمال کے معیار و میزان اور صاحب جلال خدا کی تکوار پر سلام ہو سب سے صَالِح الْمُؤْمِنِيُنَ وَ وَارِثِ عِلْم النَّبيّيُنَ الْحَاكِم فِي يَوْم الدِّيُن اَلسَّلامُ عَلَى سب سے بہترین مومن پر جو نبیوں کے علوم کے وارث اور روز جزا میں تھم کرنے والے ہیں سلام ہو شَـجَـرَـةِ النَّقُوٰى اَلسَّلامُ عَلٰى حُجَّةِ اللَّهِ الْبَالِغَةِ وَ نِعُمَتِهِ السَّابِغَةِ وَ نِقُمَتِهِ الدَّامِغَةِ ان پر جو تقویٰ کی بنیاد ہیں سلام ہو حدا کی کامل مرین جہت پر جواس کی نعمت واسعہ اور اس کی طرف سے سزا دینے والے ہیں اَلسَّلاٰمُ عَسَلَى السصِّرَاطِ الْوَاضِعِ وَ النَّجْمِ اللَّالِمِعِ وَالْإِمَسامِ السُّساصِع سلام ہو ان پر جو خدا کا واضح راستہ چیکتا ہوا ستارہ اور شفقت کرنے والے امام ہیں وَ رَحْمَهُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ ﴾ - اس ك بعدفر ما يا: ﴿ أَنْتَ وَسِيلَتِنِي إِلَى اللَّهِ وَ ذَريُعَتِي وَلِي حَقُّ ان پر رحمت ہوخدا کی اور پر تمتیں۔ آپ ہیں حدا کے حضور میرا وسیلہ اور میرا ذریعہ بوجہ دوست داری مُوَالاَتِيُ وَ تَاْمِيُلِي فَكُنُ لِي شَفِيعِي لَكِي اللَّهِ عَزُوَ لِمَا فَي لُوقُوفِ عَلَى قَضَاءِ مجھے حق ہے کہ آپ سے امید کروں اس خدائے عزوجل کے ہاں میرے سفارشی بنئے میری حاجت برآری کے لیے اوروہ ہے حَاجَتِي ُ وَهِمَى فَكَاكُ رَقَيَتِي مِنَ النَّارِ وَ اصُرِفُنِيُ فِي مَوْقِفِي هَذَا بِالنَّجُحِ وَ بِمَا سَئَلُةُ میری گردن کی آگ سے خلاصی اس جگہ سے مجھے کامیاب کرا کے لوٹائے اور وہ سب کچھ دلوائے جو بواسط اس کی كُلِّهِ بِرَحُمَتِهِ وَ قُدُرَتِهِ اَللَّهُمَّ ارُزُقُنِي عَقُلاً كَامِلاً وَّ لُبًّا رَّاجِحًا وَّ قَلْبًا زَكِيًّا وَّ عَمَلاً كَثِيْرً رحمت و قدرت کے مانگا ہے ۔ اے معبود! مجھے عطا فرما عقل کامل بہترین دماغ با کیزہ قلب کثرت عمل اور بلند مز وَّ أَدَبًا بَارِعًا وَّاجُعَلُ ذَٰلِكَ كُلَّهُ لِي وَلا تَجْعَلُهُ عَلَيَّ بِرَحُمَةِكَ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِيهُ فَ اخلاق اور بیسب تعتیں میرے لیے مفید قرار دے اوران کوبا عث ضرر نہ بنا بواسطه اپنی رحمت کے اے سب سے زیا دورتم کرنے والے ۔ (بحوالهُ مفاتيح البحان)

حفرت امير علي كن يارت كى دعائ الوداع

حضرت امام جعفرصادق الطيع منقول ب، فرمايا كهجب سي امام كي زيارت كرچكواورالوداع كرما

چا ہوتو یوں کہو:

أَوُجَبُتَهُ لَهُ وَ يَسِّرُ لَنَا الْعَوُدَ إِلَيْهِ إِنْ شَآءَ اللَّهَ تَعَالَى

اور مجھے دوبارہ آنے کی تو فیق ارزانی فرما۔

حفرت امیر علی کی زیارات مخصوصہ جومعین اور مقرر اوقات کے ساتھ مخصوص ہیں

اور بدنیارات بھی بکثرت ہیں جن میں ہے ہم چنداہم زیارات کا تذکرہ کرتے ہیں:

(۱) چنانچ دھنرت امير الظيناؤى پہلى و مخصوص زيارت ہے جو كہ شب و روز مبعث النبي يعنى ١٧ رجب المرجب كى رات اوراس كے دن ميں پڑھى جاتى ہے۔اگر چهاس شب و روز ميں كئى زيارتيں منقول ہيں مگر بعيد نہيں ہے دن ميں پڑھنا اولى ہو جو رجب كے مشتر كها ممال ميں مذكور ہے جو يہ ہے:

﴿ ٱلْحَدَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي آشُهَدَنَا مَشُهَدَ اَوُلِيَ آئِهِ فِي رَجَبٍ وَ اَوُجَبَ عَلَيْنَا مِنُ حَقِّهِمُ حمدای کے لیے ہم نے ہمیں رجب میں اپنے اولیاء کی زیارت گاموں پر حاضر کیا اور ان کاحق ہم پر واجب کیا جو ہونا جا ہے

مَّا قَدُ وَجَبَ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدِ وِ الْمُنتَجَبِ وَ عَلَى اَوُصِيَآئِهِ الْحُجُبِ
قا اور رحمت خدا ہو عالی نب مُمَّ پر اور ان کے اوصاء پر جو صاحب جاب ہیں
اللَّهُ مَّ فَکَمَ اَشُهَدُ تَنَا مَشُهدَهُمُ فَانْجِزُ لَنَا مَوُعِدَهُمُ و اَوُرِدُنَا مَوُرِدَهُمُ غَيْرَ مُحَلَّئِينَ
السُّهُ مَّ فَكَمَ اَشُهدُ تَنَا مَشُهدَهُمُ فَانْجِزُ لَنَا مَوُعِدَهُمُ و اَوُرِدُنَا مَوُرِدَهُمُ غَيْرَ مُحَلَّئِينَ
السَمْعُودا پس جِيرَة نِهِ مِن ان كَى زيارت كَى آوَنْ قَلْ دَى ويدي جارے ان كا وعده پرا فرما اور جمیں ان كى جائے ودود پروارد فرما

عَنُ وَرُدٍ فِي دَارِ الْمُقَامَةِ وَ الْخُلُدِ وَ السَّلامُ عَلَيْكُمُ إِنِّي قَصَدُتُكُمُ وَاعْتَمَدُتُكُمُ بغیر کسی روک ٹوک کے جائے اتا مت اور خلد ہریں میں پہنچا دےاور سلام ہو آپ پر کہ میں آپ کی طرف آیا اور آپ پر بحروسہ کیا بِـمَسْئَلَتِـيُ وَ حَـاجَتِـيُ وَ هِيَ فَكَاكُ رَقَيَتِيُ مِنَ النَّارِ وَ الْمَقَرُّ مَعَكُمُ فِي دَارِ الْقَرَارِ مَا اپنے سوال اور حاجت کے لیے اور وہ یہ ہے کہ میری گردن آ گ ہے آ زا دہو اور میرا ٹھکانہ آپ کے ساتھ اور آپ کے نیکوکار شِيْعَتِكُمُ الْاَبُوَارِ وَ السَّلامُ عَلَيْكُمُ بِمَا صَبَرُتُمُ فَنِعُمَ عُقُبَى الدَّارِ أَنَا سَآئِلُكُمُ وَ امِلُكُمُ شیعوں کے ساتھ ہو اور سلام ہو آپ ہر کہ آپ نے صبر کیا پس آپ کا کیا ہی اچھا انجام ہے تمیں آپ کا سائل اور امیدوار ہوں فِيْ مَا ٓ إِلَيْكُمُ التَّفُويُضُ وَ عَلَيُكُمُ التَّعُويُضُ فَبَكُمُ يُجُبَرُ الْمَهِيُضُ وَ يُشُفَى الْمَريُضُ ان چیزوں کے لیے جو آپ کے اختیار میں ہیں اور یہ آپ کی ذمہ داری ہے آپ کے ذریع طلتنگی کی تلاقی اور پیار کوشفا ملق ہے وَمَا تَـزُدَادُ الْاَرُحَامُ وَمَا تُـغِيُـضُ إِنِّي بِسِرِّكُـمُ مُـؤُمِنٌ وَّ لِقَوْلِكُمُ مُّسَلِّمٌ وَّ عَلَى اللَّه اور جو کیچھ رحموں میں بڑھتا اور گھٹتا ہے ہے شک میں آپ کی قوت باطنی کا معتقداور آپ کے قول کوشکیم کرتا ہوں ممیں خدا کو آپ کی بِكُمُ مُّقُسِمٌ فِي رَجُعٍ يُ بِحَوَآئِجِي وَقَضَآئِهَا وَ إِحْضَآئِهَا وَ إِنْجَاحِهَا وَ إِبْرَاحِهَا قتم دیتا ہوں کہ وہ میر**ی** حاجق کر توجہ دے انہیں پورے کرے ان کا اجرا کرے کامیاب کرے یا نا کام کرے اور وَ بِشُئُونِيُ لَدَيْكُمُ وَ صَلاحِهَا وَالسَّلامُ عَلَيْكُمُ سَلامَ مُودِّع وَلَكُمُ حَوَ آئِجَهُ جو کام میں نے آپ کے سپرد کیے ہیں ان میں بہتری کرے اور سلام ہوآپ پر و داع کرنے والے کا سلام جوا پی حاجتیں آپ کے مُوُدع يَّسُئَلُ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهُ الْمَرُجعَ وَ سَعُيَلَةَ اللَّيُكُمُ غَيْرَ مُنْقَطِع وَّ اَنُ يَرُجعَذِي سپر دکر رہا ہے وہ خداے سوال کتا ہے کہ آپ کے ہاں واٹس آئے اور اس کا آپ کی بارگاہ میں آنا چھوٹے نہ پائے وہ جا ہتا ہے حَضُرَتِكُمْ خَيْرَ مَرُجِعِ إِلَى جَنَابٍ مُمُرعٍ وَّ خَفُضٍ مُّوسَّعٍ وَّ دَعَةٍ وَّ مَهَلِ پ کے حضور سے جائے تو پھر آپ کی حدمت میں حاضری دے تو یہ جگہ ہموار و سرسبز اور وسیع ہو چکی ہو کہ تا دم آخر وہ یہاں إلْـي حِيُـنِ الْاَجَـلِ وَ خَيُــرِ مَـصِيُــرِ وَّ مَـحَـلِّ فِــي النَّـعِيُـمِ الْاَزْلِ وَالْعَيُــش الْمُقُتَبَل اور اس کا انجام بخیر ہو ہمیشہ کی تعتیں نصیب ہوں آئدہ زندگی خوشگوار ہو وَ دَوَامِ الْاَكُلِ وَ شُـرُبِ السرَّحِيُـقِ وَ السَّلُسَلِ وَّ عَلَ وَّ نَهَـلَ لَاسَـاَمَ مِنُـهُ وَلا مَلَلَ وَ رَحُمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُـهُ وَ تَحِيَّاتُـهُ عَلَيْكُمْ حَتَّى الْعَوْدِ اِلْى حَضُرَتِكُمْ وَ الْفَوْزِ وَ رَحُمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُـهُ وَ تَحِيَّاتُـهُ عَلَيْكُمْ حَتَّى الْعَوْدِ اِلْى حَضُرَتِكُمْ وَ الْفَوْزِ اور فذاكى رحمت، بركي اور دود و ملام بو آپ پر جب ك كري دواره عاضر بارگاه بول آپ كى رجعت فِى كَرَّتِكُمْ وَالْحَشُورِ فِى زُمُورَتِكُمْ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهُ عَلَيْكُمْ وَ صَلَوَاتُهُ

چی حریب و المحسور یعی رسریب و رحمه المد و بر مان حدید و عدوات می اور ایس کی نوازشین مین ایس بر اور ای کی نوازشین مین کامیاب راون حشر مین آپ یک آروه مین الخون اور خدا کی رحمت اور برکتین مون آپ پر اور ای کی نوازشین

وَ تَجِيَّاتُهُ وَ هُوَ حَسُبُنَا وَ نِعُمَ الْوَكِيُلُ،

اورسلامتیاں اوروہ ہمارے لیے کافی اور پہترین کا رسازہے۔

زائر کوچاہیئے کہ بعدازاں دو رکعت نماززیارت پڑھے پھر جوچاہے وعاما کگے۔

(۲) عید غدیر کے دن کی مخصوص زیارت :۔اس منبرک دن میں پڑھی جانے والی کی زیارتیں کتب

زیارات میں ندکور ہیں جن میں سے ایک وہی زیارت ہے جوزیارت امین اللہ کے نام سے مشہورہے۔ دوسری وہ زیارت ہے جو حصرت امام علی نقی الطبی السے مروی ہے جو بہت طویل ہے جو السسلام عمالی رسول الله

خاتم النبيين ، عشروع بول ج و ﴿ والاهم يحر نون ، وتم ول ب

اور تیسری زیارت وہ آب جو ہروایت صفوان جمال حضرت امام جعفر صادق الظی ہے مروی ہے جو قریب وبعد یعنی نجف اشرف میں اور دوسر مے شہروں میں بھی پڑھی جا سکتی ہے۔ پس اگر آ دمی نجف اشرف میں قریب وبعید یعنی نجف اشرف میں اور دوسر مے شہروں میں بھی پڑھی جا سکتی ہے۔ پس اگر آ دمی نجف اشرف میں قبر مقدس کے بعد سور 6 قد راور قبر مقدس کے بعد سور 6 قد راور دوسری میں الحمد کے بعد سور 6 قد مراور دوسری میں الحمد کے بعد سور 6 قو قبر مطہر کی دوسری میں الحمد کے بعد سور 6 قد مراح کی طرف اشارہ کرکھی دور دراز شہر میں ہوتو قبر مطہر کی طرف اشارہ کرکے بیزیارت پڑھے:

﴿ ٱللّٰهُ مَّ صَلِّ عَلَى وَلِيِّكَ وَ أَخِى نَبِيَّكَ وَ وَزِيْرِهِ وَ حَبِيْبِهِ وَ خَلِيْلِهِ وَ مَوُضِع سِرِّهُ اے معبودا رحمت مازل فرمانے ولی پر جو تیرے نئی کے ہرادران کے وزیران کے دوست ان کے طلیل اوران کے رازدار ہیں

وَ خِيَـرَتِهِ مِنُ ٱسُرَتِهِ وَ وَصِيَّهِ وَ صَفُوتِهِ وَ خَالِصَتِهِ وَ اَمِيْنِهِ وَ وَلِيَّهِ وَ اَشُرَفِ عِتُرَتِهِ الَّذِيْنَ

وہ ان کے خاندان میں سے ان کے پیندیدہ ان کے وصی ان کے چنے ہوئے ان کے خاص و خالص ان کے امانتداران کے دوستدا راور ان

امَنُوا بِه وَ آبِى ذُرِيَّتِه وَ بَابِ حِكْمَتِه وَ النَّاطِقِ بِحُجَّتِه وَ الدَّاعِي إلى شَرِيْعَتِه وَ المُمَاضِيُ المَنُوا بِه وَ آبِي ذُرِيَّتِه وَ بَابِ حِكْمَتِه وَ النَّاطِقِ بِحُجَّتِه وَ الدَّاعِي إلى شَرِيْعَتِه وَ الْمَاضِي كَافِل مِنْ اللَّا عَلَى اللَّهُ اللَّ

********* عَلَى سُنَّتِهِ وَ خَلِيُفَتِهِ عَلْي أُمَّتِهِ سَيِّدِ الْمُسُلِمِيْنَ وَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ قَآئِدِ الْغُرِّ الْمُحَجِّلِيُنَ والے ان کی شریعت کی طرف بلانے والے ان کی سنت واضح پر عمل کرنے والے ان کی امت میں ان کے جانشین مسلمانوں کے سردار ٱفْضَلَ مِا صَلَّيْتَ عَلْمِ آحَدٍ مِّنُ خَلْقِكَ وَ أَصْفِيآ إِنِّكَ وَ أَوْصِيَآءِ ٱنْبِيَآ إِنَّ اورمومنوں کےامیر ہیں وہ چیکتے چیر ہوالوں کے پیشرو ہیں ان پرو ہ بہترین رصت فرما کہ جوتو نے اپٹی مخلوق میں سے کسی پراوراپنے برگز میروں إِيِّيْ ٱشْهَادُ ٱنَّاهُ قَادُ بَلَّغَ عَنُ نَّبِيِّكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ مَا حُمِّلَ وَ رَعْي مَا اسُتُحْفِظَ میں سے اوراپنے نبیوں کے اوصیاء میں کسی پر کی ہوا ہاللہ ممیں گواہ ہوں کہ انہوں نے وہ احکام لوگوں تک پہنچائے جوتیرے نبی سلی اللہ علیہ وَ حَفِظَ مَا اسْتَوُدِ عَ وَ حَلَّلَ حَلالَكَ وَ حَرَّمَ حَرَامَكَ وَ أَقَامَ أَخُكَامَكَ وَ دَعَآ وآلبہ سے حاصل کیےوہ میا درکھا جو یا درکھنا جا ہے تھا جو کچھان کے بیر دہوا اس کی گلمہداری کی تیرے حلال کو حلال اور تیرے حمام کوحمام قرار سَبِيُـلِكَ وَ وَالْأَ اَوُلِيَـآنَكَ وَ عَادَى اَعْدَآنَكَ وَ جَاهَدَ النَّاكِثِيْنَ عَنْ سَبِيُلِكَ وَ الْقَاسِ ویا اورتیرے احکام جاری کیے تیری را و کی طرف بلاتے رہے تیرے دوستوں سے مجبت رکھی اور تیرے دشمنوں کے دشمن رہے انہوں نے تیری وَ الْمَارِقِيُنَ عَنُ اَمُلِكُ إِصَابِلُ مُنْ أَمُلِكُ مُلْكِ اللَّهِ لَوُمَ راہ چھوڑ جانے والوں تفرقہ ڈالنے والوں اور تیرے تھم کونہ جھنے والوں کے ساتھ عبر اور خیر خواہی ہے جہاد کیا کہ پڑھتے تو چکھے نہ ہنتے تھے خدا لْأَئِسِم حَتَّسِى بَسلَسِغَ فِسيُ ذَٰلِكَ الرَّضَا وَ سَسلُسمَ الَيُكَ الْفَسضَاءَ وَ عَبَسهَ کے معاملے میں وہ کسی کی ملامت کی پروائییں کرتے تھے حتی کہ ای عمل میں تیری رضا تک پہنچے اور تیرے فیلے کو قبول کر لیا انہوں نے تیری مُخُلِصًا وَّ نَصَحَ لَكَ مُجْتَهِدًا حَتَّى اتَّهُ الْيَقِيُنُ فَقَبَضْتَالِلَيْكَ شَهِيُدًا سَعِيُدًا وَّلِيًّ خالص عبادت کی اور تیری خاطر نصیحت کرتے رہے جی کدان کی شہادت واقع ہوئی تو نے ان کی جان قبض کر لی جب وہ شہید نیک بخت ولی تَقِيًّا رَّضِيًّا زَكِيًّا هَادِيًا مَّهُدِيًّا اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّد وَّ عَلَيْهِ اَفُضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلَى اَحَدٍ ير بيز گار ببنديده بإكباز ربير و ربنما اوربدايت ما فتر تھا كالله رحمت فرما حضرت محمر پر اوران (على ً) پر وه بهترين رحمت جوتونے اپنے مِّنُ ٱلْبِينَآؤِكَ وَ أَصْفِيَآؤِكَ يَا رَبُّ الْعَالَمِ أَوْلَ كَابِ الاقبال الديد ابن طاؤوس وزاد المعادمجلس وغيره) نبیوں اوراہے برگز میروں میں سے کسی پر کی ہوا ہے جہا نوں کے بروردگار۔ ا ربح الاول کے موقع پر حفرت امیر اللی کی مخصوص زیارت : ۔ یہ وہ زیارت ب جو

حضرت امام جعفرصا دق الطبيع نے اپنے جلیل القدر صحابی محمد بن مسلم تعفی کوتعلیم دی تھی کہ جب حضرت امیر الطبیع ا کی زیارت کرنا چاہوتو عنسل کرو۔اور صاف ستھرا لباس زیب بدن کرواور خوشبولگاؤ (جو کہ ہر معصوم کی زیارت کے دفت مستحسن ہے سوائے سیدالشہد اٹنی زیارت کے) اور سکینہ ووقا رکے ساتھ ساتھ چلتے ہوئے روضۂ اقد س کے درواز دیر پہنچو جہاں سے ضرح مقدس نظر آتی ہے تو روبقبلہ کھڑے ہو پہلے تمیں مرتبہ ﴿اللّٰهُ الْحُبَوُ ﴾ کہوبعد ازاں بیرزیارت پڑھو:

﴿ اَلسَّالاُمُ عَلَى رَسُولِ اللّٰهِ اَلسَّالاُمُ عَلَى خِيرَةِ اللّٰهِ اَلسَّالاُمُ عَلَى الْبَشيْرِ النَّذِيْرِ السِّرَاجِ

علم مو خدا كے ربول پر علم مو خدا كے في ہوئ پر علم مو فو شخرى ديے دُوانَ والے پر جو نوانَى

الْسُمْنِيْدِ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهُ اَلسَّلاُمُ عَلَى الطّٰهُ لِ الطَّاهِرِ السَّلاُمُ عَلَى الْعَلَمِ الزَّاهِرِ

إلْ عُنْ كَى رَمْت مو اور ال كى بركتى علم مو باك و بايزه پر علم مو تِكَ موئ پرتم پر السَّلامُ عَلَى الْمُسَلِّمُ عَلَى الْقَاسِمِ مُحَمَّدٍ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهُ السَّلامُ عَلَى الْمَسْلِمُ عَلَى الْمَسْلِمُ عَلَى اللّهِ السَّلامُ عَلَى اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ الصَّالِحِيْنَ السَّلامُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ السَّلامُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ الصَّالِحِيْنَ السَّلامُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ السَّلامُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ الصَّالِحِيْنَ السَّلامُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ السَّالِحُونَ اللّهِ الصَّالِحِيْنَ السَّلامُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ الصَّالِحِيْنَ السَّلامُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ السَّالِحُونَ اللّهِ الصَّالِحِيْنَ السَّلامُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ الصَّالِحِيْنَ السَّلامُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ السَّالِحُونَ اللّهِ الصَّالِحِيْنَ اللّهِ الصَّالِحِيْنَ السَّلامُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ الصَّالِحِيْنَ اللّهِ الصَّالِحِيْنَ السَّالامُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ الصَّالِحِيْنَ اللهِ الصّالِحِيْنَ اللهُ الصَّالِحِيْنَ اللهُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ الصَّالِحِيْنَ اللهُ الصَّالِحِيْنَ اللهُ عَلَى مَلَاثِكَةِ اللّهِ السَّالِحِيْنَ اللهُ الصَّالِحِيْنَ اللّهِ الصَّالِحَةِ اللّهِ السَلَامُ السَّالِحِيْنَ اللهُ الصَّالِحِيْنَ السَلَامُ السَّالِ السَلَامُ عَلَى مَلْكَ السَلَامُ السَلَامُ السَلَامُ عَلَى اللّهِ السَلَامُ عَلَى اللّهُ السَلْمُ اللّهِ السَلَامُ السَلَامُ اللّهِ السَلَامُ السَلْمُ الللّهِ السَلَامُ السَلَامُ اللّهُ السَلْمُ اللّهُ السَلّمُ اللّهُ السَلَامُ اللللللهِ السَلَامُ السَلَامُ اللهُ الصَّلَامِ السَلَامُ الللهُ السَلَامُ اللهُ السَلَامُ اللّهُ السَلَامُ الللهُ السَلَامُ اللللهُ السَلَامُ الللهُ السَلَمُ اللهُ السَلَمُ اللللهُ اللهُ اللهُ السَلَمُ الللهُ السُلَمُ اللهُ السَلَمُ اللهُ السَلَمُ الللهُ السَلَمُ اللهُ السَلَمُ اللهُ

ِّهِ ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا خَالِصَ الْآخِلَةِ ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا وَالِدَ الْآئِمَةِ الْاُمَنَآءِ ٱلسَّلا کی زینت سلام ہو آپ پر اے دوستان خدا میں خالص سلام ہو آپ پر اے امائتدار اماموں کے باپ سلام ہو آپ عَلَيُكَ يَا صَاحِبَ الْحَوُضِ وَ حَامِلَ اللِّوآءِ ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا قَسِيُمَ الْجَنَّةِ وَ لَظْ ر اے ساتی حوض کور اور لواء الحمد کے اٹھانے والے سلام ہو آپ ر اے جنت و چہم میں سیجنے والے ٱلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا مَنُ شُرِّفَتُ بِهِ مَكَّةً وَ مِنْي ٱلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا بَحُرَ الْعُلُومُ وَ كَنَفَ سلام ہو آپ پر اے وہ جس سے مکہ و ملی نے عزت بائی سلام ہو آپ پر اے علوم کے سمندر اور محاجوں کی الْفُهَرَ آءِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا مَنُ وُّلِدَ فِي الْكُعْبَةِ وَ زُوِّ جَ فِي السَّمَآءِ بِسَيَّدَةِ النِّسَآءِ امیدگاہ سلام ہو آپ ہر اے وہ جو کیجے میں پیدا ہوا جس کا آسان میں سیدہ زہرا ہے لکاح ہوا شُهُوُ دُهَا الْمَلَاثِكَةُ الْاصُفِيَآءُ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا مِصْبَاحَ الضِّيَآءِ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا مَ اور منتخب فرشتے اس میں گواہ بنے سلام ہو آپ پر اے روشنی دینے والے جراغ سلام ہو آپ پر اے وہ جے خَصَّهُ النَّبِيُّ بِجَزِيْلِ الْحِيَآءِ السَّالامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ بَاتَ عَلَى فِرَاشِ خَاتَمِ الْانْبِيَآءِ وَ وَقَا پینمبر نے بڑی عطا کے لیے مخصوص فرمایا سلام ہو آپ پر آے وہ جو نبیوں میں آخری کے بسر پر سویا اور اپی جان بِـنَـفُسِـهٖ شَـرَّ الْآعُـدَآءِ اَلسَّالامُ عَلَيْكَ يَا مَنُ رُّذَّتُ لَهُ الشَّمُسُ فَسَامِي شَمُعُوْنَ الطَّفَ کے عوض انہیں ڈھنوں سے بچایا سلام ہو آپ پر اے وہ جس کے لیے سورج پلیٹ آیا تو وہ شمعون ٹانی قرار پایا ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا مَنُ ٱنَّجَى اللَّهُ سَفِيْنَةَ نُوْحِ باسُمِهِ وَاسُمِ آخِيُهِ حَيْثُ الْتَطَمَ الْمَآءُ سلام ہو آپ ہر اے وہ کہ خدائے کھتی نوح کو اس کے نام اور اس کے بھائی کے نام پر بچایا جب وہ گرداب میں حَوْلَهَا وَ طَمْنِي ٱلسَّلَامُ عَلَيُكَ يَا مَنُ تَابَ اللَّهُ بِهِ وَ بِآخِيُهِ عَلَى ادَمِ إِذُ غَواى ٱلسَّلَامُ گھری ڈول رہی تھی سلام ہوآ پ پراےوہ کہ خدانے اس کے اوراس کے بھائی کے نام پر آ دم کی تو بہ قبول کی جب وہ بہک سکے سلام ہو عَـلَيُكَ يَـا فُـلُكَ النَّجَاةِ الَّذِي مَنُ رَّكِبَهُ نَجْي وَمَنُ تَاَّخُو َ عَنْهُ هَوْي اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا آپ رہے اے وہ کشتی نجات کہ جو اس رہے سوار کی گیا اور جو ہٹا رہا وہ بلاک ہوگیا سلام ہو آپ رہر اے وہ جس نے خَاطَبَ الشُّعُبَانَ و ذِئُبَ الْفَلاٰ اَلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَآ اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَوَكَاتُهُ

ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللَّهِ عَلَى مَنْ كَفَرَ وَ آنَابَ ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ يَآ اِمَامَ ذُوى الْالْبَاد سلام ہو آپ ہر اے خدا کی جمت اس پر جس نے کفر کیا اور بلیك آیا سلام ہو آپ ہر اے صاحبان عمل کے امام اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا مَعُدِنَ الْحِكُمَةِ وَ فَصُلَ الْخِطَابِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا مَنُ عِنْدَهُ عِلْهُ سلام ہو آپ ہر اے علم و تھمت اور فیصلہ دینے کے فزینہ دار سلام ہو آپ ہر اے وہ جس کے باس علم الْكِتَابِ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا مِيُزَانَ يَوُم الْحِسَابِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا فَاصِلَ الْحُكْم النَّاطِقُ کتاب ہے سلام ہو آپ رہا اے ایم حساب میں میزانِ عمل سلام ہو آپ رہا اے واضح تر اور بہترین فیصلہ بالصَّوَابِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا أَيُّهَا الْمُتَصَدِّقُ بِالْخَاتَمِ فِي الْمِحْرَابِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا مَ دیے والے سلام ہو آپ پر کہ آپ نے محراب عبادت میں انکشری صدقہ کی سلام ہو آپ پر اے وہ جس کے كَفَى اللَّهُ الْمُوِّ مِنِيْنَ الْقِتَالَ بِهِ يَوْمَ الْآخِزَابِ اَلسَّلاَّمُ عَلَيْكَ يَا مَنُ اَخُلَصَ لِلَّهِ الْوَحْدَانِيَّةِ ڈر لیع خدا نے مومنوں کو احزاب کے دن مدد دی سلام ہو آپ پر اے وہ جس نے خلوص سے خدا کو ایک مانا اور وَ آنَابَ ٱلسَّلامُ عَلَيْكِ يَا قَاتِلَ خَيْبَرَ وَ قَالِعَ الْبَابِ ٱلسَّلامُ عَلَيْكِ يَا مَنُ دَعَاهُ خَيْرُ الْآ متوجہ رہے سلام ہوآپ پراے الل خیبر کو قبل کرنے اور دروازہ اکھا رُنے والے سلام ہوآپ پرائے وہ جے بہترین خلائق نے اپنے بستر لِلْمَبِيُتِ عَلْي فِرَاشِهِ فَاسُلَمَ نَفُسَهُ لِلْمَنِيَّةِ وَ اَجَابَ اَلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا مَنُ لَهُ طُوْبِي وَ ر سونے کے لیے بلایا تو اس نے تھم مانا اور خود کوموت کے مند میں دے دیا سلام ہو آپ ہراے وہ جس کے لیے خوشخبری اور حُسُنُ مَاٰبٍ وَّ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ عِصْمَةِ الدِّيْنِ وَ يَا سَيَّدَ بہترین مقام ہے خدا کی رحمت ہے اور اس کی برکات ہو آپ پر اے دین کی حفاظت کے ذمہ دمہ اور سرداروں کے السَّادَاتِ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا صَاحِبَ الْمُعُجزَاتِ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا مَنُ نُزَلَتُ فِي فَضُ سروار سلام ہو آپ ہر اے معجروں کے مالک سلام ہو آپ ہر اے وہ جس کی فضیلت میں سورہ عادیات سُوُرَةُ الْعَادِيَاتِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا مَنُ كُتِبَ اسْمُهُ فِي السَّمَآءِ عَلَى السُّرَادِقَاتِ اَلسَّلاٰ نازل ہوا سلام ہو آپ ہر اے وہ جس کا نام آسانوں میں واقع خیام ہر لکھا ہوا ہے سلام ہو عَـلَيُكَ يَـا مُـظُهِرَ الْعَجَآئِبِ وَالْإِيَاتِ اَلسَّالَامُ عَلَيُكَ يَآ اَمِيْرَ الْغَزَوَاتِ اَلسَّالَامُ عَلَيُكَ

بِمَا غَبَرَ وَ بِمَا هُوَاتِ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا مُخَاطِبَ ذِئْبِ الْفَلَوَاتِ اَلسَّلامُ عَلَيُك خبر دینے والے اس کی جو ہو چکا اور جو ہوگا سلام ہو آپ پر اے بیاباتی مجڑ یے سے خطاب کرنے والے سلام ہو آپ پر اے خَاتِمَ الْحَطٰي وَ مُبَيِّنَ الْمُشْكِلاتِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ عَجِبَتُ مِنْ حَمَلاتِه فِي الْوَ غَا چھروں پرنفش کرنے والے اور مشکلیں حل کر دینے والے سلام ہوآپ پر اے وہ کہ جنگ میں جس کے حملوں ہے آسانوں کے فرشتے مَلْأِتْكُةُ السَّمْوَاتِ اَلسَّالُامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ نَّاجَى الرَّسُوْلَ فَقَدَّمَ بَيْنَ يَدَى نَجُواهُ الصَّدَقَاتِ جیران ہوئے سلام ہو آپ پر اے وہ جس نے حضرت رسول سے سر کوشی کی اور سر کوشی کے وقت صدقات ویش کیے اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا وَ اللهِ الْاَئِمَّةِ الْبَوَرَةِ السَّادَاتِ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَوَ كَاتُهُ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ سلام ہو آپ ہر اے ان اماموں کے باپ جو نیکوکار سروار ہیں خدا کی رحمت ہو اور اس کی برکات سلام ہو آپ ہر اے تَىالِيَ الْمَبُعُوثِ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا وَارتَ عِلْم خَيْرَ مَوْرُوثِ وَّ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَوَكَاتُهُ کے ورثہ دار جو بہترین ورثہ ہے خدا کی رحمت ہو اور اس کی برکات ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْوَصِيِّنَ ٱلسَّلامُ عَلَيُكِ يَهَ إِمَامَ الْمُتَّقِينَ ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا غِيَا اللَّهُ سلام ہو آپ پر اے اوصیاء کے سردار سلام ہو آپ پر آے پر بیزگاروں کے امام سلام ہو آپ پر اے دکھی لوگوں الْـمَكُرُ وُبِيُـنَ السَّلامُ عَلَيُكَ يَـا عِصْـمَةَ الْمُؤْمِنِيُنَ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا مُظُهرَ الْبَرَ اهِيُر کے فریاد ریں سلام ہو آپ پر اے مومنوں کے گلمبدار سلام ہو آپ پر اے دلیل و برہان ظاہر کرنے والے اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا طُه وَ يُسَ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا حَبُلَ اللَّهِ الْمَتِيْنَ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا سلام ہو آپ رہ اے طاہا اور ماسین سلام ہو آپ رہ اے اللہ کی مضبوط رتی سلام ہو آپ رہ اے وہ جس تَـصَـدُقَ فِيُ صَـلُوتِهِ بِخَاتِمِهِ عَلَى الْمِسُكِيُنِ ٱلسَّلَامُ عَلَيُكَ يَا قَالِعَ الصَّخَرَةِ عَنُ فَ نے حالت نماز میں اپی انکشتری ایک مسکین کو صدقہ میں دی سلام ہو آپ رہر اے کنوئیں رہر سے پھر کی سل بٹا کر الْقَلِيْبِ وَ مُظُهِرَ الْمَآءِ الْمَعِيْنِ ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا عَيْنَ اللَّهِ النَّاظِرَةَ وَ يَدَهُ الْبَاسِطَةَ تحدثا بیٹھا بائی کھولتے والے سلام ہو آپ ہر اے خدا کی دیکھنے وائی آگلے اس کا کھلا ہوا ہاتھ اور اس کی ساری انَــهُ الْـمُـعَبّـرَ عَـنُــهُ فِـيُ بَـرِيَّتِــةِ اَجُمَعِيْنَ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا وَارِتَ عِلْم النّبيّيْنَ

وَ مُسْتُودَ وَعَلِم الْأَوُّ لِيُنَ وَالْأَحْدِيْنَ وَ صَاحِبَ لَوَ آءِ الْحَمْدِ وَ سَاقِيَ أَوْلِيَآئِهِ مِنْ حَوْض پہلوں پیچھلوں کے علم کے امانتدار لواء حمد کے اٹھانے والے اور آخری پیٹیبر کے حوض کوڑ سے ان کے دوستوں مِ النَّبِيِّيْنَ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا يَعُسُوْ بَ الدِّيْنِ وَ قَائِدَ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ وَ وَالِدَ الْاَئِمَّ لرنے والے سلام ہو آپ رہا ہے دین کے سروار چیکتے چہروں والوں کے پیشوا اور بہند کیے ہوئے اماموں کے باپ الْـمَـرُضِيّيُـنَ وَ رَحُـمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ اَلسَّلامُ عَلَى اسْمِ اللَّهِ الرَّضِيّ وَ وَجُهِهِ الْمُضِيئ خدا کی رحمت ہو اور اس کی برکات سلام ہو خدا کے پہندیوہ نام پر اس کے تابندہ جلوے وَ جَنُبِهِ الْقَوِيِّ وَ صِرَاطِهِ السَّوِيِّ السَّلامُ عَلَى الْإِمَامِ التَّقِيِّ الْمُخْلِصِ الصَّفِيّ السَّلامُ س کے توانا طرفدار اور اس کے راہ راست پر سلام سلام ہو اس امام پر جو پرہیزگار اخلاص کار پیندیدہ ہے سلام ہو عَـلَى الْكُوْكَبِ الدُّرِّيِّ اَلسَّلامُ عَلَى الْإِمَامِ اَبِي الْحَسَنِ عَلِيِّ وَّ رَحُمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ چکتے ہوئے ستارے پر سلام ہو ابوالحسٰ امام علی مرتفعٰی پر خدا کی رحمت ہو اور اس کی برکات للهُ عَـلـي آئِـمَّةِ الْهُـلِي وَ مَصَابِيَحِ الدُّجي وَ أَعُلامِ الثُّقلي وَ مَنَارِ الْهُداي وَ ذُوي سلام ہو ہدایت یافتہ اماموں پر جو تاریکی کے جراغ پرہیزگاری کے نشان ہدایت کے بینار صاحبان عقل و خرد مخلوق النَّهْ فِي وَكُهُفِ الْوَرِي وَ الْعُرُورِةِ الْوُثُقْلِي وَ الْحُجَّةِ عَلَى اَهُلِ الدُّنْيَا وَ رَحُمَةُ اللَّهِ اور دنیا والول پر خدا کی حجتول پر سلام خدا کی رحمت ہو اور وَ بَـرَكَـاتُـهُ اَلسَّلاٰمُ عَـلـي نُـوُرِ الْاَنُوارِ وَ حُجَّةِ الْجَبَّارِ وَ وَالِدِ الْاَئِمَّةِ الْاَطْهَارِ وَ قَسِيبُم ں کی برکات سلام ہو انوار کے نور پر جو خدا نے جبار کی ججت پاک اماموں کا باپ الْجَنَّةِ وَ النَّارِ الْمُخْبِرِ عَنِ الْأَثَارِ الْمُدَمِّرِ عَلَى الْكُفَّارِ مُسْتَنُقِذِ الشِّيعَةِ الْمُخْلِصِينَ مِنُ جنت و جہنم میں بھیجے والا فتریم خبریں دینے والا کافروں کو ہلاک کرنے والا اور خالص و مخلص شیعوں کو گمنا ہوں کے یو ج<u>و تل</u>ے سے عَظِيُهِم الْاَوْزَارِ اَلسَّلامُ عَلَى الْمَخُصُوصِ بالطَّاهِرَةِ التَّقِيَّةِ ابْنَةِ الْمُخْتَارِ الْمَوْلُودِ فِي نکالتے والا ہے سلام ہو اس پر جو خاص کیا گیا یا گیزہ باتقویٰ وختر نبی کے لیے جو پیدا ہوا پردوں والے الْبَيْتِ ذِي الْاَسْتَارِ الْمُزَوَّ جِ فِي السَّمَآءِ بِالْبَرَّةِ الطَّاهِرَةِ الرَّضِيَّةِ الْمَرُضِيَّةِ وَالِدَةِ الْاَئِمَةِ



سلام ہوآپ پرحدا کی رحمت ہواوراس کی برکات۔

اب خود کو قبر شریف سے لپٹائے اسے ہوسہ دے اور کے: ﴿ اَشْهَدُ اَذَّکَ تَسْمَعُ کَلاْمِی وَ تَشْهَدُ اَ اَللَّهِ مَعْ اَللَّهِ مَنْ عَلاَمِی وَ تَشْهَدُ اَ اَللَّهِ مِنْ اَللَّهِ مِنْ عَلَامِی وَ تَشْهَدُ اَ اَللَّهُ مِنْ اللَّهِ مِنْ عَلَامِی وَ تَشْهَدُ اَ اَللَّهُ مِنْ اللَّهِ مِنْ عَلَامِی وَ مَنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللْمُعُلِمُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللْمُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ الللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ الللّهُ مِنْ اللللْمُ اللّهُ مِنْ الللّهُ مِنْ الللّهُ مِنْ الللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللللْمُ الللْمُ اللّهُ مِنْ اللْمُعُمِي مِنْ الل

مَـقَـامِـيُ وَ اَشُهَـدُ لَكَـيَـا وَلِـيَّ اللَّهِ بِالْبَلاغِ وَالْاَدَآءِ يَا مَوُلاٰىَ يَا حُجَّمَةَ اللَّهِ يَآ اَمِيُنَ اللَّهِ کی جگہ در کیستے ہیں اور آپ کا گوا ہ ہوں اے ولی خدا کر آپ نے پیغام دیا اور فرض نبھایا اے میرے آتا اے ججت خدا اے خدا کے ایمن يَا وَلِيَّ اللَّهِ إِنَّ بَيُنِي وَ بَيُنَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ذُنُوبًا قَدُ اَثْقَلَتُ ظَهُرِي وَ مَنَعَتُنِي مِنَ الرُّقَادِ اے خدا کے دوست بے ٹنگ میرے اور خدا کے درمیان میرے گنا ہ حائل ہیں جن کا بوجھ میری کمریر ہے انہوں نے میری نبیکداڑا دی ہے وَ ذِكُرُهَا يُقَلُقِلُ اَحُشَائِيُ وَ قَدُ هَرَبُتُ اِلَى اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ وَ اِلَيُكَ فَبِحَقّ مَن ائْتَمَنَّكَ عَا ان کی یا دے میرا دل تھبراتا ہےاور میں بھاگ کے آیا ہوں خدائے عزوجل کی طرف اور آپ کی طرف پس بواسطاس کے جس نے آپ کو سِرِّهِ وَ اسْتَرُعَاكَ اَمُرَ خَلْقِهِ وَ قَرَنَ طَاعَةَكَ بِطَاعَتِهِ وَ مُوَالِأَتَكَ بِمُوَالِأَتِهِ خُلْإَلِكُي ا بنا راز دار بنایا اپن مخلوق کا معاملہ آپ کوسونیا اس نے آپ کی اطاعت اپنی اطاعت کے ساتھاور آپ کی محبت اپنی محبت کے ساتھ رکھی آپ اللُّهِ شَفِينُعًا وَّ مِنَ النَّارِ مُجِيُرًا وَّ عَلَى الدَّهُو ظَهِيُرًا ﴾ - پي بارديَّر خود كوتير مبارك _ لپائ حداکے ہاں میرے سفارش بنیں جہنم سے پناہ دیں اور حالات میں میرے مددگار ہوں۔ ے بور دے اور کے: ﴿ مَهَا وَإِلَى اللَّهِ مَا جُرجَهَ اللَّهِ مَا بَنَابَ حِطَّةَ اللَّهِ وَلِيُّكَ وَ زَآئِرُكَ عُ آے دوست خدا اے جمت خدا آے خدا کے باب حکد! آپ کا محب آپ کا زارُ وَالْلَائِـذُ بِـقَبُرِكَ وَالنَّازِلُ بِفِنَآئِكَ وَ الْمُنِينِخُ رَحُلَهُ فِي جِوَارِكَ يَسُئَلُكَ اَنُ تَشْلِقَعَ لَهُ ﴿ آپ کی قبر کی پناہ لینے والا آپ کی درگاہ پر آنے والا اور آپ کے جوارش آرہے والا سوال کتا ہے کہ آپ خدا کے ہاں اس کی سفارش اللَّه فِيُ قَضَآءِ حَاجَتِهِ وَ نُجُحِ طَلِبَتِهِ فِي الدُّنْيَا وَ الْأَخِرَةِ فَاِنَّ لَكَ عِنْدَ اللَّهِ الْجَاهَ الْعَظِيْمَ کریں کہ اس کی حاجت پوری ہو اور مقصد حاصل ہو دنیا اور آخرت میں کیونکہ خدا کے حضور آپ کی بڑی عزت ہے اور وَ الشُّفَاعَةَ الْمَقُبُولَةَ فَاجُعَلْنِييُ يَا مَوُلاٰيَ مِنْ هَمِّكَ وَ اَدُخِلْنِيُ فِي حِزُبِكَ آپ کی شفاعت قبول شدہ ہے کہل قرار دیں اے میرے آتا مجھے اپنے زیر نگاہ اور واطل کریں اپنے گروہ میں وَالسَّلاٰمُ عَلَيُكَ وَ عَلَى ضَجِيُعَيُكَ ادَمَ وَ نُوْحٍ وَّ السَّلاٰمُ عَلَيُكَ وَ عَلَى وَلَدَيُكَ الْحَ سلام ہو آپ پر اور آپ کے ہر دو ساتھیوں آدم ہو نوخ پر سلام ہو آپ پر اور آپ کے ہر دو فرزندوں حسن ہو وَ الْحُسَيُنِ وَ عَلَى الْاَئِمَّةِ الطَّاهِرِيْنَ مِنْ ذُرَيَّةِكَ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُا صین یر اور سلام ہو آپ کی اولاد میں سے باک اماموں پر خدا کی رحمت ہو اور اس کی برکات۔

اس کے بعد چھرکعت نماز زیارت پڑھویعنی دورکعت حضرت امیر الظیمائی زیارت کے لیے اور دو دو

رکعت حضرت آ دم ونوح علیماالسلام کی زیارت کے لیے۔ (شیخ مفید، ابن طاؤوں ، مجلسی ، فتی وغیرهم)

(۴) مروی ہے کہ جس دن حضرت امیر الظیما شہید ہوئے اور لوگ رونے دھونے میں مشغول تھے تو ایک

بزرگواررد تے ہوئے اور ﴿ إِنَّا إِلَيْهِ وَ إِنَّا إِلَيْهِ وَ اِبِّا إِلَيْهِ وَ اِبْدِهِ مِنْ اللَّهِ وَ اِبْدِهِ وَ اِبْدُهِ وَ اِبْدُهِ وَ اِبْدِهِ وَ اِبْدُهِ وَ اِبْدِهِ وَ اِبْدِهِ وَ اِبْدِهِ وَ اِبْدِهِ وَ اِبْدِهِ وَ اِبْدِهِ وَ اِبْدُولِ وَ اِبْدِهِ وَ اِبْدُهُ وَ اِبْدُولُولُ وَ اِبْدُهُ وَ اِبْدُهُ وَ اِبْدُهُ وَ اِبْدُولُولُ وَ اِبْدُولُولُ وَ اِبْدُولُولُولُ وَ اِبْدُولُ وَ وَ اِبْدُولُولُ وَ وَ وَابْدُولُولُ وَ وَابْدُولُولُولُ وَ وَابْدُولُولُ وَ وَابْدُولُولُولُولُ وَ وَابْدُولُولُولُولُ وَ وَابْدُولُولُ وَابْدُولُولُولُ وَ وَابْدُولُولُ وَالْمُعِلَّ وَالْمُعِلَّ وَالْمُعِلَّ وَالْمُعِلَّ وَ وَالْمُعِلَّ وَالْمُعِلِّ وَالْمُعِلِّ وَالْمُعِلِّ وَالْمُعِلَّ وَ وَالْمُعِلَّ وَالْمُعِلَّ وَالْمُعِلَّ وَالْمُعِلَّ وَالْمُعِلَّ وَالْمُعِلَّ وَالْمُعِلَّ وَالْمُعِلَّ وَالْمُعِلَّ وَالْمُولِ وَالْمُولِيُولُ وَالْمُولِيُولُ وَالْمُولِيُولُ وَالْمُولِ وَالْمُ وَالْمُولِ وَالْمُولِيُولُ وَالْمُولِيُولُ وَالْمُولِيُعِلَ

﴿ رَحِهَ كَ اللّٰهُ يَا اَبَ الْحَسَنِ كُنْتَ اَوَلَ الْقَوْمَ اِسُلاْهًا وَ اَخُلَصَهُمُ إِيْمَانًا اللهَ وَ اللهُ اللهُ وَ اللهُ اللهُ

وَ اَشَدُّهُمُ يَقِينًا وَ اَخَوُفَهُمُ لِلَّهِ،

زیا دہ بخت!اورسب سے زیا دہ خوف حدار کھے والے تھے۔

اس میم کے حضرت امیر الظیمائے بہت سے فضائل و مناقب بیان کے اور حاضرین کورلایا۔اس کے بعد غائب ہوگئے۔علامہ مجلسی بھارالافوار میں فرمائے ہیں کہ کتاب اکال اللہ میں خاہر ہوتا ہے کہ وہ ہزرگ حضرت خضر الظیمائی تھے چنانچ بعض علماءنے انہی گلمات کے ساتھ حضرت امیر الظیمائی شہا دت کے دن آپ کی زیارت پڑھنے کو مشتحین قرار دیا ہے۔(مفاتے الجنان و کتاب الدعاء)

مبحد کوفہ ، مبحد سہلہ ومبحد صعصعہ وغیرہ کی عظمت اور ان مساجد میں عبادت کرنے کی فضیلت

مسجد کوفہ دنیا کے ان چا رمقد س مقامات میں ہے ایک مقام ہے جہاں مسافر کونماز کے قصر اور تمام پڑھنے کا حق حاصل ہے اور ہاقی تین مقامات سے ہیں: (۱) مسجد الحرام، (۲) مسجد نبوی، (۳) اور حارشینی ۔ (متفق علیہ) مسجد کوفہ کوفہ کی فضیلت میں بہت کی روایات وار دہوئی ہیں۔ بعض میں وار دہ کہ مسجد کوفہ وہ عظیم الشان مسجد ہے جہاں ایک ہزار نبی اور ایک ہزار وصی نے نماز پڑھی ہے۔ خود پیغیم اسلام میں نے شب معراج یہاں سے گزرتے ہوئے خدا ہے اجازت حاصل کر کے دور کعت نماز پڑھی تھی۔ یہاں ایک نماز فریفنہ پڑھنا ایک ہزار نمازوں کے ہرا ہرے۔ اور یہ مسجد جنت کے نماز پڑھی تھی۔ یہاں ایک نماز فریفنہ پڑھنا ایک ہزار کے دور کعت نماز پڑھی تھی۔ یہاں ایک نماز فریفنہ پڑھنا ایک ہزار

}**********************************

باغوں میں سے ایک باغ ہے۔

یہ سب کچھ بجائے مگراس کے اٹمال کے سلسلہ میں جو تر تنیب چلتی ہے کہ اس مسجد میں وافل ہوتے وقت یہ دعاپڑھی جائے ، چو تھے ستون کے پاس یہ دعا اور ساتویں ستون کے پاس یم کمل کیا جائے ۔ دی گاہ الفضا کے پاس یم کمل کیا جائے ، اور بیت الطشت وغیرہ کے پاس یوں کیا جائے ۔ بعض علماء نے صراحت کی ہے کہ اس کے بارے میں کوئی حدیث وارد نہیں ہوئی ۔ (ملاحظہ ہو: بحار الانوار اور فاضل شیر ازی کی کتاب الدعا و و الن کے بارے میں کوئی حدیث وارد نہیں ہوئی ۔ (ملاحظہ ہو: بحار الانوار اور فاضل شیر ازی کی کتاب الدعا و و الزیارہ) لہذا ہم بھی وہ اعمال ذکر کرنے کی ضرورت محسول نہیں کرتے جو انکہ طاہرین علیم السلام نے نہیں بتائے ہیں البتہ یہ عرض کریں گے کہ اس مقدس مقام پر جس قد رہو سکے واجبی اور سنتی نمازیں پڑھی جا کیں ۔ قر آن خوانی کی جائے اور بکشرے دعاواست خفار کی جائے اور لیجا اور کھنے ہوا گئے۔

مساجد میں وافل ہونے کی وعا

ہاں البتہ عام مساجد میں وا<mark>خل ہونے کی جودعا کیں منقول ہیں وہ بیال بھی</mark> پڑھی جا کیں تو بہتر ہے چنانچہ ایک وعامیہ ہے جو کدامام مسن عسکری القیاری ہے مروی ہے:

﴿ بِسُسِمِ اللَّهِ وَ بِاللَّهِ وَ مِنَ اللَّهِ وَ إِلَى اللَّهِ وَ خَيْرُ الْاَسُمَآءِ كُلُّهَا لِلَّهِ تَوَكَّلُتُ عَلَى

اللُّهِ لا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ اَللَّهِ مَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِ مُحَمَّدٍ وَ افْتَحُ إِي اَبُوَابَ

رَحُمَةِكَ وَ تَـوُيَةِكَ وَ اَغُـلِـ قُ عَـلَـ قُ اَبُوابَ مَعُصِيَةِكَ وَ اجْعَلُنِى مِنُ زُوَّ الْ

وَ عُمَّارِ مَسْاجِدِكَ وَمِمَّنُ يُسْاجِيُكَ بِاللَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَمِنَ الَّذِيْنَ هُمُ فِي ﴿

صَلوتِهِمُ خُاشِعُونَ وَمِنَ الَّذِيْنَ هُمُ عَلَى صَلوتِهِمُ يُحَافِظُونَ وَ أَعُودُ بِكَ

عَنِ الشَّيُطَانِ الرَّجِيُمِ وَ جُنُودِ إِبُلِيُسَ أَجُمَعِيُنَ﴾ ـ

دوسری و ہ دعاہے جو پیغیبر اسلام 🎥 ہے مروی ہے:

﴿ بِسُمِ اللَّهِ اَللَّهُ مَ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ الِ مُحَمَّدٍ وَاغْفِرُلِى ذُنُوبِى

وَافْتَحُ لِيُ أَبُوابَ رَحُمَتِكَ ﴿ (الفِنَا)

مجدكوفه مين دوركعت نماز حاجت

البتة حضرت امام جعفر صادق الطليح سے منقول ہے کہ جس شخص کوکوئی حاجت درپیش ہووہ مسجد کوفہ میں دورکعت نماز پڑھے اور ہر رکعت میں الحمد کے بعد سور و فلق ، سور و ماس ، سور و اخلاص ، سور و کافرون ، سور و فقر الله کے اور الله کے لیا ہے جنا ہے گئے کہا تھے پڑتے ہے اور کی فراست خدا ہے طلب کرے ۔خداوند عالم اس کی حاجت بوری فرمائے گا۔ (مصباح الزائر ابن طاؤوں و کتاب الدعاء)

مجدبهله

مسجد کوفہ کے بعد فضیلت میں کوئی مسجد سہلہ کے برابر نہیں ہے۔ بعض اخبار واٹار کے مطابق میہ مسجد جناب اورلیس وابرا نہیم کا گھر ہے اور جناب خضر کی آمد کا مقام ہے اور حضرت مہدی الظیافا کا مسکن ہے اور اس مسجد جناب اورلیس فابر ہی فضیلت رکھتا ہے لہٰذا اس مسجد میں نماز نجیۂ مسجد اور دوسری نمازیں پڑھنے اور دل کھول کرعبادت خدا کرنے میں ففلت نہیں کرنی چاہیئے ۔ اس طرح مسجد زید بن صوحان اور مسجد صحصحہ بن صوحان کی بھی فضیلت وار دہوئی ہے جو کہ حضرت امیر الظیافا کے خاص صحابی تھے جوائی مسجد سہلہ کے قرب و جوار میں واقع بیں۔ لہٰذا ان میں بھی نمازیر مصنح کی سعا دت حاصل کرنی چاہیئے ۔ باقی رہان مساجد کے خصوص اعمال واورا دوقو چونکہ وہ احادیث میں وارد نہیں ہوئے لہٰذا ہم ان کا تذکرہ نہ کرنے میں معذور ہیں ۔ ع

یمی وجہ ہے کہ مصباح معجود ، مصباح کفعمی اور زا دالمعا دوغیر ہ کتب معتمد ہ میں بیا عمال مذکور نہیں ہیں ہاں البتۃ اگر کوئی صاحب بلا دلیل صرف مشہور طریقۂ کار پڑعمل کرنے پر مصر ہوں تو و ہ مفاتیج البخان کے مطابق عمل کرسکتا ہے۔فتد ہیر۔

جناب مسلم بن عقبل اور جناب مانى بن عروة كى زيارات كابيان

افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ کتب ادعیہ و زیا رات میں ان دونوں حضرات کی کوئی الیمی زیارت نظر قاصر ہے نہیں گزری جوکسی معصوم سے منقول ہو۔اور بیروہ حقیقت ہے جس کا اعتراف آ قائے سیدمحد شیرازی مرحوم نے بھی اپنی کتاب الدعاوالزياره ميں ان الفاظ كے ساتھ كيا ہے: ﴿ وَلَمُ اَجِدُ فَي زِيارتِي مسلمٌ وَ هانسي زيارة واردة ﴾ كه "مجهان دونول بزركوارول كى كوئى منقوله زيارت نبيس السكى" مكران حضرات كى جلالت قدراورا ولهُ سنن میں تسامح کا تقاضا ہے کہ وہ زیارت پڑھ لی جائے جوعلاءنے وکر کی ہےاگر چہوہ مروی جناب مسلم کی قبر سے قریب گھڑ نے ہوکر پیرزیارت پڑھے: ﴿ اَلسَّالُامُ عَلَيُكَ آيُّهَا الْعَبُدُ الصَّالِحُ الْمُطِينُعُ لِلَّهِ وَ لِرَسُولِهِ وَ لِاَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيُنَ سلام ہو آپ پر اے بندۂ کیکوکار کہ آپ اطاعت گزار ہیں اللہ اور اس کے رسول کے اور نالع ہیں امیر الموشین ؑ کے وَالْحَسَنِ وَ الْحُسَيُنِ عَلَيْهِمُ السَّلَامِ ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ وَ سَلَامٌ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اور حسن ؑ و حسین ؑ کے ان سب پر سلام ہو حمد ہے خدا کے لیے اور سلام ہو اس کے بندوں پر جو چنے ہوئے اصُطَفَى مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ وَالسَّلامُ عَلَيْكُمُ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ وَ مَغْفِرَتُهُ وَ عَلى رُوحِكَ ہیں اوروہ ہیں محمد اوران کی آل سلام ہو آپ پر حدا کی رحت ہواں کی برکات اوراس کی طرف سے بخشش سلام ہو آپ کی روح اور وَ بَـدَنِكَ اَشُهَـدُ اَنَّكَ مَضَيْتَ عَلَى مَا مَضَى عَلَيْهِ الْبَدَرِيُّونَ الْمُجَاهِدُونَ فِي سَبيُلِ اا آپ کے بدن پر میں محاہ ہوں کرآپ اس عقیدے پر گز رہے جس پر اسحاب بدر دنیا سے گز رے کہ جوخدا کی ماہ میں جہاد کرنے والے الُـمُبَالِـغُـوُنَ فِـيُ جِهَادِ أَعُـدَآئِـهِ وَ نُـصُرَةِ أَوُلِيَآئِهِ فَجَزَاكَ اللَّهُ أَفْضَلَ الْجَزَآءِ وَ أَكُثَرَ ال کے دشمنوں سے لڑنے والے اور اس کے دوستوں کی مدد کرنے والے تھے اس خداجزا دے آپ کو بہترین جزا بہت زیادہ

_

الُجَزَآءِ وَ أَوْفَرَ جَزَآءِ اَحَدٍ مِّمَّنُ وَفَي بِبَيْعَتِهِ وَ اسْتِجَابَ لَهُ دَعُولَهُ وَ اَطَاعَ وُلأةَ اَمُرةٍ جزا اوروہ بے حساب جزا جواں کو دی کہ جس نے اس کی بیعت کا حق ادا کیا اس کی پکار پر حاضر ہوااور اس کے مقر رکر دہ حاکموں کی اطاعت ٱشْهَدُ ٱنَّكَ قَدُ بَالَغُتَ فِي النَّصِيُحَةِ وَ ٱعْطَيْتَ غَايَةَ الْمَجُهُوْدِ حَتَّى بَعَثَكَ اللَّا کی میں گواہ ہوں کہ آپ نے ان کی بہت خمرخواجی کی اور ان کے حق میں جان کی بازی لگائی حتی کہ خدائے آپ کوشہیدوں میں فِي الشُّهَدَآءِ وَ جَعَلَ رُوْحَكَ مَعَ اَرُوَاحِ السُّعَدَآءِ وَ اَعُطَآكَ مَنُ جِنَانِهَ اَفُسَحَهَا مَنُز شامل کر دیا اور آپ کی روح کو خوش بختوں کی روحوں میں جگہ دی اس نے آپ کو اپی جنت میں وَ ٱفْضَلَهَا غُرَفًا وَ رَفَعَ ذِكُرَكَ فِي الْعِلِّيِّيْنَ وَ حَشَرَكَ مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَ الصِّدِّيُقِيْنَ وَالشُّهَدَ کشا دہ محل اور بڑا اونچا بالاخانہ عطا فرمایا مقام علیین میں آپ کا جرجا کیا آپ کا حشر کیا ہے نبیوں کے ساتھ اور صدیقوں شہیدوں و الصَّالِحِيُنَ وَ حَسُنَ أُولَٰؤِكَ رَفِيُقًا اَشُهَدُ اَذَّكَ لَمُ تَهِنُ وَلَمُ تَنْكُلُ وَ اَذَّكَ قَدُ مَضَيُرٌ اورنیکوکاروں کے ساتھ اور بیالوگ کتنے اچھے ہمدم ہیں تمیں گواہ ہوں کرآپ نے نہ سستی دکھائی نہ مندموڑا ہے شک آپ دنیا سے گزرے عَـلَى بَصِيْرَةٍ مِّنُ آمُرِكَ مُقُعَدِيًا إِمالُهُ الحِيْنَ وَ مُتِّبِعًا لِّلنَّبِيُّنَ فَجَمَعَ اللَّهُ بَيُنَا وَ بَيُنَكَ تو اپنے عمل کا شعور رکھتے ہوئے نیکوکاروں کی پیروی اور نبیوں کی اتباع کر رہے تھے اس حدا کیجا کرے ہمیں اور آپ کو اپنے وَ بَيْنَ رَسُولِهِ وَ أَوْلِيَالِهِ فِي مَنَازِلِ الْمُخْتِيْنَ فَالَّهُ أَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ ﴾ ـ رسول اور اپنے دوستوں کے ساتھ خدا سے محبت رکھے والوں کے مقامات پر کہ یقیناً وہ سب سے زیادہ رخم والا ہے۔ اس کے بعد دورکعت نماز پڑھے اوراس کا ثواب جناب مسلم کی روح مقدس کو ہدیہ کرے۔علاوہ ہریں ان کے درجات کی بلندی کے لیے دعا وقر آن خوانی کرے اوراس سب عمل خیر کا ثواب صاحب قبر کو ہدیہ کرے نیزا بنی بخشش اور قضائے حاجات کے لیے خداہے دعا کرے۔ جناب مانى بن عروة كى زمارت ای طرح جناب ہانی بن عروہ کی بیزیا رہے بھی بعض علاءنے ذکر کی ہے۔اگر چیکسی معصوم سے مروی ﴿ سَلَامُ اللَّهِ الْعَظِيْمِ وَ صَلَواتُكُ عَلَيْكَ يَا هَانِيَ بُنَ عُرُوةَ اَلسَّلَامُ عَلَيُكَ اَيُّهَا ﴿ سلام ہو عظمت والے خدا کا اور اس کی رحمتیں ہوں آپ پر اے بانی بن عروہ سلام ہو آپ پر اے

الُعَبُدُ الصَّالِحُ النَّاصِحُ لِلَّهِ وَ لِرَسُولِهِ وَ لِاَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيُنَ وَالْحَسَنِ وَ الْحُسَيْن بندة كيوكار خدا اور ال كے رسول كے ليے خيرفواه اور خير خواه امير المونين كے ليے اور حسن وحسين عليم السلام عَـلَيُهـمُ السَّلاٰمُ اَشُهَـدُ اَنَّكَ قُتِـلُتَ مَـظُلُـوُمًـا فَلَعَنَ اللَّهُ مَنُ قَتَلَكَ وَاسْتَحَلَّ دَمَا کے لیے سلام ہوان سب پرئمیں گوا ہوں کرآپ وظلم کے ساتھ قبل کیا گیا ایس خدالعت کرے اس پرجس نے آپ کوئل کیا اور آپ کے وَ حَشْىي قُبُورَهُمُ نَارًا اَشُهَدُ اَنَّكَ لَقِيْتَ اللَّهَ وَ هُوَ رَاضٍ عَنُكَ بِمَا فَعَلْتَ وَ نَصَحُ خون کومباح جانا ،حذا ظالموں کی قبروں کوآ گ ہے مجرے میں گواہ موں کہ آپ نے حذا سے ملا قات کی آو وہ آپ سے راضی تھا کیونکہ آپ وَ اَشُهَادُ اَنَّكَ قَدُ بَلَغُتَ دَرَجَةَ الشُّهَدَآءِ وَ جُعِلَ رُوْحُكَ مَعَ اَرُوَاحِ السُّعَدَ نے اچھاعمل اور خیر خوابی کی تمیں کواہ ہوں کہ آپ شہیدوں کے زمرے میں داخل ہوئے اور آپ کی روح خوش بختوں کی روحوں کے ساتھ حمَا نَصَحْتَ لِلَّهِ وَ لِرَسُولِهِ مُجْتَهِدًا وَّ بَذَلُتَ نَفُسَكَ فِي ذَاتِ اللَّا ر کھی گئی کیونکہ آپ خدا و رسول کی خیر خواجی میں پوری طرح کوشاں ہوئے اور آپ نے جان قربان کر دی وات خدا اور اس وَ مَرْضَاتِهِ فَرَحِهُ كُلُ لِلَّهُ وَرَظِينَ عَنْكُ كَثَرَكُ مَعَ مُحَمَّدٍ وَ الِهِ الطَّاهِ کی رضاؤں میں خدا آپ پر رحمت کرے آپ سے راضی رہے اور آپ کو حضرت محمد اور ان کی با کیزہ آل کے ساتھ اٹھائے وَ جَـمَعَنَا وَ إِيَّاكُمُ مَّعَهُمُ فِي دَارِ النَّعِيْمِ وَ سَلامٌ عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُــ وہ اکٹھا کرے ہمیں اور آپ کو ان کے ساتھ فعمت مجرے گھر میں سلام ہو آپ پر خدا کی رحمت ہو اور اس کی برکات۔ اس کے بعد جانب سر دو رکعت نماز پڑھ کراس کا ثواب جناب ہانی گی روح کوہدیہ کرے۔ نیز ان کی بلندی درجات کے لیے دعاوقر آن خوانی کرےاوران سب کارہائے خیر کا ثواب جناب ہانی کی ردح پُرفتوح کو ہدیہ کرے۔

فامس آل عباء سيد الشهد اء حفرت امام حسين النظي كل فامس آل عباء سيد الشهد اء حفرت امام حسين النظي كل في المام ت

(۱) واضح رہے کہ حضرت سیر الشہد اءالظ ایک زیارت کی اس قدر فضیلت وارد ہوئی ہے کہ حیطہ تحریر سے باہر ہے۔ حضرت امام جعفر صادق الظ ایک اپنے خاص صحابی محمد بن مسلم سے فرماتے ہیں کہ ہمارے شیعوں کو تکم دو کہ و محضرت امام حسین الظ ایک کی زیارت کیا کریں کیونکہ آپ کی زیارت و بوار کے بنچ آنے، پائی میں ڈو بنے، آگ ہے سے خاور درندوں کے کھا جانے سے محفوظ رکھتی ہے۔ (کامل الزیارہ، مصباح الزائر)

(۲) محمد بن مردان بیان کرتے بیل کسیل نے جونہت امام جعفر صادق القام کوفر ماتے ہوئے سنا کہ فر ما رہے کے سنا کہ فر ما رہے کہ جون کے سنا کہ فر ما رہے کہ حضرت امام حسین القیام کی زیارت کرداگر چہ سال میں ایک بار ہی کرد کیونکہ جو شخص ان کے حق کی معرفت رکھتے ہوئے ان کی زیارت کرے اورا نکار نہ کرے تو اس کا معاوضہ جنت کے سوا اور پھی ہیں ہے۔ نیز خدااے رزق وسیع عطافر مائے گا۔۔۔تا آخر روایت۔(ایصناً)

(۳) حضرت امام جعفر صادق القلیلائے اپنے خاص صحابی سدیر سے دریا فت کیا کہ آیا تم ہرروز حضرت امام حسین القلیلائی زیارت کرتے ہو؟ عرض کیا بہیں ۔فر مایا: آیا ہر جمعہ کے دن کرتے ہو؟ عرض کیا بہیں ۔فر مایا: آیا ہر جمعہ کے دن کرتے ہو؟ عرض کیا بہیں ۔فر مایا: آیا ہر جمعہ کے دن کرتے ہو؟ عرض کیا: بہیں ۔فر مایا: آیا ہر سال کرتے ہو؟ عرض کیا: بال بہی بھی ۔فر مایا: تم کس قد رصفرت پر جفا کرتے ہو؟ پھر فر مایا: کیا تمہیں معلوم نہیں ہے کہ امام حسین القلیلائی قبر پر ایک ہزار فرشتے پراگندہ مواور خاک آلودہ گریہ و بکا کرتے ہیں اور مرثیہ پڑھتے ہیں اور ان کے اس عمل کا ثواب امام حسین القلیلائی کے زائر کو دیا جاتا ہے۔ (الیفناً)

- (٣) نیز کئی روایات میں وارد ہے کہ آپ کی زیارت کا ثواب کئی جے وعمرہ کے برابر ہے۔
- (۵) بروایت معاوید بن وهب حضرت امام جعفر صاوق القلیلا سے حضرت امام حسین القلیلا کی زیارت

کرنے کا ثواب عظیم مروی ہے۔ نیز آنجناب کا امام حسین النے کے زائر وں کی جان و مال اور ماموں کے لیے اور ان کی بخشش گنا ہان کے لیے دعا کیں کرما بھی منقول ہے۔ (الکافی، کامل الزیارہ، مصباح الزائر)

ایست احداج : یخفی ندر ب کدان آ داب کے علاوہ جوہم او پر سفر زیارت کے بیان میں کرآئے ہیں جناب سیدالشہد اعلقہ کی زیارت کے پھر مزید آ داب بھی ہیں جیسے یہ کہ سفر زیارت میں کوئی لذیذ غذا نہ کھائی جناب سیدالشہد اعلقہ کی زیارت کے پھر مزید آ داب بھی ہیں جیسے یہ کہ سفر زیارت میں کوئی لذیذ غذا نہ کھائی جائے بلکہ سادہ غذا ہر آگندہ مواور گرد آ لود ہوکراور بھوک و بیاس کی حالت میں زیارت کی جائے اور عاجزی واعکساری کے ساتھ سفر کیا جائے اور امام عالی مقام کے زائروں کی حتی الامکان خدمت کی جائے وغیرہ وغیرہ۔

حضرت امام حسين المنظم كى زيارت دوسم كى بين: مطلقه اورمخصوصه

چنانچه پہلے زیارات مطلقہ پیش کی جاتی ہیں۔

اگرچہ زیارات وطاقہ جو کر کئی خاص وقت کے ساتھ مختل نہیں ہیں بکٹرت ہیں مگر ہم ان میں سے صرف چندا ہم زیارات کے بیان کرنے کی سعاوت حاصل کرتے ہیں۔

ببلى زيارت مطلقه

حسین بن توبرایک طویل حدیث کے همن میں حضرت امام جعفر صادق الطبی ہے روایت کرتے ہیں جس میں مذکور ہے کہ یونس بن ظبیان نے عرض کیا کہ میں جب حضرت امام حسین الطبی کی زیارت کو جاؤں تو وہاں کیا کہ میں اور کیا پڑھوں؟ امام نے فر مایا: پہلے نہر فرات سے خسل کرواور صاف ستھرا لباس زیب بدن کرو پھر نظے یا وُں حرم کی طرف روانہ ہواور راہ میں

﴿ اللَّهُ اَكُبَرُ وَلا اِلَّهَ اِلَّا اللَّهُ وَ سُبُحَانَ اللَّهِ ﴾

خدا ہن رگتر ہے اور نہیں کوئی معبود سوائے خدا کے اور خدایا کسرین ہے۔

پڑھتے جاؤ۔ نیز درد دشریف پڑھتے جاؤیہاں تک کہرم حمینی کے دردازے پر پہنٹی جاؤ۔ پس اس وقت کہو: ﴿ اَلسَّلالُمُ عَلَيُكَ بِهَا حُدِجَهَ اللَّهِ وَ ابْنَ حُجَّتِهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكُ مُ يَا مَلْآثِكَةَ اللَّهِ وَ زُوَّارَ ملام ہو آپ پر اے جمت خدا اور جمت خدا کے فرزند سلام ہوتم پر اے خدا کے فرشتو اور نی کنا کے فرزند کے

قَبُسِرِ اِبُنِ نَبِيِّ اللَّهِ ﴾ ۔ بعد ازاں وَں قدم چل کررک جاؤاور تمیں مرتبہ کہو: ﴿ اَللّٰهُ اَکْبَرُ ﴾ ۔ پھر قبر مقدس کی قبر پر حاضری دینے والو۔

طرف بڑھواور آپ کے چہرہ اقدی کے بالمقابل کھڑے ہوکر بیزیارت پڑھو:

﴿ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ مِهَا حُدِّمَةَ اللَّهِ وَابُنَ حُجَّتِهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ مِهَا قَتِيْلَ اللَّهِ وَابُنَ قَتِيلِهِ علام ہوآپ ہر اے جمت خدا اور جمت خدا کے فرزند علام ہو آپ ہر اے تحدہ راہ خدا اور تحدہ راہ خدا کے فرزند

اَلسَّالامُ عَلَيْكَ لَهَا ثَارَ اللَّهِ وَ ابْنَ ثَارِمِ السَّلامُ عَلَيْكَ لَهَا وِتُرَ اللَّهِ الْمَوْتُورَ فِي السَّمُواتِ

سلام ہو آپ پرجن کے خون کا بدلہ خدا لے گا اور ایسے خون والے کے فرزند سلام ہوآپ پراے مقتول راہ خدا کہ آپ کا خون آسا نوں

وَالْاَرُضِ اَشْهَدُ اَنَّ دَمَكَ سَكَنَ فِي النُّخُلْدِ وَ اقْشَعَرَّتْ لَهَظِلَّةُ الْعَرُشِ وَ بَكي لَهُ

اور زمین پر برسا ممیں مواہ ہوں کہ آپ کا خون بہشت میں ٹھیرا جس سے عرش کے بردے کرزنے گئے ای خون بر

جَمِيْعُ الْخَلْاقِقِ وَ بَكَتُ لَهُ السَّمَواتُ السَّبُعُ وَالْاَرَضُونَ السَّبُعُ وَمَا فِيُهِنَّ وَمَا بَيُنَهُنَّ

کا نکات روئی اور اس پر ساتوں کا مان ساتوں زمیس ہو کیل اور مدیلے جو کھیے ان کل ہے ور جو ان کے درمیان ہے

وَ مَنْ يَّتَقَلَّبُ فِي الْجَنَّةِ وَ النَّارِ مِنْ خَلْقِ رَبِّنَا وَمَا يُراى وَمَا لا يُراى اَشُهَدُ اَنَّكَ حُجَّةُ اللَّهِ

اور جو کچھ جنت وجہنم میں حرکت کرتا ہے ہمارے رب کی مخلوق ہے وہ نظر آتا ہے یا نظر نیس آتا نمیں گواہ ہوں کہ آپ ججت خدا

وَابُنُ حُجَّتِهِ وَ اَشُهَدُ اَنَّكَ قَتِيلُ اللُّهِ وَابُنُ قَتِيبُلِهِ وَ اَشُهَدُ اَنَّكَ ثَارُ اللهِ وَابُنُ ثَارِهُمْ

اور جمت خدا کے فرزند ہیں ممیں گواہ ہوں کرآ پ تھے تا وخدا و تھے کا ہخدا کے فرزند ہیں ممیں گواہ ہوں خدا آپ کے اور آپ کے والد کے

وَ اَشُهَادُ اَنَّكَ وِتُو اللُّهِ الْمَوْتُورُ فِي السَّمُواتِ وَ الْاَرُضِ وَ اَشُهَادُ اَنَّكَ قَادُ

خون کا بدلہ لے گائمیں کواہ ہوں آپ و مقتول راہ خدا ہیں جس کا خون آسانوں اور زمین میں برسائمیں کواہ ہوں کہ آپ نے

بَلَّغُتَ وَ نَصَحُتَ وَ وَفَيُتَ وَ أَوْفَيُتَ وَ جَاهَدُتٌ فِي سَبِيُلِ اللَّهِ وَ مَضَيُتَ لِلَّذِي

تبلیغ فرمائی خمر اندیثی کی آپ نے وفا جھائی حق اوا کیا اور حدا کی راہ میں پوری طرح جہاد کیا آپ اس عقیدے پر گزرے

كُنُتَ عَلَيْهِ شَهِيُدًا وَّ مُسْتَشُهِدًا وَّ شَاهِدًا وَّ مَشُهُوُدًا وَّ اَنَا عَبُدُ اللَّهِ وَ مَوُلاًكَ

كرجس كے آپ كوا ہ رہے اس پر كوابى ليتے رہے اس كے كواہ بيں اور كواہ بھى ركھتے بيں نميں خدا كا بندہ ہوں آپ كا دوستدار ہوں

وَ فِي طَاعَتِكَ وَالْوَافِدُ اِلَيُكَ ٱلْتَمِسُ كَمَالَ الْمَنْزِلَةِ عِنْدَ اللَّهِ وَ ثَبَاتَ الْقَدَم آپ کی خدمت میں حاضر ہوں اور اس لیے آیا ہوں کمیں خدا کے ہاں بلند مرجے کی خواہش رکھتا ہوں آپ کی طرف سفر کرنے میں الْهِجُرَةِ اِلَيُكَ وَ السَّبِيُلَ الَّذِي لَا يَخْتَلِجُ دُوْنَكَ مِنَ الدُّخُولِ فِي كِفَالَةِكَ الَّةِي أُمِرُ ٹا بت قدمی جا ہتا ہوں اور وہ راستہ پا نا جا ہتا ہوں جس میں آپ کی قربت اور کھالت کے حصول میں رکاوٹ نہ ہوجس کا آپ نے مجھے تھم بِهَا مَنُ اَرَادَ اللَّهَ بَدَءَ بِكُمُ بِكُمُ يُبَيِّنُ اللُّهُ الْكَذِبَ وَ بِكُمُ يُبَاعِدُ اللَّهُ الزَّمَانَ فرمایا کہ خدا اپنا ارادہ آپ کے ذریعے ظاہر کتا ہے آپ کے ذریعے دروغ کو آشکار کتا ہے آپ کے وسلے سے خدانے برے وقت الْكَلِبَ وَ بِكُمْ فَتَعَ اللُّهُ وَ بِكُمُ يَخْتِمُ اللَّهُ وَ بِكُمْ يَمُحُوا مَا يَشَآءُ وَ يُثُبِتُ وَ بكُمُ ے نجات دی حدا نے آپ کے ذریعے ہدایت شروع کی اور آپ ہی پر اے تمام کیا آپ کے ذریعے جوچا ہے لکھتا اور مثانا ہے يَفُكُ الذُّلُّ مِنْ رَّقَابِنَا وَ بِكُمْ يُدُرِكُ اللَّهُ تِرَةَ كُلِّ مُؤْمِن يُطُلَبُ بِهَا وَ بكُمْ تُنُبتُ اور آپ کے ذریعے ہمیں ذلت سے نکالتا ہے اور آپ کے ذریعے ہی حدا ہرمومن کے خون ناحق کا بدلہ لیتا ہے اور آپ کے ذریعے الْارْضُ اشْجَارَهَا وَبِكُمْ تُخْرِجُ الْآرُضُ ثِمَارَهَا وَبِكُمْ تُعُزلُ السَّمَآءُ قَطُرَهَا زئن درخوں کو آگاتی ہے آپ بی کے ذریعے زئین اپنے فرزائے ظاہر کرتی ہے آپ کے ویلے آسان سے بارش وَ رِزْقَهَا وَ بِكُمْ يَكُشِفُ اللَّهُ الْكُرُبَ وَ بِكُمْ يُنَزِّلُ اللَّهُ الْغَيْثَ وَ بِكُمْ تُسَبِّحُ اور رزق نا زل ہوتا ہے آپ کے ذریعے خدا مصیبت دور کرتا ہے آپ کے ذریعے مینہ برساتا ہے اور آپ کے ذریعے وہ زیمن تنہیج الْاَرُضُ الَّتِيُ تَحْمِلُ اَبُدَانَكُمُ وَ تَسْتَقِرُّ جِبَالُهَا عَنُ مَّوَاسِيُهَاۤ اِرَادَةُ الرَّبّ فِي كرتى ہے جس نے آپ كے بدن اٹھا ركھے ہيں آپ كے ذريعے پہاڑ خدا كے ارادے سے اپنے كنگروں پر قائم ہيں اس كى تقديريں مَقَادِيُر أُمُورُهِ تَهُبِطُ إِلَيْكُمُ وَ تَصُدُرُ مِنْ ، بُيُوتِكُمُ وَالصَّادِرُ عَمَّا فُصِّلَ مِنُ آ پ کے دلوں میں ڈالی جاتی ہیں وہ آپ کے گھروں ہے جاری ہوتی ہیں اوروہ فیلے نافذ ہوتے ہیں جوخدا ہندوں کے ہا رے میں کرتا ٱخْكَامِ الْعِبَادِ لُعِنَتُ أُمَّةً قَتَلَتُكُمُ وَ أُمَّةٌ خَالَفَتُكُمُ وَ أُمَّةٌ جَحَدَثُ ولايَتَكُمُ وَ أُمَّةٌ ہے لعنت اس گروہ پر جس نے آپ کوقتل کیا لعنت اس گروہ پر جوآپ کا مخالف ہوا لعنت اس گروہ پر جس نے آپ کی ولایت کونہ مانا ظَاهَرَتُ عَلَيْكُمُ وَ أُمَّةٌ شَهِدَتُ وَلَمُ تُسْتَشُهَدُ ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَ النَّارَ مَأُويُهُمُ

وَ بِئُسَ وِرُدُ الْوَارِدِيْنَ وَ بِئُسَ الْوِرُدُ الْمَوْرُودُ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ﴾ -

جہنم میں ان کا ٹھکا نا بنایا اوروہ آنے والوں کیلئے کتنی ہر ی جگہ ہےاوروہاں آنا کتنا برا آنا ہے پس حمد ہے جانوں کا رب ہے۔

يُرتين مرتبه كبو: ﴿ صَلَّى اللَّهُ عَلَيُكَ عَا اَبَا عَبُدِ اللَّهِ ﴾

اے ابو عبداللہ! حدا آپ برورو دوسلام بھیج۔

اس كے بعد تين باركبو: ﴿ أَنَا إِلَى اللَّهِ مِمَّنُ خَالَفَكَ بَوِيْ فَى اللَّهِ مِمَّنُ خَالَفَكَ بَوِيْ

میں آپ کے مخافوں سے بیزار ہوں۔

پھرآپ کی بائنتی کی طرف جاؤجہاں شاہزاد ،علی اکبڑ کی قبر ہے اور وہاں بیر زیارت پڑھو:

﴿ اَلسَّالَامُ عَلَيُكَ لِهَابُنَ رَسُولِ اللَّهِ اَلسَّالَامُ عَلَيْكَ لِهَابُنَ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيُنَ اَلسَّالَامُ عَلَيْكَ

سلام ہو آپ پر اے رسول خدا کے فرزند سلام ہو آپ پر اے امیر الموشین ' کے فرزند سلام ہو آپ پر

يَابُنَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ السَّلامُ عَلَيُكَ لِمَابُنَ خَدِيْجَةَ وَ فَاطِمَةَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيُكَ صَلَّى

اے صرات حسن وحمین کے فردند سام مو آپ پر اے خدا جو الکون و فاطر زمرا کے فردند خدا رحت کرے آپ پر

اللُّهُ عَلَيْكَ صَلَّى اللُّهُ عَلَيْكَ لَعَنَ اللَّهُ مَنْ قَتَلَكَ لَعَنَ اللَّهُ مَنْ قَتَلَكَ لَعَنَ اللّه

خدارهت کرے آپ پرخدارهت کرے آپ پرخدالعن کرے آپ کے قاعل پرخدالعن کرے آپ کے قاعل پرخدالعن کرے آپ

قَتَلَكَ ﴾ ـ يعدا زال تين باركهو: ﴿ أَنَا إِلَى اللَّهِ مِنْهُمُ بَرِي عُ ﴾ ـ

کے قاعل پر کے ہوں۔

بعدازاں شخ شہداء کی طرف اشارہ کر کے ان کی زیارت پڑھو:

﴿ السَّلامُ عَلَيْكُمُ السَّلامُ عَلَيْكُمُ السَّلامُ عَلَيْكُمُ قُزْتُمُ وَاللَّهِ قُزْتُمُ وَاللَّهِ قُزُتُمُ وَاللَّهِ

سلام ہوتم پر سلام ہوتم سب پر سلام ہوتم پر کرتم کامیاب ہوئے بخداتم کامیاب ہوئے بخداتم کامیاب ہو بخدا کر تمیں

فَلَيْتَ إِنِّي مَعَكُمُ فَاقُورُ فَوْزًا عَظِيهُمًا ﴿ -

بھی تہارے ساتھ ہونا تو ہوئی کامیا بی کے کر کامیاب ہونا۔

بعد ازاں ضریح کی پشت کی جانب چھ رکعت نماز زیارت پڑھو یعنی دو رکعت نماز زیارت امام

حسین الظیر اور دو رکعت نماز زیارت علی اکبر اور دو رکعت نماز زیارت شهداء کر بلا - بس زیارت مکمل ہے -خوا ہ چلے جاؤ اور خواہ مزید قیام کرو - (کافی ،تہذیب الاحکام ،الفقیہ وغیرہ)

شیخ صدوق علیدالرحمد نے بیز زیارت ذکر کر کے فرمایا ہے کہ امام الطبی کی زیارتیں تو اور بھی منقول ہیں مگرسند کے اعتبار سے بیان سب سے زیا دہ معتبر ہے اور میں اسے کافی ووافی جانتا ہوں۔(الفقید)

دومرى زيارت مطلقه

بیروہ زیارت ہے جوحضرت امام علی نقی القلیلائے ہے مروی ہے ،فر مایا کہ جب حضرت امام حسین القلیلائد کی زیارت کے لیے جاؤ تو بیرزیارت پڑھو:

﴿ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا آبَا عَبُدِ اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا خُجَّةَ اللَّهِ فَيُضِهِ وَ شَاهِدَهُ عَلَى اللهِ عَلَيْكَ يَا خُجَّةَ اللَّهِ فَيُضِهِ وَ شَاهِدَهُ عَلَى اللهِ عَلَم عَلَيْكَ يَا اللهِ عَلَم عَلَى اللهِ عَلَم عَلَيْكَ يَا اللهِ عَلَم عَلَيْكَ يَا اللهِ عَلَم عَلَيْكَ يَا اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْكَ يَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْكَ يَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْكَ يَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْكَ يَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْكَ يَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْكَ يَا اللهُ الله

بِ الْسَعُرُ وُفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ جَاهَدُتَ فِي سَبِيُلِ اللّٰهِ حَتَّى اَتَيٰكَ الْيَقِينُ فَصَلَّى تَحَمَّ ولا اور ير كامول سے روكة رہے آپ خداكى راه يُن معروف جها درہے يهاں تك كرا ٓ پ شهيد شهيد ہوگئے ہی خدا رحت كرے

اللَّهُ عَلَيْكَ حَيًّا وَّ مَيِّتَهُ - پُرزارَ كوچابِيُّ كقِير مبارك بِرا پنا داياں رخسارر كھے اور كې: ﴿ اَشُهَدُ اَذَّكَ آپ بردو مان زندگی اور بعد موت ۔ ________________________میں گواہ ہوں كرآپ اپی روش میں اپنے رب كی روش

عَلَى بَيْنَةً مِّنُ رَّبِكَ جِئْتُ مُقِرًّ لِم بِاللَّذُنُوبِ لِتَشْفَعَ لِي عِنْدَ رَبِّكَ يَابُنَ رَسُولِ اللَّهِ - وَيُلَيْ مِنْ الرَّبِ اللَّهِ عَلَى عَنْدَ رَبِّكَ يَابُنَ رَسُولِ اللَّهِ - وَيُلَيْ مِينَ مَيْنَ الْجِرَاءِ لَا الْمُعَلَى الْمُعَالِيْ اللَّهِ عَلَى عَنْدَ اللَّهِ اللَّهِ عَنْدَ اللَّهِ عَنْدَ اللَّهِ عَنْدَ اللَّهِ عَنْدَ اللَّهِ عَنْدَ اللَّهِ اللَّهِ عَنْدَ اللَّهِ عَنْدُ اللَّهِ عَنْدُ اللَّهُ عَنْدُ اللَّهِ عَنْدُ اللَّهِ عَنْدُ اللَّهِ عَنْدُ اللَّهُ عَنْدُ اللَّهُ اللَّهِ عَنْدُ اللَّهِ عَنْدُ اللَّهِ عَنْدُ اللَّهُ عَنْدَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَنْدُ اللَّهُ عَنْدُ اللَّهُ عَنْدُ اللَّهُ عَنْدُ اللَّهُ عَنْدُ اللَّهُ عَنْدَ اللَّهُ عَنْدُ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْدُ اللَّهُ عَنْدُ اللَّهُ عَنْهُ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْهُ اللَّهُ عَنْهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَنْهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْكُوالِ اللَّهُ عَلَيْكُولُ اللَّهُ عَنْهُ عَلَيْكُوا عَنْمُ اللَّهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُ اللَّهُ عَنْهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُ الللللَّهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُ اللللْهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُولُ اللَّهُ عَلَيْكُولُ اللَّهُ اللللْهُ اللَّهُ عَلَيْكُولُ اللللْهُ عَلَيْكُولُولُ الللللَّهُ عَلَيْكُولُ اللللْهُ عَلَيْكُولُ اللللْهُ اللللْهُ الللللْهُ اللَّهُ عَلَيْكُولُ اللللْهُ الللللللْمُ اللللْهُ الللللللْمُ الللللْمُ الللللِهُ الللْ

اب تمام ائمیلیم السلام میں ہے ہرایک کانام لے اور پھر کے:﴿ اَشُهَادُ اَنَّکُمُ حُجَعُ اللَّهِ ﴾ اس کے بعد میں کو د ہوں کرآپ سب جمت ہائے خداہیں كِ: ﴿ الْكُتُبُ لِـى عِنُدَكَ مِينُنَاقًا وَ عَهُدًا إِنِّى كَانَيُهُ كَ مُجَدِّدً إِللَّمِيثَاقَ فَاشُهَدُ لِى عِنُدَ آپ ميرے ليے اپنے إلى اقرار و بيان تعيس كرئيں حاضر موا موں بيان تا زه كرنے كے ليے ہيں آپ اپنے رب كے

رَبِّكَ إِنَّكَ أَنْتَ الشَّاكِهِدُ (الكافي مصاح الزائرُومفاتَّة)

حضورمیر ہے گاہ بنیں کیونکہ آپ ہی میر ہے گاہ ہیں۔

تيسري زيارت مطلقه

جو ہروایت جابر بعظی حضرت امام جعفر صادق الطلی سے مروی ہے اور جس میں حضرت سید الشہداءالطلی کی زیارت کا تواب بے حساب مروی ہے کہ زائر امام کے روضۂ اقدی کے دروازہ پر کھڑے ہوکر یوں زیارت کرے:

﴿ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا وَارِتَ ادَمَ صِفُوهَ اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ نُوْحٍ نَبِي اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ نُوْحٍ نَبِي اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ نُوحِ نَبِي اللهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ اللهِ السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عَرَضًا كَ نَي إِلَى اللهِ اللهُ الل

عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِ اللهِ اَلسَّلاَ مَعَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُوْسلى كَلِيْمِ اللَّهِ اَلسَّلاَ مُ

عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عِيسلى رُوْحِ اللّهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدٍ سَيِّدِ رُسُلِ اللَّهِ آپ پرائيني "كوارث جوخداكى ايك دوح بين سلام موآپ پرائير كارث جوخداك رسولوں كے سردار بين

اَلسَّلاَمُ عَـلَیُکَ یَـا وَارِثَ عَلِیِّ اَمِیْرِ الْمُؤُمِنِیُنَ وَ خَیْرِ الْوَصِیِّیْنَ اَلسَّلاَمُ عَلَیُکَ یَا وَارِثُّ علام ہو آپ پر اے علی کے وارث جو مومنوں کے امیر اور اوصیاء میں سب نے بہتر ہیں علام ہو آپ پر اے

الُحَسَنِ الرَّضِيِّ الطَّاهِرِ الرَّاضِي المُمَرُضِيِّ السَّلاَمُ عَلَيْکَ آيُّهَا الصِّدِيْقُ الْاَکْبَرُ السَّلاَمُ اللَّمَ اللَّهُ الْمُحَدِّيْقُ الْاَکْبَرُ السَّلاَمُ اللَّمُ اللَّهُ الْمُحْسَنِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ ال

عَلَيْكَ أَيُّهَا الْوَصِيُّ الْبَرُّ التَّقِيُّ السَّلامُ عَلَيْكَ وَعَلَى الْارُواحِ الَّتِي حَلَّتُ بِفِنَآؤِكَ مَدِيرًا مِنْ عَنْ كُولا مِعَدُّلُ مِنْ عَلامُ مَعَ مَنْ أَلِينًا مِعْلَى مِنْ مِعْلَى اللهِ عَلَيْ مِنْ عَلَي

آپ پر اے وصی جو نیک کردار پر میزگار ہیں سلام ہو آپ پر اور ان جانوں پر جو آپ کے آستان پر حاضر ہوتی ہیں اور

ٱنَاخَتُ بِرَحُلِكَ ٱلسَّلامُ عَلَيُكَ وَ عَلَى الْمَلَاثِكَةِ الْحَافِيْنَ بِكَ ٱشْهَدُ ٱنَّكَ قَدُ ٱقَافِيْت

یباں اپی سوار ماں کھڑی کرتی ہیں سلام ہوآپ پراوران فرشتوں پر جوآپ کے چوگر درجے ہیں ممیں کوائی دیتا ہوں کرآپ نے نماز قائم

العَسْلُوةَ وَ اتَيُتَ الزَّكُوةَ وَ اَمَرُتَ بِالْمَعُرُوفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكُرِ وَ جَاهَدُتُ الطَّلُوةِ وَ الْهُنْكِرِ وَ جَاهَدُتُ الطَّلُوةِ وَ الْهُنْكِرِ وَ جَاهَدُتُ رَجِى ذَلَوْةِ اللَّهُ نَعْ اللَّهُ عَلَمُ عُرالًا اور برے كاموں ہے منع كيا آپ نے بے وينوں ہے جہاد كيا اللّٰهُ وَ بَوَكُمْ اللّٰهُ عَلَيْكُ وَ رَحْمَةُ اللّٰهُ وَ بَوَكُمْ اللّٰهِ عَلَيْكُ وَ رَحْمَةُ اللّٰهُ وَ بَوَكُمْ اللّٰهِ اللّٰهُ وَ بَوَكُمْ اللّٰهِ اللّٰهُ عَلَيْكُ وَ رَحْمَةُ اللّٰهُ وَ بَوَكُمْ اللّٰهِ اللّٰهُ وَ بَوَكُمْ اللّٰهِ اللّٰهُ عَلَيْكُ فَى رَحْتَ اللّٰهُ وَ بَوَكُمْ اللّٰهِ اللّٰهُ عَلَيْكُ مِنْ اللّٰهِ اللّٰهُ عَلَيْكُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ وَ بَوَكُمْ اللّٰهُ اللّٰهُ وَ بَوَكُمْ اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَيْكُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ وَاللّٰهُ اللّٰهُ عَلَيْكُ مَا اللّٰهُ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ عَلَيْكُ عَلَامُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَيْكُولُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ ا

بعدا زاں ضرح مقدس کی طرف قدم بڑھائے کہ ہر ہر قدم پراسے شہید راو خدا کا ثواب ملے گاجب ضرح کے قریب پہنچ جائے تو اپنا ہاتھ اس سے مس کرتے ہوئے کہ:

﴿ السَّلامُ عَلَيُكَ يَا حُجَّةَ اللَّهِ فَإِلَوْضِهِ ﴾

سلام ہوآپ پراے خدا کی زنگن میں اس کی جمت۔

بعد ازاں نماز پڑھے (کہ جانب سرافضل ہے)۔ کیونکہ وہاں نماز پڑھنے کی بڑی فضیلت وار دہوئی ہے اور بیہ کہاس زیارت کا ثواب کئی حج وعمرہ کے ہراہر ہے۔

مخفی ندرے کہ میں زاد ہے ایسے مفضل ہو میں جو کہ ہوتا ہے فاق اللہ ہے مروی ہے۔ (مصباح الزائر بحیة الزائر وغیرہ)

چوتھی زیارتِ مطلقہ

ابن عمار نے حضرت امام جعفر صادق القلیلا کی خدمت میں عرض کیا کہ میں جب حضرت امام حسین القلیلا کی زیارت کے لیے جا وُں تو وہاں کیار پڑھوں؟ فرمایا: پڑھو

﴿ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا اَبَآ عَبُدِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيُكَ يَاۤ اَبَا عَبُدِ اللَّهِ رَحِمَكَ اللَّهِ

سلام ہو آپ پر اے ابو عبداللہ خدا درود بھیج آپ پر اے ابو عبداللہ خدا رحمت

يَا آبَا عَبُدِ اللَّهِ لَعَنَ اللَّهُ مَنُ قَسَلَكَ وَلَعَنَ اللَّهُ مَنُ شَرِكَ فِي دَمِكَ وَلَعَنَ اللّ

فرمائے آپ پر ، خدالعنت کرےا**ں** پر جس نے آپ کوقل کیا خدالعنت کرےا**ں** پر جوآپ کا خون بہانے میں شریک ہوا خدالعنت کرے

مَنُ م بَلَغَهُ ذَلِكَ فَرَضِي بِهَ أَنَا إِلَى اللَّهِ مِنْ ذَلِكَ بَوِّئِ ﴿ السَّا)

اں پر جے یہ خبر پیٹی آقوہ واس پر خوش ہوائمیں حدا کے سامنے اس جرم سے برائت کتا ہوں۔

بإنجوين زيارت مطلقه

معتبر سند کے ساتھ منقول ہے کہ حضرت امام موٹی کاظم الطبی نے اپنے صحابی ایرا ہیم بن ابی البلاد سے
پوچھا کہتم جب حضرت امام حسین الطبی کی زیارت کے لیے جاتے ہوتو وہاں کیا پڑھتے ہو؟ ایرا ہیم نے عرض کیا
کہ میں میہ پڑھتا ہوں:

﴿ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَسَا اَبَلَ عَبُدِ السُّهِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَسَابُنَ رَسُولِ اللَّهِ اَشُهَدُ اَنَّك ملام ہو آپ ہر اے ایومباللہ ملام ہو آپ ہر اے رسول خدا کے فرزند کمیں کواہ ہوں کر آپ نے

قَدُ اَقَمْتَ الصَّلُوةَ وَ اتَيُتَ الزَّكُوةَ وَ اَمَرُتَ بِالْمَعُرُوفِ وَ نَهَيْتَ عَنِ الْمُنْكِرِ وَ دَعَوْتَ

نماز قائم رکھی زکوۃ اوا کرتے رہے آپ نے نیک کاموں کا تھم ویا اور برائیوں سے منع فرمایا آپ نے لوگوں کو اپنے رب کے

الى سَبِيُلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ اَشْهَدُ اَنَّ الَّذِيُنَ سَفَكُوا

رائے کی طرف بلایا داشمندی اور بہترین تھیجت کے ساتھ نمیں گواہ ہوں بھینا ان لوگوں نے آپ کا خون بہایا

دَمَكَ وَ اسْتَحَلُّوا حُرُمَتَكَ مَلْعُونُونَ مُعَلَّيُونَ عَلَى لِسَانِ دَاؤَدَ وَعِيْسَى بُنِ مَرُيَكُ

اور آپ کی بے احرامی کی وہ تعنق اور عذاب شدہ ہیں جیسے داؤد اور عیسیٰ من مریم نے یہ خبر دی اس کی وجہ

ذْلِكَ بِمَا عَصَوُا وَّكَانُوُا يَعُتَدُوُ ﴾ ـ

یہ ہے کہ انہوں نے بے تھی کی اور حدے پڑھ گئے۔

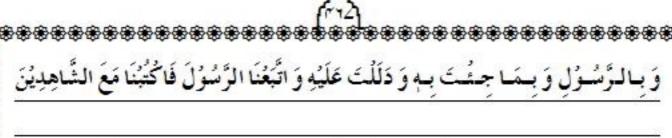
امام ﷺ نے اس کی تقدیق کرتے ہوئے فرمایا کہ ہاں، پیٹھیک ہے۔(ایصناً) اگر چہ زیارات اور بھی ہیں حتیٰ کہ صاحب کتاب الدعا و الزیارہ نے انیس (۱۹)عد و چھوٹی بڑی زیار تیں نقل کی ہیں مگراختصار کے پیش نظر ہم سجھتے ہیں کہ یہاں یہی یا پچے زیارات کافی ہیں۔

سيدالشهداء العظيظ سالوداع كى دعا

کنای حضرت امام جعفر صادق الطبی سے روایت کرتے ہیں ،فرمایا: جب حضرت امام حسین الطبی کی زیارت کر چکواور الوداع کرنا جا ہوتو کہو:

﴿ السَّلامُ عَلَيُكَ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ اَسُتَوُدِعُكَ اللَّهَ وَ اَقْرَءُ عَلَيْكَ اللَّهَ المَّنَّا بِالْحِ

^



اَللَّهُمَّ لا تَجْعَلُهُ اخِرَ الْعَهُدِ مِنَّا وَ مِنْهُ اَللْهُمَّ إِنَّا نَسْئَلُكَ اَنْ تَنْفَعَنَا بِحُبِّه اَللَّهُمَّ ابْعَثُهُ مَقَامًا

مَحُمُودًا تَنْصُرُ بِهِ دِيننَكَ وَ تَقُتُلُ بِهِ عَدُوَّكَ وَ تَبِينُدُ بِهِ مَنْ نَصَبَ حَرُبًا لِال مُحَمَّدٍ فَإِنَّكُمْ

وَعَـدُتَـهُ ذَلِكَ وَ أَنْتَ لا تُـخُلِفُ الْمِيُعادَ السَّلامُ عَلَيْكَ وَ رَحْمَهُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ اَشُهَا ﴿

أَنَّكُمُ شُهَدَآءُ نُجَبَّآءُ جَاهَدُتُمُ فِي سَبِيُلِ اللَّهِ وَ قُتِلْتُمُ عَلَى مِنْهَاجٍ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ

عَـلَيْهِ وَ الِهِ وَابُنِ رَسُولِهِ طَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِّهِ ٱنْتُمْ السَّابِقُولُ وَ الْمُهَاجِرُونَ وَ الْإِنْصَارُ

اَشْهَدُ اَنَّكُمُ اَنُصارُ اللَّهِ وَ اَنْصارُ رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ فَالْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي

صَدَقَكُمُ وَعُدَهُ وَ اَرْيِكُمُ مَا تُحِبُّوُنَ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِ مُحَمَّدٍ وَ رَحُمَةُ اللَّهِ

وَ بَرَكَاتُهُ اَللَّهُمَّ لا تَشُغَلْنِي فِي الدُّنْيَا عَنُ ذِكْرِ نِعُمَةِكَ لا بِإِكْثَارِ تُلْهِينِي عَجَآئِبُ

بَهُ جَتِهَا وَ تَـفُتِـنَـنِي زَهَرَاتُ زِينَتِهَا وَلا بِإِقُلالٍ يُضِرُّ بِعَمَلِي كَدُّهُ وَ يَمُلُا صَدُرِي هَمُّهُ

اَعُطِهِى مِنُ ذَٰلِكَ غِنِّى عَنُ شِرَارٍ خَلُقِكَ وَ بَلاغًا اَنالُ بِهِ رِضَاكَ يَا اَرُحَمَ الرَّاحِمِ



وَ صَلَّى اللُّهُ عَلَى رَسُولِهِ مُحَمَّدِ بُنِ عَبُدِ اللَّهِ وَ عَلَى اَهُلِ بَيُتِهِ الطَّيِّبِينَ الْآخُيَارِ وَ

رَحُمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ ﴾ - (كتاب الدعا)

حضرت ابوالفضل العباس الطيف كي زيارت

کتاب کامل الزیارہ میں ہروایت جابر جعفی حضرت امام جعفر صادق الطبی ہے مروی ہے، فرمایا کہ جب جناب عباس بن امیر المؤمنین الطبی کی زیارت کرنا چاہو جو دریائے فرات کے کنارے اور حائز حسین کی ہے بالمقابل واقع ہے تو روضۂ مبارکہ کے دروازہ پر کھڑے ہوکریوں کہو:

﴿ سَلامُ اللّٰهِ وَ سَلامُ مَلائكَتِهِ اللَّهُ عَرْبُ وَ انْبِياآئِهِ الْمُرْسَلِيْنَ وَ عِبَادِهِ الصَّالِحِيْنَ اللهُ اللَّهُ وَسَلامُ اللَّهُ وَسَلامُ اللَّهُ عَلَيْهِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعِبَادِهِ الصَّالِحِيْنَ اللهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلْمِ عَلَيْهِ عَلَيْ

وَ جَمِيْعِ الشَّهَدَآءِ وَالصِّدِيْقِيْنَ وَ الزَّ اكِيَاتُ الطَّيِّبَاتُ فِيْمَا يَعُتَدِى وَ تَرُو ُ حُ عَلَيْكَ يَابُنَ اور جَمِيْعِ الشُّهَدَآءِ وَالصِّدِيْقِيْنَ وَ الزَّ اكِيَاتُ الطَّيِّبَاتُ فِيْمَا يَعْتَدِى وَ تَرُو ُ حُ عَلَيْكَ يَابُنَ اور جَمِيْ اور جَمَعُ اللهُ عَلَيْكُ كَ

آمِیْرِ الْمُؤْمِنِیُنَ اَشُهَدُ لَکَ بِالتَّسُلِیُمِ وَالتَّصُدِیُقِ وَالْوَفَآءِ وَ النَّصِیُحَةِ لِخَلَفِ النَّبِیِّ صَلَّی نورچثم نمیں کواہ ہوں آپ کا اس اطاحت ٹائیہ وفاداری اور ٹیر خوائی پر جو آپ نے نبی اکرم سلی اللہ علیہ وآلہ

اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ الْمُرْسَلِ وَالسِّبُطِ الْمُنْتَجَبِ وَ الدَّلِيُلِ الْعَالِمِ وَلُوَصِيِّ الْمُبَلِّعِ وَالْمَظُلُومِ

كَ جَانَتُين ہے كى كہ جو نيك امل نواے صاحب علم رہبر تبلیغ كرنے والے قائمقام اور وہ عم دیرہ ہیں

الْمُهُ تَضَمِ فَجَزَاكَ اللَّهُ عَنُ رَّسُولِهِ وَ عَنُ آمِيْرِ الْمُؤْمِنِيُنَ وَعَنِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ

جن کو تک کیا گیا ایل خداجزا دے آپ کواپنے رسول کی طرف سے امیر المؤتین کی طرف سے اور حسن وحسین کی طرف سے

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيْهِمُ ٱفْضَلَ الْجَزَآءِ بِمَا صَبَرُتَ وَ احْتَسَبُتَ وَ اَعَنْتَ فَنِعُمَ عُقُبَى الدَّارِ

خدا کی رحمتیں ہوں ان سب پر آپ کو بہترین جزا دے کہ آپ نے صبر کیا خمر خواہی کی اور مددونصرت کی آو کیا ہی اچھا ہے آپ کا انجام

لَعَنَ اللَّهُ مَنُ قَتَلَكَ وَ لَعَنَ اللَّهُ مَنُ جَهِلَ حَقَّكَ وَاسْتَخَفَّ بِحُرُمَتِكَ وَ لَعَنَ اللَّهُ مَنُ حَا خدالعنت کرے آپ کے قاحل پر خدالعنت کرے اس پر جس نے آپ کاعق نہ پیچانا اور آپ کی ہے احر امی کی خدالعنت کرے اس پر جو بَيُنَكَ وَ بَيُنَ مَآءِ الْـفُرَاتِ اَشُهَدُ اَنَّكَ قُتِلْتَ مَظْلُوْمًا وَّ اَنَّ اللَّهَ مُنُجزٌ لَّكُمُ مَّا وَعَدَكُمُ آپ کے اور فرات کے پانی کے درمیان رکاوٹ بنائمیں گوا ہوں کہ آپ مظلومی میں قتل ہوئے اور خدا آپ کووہ جزا دے گاجس کا آپ جِئُتُكَ يَابُنَ اَمِيْرِ الْمُوْمِنِيُنَ وَافِدًا اِلَيُكُمُ وَ قَلْبِي مُسَلِّمٌ لَّكُمُ وَ تَابِعٌ وَ اَنَا لَكُمُ تَابِعٌ لوگوں سے وعد ہ ہے، آپ کے ہاں آیا ہوں اے امیر المونین کے فرزند آپ کا مہمان ہوں میرا دل آپ کے حوالے اور تالع ہے اور میں وَّ نُصُرَتِي لَكُمُ مِّعَدَّةً حَدّى يَحُكُمَ اللَّهُ وَ هُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ فَمَعَكُمُ مَّعَكُمُ لأَ آپ کا پیرو ہوں میں آپ کی نفرت پر آمادہ ہوں یہاں تک کرخداتھم کرےاوروہ بہترین تھم کرنے والا ہے آپ کے ساتھ ہوں آپ کے مَعَ عَدُوِّكُمُ إِنِّي بِكُمُ وَ بِإِيَابِكُمُ مِّنَ الْمُوْمِنِيُنَ وَ بِمَنْ خَالَفَكُمُ وَقَتَلَكُمُ مِّنَ ساتھ نہ کہ آپ کے دخمن کے ساتھ ہے فٹک میں آپ کا اور آپ کی پر گشت کو مانتا ہوں اور آپ کے مخالف اور آپ کے قاحل ہے میرا کوئی الْكَافِرِيْنَ قَتَلَ اللَّهُ أُمَّةً قَبَلَتُكُمْ الْأَيْدِي وَالْأَلْلِينَ ﴿ SIBT تعلق نیں خداقل کرےاس گروہ کوجس نے ہاتھوں اور زبانوں ہے آپ کے ساتھ جنگ کی۔

بعدازا لاردافل ہو کراور قبر مبارک ہے لیٹ کر پڑھو:

﴿ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْعَبُدُ الصَّالِحُ الْمُطِيعُ لِلْهِ وَ لِرَسُولِهِ وَ لِآمِيْ الْمُؤْمِنِينَ وَالْحَسَنِ الْمَا عَلَيْكَ اللهِ وَ لِرَسُولِهِ وَ لِآمِيْ الْمُؤْمِنِينَ وَالْحَسَنِ عَلَا عَلَيْكَ وَ رَحُمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهُ وَ مَغُفِرَتُهُ وَ الْمُحْسَيْنِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِمُ وَ سَلَّمَ السَّلاَمُ عَلَيْكَ وَ رَحُمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهُ وَ مَغُفِرَتُهُ وَ اللهِ وَ بَرَكَاتُهُ وَ مَغُفِرَتُهُ وَ اللهِ وَمَعُورَتُهُ وَ اللهِ وَ بَرَكَاتُهُ وَ مَغُفِرَتُهُ وَ اللهِ وَ اللهِ وَ بَرَكَاتُهُ وَ مَغُفِرَتُهُ وَ اللهِ وَاللهِ وَ بَرَكَاتُهُ وَ مَغُفِرَتُهُ وَ اللهِ وَاللهِ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهُ وَاللّهُ وَاللّه

****** فِيُ نُصُرَ ةِ اَوُلِيَـآئِـهِ الـذَّآبُّـوُنَ عَـنُ اَحِبَّآئِهِ فَجَزَاكَ اللَّهُ اَفُضَلَ الْجَزَآءِ وَ اكُثُرَ الْجَزَآءِ حامیوں کی مدو کرنے میں آگے اور اس کے دوستوں کا دفاع کرتے تھے کی حدا آپ کوجزا دے بہترین جزا بہت زیادہ جزا وَ اَوُفَرَ اللَّجَزَآءِ وَ اَوُفْى جَزَآءِ اَحَدٍ مِّمَّنُ وَفِي بِبَيْعَتِهِ وَ اسْتَجَابَ لَهُ دَعُوتَهُ وَ اَطَاعَ فراواں تر جزا اور کامل تر جزا دے جو اس محض کو دی جس نے اس کی بیعت کا حق ا ما کیا اس کے بلاوے پر حاضر ہوا اور اس کے وُلاٰةَ اَمُرهٖ اَشُهَدُ اَنَّكَ قَدُ بَالَغُتَ فِي النَّصِيْحَةِ وَ اَعْطَيْتَ غَايَةَ الْمَجُهُوْدِ فَبَعَثَكَ اللَّهُ فِ والیانِ امر کی اطاعت کی تمیں محواہ ہوں کہ آپ نے دلی طور پر پوری طرح خیرخواہی کی اور اس میں اپنی انتہائی کوشش سے کام لیا لہٰڈا الشُّهَدَآءِ وَ جَعَلَ رُوْحَكَ مَعَ ارُوَاحِ السُّعَدَآءِ وَ اعْطَاكَ مِنُ جِنَانِةٍ ٱلْهُسَحَهَا مَنُز خدانے آپ کوشہیدوں میں جگہ دی آپ کی روح کوخوش بختوں کی روحوں کے ساتھ رکھا اور عطا کیا آپ کواپی جنت میں سب سے بڑامحل وَّ ٱلْصَلَهَا غُرَفًا وَّ رَفَعَ ذِكُرَكَ فِي عِلِّيِّيْنَ وَ حَشَرَكَ مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَ الصِّدِيْقِيْنَ وَالشُّهَدَ اور بلند تر بالا خانہ نیز اس نے مقام علیون میں آپ کو شہرت بخشی اور میدان حشر میں آپ کو نبیوں صدیقوں شہیدوں وَ الصَّالِحِيْنَ وَ حَلَينَ أُولِّئِكَ رَفِيْلَقًا أَشْهَدُ أَنَّكَ لَهُ لَهِلْ وَلَهُ تَنْكُلُ وَ أَنَّكَ مَضَيُ اور نیکوکاروں کے ساتھ رکھے گا اور وہ لوگ کیا ہی اچھے ساتھی ہیں تمیں گواہ ہوں کر آپ نے نہ ہمت ہاری نہ پیٹے دکھائی اور بے شک آپ عَـلَى بَصِيْرَةٍ مِّنُ أَمُرِكَ مُقُتَلِئيِّلِالصَّالِحِيْنَ وَ مُتَّبِعًا لِّلنَّبِيِّيْنَ فَجَمَعَ اللَّهُ بَيُنَنَا وَ بَيْذَكَ اینے عمل کا شعور رکھتے ہوئے گامزن رہے اس میں آپ نیکو کاروں کی پیرو میاو رفیوں کی اتباع کررہے تھے پس حدا ہمیں آپ کے ساتھاور وَ بَيُن رَسُولِهِ وَ اَوُلِيَاآلِهِ فِي مَنَازِلِ الْمُخْيِتِيُنَ فَاِنَّهُ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ ﴾ ـ اینے رسول اور اپنے دوستوں کے ساتھ جمع کرے اہل حق کی منزلوں میں کہ وہ سب سے زیادہ رقم والا ہے۔ بہتر ہے کہ بعدا زاں نمازِ زیارت پڑھی جائے ،قر آن خوانی کی جائے ، درو دوسلام پڑھا جائے اوران سب اعمال كا ثواب حضرت ابوالفضل القليلاكي روح مقدس كومديد كيا جائے -

جناب عباس العظظ سے الوداع كى دعا

اور جب زائر جناب کی زیارت ہے فارغ ہو جائے اور الوداع کرنا جاہے تو وہی الوداع کے جو جناب جاہر جھی کی روایت میں مروی ہے:

^

}********************************* ﴿ اَسْتَوُدِ عُكَ اللَّهَ وَ اَسْتَرُعِيُكَ وَ اَقْرَءُ عَلَيْكَ اَلسَّلاٰمَ امَنَّا بِاللَّهِ وَ بِرَسُولِهِ وَ بِكِ آپ کوسپر دخدا کرنا ہوں آپ کا النفات جا ہتا ہوں اور آپ کوسلام کہتا ہوں ہمارا ایمان ہے خدا پر اس کے رسول پر اس کی کتاب پر وَ بِمَا جَآءَ بِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ مَا كُتُبُنَا مَعَ الشَّاهِدِيْنَ اللَّهُمَّ لا تَجْعَلُهُ اخِرَ الْعَهُدِ اور جو پھے خدا کی طرف سے ان پریا زل ہوا کی اے معبود! ہمیں گوائ دینے والوں میں لکھ دے اے معبود! میری اس زیارت کو آخری مِنُ زِيَارَتِيُ قَبُرَ ابُنِ أَخِيُ رَسُوُلِكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ وَارُزُقُنِيُ زِيَارَتَكَابُدًا مَّآ اَبُقَيْتَنِيُ زیارت قرار نہ دے جو میں نے تیرے رسول صلی اللہ علیہ وآلہ کے بھائی کے فرزند کی قبر پر کی ہے جب تک تو مجھے زندہ رکھے وَاحُشُرُنِيُ مَعَاهُ وَ مَعَ ابَآئِهِ فِي الْجِنَانِ وَعَرِّفُ بَيْنِيُ وَ بَيْنَهُ وَ بَيْنَ رَسُوُلِكَ وَ اس قبر کی زیارت نصیب کرتے رہنااور مجھےان کے اوران کے ہز رگول کے ساتھ جنت میں رکھنامیر سےاوران کے درمیان اوراپنے رسول ٱوُلِيَـائِكَ ٱللُّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَّ تَوَفَّنِي عَلَى ٱلِإِيْمَان بِكَ وَ التَّصُدِيُةِ اوراپنے دوستوں کے درمیان جان پہچان کرا دینا اے معبود! رحمت فرما محمرًو آل محمرً پر اور مجھےموت دینا جب کر تھھ پر ایمان ہواور بِرَسُولِكَ وَالْوِلاَيَةِ لِعَالِي مُن آبِي طَالِكِ وَ الْاَئِمَةِ مِنْ وَلَلِهِ عَلَيْهِمُ السَّلامُ وَالْبَرَ آئِة حیرے رسول پرعقیدہ ہواورمیرایقین ہوعلی بن ابی طالب کی ولایت اوران کی اولا دمیں سے اماموں کی ولایت پر ان سب پرسلام ہو مِنُ عَدُوِّهِمْ فَانِّي قَدُ رَضِيتُ يَا رَبِّي بِذَٰلِكَ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ ـ او ران کے ڈھمنوں سے میرا کوئی واسطہ نہ ہوپس میں یقینا راضی ہوں اے میر ہے رب اس صورت میں اورحدا رحمت فرمائے محمر و آل محمر پر ۔

حضرت امام حسين الكي كفحصوص زيارات كابيان

لیعنی آنجناب کی و ہ زیا رات جو مخصوص اوقات کے ساتھ مختص ہیں اور و ہ چند زیا رات ہیں جن کا ہم بڑے اختصار کے ساتھ ترتیب واریہاں تذکرہ کرتے ہیں۔

حضرت امام حسين الكي كى بيلى مخصوص زيارت

حضرت امام حسین الطائی کی کہلی مخصوص زیارت جو کیم رجب اور نیمہ کر رجب کے ساتھ مخصوص ہے۔

(۱) واضح رہے کہ کیم رجب المرجب اور نیمہ کر رجب کی شب و روز میں حضرت امام حسین الطائی کی زیارت کرنے کی احادیث میں فضیلت تو وار دہوئی ہے مگر کتب معتبر ہ میں کوئی ایسی مخصوص زیارت نہیں ملتی جواس موقع

(۲) نیمهٔ شعبان کی زیارت: -اس شب و روز کی زیارت کی بڑی فضیلت وارد ہوئی ہے اوراس شب و روز کی زیارت کی بڑی فضیلت وارد ہوئی ہے اوراس شب و روز کی ایک مخصوص زیارت جناب شخ کفعمی نے اپنی کتاب مصباح میں حضرت امام جعفر صاوق الطابی سے نقل کی ہے، جو یہ ہے:

﴿ ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الْعَلِي الْعَظِيْمِ وَ السَّلامُ عَلَيْكَ آيُّهَا الْعَبُدُ الصَّالِحُ الزَّكِيُّ أُودِعُكَ حمد ہے خدا کے لیے جو بلند و ہزرگ ہے اور سلام ہو آپ پر اے خدا کے بندہ خوش کردار پاکیزہ میں اپی طرف سے شَهَادَةً مِنِّي لَكَ تُقَرِّبُنِي إِلَيُكَ فِي يَوْمِ شَفَاعَةِكَ اَشُهَدُ آنَّكَ قُتِلُتَ وَلَمُ تَمُتُ ﴿ ال ایک گوائی آپ کے سپر دکرنا ہوں تا کہ وہ مجھے آپ کے قریب کرے جس دن آپ شفاعت کرتے ہوں سے ممیں گواہ ہوں کہ آپ قتل ہوئے برَجَآءِ حَيْوِتِكَ حَيَيْتَ قُلُوُبُ شِيُعَةِكَ وَ بضِيَآءِ نُوْرِكَ اهْتَدَى الطَّالِبُوْنَ اليُكَ وَ اللَّهُدُ تو آپ مرے نیس بلکآپ کے ندرہ و لے کے اسور سے آپ کے بیرہ کارہ کے دل زور ہیں وراث کی کر نوں کے ذریعے آنَّكَ نُورُ اللَّهِ الَّذِي لَمُ يُطُفَأُ وَلا يُطُفُّا ابَدًا وَ آنَّكَ وَجُهُ اللَّهِ الَّذِي لَمُ يَهُلِكُ وَ عائب والے آپ تک ویجے بیں میں گاہ ہوں کر آپ خدا کاوہ نور ہیں جو مُتانین اور ندی میر بھی مٹے گااور بے شک آپ خدا کا وہ علوہ ہیں يُهُـلَكُ اَبَـدًا وَ اَشُهَـدُ اَنَّ هـذِهِ التُّـرُبَةَ تُـرُبَةً كُـرُبَتُكَ وَ هـذَا الْحَـرَمَ حَـرَمُكَ وَ هـ جو ختم نہیں ہونا اور نہ بی ہی سیمجھی ختم ہوگا میں سواہ ہوں کہ یہ قبر آپ کی قبر ہے یہ روضہ آپ کا روضہ ہے اور بیاقل گاہ الْمَصْرَعَ مَصْرَعُ بَدَنِكَ لا ذَلِيُلَ وَاللَّهُ مُعِزُّكَ وَلا مَغُلُوبَ وَاللَّهِ نَاصِرُكَ هذِهِ شَهَا ﴿ آپ کے بدن کی قبل گاہ ہے آپ بہت کیل کرخدانے آپ کوعزت دی اور آپ ہارے ٹین کرخدانے آپ کی مدد فرمانی میہ ہے آپ کے لِي عِنْدَكَ اللَّي يَوُم قَبُض رُوْحِي بحَضُرَةِكَ وَالسَّلامُ عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَ كَالتُهُ

(٣) شب باع قدر میں حضرت امام حسین اللی کی مخصوص زیارت : ماہ رمضان کی شب بائے قدر میں حضرت امام محمد باقر اللی سے قدر میں حضرت امام محمد باقر اللی سے

سامنے میری گواہی اس دن تک جب آپ کی موجودگی میں میری روح قبض ہوگی اور سلام ہو آپ پر خدا کی رحمت ہواو راس کی بر کات۔

یہاں تک منقول ہے کہ جو شخص ۲۳ ماہ رمضان کی رات حضرت امام حسین الظیما کی زیارت کرے اس سے ہزاروں انبیاء اور ملائکہ مصافحہ کرتے ہیں جواس رات آنجناب کی زیارت کے لیے تشریف لاتے ہیں۔اور حضرت امام جعفر صادق الظیما سے یہاں تک مروی ہے کہ شب قد رمیں ساتوی آسان پر ایک منا دی منجانب اللہ ندا دیتا ہے کہ خداوند عالم نے آج رات امام حسین الظیما کی زیارت کے لیے آنے والوں کو بخش دیا ہے۔ اللہ ندا دیتا ہے کہ خداوند عالم نے آج رات امام حسین الظیما کی زیارت کے لیے آنے والوں کو بخش دیا ہے۔ (کامل الزیارہ ابن قو لویہ وغیرہ)

مخفی نہ رہے کہ کتب مزار میں شب ہائے قد راور شب ہائے عیدین میں ایک ہی زیارت حضرت امام جعفر صادق الطبی ہے مردی ہے ،فر مایا: جب اس موقع پر حضرت امام حسین الطبی کی زیارت کرنا چاہو۔ تو پہلے عنسل کرد پھر پا کیزہ لباس زیب بدن کرد ۔ بعد ازاں ضرح مبارک کے پاس جاؤ۔ اور اس طرح قبر مبارک کی طرف رخ کر کے کھڑے ہو کہ قبلہ تمہارے دونوں کندھوں کے درمیان ہواور کہو:

السَّلامُ عَلَيْكَ يَسَابُسَنَ رَسُولِ السَّبِهِ السَّلامُ عَلَيْكَ يَسَابُنَ اَمِيْسِوِ الْمُوْمِنِيُ وَاللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ عَلَيْكَ يَسَاءِ الْعَالَمِيْنَ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ الْوَشِينَ السَّلامُ عَلَيْكَ اللَّهِ مَا اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ اللَّهُ وَ اللَّهُ وَ اللَّهُ وَ وَاللَّهُ وَ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَ اللَّهُ عَلَى اللَ

کہ جو طاوت کا حق ہے آپ نے خدا کی ماہ میں جہاد کیا کہ جو جہاد کا حق ہے اور آپ نے خدا کی خاطر دکھوں پر مبر آئیدگ الیہ قینس نُ اَشُھے دُ اَنَّ الَّہِ فِیسَنَ خَسَالَ فُ وَ کُ وَ حَسَارَبُ وَ کُ وَ الَّهِ فِیسَنَ خَسَدَ لُکُونِ کیا امیداجہ میں حتیٰ کر آپ نے شہادت باتی میں گواہ ہوں کہ جنہوں نے آپ کی مخالفت کی اور آپ سے اوے نیز جنہوں نے

^

وَالَّذِيْنَ قَتَلُوْکَ مَلُعُونُونَ عَلَى لِسَانِ النَّبِسِي الْاُمِّسِي وَقَدُ خَابَ مَنِ الْحُتَرِى وَالَّذِيْنَ قَتَلُوكَ مَلُعُونُونَ عَلَى لِسَانِ النَّبِسِي الْاُمِّسِي وَقَدُ خَابَ مَنِ الْحُتَرِى وَاللَّهِ اللَّهُ الطَّالِمِيسُنَ لَكُمُ مِنَ الْاَوْلِيْنَ وَالْاَحِرِيْنَ وَ صَاعَفَ عَلَيْهِمُ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ لَمُ لَعَنَ اللَّهُ الطَّالِمِيسُنَ لَكُمُ مِنَ الْاَوْلِيْنَ وَالْاَحِرِيْنَ وَ صَاعَفَ عَلَيْهِمُ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ لَلَّهُ الطَّالِمِيسُنَ لَكُمُ مِنَ الْاَوْلِيْنَ وَالْاَحِرِيْنَ وَ صَاعَفَ عَلَيْهِمُ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ لَمُ اللَّهُ الطَّالِمِيسُنَ لَكُمُ مِنَ الْاَوْلِيْنَ وَالْاَحِرِيْنَ وَ صَاعَفَ عَلَيْهِمُ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ لَمُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهِ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَالْولَالِي وَاللَّهُ وَالَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّا وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْ

خَالَفَكَ فَاشُفَعُ لِي عِنْدَ رَبِّكَ

ا خالفت کی ایس این رب کے ہاں میری سفارش کریں۔

ہوں ہے۔ ہودعا چاہے ہائے اور پھر دیگر شہداء کی طرف متوجہ ہو جب کہ قبر کی پائٹتی ہے قبلہ کی طرف مائل اب جو دعا چاہے مائے اور پھر دیگر شہداء کی طرف متوجہ ہو جب کہ قبر کی پائٹتی ہے قبلہ کی طرف مائل ہو۔ پس یوں کے:

اَلسَّلامُ عَلَيْكُمُ اَيُّهَا الصِّدِيُقُونَ اَلسَّلامُ عَلَيْكُمُ اَيُّهَا الشَّهَدَآءُ الصَّابِرُ وُنَ اَشُهَدُ آنَكُمُ السَّلامُ عَلَيْكُمُ اللَّهُ الشَّهَدَآءُ الصَّابِرُ وُنَ اَشُهَدُ آنَكُمُ اللهُ عَلَيْكُمُ اللهُ اللهُ

جَاهَدُتُ مُ فِي سَبِيلِ اللّهِ وَ صَبَرُتُهُ عَلَى الْآذِى فِي جَنْبِ اللّهِ وَ نَصَحْتُمُ لِللّهِ وَ لِرَسُولِهِ خداك ماه من جهادكيا اورخداكى فاطروكة تكليف يرصبر علم لياتم في خدا ورسول عظوس برناحي كرتم دنيا عرَّر ركع

حَتْمَى اَتَيْكُمُ الْيَهِيْنُ اَشُهَدُ اَنَّكُمُ اَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّكُمُ تُوزَقُونَ فَجَزَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الإسلامِ مَن الله عَن الإسلامِ مَن الله عَن الله عَنْ الله عَن الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَن الله عَنْ الله عَن الله عَن الله عَن الله عَن الله عَنْ الله عَن الله عَنْ الله عَن الله عَنْ الله عَن الله عَن الله عَن الله عَن الله عَنْ اللهُ عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَن الله عَنْ اللهُ عَنْ الله عَل

وَ اَهُلِهَ اَفُضَلَ جَوْرًا وَ الْمُحْسِنِينُ وَ جَمَعَ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمُ فِي مَحَلِّ النَّعِيمِ. الْمُعلِم عَلَيْ النَّعِيمِ عَلَيْ النَّعِيمِ الْمُعلِينَ جَرَا جَو نَيُوكارول كے ليے ہے اور يجا كرے ہيں تمہيں افتوں والی جنت كے مكانوں ميں۔

اب حضرت عبال الله اليم المؤمنين كي زيال كيم ليم جا المال الم ينج تو حضرت كي ضرح مبارك كي ماس كهر بي موكر كيه:

اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَابُنَ اَمِيْرِ الْمُوْمِنِيُنَ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْعَبُدُ الصَّالِحُ الْمُطِيعُ لِلْوَ سلام ہوآپ پراے امیر المؤمنین کے فرزند سلام ہوآپ پراے بندۂ خوش کردار خدا اور اس کے رسول کے اطاعت گزار

وَ لِسرَسُولِہِ اَشُهَدُ اَنَّکَ قَدُ جَساهَدُتَّ وَ نَصَحُستَ وَ صَبَرُتَ حَثَّى اَتَیْکَ الْیَقِیُو میں گاہ بول کہ ضرور آپ نے جاد کیا خمر اندیثی کی اور مبر سے کام لیا حق کر آپ دنیا سے جل ہے

لَعَنَ اللَّهُ الطَّالِمِيْنَ لَكُمُ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ وَ الْاَحِرِيْنَ وَ اَلْحَقَهُمُ بِدَرُكِ الْجَحِيْمِ.

عدا كالعنت ان يرجنول نے آپ يرظم وُحلا پهول اور پچهول من سے اور خدا ان كوجنم كے نچلے درج من پينے۔

پھر حضرت كى مجد ميں جس قد رجا ہے منتحى نما زا واكر ہے اور باہر آجائے۔

(۴) شبہائے عیدین بعنی عیدالفطر اور عید الاضی کے شب وروز میں زیارت امام حسین الناہ :-عیدین کی راتوں بلکہ دنوں میں بھی حضرت امام حسین الناہ کی زیارت کرنے کی خاص فضیلت وارد

***** ہوئی ہے۔ چنانچہ بسندمعتبر حصرت امام جعفر صا دق الطابی ہے مروی ہے، فر مایا: جو شخص تین را توں میں ہے کسی ایک رات میں حضرت امام حسین القلیلا کی زیارت کرے تو اس کے اسکے پچھلے گنا ہ معاف کرویئے جاتے ہیں۔ فر مایا: وہ تنین راتنیں بیہ ہیں:عیدالفطر کی رات ہمیدالاضحیٰ کی رات اور نیمیۂ شعبان کی رات ۔ (تمام کتب مزار)۔ واضح رہے کہاں موقع برمنقول زیارت وہی ہے جواو پر شب ہائے قد رمیں حضرت امام جعفر صا دق الظامی ہے تقل کی جا چکی ہے۔لہذاان راتو ںاور دنوں میں وہی زیارت پڑھی جائے۔ (۵) شب و روزعر فرمس زیارت امام حسین النی دشب و روزعرفد می بالخصوص عرفد کے دن حضرت امام حسین الطفیلا کی زیارت کرنے کے کتب مزار میں بے بایا ں اجروثواب بیان کئے گئے ہیں اور عرفہ اور عید کے دن آنجناب کی زیارت کرنے پر نہ صرف بیسیوں حج وعمرہ بلکہ پینکڑوں حج وعمرہ کے برابر ثواب مذکور ہیں۔اوراگر چیبعض بزرگ علماءکرام جیسے جناب شیخ مفید، جناب سیدابن طاؤوس جناب شہیداول اور دوسر بے بز رکوں نے اس موقع پر ایک طویل زیارت درج بھی کی ہے جو کہ مفاتیج البخان وغیرہ کتابوں میں مذکورہے ۔مگر و پخصوص زیارت چونکہ اس ہوقع کے لیے کئی معصوم ہتی ہے منقول نہیں ہے۔ اور پی وجہ ہے کہ حضرت شیرازی مرحوم نے اپنی کتاب الدعا والزیارہ میں وہ زیارت نقل کرنے کے بعد لکھا ہے کہ ﴿ ذَکونِ اللَّهِ عَلَى الزيبارة تسامحاً کنتهم نے ازباب تمامح اس زیارت کا تذکرہ کیا ہے۔" (کتاب الدعا، صفحہ ۲۹۸، طبع ایران) بنابریں انسب بیہے کہ اس موقع برآپ کی زیارات مطلقہ میں ہے کوئی زیارت بڑھ لی جائے جو پہلے ذکر کی جا چکی ہیں۔ یا پھر زیارات جامعہ میں ہے کوئی زیارت جامعہ پڑھ کی جائے جیسے بیزیارت جامعہ جسے حضرت شیخ صدوق علیه الرحمد نے الفقید میں اور شیخ تقعمی نے بحوالد مزار شیخ مفید نقل کیا ہے جو یہ ہے: اَلسَّلامُ عَلْى اَوُلِيَاءِ اللُّهِ وَ اَصُفِيَائِهِ السَّلامُ عَلْى اُمِّنَاءِ اللَّهِ وَ اَحِبَّائِهِ اَلسَّلامُ عَلْى سلام ہو دوستان خدا اور اس کے برگزیدوں پر سلام ہو خدا کے امانتداروں اور اس کے پیاروں پر سلام ہو ٱنْـصَـارِ اللُّـهِ وَ خُـلَفَآئِهِ اَلسَّلامُ عَلْى مَحَآلٌ مَعُرِفَةِ اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَى مَسَاكِنِ ذِكرِ اللَّهِ خدا کے ناصروں پر اور اس کے نائبوں پر سلام ہو خدا کی معرفت کے نشانوں پر سلام ہو ذکر الی کے وظیفہ واروں پر اَلسَّلامُ عَلْى مُظُهِرِ اَمُرِ اللَّهِ وَ نَهُيهِ اَلسَّلامُ عَلَى الدُّعَاةِ اِلَى اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَى

سلام ہو خدا کے امر و نہی کے تر ہمانوں پر سلام ہو خدا کی طرف بلانے والوں پر سلام ہو خدا کی رضاؤں میں رہنے والوں پر

(٢) روزِ عاشوراءزيارت ام حسين الي ا

جوض روز عاشوراء کربلامعلی میں موجود ہواور حضرت امام حسین الطبیح کی زیارت کرے اس کے لیے کئی ہزار جج وعمرہ اور جہا دکا ثواب مروی ہے۔ راوی (عقبہ) نے حضرت امام محمد باقر الطبیح کی خدمت میں عرض کئی ہزار جج وغمرہ اور جہا دکا ثواب مروی ہے۔ راوی (عقبہ) نے حضرت امام محمد باقر الطبیح کی خدمت میں عرض کیا کہ جو خص دور دراز شہروں میں موجود ہواور روز عاشوراء کر بلامعلی نہ پہنچ سکے تو وہ کیا کرے؟ فرمایا: وہ صحراء میں جائے یا اپنے مکان کی حجمت پر چڑھ جائے اور حضرت امام حسین الطبیح کی قبر مقدس کی طرف اشارہ کرکے میں جائے یا اپنے مکان کی حجمت پر چڑھ جائے اور حضرت امام حسین الطبیح کی قبر مقدس کی طرف اشارہ کرکے پہلے مید زیارت پڑھے۔ اور میہ سب پہلے مید زیارت پڑھے۔ اور میہ سب پہلے مید زیارت پڑھے۔ اور میہ سب کچھ رو نے عاشوراء زوال سے پہلے یعنی دن کے پہلے حصے میں کرنے تو اسے بھی یہی ثواب ملے گا۔ پھر مظلوم کر بلا

اَعُظَمَ اللّٰهُ اَجُورُنَا بِمُصَابِنَا بِالْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلامُ وَجَعَلْنَا وَإِيَّاكُمُ مِنَ عَلَيْ السَّلامُ وَجَعَلْنَا وَإِيَّاكُمُ مِنَ عَلَيْهِ السَّلامُ وَجَعَلْنَا وَإِيَّاكُمُ مِنَ عَدَامَارَى جَزَاوُل مِن اضَافَدَرَ الله سُوكَارَى بِي جَرَمَ نَامَامُ عِينَ عَيْهِ السَّلامُ عَلَيْهِ مَ السَّلامُ السَّلامُ السَّلامُ السَّلامُ السَّلامُ السَّلامُ السَّلامُ السَّلامُ اللهُ مَحَمَّدٍ عَلَيْهِمُ السَّلامُ اللهُ مَعْمَى اللهُ عَلَيْهِمُ السَّلامُ اللهُ مَعْمَى اللهُ عَلَيْهِمُ السَّلامُ اللهُ عَلَيْهِمَ السَّلامُ اللهُ عَلَيْهِمَ اللهُ مِن اللهُ عَلَيْهِمَ اللهُ مِن عَرَادُ وَالول مِن قَرَادُوكَ النَّامِ مِن عَرَادُ عَلَيْهِمَ اللهُ مِن عَرَادُوكَ اللهُ عَلَيْهِمَ اللهُ مِن عَرَالُ وَمُعْمِى اللهُ مِن عَرَادُ وَاللَّهُ مِن عَرَادُ وَاللَّهُ مِن عَرَادُ وَاللَّهُ مِن عَرَادُولَ عَلَيْهِمَ اللهُ مِن عَرَادُ عَلَيْهِمَ اللهُ مِن عَرَادُ عَلَيْهِمَ اللهُ مِن عَرَادُ وَاللَّهُ مِن اللَّهُ عَلَيْهُمُ اللَّهُ مِن اللَّهُ عَلَيْهُمُ اللَّهُ مِن عَرَادُ عَلَى اللَّهُ مِن عَرَادُ عَالِلْ اللَّهُ مِن عَرَادُ عَلَى اللَّهُ مِن عَرَادُ عَلَيْهُ اللَّهُ مِن عَرَادُ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مِن عَرَادُ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مِن اللَّهُ اللَّامُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّامِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الْعُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ الللّهُ اللللَّهُ الللَّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللّهُ الللللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ

اوروه زيارت عاشوراء بيرے:

ٱلسَّلامُ عَلَيُكَ يَآ اَبا عَبُدِ اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَابُنَ رَسُولِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيُكَ يَابُنَ اَمِيْرِ سلام ہوآپ پراے اہا عبداللہ سلام ہوآپ پراے رسول خدآ کے فر زند سلام ہوآپ پراے امیر المؤمنینؑ کے فرزند اور اوصا کے سر دار الْمُؤْمِنِيُنَ وَابُنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّيُنَ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَابُنَ فَاطِمَةَ مَيِّدَةِ نِسَآءِ الْعَالَمِيُلَلسَّلامُ کے فرزندسلام ہوآپ پر اے فرزند فاطمہ جو جہانوں کی مورتوں کی سر دار ہیں سلام ہوآپ پراے قربان خدا اور قربان خدا کے فر زنداور عَـلَيُكَ يَا ثَارَ اللَّهِ وَابُنَ ثَارِهِ وَالُوتُرَ الْمَوْتُورِ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ وَ عَلَى الْآرُواحِ الَّتِيُ حَلَّـ وہ خون جس کا بدلہ لیا جانا ہے سلام ہوآ پ پر اور ان روحوں پر جوآ پ کے آستان میں مدفون ہیں آپ سب پر میری طرف سے حندا کا بِفِنَآ ئِكَ عَلَيْكُمُ مِّنِي جَمِيْعًا سَلامُ اللَّهِ اَبَدًا مَّا بَقِيْتُ وَ بَقِيَ اللَّيْلُ وَ النَّهَارُ يَآ اَبَا عَبُدِ اللَّهِ سلام ہمیشہ جب تک میں ما تی ہوں اور رات دن ما تی ہیں اے اما عبداللہ آپ کا سوگ بہت بھاری اور بہت بڑا ہے اور آپ کی مصیبت لَـقَدُ عَظُمَتِ الرَّزيَّةُ وَ جَلَّتُ وَ عُظُمَتِ الْمُصِيبَةُ بكَ عَلَيْنَا وَ عَلَى جَمِيُع اَهُل الإسْلام بہت بڑی ہے ہمارے لیے اور تمام اہل اسلام کے لیے اور بہت بڑی اور بھاری ہے آپ کی مصیبت آسانوں میں تمام آسان والوں وَ جَلَّتُ وَ عَظُمَتُ مُصِيْبَةُكَ فِي السَّمٰوَاتِ عَلَى جَمِيْعِ اَهُلِ السَّمٰوَاتِ فَلَعَنَ اللَّهُ أُمَّةً ﴿ کے لیے پس خدا کی لعنت اس گروہ پر جس نے بنیا د ڈانی آپ پڑھلم وستم کرنے کی اے اٹل بیت اور خدا کی لعنت اس گروہ پر جس نے ٱسَّسَتُ ٱسَاسَ الظُّلُم وَ الْجَوُرِ عَلَيْكُمُ ٱهُلَ الْبَيْتِ وَ لَعَنَ اللَّهُ أُمَّةً دَفَعَتُكُمُ عَنُ مَقَامِكُمُ آپ کوآپ کے مقام سے مٹایا اورآپ کواس مرجے ہے گرایا جوخدانے اس مقام میں آپ کو دیا خدا کی لعنت اس گروہ پر جس نے

وَ اَذَالَتُكُمُ عَنُ مَوَاتِبِكُمُ الَّتِي رَتَّبِكُمُ اللَّهُ فِيْهَا وَ لَعَنَ اللَّهُ أُمَّةً قَتَلَتُكُمُ وَلَعَنَ اللَّهُ آپ کوئل کیااورخدا کی لعنت ان پر جنہوں نے ان کوآپ کے ساتھ جنگ کرنے کی قوت فراہم کی میں ہری ہوں خدا کے اور آپ کے الْـمُـمَهِّدِيُـنَ لَهُـمُ بِالتَّمُكِيُنِ مِنْ قِتَالِكُمُ بَرِ ثُتُ إِلَى اللَّهِ وَ إِلَيْكُمُ مِّنُهُمُ وَ مِنْ اَشْيَاعِهِمُ سمائے ان سے ان کے مددگاروں ہے ان کے پیرو کاروں اور ان کے دوستوں ہے اے ابا عبداللہ میری صلح ہے آپ ہے صلح کرنے وَ اَوُلِيَـآئِهِـمُ يِـآ اَبَا عَبُـدِ اللَّهِ إِنِّيُ سِلُمٌ لِّمَنُ سَالَمَكُمُ وَ حَرُبٌ لِّمَنُ حَارَبَكُمُ إِلَى يَوُم والے ہے اور میری جنگ ہے آپ ہے جنگ کرنے والے ہے روز قیا مت تک اور حندالعنت کرےاولا د زیا داو راولا دمروان پر حندا الْقِيلْمَةِ وَلَعَنَ اللَّهُ الَ زِيَادِ وَ الَ مَرُوَانَ وَلَعَنَ اللَّهُ بَنِي أُمَيَّةَ قَاطِبَةً وَ لَعَنَ اللَّهُ ابُنَ اظهار بیزاری کرے بنی امیہ ہے ہرصورت میں خدالعنت کر ہا ہن مرجانہ ہر خدالعنت کرے عمر بن سعد مرحندالعنت کر ہے ثمر ہر اورحندا مَـرُجَانَةَ وَ لَعَنَ اللَّهُ عُمَرَ بُنَ سَعُدٍ وَّ لَعَنَ اللَّهُ شِمُوًا وَّ لَعَنَ اللَّهُ أُمَّةً اَسُوَجَتُ وَ ٱلْجَمَتُ لعنت کرے جنہوں نے زین کسی لگام دی تھوڑوں کواو راوگوں کولاکا را آپ سے لڑنے کے لیے میر سے ما ں باپ آپ پر قربان یقیناً آپ وَ تَنَقَّبَتُ لِقِتَالِكَ الْمَأْتُ مَ وَأُمِّى لَقَهُ عَظُمَ مُصَابِي إِكَ فَاسْئَلُ اللَّهَ الَّذِ فَأَكُرَمَ کی خاطر میراغم بڑھ گیا ہے پس سوال کرتا ہوں خدا ہے جس نے آپ کوشان عطا کی اور آپ کے ذریعے مجھے عزت دی ہے کہ وہ مجھے مَـقَـامَكَ وَ اكْرَمَنِيُ بِكَ وَ اَنْ يَرُزُقَنِيُ طَلَبَ ثَارِكَ مَعَ اِمَامٍ مَّنْصُورٍ مِّنُ اَهُلِ بَيْتِ مُحَ آپ کے خون کا بدلہ لینے کاموقع و ہان ا مام منصور کی ہمراہی میں جوہوں سے اٹل بیت محد سلی اللہ علیہ و آلبہ میں سے ا مے معبو وا مجھ کو صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ اَللَّهُمَّ اجْعَلْنِي عِنْدَكَ وَجِيْهُلِالْحُسَيُنِ عَلَيْهِ السَّلامُ فِي الدُّنْيَا ا پنے ہاں آ ہرومند بنا بواسط هسین علیہ السلام کے دنیااو رآ خرت میں اے ابا عبداللہ بے شک میں قرب جیا بتا ہوں خدا کا اس کے رسول وَ الْأَخِرَةِ يَاۤ اَبَا عَبُدِ اللَّهِ إِنِّي ٓ اَتَـقَرَّبُ إِلَى اللَّهِ وَ إِلَى رَسُولِهِ وَ إِلَى اَمِيُو الْمُؤْمِنِيُنَ وَ إِلَى کا امیر المؤمنینؑ کا فاطمہ زہراً کاحس مجتبیٰ کا اور آپ کا قرب آپ کی حبداری سےاوراس سے بیزاری کے ذریعے کہ جس نے ایسی منیا و فَاطِمَةَ وَ إِلَى الْحَسَنِ وَ إِلَيْكَ بِمُوَ الْأَتِكَ وَ بِالْبَرَآئَةِ مِمَّنُ اَسَّسَ اَسَاسَ ذَالِكَ وَ قائم کی اس پر عمارت اٹھائی او رپھر ظلم وستم کرنا شروع کیا آپ پر اور آپ کے پیرو کاروں پر میں بیزاری ظاہر کرنا ہوں خدا کے اور آپ عَلَيْهِ بُنْيَانُهُ و جَرَى فِي ظُلُمِهِ وَ جَوُرِهِ عَلَيْكُمُ وَ عَلَى آشُيَاعِكُمُ بَرِئُتُ اِلَى اللَّهِ وَ اِلَيُكُمُ

مِّنُهُمُ وَ آتَـقَرَّبُ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ إِلَيْكُمُ بِمُوَالاَتِكُمُ وَ مُوَالاَةٍ وَلِيَّكُمُ وَ بالْبَرَآئَةِ مِنُ وشمنوں اور آپ کے خلاف جنگ بریا کرنے والوں سے بیزاری کے ذریعے اوران کے طرفدا روں اور پیرو کاروں سے بیزاری کے أَعُدَ آئِكُمُ وَ النَّاصِبِينَ لَكُمُ الْحَرُبَ وَ بِالْبَرَ آئَةِ مِنْ اَشْيَاعِهِمْ وَ اَتْبَاعِهِمُ إِنِّي سِلْمٌ لِّمَنُ ذر لیع میری سلح ہے آپ سے سلح کرنے والے سے او رمیری جنگ ہے آپ سے جنگ کرنے والے سے میں آپ کے دوست کا سَـالَـمَكُمُ وَ حَرُبٌ لِمَنُ حَارَبَكُمُ وَ وَلِيٌّ لِمَنُ وَالْأَكُمُ وَ عَدُوٌّ لِمَنُ عَادَاكُمُ فَاسْئَلُ اللَّهَ دوست اور آپ کے دخمن کا دخمن ہوں کس سوال کرتا ہوں خدا ہے جس نے عزت دی مجھے آپ کی پیچان اور آپ کے دوستوں کی پیچان الَّذِي آكُرَ مَنِيُ بِمَعُرِ فَيَكُمُ وَ مَعُرِ فَيَةَ آوُلِيٓآئِكُمُ وَ رَزَقِنِي الْبِرَ آئَةَ مِنُ آعُدَ آئِكُمُ آنُ يَجْعَلَنِيُ کے ذریعے اور مجھے آپ کے دشمنوں سے بیزاری کی تو نیق دی ہے کروہ مجھے آپ کے ساتھ رکھے دنیا اور آخرت میں اور ہے کہ مجھے آپ مَعَكُمُ فِي الدُّنْيَا وَ الْأَحِرَةِ وَ أَنْ يُثْبَتَ لِيُ عِنْدَكُمُ قَدَمَ صِدُق فِي الدُّنْيَا وَ الْأَحِرَةِ وَ کے حضور سچائی کے ساتھ قابت قدم رکھے دنیا اور آخرت میں او راس ہے سوال کرتا ہوں کہ جھے بھی حدا کے ہاں آپ کے لیے پہندید ہ ٱسْــئَلُهُ ٱنُ يُبَلِّغُنِيُ الْمَقَامَ الْمَحْمُودَ لَكُمُ عِنْدَ اللَّهِ وَ ٱنْ يَكُرُ زُقِييُ طَلَبَ ثَارِي كُمْ مَعَ إمَام مقام پر پہنچائے نیز مجھے نصیب کرے آپ کے خون کا بدلہ لیٹا آپ میں ہے اس آمام کے ساتھ جو ہے مدد گار رہبر حق بات زبان پر هُدًى ظَاهِر نَاطِق أَبِ الْحَقِّ مِنْكُمُ وَ اَسْتَلُ اللَّهَ بِحَقِّكُمُ وَ بِالشَّانِ الَّذِي لَكُمُ عِنْدَهُ اَنُ نے والا اور سوال کرتا ہوں خدا سے بواسط آپ کے حق اور آپ کی شان کے جو آپ اس کے ہاں رکھتے ہیں بیر کہ وہ عطا کرے مجھ کو يُّ عُطِيَنِيُ بِمُصَابِيُ بِكُمُ اَفُضَلَ مَا يُعُطِيُ مُصَابًا * بِمُ صِيبَتِهِ مُصِيبَةً مَّآ اَعُظَمَهَا وَ اَعُظَءَ آپ کی سوگواری پروہ بہترین اجر جواس نے آپ کے کسی سوگوار کو دیا اس مصیبت پر کہ جو بہت بڑی مصیبت او راس کا رقج وقع بہت رَزِيَّتَهَا فِي الْإِسُلامِ وَفِي جَمِيُعِ السَّمَواتِ وَالْآرُضِ اَللَّهُمَّ اجْعَلْنِي فِي مَقَامِي هَذَا مِمَّنُ زیا وہ ہے اسلام میں اور تمام آ سانوں میں اوراس زمین میں اے معبو وقرار دے مجھے اس جگہ پر ان افراد میں سے جن کونصیب ہوئیں تَـنَـالُـهُ مِـنُكَ صَلَوَاتٌ وَّ رَحُمَةٌ وَّ مَغُفِرَةٌ اَللَّهُمَّ اجْعَلُ مَحْيَايَ مَحْيَا مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّ تیری مہریا نیاں تیری رحمت اور بخشش اےمعبو دقرار دے میری زندگی کومحہ و آل محمہ کی زندگی جیسی او رمیری موت کومحہ و آل محمہ وَّ مَـمَاتِيُ مَمَاتَ مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ اَللَّهُمَّ إِنَّ هٰذَا يَوُمَّ تَبَرَّكُتُ بِهِ بَنُوْ أُمَيَّةَ وَابُنُ اكِلَةٍ

الْأَكْبَادِ اللَّعِيْنُ ابْنُ اللَّعِيْنِ عَلَى لِسَانِكَ وَ لِسَان نَبِيَّكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِه تھا جولعنت شدہ کا فر زندلعنت شدہ ہے تیری زباں پراور تیرے نبی سکی اللہ علیہ و آلہ کی زبان پر ہرشہر میں جہاں رہےاور ہر مجکہ کہ جہاں كُلِّ مَوْطِنِ وَّ مَوُقِفٍ وَّقَفَ فِيهِ نَبِيُّكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ اَللَّهُمَّ الْعَنُ اَبَا سُفْيَانَ محیرے ہیں تیرے نبی اگرم صلی اللہ علیہ و آلہ اے معبود! اظہار بیزاری کرابو سفیان اور معاویہ اور بزید بن معاویہ سے کہ ان وَ مُعْوِيَةَ وَ يَزِيْدَ بُنَ مُعْوِيَةَ عَلَيْهِمُ مِّذُكَ اللَّعْنَةُ آبَدَ الْأبدِيْنَ وَ هٰذَا يَوُمٌ فَرحَتُ بهٓ الُّ زيَادٍ سے اظہار بیزاری ہو تیری طرف سے ہمیشہ ہمیشہ اور ہمیشہ اور بہ وہ دن ہے جس میں خوش ہوئی اولا د زیاد اور اولا دمروان وَّ الُّ مَـرُوَانَ بِـقَتُـلِهِـمُ الْـحُسَيُنَ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيْهِ اَللَّهُمَّ فَضَاعِفُ عَلَيْهِمُ اللَّعُنَ مِنْكَ کرانہوں نے قبل کیا حسین صلوات اللہ علیہ کوا ہے معبود پس تو دوچند کر دے ان پراچی طرف سے لعنت اور عذا ب کوا ہے معبو دیے شک وَ الْعَذَابَ اَللَّهُمَّ إِنِّي آتَـقَـرَّبُ إِلَيُكَ فِي هٰذَا الْيَـوُم وَفِي مَـوُقِفِي هٰذَا وَ أَيَّام حَيٰوتِي ﴿ میں تیرا قرب جا ہتا ہوں آج کے دن میں اس جگہ پر جہاں کھڑا ہوں او را پی زندگی کے دنوں میں بذریعہ ان سے بیزاری کرنے اور بِ الْبَرَآئَةِ مِنْهُمُ وَاللَّغُنَةِ عَلَيْهِمُ وَ بِالْمُوَالِأَةِ لِنَبِيِّكَ وَالِّ نَبِيِّكَ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمُ السَّالَا ان پرنفرین سمیجنے کے اور بوسلہ اس دوئتی کے جو مجھے تیرے ٹبی اور تیرے ٹبی کی آل سے ہے سلام ہو تیرے نبی پر اوران کی آل پر ۔ پھر سوم تدکے:

اَللَّهُمَّ الْعَنُ اَوَّلَ ظَالِم ظَلَمَ حَقَّ مُحَمَّدٍ وَّ الِ مُحَمَّدٍ وَ الْجِرَ تابِع لَهُ عَلَى ذٰلِكَ المَعْودا مُورِم كَا فِي رَمْت سے اللَّهُمُ اللَّهُ كَا حَلَى اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ الْعَنِ الْعِصَابَةَ الَّذِي جَساهَدُتِ الْحُسَيْسَ وَ شَايَعَتُ وَ بَايَعَتُ وَ تَابِعَتُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ الْعَنِ الْعِصَابَةَ الَّذِي جَساهَدُتِ الْحُسَيْسَ وَ شَايَعَتُ وَ بَايَعَتُ وَ تَابِعَتُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ الْعَنْهُمُ جَمِيعًا.

اورہم رائے تھا مے معبودان سب پرلعنت بھیج۔

اب سومرتبہ کے:

اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبُدِ اللهِ وَ عَلَى الْارُواحِ الَّتِي حَلَّتُ بِفِنَا فِكَ عَلَيْكَ مِنِي سَلامُ سلام ہوآپ پر اے الم مبداللہ اور سلام ان روحوں پر جوآپ کے آستان پر آتی ہیں آپ پر میری طرف سے خدا کا سلام ہو

_

اَبَدًا مَّا بَقَيْتُ وَ بَقِى اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَلا جَعَلَهُ اللَّهُ اخِوَ الْعَهْدِ مِنِّى لِزِيَارَتِكُمُ اللَّهُ الْحَرَادَة وَ اللَّهُ الْحَرَادَة وَ اللَّهُ الْحَرَادَة وَ اللَّهُ الْحَرَادَة وَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللهُ عَلَى عَلِي بُنِ النِّحْسَيْنِ وَ عَلْى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ

اَصُحَابِ الْحُسَيُنِ.

حسین کے اصحاب ر

پھر کے:

اَللْهُدَّمَّ خُصَّ اَنُتَ اَوَّلَ ظَالِمٍ مَ بِالسَّعُنِ مِنِّى وَابُدَا بِهَ اَوَّلاً ثُمَّ الْعَنِ الثَّانِي وَ الثَّالِث اے معودا خاص کیا ہے تو نے پہلے ظالم کومیری طرف سے پیزاری میں تواب ای سے پیزاری کا آغاز فرما پھراظہار بیزاری کردوسرے اور

وَ الرَّابِعَ اَللَّهُمَّ الْعَنُ مَنِ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَنْ مَا اللَّهِ مُنَ وَيَادٍ وَ ابْنَ مَوْ جَانَةَ وَ عُمَرَ تيرے اور پر چوتے ہے اے معودا لعنت كريزيد جو بانجال ہے اور لعنت كر عبيد الله فرزند زيادي، فرزند مرجاند ير، عمر

بُنَ سَعُدٍ وَ شِمُرًا وَ الَ آبِي سُفْيَانَ وَ الَ زِيَادٍ وَ الَ مَرُوانَ اللَّي يَوْمِ الْقِيامَةِ.

فرزند سعد پراورشمر پراور رحمت ہے دور کراولا دِ ابوسفیان کواو راولا د زیا د کواوراولا دمروان کوقیا مت کے دن تک۔

اس کے بعد سجد ہے میں جائے اور کیے:

اَللَّهُ مَّ لَکَ الْحَدُمُدُ حَمُدَ الشَّاكِرِينَ لَکَ عَلَى مُصَابِهِمُ اَلْحَمُدُ لِلَّهِ عَلَى عَظِيْمٍ رَزِيَّةً وَاللَّهُ مَ الْحَدُمُدُ لِلَّهِ عَلَى عَظِيْمٍ رَزِيَّةً وَاللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ عَلَى عَظِيْمٍ رَزِيَّةً وَاللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ الللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللِّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ الللْمُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ الللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللْمُنْ اللَّهُ مِنْ الللْمُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ الللْمُ

اَللَّهُمَّ ارُزُقُنِي شَفَاعَةَ الْحُسَيُنِ يَوُمَ الْوُرُودِ وَ ثَبِّتُ لِي قَدَمَ صِدُقٍ عِنْدَكَ مَعَ الْحُسَيْنِ

ا ۔ معبود حشر میں آئے سے ون مجھے حسین کی شفاعت سے بہرہ مندفر مااور میر ے قدم کوسیدھا اور پکا بنا جب میں جیرے ہاس آئل کے ساتھ

وَ أَصْحَابِ الْحُسَيُنِ الَّذِيْنَ بَذَلُوا مُهَجَهُمُ دُونَ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلامُ.

اورا محاب حسین کے ساتھ جنبوں نے حسین علیدالسلام کے لیے اپنی جا بمی بقر مان کرویں۔

زیارت عاشوراء کے بعد بردھی جانے والی دعا

صفوان بیان کرتے ہیں کہ حضرت امام جعفر صا دق الطفیلائے نے حضرت امیر الطفیلا کے جانب سر زیارت عاشوراء کو پڑھنے کے بعد بیہ دعا پڑھی:

الْمُسْتَغِيْثِينَ يَا صَرِيْخَ الْمُسْتَصُرِ خِينَ وَ يَا مَنْ هُوَ اَقْرَبُ اِلَيَّ مِنْ حَبُلِ الْوَرِيْد وَ يَا مَنْ

دا دری کرنے والے اے فریا دیوں کی فریا دکو تا بختے والے اور اےوہ جوشررگ ہے بھی زیادہ میرے قریب ہے اےوہ جومرداو راس

يَّحُولُ بَيْنَ الْمَرُءِ وَ قَلْبِهِ وَ يَا مَنُ هُوَ بِالْمَنْظِرِ الْآعُلَى وَ بِالْاَفْقِ الْمُبِينِ وَ يَا مَنُ هُوَ

کے دل کے درمیان حائل ہو جاتا ہے اےو ہ جونظر سے بالائر مجگہ اور روشن ٹر کنار ہے میں ہے اےو ہ جو بڑا مہر ہا ان نہایت رحم والا

السرَّ مُحملُ الرَّحِيمُ عَلَى الْعَرُشِ السُتَواى وَ يَا مَنُ يَعُلَمُ خَآئِدَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخُفِى الصُّدُورُ عرش رِ عادى إلى وه جوآ تحول كا رواحرات اور داول كى باتول كوجانا ج الدوج بن روق راز يوثيده فين الدوه جس كو

وَ يَا مَنُ لا يَخُفْى عَلَيْهِ خَافِيَةٌ يَّا مَنُ لا تَشْتَبِهُ عَلَيْهِ الْاَصُوَاتُ وَ يَا مَنُ لا تُغَلِّطُهُ

آ وا زوں میں غلط فہمی نہیں ہوتی اے وہ جس کو حاجمة ں میں بھول نہیں پڑتی اے وہ جس کو ما تکلنے والوں کا اصرا رہیزا رئییں کرتا اے ہر

الْحَاجَاتُ وَ يَا مَنُ لاَ يُبُرِمُهُ اللَّحَاحُ الْمُلِحِينَ يَا مُدُرِكَ كُلِّ فَوُتٍ وَّيَا جَامِعَ كُلِّ شَمُلٍ

تمشده کو پالینے والے اے بکھروں کوا کٹھا کرنے والے اورا ہےاوگوں کو بعدا زموت زندہ کرنے والے اےوہ ہررو زجس کی نتی شان

وَّ يَا بَارِئَ النُّفُوسِ بَعُدَ الْمَوْتِ يَا مَنُ هُوَ كُلَّ يَوْمٍ فِي شَأْنِ يًّا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ يَا

ہے اے حاجق کے پورا کرنے والے اے مصیبتیں دو رکرنے والے اے سوالوں کے پورا کرنے والے اے خواہشوں پر مختارا ہے

مُنَفِّسَ الْكُرُبَاتِ يَا مُعُطِىَ السُّؤُلاتِ يَا وَلِيَّ الرَّغَبَاتِ يَا كَافِيَ الْمُهِمَّاتِ يَا مَنُ يَكُفِي

مشکلوں میں مددگارا ہےوہ جو ہرامر میں مددگار ہے اورجس کے سوا زمین اور آسانوں میں کوئی چیز مددنییں کرتی سوال کرتا ہوں تھھ

مِنُ كُلِّ شَيْءٍ وَّلا يَكُفِيُ مِنْهُ شَيْءٌ فِي السَّمَواتِ وَالْاَرُضِ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ خَاتَمٍ

سے بواسط نبیوں کے خاتم محمداور بواسطہ مؤمنوں کے امیر علی مرتفعٰی کے بواسط تیرے نبی کی دفتر فاطمہ کے اور بواسط حسن وحسین کے

لنَّبيِّينُنَ وَ عَلِيِّ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِينَ وَ بِحَقِّ فَاطِمَةَ بنُتِ نَبيَّكَ وَ بِحَقِّ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْر کیونکہ میں نے انہی کے وسلے تیری طرف رخ کیا اس جگہ جہاں کھڑا ہوں ان کوا پناوسیلہ بنایا انہی کوتیر ہے ہاں سفارشی بنایا اور بواسطہ فَاإِنَّىٰ بِهِمُ ٱتَّوَجَّهُ إِلَيْكَ فِي مَقَامِيَ هَذَا وَ بِهِمُ ٱتَوَسَّلُ وَ بِهِمُ ٱتَّشَفُّعُ إِلَيْكَ وَ بِحَقِّ ان کے حق کے تیرا سوالی ہوں اس کی قتم دیتا ہوں اور چھے سے طلب رکھتا ہوں واسطدان کی شان کا جوو ہ تیرے ہاں رکھتے ہیں واسطہ ٱسُئَلُكَ وَ ٱقْسِمُ وَ ٱعْزِمُ عَلَيُكَ وَ بِالشَّانِ الَّذِي لَهُمُ عِنُدَكَ وَ بِالْقَدُرِ الَّذِي اس مرجے کا جووہ تیرے حضورر کھتے ہیں کہ جس سے تونے ان کو جہانوں میں برائی دی اورواسطہ تیرے اس مام کا جوتونے ان کے عِنُدَكَ وَ بِالَّذِي فَضَّلْتَهُمُ عَلَى الْعَالَمِيُنَ وَ بِاسُمِكَ الَّذِي جَعَلْتَهُ عِنُدَهُمُ وَ ہاں قرا رویا او راس کے ذریعے ان کو جہانوں میں خصوصیت عطا فر مائی ان کومتا زکیا اوران کی بڑائی کو جہانوں میں سب سے بڑھا دیا خَصَصْتَهُم دُونَ الْعَالَمِينَ وَ بِهَ آبَنْتَهُم و آبَنْتَ فَضَلَهُم مِنْ فَضُل الْعَالَمِينَ حَتَّى فَاقَ یہاں تک کران کی بڑائی تمام جہانوں میں سب سے زیا دہ ہوگئی سوال کرنا ہوں چھے سے کر رحمت نا زل کرمجہ و آل محمر پر اور پیر کہ دور فَضُلُهُمْ فَضُلَ الْعَبِالَمِيْنَ حَمِيُعًا ٱسْئَلُكَ ٱنْ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّ ٱنْ فرما دے میرا ہرخم ہرا ندیشہ اور ہر دکھاور میری مدد کر ہر دشوا رکام میں میرا قر ضبا دا کردے پنا ہ دے مجھ کوئنگدی سے بچا مجھ کونا داری تَكُشِفَ عَنِّي غَمِّي وَ هَمِّي وَ كُرُبِي وَ تَكُفِينِي ٱلْمُهمَّ مِنُ ٱمُورِي وَ تَقُضِي عَنِّي دَيْنِي ے اور بے نیاز کر دے مجھ کولوگوں کے آگے ہاتھ پھیلاتے ہے اور میری مددفر مااس اندیشے میں جس سے ڈرٹا ہوں اوراس سنگی میں وَ تُحِيُرَنِيُ مِنَ الْفَقُر وَ تُحِيُرَنِيُ مِنَ الْفَاقَةِ وَ تُغُنِيَنِيُ عَنِ الْمَسْئَلَةِ اِلَى الْمَخُلُو قِيُنَ وَ جس سے پریشان ہوں اس قم میں جس سے گھرا تا ہوں اس تکلیف میں جس سے خوف کھاتا ہوں اس بری مذہبر میں جس سے دبا رہتا تَكُفِيَنِيُ هَمَّ مَنُ اَخَافُ هَمَّهُ وَ عُسُرَ مَنُ اَخَافُ عُسُرَهُ وَ حُزُونَةَ مَنُ اَخَافُ حُزُونَتَهُ وَ مول اس ظلم میں جس سے سہا ہوا ہوں اس ہے داد میں جس سے تر سال ہوں اس کے قابو پائے میں جس کے قابو پائے سے ہراسال شَرَّ مَنُ اَخَافُ شَرَّهُ وَ مَكُرَ مَنُ اَخَافُ مَكُرَهُ وَ بَغْيَ مَنُ اَخَافُ بَغْيَهُ وَ جَوُرَ مَنُ اَخَافُ ہوں اس فریب میں جس سے خا نف ہوں اس کی قوت میں جس کے خود پر قوت مانے سے ڈرتا ہوں دور کر مجھ سے جال والوں کے جَوُرَهُ وَ سُلُطَانَ مَنُ آخَافُ سُلُطَانَهُ وَ كَيْدَ مَنُ آخَافُ كَيْدَهُ وَ مَقُدُرَةَ مَنُ آخَافُ

مَقُدُرَتَهُ عَلَيً وَ تَرُدُّ عَنِّي كَيُدَ الْكَيُدَةِ وَ مَكْرَ الْمَكْرَةِ اَللَّهُمَّ مَنُ اَرَادَنِي فَارِدُهُ وَ مَنُ دو رکر دے مجھ سے اس کے دھو کے فریب بختی اور اس کی بد اندلیثی کوروک دےا ہے مجھ سے جس طرح تو حیا ہے اور جہاں تو حیا ہے كَادَنِيُ فَكِدُهُ وَاصُرِفُ عَنِيْ كَيُدَهُ وَ مَكْرَهُ وَ بَأْسَهُ وَ اَمَانِيَّهُ وَ امْنَعُهُ عَنِيى كَيُفَ شِئْتَ وَ معبود!اس کومیرا خیال محلا دے الی ما داری سے جو دور ند ہوالی مصیبت سے جھے تو ندمالے الی تنگدی سے جھے تو ند ہنائے آنَّى شِئْتَ ٱللُّهُمَّ اشْغَلُهُ عَذِّي بِفَقُر لاَّ تَجُبُرُهُ وَ بِبَلَّاءٍ لاَّ تَسُتُرُهُ وَ بِفَاقَةٍ لاَ تَسُدُّهَا وَ الیم بیاری ہے جس سے تو ندبچائے الیمی ذلت ہے جس میں تو عزت ندد ہے اورالیمی ہے کئی ہے جھے تو دور ندکر دے اے معبو دا بسُـقُم لاَّ تُعَافِيُهِ وَ ذُلَ لاَّ تُعِزُّهُ وَ بِمَسُكَنَةِ لاَّ تَجُبُرُهَا اَللَّهُمَّ اضُرِبُ بِالذُّلَ نَصُبَ عَيُنَيُهِ میرے دخمن کی خواری اس کے سامنے ظاہر کر دے اس کے گھر میں فقر و فاقد کو داخل کر دے اور اس کے بدن میں دکھاور بھاری پیدا کر وَ اَدُخِلُ عَلَيْهِ الْفَقُرَ فِيُ مَنُزلِهِ وَ الْعِلَّةَ وَ السُّقُمَ فِيُ بَدَنِهِ حَتَّى تَشُغَلَهُ عَيّي بشُغُل شَاغِل وے یہاں تک کہ مجھے بھول کراہے اپنی جی پڑ جائے کراہے ہرائی کا موقع ند ملے اسے میری یا و بھلا وے جیسے اس نے تیری یا و بھلا لا فَرَاغَ لَهُ وَ ٱنْسِهِ فِرُكُومُ كَمَآ ٱنْسَيْدَةُ فِكُرَكَ وَحُدُ عَنِي سَمُعِهِ وَ بَصَرهِ وَ لِسَانِهِ رکھی ہے اور میری طرف سے اس کے کا ن اس کی آ تھھیں اس کی زبان اس کے ہاتھ اس کے با وک اس کا دل او راس کے تمام اعضاء يَدِهٖ وَ رجُلِهٖ وَ قَلُبهِ وَ جَمِيْعِ جَوَارِحِهِ وَ اَدْخِلُ عَلَيْهِ فِيُ جَمِيْعِ ذَٰلِكَ السُّقُمَ وَلاٰ تَشُفِ کوروک دے اور وار دکر دے ان سب پر بیاری او راس ہے اسے شفا نددے بیال تک کر بنا دے اس سے اس کے لیے الیم پختی جس حَتَّى تَجُعَلَ ذٰلِكَ لَهُ شُغُلاً شَاغِلاً * به عَنِّي وَ عَنُ ذِكُرى وَ اكْفِنِي يَا كَافِيَ مَالاً میں و ہر ارہے کہ مجھ سے اور میری یا دے غاقل ہوجائے او رمیری مد دکرا ہے مد دگا رکہ تیرے سوا کوئی مدد گارٹین کیونک تو میرے لیے يَكُفِيُ سِوَاكَ فَإِنَّكَ الْكَافِيُ لا كَافِيَ سِوَاكَ وَ مُفَرِّجٌ لاَّ مُفَرَّجَ سِوَاكَ وَ مُغِيُ ﴿ كافي ہے تير مصواكوئى كافى نيين تو كشاكش كرنے والا ہے تير مصوا كشاكش كرنے والانيين تو فريا درى ہے تير مصوا فريا درى نيين تو مُغِيُثُ سِوَاكَ وَ جَازٌ لاَ جَارَ سِوَاكَ خَابَ مَنُ كَانَ جَارُهُ سِوَاكَ وَ مُغِيثُهُ سِوَا پنا ہ دینے والا ہے کوئی اور ٹیس با امید ہوا جس کا تو پنا ہ دینے والا ٹیس جس کا فریا دری تو ٹیس جو بچر تیر ہے کسی ہے فریا دکرے جوسوائے مَـفُـزَعُـهُ إِلَى سِوَاكَ وَ مَهُرَّ بُكِلْبِي سِـوَاكَ وَ مَلُجَّالِكْبِي غَيْـرِكَ وَ مَـنُجَاهُ مِنْ مَخُلُوْ ق

غَيْـرِكَ فَانُتَ ثِـقَتِـيُ وَ رَجَـآئِيُ وَ مَفُزَعِيُ وَ مَهُرَبِيُ وَ مَلْجَايُ وَ مَنْجَايَ فَبِكَ اَسْتَفُ ميدگاه ميري جائے فريا دمير مے قرا رک جگهاورميري پناه گاه ہے تو جھے نجات دينے والا ہے نجات کا طالب ہوں اور کاميا في چاہتا ہوں وَ بِكَ اَسُتَنْجِحُ وَ بِمُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدِ اتَّوَجَّهُ اِلَيُكَ وَ اتَّوَسَّلُ وَ اتَّشَّفَعُ فَاسْئَلُ میں محمر وآل محمر کے ذریعے تیری طرف آیا اور انہیں وسیلہ بنا تا اور شفاعت چاہتا ہوں اس سوال ہے تھے ہے اے اللہ اے اللہ اے اللہ يَآ اَللُّهُ يَآ اَللُّهُ يَآ اَللُّهُ فَلَكَ الْحَمُدُ وَ لَكَ الشُّكُرُ وَ إِلَيْكَ الْمُشْتَكَى وَ اَذُ پس حمداو رشکر تیرے بی لیے ہے جمجھی سے شکانیت کی جاتی ہے اور تو ہے مدد کرنے والا پس سوال کرتا ہوں جھھ سے اے اللہ اے اللہ الْـمُسْتَعَـانَ فَاسُـئَـلُكَ يَآ اَللَّهُ يَآ اَللَّهُ يَآ اَللَّهُ بَحَقَّ مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ اَنُ تُصَلِّيَ عَلَمِ ا سے اللہ بواسط محمد و آل محمد ہے یہ کہ رحمت ما زل فر ماسر کار محمد و آل محمد میرا امدیشہ اور میرا دکھاس جگہ جہاں مُحَمَّدٍ وَّ ال مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تَكُشِفَ عَنِّيْ غَمِّيْ وَ هَمِّيْ وَ كُرُبِيْ فِي مَقَامِيُ هَذَا كَمَا کھڑا ہوں جیسے تو نے دور کیا تھا اپنے نبی کا اندیشہان کا قم اوران کی تنگی اور دخمن سے خوف میں ان کی مدوفر مائی پس دو رکرمیری مشکل كَشَفْتَ عَنْ نَبِيَّكَ هِمَّهُ وَغَمَّهُ وَ كَرُبُهُ وَ كَفَيْهَ هُوَٰلَ عَدُوٍّهِ فَاكْشِفُ عَنِّي كَمَ جیسے ان کی مشکل دور کی اور کشاکش دے مجھ کو جیسے ان کو کشاکش دی تھی اور میری مد دکر جیسے ان کی مددفر ماتی میرا خوف دو رکر جیسے ان کا كَشَفُتَ عَنُهُ وَ فَرِّ جُ عَذِّي كَمَا فَرَّجُتَ عَنُهُ وَاكْفِنِي كَمَا كَفَيْتَهُ وَاصُرِفُ عَذِّي هَوُلَ مَآ خوف دو رفر مایا میری تکلیف دو رکر جیسے ان کی تکلیف دور فرمائی اور و ہاندیشہ مٹاجس سے ڈرتا ہوں بغیراس کے کہاس سے مجھے کوئی اَخَافُ هَوْلَـهُ وَ مَوُّنَةَ مَا اَخَافُ مَثُوْنَتَهُ وَ هَمَّ مَا اَخَافُ هَمَّهُ بِلا مَثُوْنَةٍ عَلَى نَفُسِيُ مِنُ زحمت اٹھائی پڑے مجھے پلٹا جبکہ میری حاجتیں پوری ہوجا کیں جس امر کا اقدیشہ ہے اس میں مدد دےمیر ہے دنیا و آخرت کے تمام تر ذْلِكَ وَاصُـرِفُنِـيُ بِقَضَآءِ حَوَ آئِجِيُ وَ كِفَايَةٍ مَآ اَهَمَّنِيُ هَمُّهُ مِنُ اَمُر اخِرَتِيُ وَ دُنْيَايَ يَآ معاملات میں اےمؤمنوں کے امیر او راے ابا عبداللہ آپ پر میری طرف سے خدا کا سلام ہمیشہ جمیشہ جب تک زندہ ہوں اور رات أَمِيُـرَ الْـمُـؤُمِـنِيُـنَ وَ يَـآ اَبَا عَبُدِ اللَّهِ عَلَيُكَ مِنْيُ سَلاهُ اللَّهِ اَبَدًا مَّا بَقِيْتُ وَ بَقِيَ اللَّيُلُ وَ دن باتی ہیں اورخدامیری اس زیارت کوآپ دونوں کے لیے میری آخری زیارت ندینائے او رمیر سے اور آپ کے درمیان حدائی نہ النَّهَارُ وَلا جَعَلُهُ اللَّهُ احِرَ الْعَهْدِ مِنْ زِيَارَتِكُمَا وَلاْ فَرَّقَ اللَّهُ بَيْنِي وَ بَيْنَكُمَا اَللَّهُمَّ

ْحُينِيُ حَيْوةٌ مُسَحَمَّدٍ وَّ ذُرَيَّتِهِ وَ اَمِتُنِي مَمَاتَهُمُ وَ تَوَقَٰنِيُ عَلَى مِلَّتِهمُ وَاحُشُرُنِيُ فِيُ میں محشور فرما اور مجھ میں ان میں حداقی نہ ڈال ایک مل کی بھی بھی دنیا اور آخرت میں اے امیر المؤمنین او را ےابا عبداللہ میں آپ زُمُ رَبِهِمْ وَلاٰ تُفَرَّقُ بَيُنِيُ وَ بَيُنَهُمُ طَرُفَةَ عَيْنِ اَبَدًا فِي الدُّنْيَا وَ الْأَخِرَةِ يَآ اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيُنَ دونوں کی زیارت کوآیا کہاس کوخدا کے ہاں وسیلہ بنا وُں جومیرا اور آپ کا رب ہے میں آپ کے ذریعے اس کی طرف متوجہ ہوا اور وَ يَاۤ اَبَا عَبُدِ اللَّهِ اَتَيُتُكُمَا زَائِرًا وَّ مُتَوَسِّلاً إِلَى اللَّهِ رَبِّيُ وَ رَبِّكُمَا وَ مُتَوَجَّهًا إِلَيْهِ بِكُمَا وَ آپ دونوں کوخدا کے ہاں سفارشی بنا تا ہوں اپنی ھا جت کے با رہے میں لین میری سفارش کریں کہ آپ دونوں خدا کے حضور پہندید ہ مُسْتَشُفِعًا مِ بِكُمَا إِلَى اللَّهِ فِي حَاجَتِيُ هَذِهِ فَاشُفَعَالِيُ فَإِنَّ لَكُمَا عِنُدَ اللَّهِ الْمَقَامَ مقام بہت زیا دہ آبرو بہت اونچا مرتبہاور محکم تعلق رکھتے ہیں بے شک تمیں پلیٹ رہا ہوں آپ دونوں کے ہاں ہے اس انتظار میں کہ الْمَحُمُودَ وَ الْجَاهَ الْوَجِيُهَ وَ الْمَنْزِلَ الرَّفِيْعَ وَ الْوَسِيْلَةَ إِنِّي ٱنْقَلِبُ عَنْكُمَا مُنْتَظِرًا میری حاجت روا ہو پوری ہوا ورمراد ہر آئے خدا کے ہاں ہے آپ کی شفاعت کے ذریعے جومیر ہے تق میں آپ خدا کے ہاں مدا لِتَنَجُّزِ الْحَاجَةِ وَ قَضَائِهَا وَنَجَاحِهَا مِنَ اللَّهِ بِشَفَاعِتِكُمَا لِي اللَّهِ فِي ذَٰلِكَ فَالْأ کریں گے البذامیں مایوس نہیں اور ندمیری واپسی الیمی واپسی ہے جس میں ناامیدی ونا کامی ہو بلکہ میری واپسی ایسی ہے جو بہترین نفع آخِيُبُ وَلا يَكُونُ مُنْقَلَبِي مُنْقَلَبًا خَائِبًا خَاسِرًا ﴿ بَلُ يَكُونُ مُنْقَلَبِي مُنْقَلَبًا رَّاجِحًا مُفُلِحًا مند کامیاب قبول دعا کی حامل میری تمام حاجتیں پوری ہونے کے ساتھ ہے جبکہ آپ خدا کے ہاں میرے سفارشی ہیں تمیں ملیٹ رہا مُّنُجِحًا مُّسُتَجَابًا * بِقَضَآءِ جَمِيُع حَوَ آئِجيُ وَ تَشَفَّعَا لِيْ آلِي اللَّهِ انْقَلَبُتُ عَلَى مَا شَآءَ ہوں اس امریر جوخدا جا ہےاو رٹییں حرکت وقوت گرجوخدا ہے ملتی ہے میں نے اپنا معاملہ خدا کے سپر دکر دیا اس کا آسرا لے کر کہ خدا اللُّهُ وَلا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ الَّا بِاللَّهِ مُفَوِّضًا اَمُرِي ٓ اِلَـي اللَّهِ مُلْجاً ظَهُرِي ٓ اِلَى اللَّهِ مُتَوَكِّكلاً ری بھروسہ رکھتا ہوں او رکہتا ہوں خدامیرا ذمہ داراو رمجھے کافی ہے خدا سنتا ہے جواسے پکارے میرا کوئی ٹھھکانا ٹییں سوائے خدا کے عَلَى اللَّهِ وَ اَقُولُ حَسُبِيَ اللَّهُ وَ كَفَى سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ دَعَى لَيُسَ لِي وَرَآءَ اللَّهِ وَ اور سوائے آپ کےا ہے میرے سر دارو جومیرا رب چاہے وہ ہوتا ہے او رجوو ہ نہ چاہے قبیل ہوتا اور قبیل ہے حرکت وقوت مگر جوخدا وَرَآئَكُمُ يَا سَادَتِي مُنْتَهِى مَاشَآءَ رَبِّي كَانَ وَمَا لَمْ يَشَا لَمْ يَكُنُ وَّلا حَوُلَ وَلا قُوَّةَ اللّ

باللَّهِ ٱسۡتَوۡدِعُكُمَا اللَّهُ وَلاٰ جَعَلَهُ اللَّهُ اخِرَ الْعَهْدِ مِنِّيْ اِلۡيُكُمَا انْصَرَفُتُ يَآ سَيّدِي يَآ اَمِيْرَ ا ہے میرے آتا اے مؤمنوں کے امیراو رمیرے مددگا راور آپ ہیں اے ابا عبداللہ اے میرے سردار میراسلام ہو آپ دونوں پر الْـمُؤْمِنِيُنَ وَ مَوْلاٰيَ وَ ٱنْتَ يَآ اَبَا عَبُدِ اللَّهِ يَا سَيِّدِيْ وَ سَلاٰمِيْ عَلَيْكُمَا مُتَّصِلٌ مَّا التَّصَلَ متواتر جب تک جڑواں ہیں رات اور دن بیسلام آپ دونوں کو پہنچتا رہے بھی رکنے نہ پائے آپ پر میرا بیسلام اگر خدا چاہے اور اللَّيْلَ وَالنَّهَارُ وَاصِلُ ذَٰلِكَ اِلَيُكُمَا غَيُرُ مَحُجُو بِ عَنْكُمَا سَلآمِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ وَ اَسْئَلُهُ سوال كرتا ہوں اس سے بواسطة آپ كے كروه كى جا ہے اور كى كرے كيونكدوه ہے حمد والا برزرگى والا ميں آپ كے بال سے جاتا بحَقِّكُمَا أَنُ يَّشَاءَ ذَٰلِكَ وَ يَفُعَلَ فَإِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ الْفَلَبُتُ يَا سَيِّدَيَّ عَنْكُمَا تَائِبًا ہوں اے میرے سر داروخدا سے تو بہ کرتا اس کی حمد کرتا ہوا شکر کرتا ہوا قبولیت کاا میدوا رنہ کہنا امیدو مایوں پھرآنے آپ کی زیارت حَامِدًا لِّلَّهِ شَاكِرًا رَّاحِيًا لِّإ جَابَةِ غَيْسَ آيس وَّلا قَانِطٍ آئِبًا عَائِدًا رَّاجِعًا إلى زيارَتِكُمَا کرنے کے ارادے سے نہ آپ سے اور نہ آپ کی زیارت سے مزموڑے ہوئے بلکہ دوبارہ آنے کے لیے اگر خدا جا ہے اور نہیں غَيْرَ رَاغِب عَنُكُمَا وَالْإِ مِنُ رَيَارَتِكُمَا بَلُ وَاجعٌ عَآرِئَدُ إِنْشَاءَ اللَّهُ وَالْأَ حَوُلَ وَالْ قُوَّةَ اللَّه حرکت وقوت مگر جوخدا سے لتی ہے اے میر سے سروا رومیں شاکق ہوں آپ کا اور آپ کی زیارت کا جبکہ بے رغبت ہو گئے آپ سے باللَّهِ يَا سَادَتِيُ رَغِبُتُ اِلَيُكُمَا وَ اِلْي زِيَارَتِكُمَا بَعُدَ اَنْ زَهِدَ فِيُكُمَا وَ فِي زِيَارَتِكُمَآ اَهُلُ اور آپ دونوں کی زیارت کرنے سے بید دنیاوالے ہی نہ کرے خدا مجھے نامیداس سے جس کی امیدو آرزو رکھتا ہوں بذریعہ آپ کی الدُّنْيَا فَلا خَيَّبَنِيَ اللُّهُ مَا رَجَوُتُ وَمَآ اَمَّلُتُ فِي زِيَارَتِكُمَآ إِنَّهُ قَرِيْبٌ مُجيُبٌ. زیارت بے شک وہ زور کی تر ہے تبول کرنے والا۔

(2) اربین کے ون (۲۰مغرکو) زیارت امام حسین اللی است امام حسین اللی ہے مروی ہے، فرمایا: مؤمن کی پائی علامتیں ہیں: (۱) شب و روز میں اکاون رکعت نماز پڑھنا (جس سے نماز ہائے پڑگانہ، ان کے مقررہ نوافل اور نماز ہجرمراد ہے)۔ (۲) وائیں ہاتھ میں انگوشی پہننا۔ (۳) سجدہ کے وقت بپیٹانی خاک پر رکھنا۔ (۴) نماز میں بیٹ م السائے السر محسن الرجین ہائجر پڑھنا۔ (۵) اور زیارت اربعین کاپڑھنا۔ (۴) نماز میں بیٹ م السائے السر محسن الرجین ہائجر پڑھنا۔ (۵) اور زیارت اربعین کاپڑھنا۔ (۲ مساح معفر صادق اللی سے معتمر صادق اللی اور بیر زیارت جو ہروایت صفوان جمال حضرت امام جعفر صادق اللی استول ہے منتقول ہے ہے جواس وقت پڑھی جاتی ہے جب ۲۰ صفر کوسورج بلند ہو جائے۔

اَلسَّلاٰمُ عَلَى وَلِيِّ اللَّهِ وَ حَبِيْبِهِ اَلسَّلاٰمُ عَلَى خَلِيْلِ اللَّهِ وَ نَجِيْبِهِ اَلسَّلاٰمُ عَلى صَفِيّ اللَّهِ سلام ہوخدا کے دوست اوراس کے پیارے پرسلام ہوخدا کے سچے دوست اور چنے ہوئے پرسلام ہوخدا کے پہندید ہ اور اس کے وَابُن صَفِيَّهِ اَلسَّلامُ عَلَى الْحُسَيْنِ الْمَظُلُومِ الشَّهِيُدِ اَلسَّلامُ عَلَى اَسِيْرِ الْكُرُبَاتِ وَ بہند ہد ہ کے فرزند پر سلام ہو صین پر جوستم دید ہ شہید ہیں سلام ہو حسین پر جومشکلوں میں پڑےاو ران کی شہا دے پر آنسو بہے اے معبود قَتِيهُ لِ الْعَبَرَاتِ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَشُهَدُ اَنَّهُ وَلِيُّكَ وَ ابْنُ وَلِيَّكَ وَ صَفِيُّكَ وَابُنُ صَفِيّكَ ا میں گواہ ہوں کہ وہ تیرے دوست اور تیرے دوست کے فرزند تیرے پہندیدہ اور تیرے پہندیدہ کے فرزند ہیں جنہوں نے جھے سے عزت بِكُرَامَةِكَ ٱكُرَمُتَهُ بِالشُّهَادَةِ وَ حَبَوْتَهُ بِالسَّعَادَةِ وَاجْتَبَيْتَهُ بِطِيبِ الْوِلادَةِ وَ جَعَلْتَهُ سَيِّدً بإتی تو نے انہیں شہادت کی عزت دی ان کوخوش بختی نصیب کی اورانہیں باک گھرانے میں پیدائش کی خوبی دی تو نے قرار دیا انہیں مِّنَ السَّادَةِ وَ قَاآئِمًا مِّنَ الْقَادَةِ وَ ذَائِدًا مِّنَ الذَّادَةِ وَ أَعْطَيْتَهُ مَوَارِيْتُ الْآنبيآءِ وَ جَعَلْتَهُ سر داروں میں سر دار پیشوا وک میں پیشوا مجاہدوں میں مجاہداو رانہیں نبیوں کےورثے عنایت کیے تو نے قرار دیا ان کواوصیاء میں سےاپی حُجَّةً عَلَى خَلْقِكَ مِنَ الْارْصِيَآءِ فَاعْذَرَ فِي الدُّعَآءِ وَ مَنِحَ النَّصَحَ وَ بَذَلَ مُهُجَتَهُ فِيُك مخلوقات پر جمت پس انہوں نے تبلیغ کا حق اوا کیا بہترین خمر خوائ کی اور تیری خاطرا پی جان قربان کی تا کہ تیرے بندوں کونجات لِيَسْتَنُهِذَ عِبَادَكَ مِنَ الْجَهَالَةِ وَ حَيْرَةِ الضَّالٰالَةِ وَ قَدْ تَوَازَرَ عَلَيْهِ مَنْ غَرَّتُهُ الدُّنْيَا وَ بَا عَ دلا ئیں ما دانی و گمراہی کی پریشانیوں سے جب کہ ان پر چڑ ھائے و ہجو دنیا پر ریجھ کھے انہوں نے اپنی جا نیں معمولی چیز کے بدلے بچ حَظُّهُ بِالْاَرُذَلِ الْاَدُنٰي وَ شَرِى اخِرَتَهُ بِالثَّمَنِ الْاَوْكُسِ وَ طَغُطَرَسَ وَ تَرَدُّى فِي هَوَاهُ دیں اور اپنی آخرت کے لیے گھاٹے کا سوداخر میا انہوں نے سرکشی کی اور لا کچ کے چکھیے جل پڑے انہوں نے تھیے غضب ناک اور وَ ٱسُخَطَكَ وَ ٱسُخَطَ نَبِيَّكَ وَ ٱطَا عَ مِنْ عِبَادِكَ ٱهْلَ الشِّقَاقِ وَ النِّفَاقِ وَ حَمَلَةَ الْأَوْ تیرے نبی کونا راض کیا انہوں نے تیرے بندوں میں سے ان کی مائی جو ضدی اور بے ایمان تھے کرا ہے گیا ہوں کا ہو جھ لے کرجہتم کی الْـمُسُتَـوُجبيُـنَ النَّـارِ فَجَاهَـدَهُمُ فِيُكَ صَابِرًا مُّحُتَّسِبًا حَتَّى سُفِكَ فِي طَاعَتِكَ دَ طرف چلے سے پس صین ان سے تیرے لیے اوے جم كر بوشمندى كے ما تھ يہاں تك كرتيرى فر مانبروا رى كرنے يران كاخون بهايا كيا وَ اسْتُبِيْـحَ حَـرِيْـمُهُ اَللَّهُمَّ فَالْعَنْهُمُ لَغْنًا وَّبِيُلاً وَّ عَذِّبْهُمُ عَذَابًا اَلِيْمًا اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَابُنَ اوران کے اہل حرم کولونا گیا اے معبو دلعت کران ظالموں پر پختی کے ساتھ او رعذا ب دےان کو دردنا ک عذاب سلام ہوآپ پر اے

رَسُوُلِ اللَّهِ اَلسَّلاَّمُ عَلَيُكَ يَابُنَ سَيِّدِ الْاَوْصِيَآءِ اَشُهَدُ اَنَّكَ اَمِيُنُ اللَّهِ وَابُنُ اَمِيْنِهِ عِثُ رسول خدا کے فرز ندسلام ہوآ پ پرا سے سر داراوصیاء کے فرزند میں گوا ہوں کرآ پ خدا کے اٹین اور اس کے اٹین کے فرزند ہیں آ پ سَعِيُـدًا وَّ مَضَيُتَ حَمِيُدًا وَّ مُتَّ فَقِيُدًا مَّظُلُومًا شَهِيُدًا وَ اَشُهَدُ اَنَّ اللَّهَ مُنُحِزٌ مَّا وَعَدَكَ منک بختی میں زند ورہے قابل تعریف حال میں گز رے اورو فات باتی وطن سے دو رک آپ ستم رسیدہ شہید ہیں میں گوا وہوں کے خدا آپ وَ مُهُلِكٌ مَّنُ خَذَلَكَ وَ مُعَدِّبٌ مَنُ قَتَلَكَ وَ اَشُهَدُ آنَّكَ وَفَيْتَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَ جَاهَدُتَّ فَيْي کوجزا دے گا جس کا اس نے وعدہ کیا تباہ ہوگا وہ جس نے آپ کا ساتھ جھوڑا اور عذاب ہوگا اے جس نے آپ کوفل کیا میں تواہ ہوں سَبِيُلِهِ حَتَّى آتَيْكَ الْيَقِيُسُ فَلَعَنَ اللَّهُ مَنْ قَتَلَكَ وَ لَعَنَ اللَّهُ مَنْ ظَلَمَكَ وَ لَعَنَ اللَّهُ كرآپ نے خداكى دى ہوتى ذمه دارى نبھائى آپ نے اس كى را ہ ميں جہا دكيا حتى كرآپ شہيد ہو گئے پس خدا لعنت كرے جس نے سَمِعَتُ بِذَٰلِكَ فَرَضِيَتُ بِهِ ٱللَّهُمَّ إِنِّي أُشُهِدُكَ آنِّي وَلِيٌّ لِّمَنْ وَّالِاهُ وَ عَدُوٌّ لِّمَنْ عَادَ آپ کوفل کیا خدالعنت کرے جس نے آپ پرظلم کیا او رحدالعنت کرے اس قوم پر جس نے بیروا قعد شہا دت سناتو اس پر خوشی ظاہر کی اے بِاَدِي ٱنْتَ وَ أُمِّي يَابُنَ وَهُولِ اللَّهِ اللَّهِ ٱنَّكَ كُنْتَ نُورًا فِي ٱلْاصَلابِ الشَّامِحَةِ معبود میں بچھے گواہ بنا تا ہوں کران کے دوست کا دوست او ران کے دھمن کا دھمن ہوں میرے مال باپ قربان آپ پر اےفرزند رسول وَ الْاَرْحَامِ المُطَهَّرَةِ لَمُ تُنَجِّسُكَ الْجَاهِلِيَّةُ بِٱنْجَاسِهَا وَلَمُ تُلْبِسُكَ الْمُدُلَهِمَّاتُ هِ حدامیں گواہ ہوں کہ آپ رہے نور کی شکل میں عزت دار پشتو ں اور با کبر رحموں میں کہ جا ہلیت کی نجاستوں نے آپ کو آلودہ کیا اور نہ ثِيَابِهَا وَ اَشُهَدُ اَنْكَ مِنُ دَعَآئِمِ الدِّيُنِ وَ اَرُكَانِ الْمُسُلِمِيْنَ وَ مَعُقِلِ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ اَشُهَا بى اس نے اپنے بے بھم الباس آپ كو پہنائے ہيں ميں كوا وجول كرآپ بايد بائے دين ميں سے ہيں مسلما نول كے سرواروں ميں ہيں آنَّكَ الْإِمَامُ الْبَرُّ التَّقِيُّ الرَّضِيُّ الزَّكِيُّ الْهَادِيُ الْمَهُدِيُّ وَ اَشُهَدُ اَنَ الْائِمَّةَ مِنُ اورمؤمنوں کی پناہ گاہ ہیں میں گوا ہ ہوں کرآپ امام ہیں نیک پر ہیز گار پندید ہاپ ک رہبر را ہیافتہ اور مکیں گوا ہ ہوں کہ جوامام آپ کی وُّلُدِكَ كَلِمَةُ التُّقُواى وَ اَعُلاَّمُ الْهُداى وَ الْعُرُوةُ الْوُثُقِي وَ الْحُجَّةُ عَلَى اَهُل الدُّنْيَا اولا دمیں ہے ہوئے ہیں وہ پرہیز گاری کے تر جمان ہدا ہے کے نشان محکم تر سلسلہ اور دنیا والوں پر خدا کی دلیل و جمت ہیں تمیں گوا وہوں وَ اَشُهَدُ اَنِّي بِكُمْ مُؤُمِنٌ وَ بِإِيَابِكُمُ مُوُقِنٌ ، بشَرَايِع دِيْنِي وَ خَوَاتِيْم عَمَلِي وَ قَلْبي کہ آپ کا اور آپ کے ہز رگوں کا ماننے والا اپنے ویٹی احکام اور عمل کی جز اپر یقین رکھےوالا ہوں میرا دل آپ کے دل کے ساتھ

لِلْقَلْبِكُمُ سِلُمٌ وَّ اَمُوِى لِلَامُوكُمُ مُتَبِعٌ وَ نُصُولِنِى لَكُمُ مُعَدَّةٌ حَتَّى يَأْذَنَ اللَّهُ لَكُمُ فَمَعَكُمُ اللَّهُ لَكُمُ وَعَلَى لَكُمُ مُعَلَّكُمُ وَعَلَى اَرُواحِكُمُ وَ اَجُسَادِكُمُ وَ شَاهِدِكُمُ مَعَكُمُ لاَ مَعَ عُدُوِّكُمُ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيْكُمُ وَ عَلَى اَرُواحِكُمُ وَ اَجُسَادِكُمُ وَ شَاهِدِكُمُ وَعَلَى اَرُواحِكُمُ وَ اَجُسَادِكُمُ وَ شَاهِدِكُمُ وَاللَّهِ عَلَيْكُمُ وَعَلَى اَرُواحِكُمُ وَ اَجُسَادِكُمُ وَ شَاهِدِكُمُ وَاللَّهِ عَلَيْكُمُ وَعَلَى الرَّواحِكُمُ وَ اَجُسَادِكُمُ وَ شَاهِدِكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَعَلَى الرَّواحِكُمُ وَ اَجُسَادِكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَعَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَعَلَى الرَّواحِكُمُ وَ الجُسَادِكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَالْوَالِي اللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَالْمُعُولِي اللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَالْحُلُولُ وَالْمُعُمُ وَاللَّهُ عَلَيْكُمُ وَالْعُرُولُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْكُمُ وَاللَّهُ وَلَا عَلَمُ وَاللَّهُ وَلَهُ وَالْعُرِي اللَّهُ عَلَيْكُولُ وَالْعُرِي اللَّهُ عَلَيْكُولُ واللَّهُ عَلَيْكُولُولُ وَالْعُرِي اللَّهُ عَلَيْلُولُ وَالْعُرُولُ وَالْعُمُ وَالْعُرِي اللَّهُ لِلْكُولُولُ وَالْعُرِي اللَّهُ لِلْكُولُ وَالْعُرِي لَا اللَّهُ لِلْكُولُ وَالْعُرِي الْعُلِي لِي اللْعُرِي الللَّهُ لِلْكُولُ وَالْعُرِي الْعُلِي لَا اللَّهُ لَا اللَّهُ لِلْكُولُ وَالْعُرُولُ وَالْعُلِمُ الْعُلَالُ وَالْ

وَ غَآئِبِكُمُ وَ ظَاهِرِكُمُ وَ بَاطِنِكُمُ امِيُنَ يَا رَبَّ الْعَالَمِيُنَ.

آپ کے غائب پرآپ کے ظاہر پراورآپ کے باطن پر ایسائی ہوجہا نوں کے پروردگار۔

اس کے بعد دور کعت نماز زیارت پڑھی جائے اور پھر خدا سے اپنی حاجات طلب کی جائیں۔

SIBTAIN.COM

حضرات اما مین کاظمین علیماالسلام کی زیارت کی فضیلت اوراس کی کیفیت کابیان

(۱) مخفی نہ رہے کہ ان وا وا اور پوتے بعنی حضرت امام موی کاظم الطبی اور حضرت امام محمد تقی الطبی کی زیارت کرنے ہے۔ اور دہوئے ہیں حتی کہ واسطی حضرت امام رضا الطبی ہے سوال کرتے ہیں کہ جو شخص آپ کے والد ماجد کی زیارت کرے اس کے لیے کیا اجر ہے؟ فر مایا: اس کے لیے وہی اجر و ثوا ب ب جو حضرت رسول خدا ﷺ کی زیارت کرنے والے کے لئے ہے۔ (بدینة الزائرین)

(۲) وظاء نے حضرت امام رضا اللي الله عنوال ليا كه كل ايك امام اللي كل زيادت كرنے والے كا كياا جمد و الله كا كياا جمد و تواب ہے؟ فرمايا: اس كے ليے وہى اجمد و تواب ہے جو حضرت امام حسين اللي كى زيادت كرنے والے كے لئے ہے۔ (ايفناً و تحية الزائر)

(۳) عبدالرحمٰن بیان کرتے ہیں کہ میں نے حضرت امام محمد تقی الظیالا ہے ہو چھا کہ حضرت رسول خدا اللہ کی زیارت کرنے والے کے لیے کیا اجمہ ہے؟ فرمایا: اس کے لیے جنت ہے۔ پھر فرمایا کہ حضرت امام حسین الظیلاکی زیارت کرنے والے کے لیے بھی جنت ہے۔ (کتاب الدعاو الزیارہ)۔ بنابریں دوسرے ائمہ طاہرین علیہم السلام کی زیارت کرنے والے کے لیے بھی جنت ہوگی۔

(۷) اہراہیم بیان کرتے ہیں کہ میں نے حضرت امام علی نقی الطبیع کی خدمت میں ایک عریف لکھا جس میں حضرت امام حسین الطبیع اور حضرت امام موئ کاظم الطبیع اور امام محد تقی الطبیع کی زیارت کے ہارے میں سوال کیا تھا۔ آپ نے جواب میں لکھا کہ حضرت امام حسین الطبیع کی زیارت مقدم ہے مگر اجر و ثواب میں کاظمین کی زیارت مقدم ہے مگر اجر و ثواب میں کاظمین کی زیارت کا ثواب بھی بہت زیادہ ہے۔ (ایھناً)

امامين كاظمين عليهاالسلام كى كيفيت؟

واضح رہے کہ ان دونوں اماموں کی زیارات دوطرح کی ہیں ایک مخصوصہ جو کہ ہرامام کی علیحدہ علیحدہ علیحدہ ہے۔ ہے اور دوسری مشتر کہ جو دونوں حضرات کی زیارت میں پڑھی جاستی ہے۔

(۱) حضرت امام موی کاظم النیج کی میلی زیارت : حضرت امام رضا اور حضرت امام علی نقی علیجا السلام ہے مودی ہے، فرمایا: جب حضرت امام موی کاظم النیج کی نیارت کرنے کا ارادہ کروتو پہلے خسل کرواور پھر پاک بارگاہ میں حاضر ہوکراورامام کے چرہ انور کے سامنے کھڑے ہوکر بدنیارت رعیو:

اَلسَّلاَمُ عَلَيُكَ يَا وَلِي اللَّهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيُكَ يَا حُبِّهَ اللَّهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيُكَ يَا نُوُرَ الْمُ

فِی ظُلُمَ ابِ الْارُضِ السَّلامُ عَلَیْکَ بَا مَنُ بَدَ اللَّهِ فِی شَانِيةَ الَّيُدُکَ زَآئِرًا عَارِ فَكُّ علام ہو آپ پر اے وہ جن کی عان خدائے ظاہر فرائی آیا ہوں آپ کی نیارت کو آپ کے علی ہے واقف

بِحَقِّکَ مُعَادِیًّا لِّسَاعُدَ آؤِکَ مُوَالِیًّا لِّسَاوُلِیَّا آؤِکَ فَاشْفَعُ لِیُ عِنُد رَبِّکَ یَا مَوُلِیُّ آپ کے ڈمنوں کا دُخُن آپ کے دوستوں کا دوست ہیں میری شفاعت کریں اپنے دب کے حضور اے میرے آتا۔ پھرخداہے دعا کرواورا پی حاجات طلب کرو۔

. C. B. .

(۲) حضرت امام موی کاظم الفید کی دومری زیادت : - بیزیارت بھی حضرت امام رضالت الله علی مردی میزیارت بھی حضرت امام موی کاظم الفید یا کسی دومرے امام عالیمقام کی زیارت کرنا چا ہوتو یوں کہو:
﴿ السلام علی اولیاء اللّٰه و اصفیائه الغ

مخفی ندرے کہ بیو ہی زیارت جامعہ ہے جوشب وروز عرفہ میں حضرت امام حسین الظایا کی زیارت کے سلسلے میں کفعمی نے نقل کی جانچ ہے۔ اس مقام کی طرف رجوع کیاجائے اور وہی زیارت یہاں پڑھی جائے۔

(۱) حضرت امام محرتی اللی کی میلی زیارت : ۔ یہی اوپر والی دو زیا رات جو حضرت امام موی کاظم علیہ السلام کی زیارت کے سلسلہ میں حضرت امام رضا الظایل سے مروی ہیں ان میں سے پہلی زیارت اجینہ حضرت

}

امام علی نقی الطفی است حضرت امام محمر تقی الطفی کی زیارت کے سلسلہ میں مروی ہے۔ (۲) حضرت امام محمل قل الله كل دومرى زيارت: - حضرت امام محمر تقى الله كل بيازيارت بهى حضرت امام رضالظ الله عمروى ب كدامام محرتقى الطفية كى زيارت كے سلسله ميں يول كهو: ٱللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدِ بُنِ عَلِيٍّ هِ الْإِمَامِ التَّقِيِّ النَّقِيِّ الرَّضِيِّ الْمَرُضِيّ وَ حُجَّةِكَ اے معبودا رصت فرما محمر ابن علی کر جو امام ہیں پربیزگار برگزیدہ پندیدہ ببند شدہ اور تیری جحت عَـلَى مَنُ فَوُقَ الْارُضِ وَ مَنُ تَحُتَ الثَّراي صَلُوةً كَثِيْرَةً نَّامِيَةً زَاكِيَةً مُّبَارَكَةً مُّتَوَاصِلَةً ان سب پر جوزین کے اوپر اور زمین کے نیچے رہتے ہیں آپ پر رحمت فرما بہت زیادہ بڑھنے والی پاک تر برکت والی لگاتا ر مُّتَـرَادِفَةً مُّتَـوَاتِـرَـةً كَـاَفُضَل مَا صَلَّيْتَ عَلْى اَحَدٍ مِّنُ اَوُلِيَآئِكَ وَ السَّلامُ عَلَيُكَ يَا وَلِ مسلسل متوارز جس طرح بہترین رحمت کی ہوتو نے اپنے دوستوں میں سے کسی ایک پر اور سلام ہو آپ پر اے دوست خدا اللُّهِ وَ السَّلامُ عَلَيُكَ يَا نُورَ اللُّهِ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا حُجَّةَ اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَيُهُ سلام ہو آپ پر اے نور خدا سام ہو آپ براے جب خدا سام ہو آپ پراے مؤمنوں کے امام نبیوں کے يَا إِمَامَ الْـمُـوُّمِنِيُنَ وَ وَارَتَ عِلْمِ النَّبِيَيْنَ وَ سُلَالَةَ الْوَصِيَيْنَ ٱلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نُوُرَ اللَّهِ علم کے وارث اور اوصاء کے فرزند ہیں سلام ہو آپ پر کہ آپ زمین کی تاریکیوں میں خدا کا نور ہیں

فِی ظُلُمَاتِ الْاَرُضِ اَتَیْتُکَ زَائِسًا عَسارِفًا بِحَقِیکَ مُعَادِیًا لِّا كُفَدَاهِکَ مُوَالِهُ مِن آیا آپ کی زیارت کرنے آپ کے فل سے واقف آپ کے دشنوں کا دشن آپ کے دوستوں کا دوست ہوں

لِّاوُ لِيَّآئِكَ فَاشْفَعُ لِي عِنْدَ رَبِّكَ.

لیں اپنے رب کے حضور میری شفاعت کریں۔

ایس صداح: ده صرت امام موی کاظم الطالای ایک مفصل زیارت بعض علاء کرام جیسے شیخ مفید، شہید،
ابن طاؤوں اورصاحب مزار کبیر وغیرہ نے درج کی ہے جو مفاتیج البخان میں مذکور ہے جس میں مذکور ہے کہ پہلے عنسل کرے پھر حرم کی طرف روانہ ہو۔ اور جب وہاں پہنچاتو پہلے اذن دخول پڑھے۔ پھر حرم کے اندر وافل ہوتے وقت یہ پڑھے اورزیارت میں وہ پڑھے۔ پھر اپنے آپ کوقبر مقدی پر گرائے اورا ہے بوسہ دے اورا پنے وورا پنے وقتی رفتوں رخساروں کواس پر رکھے اور یوں کے وغیرہ وغیرہ ۔ گھر چونکہ انہوں نے اس زیارت کی نسبت کسی معصوم م

کی طرف نہیں دی ہے اس لیے ہم نے اسے نقل نہیں کیا۔ کیونکہ ہم نے اپنی ہر کتاب میں عموماً اوراس کتاب میں خصوصاً بیالتزام کیا ہے کہ اس میں صرف وہی عمل یا صرف وہی زیارت ورج کریں گے جو ہنا پر تسام وراولۂ سنن اگر چہ متند نہ بھی ہونا ہم کم از کم کسی معصوم سے منقول تو ہو۔ ﴿ لان سحلما لم یعنو ج من ہذ البیت فہو زخوف ﴾ کیونکہ جو چیز اس فانود و عصمت کے گھر سے نہ نظے وہ باطل ہے۔

ان دوامامول سے الوداع

محدث فتی نے لکھا ہے کہ جب زائر ان دو اماموں کے شہرے جانا چاہے تو اے ان ہزر کواروں سے الوداع کرنا چاہیئے جیسا کہ شیخ طوی نے تہذیب الاحکام میں فرمایا ہے کہ جب زائر امام موی کاظم النظامی سے دواع کرنا چاہیے قبرمبارک کے قریب کھڑے ہوکر یوں کہے:

اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا مَوُلاًى يَا آبَا الْحَسَنِ وَ رَحُمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُ اَلَّهُ وَ عُكَ اللَّهَ ا علام ہو آپ پر اے میرے آتا اے ابو اُلحن ً خدا کی رحمت ہو اور اس کی برکات میں آپ کو حوالہ خدا کرتا ہوں

وَ اَقْسَرَهُ عَلَيْكَ السَّلَامَ امَنَ بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَبِهَا جِمُنَ بِهِ وَ دَلَلْتَ عَلَيْهِ اللَّهُمَّ اورآپ كوسلام فِيْ كرنا مول ايمان ركتا مول خدا ورمول براوراس برجوآپ لائے اورجس كى طرف رہنمائى فرمائى اے معود بميں

اكُتُبُنَا مَعَ الشَّاهِدِيُنَ.

یہ کوائی دینے والوں میں لکھ دے۔

حضرت امام محدثق الطبيع مدواع كرتے ہوئے يہ كے: السَّلامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلاَى يَابُنَ رَسُولِ اللَّهِ عَلَيْكَ يَا مَوْلاَ عَلَا عَلَيْكَ مِنْ اللهِ عَلَيْكَ يَا مَوْلاَ عَلا كَ فَرَنَدَ

وَ رَحْمَهُ اللّهِ وَ بَرَكَاتُهُ آسُتَوُدِعُكَ اللّهَ وَ اَقُرَءُ عَلَيْكَ السّلامُ امَنًا بِاللّهِ وَ بِرَسُولِكُمْ خداكى دهمت اوراس كى بركات مِن آپ كوهولهٔ خداكرنا ہوں اور آپ كوملام بيش كرنا ہوں ايمان ركھتا ہوں خدا اوراس كے رمولَ پر

وَ بِمَا جِئْتَ بِهِ وَ دَلَلْتَ عَلَيْهِ اَللَّهُمَّ اكْتُبُنَا مَعَ الشَّاهِدِيْنَ.

اوراس پر جوآپ لائے اوراس کی طرف رہنمائی کی ہے اے معبو دیمیں یہ گواہی دیے والوں میں لکھ دے۔

اس کے بعد حق تعالی ہے دعا مائے کہ اس کا کاظمین میں آخری الوداع نہ ہواور خدا اسے دوبارہ یہاں آنے کی تو فیق مرحمت فرمائے۔

مجديرا فاكن زيارت اوراس ميس نماز يرد صفى فضيلت

بغدا داور کاظمین کے درمیان زائرین کے راستہ پر بیہ ہا پر کت مبجد واقع ہے جس کی بڑی فضیلت وارد ہوئی ہے لہٰذا زائرین کواس کی زیارت اور وہاں نماز پڑھنے کی سعادت سے اپنے آپ کومحروم نہیں کرما چاہیئے ۔ سیر

بغداوم فاباربعه كازيارت

وہ چار حضرات جوامام العصر والزمان الظام کی غیبت صفری کے ستر سالہ دور میں امام العصر الظام وران کے شیعوں کے درمیان سفارت و نیابت خاصہ کے فرائض اوا کرتے رہے ہیں لیعنی (۱) ابوعمر عثمان بن سعید اسدی، (۲) ابو جعفر محمد بن عثمان اسدی، (۳) ابوالقاسم حسین بن روح نوبختی ۔ (۴) اور شیخ ابوالحسن علی بن محرسمری رضوان اللہ علیم الجمعین جو کہ بغدا د میں مدفون ہیں ۔ ان کی عظمت وجلالت کا بیر تقاضا ہے کہ زائر بین کرام اور مؤمنین عظام انگی زیارت کے شرف سے اپنے آپ کوشر فر فرما کیں اور انکے مزارات عالیہ ریر حاضری کی سعاوت حاصل کریں ۔

حضرت يشخ كليني و ديگر چند علماءِ اعلام كى زيارات

چونکه بغداداور کاظمین میں بعض وہ چند علماءِ اعلام اورار کانِ اسلام مدفون ہیں جن کے علمی فیوض و ہر کات کے سب اہل اسلام بالعموم اور حدیات کے پررک کا گختاوی کمنوں احسال ہیں جی حضرت شیخ کلینی ، حضرت شیخ مفید ، حضرت محقق طوی ، حضرت سید مرتضی و حضرت سید رضی و امثالہم رضوان اللہ علیہم اجمعین اور علماءِ متاخرین میں آتا ہے سید صدر ، آتا ہے خاصی بزرگ وخور داور آتا ہے سید حینۃ اللہ شہرستانی وغیرهم ۔ لہذا زائرین کرام اور مؤمنین عظام کوان علماء اعلام کی قبور عالیہ کی زیارت کا شرف بھی ضرور حاصل کرنا چاہیئے ۔

سلمان محرى كى زيارت

حضرت سلمان محدی جو مدائن میں مدفون ہیں جو کہ بغدا دسے پچھ زیادہ دو رئیس ہے۔ان کی عظمت شان اور رفعت مکان کا بیہ تقاضا ہے کہ زائرین کرام مدائن جا کران کی زیارت کا شرف حاصل کریں اور پیغیبر اسلام وامیر مؤمنان کی خوشنودی کا بروا نہ حاصل کریں۔ یہی وہ سلمان ہیں جن کے حق میں پیغیبر برحق صلی اللہ علیہ والہ وسلم نے فرمایا تھا کہ ﴿ مسلمان من الله المبیت ﴾ یہی وہ سلمان محدی ہیں کہ جب ان کی مدائن میں وفات ہوئی تو حضرت امیر الطبیح کمد بینہ میں آخر یف فرما تھے مگر باعباز امامت وہاں سے مدائن تشریف لے گئے اور اپنے مقدی ہاتھوں سے ان کے شل و فن کا اہتمام کیا اور خودان کی نماز جنازہ پڑھائی اور پھرای وقت والی مدین تشریف لے گئے ہیں دوبکہ بلند ملا جس کو مل گیا

﴿ فصل ياز دهم ﴾.

ٹامن الائمة حضرت امام على رضا عليه افضل التحية والثناء كى زيارت كے بے شار فضائل اور بے حساب اجرو ثواب وار دہوئے ہیں ۔

- (۱) حضرت امام جعفرصا دق الظیران نے آباء طاہرین علیم السلام کے سلسلئ سندے حضرت رسول خداصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے روایت کرتے ہیں فر مایا : عنقر بیب میرے جسم کا ایک فکڑا سر زمین فراسان میں فون کیا جائے گا، جومؤمن ان کی زیارت کرے گا تو خداوند عالم اس کے لیے جنت کو واجب قر اردے گا اوراس کے جسم کوجہنم پرحرام قر اردے گا۔ (عیون الله فیار جا کا الان کو کتاب کی ایک الان کی ترام قر اردے گا۔ (عیون الله فیار جا کا الان کو کتاب کی ایک الان کا درام قر اردے گا۔ (عیون الله فیار جا کا الان کو کتاب کی ایک کا میں مقر اردے گا۔ (عیون الله فیار جا کا الان کو کتاب کی ایک کا میں مقر اردے گا۔ (عیون الله فیار جا کا الان کی کر ا
- (۲) حضرت امام مویٰ کاظم الطبی سے ایک طویل حدیث کے همن میں منقول ہے فر مایا: جو شخص میرے فرزندعلی رضالطبی کی زیارت کرے گاتو خداوند عالم اس کے نامهٔ انتمال میں ستر حج مقبول کا ثواب لکھے گا۔۔۔ الح ۔ (ایفناً)
- (۳) خود صفرت امام رضالظ الله عنقول ہے فرمایا: فراسان میں ایک ایسا قبہ ہے کہ جہاں صوراسرافیل کے پھو کے جانے تک ملائکہ کی آمد و رفت کا سلسلہ جاری رہے گا۔ پوچھا گیا کہ فرزندرسول اوہ کون ساقبہ ہے؟ فرمایا: وہ سرزمین طوس میں ہوگا جو جنت کے باغوں میں سے ایک باغ ہوگا پس جو شخص وہاں میری زیارت کرے گاوہ ایسا ہوگا جیسے اس نے صفرت رسول خداصلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی زیارت کی ہوگا الح ۔۔۔۔ (الیضاً)
- (۴) نیز آنجناب بی مے منقول ہے فرمایا: جو شخص مسافت کی دوری کے باوجود میری زیارت کرے گاتو قیامت کے دن تین مشکل مقامات پر میں اس سے ملاقات کروں گااور اسے شدائد قیامت سے بچاؤں گا۔ (۱)جب لوکوں کے نامہ ہائے اعمال ان کے دائیں بائیں ہاتھ میں پکڑوائے جائیں گے۔(۲)جب لوگ پل

صراط سے گزررہے ہوں گے۔(٣)اورجب لوگوں کے اعمال کاوزن کیا جائے گا۔(ایشأ)

(۵) حضرت امام محمد تقی الظیاد ہے مروی ہے فر مایا: طوس کے دو پہاڑوں کے درمیان زمین کا ایک ایسا فکڑا موجود ہے جو جنت سے لایا گیا ہے جو شخص اس زمین میں داخل ہو جائے گا تو وہ قیا مت کے دن آکش دوزخ سے آزاد ہو جائے گا۔ نیز آپ ہی ہے منقول ہے، فر مایا: جو شخص طوس جا کرمیر سے والد ماجد کی زیارت کر سے اور آپ کوامام برحق لشلیم کر بے تو میں خدا کی طرف سے اس کی جنت کا ضامن ہوں۔ (ایضاً)

حضرت امام رضا الليلا كى زيارت كى كيفيت اور پېلى زيارت

(۱) حضرت شیخ صدوق علیه الرحمه کی الفقیه ، اورا بن قولویه کی کتاب المز اروغیره کتابوں ہے مستفاد موتا ہے کہ بیزیارت ائمیلیم السلام ہے مروی ہے۔ والله العالم ۔ بہرحال من لا بحضر ہ الفقیه کے مطابق اس کی کیفیت بیہ ہے کہ آ دمی جب امام رضالطی کی زیارت پر جانے کا ارادہ کرے تو گھرہے نکلنے ہے پہلے خسل کرے اور بیدعا پڑھے: SIBTAIN.COM

﴿ اَلَـُلُهُ مَّ طَهِّرُنِسَى وَ طَهِّرُ لِنَى قَلْبِسَى وَاشُورَ لِي صَدُرِى وَ اَجُوِ عَلَى لِسَاذِي مِدُحَةً كَا اے معودا جھے پاک کر دے میرا دل پاک کر دے اور میرے بینے کو کھول دے میری زبان پر اپی مدح و ستائش جاری میں تاکید میں مذاہد کے عمل اُن ہوں کے اس میں میٹو ہیں دیا ہوں دے دور ہے ہے۔

وَ الثَّنَاءَ عَلَيُكَ فَإِنَّهُ لا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ اللَّهُمَّ اجْعَلُهُ لِي طَهُورًا وَ شِهَاءً

کر دے کیونگرفییں ہے قوت گرخیمی ہے ہا ہے معبود!ای عنسل کومیرے لیے با کیزگی وشفا کا ذریعہ بنا۔

جب گرے سفرزیا رت پر روانہ ہوتو ہیے:

﴿ بِسُسِمِ اللَّهِ وَ بِاللَّهِ وَ إِلَى اللَّهِ وَ إِلَى اللَّهِ وَ إِلَى اللَّهِ حَسُبِى اللَّهُ تَوَكَّلُتُ عَلَى اللَّهِ وَاللَّهِ حَسُبِى اللَّهُ تَوَكَّلُتُ عَلَى اللَّهِ عَدُاكُنَام عَذَاكُنَام عَذَاكُ اللَّهِ عَدُاكُ عَلَى اللَّهِ عَدُاكُ اللَّهِ عَدُاكُ اللَّهِ عَدُوس كَيَا عِلَى اللَّهِ عَدُاكُ اللَّهِ عَدُاكُ اللَّهِ عَدُاكُ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَدُاكُ اللَّهِ عَدُاكُ اللَّهِ عَدُاكُ اللَّهِ عَدُاكُ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَدُاكُ اللَّهِ عَدُاكُ اللَّهِ عَدُاكُ اللَّهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الل

اَللَّهُمَّ اِلَيُكَ تَوَجَّهُتُ وَ اِلَيُكَ قَصَدُتُ وَمَا عِنْدَكَ اَهُوْتُ

یراے معبو دامیں نے تیری طرف رخ کیا اور تیری طرف چلا اور جو پھے تیرے ہاں ہے اس کی خواہش رکھتا ہوں۔

بعد ازاں اپنے اہل وعیال کو یوں الوداع کرے: ﴿ اَللَّهُمَّ اِلَيُكَ وَجَّهُتُ وَجُهِيُ وَ عَلَيُكَ خَلَّفُتُ اَهْلِيُ وَ مَالِيُ وَمَا خَوَّلُتَنِي وَ بكَ وَ ثِا اے معبود! میں نے اپنا رخ تیری طرف کیا اور میں نے اپنا مال اپنا کنبہ اور جو پھے تو نے دیا ہے سب پھھے تیرے سپر دکیا اور تھھ پر بجروسہ کیا فَلا تُسخَيّبُنِي يَا مَنُ لاً يُسخَيّبُ مَنُ آرَادَهُ وَلا يُضَيّعُ مَنُ حَفِظَهُ صَلّ عَلى مُحَمّدٍ وَ ال ے پس جی دست نہ کچیوا ہے وہ جو جی دست نبیس کرنا جواس کی طرف آئے وہ تم نبیس ہونا جس کی وہ حفاظت کرے رحمت فر ماحضرت محمآور مُحَمَّدٍ وَّ احْفَظُنِيُ بِحِفُظِكَ فَإِنَّهُ لا يَضِينُعُ مَنُ حَفِظُهُ _ آل محر تراور مجھ کوا چی گلمانی میں رکھ کیونکہ جو تیری حفاظت میں ہووہ ضائع نہیں ہوتا ۔ اور جب خیریت کے ساتھ مشہد مقدس پہنچ جائے اور جب وہاں زیارت کرنے کا قصد کر سے تو پہلے عشل كر ماوراس وقت بديروه: ﴿ اَللَّهُ مَّ طَهِّرُ نِنِي وَ طَهِّرٌ لِي قَلْبِي وَاشُرَحُ لِيُ صَدْرِيُ وَ اَجْرِ عَلَى لِسَانِي مِدْحَةَكَوَ اے معبودا مجھے باک کر دیکے میرا دل باک کر دیے اور میر کے سے کو تھل دے میری زبان پر اپی ستاکش مَحَبَّدَكَ وَ الثَّنَاءَ عَلَيُكَ فَإِنَّهُ لا قُوَّةَ إلَّا بكَ وَ قَدْ عَلِمُتُ اَنَّ قِوَامَ دِيُنِي التَّدُ ا پی محبت اورتعریف جاری فرما دے کہ یقینا نہیں کوئی قوت گرجو تھھ سے ملتی ہےاور میں چاہتا ہوں کہ میرے دین کی اصل تیرے تھم کا ماننا ِلَامُـرِكَ وَ الْإِتِبَاعُ لِسُنَّةِ نَبِيَّكَ وَالشَّهَادَةُ عَلَى جَمِيْعِ خَلْقِكَ اَللَّهُمَّ اجُعَلُهُ لِيُ شِفَآ تیرے نبی کی سنت کی پیروی کرنا اور تیری مخلوقات پر مگواہ بنا ہے اے معبودا اس عنسل کو میرے لیے شفا و نُوُرًا إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيُّ قَدِيْكُو _ روشیٰ کاؤر بعیرہنا کیونکہ تو ہرچیز پر قدرت رکھتا ہے۔ اس کے بعد پاک و پاکیزہ لباس پہنے اور نگے پاؤں خداکی یا دکرتے ہوئے آرام سے حرم مبارک کی طرف چلے اور ریہ پڑھتا جائے:

﴿ اللَّهُ اكْبَرُ لَا اِللَّهِ اللَّهُ سُبُحَانَ اللَّهِ وَ الْحَمُدُ لِلَّهِ ﴾ ـ

خدایز رگتر ہے نہیں کوئی معبود سوائے خدا کے خدا یا ک تر ہے اور ہر تعریف خدا کے لیے ہے۔

علتے ہوئے چھوٹے چھوٹے قدم اٹھائے اورجب روضۂ اقدی میں داخل ہوتو یہ بڑھے: ﴿ بسُهِ اللَّهِ وَ بِاللَّهِ عَلَى مِلَّةِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ اَشُهَدُ اَنُ لَّا إِلَّهَ اللَّهُ خدا کے نام سے خدا کی ذات سے اور رسول خدا کے طریقے پر خدا رحمت کرےان پر اور ان کی آل پر تمیں گواہ ہوں کر نہیں کوئی معبود سوائے وَحُدَهُ لا شَرِيُكَ لَهُ وَ اَشُهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ رَسُولُهُ وَ اَنَّ عَلِيًّا وَلِيُّ اللَّهِ اللد کے جو بکتا ہے کوئی اس کا ساجھی خیس منیں گوا ہ ہوں کہ محمال کے بندہ اور رسول ہیں اور یہ کرعلی حدا کے دوست ہیں۔ پھرضر تے پاک کے قریب جائے اور پشت بہ قبلہ ہو کر حضرت امام الطاب کی طرف رخ کرے اور کہے: ﴿ اَشُهَدُ اَنُ لَّا إِلَّهَ اِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لا شَرِيُكَ لَهُ وَ اَشُهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ رَسُولُهُ وَ اَنَّهُ منیں گواہ ہوں کرٹینں کوئی معبو دسوائے خدا کے وہ بکتا ہے اس کا کوئی سامجھی ٹینں اور ممیں گواہ ہوں کہ مجماس کے بندہ اور رسول ہیں وہ سردا ر سَيَّدُ الْاَوَّلِيُنَ وَ الْاَخِرِيْنَ وَ اَنَّهُ سَيَّدُ الْاَنْبِيَآءِ وَ الْمُرُسَلِيُنَ اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبُدِكَ ہیں پہلوں کے اور پیچھلوں کے اور وہ سردار ہیں سب نبیوں اور رسولوں کے اے معبود رحمت کر حضرت محمد پر جو تیرے بندہ وَ رَسُولِكَ وَ نَبِيَّكَ وَ سَيْدِ خَلُقِكَ أَجُمَعِينَ صَلُوةً لَا يَقُولِي عَلَى اِحْصَائِهَا غَيُرُكَ ٱللَّهُمَّ تیرے رسول تیرے نی اور تیری ساری محلوق کے سردار ہیں ان پر الیسی رحمت فرماجس کا حساب تیرے سوا کوئی نہ لگا سکے۔اے معبودا صَلِّ عَلْمَى اَمِيْرِ الْـمُوْمِنِيُنَ عَلِيِّ بُنِ اَبِيُ طَالِبٍ عَبُدِكَ وَ اَخِيْسُولِكَ الَّذِي انْتَجَبُتَهُ ﴿ رحمت فرما حضرت امیر الموشین علی بن افی طالب میر جو تیرے بندہ اور رسو<mark>ل</mark> کے بھائی ہیں کہ انہیں خاص کیا تو نے بِعِلْمِكَ وَ جَعَلْتَهُ هَادِيًا لِّمَنُ شِئْتَ مِنُ خَلْقِكَ وَ الدَّلِيْلَ عَلَى مَنُ بَعَثْتَهُ بِرِسَالاتِكَ علم دے کراور بنایاان کورہبراس کے لیے جھے تونے اپن مخلوق میں سے جا ہااوررہنما بنایا اس کی طرف جس کوتو نے اپنا پیغام دے کر بھیجااور دَيَّانَ الدِّيُن بِعَدُلِكَ وَ فَصُل قَضَآئِكَ بَيُنَ خَلْقِكَ وَ الْمُهَيُمِنَ عَلَى ذَٰلِكَ كُلِّهِ وَ الشُّيِّكُلُّامُ ان کوتشر رکیا کہ تیرے عدل کے مطابق جزائے عمل دیں اور تیری مخلوق میں تیری مرضی سے فیلے دیں اور و وان تمام کاموں کے ذمہ دار ہیں عَـلَيْـهِ وَ رَحُـمَةُ اللَّـهِ وَ بَـرَكَاتُـهُ اَللَّهُـمَّ صَلَّ عَلَى فَاطِمَةَ بنُتِ نَبيَّكَ وَ زَوْجَةِ وَلِيَّكَ سلام ہوان پر خدا کی رحمت ہو اور اس کی برکات اے معبو درحت نا زل کر فاطمہ "پر جو تیرے ٹی کی دفتر اور تیرے ولی کی زوجہ ہیں وَ أُمَّ السِّبُطَيُنِ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيُنِ سَيِّدَى شَبَابِ اَهُلِ الْجَذَّةِ الطُّهُرَةِ الطَّاهِرَةِ الْمُطَهَّرَةِ نیز وہ ماں ہیں نبی کے دو نواسوں حسن وحسین کی کہ وہ دونوں جوانان جنت کے سردار ہیں وہ نی بی بیاک بیا کیزہ بیاک شدہ

_

السُّقِيَّةِ النَّقِيَّةِ الرَّضِيَّةِ الزَّكِيَّةِ سَيِّكَةِ نِسَآءِ أَهُلَ الْجَنَّةِ أَجُمَعِينَ صَلُوةً لا يَقُواى عَلْي پر بیزگار با صفا پہندیدہ بے عیب نیز جنت میں تمام عودتوں کی سردار بیں ان پر اتنی رهت فرما که کوئی شار اِحْصَآئِهَا غَيُرُكَ اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ سِبُطَىٰ نَبِيَّكَ وَ سَيَّدَىٰ شَبَابِ اَهُ نہ کرسکتا ہوا ہے معبودا رحمت فرما دونوں بھائیوں حسن اور حسین پر جو تیرے نبی کے دونواسے اور جوانان جنت کے سید وسر دار ہیں الْجَنَّةِ الْقَآئِمِيُسْ فِي خَلْقِكَ وَ الدَّلِيُلَيُن عَلَى مَنْ بَعَثْتَ برِسَالاَتِكَ وَ دَيَّانَي الدِّيُ تیری مخلوق میں قائم و محران ہیں اور رہنمائی کرتے ہیں اس ذات کی طرف جے تو نے پیغیر بنا کے بھیجا وہ تیرے عدل کے تحت بِعَدُلِكَ وَ فَصْلَىٰ قَضَائِكَ بَيْنَ خَلْقِكَ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى عَلِيٌّ بُنِ الْحُسَيْنِ عَبُدِكَ الْكَائِم اعمال کی جزا دینے والےاور تیری مخلوق میں تیرے احکام کے مطابق فیلے دینے والے ہیں اے معبودا رحمت فرماعلی بن الحسین پر جو تیرے فِيُ خَلْقِكَ وَ الدَّلِيُلِ عَلْمَنُ بَعَثُتَ برسَالَةِكَ وَ دَيَّانِ الدِّيُنِ بِعَدُلِكَ وَ فَصُل قَضَآئِكُ بندہ ہیں تیری مخلوق میں مگمهداراور رہنمائی کرتے ہیں اس ذات کی طرف جے تو نے پیٹمبر بنا کے بھیجاوہ تیرے عدل کے تحت اعمال کی جزا بَيْنَ خَلْقِكَ سَيِّدِ الْعَابِدِيْنَ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدِ بُنِ عَلِيَّ عَبُدِكَ وَ خَلِيُفَتِكَ دیے والے اور تیری مخلوق میں تیری مرضی سے قصلے دیے والے عبا دیے گزاروں کے سر دار ہیں آئے معبو دا رحمت فرما محمر بن علی پر جو تیرے اَرُضِكَ بَاقِر عِلْم النَّبِيِّينَ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى جَعُفَر بُن مُحَمَّدِالصَّادِق عَبُدِكَ وَ وَلِيّ بندہاورتیری زمین میں تیرے ایب ہیں نبیوں کے علوم کی اشاعت کرنے والے اے معبود! رحمت فر ماجعفرٌ صادق بن محمدٌ پر کہ جوتیرے بندہ دِيْنِكَ وَ حُجَّتِكَ عَلَى خَلُقِكَ اَجُمَعِيْنَ الصَّادِقِ الْبَآرِّ اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُوْسَى بُن جَعُ میں تیرے دین کے مددگا راور تیری مخلوق بر تیری طرف سے جمت میں وہ صاحب صدق میں نیکوکارا مے معبو دار حمت فرماموی میں جعفر پر جو عَبُدِكَ الصَّالِحِ وَ لِسَانِكَ فِي خَلْقِكَ النَّاطِقِ بِحُكْمِكَ وَ الْحُجَّةِ عَلَى بَرِيَّةِكَ ﴿ لِلَّهُمَّ تیرے نیکوکار بندے اور تیری مخلوق میں تیرے تھم سے بولنے والی زبان میں اور تیری مخلوقات پر تیری ججت میں اے معبودا صَلَّ عَلَى عَلِيٌّ بُنِ مُوْسَى الرِّضَا الْمُرْتَضَى عَبُدِكَ وَ وَلِيٌّ دِيْزِكَ الْقَآئِمِ بِعَدُلِكَ رحمت فرما علی بن موی " پر کہ جو چھے سے راضی ہیں تیرے پہندیدہ بندے ہیں تیرے دین کے مددگار تیرے عدل پر کاربنداور الدَّاعِيْ اِلِّي دِيْنِكَ وَ دِيُنِ ابَآئِهِ الصَّادِقِيُنَ صَلُوةً لاَّ يَقُولَى عَلْى اِحْصَآئِهَا غَيُرُكَ اللَّهُ ﴿ تیرے دین کی طرف بلانے والے ہیں جوان کے صاحب صدق ہن رگول کا دین ہے ان براتی رحت کرجس کا شارسوائے تیرے کوئی ندکر

صَلِّ عَـلَى مُحَمَّدِ بُنِ عَلِيّ عَبُدِكَ وَ وَلِيّكَ الْقَآئِمِ بِٱمْرِكَ وَ الْلَّالْحَيْسَبِيْلِكَ اللَّهُ سكتابوا معبو درجت فرما محمّد بن عليّ مرجوتير بندهاورتير ، دوستدار بين تيراهكم پنچانے والےاورتير براستے كى طرف بلانے والے صَلِّ عَلَى عَلِيِّ بُنِ مُحَمَّدٍ عَبُدِكَ وَ وَلِيَّ دِيْزِكَ اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى الْحَسَنِ بُن عَلِيً ا ہے معبودا رحمت نا زل کرعلیٰ بن محمد پر جو تیرے بندہ اور تیرے دین کے مددگار ہیں اے معبود! رحمت نا زل فرماحسن بن علیٰ پر جو تیرے الُعَامِل بِاَمُرِكَ الْقَآئِم فِي خَلْقِكَ وَ حُجَّةِكَ الْمُؤدِّي عَنْ نَّبيَّكَ وَ شَاهِدِكَ عَلَى فَيُلْقِكَ تھم پر عمل کرنے والے تیری مخلوق میں محمان تیرے نی کی طرف جبت پیش کرنے والے تیری مخلوق پر تیرے مواہ الْمَخْصُوُ ص بِكَرَامَتِكَ الدَّاعِلَى طَاعَتِكَ وَ طَاعَةِ رَسُوُلِكَ صَلَوْتُكَ عَلَيْهِمُ اَجُمَهِ تیری طرف سے ہزرگی میں خاص کردہ تیری اطاعت اور تیرے رسول کی فرمانبر داری کا تھم دینے والے تیری رحمتیں ہوں ان سب ہر ٱللُّهُمَّ صَلَّ عَلَى خُجَّةِكَ وَ وَلِيَّكَ الْقَآئِمِ فِي خَلْقَكَ صَلُوةً تَآمَّةً نَّامِلِقَيَّةً تُعَجّلُ بِهَا ا ہے معبو دار حمت ما زل فرماا چی جمت اور اپنے دوست پر جو تیری مخلوق میں گھہان ہیں وہ رحمت جو کامل تر تی پذیریا تی رہنے والی ہے اس سے فَرَجَهُ وَ تَسُصُرُ بِهَا وَ لَيُجِعَلْنَا مَعَهُ فِي الدُّلْيَا وَ ٱلاَخِرَةِ ٱللَّهُمُ إِنِّي أَقَوَّابُ اِلدُكَ بِحُبِّهِ انہیں کشادگی دےاوران کی مدفر ما اور رکھ ہمیں ان کے ساتھ دنیا اور آخرت میں اے معبود! میں تیرا قرب جا ہتا ہوں بواسطان کی محبت کے وَ أُوَالِيُ وَلِيَّهُمُ و أُعَادِىُ عَدُوَّهُمُ فَارُزُقُنِي بِهِمُ خَيُرَ الدُّنْيَا وَ الْأَخِرَةِ وَ اصُرف مَیں ان کے دوستوں کا دوست اوران کے دشمنوں کا دخمن ہوں اس عطا کران کے طفیل دنیا کی بھلائی اور آخرت کی فلاح اور پواسطهان کے عَنِّيُ بِهِمْ شَرَّ الدُّنْيَا وَ الْأَخِرَةِ وَ اَهُوَالَ يَوُمِ الْقِيَامَةِ ﴾ ـ

پھر حصرت مے سر ہانے کی طرف بیٹھ جائے اور کے:

دنیاو آخرت کی تنگی سے مجھے بچائے رکھاور قیا مت میں ہر خوف سے محفوظ فرما۔

﴿ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللهِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللهِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا نُوْرَ اللهِ اَللهِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا انْوُرَ اللهِ اَللهِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا اَنُورَ اللهِ اَللهِ اللهِ اللهُ اللهُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ ادَمَ صِفُوةِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ ادَمَ صِفُوةِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ ادَمَ صِفُوةِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ ال

ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا وَارِثَ نُـوُحٍ نَبِيِّ اللَّهِ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَـا وَارِثَ اِبْرَاهِيُمَ خَلِيُل سلام ہو آپ پر اے نوخ کے وارث جو نبئ خدا ہیں سلام ہو آپ پر اے ایمائیم کے وارث جو خدا کے طلیل ہیں ٱلسَّلاٰمُ عَـلَيُكَ يَـا وَارِتَ اِسُـمْعِيْلَ ذَبِيْحِ اللَّهِ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا وَارِتَ مُوْسَى كَلِيْم سلام ہو آپ پر اے اسامیل ؑ کے وارث جو ذہح خدا ہیں سلام ہو آپ پر اے موی ؓ کے وارث جو خدا کے کلیم ہیں ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا وَارِتَ عِيُسْمِي رُوْحِ اللَّهِ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدٍ رَّسُول سلام ہو آپ پر اے عینی کے وارث جو خدا کی روح ہیں سلام ہو آپ پر اے محد کے وارث جو خدا کے رسول ہیں ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا وَارِثَ اَمِيُـرِ الْـمُؤْمِنِيُنَ عَلِيَّ وَلِيِّ اللَّهِ وَ وَصِيَّ رَسُوُل رَبّ الْعَالَمِيُنَ سلام ہو آپ پر اے امیر الموشین علی ی کے وارث جو خدا کے دوست اور رب کائنات کے رسول کے جاتھین ہیں اَلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا وَارِتَ فَاطِمَةَ الزُّهُورَآءِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيُ سلام ہو آپ ہر اے فاطمہ زہرا " کے وارث سلام ہو آپ ہر اے وارث حسن " و حسین " جو سَيّدَىُ شَبَابِ اَهُـلِ الْجَنْةِ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَـمُوَارِثَ عَلَىّ بُنِ الْحُسَيْنِ زَيْنِ الْعَابِدِيْنَ جوامانِ جنت کے سید و سردار ہیں سلام ہو آپ پر اے علی میں انتحسین کے وارث جو عبادت گزاروں کی زینت ہیں اَلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدِ بُن عَلِيّ بَاقِر عِلْمِ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ اَلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ سلام ہو آپ پر اے محمر " بن علی " کے وارث جو ظاہر کرنے والے ہیں پہلوں پیچیلوں کے علم کو سلام ہو آپ پر يَا وَارِثَ جَعُفَر بُن مُحَمَّدِ ﴿ الصَّادِقِ الْبَآرِّ اَلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا وَارِثَ مُوْسَى بُن جَعُفَر اے جعفر " بن محمہ " کے وارث جو صاحب صدق ہیں نیکوکار سلام ہو آپ پر اے وارث مویٰ " بن جعفر " اَلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ الشُّهِيُدُ اَلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ اَيُّهَا الْوَصِيُّ الْبَآرُ التَّقِيُّ اَشُهَدُ اَذَّ سلام ہو آپ ہر اے صاحب صدق شہید سلام ہو آپ ہر اے وصیٰ تیکوکار و پرہیزگار میں کواہ ہوں کہ آپ نے قَـٰدُ ٱقَـٰمُتَ الصَّلُوةَ وَ ٱتَّيُتَ الزَّكُوةَ وَ ٱمَرُتَ بِالْمَعُرُوفِ وَ نَهَيُتَ عَنِ الْمُنْكُرِ وَ عَبَدُتَ نماز قائم رکھی اور زکوۃ دیتے رہے آپ نے نیکیوں کا تھم دیا اور برائیوں سے منع کیا آپ خدا کی بندگی للَّهَ حَتَّى اَتَيُكَ الْيَقِينُ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَآ اَبَا الْحَسَنِ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكُهاتُهُ

پھر خود کو ضریح باک ہے لیٹائے اور کے:

﴿ اَللّٰهُ مَّ اِلَيْكَ صَمَدُتُ مِنُ اَرُضِى وَ قَطَعُتُ الْبِلادَ رَجَاءَ رَحُمَةِكَ فَلا تُخَيِّبُنِي ﴿ اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ اللهُ مَا اللهُ اللهُو

وَلاٰ تَرُدُّنِيُ بِغَيْرِ قَضَآءِ حَاجَتِيُ وَ ارْحَمُ تَقَلَّبِيُ عَلَى قَبُرِ ابْنِ آخِيُ رَسُوُلِكَ صَلَوتُكَ عَلَيْمُ

اور مجھے نہ پلٹا میری حاجت روائی کے بغیر اور رقم فرما جبکہ میں تیرے رسول کے بھائی کے فرزند کی قبر پر بڑا ترقیبا ہوں تیری رحمتیں ہوں

وَ الِهِ بِاَهِيْ أَنْتَ وَ أُمِّيَ يَا مَوُلاًىَ آتَيُتُكَ زَآئِرًا وَّافِدًا عَآئِذًا مِّمًا جَنَيُتُ عَلَى نَفُسِيُ ﴿

ان پراوران کی آل پر قربان آپ پرمیرے باپ اےمیرے آقا آیا ہوں آپ کی زیارت کرنے حاضر ہوا ہوں بناہ لینے اس جرم سے جومیں

وَ احْتَ طَبُتُ عَلَى ظَهُ رِئُ فَكُنُ لِي شَافِعًا إِلَى اللَّهِ يَوُمَ فَقُرِئُ وَ فَاقَتِي فَلَكَ عِنْدَ اللَّهِ

نے اپی جان پر کیا اوراس کابا رمیری گرون پر ہے ہیں بن جائیں میری حمایتی خدا کے سامنے میری غربت ونا داری کے دن کیونکہ آپ خدا

مَقَامٌ مَّحُمُودٌ وَّ أَنْتَ عِنْدَهُ وَجِيْهُ ﴾ ـ

کے ہاں بلندمرتبدر کھتے ہیں اور اس کرزوی آپ باعظ کے بار اور اس کرزوی آپ باعظ کے بار

پس اپنا دایا ب ہاتھ بلند کرے بایا ں ہاتھ قبر مبارک پر رکھے اور یہ کہے:

مِنُ كُلِّ وَلِيْجَةٍ دُونَهُمُ اَللَّهُمَّ الْعَنِ الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَةَكَ وَ اتَّهَمُوا نَبِيَّكَ وَ جَحَدُولُ

اولین کا اور بیزار ہوں ہر گروہ سے سوائے ان کے اے معبودلعنت بھیج کر ان لوگوں پر جنہوں نے تیری قعمت کو جگہ سے ہٹایا یا تیرے پیٹیمبر کو

بِايُاتِكَ وَ سَخِورُوا بِإِمَاهِكَ وَ حَمَلُوا النَّاسَ عَلْى اكْتَافِ الِ مُحَمَّدِ اللَّهُمَّ إِلَّهُ هُوَبُ الزام ديا تيرى آيون كا اثكاركيا تير مقرركرده امام كي بني الرانى اور دسر الوكون كآل مُمَّ برعاكم ومخار بنايا المعبود من تيرا قرب

إِلَيُكَ بِاللَّغُنَةِ عَلَيْهِمُ وَ الْبَرَآئَةِ مِنْهُمُ فِي الدُّنْيَا وَ الْاخِرَةِ يَا رَحُمْكُ -

جا ہتا ہوں ان ظالموں پرلعنت کر کے اور ان سے بیزار**ی** کرتے ہوئے دنیا اور آخرت میں اے بہت رحم والے ۔

پر حضرت کی بائتی کی طرف جائے اور کے:

﴿ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْكَ يَآ ابَا الْحَسَنِ صَلَّى اللَّهُ عَلَى رُوُحِكَ وَ بَدَذِكَ صَبَرُتَ وَ اَنُّهُ خدا رحت كرے آپ پر اے ابوالحن ً خدا رحت فرمائے آپ كی دوح پر اور آپ كے بدن پر كر آپ نے مبركيا اور آپ

الصَّادِقُ الْمُصَدِّقُ قَتَلَ اللَّهُ مَنْ قَتَلَكَ بِالْآيُدِى وَ الْآلُسُكِي _

میں تقدیق شدہ خداقل کرے اے جس نے آپ کے قل میں ہاتھ اور زبان سے کام لیا۔

اس کے بعد بہت گریہ وزاری کرے اورامیر المؤمنین القیالی امام حسن القیالی اور دیگر افرادالل بیت کے قاتلوں پر بے شار لعنت کرے۔ پھر حضرت کے سربانے کی طرف ہوکر دورکعت نماز زیارت بھا لائے کہ پہلی رکعت میں سورہ حمر کے بعد سورہ کیلین اور دوسری رکعت میں سورہ حمر کے بعد سورہ رحمٰن کی الائے کہ پہلی رکعت میں سورہ حمر کے بعد سورہ کوئن کی تلاوت کرے۔ جب نماز سے فارغ ہو جائے تو خدا کے حضور نالہ وزاری کرتے ہوئے اپنے لیے اپنے والدین اور تمام مؤمنوں کے لیے زیادہ دعائیں مائے اوراس کے بعد جب تک چاہ وہاں ذکر الہی میں مشغول رہے اور مناسب وگا کہ اپنی واجب نمازی کی حضرت القبالی کے تعد جب تک چاہ وہاں ذکر الہی میں مشغول رہے اور مناسب وگا کہ اپنی واجب نمازی کی حضرت القبالی کے تعد جب تک کے زدیک ہی بجا

(۲) حضرت امام رضالطی کی دوسری زیارت: -جناب ابن قو لوید نے حضرات انگرے روایت کی ہے کہ جب زائر حضرت امام رضالطی کی قبر مقدس کے پاس قریب جائے تو میدزیارت پڑھے:

﴿ اَللّٰهُ مَّ صَلِّ عَلَى عَلِي ابُنِ مُوسَى الرِّضَا الْمُوتَضَى الْإِمَامِ التَّقِيِّ النَّقِيِّ وَ حُجَّةِكَ اللهُ مَعُود رحمت مازل كرعل من موئ پرجو صاحب رضا بنديده اور امام بين بإرما بإكيزه اور تيرى جمت بين عَلَى مَنْ فَوُقَ الْاَرْضِ وَمَنْ تَحُتَ الشَّراى السِّدِيْقِ الشَّهِيْدِ صَلُّوةً كَثِيْرَةً تَامَّةً اللهُ مِنْ فَوُقَ الْاَرْضِ وَمَنْ تَحُتَ الشَّراى السِّدِيْقِ الشَّهِيْدِ صَلُّوةً كَثِيْرَةً تَامَّةً اللهُ يَعِيدُ مِن بِهِ وَرَبُن بِهِ وَمَ مَاحِ مَدِقَ شَهِد بِين ان بِرَ رحمت كربهت زياده كال

زَاكِيَةً مُّتَوَاصِلَةً مُّتَوَ اتِرَةً مُّتَرَادِفَةً كَافُضَلِ مَا صَلَيْتَ عَلَى اَحَدٍ مِّنُ اَوُلِيَآدِك إكبره بِ بيكانا رُسلس فِيعة نے بهترين رحت كى بواپ دوستوں ميں ہے كى ايك پر۔

(۳) حضرت امام رضالظی کی تیسری زیارت: بیجے جناب شیخ مفید نے اپنی کتاب مقععہ میں نقل

֍֍֍֍֍֍ֈ֍֍ֈ֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍֍ فرمایا ہے۔اور کہا ہے کہ زائر کو چاہئے کو مسل کرنے اور با کیزہ لباس زبیب بدن کرنے کے بعد امام الظام کی قبر اقدس کے ماس کھڑے ہو کر بیزیارت پڑھے: ﴿ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا وَلِيَّ اللَّهِ وَابُنَ وَلِيَّهِ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا حُجَّةَ اللَّهِ وَ ابُنَ حُجَّ سلام ہو آپ پر اے دوست خدا و دوست خدا کے فرزند سلام ہو آپ پر اے جمت خدا و جمت خدا کے فرزند ٱلسَّلامُ عَلَيُكَ يَاۤ اِمَامَ الْهُدَى وَ الْعُرُقَ الْـُوثُقَـٰى وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ ٓ اَشُهَدُ اَنَّكَ سلام ہو آپ پر اے ہدایت والے امام اور سلسار محکم خدا کی رحمت ہو اور اس کی برکات نمیں محاہ ہوں کہ آپ ای عقیدے پر مَـضَيُتَ عَـلَى مَا مَضْى عَلَيُهِ ابَآوُكَ الطَّاهِرُونَ صَلَوْاتُ اللَّهِ عَلَيُهِمُ لَمُ تُؤْثِرُ عَمًى عَلَم ونیا سے ملکے جس پر آپ کے باک شدہ بزرگ رفصت ہوئے خدا کی رحمتیں ہوں ان پر آپ نے ممرابی کو نور ہدایت پر هُـدًى وَّ لَـمُ تَـمِـلُ مِـنُ حَقِّ إِلَى بَـاطِل وَّ أَذَّكَ نَصَحُتَ لِلَّهِ وَ لِرَسُولِهِ وَ أَذَّيُتَ الْاَمَانَةَ ترجیج نہ دی اور حق سے باطل کی طرف نہ پھرے بلکہ آپ خدا اور اس کے رسول کے خمر اندیش رہے اور امانتداری کا حق اوا کیا فَجَزَاكَ اللُّهُ عَلَى الْإِسُلامَ وَ أَهْلِهِ خَلِيلًا الْمَجَزَآءِ أَتَلَتُكُ بِأَبِي وَ أُمِّي زَآئِرًا عَار پس خداجزا دے آپ کواسلام واٹل اسلام کی طرف ہے بہترین جزائمیں آیا ہوں قربان میرے ماں باپ آپ کی زیارت کرنے آپ کے بحَقِيكَ مُوالِيًّا لِّـاَوُلِيَـآ إِكَ مُعَادِيًّا لِّـاَعُدَآ إِكَ فَاشُفَعُ لِيُ عِنْدَ ﴿ يُبْكَ حق سے واقف آپ کے دوستوں کا دوست آپ کے ڈھنوں کا دخمن ہوں کی اپنے رب کے ہاں میری سفارش کریں۔ پھرخود کوقبر شریف ہے لپٹائے اس کو بوسہ دے اپنے دونوں رخسار ہاری ہاری اس پر رکھے اور پھر س بانے کی طرف مڑے اور کے: ﴿ اَلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا مَوُلاٰىَ يَابُنَ رَسُولِ اللَّهِ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهَا شُهَدُ اَنَّكَ الْإِمَامُ سلام ہو آپ پر اے میرے آتا اے رسولؓ خدا کے فرزند خدا کی رحمت ہواوراس کی برکات میں گواہ ہوں کہ آپ ہیں امام الْهَادِيُ وَالْوَلِيُّ الْـمُرُشِـدُ اَبُـرَءُ اِلَى اللَّهِ مِنُ اَعُدَآئِكَ وَ اَتَقَرَّبُ اِلَى اللَّهِ بولاَيَةِ كَ رہبر سر پرست رہنما ممیں خدا کے سامنے آپ کے وشمنوں سے بیزاری کرنا ہوں اور آپ کی دوستداری سے اس کا قرب جا جنا ہول صَلَّى اللَّهُ عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ -

حدا درو د بھیج آپ پرحدا کی رحمت ہواد راس کی برکات۔

اس کے بعد دو رکعت نماز زیارت بجالائے اوراس کے علاوہ جونمازیں چاہے وہاں اوا کرلے۔ پھر حضرت کی پائٹتی کی طرف آجائے اورجس قد رچاہے خدا سے دعا ئیس مائگے۔

الممرضاعليه السلام سالوداع كابيان

زائر جب حضرت امام رضالظ ﷺ ہے الوداع کرکے واپس جانا جاہے تو وہی الوداع پڑھے جو پیغمبر اسلام صلی اللّٰدعلیہ و آلہ وسلم ہے الوداع کرتے وقت پڑھاجا تا ہے:

﴿ صَلَّى اللَّهُ عَلَيُكَ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ لا جَعَلَهُ اللَّهُ آخِرَ تَسُلِيُهِى عَلَيُكَ ﴿

خدا درو دی ج آپ پرسلام ہوآپ پرخدا اے آپ پرمیرا آخری سلام قرار نددے۔

اوراگر چاہتو بیا لوداع بھی پڑھ سکتاہے:

﴿ السَّلامُ عَلَيْكَ يَـ ا وَلِي اللَّهِ وَرَحُهُ مَا اللَّهِ وَهِرَ كَاتُهُ اللَّهِ مَنْ أَلَهُمْ لا تَجْعَلُهُ ا خِرَ الْعَهُدِ مِنْ

سلام ہو آپ پر اے دوست خدا رحمت خدا ہو اور اس کی برگات آے معبور اس کو میرے کیے آخری موقع قرار نہ دے

زِيَارَتِي إِبُنَ نَبِيِّكَ وَ حُجَّتَكَ عَلَى خَلْقِكَ وَ اجْمَعُنِي وَ إِيَّاهُ فِي جَنَّتِكَ وَاحُشُرُ نِي ﴿

جو زیارت کی میں نے تیرے نبی کے فرزند اور تیری مخلوق پر تیری جبت کی مجھے اور انہیں اپنی جنت میں بیجا کر دے مجھے اٹھانا ان کے ساتھ

وَفِيُ حِزُبِهِ مَعَ الشُّهَدَآءِ وَ الصَّالِحِيُنَ وَ حَسُنَ أُولَةِكَ رَفِيُقًا وَّ اَسْتَوُدِعُكَ اللَّهِ

ان کے گروہ میں شہیدوں اور نیکوکاروں کے ساتھ اور یہ کتنے اچھے ہم نشین ہیں آپ کے سپرد کنا ہوں

وَ ٱسۡتَرُعِيُكَ وَ ٱقۡرَءُ عَلَيُكَ السَّلامَ امَنَّا بِاللَّهِ وَ بِالرَّسُولِ وَ بِمَا جِئُتَ بِهِ وَ دَلَكَ

آپ کی توجہ چاہتا ہوں اور آپ کوسلام پیش کرتا ہوں ہم ایمان رکھتے ہیں خدا و رسول پر اور اس پر جو آپ لائے اور اس کی طرف رہبری کی

عَلَيْهِ فَاكْتُبُنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴾ -

پس اے خداہمیں گواہوں میں لکھ دے۔

امامين عسكريين ليعنى حضرت امام على نقى اور حضرت امام حسن عسكرى عليهاالسلام

كى زيارت كى فضيلت اوراس كى كيفيت كابيان؟

(۱) جعفری بیان کرتے ہیں کہ حضرت امام حسن عسکری الظامی نے مجھ سے فرمایا کہ میری قبر جوہر من رائی میں ہوگی اس کے دونوں جانب کے لوگوں کے لیے باعث امن وامان ہوگی۔ (کتاب الدعا والزیارہ) (۲) زید شحام نے حضرت امام جعفر صادق الظامی سے سوال کیا کہ جوشھ آپ انکہ اہل میت علیہم السلام میں ہے کہی امام الظامی کی زیارت کر ہے تو اس کے لیے کیاا جمہ و ثواب ہے؟ فرمایا: اس شخص کا ثواب اس شخص کی مانند ہے جورسول خداصلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی زیارت کر ہے۔ (البینا)

ان دونوں اماموں کی مشتر کرزیارت

(۱) یہ زیارت بعض ائمہ ہے منقول ہے۔ جسے ابن قولویہ نے کامل الزیارات میں نقل کیا ہے اور جسے بیخ مفید وشہیدا ورشیخ محمد بن المشہدی نے اپنی کتب مزار میں نقل کیا ہے۔ اس کی کیفیت میہ ہے کہ زائر کو چاہیئے کہ پہلے شسل کر سے پھر پا کیزہ لباس زیب تن کر کے اور سکینہ ووقار کے ساتھ چال کرجرم مبارک تک پہنچ اور وہاں پہنچ کر پہلے عام اذن وخول پڑھے جوقبل ازیں بیان کیا جا چکا ہے۔ بعد ازاں جرم شریف کے اندر وافل ہوکر وونوں اماموں کی یہ شتر کہ زیارت پڑھے:

﴿ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكُمَا يَا وَلِيَّيِ اللَّهِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكُمَا يَا حُجَّةَ فِي اللَّهِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكُمَا يَا نُوْرَيِ اللهِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكُمَا يَا نُوْرَيِ اللهِ اللهِ السَّلاٰمُ عَلَيْكُمَا يَا حُجَّةَ فِي اللَّهِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكُمَا يَا حَدًا طلام آپ دونوں پر كه زين كى تاريكيوں من اللهِ فِي ظُلُهُ مَا تِي طُلُهُ فِي شَانِكُمَا آلَيُتُكُمَا زَآئِرًا اللَّهِ فِي شَانِكُمَا آلَيُتُكُمَا زَآئِرًا عَداكِ دونور بِن طلام آپ دونوں پر كه خدائة آپ كا ثاب فام فرمانى آيا موں آپ كى زيارت كرنے آپ كا حق بجانا موں خداكے دونور بين علام آپ دونوں پر كه خدائة آپ كا ثاب فلام فرمانى آيا موں آپ كى زيارت كرنے آپ كا حق بجانا موں

}*********************************

عَـارِفًـا بِـحَـقِـكُـمَا مُعَادِيًا لِّاعُدَ آئِكُمَا مُوَالِيًا لِّاَوُلِيَآئِكُمَا مُؤْمِنًا بِمَآ امَنْتُم بِه كَافِرًا بِمَا آپ دونوں کے وشنوں کا رحمن آپ کے دوستوں کا دوست ہوں ایمان رکھتا ہوں جس پر آپ کا ایمان ہے اٹکار کتا ہوں جس کا كَفَرُتُمَا بِهِ مُحَقِّقًا لِّمَا حَقَّقُتُمَا مُبُطِلاً لِّمَآ اَبُطَلْتُمَآ اَسْئَلُ اللَّهَ رَبِّيُ وَ رَبَّكُمَآ اَنُ يُجُعَلَ آپ اٹکا رکرتے ہیں حق سمجھتا ہوں جے آپ کا حق سمجھا حجفلانا ہوں جے آپ نے حجفلایا سوال کرنا ہوں اللہ سے جومیرا آپ کا رب ہے حَظِيُ مِنُ زِيَارَتِكُمَا الصَّلُوةَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ وَ أَنْ يَرُزُقَنِيُ مُوَافَقَتَكُمَا فِي الْجنَانِ مَعَ یہ کروہ قراردے آپ کی زیارت میں میرا حصہ محماً وران کی آ**ل پ**ر دروداور بیا کہ مجھے نصیب کرے آپ دونوں کی رفافت جنت میں کہ جہاں ابَآئِكُمَا الصَّالِحِيُنَ وَ اَسُئَلُهُ اَنُ يُعُتِقَ رَقَبَتِيُ مِنَ النَّارِ وَ يَرُزُقَنِي شَفَاعَتَكُمَا آپ کے خوش کرداریز رگان بھی ہوں گے نیز اے سوال کرتا ہوں کہ وہ میر کی گر دن آ گ ہے آ زا دکر دے بجھے آپ دونوں کی شفاعت وَ مُصَاحَبَتَكُمَا وَ يُعَرِّفَ بَيُنِي وَ بَيْنَكُمَا وَلا يَسُلُنِنِي خُبِّكُمَا وَ حُبَّ ابَآئِكُمَا الصَّالِحِيْنَ اور ہم سینی عطافر مائے اور میرے آپ کے درمیان آشنائی پیدا کرے نیز مجھ سے آپ دونوں کی اور آپ کے خوش کردار ہزرگوں کی محبت وَ أَنْ لَا يَجْعَلَهُ ۚ اخِرَ الْعَهُ إِصِنُ إِيَارَاتِكُ مَا وَيَحُشُرُنِيُ مَعَكُمَا فِي الْجَنَّةِ برَحُمَتِ والهل ندلے ال زیارت کومیرے آپ دونوں کی آخری زیارت ند بنائے مجھا کو جنت میں آپ دونوں کے ماتھ ٹھیرائے اپی رحمت سے اللَّهُمَّ ارُزُقُنِيُ حُبَّهُمَا وَ تَوَقَّنِيُ عَلَى مِلَّتِهِمَا اَللَّهُمَّ الْعَنُ ظَالِمِيَّال مُحَمَّدٍ حَقَّهُمُ وَ انْتَقِمُ ے معبود مجھےان دونوں کی محبت عطا کراوران کے دین برو فات دےا ہے معبودلعنت کرجنہوں نے آل محمر کا حق ما را اوران سےاس ظلم کا مِّنُهُمُ ٱللَّهُمَّ الْعَنِ الْاَوَّلِيُنَ مِنْهُمُ وَ الْاَخِرِيْنَ وَ ضَاعِفُ عَلَيْهِمُ الْعَذَابَ وَ ابُلُغُ بِهِمُ بلیہ لے اےمعبودلعث کران میں ہے پہلے اور آخری ظالم پر اور دوچند کر دےان پر اپنا عذاب اور پہنچا ان کوان کے ساتھیوں کو وَ بِاَشْيَاعِهِمُ وَ مُحِبِّيُهِمُ وَ مُتَّبِعِيْهِمُ اَسُفَلَ دَرَكٍ مِّنَ الْجَحِيْمِ اِنَّكَ عَلَى كُلّ شَيْئ قَدِ ان کے دوستوں کو اور ان کے پیرو کاروں کو دوزخ کے سب سے گہرے گڑھے میں کہ یقیناً تو ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے ٱللَّهُمَّ عَجَّلُ فَرَجَ وَلِيَّكَ وَابُنَ وَلِيِّكَ وَاجْعَلُ فَرَجَنَا مَعَ فَرَجِهِمُ يَآ اَرُحَمَ الرَّاحِيهُونَ معبودا تیرادوست جوتیرے دوست کا فرزند ہےاہے جلد کشائش دےاس کی کشائش میں ہماری بھی کشائش فرمااے سب سے زیاد ورقم والے۔ اس کے بعدا ہے لیے، اپنے والدین کے لیے، اپنے بھائی بہنوں کے لیےاد رتمام مؤمنین ومؤمنات کے لیے جو بھی جائز: دعا نیں جاہے مائلے ،اس کےعلاوہ جس قد رہو سکے وہاں دعا نیں اور مناجات کرے ۔اگر

ممکن ہوتو ان ضریحوں کے قریب دو رکعت نماز زیارت ا دا کرے ورنہ قریبی مسجد میں جا کریہ نماز پڑھے۔ بعد میں جو دعا بھی مائلے گا وہ قبول کی جائے گی۔ وہ مسجد ان ہر دو اماموں بعنی امام علی نقی الظایرہ اورامام حسن عسكرى القليلا كے گھر كے قريب ہے جس ميں وہ نما زيڑھا كرتے تھے۔

(۲) جنا ب سیرابن طاوُوس نے ان دو اماموں میں سے ہرا یک امام کی علیجدہ علیجدہ زیارت بھی ذکر کی ہےاورای کے حوالہ ہےمحدث فتی نے بھی مفاتیج میں دوا لگ الگ زیارتیں نقل کی ہیں مگر چونکہ وہ ائمہ طاہرین علیم السلام سے منقول نہیں ہیں۔اس لیے ہم نے انہیں یہاں درج نہیں کیا۔البتہ زیارات جامعہ میں ہے کوئی زیارت جامعہ یہاں پڑھی جاسکتی ہے۔ بالحضوص وہ زیارت جامعۂ کبیرہ جوخودحضرت امام علی نقی الظیلا ہے منقول ہے جسے حضرت شیخ صدوق نے الفقیہ میں درج کیا ہے اور ہم بھی ای باب کے آخر میں زیاراتِ جامعہ کے حمن میں اے بیان کریں گےانثا ءاللہ۔

امامين عسريين عليهاالسلام سالوداع

جب زائر امامین مسکریین ہے الوداع ہونے گئے تو اس طرح ان کوالوداع کرے جس طرح دوسرے ائمہ طاہرین علیہم السلام ہے الوداع کیا جاتا ہے بعنی امامین کی ضریح مقدس کے باس کھڑے ہوکریوں کہے: ﴿ اَلسَّالَامُ عَلَيْكُمَا يَا وَلِيِّيَ اللَّهِ اَسْتَوُدِعُكُمَا اللَّهَ وَ اَقْرَءُ عَلَيْكُمَا السَّلَامَ امَنَّا بِاللَّهِ سلام ہو آپ دونوں پر اے دوستانِ خدا میں نے آپ دونوں کو حوالہ خدا کیا اور آپ کو سلام کہتا ہوں ہم ایمان رکھتے ہیں خدا وَ بِالرَّسُولِ وَ بِمَا جِئُتُمَا بِهِ وَ دَلَلْتُمَا عَلَيْهِ اَللَّهُمَّ اكْتُبُنَا مَعَ الشَّاهِدِيُنَ اَللَّهُمَّ لا تَجْعَلُهُ و رسول پر اور جو پھھ آپ لائے اوراس کی طرف رہبری کی اے معبو دہمیں اس بات کے گواہوں میں مرقوم فرما اے معبوداس کوان دونوں اخِرَ الْعَهُدِ مِنُ زِيَارَتِي إِيَّاهُمَا وَ ارُزُقْدِي الْعَوُدَ اللَّهِمَا وَ احْشُرُنِي مَعَهُمَا وَ مَعَ ابْآئِهِمَا کے لیے میری آخری زیارت قرار نہ دے مجھے بار دیگران کے ہاں حاضر ہونے کاموقع دے مجھے ان ونوں اور ان کے باک بزرگان

الطَّاهِرِيُنَ وَ الْقَآئِمِ الْحُجَّةِ مِنْ ذُرِّيَّتِهِمَآ يَا اَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ ﴾ ـ

کے ساتھاوران کی اولا دیس ہے جمت قائم ؑ کے ساتھ اٹھانا اے سب سے زیا دہ رقم والے۔

فصل دواز دہم کا تنمه مهمه

وربیان زیارت خاتم الائم ایعنی حضرت ججة ابن الحسن علیه السلام کی زیارت اورسر داب کے آداب کابیان؟

(۱)واضح رہے کہ سامرہ میں جوسر داب ہے بیتہہ خانہ یا سر داب حضرت امام حسن عسکری القابی کے گھر میں تھا جہاں ہےامام صاحب انعصر والز مان الطبیخ غائب ہوئے تھے۔موجودہ عمارت کی تغییر ہے پہلے اس تک رسائی کا راستدای گھرکےا ندرہے ہی جاتا تھا۔لہٰذا زائز کو جائیے کہر داب کےاندرجانے ہے پہلے کوئی عام سا ا ذنِ دخول پڑھ لے جس کا تذکرہ اس باب الزیارات کے آغاز میں کیا جاچکا ہے۔ بعدا زاں سر داب کے اندر جا کرامام العصر والزمان القلیلا کی بیرزیارت پڑھے جوامام زمانہ القلیلائے ہی منقول ہے۔(احتجاج طبری) ﴿ سَلامٌ عَلْى ال يُسْ السَّلامُ عَلَيُكَ يَا دَاعِيَ اللَّهِ وَ رَبَّانِيَ ايَاتِهِ السَّلامُ عَلَيُكَ يَا بَا سلام ہو اولادِ ویغیر پر سلام ہو آپ پر اے فدائے والی اور اس کے کام کے تلہان سلام ہو آپ پر اے فدا کے اللُّهِ وَ دَيَّانَ دِيُنِهِ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا خَلِيُفَةَ اللَّهِ وَ نَاصِرَ حَقِّهِ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا حُجَّةَ اللَّه باب اوراس کے دین کی حفاظت کرنے والے سلام ہوآپ پر اے خدا کے نائب اور حق کے مددگار سلام ہوآپ پراے خدا کی ججت وَ دَلِيُـلَ إِرَادَتِهِ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا تَـالِـيَ كِتَابِ اللَّهِ وَ تَرُجُمَانَهُ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ فِي ٱنَّا اور اس کے ارادہ کے مظہر سلام ہو آپ پر اے قرآن کے قاری اور اس کی تشریح کرنے والے سلام ہو آپ پر رات لَيُلِكَ وَ اَطُرَافِ نَهَارِكَ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا بَقِيَّةَ الْلَّوْفِيْهِ اَلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ يَا مِيُثَاقَ اللَّهِ کے وقت اور دن کی ہر گھڑی میں سلام ہو آپ پر اے خدا کی زمین میں اس کے نمایندہ سلام ہو آپ پر اے خدا کے وہ عہد جو الَّذِيْ آخَـٰذَهُ وَ وَكَّدَهُ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ يَا وَعُدَ اللَّهِ الَّذِيْ ضَمِنَهُ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ أَيُّهَا الْعَلَ ں نے باندھا اور پکا کیا سلام ہو آپ پر اے خدا کے وعدہ جس کا وہ ضامن ہے سلام ہو آپ پر کہ آپ ہیں گاڑا لُـمَنُـصُـوُبُ وَ الْعِلْـمُ الْمَصْبُوبُ وَ الْغَوْتُ وَ الرَّحْمَةُ الْوَاسِعَةُ وَعُدًا غَيْرَ مَكُذُوب

ٱلسَّلاٰمُ عَلَيُكَ حِيْنَ تَـقُومُ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ حِيْنَ تَقُعُدُ ٱلسَّلاٰمُ عَلَيْكَ حِيْنَ تَقُرَءُ وَ سلام ہوآپ پر جب آپ قیام کریں گے سلام ہوآپ پر جب منتظر ہیٹھے ہیں سلام ہوآپ پر جب قرآن پڑھیں اور تغییر کریں ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ حِيْنَ تُصَلِّيَ وَ تَقُنُتُ ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ حِيْنَ تَرْكُعُ وَ تَسْجُدُ ٱلسَّلامُ عَلَيْا سلام ہو آپ پر جب نماز گزاریں اور قنوت پرهیں سلام ہو آپ پر جب رکوع و سجدہ کریں سلام ہو آپ پر حِيْنَ تُهَلِّدُلُ وَ تُكَبِّرُ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ حِيْنَ تَحْمَدُ وَ تَسْتَغُفِرُ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ حِيْنَ تُصُ جب ذکر البی کریں سلام ہو آپ ہر جب حمد و استغفار کریں جب آپ ملح اور وَ تُـمُسِـيُ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ فِي اللَّيْـل إِذَا يَغُشٰى وَ النَّهَارِ اِذَا تَجَلَّى اَلسَّلامُ عَلَيُكَ أَيُّ شام کریں سلام ہو آپ پر رات میں جب وہ چھا جائے اور دن میں جب روش ہو جائے سلام ہو آپ پر اے الْإِمَامُ الْمَامُونُ ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا الْمُقَدَّمُ الْمَامُولُ ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ بِجَوَامِعِ السَّا ائمن بافتہ امام سلام ہو آپ پر اے آپ کے آنے کی آرزو ہے سلام ہو آپ پر ہر طرف سے سلام ٱشْهِدُكَ يَا مَوُ لَاىَ ٱلْهَا َ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ وَجُدَةً لَا ضَرِيُكَ لَهُ وَ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ مَیں گواہ کرنا ہوں آپ کوا مے میرے آ قاممیں گواہی دیتا ہوں کرئیں گوئی معبود سوائے اللہ کے و دیگا نہ ہے اس کا کوئی ساجھی نہیں اور یہ کہ وَ رَسُولُلُهُ لا حَبِيُبَ اِلَّا هُـوَ وَ اَهُلُهُ وَ اَشُهدُكَ يَا مَوُلاٰيَ اَنَّ عَلِيًّا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيُنَ حُجَّتَا حضرت محماس کے بندہ ورسول ہیں نہیں کوئی حبیب سوائے ان کے اور ان کے اہل بیٹ کے آپ کو گوا دینا تا ہوں اے میرے آتا اس مرکہ وَ الْحَسَنَ خُجَّتُهُ وَ الْحُسَيُنَ خُجَّتُهُ وَ عَلِيَّ بُنَ الْحُسَيْنِ خُجَّتُهُ وَ مُحَمَّدَ بُنَ عَلِيّ خُجَّتُهُ علی امیرالمونین اوراس کی ججت ہیں حسن اس کی ججت ہیں حسین اس کی ججت ہیں علی بن الحسین اس کی ججت ہیں محمر بن علی اس کی ججت وَ جَـعُفَرَ بُنَ مُحَمَّدٍ حُجَّتُهُ وَ مُوْسَى بُنَ جَعُفَرٍ حُجَّتُهُ وَ عَلِيًّ بُنَ مُوْسَى حُجَّتُهُ وَ مُحَمَّدَ ہیں جعفر " بن محمر " اس کی ججت ہیں موئی " بن جعفر " اس کی ججت ہیں علی " بن موئی " اس کی ججت ہیں محمد بن بُنَ عَلِيّ حُجَّتُهُ وَ عَلِيٌّ بُنَ مُحَمَّدٍ حُجَّتُهُ وَ الْحَسَنَ بُنَ عَلِيّ حُجَّتُهُ وَ اَشُهَدُ اَذَّكَ حُجًّا علی اس کی جبت ہیں علی بن محمر اس کی جبت ہیں حسن بن علی اس کی جبت ہیں اور ممیں گواہ ہوں کہ آپ خدا کی جبت ہیں اللَّهِ ٱنْتُمُ الْاَوَّلُ وَ الْاٰخِرُ وَ اَنَّ رَجُعَتَكُمُ حَقٌّ لاّ رَيْبَ فِيُهَا يَوْمَ لا يَنْفَعُ نَفُسًا إِيْمَانُهَا لَمُ

*********** تَكُنُ امَنَتُ مِنُ قَبُلُ اَوُ كَسَبَتُ فِي إِيْمَانِهَا خَيْرًا وَّ اَنَّ الْمَوْتَ حَقٌّ وَّ اَنَّ نَاكِرًا وَّ نَكِيْرًا جو اس سے پہلے ایمان نہ لاما ہو ما ایمان کے تحت نیکی کے کام نہ کیے ہوں اور یقینا موت حق ہے بے شک منکر و تکمیر حَقٌّ وَّ اَشُهَدُ اَنَّ النُّشُرَ حَقٌّ وَّ الْبَعْثَ حَقٌّ وَّ اَنَّ الصِّرَاطَ حَقٌّ وَّ الْمِرُصَادَ حَقٌّ وَّ الْمِيْزَانَ حق ہیں ممیں گواہ موں کہ قبرے باہر آنا حق اور جی اٹھنا حق ہے ہے شک صراط سے گزینا حق انظار کرنا حق اور اعمال کا تولا جانا حَقٌّ وَّ الْحَشُرَ حَقٌّ وَّ الْحِسَابَ حَقٌّ وَّ الْجَنَّةَ وَالنَّارَ حَقٌّ وَّ الْوَعْدَ وَ الْوَعِيُدَ بهمَا حَقٌّ حق ہے حشر حق ہے حماب کتاب حق ہے جنت و جہنم حق ہے ان کے بارے میں وعدہ اور وہم کی حق ہے يًّا مَـوُلاٰيَ شَـقِيَ مَنُ خَالَفَكُمُ وَ سَعِدَ مَنُ اَطَاعَكُمُ فَاشُهَدُ عَلَى مَاۤ اَشُهَدُتُكَ عَلَيْهِ وَ اَنَ ا مير مردارآپ كا مخالف بد بخت إورآپ كا بيروكارئيك بخت م پس من كواي ديتا اس كى جس كى آپ نے كواي دى وَلِيٌّ لَّكَ بَـرَى مِّنُ عَدُوِّكَ فَالْحَقُّ مَارَضِيتُهُوهُ وَالْبَاطِلُ مَاۤ اَسُخَطُتُهُوهُ وَ الْمَعُرُوفُ تمیں آپ کا حب دا راور آپ کے دخمن سے بیزارہوں اس عق وہ ہے جے آپ پیند کریں اور باطل وہ ہے جس سے آپ نا خوش ہول معروف اَمَرُتُمُ بِهِ وَ الْمُنْكَرُ مَا يَهَالِنُهُ عَلُهُ فَنَفُسِلُ مُؤْمِنَةً ﴿ بِاللَّهِ وَخَذَهُ لَا تَشَرِيُكَ لَهُ وَ برَسُولِهِ وہ ہے جس کا آپ تھم دیں اور منکروہ ہے جس ہے آپ منع کریں اپس میرا دل ایمان رکھتا ہے حندامرِ جو بگانہ ہے اس کا کوئی ساجھی ٹیس اور وَ بِاَمِيُ وِ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ بِكُمُ يَا مَوُلاً ىَ اَوَّلِكُمُ وَ اخِركُمُ وَ نُصُرَتِي مُعَدَّةٌ لَكُمُ اں کے رسول پر اورامیر الموشین پر اور آپ پر اے میرے آتا ایمان رکھتا ہوں آپ کے پہلے پچھلے پر اور نفرت آپ کے لیے حاضر ہے وَ مَوَدَّتِي خَالِصَةٌ لَّكُمُ امِيْنَ امِيْنَ امِيْنَ

اس زیارت کے بعد بیرد عاراطے:

میری دوسی آپ کے لیے خاص ہے ایسائی ہوا یما ہی ہو۔

﴿ اَللّٰهُ مَّ إِذِى اَسُمَلُكَ اَنُ تُصَلِّى عَلَى مُحَمَّدٍ نَّهِي رَحُمَةِكَ وَ كَلِمَةِ نُوْدِكَ وَ اَنُ تَمُلَا قَالَ عَمُلَا قَالَ عَمُلَا قَالَ عَمُلَا قَالَ عَمُلَا قَالَ عَمُلَا قَالَ عَمُورِ يَقِينَا مِن اللّٰهُ مَا اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰمُ الللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ

الْعَمَلُ وَ لِسَانِي نُورُ الصِّدُق وَ دِيْنِي نُورَ الْبَصَآئِرِ مِنْ عِنْدِكَ وَ بَصَرِى نُورَ الظِّيآ عمل میری زبان کو نورِ صدافت اور میرے دین کو اپی طرف سے نورِ نصیحت سے پُر کر دے میری آگھ کو نورکی چک وَ سَـمُعِيُ نُورَ الْحِكْمَةِ وَ مَوَدَّتِي نُورَ الْمُوالاةِ لِمُحَمَّدٍ وَّ الِهِ عَلَيْهِمُ السَّلامُ حَتَّي میرے کان کو نورِ دانش اور میری دوئتی کو محمہ و آل محمہ علیجم السلام کی محبت کے نور سے مجر دے حتی کہ ٱلْقَاكَ وَ قَدُ وَفَيْتَ بِعَهُدِكَ وَ مِيُثَاةِكَ فَتُغَيِّبُينِيُ رَحْمَتُكَ يَا وَلِيُّ يَا حَمِيْدُ اَللَّهُمَّ تجھ سے ملاقات کروں تو تیرے عہدو پیاں کو پورا کیا ہوا ہو پس تیری رحمت مجھے تھیر لے اے سر پرست اے تعریف والے اے معبود رحمت عَلَى مُحَمَّد حُجَّة كَ فَيُ إَرُضِكَ وَ خَلِيْفَة كَ فِي بِلادِكَ وَ الْذَالْجِيُ سِبِيلِكَ وَالْقَائِم فرما محر مهدى يرجو تيرى زئان مل تيرى جحت تير عشهول من تيرے مائب تيرے راستے كى طرف بلانے والے تيرى عدالت يرقائم بِقِسُطِكَ وَ الثَّآئِرِ بِاَمُرِكَ وَلِيِّ الْمُؤْمِنِيُنَ وَ بَوَارِ الْكَافِرِيْنَ وَ مُجَلِّي الظُّلُمَةِ وَ مُنِيُرِ الْحَ رہے والے تیرے علم سے بدلد لینے والے مومنول کے سر پرست کافروں کے لیے پیام موت نا رکی میں روشی کرنے والے حق کوعیاں وَ النَّاطِقِ بِالْحِكْمَةِ وَ الصِّدُقِ وَ كَلِمَةٍ كَ التَّامَّةِ فَإِزُّ ضِكَ الْمُرْتَقِبِ الْخَآئِفِ وَ الْوَلِيّ کرنے والے حکمت وسیاتی ہے کلام کرنے والے تیری زمین میں تیرا کلمیہ کامل و ممل خوف زدہ کے ٹکہبان خیر خواہ سر پرست النَّاصِح سَفِينَةِ النَّجَاةِ وَعَلَم الْهُدى وَ نُور آبُصَارِ الْوَرْي وَ خَيْر مَنُ تَقَمَّصَ وَارْتَدى نجات دلانے والی کشتی ہدایت کے پرچم اور لوگوں کی آگھوں کا نور ہیں وہ عمرتا چادر پہنے والوں میں بہترین وَ مُجَلِّيَ الْعَمْىِ الَّذِي يَمُلاَّهُ الْاَرُضَ عَدُلاً وَّ قِسُطًا كَمَا مُلِئَتُ ظُلُمًا وَّ جَوُرًا إِنَّكَ عَلَمِ ورا ندھوں کی آتھ میں دینے والے ہیں وہی ہیں جوزین کوعدل وانصاف سے پُر کریں سے جیسے و بظلم و جورہے بھری ہوتی ہوگ بے شک تو كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ٱللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى وَلِيَّكَ وَابْنَ ٱوْلِيَآئِكَ الَّذِيْنَ فَرَضْتَ طَاعَتَهُمْ وَ ٱوْجَبُ ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے اے معبود رحمت ما زل فرما اپنے دوست اور اپنے دوستوں کے فرزند پر جن کی اطاعت تو نے لازم فرمائی حَقَّهُ مُ وَ اَذْهَبُتَ عَنْهُمُ الرَّجُسَ وَ طَهَّرُتَهُمُ تَطُهِيُرًا اَللَّهُمَّ انْصُرُهُ وَ انْتَصِرُ به لِدِينكَ ان کا حق وا جب کیا اوران سے نایا کی کو دور کیا انہیں باک رکھا خوب یاک اے معبو دامام زمان کی مدد کران کے ذریعے اپنے وین کو وَانْصُرُ بِهِ أَوْلِيَآئَكَ وَ اَوْلِيَآئَهُ وَ شِيُعَتَهُ وَ اَنْصَارَهُ وَ اجْعَلْنَا مِنْهُمُ اَللَّهُمَّ اَعِذُهُ مِنْ شَرّ كُلُّ

(010)

***************** بَاغ وَّ طَاغ وَّ مِنُ شَرِّ جَمِيع خَلُقِكَ وَ احْفَظُهُ مِنْ بَيُن يَدَيُهِ وَ مِنْ خَلُفِه وَ عَن يَمِينه بچائے رکھان کو ہربے تھم اورسرکش کے شرے اورا پی مخلو قات کے شرےان کو محفوظ رکھان کے آگے ہےان کے چکھیے ہے ان کے دائیں وَ عَنُ شِمَالِهِ وَ احُرُسُهُ وَ امْنَعُهُ مِنُ أَنْ يُؤْصَلَ إِلَيْهِ بِسُوْءٍ وَّاحُفَظُ فِيهِ رَسُولَكَ وَ الَ ے اور ان کے بائیں ہے ان کی ٹھہائی کران کو بچائے رکھاس ہے کہ انہیں کوئی اقدیت پہنچے ان کی حفاظت کر کے اپنے رسول اور ان کی آل رَسُوُلِكَ وَ اَظُهِرُ بِهِ الْعَدُلَ وَ اَيِّدُهُ بِالنَّصُرِ وَ انْصُرُ نَاصِرِيُهِ وَاخُذُلُ خَاذِلِيُهِ وَاقْصِمُ کی حفاظت کران امام آخر کے ذریعے عدل کو ظاہر کراورنصرت سے ان کوقو می بنا ان کے ماصروں کی مدد فرما ان کوچھوڑ دے جوان کوچھوڑ سکتے قَاصِمِيهِ وَ اقْصِمُ بِهِ جَبَابِرَةَ الْكُفُر وَ اقْتُلُ بِهِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنَافِقِينَ وَجَمِيعَ الْمُلْحِدِينَ ان کو کمزور کرنے والوں کی کمر تو ڑ دے ان کے ہاتھوں کفر کے سرواروں کو زیر کر ان کی تکوار سے کا فروں منافقوں اور سارے حَيْثُ كَانُوُا مِنُ مَّشَارِقِ الْآرُضِ وَ مَغَارِبِهَا بَرِّهَا وَ بَحُرِهَا وَامْلَأُ بِهِ الْآرُضَ عَدُلاً ہے دینوں کوقتل کرا دےوہ جہاں جہاں ہیں زمین کےمشرقوں اوراس کےمغربوں میں میدانوں اورسمندروں میں ان کے ذریعے زمین کو وَّ اَظُهِرُ بِهِ دِيْنَ نَبِيِّكَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَالِهِ وَالْجَعَلَنِيُّ ٱللَّهُمَّ مِنُ اَنْصَارِهِ وَ اَعُوَانِهِ عدل ہے بھر دےاورا پنے نبی کے دین کوغالب کردے خدار حمت کرےان پراوران کی آل پر اورا مے معبو دقرار دیے جمیں امام مہدی کے وَ ٱتُبَاعِهِ وَ شِينُعَتِهِ وَ اَرِنِيُ فِي ال مُحَمَّدٍ عَلَيُهِمُ السَّلامُ مَا يَأْمُلُونَ وَ فِي عَدُوِّهِمُ مددگاروں ان کے ساتھیوں اوران کے پیروکا روں اوران کے شیعوں میں سے اور دکھا مجھ کوآ**ل محدّ کے ب**ارے میں جس کی وہ تمنار کھتے ہیں مَا يَحُذَرُونَ إِلَٰهَ الْحَقِّ امِيْنَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَ الْإِكْرَامِ يَاۤ اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ﴾۔ اوران کے دشمنوں میں جس سے وہ دوررہتے ہیں اے سے معبو دایسائی ہوا ہے صاحب جلال و ہزرگی اے سب سے زیا دہ رحم کرنے والے ۔

(۲) دعائے ندبہ کا تذکرہ : ۔خداتو فیق دے و زائر کو چاہیے کہ یہاں دعائے ندبہ بھی پڑھے۔ جس کا پڑھنا خودامام العصر الطبی ہے منقول ہے۔ اور اس دعا کا چار مقامات پر پڑھنا خصوصاً وارد ہے: (۱) عید الفطر، (۲) عید الاضحی، (۳) بروز جمعہ، (۴) اورغدیر کے دن۔

مخفی ندرے کہ بنابرمشہور بیروعا حضرت امام زمانہ القلیلائے۔ منقول ہے مگرعلامہ مجلسی نے زادالمعادییں اے حضرت امام جعفر صادق القلیلائے سے روابیت کیا ہے۔ بہر حال وہ وعابیہے:

**** ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيّدِنَا مُحَمَّدٍ نَبيّهٍ وَ الِهِ وَسَلَّمَ تَسُلِيُمًا حمد ہے حدا کے لیے جو جہانوں کا پروردگا رہے اورحدا رحمت کرے ہما رے سر دا راو راپنے ٹبی محمد اوران کی آ ل پر اور بہت بہت ٱللَّهُمَّ لَكَ الْحَمُدُ عَلَى مَا جَرَى بِهِ قَضَآ ؤُكَ فِي ٱوْلِيَآئِكَ الَّذِيْنَ اسْتَخُلَصْتَهُمُ لِنَفُسِكُمُّ وَ سلام بھیجا ہے معبو دحمہ ہے تیرے لیے کہ جاری ہوگی تیری قضاء وقد رتیرےاولیاء کے بارے میں جن کوقے نے اپنے لیے اوراپنے دِيُنِكَ إِذَا اخْتَرُتَ لَهُمُ جَزِيُلَ مَا عِنْدَكَ مِنَ النَّعِيْمِ الْمُقِيْمِ الَّذِي لَازَوَالَ لَهُ وَ وین کے لیے خاص کیا جب کرانییں اپنے ہاں ہے و دفعتیں عطا کی ہیں جوبا تی رہنے والی ہیں جو ندختم ہوتی ہیں ند کمزو رپڑتی ہیں اس اضُمِحُلالَ بَعُدَ أَنُ شَرَطُتَ عَلَيُهِمُ الزُّهُدَ فِي دَرَجَاتِ هَذِهِ الدُّنْيَا الدَّنِيَّةِ وَزُخُرُ فِهَا کے بعد کرتو نے لا زم کیاان پراس دنیا کے بے حقیقت مناصب حجوثی شان وشو کت او رزینت سے دو رر ہیں پس انہوں نے بیشرط وَزِبُرِجِهَا فَشَرَطُو لَكَ ذَٰلِكَ وَ عَلِمُتَ مِنْهُمُ الْوَفَاءَ بِهِ فَقَبِلُتَهُمُ وَ قَرَّبُتَهُمُ وَ قَدَّمُتَ لَهُ پوری کی او رتو ان کی و فاکو جانتا ہے تو نے انہیں قبول کیا مقرب بنایا ان کے ذکر کو بلند فر مایا او را ن کی تعریفیں ظاہر کیں آو نے ان کی الَّذِكُرَ الْعَلِيُّ وَالثُّنَا ۗ الْجَلِقُ وَ آهُبَطُتًا عَلَيْهِمُ مَّالَائِكَةَكَ وَ كَرَّهُتَهُمُ بِوَحُيكَ وَرَفَدُتُّهُ إِ طرف اپنے فرشتے بھیجان کووحی ہے مشرف کیاان کواپنے علوم ہے نوا زاا ورقر ار دیا ان کوو ہ ذریعہ جو تھے تک پہنچائے او روہ وسیلہ بِعِلْمِكَ وَ جَعَلْتَهُمُ الذُّرِيُعَةَ اِلَّيُكَ وَالْوَسِيْلَةَ اِلِّي رضُوَانِكَ فَبَعْضُ اَسْكُنْتَهُ جَنَّتَكَ اِلْكُلِّ اَنْ جوتیری خوشنودی تک لے جائے کہل ان میں کسی کو جنت میں رکھا تا آ نکداس سے با ہر بھیجا کسی کواپٹی کشتی میں سوا رکیا او ربچا لیااور ٱخُرَجُتَهُ مِنُهَا وَ بَعُضٌ حَمَلُتَهُ فِي فُلُكِكَ وَ نَجَّيْتَهُ وَ مَنُ امَنَ مَعَهُ مِنَ الْهَلَكَةِ برَحُمَةِكَ جوان کے ساتھ تھے انہیں موت ہے بچایا تو نے اپنی رحمت کے ساتھا و رکٹی کوتو نے اپنا خلیل بنایا پھر آخر والوں میں ہے راست مو بَعُضٌ وِاتَّخَذُتَهُ لِنَفُسِكَ خَلِيُّلا وَّ سَئَلَكَ لِسَانَ صِدُقِ فِي الْأَخِرِيْنَ فَأَجَبُتَهُ وَ جَعَلُم ز با ن نے تھے ہے سوال کیا جے تو نے پورا فرمایا او را سے علیٰ قرار دیا کسی کے ساتھ تو نے درخت میں سے کلام کیا او راس کے بھائی کو ذْلِكَ عَلِيًّا وَّ بَعُضٌ كَلُّمُتَهُ مِنُ شَجَرَةٍ تَكُلِيْمًا وَّ جَعَلْتَ لَهُ مِنُ آخِيُهِ رِدُءً ا وَّ وَزِيْرًا وَّ مد دگا رہنا یا کمی کوتو نے بن باپ کے پیدا فر مایا اے بہت ہے مجزات دیےاورروح قدیں ہے اسے قوت دی تو نے ان میں ہے ہر بَعُضٌ اَولَدُتُهُ مِنُ غَيْرِ آبِ وَ اتَينَهُ الْبَيّنَاتِ وَ ايَدُتَّهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ وَ كُلُّ شَرَعُتَ لَهُ ا یک کے لیے ایک شریعت اور راستیقر رکیاان کے لیے اوصیاء چنے کہ تیرے دین کوقائم رکھے کے لیے ایک کے بعد دوسرا ٹکہان

شَرِيُعَةً وَّ نَهَجُتَ لَهُ مِنُهَاجًا اوَّ تَخَيَّرُتَ لَهُ أَوْصِيٓآءَ مُسُتَحُفِظًا مَبَعُدَ مُسُتَحُفِظٍ مِّنُ مُدَّةٍ آ یا جوتیرے ہندوں پر جمت قرار پایا تا کہ حق اپنے مقام ہے نہ ہے اور راطل کے حامی اٹل حق پر غلبرنہ پائیس اور کوئی میہ نہ کہے کہ اِلَى مُدَّةٍ اِقَامَةً لِّدِيْنِكَ وَ حُجَّةً عَلَى عِبَادِكَ وَ لِثَلَّا يَزُولَ الْحَقُّ عَنُ مَّقَرَّهِ وَ يَغُلِبَ الْبَاءِ کا ش آونے ہماری طرف ڈرانے والارسول بھیجا ہوتا اور ہمارے لیے ہدایت کا جھنڈ ابلند کیا ہوتا کہ تیری آیتوں کی پیروی کرتے عَلَى اَهُلِهِ وَلَا يَقُوُلُ اَحَدٌ لَوُلَآ اَرُسَلُتَ اِلَيُنَا رَسُولًا مُّنُذِرًا وَّ اَقَمُتَ لَنَا عَلَمًا هَادِيًا فَنَتْبِعَ اس سے پہلے کہ ذلیل ورسوا ہوں یہاں تک کرتو نے امر ہدایت اپنے حبیب اور باپ ک اصل محرصلی اللہ علیہ وآلہ کے سپر دکیا کہیں و و ايَاتِكَ مِنُ قَبُلُ أَنُ نُلِلًا وَ نَخُزْي اِلِّي أَن انْتَهَيْتَ بِالْاَمُرِ اِلِّي حَبِيبُكَ وَ نَجيبُكَ مُهُ ا یسے سر دا رہوئے جن کوتو نے خلق میں سے بہند کیا ہرگز مدوں میں سے ہرگز مد ہفر مایا جن کو چناان میں سے افغل بنایا اپنے خواص صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ الِّهِ فَكَانَ كَمَا أَنْتَجَبُتَهُ سَيَّدَ مَنُ خَلَقُتَهُ وَ صَفُوَةَ مَنِ اصُطَفَيْتَهُ وَ میں سے ہز رگ قرا ردیا انہیں نبیوں کا پیشوا بنایا او ران کواپنے بندوں میں سے دونوں جن وانس کی طرف بھیجا ان کے لیے سما رے ٱلْصَلَ مَنِ اجْتَبَيْتُهُ وَ ٱكُرَهُ مِنِ اعْتَمَالَتُهُ قَلَّا مُتَهُ عَلْى ٱلْمِيَالِكَ و بَعَثْيَلَى الثَّقَلَيْنِ مِنُ مشرقوں مغربوں کوزیر کر دیا برا**ق** کوان کامطیع بنایا او ران کوجسم و جان کے ساتھ آسان پر بلایا او رتو نے انہیں سابقہ و آبید ہا تو ں کا عِبَادِكَ وَ اَوْطَاتَهُ مَشَارِقَكَ وَ مَغَارِبَكَ وَ سَخُرُتَ لَهُ الْبُرَاقَ وَعَرَجُتَ بِرُوحِهِ علم دیا تا آ نکه تیری مخلوق ختم ہو جائے پھران کو دید به عطا کیااو ران کے گر دجبر نیل و میکائیل او رمنثان زد ہفرشتوں کو جمع فر مایا ان سَمَآئِكَ وَ اَوُدَعُتَهُ عِلْمَ مَا كَانَ وَ مَا يَكُونُ اِلَى انْقِضَآءِ خَلْقِكَ ثُمَّ نَصَرُتَهُ بالرُّعُب ے وعد ہ کیا کہ آپ کا دین تمام ا دیان پر غالب آئے گا اگر چرشرک دل تک ہوں اور بیاس وقت ہوا جب بعد بجرت تو نے ان حَـفَفُتـهُ بِجِبُرَ ئِيُلَ وَ مِيُكَآئِيُلَ وَالْمُسَوِّمِيُنَ مِنُ مَّلَاثِكَةِكَ وَ وَعَذَّتْكُنُ تُنظُهرَ دِيُنَهُ عَلَى کے خاند ان کورائی کے مقام پر جگہ دی او را ن کے اوران کے ساتھیوں کے لیے قبلہ بنایا پہلا و وگھر جومکہ میں بنایا گیا جو جہا نوں کے الدِّيُنِ كُلِّهِ وَلَوْكُرِهَ الْمُشُرِكُونَ وَ ذَٰلِكَ بَعُدَ اَنُ بَوَّئُتَهُ مُبَوَّءَ صِدُقٍ مِّنُ اَهُلِهِ وَ جَعَلُتَ لَهُ لیے بر کت و ہدا ہے کا مرکز ہے اس میں واضح نیٹا نیاں او رمقام ابرائیم ہے جواس گھر میں داخل ہوا اے امان مل گئی نیز تو نے فر مایا وَ لَهُــُمُ اَوَّلَ بَيُـتٍ وُّ ضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَّ هُدًى لِّلُعَالَمِيْنَ فِيُهِ ايَاتُ بَيِّنَاتُ ضرو رحدانے ارا دہ کرلیا ہے کہتم سے ناپا کی کو دو رکر دے اے اٹل بیت او رحم ہیں با ک رکھے جو باک رکھے کا حق ہے تیری رحمتیں

مَّقَامُ إِبْرَاهِيُمَ وَ مَنُ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا وَّ قُلُتَ إِنَّمَا يُرِيُدُ اللَّهُ لِيُذُهِبَ عَنُكُمُ الرَّجُسَ اَهُلَ ہوں محمر پر اوران کی آل پرتونے اٹل ہیت کی دوستداری کوان کا جر رسالت قرار دمیا قر آن میں پس تونے فر مایا کہ دیں کہ میں تم الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمُ تَطُهِيُرًا ثُمَّ جَعَلْتَ اَجُرَ مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ الِهِ مَوَدَّتَهُمُ فِي ے اجر رسمالت نہیں مانگنا تگریہ کرمیرے اقرباہے دوتی رکھواو رتونے کہا جواجر میں نےتم سے مانگاہو و ہمہا رہے فائدے میں ہے كِتَابِكَ فَـقُلُتَ قُلُ لَّا اَسْئَلُكُمُ عَلَيْهِ اَجُرًا إِلَّا الْمُوَدَّةَ فِي الْقُرُبِلِي وَ قُلُتَ مَا سَئَلُتُكُمُ مِّنُ نیز تو نے فر مایا میں نے تم ہے اجر رسمالت نمیس ما نگا سوائے اس کے کہ بیر راہ ہے اس کے لیے جوخد اتک پینچنا جا ہے اس ال بیت تیرا ٱجُـرً فَهُـوَ لَـكُـمُ وَ قُلُتَ مَآ اَسْئَلُكُمُ عَلَيْهِ مِنُ اَجُرِ اِلَّا مَنُ شَآءَ اَنُ يُتَخِذَ اِلْي رَبِّهِ سَبِينًالا مقر رکر دہ راستہ او رتیری خوشنو دی کے حصول کا ذریعہ ہیں ہاں جب محمد رسول اللہ کا وقت پورا ہوگیا تو ان کی جگہ علی بن ابی طالبً فَكَانُوا هُمُ السَّبِيُلَ اِلَيُكَ وَالْمَسُلَكَ اللَّي رضُوَ اذِكَ فَلَمَّا انْقَضَتْ آيَّقَالُمُ وَلِيَّهُ عَلِيَّ نے لے لی تیری رحمتیں ان دونوں پر اوران کی آل پر علی رہبر ہیں جب کہ محمد ڈرانے والے اور ہرقوم کے رہبر تھے کی فرمایا آپ ابُنَ آبِي طَالِبٍ صَلَوَ أَنُكُ عَلَيْهِمَا وَالِهِمَا هَادِيًا إِذْ كَانَ هُوَ الْمُثَلِّرَ وَلِكُلِّ قَوْمِ هَادٍ فَقَالَ نے جماعت سحاب کے جس کا میں مولا ہوں اس علی بھی اس کے مولا ہیں اے معبو دمجت رکھا ہے جواس سے محبت رکھے وشنی رکھ وَالْـمَلَّا اَمَامَهُ مَنْ كُنُتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيَّ مَوْلَاهُ اَللَّهُمَّ وَال مَنْ وَّالاَهُ وَ عَادِ مَنْ عَادَاهُ وَانْصُرُ اس سے جواس سے دشتنی کرے مدد کراس کی جواس کی مدد کر ہے چھوڑ دے اس کوجوا سے چھوڑ سے نیز فر مایا کہ جس کا میں نبی ہوں علی مَنُ نُسصَّرَهُ وَانحُسلُالُ مَنُ خَذَلَهُ و قَالَ مَنُ كُنُتُ آنَا نَبيَّهُ فَعَلِيٌّ آمِيْرُهُ وَ قَالَ آنَا وَ عَلِيًّ مِّنُ اس کا امیرو حاتم ہے او رفر مایائمیں او رعلیٰ ایک درخت ہے ہیں اور دوسر کےلوگ مختلف درختوں سے پیدا ہوئے ہیں او رعلیٰ کوا پنا شَجَرَةٍ وَّاحِلَمةٍ وَّ سَائِرُ النَّاسِ مِنُ شَجَرِ شَتَّى وَ اَحَلَّهُ مَحَلَّ هِرُونَ مِنُ مُوسَى فَقَالَ لَهُ جانشین کیا جیسے ہا رون موک کا کے جانشین ہوئے کی فرمایا اے ملئتم میری نسبت وہی مقام رکھتے ہو جوہا رون کوموک کی نسبت تھی ٱنُتَ مِنِّي بِمنُزلَةِ هُرُونَ مِنُ مُّوسِي إِلاَّ ٱنَّـٰهَ لَا نَسِيَّ بَعُـدِى وَ زَوَّجَهُ ابُنَتَهَ سَيّدَةَ نِسَآءِ تحرمیرے بعد کوئی نیمیں آپ نے علی کا ٹکاح اپنی بٹی سر دار زنان عالم ہے کیا مسجد میں ان کے لیے و ہ امرحلال رکھا جوآپ کے الَعَالَمِيْنَ وَ اَحَلَّ لَهُ مِنُ مَّسُجِدِهِ مَا حَلَّ لَهُ وَ سَدَّ الْاَبُوَابَ اِلَّا بَابَهُ ثُمَّ اَوُ دَعَهُ عِلْمَهُ وَ کیے تھااو رمبجد کی طرف سے سبجی دروا زے ہند کرائے سوائے علیٰ کے پھرا پناعلم وحکمت ان کے سپر دکیاتو فر مایا : میں علم کا شہر ہوں او ر

حِكْمَتَهُ فَقَالَ أَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَ عَلِيٌّ بَابُهَا فَمَنُ أَرَادَ الْمَدِيْنَةَ وَالْحِكْمَةَ فَلْيَاتِهَا مِنُ علیّ اس کا درواز ہ ہیں لبندا جوعلم وحکمت کا طالب ہے و ہاس درعلم پر آئے نیز یہ کہا کہا ہے علیّتم میرے بھائی جانشین او روارث ہو بَابِهَا ثُمَّ قَالَ ٱنْتَ آخِيُ وَ وَصِيِّيُ وَ وَارِثِي لَحُمُكَ مِنْ لَحُمِيُ و دَمُكَ مِنْ دَمِي تها را گوشت میرا گوشت تمها را خون میرا خون تمها ری صلح میری صلح تمهاری جنگ میری جنگ ہےا ورا بمان تمها رےخون و گوشت سِلُمُكَ سِلْمِيُ وَ حَرُبُكَ حَرُبِيُ وَالْإِيْمَانُ مُخَالِطٌ لُحُمَكَ وَ دَمَكَ كَمَا خَالَطَ لَحُمِيًّ فَي میں شامل رہے جیسے و ہمیر ہے گوشت وخون میں شامل ہے قیا مت میں تم حوض کوڑ پر میر ہے خلیفہ ہو گے شہی میر ہے قریضے چکا ؤ کے دَمِيُ وَ ٱنُتَ غَدًا عَلَى الْحَوُض خَلِيُفَتِيُ وَ ٱنُتَ تَقُضِيُ دَيْنِيُ وَ تُنْجِزُ عِدَاتِيُ وَ شِيُعَةُكَ اورمیرے وعدے بھاؤ گے تمہارے شیعہ جنت میں جیکتے چیروں کے ساتھ نو رانی تختوں پر میرے آس ماس میرے قرب میں ہوں عَلَى مَنَابِرَ مِنُ نُورٍ مُّبُيَضَّةً وُّ جُوهُهُمُ حَوْلِيُ فِي الْجَنَّةِ وَ هُمُ جِيْرَانِيُ وَ لَوُلَا أَنْتَ يَا عَلِيٌّ کے اورا سے علی اگرتم نہ ہوتے تو میرے بعدمؤ منوں کی پہلان نہ ہویا تی چنا نچہو ہ آپ کے بعد گمراہی سے ہدا ہے میں لانے والے لَـمُ يُـعُرَفِ الْـمُوُّمِنُولَ يَعْدِي وَ كَانَ بَعْدَهُ هُدِّي مِنْ الضَّلَالِ وَنُورًا مِّنَ الْعَمٰي وَ حَبُلَ تا رکی ہے روشنی میں لائے والے خدا کامضبوط سلسلہ او راس کاسید ھارا ستہ تھے نہ قر ابت پیغیر میں کوئی ان ہے پڑ ھاہوا تھا نہ دین اللُّهِ الْمَتِيُنَ وَ صِرَاطَهُ الْمُسْتَقِيُمَ لَا يُسْبَقُ بِقَرَابَةٍ فِيُ رَحِمٍ وَّ لَا بِسَابِقَةٍ فِي دِيْنِ وَّ لَا میں کوئی ان ہے آ محے تھا ان کے علاو ہ کوئی بھی او صاف میں رسول کے ما نند نہ تھا حذا کی رحمت ہوعلیؓ و نبی او را ن کی آ ل برعلیؓ نے يُـلُـحَـقُ فِـيُ مَـنُقَبَةٍ مِّنُ مَّنَا قِبِهِ يَحُذُو حَذُوَ الرَّسُولُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِمَا وَ الِهِمَا وَ يُقَاتِلُ تا و ہل قرآن پر جنگ کی او رحد ا کے معالم میں کسی ملامت کی پرواہ نہ کی عرب سر دا روں کو ہلا ک کیا او ران کے بہا دروں کوقش کیا عَـلَـى التَّاوِيُل وَ لَا تَأْخُذُهُ فِي اللَّهِ لَوُمَةُ لَآئِم قَدُ وَ تَرَفِيُهِ صَنَادِيُدَ الْعَرَبِ وَ قَتَلَ اَبُطَالَهُمُ اوران کے پہلوا نوں کو بچھاڑا پس عربوں کے دلوں میں کینہ بجر گیا کہ بدر، خیبر، حیین وغیر ہ میںان کے لوگ قبل ہو کھے پس و ملکی کی وَ نَاوَشَ ذُوْبَانَهُمُ فَاوُدَ عَ قُلُو بَهُمُ أَحْقَادًا بَدُرِيَّةً وَّ خَيْبَرِيَّةً وَّ خُنْيِنِيَّةً وَّ غَيْرَ هُنَّ فَأَضَبَّتُ وتمنی میں اکٹھے ہوئے اور ان کی مخالفت پر آ ما د ہ ہو گئے چنا نچہ آپ نے بیعت تو ژنے والوں تفرقہ ڈالنے والوں اور ہث دھرمی عَـلْي عَـدَاوَتِـهٖ وَ اَكَبَّتُ عَلَى مُنَابَذَتِهِ حَتَّى قَتَلَ النَّاكِثِيُنَ وَالْقَاسِطِيُنَ وَالْمَارِقِيُنَ وَلَمَّا کرنے والوں کوفل کیا جب آپ کا وقت پورا ہواتو بعدوالے بدبخت نے آپ کوفل کیا اس نے پہلے والے بدبخت کی پیروی کی

قَطْي نَحْبَهُ وَ قَتَلَهُ ٓ اشْـقَـي اللاخِرِيُنَ يَتُبَعُ اَشْقَى الْاَوَّلِيُنَ لَمُ يُمْتَثَلُ اَمُرُ رَسُولِ اللّهِ صَلّى حضرت رسول سلی الله علیه و آله کا فرمان پورا ہوا کہ ایک رہبر کے بعد دوسرا رہبر آتا رہاا ورا مت اس کی دشمنی پر شدت ہے آ مادہ و اللُّهُ عَلَيْهِ وَالِهِ فِي الْهَادِيْنَ بَعُدَ الْهَادِيْنَ وَالْاُمَّةُ مُصِرَّةٌ عَلَى مَقْتِهِ مُجْتَمِعَةٌ عَلَى جمع ہو کراس پر ظلم ڈھاتی او راس کی اولا دکو پریشان کرتی رہی گر تھوڑ ہے ہے لوگ و فا دار تھے او ران کاحق پیچا نے تھے پس ان میں قَطِيُعَةِ رَحِمِهِ وَ اقْصَآءِ وُلُدِهِ اللَّا الْقَلِيُلَ مِمَّنُ وَ فَي لِرِعَايَةِ الْحَقِّ فِيهُمُ فَقُتِلَ مَنُ قُتِلَ وَ سے کچھ فل ہوئے بعض قید میں ڈالے مجے اور کچھ وطن سے بے وطن ہوئے ان پر قضاوا ر دہوگئی جس پر وہ بہترین کے امیدوار تھے سُبِيَ مَنُ سُبِيَ وَ اَقْصِيَ مَنُ اَقْصِيَ وَ جَرَى الْقَضَآءُ لَهُمْ بِمَا يُرُجِى لَهُ حُسُنُ الْمَثُوبَةِ إِذُ کیونکہ زین خدا کی ملکیت ہے و واپنے بندوں میں سے جے جا ہے اس کاوا رث بنا تا ہےا ورانجام کا رپر میز گاروں کے لیے ہے اور كَانَتِ الْاَرُضُ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنُ يَّشَآءُ مِنُ عِبَادِهِ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ وَ سُبُحَانَ رَبَّنَآ اِنُ كَانَ یا ک ہے ہما را رب کہ ہمار ہے رب کاوعد ہ پوراہو کرر ہتا ہے ہاں حد ااپنے وعد سے مخلاف نبیل کرتا وہ زہر وست ہے حکمت والا وَعُدُ رَبِّنَا لَمَفُعُولًا وَ لَلَ يُخَلِفَ اللَّهُ وَعُدَهُ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيمُ فَعَلَى الْاطَآئِبِ مِنُ پس حضرت محمر وحضرت علی کدان دونوں پر خدا کی رحمت ہوان کے خاندان کے با کبازان پر رونے والوں کوروہا جا ہیے چنانچیان اَهُـلِ بَيُـتِ مُـحَـمَّدٍ وَّ عَلِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِمَا وَ الِهِمَا فَلْيَبُكِ الْبَاكُوْنَ وَ إِيَّاهُمُ فَلْيَنْدُ پراوران جیسوں پر دھاڑیں مارکررونا چاہیےان کے لیے آنسو بہائے جائیں رونے والے چیچ چیچ کر روئیں نالہ وفریا دہلند کریں النَّادِبُوُنَ وَ لِمِثْلِهِمُ فَلُتَذُرَفِ الدُّمُوعُ وَ الْيَصُرُ خِ الصَّارِخُونَ وَ يَضِجُّ الضَّآجُونَ وَيَعِجَّ اوراو کچی آ وازوں میں رو کرکھیں کہاں ہیں حسنؑ کہاں ہیں حسینؑ کہاں گھے فر زندان حسینؓ ایک نیکوکار کے بعد دوسرا نیکوکا را یک الُعَـآجُوُنَ اَيُنَ الْحَسَنُ اَيُنَ الْحُسَيْنُ اَيُنَ اَبُنَاءُ الْحُسَيْنِ صَالِحٌ بَعُدَ صَالِح وَّ صَادِقُ بَعُدَ سے کے بعد دوسراسچا کہاں گئے جوایک کے بعد ایک راہ وحق کے رہبر تھے کہاں گئے جواپنے وقت میں حذا کے برگزید و تھے کدھر گئے صَادِق أَيُنَ السَّبِيلُ بَعُدَ السَّبِيلِ أَيُنَ الْخِيَرَةُ بِعُدَ الْخِيَرَةِ أَيُنَ الشَّمُوسُ الطَّالِعَةُ أَيُنَ و ہ چیکتے سورج کیا ہوئے وہ د مکتے چاند کہاں گئے و ہ جھلملا تے ستا رے کدھر گئے وہ دین کے نشان اور علم کے ستون کہاں ہیں حدا کا الْاَقْــمَارُ الْمُنِيُرَةُ ايُنَ الْاَنْجُمُ الزَّاهِرَةُ ايُنَ اَعُلامُ الدِّيُنِ وَ قَوَاعِدُ الْعِلْمِ ايُنَ بَقِيَّةُ اللَّهِ الَّةِي آ خری نمائند ہ جورہبروں کے اس خاعدان ہے با ہرخییں کہاں ہے وہ جو ظالموں کی جڑیں کا شنے کے لیے آ ما دہ ہے کہاں ہے وہ جو

لَا تَخُلُوا مِنَ الْعِتْرَةِ الْهَادِيَةِ آيُنَ الْمُعَدُّ لِقَطْعِ دَابِرِ الظَّلَمَةِ آيُنَ الْمُنْتَظَرُ لِإ قَامَةِ الْآمُتِ وَ ا نظار میں ہے کہ ٹیڑھے کوسیدھااوریا درست کو درست کرنے کا وقت آئے کہاں ہے و ہامیدگا ہ جوظلم وستم کومٹانے والا ہے کہاں الُعِوَجِ اَيُنَ الْمُرْتَجِي لِإِزَالَةِ الْجَوُرِ وَالْعُدُوانِ آيُنَ الْمُدَّخَرُ لِتَجُدِيْدِ الْفَرَائِضِ وَالسُّنَنِ ہے وہ فراکفن اورسنن کوزندہ کرنے والا امام کہاں ہے وہ ملت اورشریعت کوراست کرنے والا کہاں ہے وہ جس کے ذریعے قرآن اَيُنَ الْمُتَخَيَّرُ لِا عَادَةِ الْمِلَّةِ وَالشَّرِيْعَةِ اَيُنَ الْمُؤَمَّلُ لِاحْيَآءِ الْكِتَابِ وَ حُدُودِةٍ اَيُنَ اوراس کے احکام کے زندہ ہونے کی تو قع ہے کہاں ہے وہ دین اورائل دین کے طریقے روشن کرنے والا کہاں ہے وہ ظالموں کا مُـحُيىُ مَعَالِم الدِّيُن وَ اَهُلِمْ اَيُنَ قَاصِمُ شَوْكَةِ المُعْتَدِيْنَ اَيُنَ هَادِمُ اَبُنِيَةِ الشِّرُكِ وَالنِّفَاقِ زورتو ژنے والا کہاں ہے وہ شرک و نفاق کی بنیا دیں ڈھانے والا کہاں ہے وہ بد کا روں نا فر ما نوں اورسر مشوں کو تباہ کرنے والا اَيُنَ مُبِيُدُ اَهُلِ الْفُسُوقِ وَالْعِصْيَانِ وَالطُّغُيَانِ اَيُنَ حَاصِدُ فُرُوعِ الْغَيِّ وَالشِّقَاقِ اَيُنَ کہاں ہے وہ گمرابی اورتفرقے کی شاخیس کامنے والا کہاں ہے وہ کج دلی ونفس پرتی کے داغ مثانے والا کہاں ہے وہ جھوٹ اور طَامِسُ آثَارِ الزَّيْخِ وَالْآهُو آءِ آيُنَ قَالِطِلْعُ حَبَآئِلِ الْكِذُبِ وَ الْإِفْتِرَآءِ آيُنَ مُبِينُهُ الْعُتَاةِ بہتان کی رکیس کامنے والا کہاں ہے وہ سرکشوں او رمغروروں کو تباہ کرنے والا کہاں ہے وہ دشمنوں گمراہ کرنے والوں اور بے وَالْمَرَدَةِ اَيْنَ مُسْتَاصِلُ اَهُل الْعِنَادِ وَالتَّضُلِيُل وَ الْإِلْحَادِ اَينَ مُعِزُّ الْاَوْلِيَآءِ وَ مُذِلَّ دینوں کی چڑیں اکھا ڑنے والا کہاں ہے وہ دوستوں کو ہاعزت اور دشمنوں کوؤلیل کرنے والا کہاں ہے وہ سب کوتقو کی پر جمع کرنے الْآئُحَدَآءِ اَيُنَ جَامِعُ الْكَلِمَةِ عَلَى التَّقُواى اَيُنَ بَابُ اللَّهِ الَّذِيُ مِنْهُ يُؤُتَّى اَيُن وَجُهُ اللَّهِ والا کہاں ہے و ہخدا کا دروا ز ہ جس ہے وا ردہوں کہاں ہے و ہمظم رخدا کہ جس کی طرف دوستدارمتوجہ ہوں کہاں ہے و ہ زیمن و الَّـذِيْ اِلَيْهِ يَتَوَجَّهُ الْاَوْلِيَآءُ اَيُنَ السَّبَبُ الْمُتَّصِلُ بَيْنَ الْاَرْضِ وَالسَّمَآءِ اَيُنَ صَاحِبُ يَوُم آ سان کے بیوست رہنے کا وسیلہ کہاں ہے وہ یوم فقح کا تحکمران او رہدا ہے کا پر چم لہرا نے والا کہاں ہے وہ نیکی وخوشنو دی کا لباس الْـفَتُـحِ وَ نَـاشِـرُ رَايَةِ الْهُـذَى اَيُـنَ مُوَّلِفُ شَمُلِ الصَّلاحِ وَالرِّضَآ اَيُنَ الطَّالِبُ بِذُحُولِ پہننے والا کہاں ہے وہ نبیوں کے خون اور نبیوں کی اولا دیے خون کا دعو بدا رکہاں ہے وہ کربلا کے مقتول حسینً کے خون کا مدعی کہاں الْاَنْبِيَآءِ وَ اَبُنَآءِ الْاَنْبِيَآءِ اَيُنَ الطَّالِبُ بِدَمِ الْمَقْتُولِ بِكُرُبَلَّاءَ اَيُنَ الْمَنْصُورُ عَلَى مَن ہے وہ جواس پر غالب ہے جس نے زیا دتی کی اور چھوٹ بائد ھاو ہرپیثان کہ جب دعا مائٹے قبول ہوتی ہے کہاں ہے وہ مخلوق کا

اعْتَىدى عَلَيْهِ وافْتَرْي اَينَ الْمُضُطَرَّ الَّذِي يُجَابُ إِذَا دَعِيَّ اَيُنَ صَدُرُ الْخَلَائِقِ ذُو الْهِرِّ حاتم جونیک و پر ہیز گار ہے کہاں ہے وہ نبی مصطفی کا فر زند علی مرتفعیٰ کا فرزند حدیجۂ باکٹ کا فرزند اور فاطمہ کبری کا فرزند مہدی ا وَالسُّقُوْكِي اَيُنَ ابُنُ النَّهِيِّ الْمُصْطَفَى وَابُنُ عَلِيَّهِ الْـمُرُتَضَى وَابُنُ خَدِيُجَةَ الْغَرَّآءِ وَابُنُ قربان آپ پر میرے ماں باپ او رمیری جان آپ کے لیے فدا ہے اے خدا کے مقرب سر داروں کے فرز نداے باک اصلی فَاطِمَةَ الْكُبُراى بِاَهِي أَنْتَ وَ أُمِّي وَ نَفُسِي لَكَ الْوِقَآءُ وَ الْحِمْي يَابُنَ السَّادَةِ المُقَرَّبِيُرَ یز رگوا رول کے فر زندا ہے ہدایت یا فتہ رہبروں کے فرزندا ہے برگزید ہ اور خوش اطوار بزرگوں کے فرزندا ہے پا ک نہا دسروا رو ل يَا بُنَ النَّجَبَآءِ الْآكُرَمِيْنَ يَابُنَ الْهُدَاةِ الْمَهُدِيِّيْنَ يَابُنَ الْجِيَرَةِ الْمُهَذَّبِيْنَ يَا بُنَ الْغَطَارِفَةِ کے فر زندا ہے یا کہازوں یا ک شدگان کے فر زندا ہے یا ک نژا دسا دات کے فر زندا ہے وسیع القلب عزت دا روں کے فر زندا ہے الْآنُحِييُسَ يَا بُسَ الْآطَآئِبِ الْـمُسطَهَّـرِيُسَ يَابُنَ الْحَضَارِمَةِ الْمُنْتَجَبِيْنَ يَابُنَ الْقَمَاقِمَةِ روشن جا ندو ل کے فر زندا ہے روشن جے اغو ل کے فر زندا ہے روشن سیاروں کے فر زندا ہے جیکتے ستاروں کے فر زندا ہے روشن راہوں الْآكُرَمِينَ يَا بُنَ الْبُدُورِ الْمُعِيْرَةِ يَابُنَ السُّرَجِ الْمُضِينَةَ قِابُنَ الشُّهُ الثَّاقِبَةِ يَابُنَ الْآنُجُم کے فر زندا سے بلند مرجے والوں کے فر زندا ہے حاملین علوم کے فر زندا ہے واضح روشوں کے فر زندا ہے ند کو رعلامتوں کے فرزندا ہے الـزَّاهِـرَةِ يَابُنَ السُّبُلِ الْوَاضِحَةِ يَابُنَ الْاَعْلَامِ اللَّائِحَةِ يَابُنَ الْعُلُوْمِ الِكَامِلَةَ يَابُنَ السُّنَن معجزنما وُں کے فرزندا سے ظاہر دلائل کے فرزندا ہے سیدھے رائے کے فرزندا کے نظیم فبر کے فرزندا ہے اس ہستی کے فرزند جوحندا الْمَشْهُوْرَةِ يَابُنَ الْمَعَالِمِ الْمَاثُورَةِ يَا بُنَ الْمُعُجزَاتِ الْمَوْجُودَةِ يَا بُنَ الدَّلَائِل کے ہاں ام الکتاب میں علی علیم ہے اے واضح و روثن آیا ت کے فر زندا نے ظاہر دلائل کے فر زند اے واضح و روثن مرّ دلائل کے الْمَشْهُودَةَ يَابُنَ الصِّرَاطِ الْمُسُتِقِيهُم يَابُنَ النَّبَاالْعَظِيُم يَابُنَ مَنُ هُوَ فِي أُمَّ الْكِتَابِ لَدَى فرزندا ےکامل حجتوں کے فرزندا ہے بہترین نعتوں کے فرزندا ہے طٰہ اور محکم آیتوں کے فرزندا ہے پاسین و ذا رہا ہے کے فرزندا ہے اللَّهِ عَلِيٌّ حَكِيُمُ يَابُنَ الْأَيَاتِ وَالْبَيِّنَاتِ يَابُنَ الدُّلَائِلِ الظَّاهِرَاتِ يَا بُنَ الْبَرَاهِيُن طوراو رعا دیا ت کے فر زندا ہے اس ہستی کے فر زند جوہز دیک ہوئے تو اس سے مل کھے اپس کمان کے دونوں سروں جتنے یااس ہے بھی الُوَاضِحَاتِ الْبَاهِ رَاتِ يَابُنَ الْحُجَجِ الْبَالِغَاتِ يَا بُنَ النِّعَمِ السَّابِغَاتِ يَابُنَ طُهُ نز دیک ہوئے قریب ہو سکے علی اعلیٰ کےا ہے کاش میں جانتا کہاس دوری نے آپ کو کہاں جامحیرایا اور کس زمین اور کس فاک نے

وَالْـمُحُكَمَاتِ يَابُنَ يُسَ وَالذَّارِيَاتِ يَابُنَ الطُّورِ وَالْعَادِيَاتِ يَابُنَ مَنُ دَنٰي فَتَدَلَّى فَكَانَ آ پ کواٹھا رکھا ہے آ پ رضویٰ میں ہیں یا کسی اور پہاڑ پر ہیں یا وا دی طویٰ میں یہ مجھ پر گراں ہے کرمخلوق کو دیکھوں اور آپ کو نہ قَابَ قَوْسَيُنِ أَوُ اَدُنْي ذُنُوًا وَا اقْتِرَابًامِّنَ الْعَلِيِّ الْاَعْلَى لَيْتَ شِعْرِي اَيُنَ اسْتَقَرَّتُ بِكَ و کھے باؤل ندآپ کی آ ہٹ سنوں اور ندسر گوشی مجھے رخ ہے کہ آپ تنہائتی میں پڑے ہیں میں آپ کے ساتھ نہیں ہوں اور میری آ ہ النُّواى بَلُ أَيُّ أَرُضٍ تُقِلُّكَ أَوْثَرَاى أَبِرَضُواى أَوْ غَيْرِهَا أَهْذِى طُواى عَزِيْزُ عَلَيَّ أَنُ أَرَى و زا ری آ پ تک نیس ﷺ یا تی میری جان آپ پر قربان کرآپ غائب ہیں گرہم سے دورنیس میں آپ پر قربان آپ وطن سے دور الْخَلْقَ وَلَا تُرَى وَلاَ ٱسْمَعَ لَكَ حَسِيْسًا وَّلاَ نَجُواى عَزِيْزٌ عَلَىَّ أَنُ تُحِيْطَ بِكَ دُوُ ہیں لیکن ہم سے دورٹیس میں آپ پر قربان آپ ہرمحتِ کی آرزو ہرمؤمن ومؤمنہ کی تمنا ہیں جس کے لیے و ہالہ کرتے ہیں میں الْبَلُوٰى وَلَايَنَالَكَ مِنِّي ضَجِيُجٌ وَّلاَشَكُواٰى بِنَفْسِي ٱنْتَ مِنْ مُّغَيِّبِ لَمُ يَخُلُ مِنَّا بِنَفُسِي قربان آپ و ہونت دا رہیں جن کا کوئی ٹا ٹی ٹیس میں قربان آپ و دیلند مرتبہ ہیں جن کے برابر کوئی ٹیس میں قربان آپ و ہقد یمی ٱنْتَ مِنْ نَازِح مَّا لَازَحَ عَنَّا بِمُفْسِي ٱلْتَ أُمُلِيَّةُ هُ إِنِّقٍ يُتَمَنِّى مِنْ هُوْ مِن وَ مُؤْمِنَةٍ ذَكَرَا نعمت ہیں جس کی مثل نہیں میں قربان آپ جوشرف رکھتے ہیں و ہ کسی او رکوئیس مل سکتا کب تک ہم آپ کے لیے بے چین رہیں گے فَحَنَّا بِنَفُسِيُ أَنْتَ مِنُ عَقِيُدِ عِزِّلا يُسَاملي بِنَفُسِي أَنْتَ مِنُ آثِيُل مَجُدٍ لا يُجَارِى بنَفُسِي اے میرے آتا اور کب تک اور کس طرح آپ سے خطاب کروں اور سر گوٹی کروں میہ مجھ پر گراں ہے کہ بجر آپ کے کسی سے ٱنُتَ مِنُ تِلَادِنِعَم لَا تُصَاهِى بِنَفُسِى) أَنْتَ مِنُ نُصِيُفِ شَرَفٍ لاَ يُسَاوَى إِلَى مَتَى جواب پاؤل مایا تص سنوں مجھ پر گراں ہے کہ میں آپ کے لئے روؤں اورلوگ آپ کو چھوڑے رہیں مجھ پر گراں ہے کہ لوگوں کی أَحَارُ فِيُكَ يَا مَوُلاَى وَالِي مَتْى وَ أَيَّ خِطَابِ أَصِفُ فِيُكَ وَأَيَّ نَجُواى عَزِيْزُ عَلَيَّ طرف ہے آپ پر گزرے جو گزرے تو کیا کوئی ساتھی ہے جس کے ساتھ ٹل کر آپ کے لیے گریہ و زاری کروں کیا کوئی ہے تا ب ٱجَابَ دُوُنَكَ وَ ٱنَّاعْيَ عَزِيْزٌ عَلَيَّ ٱنُ ٱبْكِيَكَ وَ يَخُدُلَكَ الْوَرِي عَزِيْزٌ عَلَيَّ ٱنُ يَجُرُ ہے کہ جب وہ تنہا ہوتو اس کے تمرا دمالہ کروں آیا کوئی آ تھے جس کے ساتھ مل کرمیری آ تھٹم کے آنسو بہائے اے احمرمجتبی کے عَلَيُكَ دُونَهُمْ مَّاجَراى هَلُ مِنْ مُّعِينِ فَأُطِيُلَ مَعَهُ الْعَوِيْلَ وَالْبُكَآءَ هَلُ مِنْ جَزُوع فأسَاعِدَ ﴿ فرزندآپ کے باس آنے کا کوئی ماستہ کیا ہما ما آج کا دن آپ کے کل سے ال جائے گا کہ ہم خوش ہوں کب و دو قت آئے گا

************************************* جَزَعَهُ إِذَا خَلًا هَلُ قَلْدِيَتُ عَيُنُ فَسَاعَدَ تُهَا عَيْنِي عَلَى الْقَذَٰى هَلُ إِلَيْكَ يَابُنَ أَحُمَلَهُ کہ ہم آپ کے چشے سے سراب ہوں گے کب ہم آپ کے چشمہ شیریں سے بیاں بچھا کیں گے اب تو بیاں طولانی ہوگئی کب سَبِيُـلُ فَتُـلُقيٰ هَلُ يَتَّصِلُ يَوُمُنَا مِذُكَ بِعِدَةٍ فَنَحُظٰى مَتْى نِرَدُ مَنَاهِلَكَ الرَّوِيَّةَ فَنَرُواى مَا ہما ری میج وشام آپ کے ساتھ گزرے گی کہ ہما ری آئی تھیں شھٹدی ہوں کب آپ ہمیں اور ہم آپ کو دیکھیں سے جبکہ آپ کی فقح کا نَنْتَقِعُ مِنْ عَذُبٍ مَآئِكَ فَقَدُ طَالَ الصَّدَى مَتْى نُعَادِيُكَ وَ نُرَاوِحُكَ فَنُقِرَّعَيْنًا مَّتَى تَرَا پر چم اہر انا ہوگا ہم آپ کے گر دجمع ہوں گےاو رآپ جمی او گوں کے امام ہوں گے تب زین آپ کے ذریعے عدل وا نصاف ہے پُر نَـرَاكَ وَقَـدُ نَشَـرُتَ لِـوَآءَ الـنَّـصُـرِ تُراى آتَرَانَا نَحُفُّ بِكَ وَٱنْتَ تَأُمُّ الْمَلَاءِ وَقَدُ مَلَاظٍ ہوگی آپ اپنے دشمنوں کوئتی و ذات ہے ہمکنا رکریں گے آپ سر کشوں اور حق کے مظروں کونا بود کریں مجےمغروروں کا زورتو ژ الْلاَرْضَ عَـدُلاً وَ اَذَقُتَ اَعُـدَآئَكَ هَوَانًا وَّ عِقَابًا وَّابَرُتَ الْعُتَاةَ وَجَحَدَةَ الْحَقّ وَقَطَعُتَ ویں گے اور ظلم کرنے والوں کی جڑیں کاٹ دیں گے اس وقت ہم گھیں گے حمد ہے خدا کے لیے جو جہانوں کا رب ہے اے معبو دتو دَابِرَالُـمُتَكَبِرِيْنَ وَاجْتَاثُتُ أَضُولَ الظَّالِمِلْنَ ﴿ نَخُلُ نَقُولُ الْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ہے دکھوں اورمصیبتوں کو دو رکزنے والا میں تیرے حضور شکایت لایا ہوں کرتو مداوا کرتا ہے اورتو بی دنیا و آخرت کا پر ور دگار ہے اَللَّهُمَّ انْتَ كَشَّافُ الْكُرَبِ وَالْبَلُواى وَإِلَيْكَ اسْتَعُدِى فَعِنْدَكَ الْعَدُواى وَانْتَ رَ کس میری فریا دس اے فریا دیوں کی فریا دسننے والے اپنے اس حقیرا ور دکھی بندے کواس کے آتا کا دیدا رکرا دے اے زبر دست الْأَخِرَةِ وَالدُّنْيَا فَاَغِتْ يَا غِيَاتَ الْمُسْتَغِيُثِيْنَ عُبَيْدَكَ الْمُبْتَلَى وَارِهِ سَيّدَهُ يَا شَدِيْدَ الْقُواء قوت والے ان کے واسطے سے اس کے رکج وقم کو دورفر مااوراس کی پیاس بجھا دے اے وہ ذات جوعرش پر حاوی ہے کہ جس کی وَازَلُ عَنْهُ بِهِ الْاَسِلِي وَالْجَواى وَ بَرِّدُ غَلِيْلَهُ يَا مَنُ عَلَى الْعَرُشِ اسْتَواى وَمَنُ إِلَيْهِ الرُّجُعلى طرف والیسی اور آخری ٹھکا نا ہے اورا ہے معبو دہم ہیں تیرے حقیر بندے جوتیرے ولی عصرً کے مشاق ہیں جن کا ذکر ٹونے اور وَالْـمُـنْتَهٰـي اَلـلَّهُـمَّ وَ نَحُنُ عَبِيُدُكَ التَّايْقُونَ اللَّي وَ لِيِّكَ الْمُذَكِّر بِكَ وَ نَبِيّكَ خَلَقُ لَنَا تیرے نبی نے کیا تو نے اخییں ہماری جائے پنا ہ بنایا ہما را مہا را قر اردیا ان کوہما رکی زندگی کا ذریعہ او رپنا ہ گا ہ بنایا او ران کوہم میں عِـصْــمَةً وَ مَلَا ذَ اوَّاقَـمُتَـهُ لَنَا قِوَامًا وَّمَعَاذًا وَ جَعَلْتَهُ لِلْمُؤْمِنِيُنَ مِنَّا اِمَامًا فَبَلِّغُهُ مِنَّا تَحِيَّةً ہے مؤمنوں کا امام قرار دیا پس ان کوہما را درو دوسلام پہنچا او را ہے پر ور دگارا ن کے ذریعے ہماری عزت میں اضا فدفر ماان کی

وَسَلَامًا وَّ زِدُنَا بِـذَالِكَ يَـا رَبِّ اِكُـرَامًا وَّاجُـعَلُ مُسْتَقَرَّهُ لَنَا مُسْتَقَرَّةً وَ مُقَامًا وَ أَتُمِمُ إ قر ارگاہ کو ہماری قرا رگاہ او رٹھکا نہ بنا دے ہم پر ان کی اما مت کے ذریعے ہما رہے لیے اپنی نعمت پوری فرما یہاں تک کہ وہ ہمیں نِعُمَّتَكَ بِتَقُدِيْمِكَ إِيَّاهُ أَمَامَنَا حَتَّى تُورِدُنَا جِنَانَكَ وَ مُرَافَقَةَ الشَّهَدَآءِ مِنُ خَلَصَآئِكُ ۗ تیری جنت میں ان شہیدوں کے باس لے جا کیں گے جومقرب خاص ہیں اے معبو د! رحمت نا زل فر ما محمدُ و آل محمدُ پر او رحمت فر ما اَللَّهُمَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ آل مُحَمَّدٍ و صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ جَدِّهٍ وَ رَسُوُلِكَ السَّيّدِ الْاكْبَ ا مام مہدیؓ کے نا ما محمد پر جو تیرے رسول اور عظیم سر دار ہیں اور رحمت کر القائم کے والد پر جو چھوٹے سر دار ہیں رحمت فر ما ان کی وَعَلَى اَبِيُهِ السَّيِّدِ الْاَصْغَرِ وَ جَدَّتِهِ اَلصِّدِّيْقَةَ الْكُبُراي فَاطِمَةَ بنُتِ مُحَمَّدٍ وَعَلَى مَن وا دی صدیقة کبری فاطمة بنت محمر پر رحت فرما ان سب پرجن کوتو نے ان کے نیکوکار ہز رگوں میں سے چنا اور رحت فرما القائم پر اصُطَفَيْتَ مِنُ اَبَآئِهِ الْبَرَرَةِ وَ عَلَيْهِ اَفُضَلَ وَاكْمَلَ وَاتَّمَّ وَادُومَ وَ اكْثَرَ وَ اوْفَرَ مَا بہترین کامل پوری ہمیشہ ہمیشہ بہت ی بہت زیا دہ جو رحت کی ہوتو نے اپنے برگزید وں میں ہے کسی پر اور مخلوق میں ہے اپند صَلَّيْتَ عَلَى أَحَمْ إِمِّنْ أَصْفِينَا إِكَا وَ إِحَارَتِكَ مِنْ خَلْقِكَ وَ صِلَّ عَلَيْهِ صَلُّوةً لأ کر دہ پر اور درو ذہیج القائم پر و ہ درو دجس کا شار نہ ہوجس کی مدت ختم نہ ہوا ور جوبھی قطع نہ ہوا ہے معبو د! ان کے ذریعے حق کو قائم لِعَدَدِهَا وَلَانَهَايَةَ لِمَدَدِهَا وَلاَ نَفَادَ لِامَدِهَا اَللَّهُمُّ وَاقِمُ بِهِ الْحَقُّ وَادُحِضُ بِهِ الْبَاطِلَ وَ فرما ان کے ہاتھوں باطل کومٹاد ہےان کے وجود ہےا ہے دوستوں کوعزت دےان کے ذریعے اپنے ڈشمنوں کوؤلت دےاورا ہے اَدِلُ بِهِ اَوُلِيٓآ ذَكِلُ وَ اَذْلِلُ بِهِ اَعُدَآئَكَ وَ صِلِ اَللَّهُمَّ بَيُنَنَّا وَ بَيُنَهُ وُصُلَةً تُؤَدِّى اِلٰى مُرَافَةَ معبو دہمیں او ران کوا کٹھے کر دے ایساا کٹھا کہ جوہم کوان کے پہلے ہز رگوں تک پہنچائے او رہمیں ان میں قرا ردے جنبوں نے ان کا سَلَفِهِ وَجُعَلْنَا مِمَّنُ يَّاخُذُ بِحُجُزَتِهِمُ وَيَمُكُثُ فِي ظِلِّهِمْ وَاعِّنَا عَلَى تَادِيَةِ حُقُوقِهِ الَّيْهِ وامن پکڑا ہے ہمیں ان کے زہر سماریہ رکھان کے حقوق اوا کرنے میں ہما ری مدوفر ما ان کی فرمانبر وا ری میں کوشاں بنا و ہےان کی وَالْإِجْتِهَادِ فِيي طَاعَتِهِ وَ اجْتِنَابِ مَعْصِيَتِهِ وَامُنُنُ عَلَيْنَا برضَاهُ وَهَبُ لَنَا رَافَتَهُ وَ رَحُمَتَهُ نا فر مانی ہے بچائے رکھان کی خوشنو دی ہے ہم پرا حسان کراو رعطا فر ماہمیں ان کی محبت ان کی رحمت ان کی وعاا وران کی برکت وَ دُعَآئَـهُ وَخَيُـرَهُ مَانَنَالُ بِهِ سَعَةً مِّنُ رَّحُمَتِكَ وَفَوُزًا عِنْدَكَ وَاجُعَلُ صَلُوتَنَا بِهِ مَقُبُو کے ذریعے ہم تیری وسیع رحمت اور تیرے ہاں کا میا فی حاصل کریں ان کے ذریعے ہماری نما زقبول فرما ان کے وسیلے ہما رے

كرجس ميں مزه آئے اور پھر پياس نه لگھا ہے سب سے زيا دہ رحم والے۔

أَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ۔

اس كے بعد نماززیا كے با معنى كافاكر بالم وجائے اور پھر جو دعاجا ہے كئے انتا ءاللہ وہ تبول ہوگی۔

(۳) دعائے عہد کا بیان: حضرت امام جعفر صادق القابی ہے منقول ہے بفر مایا: جو خص چالیس روزتک ہر صح اس دعائے عہد کو پڑھے تو وہ امام العصر القابی کے مددگاروں میں ہے ہوگا اورا گروہ حضرت کے ظہور سے پہلے و فات پا گیا تو خداوند عالم اسے قبر سے اٹھائے گاٹا کہ وہ امام القابی کی ہمراہی کا شرف حاصل کرے۔ اوراللہ تعالی اس دعائے ہر لفظ کے وض اسے ایک ہزار نیکیاں عطا کرے گا اوراس کے ایک ہزار گناہ کو کر دے گا۔وہ وعائے عہد ہیہے:

اَللَّهُمَّ رَبَّ النُّوْدِ الْعَظِيْمِ وَ رَبَّ الْكُوسِيِّ الرَّفِيْعِ وَرَبَّ الْبَحْدِ الْمَسْجُودِ وَمُنُزِلَ التَّوُدُيةِ

ا عن معود! التَّظيم أورك يروددگا را عبلند كرى كے يروددگارا عن وجس مارتے سندرك يروددگارا و را عن اورائيل اورائيل اورائيل اورائيل اللَّهُو ان الْعَظِيْمِ وَرَبَّ الْمَلْمِكَةِ

وَ الْإِنْ جِيلِ وَ النَّرْ بُسُورٍ وَ رَبَّ النظِّلِ وَالْسَحَوُودِ وَ مُنْزِلَ الْقُوانِ الْعَظِيْمِ وَرَبَّ الْمَلْمِكَةِ

زودك ازل كرنے والے اورا عراب اور دو و كر يرود دگارا ورائيل كان هم كازل كرنے والے اعترب فرشتوں اور

الْـمُـقَـرَّبِيُـنَ وَالْاَنْبِينآءِ وَ الْمُرُسَلِيُنَ اَللَّهُمَّ إِنِّي اَسْتَلُكَ بِوَجُهِكَ الْكَرِيْمِ وَ بِنُورِ وَجُهِا فرستا دہ نبیوں اور رسولوں کے پروردگارا ہے معبود ہے شک میں سوال کرتا ہوں بواسطہ تیری ذات کریم کے بواسطہ تیری روشن ذات کے الْـمُـنِيرِ وَمُلْكِكَ الْقَدِيمِ يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ اَسُئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِى اَشُرَقَتْ بِهِ السَّمَواتُ نوراورتیری قدیم با دشائی کے اے زندہ اے بایندہ تھے سے سوال کرتا ہوں بواسط تیرے نام کے جس سے چک رہے ہیں سارے الْاَرَضُونَ وَ بِـاسُمِكَ الَّذِي يَصُلَحُ بِهِ الْاَوَّلُونَ وَالْاٰخِرُونَ يَا حَيًّا قَبُلَ كُلِّ حَيّ وَيا حَيًّا آ سمان اورساری زمینیں بواسطہ تیرے ہا م کے جس سے بھلائی پائی پہلوں اور پیچھلوں نے اے زندہ ہرزندہ سے پہلے اورا ے زندہ ہر بَعُدَ كُلِّ حَيِّ وَ يَا حَيًّا حِيُنَ لا حَيَّ يَا مُحْيِيَ الْمَوْدَاٰى وَ مُمِينُتَ الْاَحْيَآءِ يا حَيُّ لأ اللهَ اللَّا زندہ کے بعد اورا سے زندہ جب کوئی نہ تھا ا ہے مُر دوں کو زندہ کرنے والے اسے زندوں کوموت دیجے والے اسے زندہ نہیں کوئی معبو د ٱنُتَ ٱللَّهُمَّ بَلِّغُ مَوُلاْنَا ٱلْإِمَامَ الْهَادِيَ الْمَهُدِيَّ الْقَآئِمَ بِٱمُرِكَ صَلَواتُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَعَلَى سوائے تیرے اے معبو دینچادے ہمارے مولا امام ہا دی مبدئ کوتیر ہے تھم سے قائم ہیں خدا کی رحمتیں ان پراوران کے باک برزرگان ابْآئِهِ الطَّاهِرِيْنَ عَنُ جَمِيعُ الْمُؤَمِنِيْنَ وَالْمُؤُمِنَاتِ فِي مَشَارِقِ ٱلْأَرْضِ وَ مَعَارِبِهَا سَهُلِهَا پر تمام مؤمن مردوں او رمؤمنه عورتوں کی طرف ہے جوزین کے شرقوں او رمغربوں میں ہیں میدانوں اور پہاڑوں اور خشکیوں اور وَجَبَلِهَا وَبَرِّهَا وَبَحُرِهَا وَعَنِّيٌ وَ عَنُ وَالِدَيَّ مِنَ الصَّلَوَاتِ زِنَةَ عَرُش اللَّهِ وَ مِدَادَ سمندروں میں میری طرف سے میرے والدین کی طرف سے بہت درو دجو ہموزن ہوعرش الی اوراس کے کلمات کی روشنائی کے اور جو كَلِماتِهِ وَمَا اَحُطَاهُ عِلْمُهُ وَ اَحَاطَ بِهِ كِتَابُهُ اَللَّهُمَّ إِنِّي أَجَدِّدُ لَهُ فِي صَبيُحَةِ يَوُمِيُ هَذَا چیزیں اس کے علم میں ہیں اور اس کی کتاب میں درج ہیں اے معبو دا میں تا ز وکرنا ہوں ان کے لیے آج کے دن کی صبح کواور جب تک وَمُا عِشُتُ مِنُ آيُّامِيُ عَهُدًا وَّ عَقُدًا وَّ بَيُعَةً لَّهُ فِي عُنُقِي لاَ اَحُوَلُ عَنُها وَلا اَزُولُ اَبَدًا زندہ ہوں ماتی ہے یہ پیان یہ بندھن او ران کی بیعت جومیری گردن پر ہے نہاس سے محروں گانہ بھی مزک کروں گا ہے معبود! قرا ر اَللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنُ اَنْصارِهِ وَاعُوانِهِ وَالذَّابِّينَ عَنْهُ وَالْمُسارِعِينَ اِلَّيْهِ فِي قَضاءِ حَواآئِجهِ د ہے مجھے ان کے مددگاروں ان کے ساتھیوں اوران کا دفاع کرنے والوں میں حاجت برآ ری کے لیے ان کی طرف بڑھنے والوں ان وَ الْـمُمُتَثِلِيُنَ لِاَ وَامِرِهِ وَالْمُحَامِيُنَ عَنْهُ وَالسَّابِقِيْنَ اللَّي اِرَادَتِهِ وَالْمُسْتَشُهدِيْنَ بَيْنَ يَدَيُهِ کے احکام پڑھمل کرنے والوں ان کی طرف ہے دعوت دینے والوں ان کے ارا دوں کوجلد پورے کرنے والوں اورا ن کے مراہنے شہید

******************************** ٱللَّهُمَّ إِنَّ حَالَ بَيْنِي وَ بَيْنَهُ الْمَوُتُ الَّذِي جَعَلْتَهُ عَلَى عِبادِكَ حَتْمًا مَّقُضِيًّا فَآخُرِ جُنِي مِنْ ﴿ ہونے والوں میں قر اردےا مے معبو داگر میر ہے اور میرے امام کے درمیان موت حائل ہوجائے جوتونے اپنے بندوں کے لیے آما دو قَبُرِيُ مُؤْتَزِرًا كَفَنِييُ شَاهِرًا سَيُفِي مُجَرِّدًا قَنَاتِيُ مُلَبِّيًا دَعُوَةَ الذَّاعِيُ فِي الْحَاضِرِ کررکھی ہےتو پھر مجھےقبرے ای طرح ٹکالنا کہ گفن میرالباس ہومیری تکوا رہے نیام ہومیرا نیز ہلند ہودا عی حق کی دعوت پر ابیک کھوں شہر وَالْبُادِيُ اَللَّهُمَّ اَرِنِيُ الطُّلُعَةَ الرَّشِيُدَةَ وَالْغُرَّةَ الْحَمِيُدَةَ وَاكْحُلُ نَاظِرِي بِنَظُرَةٍ مِّنِّي اِلَيْهِ اور گاؤں میں اے معبو د دکھا مجھے حضرت کاچیر وُ زیبا آپ کی چیٹا ٹی درخشاں ان کے دبیرا رکومیری آتھے وں کاسر مہ بناان کی کشائش میں وَ عَجِّلُ فَرَجَهُ وَسَهِّلُ مَخُرَجَهُ وَ اَوُسِعُ مَنْهَجَهُ وَاسُلُكُ بِي مَحَجَّتَهُ وَ اَنْفِذُ اَمُرَهُ وَاشُدُدُ ﴿ جلدی فرمان کے ظہور کوآسان بنان کا راستہ وسیع کردےاور مجھ کوان کی را در چلا ان کا تھم جاری فرمان کی قوت کوبڑ ھااورا مے معبود! اَزْرَهُ وَاعْمُر اللَّهُمَّ بِهِ بِلاٰذَكَ وَاحْي بِهِ عِبادَكَ فَإِنَّكَ قُلْتَ وَ قَوْلُكَ الْحَقُّ وَظَهَرَ الْكَيْݣِلالْدُ ان کے ذریعے اپنے شہرآ یا دکراوراپنے بندوں کوعزت کی زندگی دے کیونکاتو نے فرمایا اور تیرا قول حق ہے کہ ظاہر ہوا فسا دفیقی اور سمندر فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِهِمَا كَسِبَتْ آيُدِي النَّاسِ فَأَظُهِرِ اللَّهُمُّ لَنَا وَلِيَّكَ وَابُنَ بِنُتِ نَبِيَّكَ میں پہنتیجہ ہےلوگوں کےغلط اعمال وافعال کا پس اے معبود!ظہور کر ہمارے لیے اپنے ولی او راپنے نبی کی دفتر کےفرزند کا جن کا مام الْـمُسَـمُّـى بِـاسُـمِ رَسُـوُلِکَ حَتَّـى لأ يَـظُفَرَ بِشَيْئٍ مِّنَ الْباطِلِ الْأَ مَزَّقَهُ وَ يُحِقَّ الْحَقَّ وَ ﴿ تیرے رسول کے نام پر ہے یہاں تک کرو ہاطل کانام ونٹان مٹا ڈالیس حق کوعق کمیں اور اسے قائم کریں اے معبو دقر اردے ان کواپنے يُحَقِّقَهُ وَاجُعَلُهُ اَللَّهُمَّ مَفُزَعًا لِمَظُلُومِ عِبادِكَ وَ ناصِرًا لِمَنُ لَا يَجِدُ لَهُ ناصِرًا غَيُرَكَ ﴿ مظلوم بندول کیلئے جائے پناہ اوران کے مدد گارجن کا تیرے سوا کوئی مدد گارٹیس بناان کوا پی کتاب کے ان احکام کے زندہ کرنے والے وَمُجَدِدًا لِمَا عُطِّلَ مِنُ أَحُكَامِ كِتَابِكَ وَ مُشَيِّدًا لِمَا وَرَدَ مِنُ أَعُلَامٍ دِيُنِكَ وَسُنَن نَبيّ. جو بھلا دیئے گئے بنا ان کواپنے وین کے خاص احکام او راپنے نبی کے طریقو ں کورائخ کرنے والے حدا کی رحمت ہوان پراو ران کی آل صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَالِهِ وَاجْعَلُهُ اَللَّهُمَّ مِمَّنُ حَصَّنْتَهُ مِنْ بَأْسِ الْمُعْتَدِيْنَ اَللَّهُمَّ وَ سُرَّ نَبيَّكَ پراو را ہے معبو دانہیں ان لوگوں میں رکھ جن کوونے ظالموں کے حملے سے بچاہا ہے معبو دخوشنو دکرا پنے نبی محرصلی اللہ علیہ و آلہ کوان کے مُحَمَّدًا صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَالِهِ برؤُيَتِهِ وَ مَنْ تَبعَهُ عَلَى دَعُوتِهِ وَارُحَم اسْتِكَانَتَنا بَعُدَهُ و میرار سے او رجنہوں نے ان کی دعوت میں ان کا سماتھ ویا او ررقم فرما ان کے بعد بھاری حالت زار پر اے معبو وان کے ظہورے است

_

اَللَّهُمَّ اكْشِفُ هَذِهِ الْغُمَّةَ عَنُ هَذِهِ الْاُمَّةِ بِحُضُورِهِ وَعَجِّلُ لَنَا ظُهُورَهُ اِنَّهُمُ يَرَوُنَهُ بَعِينُدًا

کی اس مشکل ا ورمصیبت کو دو رکر دے او رہما رہے لیے جلدان کاظہو رفر ما کہلوگ ان کو دوراور ہم انہیں نز دیک بیجھتے ہیں واسطہ تیر کی

وَّ نَرِيهُ قَرِيْبًا بِرَحُمَةِكَ يَا أَرُحَمَ الرَّاحِمِينَ.

رحمت کا اے سب سے زیا دہ رحم کرنے والے۔

اس کے بعد تین مرتبہ اپنی دائیں را ن پر ہاتھ مارے اور ہر مرتبہ ہاتھ مارتے وقت بدپڑھے:

﴿ ٱلْعَجَلُ ٱلْعَجَلُ يَا مَوُ لَا يَا صَاحِبَ الزَّمَانِ ﴾.

جلدا ہے جلدائے اےمیرے آقا سے زماند حاضرہ کے امام۔

(۴) نیز اس مقدس مقام پرامام زمانه الطفیلاکی تعمیل ظهور کی دعااورشراعداء سےان کی حفاظت کی مخلصانه

وعابھی مآئنی چاہیئے انثاءاللہ SIBTAIN.COM

بعض زيارات إجامعه كابيان

يعني و مختصرا ورمطول زيارات جو هرامام الطيني كي بارگاه مين پريهي جاسكتي بين او روه چند زيارات بين: (۱) پہلی زیارت جامعهٔ صغیرہ: بیزیارت جامع مضرت امام رضالیہ ے منقول ہے جسے حضرت شیخ صدوق علیہ الرحمہ نے الفقیہ میں اور دوسر ےعلاء نے اپنی کتب مزار میں نقل کیا ہے۔ اَلسَّلاٰمُ عَلْى اَوُلِيَآءِ اللَّهِ وَ اَصْفِيَآئِهِ اَلسَّلاٰمُ عَلَى اُمَنَآءِ الله وَ اَحِبَّائِهِ اَلسَّلاٰمُ عَلَى سلام ہو دوستانِ خدا اور اس کے برگزیدوں پر سلام ہو خدا کے امائتداروں اور اس کے پیاروں پر سلام ہو ٱنُصَارِ اللَّهِ وَ خُلَفَآئِهِ ٱلسَّلامُ عَلْى مَحَآلٌ مَعُرِفَةِ اللَّهِ ٱلسَّلامُ عَلَى مَسَاكِنِ ذِكُرِ اللَّهِ خدا کے ماصروں اور اس کے مالبوں پر سلام ہو خدا کی معرفت کے نشانوں پر سلام ہو ذکر الہی کے وظیفہ داروں پر اَلسَّلامُ عَلْي مُظُهِرِ اَمُر اللُّهِ وَ نَهُيهِ اَلسَّلامُ عَلَى الدُّعَاةِ اِلَى اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَى سلام ہو خدا کے امر و نہی کے ترجمانوں پر سلام ہو خدا کی طرف بلانے والوں پر سلام ہو الْـمُسْتَقِـرٌيُـنَ فِي مَـرُضَـاتِ اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَى الْمُخُلِصِينَ فِي طَاعَةِ اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَى خدا کی رضاؤں میں رہنے والوں پر سلام ہو خدا کے سچے اطاعت گزاروں پر سلام ہو الْآدِلَّآءِ عَلَى اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَى الَّذِينَ مَنُ وَّ الأهُمُ فَقَدُ وَالَّى اللَّهَ وَ مَنُ عَادَاهُمُ فَقَدُ خدا کی طرف رہنمائی کرنے والوں پر سلام ہو ان پر کہ جو ان سے محبت کرے تو خدا ای سے محبت کرتا ہے اور جو عَادَى اللَّهَ وَ مَنُ عَرَفَهُمُ فَقَدُ عَرَفَ اللَّهَ وَ مَنُ جَهِلَهُمُ فَقَدُ جَهِلَ اللَّهَ وَ مَنِ اعْتَصَمَ بِهِمُ ان سے دشمنی رکھے حدا اس سے دشمنی رکھتا ہے سلام ہوان پر کہ جوان کو پیچان لے وہ حدا کو پیچان لیتا ہے اور جوان سے ماواقت ہو فَقَدِ اعْتَصَمَ بِاللَّهِ وَ مَنُ تَخَلِّي مِنْهُمُ فَقَدُ تَخَلِّي مِنَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ وَ أُشُهدُ اللَّهَ آنِّيُ سِلُمٌ ۔ وہ خدا سے ماواقف ہوتا ہے جوان سے تعلق رکھے وہ خدا سے تعلق رکھتا ہے اور جوان سے الگ رہے وہ خدا ہے الگ رہ جاتا ہے لِّمَنُ سَالَمُنَّمُ وَ حَرُبٌ لِمَنُ حَارَبُنُهُ مُّوْمِنٌ البِسِرِّكُمُ وَ عَلاَنِيَتِكُمُ مُّفُوّضُ عُل خذا كُوكاه كُرنا بول كُريرى سلح جاس بي جس بي آپ كَ سلح بواوريرى جگ جاس بي جس بي آپ كى جگ بوش آپ ك في خُول كُ مُحَدِّمَة إلَيْ حُمْ لَعَنَ اللَّهُ عَدُوً الِ مُحَمَّدٍ مِّنَ الْجِوْرَ وَ الْإِنْسِرِ ظاہروباطن پرائان دكتا بول اس بارے میں فود كوآپ كے ہر دكرنا بول خذا تعزیر کے آل مُحَرِّمُوں پر جوجِن والس میں بی جیس مَا مُو وَاللّٰ مِنْ اللّٰهِ مِنْ مَا مَا مَا اللّٰهُ مَا مَا اللّٰهُ مَا مَا مَا اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مَا مَا مُنْ مَا مُؤْمِنَ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِ

وَ اَبُورَهُ إِلَى اللّهِ مِنْهُمُ وَ صَلَّى اللّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ اللهِ. (الكافى، الفقيه، العهديب، كالل الزياره) من خدا كما شخان بي بري بول اورخدارهت كري مُمّاوران كي آلَير.

(۱) دوسوی زیارت جامعهٔ کبیره : میزیارت جوزیارت جامعهٔ کبیره : میزیارت جوزیارت جامعهٔ کبیره کمام می مشهور به جے حضرت شخصدوق علیه الرحمه نے الفقیه اور عیون الاخبار میں ہروایت عبداللہ تخفی حضرت امام علی نقی القیار کی سے مروایت کیا به کھے کوئی ایسی زیارت تعلیم فرما کی جے میں ہرامام القیار کی زیارت تعلیم فرمائی - اور فرمایا کہتم میں ہرامام القیار کی زیارت کے موقع پر پڑھ سکوں تو امام القیار نے اسے بیزیارت تعلیم فرمائی - اور فرمایا کہتم جب بھی کسی امام کی زیارت کے ایسی کی دیارت کے کہو:

هرا الله الله الله الله الله الله و خده الا شریک که و اشفهاد ان مُحدمدًا صَلَى اللهُ عَلَيْهِ

وَ الِهِ عَبُدُهُ وَ رَسُولُلُهُ -

تمیں مگواہ ہوں کہ نہیں معبو د سوائے اللہ کے وہ یگانہ ہے کوئی اس کا ساجھی نہیں اور مگواہ ہوں کہ حضرت محمد صلی اللہ علیہ

وآلباس کے بندہ ورسول ہیں۔

﴿ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمُ يَا اَهُلَ بَيْتِ النَّبُوَّةِ وَ مَوْضِعَ الرِّسَالَةِ وَ مُخْتَلَفَ الْمَلاَئِكَةِ وَ مَهْبِطَ الرِّسَالَةِ وَ مُخْتَلَفَ الْمَلاَئِكَةِ وَ مَهْبِطَ اللهِ عَلَيْهِ مَا اللهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَ

الْوَحْيِ وَ مَعُدِنَ الرَّحْمَةِ وَ خُزَّانَ الْعِلْمِ وَ مُنْتَهَى الْحِلْمِ وَ أُصُوُلَ الْكَرَمِ وَ قَادَةَ الْأُمَمِ رحت کے مرکز علوم کے خزینہ دارحد دردہ کے ہر دبا راو رہز رگواری کے حامل ہیں آپ قوموں کے پیشوانعتوں کے با نٹنے والے سر مایئر وَ اَوُلِيَاءَ النِّعَمِ وَ عَنَاصِرَ الْآبُرَارِ وَ دَعَائِمَ الْآخُيَارِ وَ سَاسَةَ الْعِبَادِ وَ اَرْكَانَ الْبِلاَدِ نیکوکاران پارساؤل کے ستون بندوں کے لیے مذہبرکا رآ با دیوں کے سر دارائیان واسلام کے دروازےاور خدا کے امانتدار ہیں اور وَ ٱبُوَابَ ٱلْإِيْمَانِ وأُمَنَاءَ الرَّحُمٰنِ وَ سُلاَّلَةَ النَّبِيِّينَ وَ صِفُوَةَ الْمُرُسَلِيْنَ وَ عِتُرَةَ خِيَرَةِ آپ نبیوں کی نسل واو لا درسولوں کے پیندید واور جہا نوں کے رب کے پیند شدگان کی اولا دہیں آپ پرسلام خدا کی رحمت ہواوراس رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ رَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ اَلسَّلاَّمْ عَلَى آئِمَّةَ الْهُدَىٰ وَ مَصَابِيُحِ الدُّجٰي کی برکات سلام ہوآپ پر جوہدا ہے دینے والے امام ہیں تا ریکیوں کے جراغ ہیں پر ہیز گاری کے نشان صاحبانِ عقل وخر داور مالکان وَ ٱعُلاَمِ التُّـقَى وَ ذَوى النُّهٰي وَ أُولِي الْحِجٰي وَ كَهُفِ الْوَرِي وَ وَرَثَةِ الْاَنْبِيَاءِ وَ الْمَثَل والش ہیں آپ لوگوں کی بناہ گاہ نبیوں کے ورشہ دار بلندر مین نمونہ عمل او ربہترین دعوت دینے والے ہیں آپ دنیاوالوں پر خدا کی جمتیں الْآعُـلَى وَ الدَّعُوةِ الْحُسُنَى وَ حُجَجِ اللَّهِ عَلَى اَهُلِ الدُّنْيَا وَالْاَحِرَةِ وَالْاُولَى وَ رَحُمَةُ ہیں آغازو انجام میں آپ پرسلام خدا کی رحمت ہواو راس کی ہر کات سلام ہوخدا کی معرفت کے ڈریعوں پر جوخدا کی ہر کت کے مقام اللُّهِ وَ بَـرَكَـاتُهُ اَلسَّلاَّمُ عَلَى مَحَالٌ مَعُرِفَةِ اللَّهِ وَ مَسَاكِنِ بَرَكَةِ اللَّهِ وَ مَعَادِن حِكُمَةِ اور حدا کی حکمت کے مراکز ہیں حدا کے را زوں کے نگرہان حدا کی کتاب کے حامل حدا کے آخری نبی کے جانشین اور حدا کے رسول کی اللُّهِ وَ حَفَظَةِ سِرِّ اللَّهِ وَ حَمَلَةِ كِتَابِ اللَّهِ وَ أَوْصِيَاءِ نَبِيِّ اللَّهِ وَ ذُرِّيَّةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اولا دہیں خدا درود بھیجے ان پر اور ان کی آل پر خدا کی رحمت ہو او راس کی بر کات سلام ہوخدا کی طرف بلانے والوں پر اور خدا کی اللُّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ وَ رَحْمَهُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ اَلسَّلاَّمُ عَلَى الدُّعَاةِ اِلَى اللَّهِ وَالْآدِلَّاءِ عَلَى رضاؤں ہے آگا ہ کرنے والوں پر جوخدا کے معالمے میں ایستادہ خدا کی محبت میں سب سے کامل اور خدا کی تو حید کے عقیدے میں مَرُضَاتِ اللُّهِ وَ الْـمُسُتَـقِرِّيُنَ فِيُ آمُرِ اللَّهِ وَ التَّامِّيُنَ فِيُ مَحَبَّةِ اللَّهِ وَ الْمُخُلَصِينَ فِي کھرے ہیں وہ خدا کے امرو نہی کو بیان کرنے والے اور اس کے گرا می قد ربندے ہیں کہ جواس کے آگے بولنے میں پہل ٹیس کرتے تَوْجِيُدِ اللَّهِ وَ الْمُظْهِرِيُنَ لِامْرِاللَّهِ وَ نَهْيِهِ وَ عِبَادِهِ الْمُكْرَمِيْنَ الَّذِيْنَ لا يَسْبِقُونَهُ بِالْقَوْلِ اوراس کے تھم پڑھمل کرتے ہیں ان پر خدا کی رحمت ہواو راس کی برکات سلام ہوان پر جو دعوت دینے والے امام ہیں ہدایت دینے

وَ هُمُ بِأَمُرِهِ يَعُمَلُونَ وَ رَحُمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ السَّلامُ عَلَى الْائِمَّةِ الدُّعَاةِ وَ الْقَادَةِ الْهُدَاةِ والے راہنما صاحب و لایت سر دارحمایت کرنے والے گلمہدار ذکرا لہی کرنے والے اور والیانِ امر ہیں وہ حدا کا سرماییاں کے پہندید ہ وَ السَّادَةِ الْوُلاَةِ وَالذَّادَةِ الْحُمَاةِ وَ اَهُ لِ اللَّهِ كُرِ وَ اُولِي الْاَمُرِ وَ بَقِيَّةِ اللّهِ وَ خِيَرَتِه اس کی جماعت اوراس کے علوم کاخزا نہ ہیں و ہ خدا کی ججت اس کا راستہ اس کا نوراوراس کی نشانی ہیں ان پر خدا کی رحمت ہواوراس کی وَ حِزُبِهِ وَ عَيْبَةِ عِلْمِهِ وَ حُجَّتِهِ وَ صِرَاطِهِ وَ نُوْرِهٍ وَ بُرُهَانِهِ وَ رَحُمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ اَشُهَدُ بر کات ممیں تواہ ہوں کرنبیں کوئی معبو وسوائے اللہ کے جو بکرا ہے کوئی اس کا ساجھی نہیں جیسا کر خدانے اپنے لیے تواہی وی اس کے آنُ لَّا إِلَّهَ إِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لاَ شَرِيُكَ لَهُ كَـمَا شَهدَ اللَّهُ لِنَفْسِهِ وَ شَهدَتُ لَهُ مَلاَئِكُتُا ساتھاں کے فرشتے اوراس کی مخلوق میں سے صاحبان علم بھی گوا ہ ہیں کہ نہیں ہے معبود گروہی جو زبر دست ہے حکمت والا او رمیں گواہ وَ أُولُوا الْعِلْمِ مِنُ خَلْقِهِ لاَ إِلَّهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ ہوں کہ حضرت محمد اس کے برگزیدہ بند ہاوراس کے پسند کردہ رسول ہیں جن کواس نے ہدایت اور سپے وین کے ساتھ بھیجا تا کہ وہ الْمُنْتَجَبُ وَ رَسُولُهُ الْمُرْتَضَىٰ آرُسَلَهُ بِالْهُدَىٰ وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهِ اے تمام دینوں پر غالب کر دیں اگر چرشرک بیند نہ بھی کریں اور مُیں کو اہوں گر آپ امام میں ہدایت والے سنورے ہوئے گنا ہے وَ لَوْ كَرِهَ الْمُشُرِكُونَ وَ اَشْهَدُ اَنَّكُمُ الْآئِمَةُ الرَّاشِدُونَ الْمَهْدِيُّونَ الْمَعْصُومُونَ بچائے ہوئے ہز رگیوں والے اس سے نز دیک تر پرہیز گارصدق والے چنے ہوئے خدا کےا طاعت گزاراس کے تھم پر کمربسۃ اس کے الْمُكَرَّ مُوْنَ الْمُقَرَّبُوْنَ الْمُتَّقُونَ الصَّادِقُونَ الْمُصْطَفُونَ الْمُطِيْعُونَ لِلَّهِ الْقَوَّ امُونَ بِاَمُرِهِ ارادے پڑھل کرنے والے اوراس کی مہر ہانی ہے کامیاب ہیں کراس نے اپنے علم کے لیے آپ کو چنا اپنے غیب کے لیے آپ کو پہند کیا الْعَامِلُونَ بِإِرَادَتِهِ الْفَائِزُونَ بِكَرَامَتِهِ اصْطَفَاكُمُ بِعِلْمِهِ وَارْتَضَاكُمُ لِغَيْبِهِ وَ إِخْتَارَكُمُ اپنے را زکے لیے آپ کو منتخب کیاا پی قدرت ہے آپ کوا پنا بنایا اپنی ہدا ہے سے عزت دی او را پی دلیل کے لیے خاص کیااس نے آپ لِسِرِّهٖ وَ اجْتَبَاكُمُ بِقُدُرَتِهِ وَاعَزَّكُمُ بِهُدَاهُ وَ خَصَّكُمْ بِبُرُهَانِهِ وَانْتَجَبَكُمُ لِنُورِهِ وَ آيَّدَكُمُ کواپنے نور کے لیے چناروح القدس ہے آپ کوقوت دی اپنی زمین میں آپ کواپنے نائب قرار دیا اپن مخلوق پراپی حجتیں بنایا اپنے دین بِرُوْحِهِ وَ رَضِيَكُمُ خُلَفَاءَ فِيُ اَرُضِهِ وَ خُجَجًا عَلَى بَرِيَّتِهِ وَ اَنْصَارًا لِدِيْنِهِ وَ حَفَظَةً لِسِرِّهِ کے ناصراوراپنے راز کے تگہداراو را پنے علم کے فزینہ دار بنایا اپنی تھمت ان کے سپر دکی آپ کواپی وحی کے تر جمان اوراپی تو حید کے

وَ خَزَنَةً لِعِلْمِهِ وَ مُسُتَوُدَعًا لِحِكُمَتِهِ وَ تَرَاجِمَةً لِوَحُيهِ وَ اَرْكَانًا لِتَوْحِيُدِهِ وَ شُهَدَاءَ مبلغ بنایا ا**ں** نے آپ کوا چی مخلو**ق پر گواہ قرار دیا اپنے بندوں کے لیے نٹان منزل اپنے شہروں کی روشنی اورا پنے راہتے کے رہبر قرار دیا** عَـلَى خَلُقِهِ وَ أَعُلامًا لِعِبَادِهِ وَ مَنَارًا فِي بِلاَدِهِ وَ أَدِلاَءَ عَلَى صِرَاطِهِ عَصَمَكُمُ اللَّهُ مِنَ حدانے آپ کوخطا وُں ہے بچایا جھکڑوں ہے محفوظ کیا اور ہر آلودگی ہے صاف رکھا آلائش آپ ہے دورکر دی اور آپ کو پاک رکھا الزَّلَلُ وَ آمَنَكُمُ مِنَ الْفِتَنِ وَ طَهَّرَكُمُ مِنَ الدَّنَسِ وَ اَذُهَبَ عَنُكُمُ الرَّجُسَ وَ طَهَّرَكُمُ بہت یا ک پس آپ نے اس کے جلال کی بڑائی کی اس کے مقام کو بلندجانا اس کی برزرگی کی تو صیف کی اس کے ذکر کوجاری رکھا اس کے تَطُهِيُرًا فَعَظَّمُتُمُ جَلالَهُ وَ ٱكْبَرُتُمُ شَأَنَهُ وَ مَجَّدتُّمُ كَرَمَهُ وَ ٱدَمُتُمُ ذِكْرَهُ وَ وَكُدتُمُ مِيُثَاقَهُ عہد کو پختہ کیااس کی فرما نبرداری کے عقیدے کو محکم بنایا آپ نے پوشیدہ و ظاہر اُس کا ساتھ دیا اور اس کے سیدھے راستے کی طرف وَ أَحُكُمُتُمُ عَقُدَ طَاعَتِهِ وَ نَصَحُتُمُ لَهُ فِي السِّر وَ الْعَلاَنِيَةِ وَ دَعَوْتُمُ اللَّي سَبِيُلِهِ بِالْحِكْمَةِ لوگوں کو دانشمندی اور بہترین گفتگو کے ذریعے بلایا آپ نے اس کی رضا کے لیے اپنی جانیں قربان کیس او راس کی را ہ میں آپ کوجو دکھ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ بَذَلْتُهُ أَنُفُسَكُمُ فِي مَرُضَاتِهِ وَ صَبَرُتُهُ عَلَى هَا اَصَابَكُمُ فِي جَنْبِهِ پُچِان وَمِرِ سے جمیلا آپ نے آباز قائم رکی اور ذکو اور نے دہے آپ نے نیک کاموں کا تم دیارے کاموں سے نع فرمایا اور خداکی وَ ٱقْــمُتُــمُ الصَّلواةَ وَ آتَيُتُمُ الزَّكواةَ وَ آمَرُتُمُ بِالْمَعُرُوفِ وَ نَهَيُتُمُ عَنِ الْمُنكرِ وَ جَاهَدتُّمُ راہ میں جہاد کاحق اوا کیا چنا مچی آپ نے اس کا پیغام عام کیا اس کے عائد کر دوفر انفن بتائے او راس کی مقررہ حدیں جاری کیں آپ فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ حَتَّىٰ اَعُلَنْتُمُ دَعُولَهُ وَ بَيَّنْتُمُ فَرَائِضَهُ وَ اَقَمْتُمُ حُدُودَهُ وَ نَشَرْتُمُ نے اس کے احکام بیان کیے اس کے طریقے رائج کیے اور اس میں آپ اس کی رضا کے طالب ہوئے آپ نے اس کے ہر فیلے کوشلیم کیا شَرَايِعَ أَحُكَامِهِ وَ سَنَنْتُهُ سُنَّتَهُ وَ صِرْتُهُ فِي ذَالِكَ مِنْهُ اِلِّي الرِّضَا وَ سَلَّمُتُمُ لَهُ الْقَضَاءَ اورآپ نے اس کے گزشتہ عیمبروں کی تصدیق کی پس آپ سے مجعے والا دین سے نکل گیا آپ کاہمر ای دینداررہااورآپ کے حق کو وَ صَدَّقُتُمُ مِنُ رُسُلِهِ مَنُ مَّضَى فَالرَّاغِبُ عَنُكُمُ مَارِقٌ وَاللَّازِمُ لَكُمُ لاَحِقٌ وَالْمُقَصِّرُ فِي كمتر يجھنے والانا يو د ہوا حق آپ كے ساتھ ہے آپ ميں ہے آپ كى طرف سے ہے آپ كى طرف آيا ہے آپ حق والے بيں اورمركز حق حَقِّكُــهُ زَاهِـقٌ وَالْحَقُّ مَعَكُمُ وَ فِيُكُمُ وَ مِنْكُمُ وَ اِلْيُكُمُ وَ اَنْتُمُ اَهُلُهُ وَ مَعُدِنُهُ وَ مِيْرَاتُ ہیں نبوت کا ٹر کرآپ کے پاس ہے لوگوں کی واپسی آپ کی طرف اور ان کا حساب آپ کولیما ہے آپ حق و باطل کا فیصلہ کرنے اولے

النُّبُوَّةِ عِنْدَكُمُ وَ إِيَابُ الْخَلُقِ اِلَيُكُمُ وَ حِسَابُهُمْ عَلَيُكُمُ وَ فَصُلُ الْخِطَابِ عِنْدَكُمُ میں خدا کی آیتیں اوراس کے ارادے آپ کے دلوں میں ہیں اس کا نوراور محکم دلیل آپ کے باس ہے اور اس کا علم آپ کی طرف آیا وَ آيَاتُ اللَّهِ لَدَيْكُمُ وَ عَزَائِمُهُ فِيكُمُ وَ نُورُهُ وَ بُرُهَانُهُ عِنْدَكُمُ وَ اَمُرُهُ الدُّكُمُ مَنُ وَالا ہے آپ کا دوست خدا کا دوست اور جو آپ کا دخمن ہے وہ خدا کا دخمن ہے جس نے آپ سے محبت کی اس نے خدا سے محبت کی اور جس كُمُ فَقَدُ وَالَى اللَّهِ وَ مَنُ عَادَاكُمُ فَقَدُ عَادَ اللَّهَ وَ مَنُ اَحَبَّكُمُ فَقَدُ اَحَبّ اللَّهَ وَ مَنُ نے آپ سے نفرت کی اس نے خدا سے نفرت کی اور جو آپ سے وابستہ ہوا وہ خدا سے وابستہ ہوا کیونکہ آپ سید ھارا ستہ دنیا میں لوگوں ٱبُغَضَكُمُ فَقَدُ ٱبُغَضَ اللَّهَ وَ مَن اعْتَصَمَ بِكُمُ فَقَدِ اعْتَصَمَ بِاللَّهِ ٱنْتُمُ الصِّرَاطُ الْاقُوَمُ پرشاہد و کواہ اور آخرت میں شفاعت کرنے والے ہیں آپ ختم نہ ہونے والی رحت محفوظ شدہ آبیت سنجالی ہوئی امانت اوروہ راستہ ہیں وَ شُهَدَاءُ دَارِ الْفَنَاءِ وَ شُفَعَاءُ دَارِ الْبَقَاءِ وَ الرَّحْمَةُ الْمَوْصُولَةُ وَالْآيَةُ الْمَخُزُونَةُ جس سے لوگ آ زمائے جاتے ہیں جو آپ کے باس آیا نجات ہا گیا او رجو ہٹا رہاو ہ تباہ ہوگیا آپ خدا کی طرف بلانے والے اوراس کی وَ الْاَمَانَةُ الْمَحُفُوظَةُ وَ الْبَابُ الْمُبْتَلِى بِهِ النَّاسُ مَنْ اَتَاكُمْ نَجِي وَمَنْ لَمُ يَأْتِكُمُ هَلَكَ طرف رہبری کرنے والے ہیں آ پاس پرانمان ریکھتے او راس کے فرما نبر دار ہیں آ پاس کا تھم مانے والے اس کے راہے کی طرف إِلَى اللَّهِ تَدُعُونَ وَ عَلَيْهِ تَدُلُّونَ وَ بِهِ تُؤُمِنُونَ وَلَهُ تُسَلِّمُونَ وَ بِاَمْرِهِ تَعُمَلُونَ وَ إِلَى سَبِيُلِهِ لے جانے والےاوراس کے تھم سے فیصلہ دینے والے ہیں کامیا ب ہوا جوآپ کا دوست ہے بلاک ہوا جوآپ کا دخمن ہے اور خوار ہوا تُرُشِدُونَ وَ بِقَوْلِهِ تَحُكُمُونَ سَعَدَ مَنُ وَالْأَكُمُ وَ هَلَكَ مَنُ عَادَكُمُ وَ حَابَ مَنُ جس نے آپ کا اٹکارکیا گمراہ ہوا جوآپ سے حدا ہوا اور بإمراد ہوا جوآپ کے ہمراہ رہا اورا سے امن ملاجس نے آپ کی پناہ لی جَحَدَكُمُ وَ ضَلَّ مَنُ فَارَقَكُمُ وَ فَازَ مَنُ تَمَدَّكَ بِكُمُ وَ اَمِنَ مَنُ لَجَأَ اِلَيُكُمُ وَ سَلِمَ مَنُ سلامت رہاجس نے آپ کی تقدیق کی اور ہدایت پا گیا جس نے آپ کا دامن پکڑا جس نے آپ کی اتباع کی اس کا مقام جنت ہے صَدَّقَكُمُ وَ هُدِيَ مَنِ اعْتَصَمَ بِكُمُ مَنِ اتَّبَعَكُمُ فَالْجَنَّةُ مَأُولِيهُ وَ مَنْ خَالَفَكُمُ فَالنَّارُ مَثُولِيهُ اورجس نے آپ کی نا فرمانی کی ای کا ٹھکانا جہم ہے جس نے آپ کا اٹکار کیاو ہ کا فرہے جس نے آپ سے جنگ کی وہ شرک ہے اور وَ مَنُ جَحَدَكُمُ كَافِرٌ وَ مَنُ حَارَبَكُمُ مُشُرِكٌ وَ مَنُ رَدَّ عَلَيْكُمُ فَيُ اَسْفَلِ دَرَكٍ مِّ جس نے آپ کوغلط قرا ردیاوہ چہنم کے سب سے نچلے طبقے میں ہوگائمیں گواہ ہوں کہ بیہ مقام آپ کوگز شتہ زمانے میں حاصل تھا اور آیندہ

الُجَحِيْمِ اَشْهَدُ اَنَّ هَـذَا سَابِقٌ لَّكُمُ فِيُمَا مَضَىٰ وَ جَارِ لَّكُمُ فِيُمَا بَقِيَ وَ اَنَّ اَرُواحَكُمُ زمانے میں بھی حاصل رہے گا ہے فٹک آپ سب کی روحیں آپ کے نوراور آپ کی اصل ایک ہے جو خوش آینداور پا کیزہ ہے کہ آپ وَ نُـوُرَكُـمُ وَ طِينَتَكُمُ وَاحِدَةً طَابَتُ وَ طَهُرَتُ بَعُضُها مِنُ ، بَعُض خَلَقَكُمُ اللَّهُ أَنُوارًا میں سے بعض بعض کی اولا دہیں حدا نے آپ کو بہشمل نور پیدا کیا پھر آپ سب کواپنے عرش کے چوگر درکھا حتی کہ ہم پراحسان کیااور فَجَعَلَكُمُ بِعَرُشِهِ مُحُدِقِيْنَ حَتَّىٰ مَنَّ عَلَيْنَا بِكُمُ فَجَعَلَكُمُ فِي بُيُوْتٍ اَذِنَ اللَّهُ اَنُ تُرُفَعَ آپ کو بھیجا پس آپ کوان گھروں میں رکھا جن کوخدانے بلند کیا او ران میں اس کا نام لیا جاتا ہے اس نے قرار دی آپ پر ہماری صلوات وَ يُسَذُّكُرَ فِيُهَا اسْمُهُ وَ جَعَلَ صَلَاتَنَا عَلَيُكُمُ وَ مَا خَصَّنَا بِهِ مِنُ وِّلاَيَتِكُمُ طَيّبًا لِّخَلْقِنَا اس سے ہمیں آپ کی ولایت میں خصوصیت دی اسے ہماری با کیزہ پیدائش ہمار نے نصوں کی صفائی ہمارے باطن کی درتی کا ذرایعہ اور وَ طَهَارَةٌ لِلَانُفُسِنَا وَ تَـزُكِيَةً لَّنَا وَ كَفَّارَـةً لِلذُّنُوٰبِنَا فُكُنَّا عِنْدَهُ مُسَلِّمِيْنَ بِفَضُلِكُمُ گناہوں کا کفارہ بنایا پس ہم اس کے حضورآ پ کی فضیلت کو ماننے والے اورآ پ کی تصدیق کرنے والے قرار پا گئے ہیں ہاں خدا آپ وَ مَعُرُ وُفِيْسَنَ مِسَّصَدِيْقِنَا إِيَّاكُمُ فَبَلَغَ اللَّهُ مِكُمُ اَشُرَ فَ مَحَلَّ الْمُمَكَّرَّمِيْنَ وَ اَعُلَى مَنَاذِلَ كوماحان عظمت كے بلند مقام پر پہنچا كے اچے مقربوں فى بلند منزلوں تک لے جائے اور اپنے پینجروں كے او نچے مراتب عطاكرے الْمُقَرِّبِيُنَ وَ اَرُفَعَ دَرَجَاتِ الْمُرُسَلِيُنَ حَيْثُ لاَ يَلْحَقُهُ لاَحِقٌ وَّلاَ يَفُوُقُ فَآئِقٌ وَّ لاَ يَسُبِقُهُ اس طرح کہ چکھے والا وہاں نہ پہنچے کوئی اوپر والا اس مقام ہے بلند نہ ہواور کوئی آ مے والا آ مے نہ بڑھے اور کوئی طبع کرنے والا اس مقام سَابِقٌ وَّلاَ يَكُمَعُ فِي إِدُرَاكِهِ طَامِعٌ حَتَّى لاَ يَبُقِي مَلَكٌ مُّقَرَّبٌ وَّ لا نَبِيٌّ مُّرُسَلٌ وَّ لأ کی طبع نه کرے یہاں تک کربا تی نه رہے کوئی مقرب فرشته نه کوئی نبی وی فیمبر نه کوئی صدیق اور نه شبید نه کوئی عالم او رنه جانل نه کوئی پست صِدِينَ وَلا شَهِينُدٌ وَلا عَالِمٌ وَلا جَاهِلٌ وَلا دَنِي وَلا فَاضِلٌ وَلا مُؤْمِنٌ صَالِحٌ وَلا فَاجِرٌ اور نه با فضیلت نه کوئی نیکوکارمومن اور نه بد کار بداطوار نه کوئی ضدی سرکش او رنه کوئی مغرور شیطان اور نه کوئی او رفخلوق گوا بی د ہے سوائے طاَلِحٌ وَّلا جَبَّارٌ عَنِيُـدٌ وَّلاٰ شَيُطَانٌ مَّرِيُدٌ وَّلاٰ خَلُقٌ فِيْمَا بَيُنَ ذَالِكَ شَهِيُدٌ اللَّ عَرَّفَهُمُ اس کے کہوہ ان کوآپ کی شان ہے آگاہ کرے آپ کے مقام کی بلندی آپ کی شان کی بڑائی آپ کے نور کی کاملیت آپ کے جَلَالَةَ أَمُرِكُمُ وَ عِظْمَ خَطَرِكُمُ وَ كِبَرَ شَأَنِكُمُ وَ تَمَامَ نُوْرِكُمُ وَ صِدُقَ مَقَاعِدِكُمُ ورست درجات آپ کے مراتب کی بیٹنگی آپ کے خاندان کی ہزرگی اس کے ہاں آپ کے مقام اس کے سامنے آپ کی ہزرگواری اس

وَ ثَبَاتَ مَقَامِكُمُ وَ شَرَفَ مَحَلِّكُمُ وَ مَنْزِلَتِكُمُ عِنْدَهُ وَ كَرَامَتَكُمُ عَلَيْهِ وَ خَاصَّتَكُمُ لَدَيْهِ کے ساتھ آپ کی خصوصیت او راس سے آپ کے مقام کے قرب کی گواہی وے میرے ماں باپ میرے گھرمیرا مال اور میرا خاندان وَ قُرُبَ مَنْزِلَتِكُمْ مِنْهُ بِاَبِي ٱنْتُمُ وَ أُمِّي وَ اَهْلِيُ وَ مَالِيُ وَ ٱسْرَتِي ٱشْهِدُ اللَّهَ وَ ٱشْهِدُ كُمُ آپ برقر بان ممیں گوا ہ بنا تا ہوں خدا کواو رآپ کواس برئمیں ایمان رکھتا ہوں جس بر آپ ایمان رکھتے ہیں منکر ہوں آپ کے دشمن کا اور ٱنِّي مُؤُمِنٌ ٢ بِـكُمُ وَ بِمَا آمَنُتُمُ بِهِ كَافِرٌ ٢ بِعَدُوَّكُمُ وَ بَمَا كَفَرُتُمُ بِهِ مُسْتَبُصِرٌ بِشَأْنِكُمُ جس چیز کا آپ افکارکرتے ہیں آپ کی شان کوجا نہا ہوں اور آپ کے مخالف کی گمراہی کو سجھتا ہوں محبت رکھتا ہوں آپ سے اور آپ وَ بِضَلالَةِ مَنُ خَالَفَكُمُ مُوال لَكُمُ وَ لِا وُلِيَائِكُمُ مُبُغِضٌ لِاعْدَائِكُمُ وَمُعَادٍ لَهُمُ سِلْمُ کے دوستوں سے ،نفرت کرنا ہوں آپ کے دشمنوں سے اوران کا دشمن ہوں میر کی سلح ہے اس سے جو آپ سے سلح رکھے اور جنگ ہے لِّـمَـنُ سَالَمَكُمُ وَ حَرُبٌ لِمَنُ حَارَبَكُمُ مُّحَقِقٌ لِمَا حَقَّقُتُمُ مُبُطِلٌ لِمَا اَبُطَلْتُمُ مُّطِيعٌ لَكُمُ اس ہے جو آپ ہے جگ کرے حق کہتا ہوں اے جس کو آپ حق کہیں ماطل کہتا ہوں اے جس کو آپ ماطل کہیں آپ کا فرمانبر دار عَارِفٌ ۽ بِحَقِّكُمُ مُقِرٌ ، بِفَضَلِكُمُ مُحُتَمِلٌ لِعِلْمِكُمُ مُّحُتَحِبٌ ، بِذِفَّتِكُمُ مُعُتَرِفٌ ، بِكُمُ بول آپ كِيْ وَيِجَانِا بول آپ فَايِزانُ لوانا بول آپ كِيْم كامعَشْرُول آپ فَالايت مِن بِنَا هُزَيْن بول آپ فا ذات كا مُؤُمِنٌ ﴿ بِإِيَابِكُمْ مُصَدِّقٌ بِرَجُعَتِكُمُ مُّنْتَظِرٌ لِآمُرِكُمُ مُّرُتَقِبٌ لِّدَوُلَتِكُمُ آخِذُ ﴿ بِقَوْلِكُمُ ا قرار کرنا ہوں آپ کے ہزرگان کا مقتد ہوں آپ کی رجعت کی تقید ایق کرنا ہوں آپ کے دور کا منتظر ہوں آپ کی حکومت کا انتظار عَامِلٌ م بِالمُرِكُمُ مُسْتَجِيرٌ م بِكُمُ زَآئِرٌ لَّكُمُ لأئِذٌ م عَآئِذٌ م بِقُبُورِكُمُ مُسْتَشُفِعُ الله کتا ہوں آ پ کا قول قبول کرتا ہوں آ پ کے تھم پڑھل کرتا ہوں آپ کی پنا ہ میں ہوں آ پ کی زیارت کوآیا ہوں آپ کی قبور میں عَزَّ وَجَلَّ بِكُمْ وَ مُتَقَرِّبٌ م بِـكُـمُ اِلَيْهِ وَ مُقَدِّمُكُمُ اَمَامَ طَلِيَتِي وَ حَوَائِجِي وَ اِرَادَتِي فِي پوشیدہ ہوکر بناہ لی ہے خدا کے حضور آپ کو اپنا سفارٹی بنا تا ہوں آپ کے ذریعے اس کا قرب جا ہتا ہوں آپ کواپی ضرورتوں حاجتوں كُـلِّ اَحُوَالِيُ وَ اُمُوُرِيُ مُؤْمِنٌ م بِسِـرِّكُـمُ وَ عَلاَنِيَتِكُمُ وَ شَاهِدِكُمُ وَ غَائِبكُمُ وَ اَوَّلِكُمُ اورا رادوں کا وسیلہ بناتا ہوں اپنے ہر حال او رہر کام میں اور ایمان رکھتا ہوں آپ میں سے نہاں اور عیاں پر آپ میں سے ظاہراور وَ آخِرِكُمُ وَ مُفَوِّضٌ فِي ذَالِكَ كُلِّهِ إِلَيْكُمُ وَ مُسَلِّمٌ فِيُهِ مَعَكُمُ وَ قَلْبِي لَكُمُ مُسَلِّمٌ پوشیدہ پر آپ میں سےاول اور آخریرا ن تمام امور کے ساتھ خود کو آپ کے سپر دکرنا ہوں ان میں آپ کو رہبر مانتا ہوں میرا دل آپ کا

وَّ رَأْيِي لَكُمُ تَبَعٌ وَّ نُصُرَتِي لَكُمُ مُعَدَّةً حَتَّى يُحْدِيَ اللَّهُ تَعَالَى دِيْنَهُ بكُمُ وَ يَرُدَّكُمُ في معتقدہے میراارادہ آپ کے تالع ہے میری مددونفرت آپ کے لیے حاضر ہے یہاں تک کرخدا آپ کے ہاتھوں اپنے دین کوزندہ أَيَّامِهِ وَ يُظُهِرَكُمُ لِعَدُلِهِ وَ يُمَكِّنَكُمُ فِي أَرْضِهِ فَمَعَكُمُ مَّعَكُمُ لاَ مَعَ غَيْرَكُمُ آمَنُتُ بكُمُ کرے آپ کواس زمانے میں لے جائے قیام عدل میں آپ کی مدد کرےاور آپ کوا چی زمین میں افتذار دے پس میں صرف آپ وَ تَوَلَّيْتُ آخِرَكُمُ بِمَا تَوَلَّيْتُ بِهِ أَوَّلَكُمُ وَ بَرِئْتُ اِلَى اللَّهِ عَزَّ وَ جَلَّ مِنُ أَعُدَائِكُمُ وَ مِنَ کے ساتھ ہوں آپ کے غیر کے ساتھ نیل آپ کا معتقد ہوں اور آپ میں سے آخری کامحتِ ہوں جیسے آپ میں سے اول کامحتِ ہوں الْجِبُتِ وَالطَّاعُوٰتِ وَالشَّيَاطِيُن وَ حِزْبِهِمُ الظَّالِمِينَ لَكُمُ الْجَاحِدِينَ لِحَقِّكُمُ میں خدائے عزوج کل کے مائنے آپ کے دشمنوں سے بیزاری کرنا ہوں اور بیزار ہوں بنوں سے سرکشوں سے شیطانوں سے اوران کے وَالْـمَارِقِيُـنَ مِنُ وَلايَتِكُمُ وَالْغَاصِبِيُنَ لِإِرْتِكُمُ الشَّاكِّيُنَ فِيُكُمُ الْمُنْحَرِفِيْنَ عَنُكُمُ وَ مِنُ گروہ سے جوآپ پرظلم کرنے والے آپ کے حق کا اٹکار کرنے والے آپ کی ولایت سے نگ<mark>ل جانے والے آپ کی وراڅت غصب</mark> كُلِّ وَلِيُسَجَهِ دُونَكُمُ وَ مِنْ كُلِّ مُطَاعِ سِوَاكُمُ وَمِنَ الْآئِمَةِ الَّذِيْنَ يَدُعُونَ إلَى النَّادِ كرنے والے آپ پر شک لانے والے آپ سے پُھر جانے والے ہیں اور بیز اربوں میں آپ کے سواہر جماعت ہے آپ کے سواہر فَثَبَّتَنِينَ اللُّهُ اَبَدًا مَّا اَحُييُتُ عَلَى مُوَالاَتِكُمُ وَ مَحَبَّتِكُمُ وَ دِيُنِكُمُ وَ وَقُقَذِي لِطَاعَتِكُمُ ا طاعت کرانے والے سےاو ران پیٹوا وک سے بیزار ہوں جوجہم میں لے جاتے والے ہیں پس حدا مجھے قائم رکھے جب تک زند ہوں وَ رَزَقَنِيُ شَفَاعَتَكُمُ وَ جَعَلَنِيُ مِنُ خِيَارِمَوَالِيُكُمُ التَّابِعِيْنَ لِمَادَعُوْتُمُ الَيُهِ وَجَعَلَنِي مِمَّنُ آپ کی دوئتی پرآپ کی محبت پر آپ کے دین پراورتو فیق دےآپ کی پیروی کی کرتے ہیں جس کی اورآپ کی شفاعت نصیب کرے يَّـقُتَـصُّ آثَارَكُمُ وَ يَسُلُكُ سَبِيُلَكُمُ وَ يَهْتَدِي بِهُدِيكُمْ وَ يُحْشَرُ فِي زُمُرَتِكُمُ وَ يَكِرُ فِي خدا مجھ کو آپ کے بہترین دوستوں میں رکھ جوائ چیز کی پیروی آپ نے دعوت دی اور رکھ مجھ کو ان میں جو آپ کے اقوال نقل رَجُعَتِكُمُ وَ يُمَلَّكُ فِي دَوُلَتِكُمُ وَ يُشَرَّفُ فِي عَافِيَتِكُمُ وَ يُمَكِّنُ فِي آيَّامِكُمُ وَ تَقِرُّ عَيْنًا کرتے ہیں مجھے آپ کی راہ پر چلائے آپ کی ہدایت ہے بہر ہورکرے آپ کے گرو ہیں اٹھائے آپ کی رجعت میں مجھے بھی لوٹائے غَـدًا بِـرُؤُيتِـكُـمُ بِابِي ٱنْتُمُ وَ أُمِّي وَ نَفُسِى وَ اَهْلِي وَ مَالِي مَنُ اَرَادَ اللَّهَ بَدَءَ بِكُمُ وَ مَنُ آپ کی حکومت میں آپ کی رعایا بنائے آپ کے دامن میں عزت وے آپ کے عبد میں اعلیٰ مقام وے اور ان میں رکھے جوکل آپ

وَحُدَهُ قَبِلَ عَنُكُمُ وَ مَنُ قَدَمَدَهُ تَوجَدَهَ بِكُمُ مَوَالِيَّ لاَ أُحُدِدِي کے مدار سے آ تکھیں ٹھٹڈی کریں تھے میر ہے ماں باپ میری جان میرا خاندان اور مال آپ پر قربان جوخدا کو چاہے وہ آپ سے ملتا ثَـنَـائَـكُـمُ وَلاَ اَبُـلُـعُ مِـنَ الْمَدُحِ كُنُهَكُمُ وَمِنَ الْوَصُفِ قَدُرَكُمُ وَ اَنْتُمُ ہے جواسے بکتا سمجھے وہ آپ کی بات مانتا ہے جوال کی طرف پڑھے وہ آپ کا رخ کرنا ہے میرے سروار دمیں آپ کی تعریف کا اندا زہ نُـوُرُ الْاَخُيَــارِ وَ هُدَاةِ الْاَبُــرَارِ وَ حُـجَـجُ الْحَبَّـارِ بِكُـمُ فَتَـحَ اللَّـهُ وَ بِكُمُ يَخْتِمُ نہیں کرسکتا نہ آپ کی مدح کی حقیقت کو بمجھ سکتا ہوں اور نہ آپ کی شان کا تصور کرسکتا ہوں آپ شر فاء کا نور نیکوکاروں کے رہبر اور وَ بِكُمْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَ بِكُمْ يُمُسِكُ السَّمَاءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرُضِ إِلَّا بِاذْنِهِ وَ بكُ خدائے قادر کی ججتیں ہیں خدائے آپ ہے آغاز و انجام کیا ہے وہ آپ کے ذریعے مینہ برسماتا ہے آپ کے ذریعے آسان کوتھا متا ہے يُنَفِّسُ الْهَمَّ وَيَكُشِفُ الطُّرَّ وَعِنُدَكُمُ مَا نَزَلَتُ بِهِ رُسُلُهُ وَ هَبَطَتُ بِهِ كرمبادا زين پرآ گرے مگراس كے هم سے وہ آپ كے ذريع فم دوركرنا اور فتى بنا تا ہے وہ پيغام آپ كے پاس ہے جواس كے رسول مَلاثِکَتُهُ وَ اِلَى جَدِّکُهُ ﴿ لِلَّرَحِيْنِ عَلَى الْفَلِيلِ كَى زيارت بِي تَوْ: ﴿ اِلَى جَدِّ كُهُ ﴾ لا عَادَ وَرَابِ عَامَا وَطُرف . لا عَادَ وَرَابِ عَامَا وَطُرف . كَى بَجِائَ كَمِ ﴿ إِلَى آخِيُكَ ﴾) بُعِثَ الرُّورُحُ الْآمِيسُنُ آتَاكُمُ اللَّهُ مَا لَمُ يُؤُتِ آحَدًا مِّنَ اور آپ کے بھائی کے باس آیا روح الائلن خدا نے آپ کو وہ نعمت دی جو جہانوں میں کسی کو نہ الْعَالَمِيْنَ طَأَطَأَ كُلُّ شَرِيُفٍ لِلشَرَفِكُمُ وَ بَخَعَ كُلُّ مُتَكَبِّرٍ لِطَاعَتِكُمُ وَ خَضَعَ كُلُّ جَبَّارِ دی ہر بڑائی والا آپ کی بڑائی کے آھے جھکتا ہے ہر مغرور آپ کا حکم مانتا ہے ہر زیر دست آپ کی فضیلت کے سامنے ٹم ہوتا ہے ہر چیز لِّـفَـضُـلِكُمْ وَ ذَلَّ كُلُّ شَيْءٍ لَّكُمْ وَ اَشُرَقَتِ الْآرُضُ بِنُوْرِكُمْ وَ فَازَ الْفَائِزُوُنَ بِوِلاَيَتِكُمُ آپ کے آگے بہت ہے زیمن آپ کے نورے چیکتی ہے کامیانی مانے والے آپ کی ولایت سے کامیانی باتے ہیں کرآپ کے ذریعے بِكُمُ يُسُلَكُ إِلَى الرِّضُوَانِ وَ عَلَى مَنُ جَحَدَ وِلاَيَتَكُمُ غَضَبُ الرَّحُمٰنِ بِاَبِي ٱنْتُمُ وَ أُمِّي رضاءِ الٰہی حاصل کرتے ہیں اور جوآپ کی ولایت کے متکر ہیں ان پرخدا کا غضب آتا ہے میرے ماں باپ میری جان میرا خاندان اور وَ نَفُسِيُ وَ اَهُلِيُ وَ مَالِيُ ذِكُرُكُمُ فِي الذَّاكِرِيْنَ وَ اَسُمَآؤُكُمُ فِي الْاَسُمَآءِ وَ اَجُسَادُكُمُ مال آپ پر قربان آپ کا ذکر ہے ذکر کرنے والوں میں آپ کے مام خاص ہیں ناموں میں آپ کے جسم اعلیٰ ہیں جسموں میں آپ کی

فِي الْآجُسَادِ وَ اَرُوَاحُكُمُ فِي الْآرُوَاحِ وَ اَنْفُسُكُمُ فِي النَّفُوسِ وَ آثَارُكُمُ فِي الْآثَار روهیں بہترین میں روحوں میں آپ کے دل ما کیزہ میں دلوں میں آپ کے نشان عمدہ میں نشا نوں میں اور آپ کی قبریں ما ک میں قبروں وَ قُبُورُكُمُ مِ فِي الْقُبُورِ فَمَا اَحُلٰى اَسُمَا نَكُمُ وَ اكْرَمَ انْفُسَكُمُ وَ انْحُطَمَ شَأْنَكُمُ وَ اجَلَ میں اس کتنے پیارے ہیں آپ کے نام کتنے گرا می ہیں آپ کے نفون آپ کی شان بلند ہے آپ کا مقام عظیم ہے آپ کا پیان پورا خَطَرَكُمُ وَ اَوُفِي عَهُدَكُمُ وَ اَصْدَقَ وَعُدَكُمُ كَلاَمُكُمُ نُوْزٌ وَ اَمُرُكُمُ رُشُدٌ وَ وَصِيَّتُكُمُ ہونے والا اور آپ کاوعد ہ پیا ہے آپ کا کلام روشن آپ کے حکم میں ہدا ہے آپ کی وصیت پر ہیز گاری آپ کا فعل عمدہ آپ کی عادت التَّقُوٰىٰ وَ فِعُلُكُمُ الْخَيُرُ وَ عَادَتُكُمُ الْإِحْسَانُ وَ سَجِيَّتُكُمُ الْكَرَمُ وَ شَأَنُكُمُ الْحَقُّ پیند ید ہ آپ کےاطوار میں ہر: رگواری آپ کی شان سچائی رائتی اور ملائمت ہے آپ کا قول مضبوط ویقیٹی ہے آپ کی رائے میں علم نرمی وَالْحِسَدُقُ وَالْرِّفُقُ وَ قَوُلُكُمُ حُكُمٌ وَّ حَدُّمٌ وَ رَأَيُكُمُ عِلْمٌ وَ حِلْمٌ وَ حَزُمٌ إِنُ ذُكِرَالُخَيُرُ اور پھٹی ہےاگر تیکی کا ذکر ہوتو آپ اس میں اول اس کی جڑاس کی شاخ اس کا مرکز اس کا ٹھکانا او راس کی انتہا ہیں قربان آپ رپہ كُنْتُمُ اَوَّلَـهُ وَ اَصُلَهُ وَ فَوُعَهُ وَ مَعُدِنَهُ وَ مَأُوايهُ وَ مُنْتَهَاهُ بِابِي ٱنْتُمُ وَ أُمِّي وَ نَفُسِي كَيُفَ میرے ماں باپ اورمیری جان کی طرح میں آپ کیانہ بیا تعریف وتو صیف کروں اور آپ کی بہترین آ زمائش کا تصور کروں کہ خدانے أَصِفُ حُسُنَ ثَنَائِكُمُ وَ الْحُصِي جَمِيْلُ بَلَاثِكُمُ وَ بِكُمُ أَخُرُجُنَا اللَّهُ مِنَ الذُّلُ وَ فَرَّجَ عَنَّا آپ کے ذریعے ہمیں خواری ہے بچایا ہمار ہے رنج وغم کو دور فرمایا او رہمیں تباہی کی وادی ہے لکالااو رجہنم کی آ گ ہے آ زاد کیا میرے غَمَرَاتِ الْكُرُوبِ وَأَنْقَذَنَا مِنُ شَفَا جُرُفِ الْهَلَكَاتِ وَ مِنَ النَّارِ بِٱبِي أَنْتُمُ وَ أَمِّي ماں با پ اورمیری جان آپ پر قربان آپ کی دوئتی کے وسلے خدانے ہمیں دینی تعلیمات عطا کیں اور ہماری دنیا کے گڑے کام سنوار وَ نَفُسِيُ بِمُوَالاَتِكُمُ عَلْمَنَا اللَّهُ مَعَالِمَ دِيْنِنَا وَ اَصُلَحَ مَاكَانَ فَسَدَ مِنُ دُنْيَانَا دیے آپ کی ولایت کی بدولت کلم تممل ہوانعتیں ہڑ ھے کئیں او رآ پس کی دوریاں ہٹ گئیں آپ کی دوتی کے باعث اطاعت واجبہ قبول وَ بِمُوَالاَتِكُمُ تَـمَّتِ الْكَلِمَةُ وَ عَظُمَتِ النِّعُمَةُ وَ ائْتَلَفَتِ الْفُرُقَةُ وَ بِمُوَالاَتِكُمُ تُقُبَلُ ہوتی ہے آپ سے محبت رکھنا وا جب ہے خدائے عز و جل کے ہاں آپ کے لیے بلند درجے پیندیدہ مقام اوراو نیجا مرتبہ ہے نیز اس کے الطَّاعَةُ الْـمُـفُتَـرَضَةُ وَ لَـكُمُ الْمَوَدَّةُ الْوَاجِبَةُ وَالدَّرَجَاتُ الرَّفِيْعَةُ وَالْمَقَامُ الْمَحُمُودُ حضورا آپ کی ہڑی عزت ہے بہت او نچی شان ہے اور آپ کی شفاعت قبول شدہ ہےا ہے ہمارے رب ہم ایمان لائے اس ہر جوتو نے وَ الْمَكَانُ الْمَعُلُومُ عِنُدَ اللَّهِ عَزَّوَجَلٌ وَ الْجَاهُ الْعَظِيُمُ وَالشَّأْنُ الْكَبِيُرُ وَالشَّفَاعَةُ نا زل کیا اورہم نے رسول کی پیروی کی اس ہمیں گواہی وینے والوں میں لکھ لے اے ہمارے رب ہمارے دل فیر ھے نہ ہوتے دے

الْمَقُبُولَلَةُ رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعَنَا الْرَّسُولَ فَاكْتُبُنَا مَعَ الشَّاهِدِيْنَ رَبَّنَا لاَ تُزغُ قُلُوبَنَا جبکہ تو نے ہمیں ہدایت دی او رعطا کرہم کواچی طرف ہے رحمت بے شک تو بہت عطا کرنے والا ہے یا ک بڑ ہے ہما را رب بالصرور بَعُدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَ هَبُ لَنَا مِنُ لَّدُنُكَ رَحُمَةً إِنَّكَ ٱنْتَ الْوَهَّابُ سُبُحَانَ رَبَّنَا إِنْ كَانَ وَعُ ہمارے رب کا وعد ہ اپورا ہوگا اے دوست خدا بے قنگ میر ہےاو رخدائے عزوجل کے درمیان گنا ہ حائل ہیں جوآپ جا ہیں تو معاف ہو رَبِّنَا لَمَفَعُولًا ۚ يًّا وَلِيَّ اللَّهِ إِنَّ بَيُنِي وَ بَيُنَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ذُنُوبًا لَّا يَأْتِي عَلَيُهَا إِلَّا رِضَاكُهُ سکتے ہیں پس واسطدان کا جس نے آپ کوا پنا را ز دا ل بناما اپنی مخلوق کا معاملہ آپ کوسونیا آپ کی اطاعت اپنی اطاعت کے ساتھ وا جب فَبِحَقّ مَنِ ائْتَمَنَكُمُ عَلْي سِرّهِ وَ اسْتَرُعَاكُمُ اَمُرَ خَلُقِهِ وَ قَرَنَ طَاعَتَكُمُ بِطَاعَتِهِ کھیرائی آپ میرے گنا ہ معاف کروا کیں اورمیر ہے سفارشی بن جا کیں کہ یقینا نمیں آپ کا پیروہوں جس نے آپ کی پیرو می کیاتو اس لَمَّ ااسْتَوُهَبُتُ مُ ذُنُوبِي وَ كُنُتُمُ شُفَعَآئِي فَاذِّي لَكُمُ مُطِيعٌ مَّنُ اَطَاعَكُمُ فَقَدُ اَطَاعَ اللَّهَ نے خدا کی فرمانبر داری کی اورجس نے آپ کی ما فرمانی کی گویا خدا کی ما فرمانی کی جس نے آپ سے محبت کی تو اس نے خدا سے محبت کی وَ مَنُ عَصَاكُمُ فَقَدُ عَصَى اللَّهَ وَ مَنُ اَحَبَّكُمُ فَقَدُ اَحَبَّ اللَّهَ وَ مَنُ اَبُغَضَكُمُ فَقَدُ اَبُغَضَ اورجس نے آپ سے وحمنی کی موباس نے حدارے وحمنی کی اے معود بھینا جب میں نے ایسے مفارقی یا لیے ہیں جو تیرے مقرب ہیں اللُّهَ اَللَّهُمَّ إِنِّي لَوُ وَجَدْتُ شُفْعَاءَ أَقُرَبَ إِلَيْكَ مِنْ مُحَمَّدٍ وَ أَهُلَ بَيْتِهِ الْآخِيَارِ الْآئِمَّا میعنی حضرت محمد اوران کے اٹل ہیت جو نیکوکاراورخوش کر داروں کے امام ہیں ضرو رئیس نے انہیں اپنے سفارشی بنایا ہے پس بواسطہ ان الَابُسرَارِ لَجَعَلْتُهُمُ شَفَعَآئِيُ فَبِحَقِّهِمُ الَّذِي اَوْجَبُتَ لَهُمْ عَلَيْكَ اَسْئَلُكَ اَنُ تُدْخِلَنِيُ ف کے حق کے جو تو نے خود ہر لازم کر رکھا ہے تھے سے سوال کرنا ہوں کہ مجھے ان لوگوں میں داخل فرما جو ان کی اور ان کے جُـمُـلَةِ الْـعَـارِفِيُـنَ بهـمُ وَ بحَقِّهمُ وَ فِي زُمْرَةِ الْـمَـرُحُـوُمِيْـنَ بشَفَاعَتِهمُ إِنَّكَ اَرْحَهُ حق کی معرفت رکھتے ہیں اور مجھے اس گروہ میں رکھ جس پر ان کی سفارش ہے رحم کیا گیا ہے بے فٹک تو سب سے زیادہ رحم کرنے والا ہے الرَّاحِمِيُنَ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّ آلِهِ الطَّاهِرِيُنَ وَ سَلَّمَ تَسُلِيُمًا كَثِيُرًا وَّ حَسُبُنَا اللَّا اور خدا درود بھیجے حضرت محمد پر اور ان کی ما کیزہ آل پر اور بھیجے سلام بہت بہت سلام اور کا فی ہے ہمارے لیے خدا وَ نِعُمَ الْوَكِيْلُ ﴾ _

جوبہترین کارسازہ۔

(٣) قيدسوى زيارت جامعه : اوربيوبى زيارت المن الله على المحامة الموادية المن الله على الله على المحامة المعامة المعامة

غاتمة الكتاب

بعض انبیاءعظام ، بعض امام زادگان اور بعض شنرادیان پیژب اورمخلص اہل ایمان کی قبور کی زیارت کا بیان

(١) بعض انبياء كرام عليهم السلام كى زيارت كا جمالى بيان

انبياء ومرسلين عليهم السلام كى تكريم وتعظيم عقلأ وشرعاً واجب و لا زم ہے اوران كى قبورمقد سەكى زيارت کرنا مستحب مؤکد ہے بیرا لگ بات ہے کہان ذوات مقدسہ کی تعداد بہت زیا دہ ہےاور ہمیں اکثر حضرات کی قبورمقدسه كے كل وقوع كاعلى بيل كے بال البية بناير شهور بعض فودات مقل مركا بي تفصيل ميں: (۱) (۲) جناب آ دم ونوح علیمالسلام کی قبرین نجف اشرف عراق میں حضرت امیر الظیمائے روضهٔ اقدی کے اندر ہیں۔(۳۷)جناب ابراہیم الطبیع کی قبر مقدس قدس خلیل میں ہے اور و ہیں ان کی زوجہ محتر مہ جناب سارہ کی بھی قبر ہے ۔ (۴) و (۵) جناب یعقوب و جناب پوسف علیہاالسلام کی قبورِ مبارکہ بھی وہیں ہیں۔ (۲) و (4) جناب اساعیل الظفی اوران کی والدہ ماجدہ جناب ہاجم "ہ کی قبریں مسجد الحرام میں حجر اسود کے قریب ہے۔ حضرت امام محمد با قراط ﷺ ہے مروی ہے ، فر مایا: رکن و مقام کے درمیان والا مقام انبیاء کی قبور ہے مجرا ہوا ہے ۔اورحضرت امام جعفر صا دق الطبی ہے منقول ہے،فر مایا: رکن بمانی اور حجر اسود کے درمیان ستر نبی مدفون میں۔(۸ و ۹) جناب داؤد اور جناب سلیمان علیما السلام ہیت المقدس میں فرن میں۔(۱۰) جناب ز کریا القلیلا کی قبر حلب میں موجود ہے۔(۱۱) جناب یونس القلیلا کی قبر کوفہ میں نہر کے کنارے موجود ہے۔(۱۲) و (۱۳) جناب ہودو جناب صالح علیماالسلام کی قبریں نجف اشرف کی وادی السلام میں موجود ہے۔ (۱۴) جناب ذوالكفل الطفيلة كى قبر كوفه مح قريب بمقام ذوالكفل مشهور ب- (١٥) موصل شهر مين جناب جرجيس الطفيلة اورشهر کے باہر (۱۱) جناب شیث الفایل کی قبر موجود ہے۔ (۱۷) بمقام شوش جناب دانیال الفایل کی قبر موجود ہے۔ (۱۸) اور کاظمین میں مسجد ہرا ٹا کے قریب جناب یوشع الفایل فرن ہیں۔

ا پست اسے: ۔ اگر چان حضرات کیلئے کوئی مخصوص زیارت منقولہ موجو وئیس ہے مگر بعض اہل جحقیق کے بیان کے مطابق اگر ان مقدس مقامات پر زیارات جامعہ میں سے پہلی زیارت جامعہ پڑھ کی جائے تو انسب واولی ہے۔

(٢) بعض امام زادگان اور خاعرانِ نبوت سے وابسة بعض محترم خواتین کی قعور کی زیارت کابیان

بے شک خاندانِ نبوت کے چیم و چراغ امام زادگان کی زیارت کرنا باعث اجر و ثواب ہے اورخدائی فیض و ہرکت حاصل کرنے کا وسیلہ ہے۔ گران کی زیارت کے لیے جانے سے پہلے دو چیزوں کی تحقیق ضروری ہے۔ ایک مید کہاس امام زادہ کی نسبی منقبت کے ساتھ ساتھ آیا اس کی کوئی حبی یعنی ذاتی کرداراور ذاتی اخلاق و اطوار کی بھی کوئی فضیلت ہے یا نہ؟؟

دوسرے میں کہ وہ قبر تحقیق طور پرای امام زادہ کی ہے بھی یا نہ؟ مگر یہ حقیقت یا قابل انکار ہے کہ میں دونوں چیزیں بہت کم ہی جمع ہوتی ہیں درنہ اکثر و بیشتر ہوتا ہے ہے کہ اگر کسی امام زادہ کی نہیں منقبت ٹا بہت ہوتا ہے ہے کہ اگر کسی امام زادہ کی نہیں منقبت ٹا بہت ہوتا ہے عظمت کا فقد ان ہوتا ہے او راگر میہ چیزم و جو دہوتو پھر قبر جعلی ہوتی ہے جیسا کہ مشاہدہ شاہد ہے کہ فتلف قری و امصار میں بہت سے جعلی مزارات موجود ہیں اور عوام ان کو اصلی مزارات سمجھ کر ان کی زیارات کرتے ہیں۔ بہر حال ہم ذیل میں بعض شنر ادگان اور بعض شنر ادیوں کی قبور اور ان کی زیارت کا تذکرہ کرتے ہیں۔

(۱) امام زاوہ سید مجھ :۔ یہ حضرت امام علی فقی الظام کے بڑے صاحبز ادے ہیں اور بڑے صاحب تقویٰ و

(۱) امام زاوه سيد محمد : - يه حضرت امام على نقى الطفيلا كے بڑے صاحبز اوے بيں اور بڑے صاحب تقوى و طہارت بزركوار تھے - ان كا مزار بغدا دو سامراء كے درميان بمقام بلدموجود ہے اور زيارت گاہ خواص وعوام ہے - آپ مدينہ ہے سامراء اپنے والد بزركواركو ملنے آئے تھے اور والپسى پر راستہ ميں بھار ہوئے اور پھر انقال ہوگيا اور و بيں وفن ہوئے رضوان الله عليه -

(۲) امام زاده سید حسین :- بیشا بزاده بھی حضرت امام علی نقی الطبی کے فرزند ارجمند ہیں - بیہ بڑے عابد و زاہد سید زاده تھے - سامراء میں انتقال ہوا - اورو بین وفن ہوئے - امامین عسکر پین علیجا السلام کے قبور مقدسہ کے قریب بہت ہے سادات کرام کے مزارات ہیں وہیں ان جناب کی مرقد بھی ہے -

(٣) مثا براوہ عبد العظیم: -اس شابرادہ کا سلسائنب چارواسطوں سے حضرت امام حسن مجتبی القین تک پہنچتا ہے لیمنی آپ حسنی سید زادہ ہیں لیمنی عبد العلام - آپ خاندانی شرافت کے علاوہ علم وفضل اور زہد وتقوی کے زیورہ بھی آ راستہ تھے -اوران کو حضرت امام علی نقی علیمالسلام کے چیرے بھائی ہونے کے علاوہ ان کی صحابیت کا شرف بھی حاصل امام محمد تقی وحضرت امام علی نقی علیمالسلام کے چیرے بھائی ہونے کے علاوہ ان کی صحابیت کا شرف بھی حاصل تھا -اورانہوں نے ان ہے بہت کی احاویث روایت کی ہیں - بہی وہ در رکوار ہیں جنہوں نے اپنے عقائد حضرت امام علی نقی القین کی خدمت میں پیش کئے تھے اورامام القین نے ان کی تائیدو تصدیق کرتے ہوئے فرمایا تھا:
﴿ هذا دیس اللّٰه الذی ارتضاہ لعبادہ فاثبت علیہ ﴾ یعنی بہی وہ دین ہے جوخدانے اپنے بندوں کے لیم مقررکیا ہے اس پر تا بت قدم رہواور بعض اہل ایمان کے عقائد من کر ہذا ویٹی اور دین آ بائی یعنی بہی میرا اور میرے آباء واجدا وکا وین ہے ہم نے اپنی کتا ب اصول الشریعہ میں ای حدیث کو بنیا وقر اردے کر یہ کتا ب

بہرحال ان کام قدم اوک طیر ان کے مگہ رہیں ہے جھے آج کی شاہ عدالعظیم کے ام ہے موسوم
کیا جاتا ہے اوران کامزار توام و خواص کی زیارت گاہ ہے۔
کیا جاتا ہے اوران کامزار توام و خواص کی زیارت گاہ ہے۔
(۲) امام زاوہ حمزہ نے ۔ بیشنر اورہ حضرت امام موی کاظم الطبیح کی اولا دیٹس ہے ہے۔ بعض اٹارے واضح ہوتا
ہے کہ جن دنوں شاہزاورہ عبد العظیم حسنی رہے میں مقیم تھے تو آپ کو جب موقع ملٹا تو ان کی قبر کی زیارت کرتے
سے اور فرماتے تھے کہ بیدامام موی کاظم الطبیح کی اولا دیٹس سے ایک برزرگ سید کی قبر ہے۔ بہرحال بی قبر جناب شاہ عبد العظیم کی قبر ہے۔ بہرحال بی قبر جناب شاہ عبد العظیم کی قبر ہے۔ بہرحال موجود ہے۔

(٣) بعض ان علاء اعلام كے تبوركى زيارت كابيان جو ديارائمهُ اطهارٌ ميں مدفون ہيں : ـ

واضح رہے کہ ثاہزادہ جمزہ کے حکن میں مشہور عالم دین شیخ ابوالفتوح رازی کی قبرہے جومشہور تفییر قرآن ابوالفتوح رازی کی قبرہے جومشہور تفییر قرآن ابوالفتوح رازی کے مؤلف ہیں اور محلّہ شاہ عبدالعظیم میں ہی رئیس المحد ثین حضرت شیخ صدوق " کامزارہے۔
ای طرح نجف اشرف میں سینکٹروں علماء اعلام فین ہیں جیسے حضرت شیخ طوی علیہ الرحمہ مؤسس حوزہ علمیہ نجف اشرف، جناب سید بحرالعلوم، جناب شیخ جعفر کاشف الفطاء، آقائے حکیم، آقائے خوئی، شیخ انصاری،

شخ کاشف الغطاء، آقائے سید یزدی اور آقائے بزرگ طہرانی وامثالهم اور کر بلامعلی میں بھی سیروں اعلام مرفون ہیں جیسے شخ یوسف بحرانی، آقائے وحید بہہائی، آقائے سیدمہدی شیرازی، اور کاظمین میں مدفون بعض اعلام کا تذکرہ زیارت کاظمین کے حمن میں کیا جا چکا ہے۔ ای طرح سامراء میں بھی بعض اکا برعلاء کرام مدفون ہیں جیسے آقای شیرازی بزرگ، آقائے جم الدین العسکری و احمنسالھ ہے ... اور ای طرح مشہدمقد ت کو بھی بوٹ برائی، شخ حرعالمی وامثالهم اور قم مقدسہ کو بھی بعض اعلام شیعہ کے مدفن ہونے کا شرف حاصل ہے جیسے شخ بہائی، شخ حرعالمی وامثالهم اور قم مقدسہ کو بھی بعض اعلام شیعہ کے مدفن ہونے کی سعادت حاصل ہے جیسے مؤسس حوزہ شخ عبدالکریم حارکی، آقائے بروجہ دی، آقائے کے مرشی، آقائے کی معادت حاصل ہے جیسے مؤسس حوزہ شخ عبدالکریم حارکی، آقائے کے مروجہ دی کہ ان علاء اعلام کے مزارات مقدسہ پر بھی حاضری کی سعادت حاصل کریں اور ان کے زائر ین کرام کوچا ہیئے کہ ان علاء اعلام کے مزارات مقدسہ پر بھی حاضری کی سعادت حاصل کریں اور ان کے ایسال ثواب ورفع درجات کے لیے دعاوقر آن خوانی کریں اور اپنے آپ کوائی سعادت الدی سے ہرگز محروم نہ ایسال ثواب ورفع درجات کے لیے دعاوقر آن خوانی کریں اور اپنے آپ کوائی سعادت الدی سے ہرگز محروم نہ کریں واللّٰہ الموفق۔

(٣) بعض مخدرات المقور كي المارك كابيان SIBTAI

اس سلسلہ میں بہت ی با نوانِ اسلام کانا م لیا جا سکتا ہے گر بنظر اختصار ہم صرف چند ذواتِ قا دسہ کے تذکر ہ پر اکتفا کرتے ہیں۔

(۱) معصومہ می آم کی زیارت: -ان محتر مدکانام نامی جناب فاطمہ بنت امام موی کاظم النے ہے جو کہ حضرت امام رضالتے کی بمشیرہ محتر مد بین ان کی زیارت کی برق فضیلت وار دہوئی ہے۔ شیخ صدوق علیہ الرحمہ نے عبون الاخبار میں سعد بن جعفر سے روایت کی ہر حضرت امام رضالتے ہے ہے اس بی بی گی زیارت کے بارے میں پوچھا گیا تو آپ نے فرمایا کہ جوشص اس معصومہ کی زیارت کرنے کے لیے آئے اس کے لیے جنت ہے۔ ای تتم کی ایک روایت حضرت امام محد تقی النے ہی مروی ہے۔ ایک اور حدیث کے حکمن میں جوکہ حضرت امام رضالتے ہے ہے معموم کی زیارت یوں مروی ہے۔ ایک اور حدیث کے حکمن میں جوکہ حضرت امام رضالتے ہے معموم کی زیارت یوں مروی ہے۔ ایک اور حدیث کے خسم مروی ہے۔ ایک اور حدیث کے خسم مروی ہے۔ ایک اور حدیث کے خسم مروی ہے۔ ای خدرہ کی زیارت یوں مروی ہے فرمایا : جبتم ان کی قبر پر جاؤتو جانب سر قبلہ روہ کر پہلے جؤتیس مرتبہ ﴿الْلَالَاتُ الْکُبُورُ ﴾ ، تینتیس مرتبہ ﴿الْلَالَاتُ اللّٰکُ اللّٰکِ ا

﴿ سُبُحَانَ اللَّهِ ﴾ اورتينتيس مرتبه ﴿ اللَّحِهُ لِلَّهِ ﴾ كبواور بعد ازال به زيارت يراهو: ﴿ اَلشَّلامُ عَلَى ادَمَ صِفُوَةِ اللَّهِ اَلشَّلامُ عَلَى نُوْحٍ نَّبِيِّ اللَّهِ اَلشَّلامُ عَلَى إبُرَاهِيُمَ خَلِيُلٍ سلام ہو آ دم ی جو خدا کے برگزیدہ ہیں سلام ہو نوح پر جو خدا کے نبی ہیں سلام ہو ابرائیم پر جو خدا کے اللُّهِ اَلشَّلاٰمُ عَلْي مُوْسلي كَلِينُم اللَّهِ اَلشَّلاٰمُ عَلَى عِيُسلى رُوُحِ اللَّهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيُكَ دوست خاص ہیں سلام ہو موسیٰ " پر جو خدا کے کلیم ہیں سلام ہو عیسیٰ پر جو روحِ خدا ہیں سلام ہو آپ پر يَا رَسُولَ اللَّهِ اَلسَّلاَّمُ عَلَيُكَ يَا خَيُسرَ خَلُق اللَّهِ اَلسَّلاَّمُ عَلَيُكَ يَا صَفِيَّ اللَّه اے خدا کے رسول سلام ہو آپ پر کہ آپ خلق خدا میں بہترین ہیں سلام ہو آپ پر اے خدا کے پند کردہ ٱلسَّلاَّمُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدَ بُنَ عَبُدِ اللَّهِ خَاتَمَ النَّبِيِّينَ ٱلسَّلاَّمُ عَلَيْكَ يَآ اَمِيُرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَإ سلام ہو آپ پر اے محمر بن عبداللہ کہ آپ نبیوں کے خاتم ہیں سلام ہو آپ پر اے مومنوں کے امیر علی ا بُنَ اَبِيُ طَالِبٍ وَّصِيَّ رَسُولُ اللَّهِ اَلسَّلاَّمُ عَلَيُكِ يَا فَاطِمَةُ سَيَّدَةَ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ا بن ابی طالب کرآپ رسول ملا کے قائمقام میں ملام ہو آپ جرا کے فاقت کر آپ زمان عالم کی سردار ہیں ٱلسَّلاَمُ عَلَيْكُمَا يَا سِبُطَيُ نَهِيَّ الرَّحْمَةِ وَ سَيِّدَىُ شَبَابِ اَهُلِ الْجَنَّةِ ٱلسَّلاَمُ عَلَيُكَ سلام ہو آپ دونوں پر کہ آپ نبی رحمت کے دو نوا ہے اور جوانا نِ اہل جنت کے دو سید وسر دار ہیں سلام ہو آپ پر يَا عَلِيٌّ بُنَ الْحُسَيُنِ سَيَّدَ الْعَابِدِيْنَ وَ قُوَّةَ عَيُنِ النَّاظِرِيْنَ السَّلاَمُ عَلَيُكَ يَا مُحَمَّدَ بُنَ اے علی بن الحسینؑ کہ آپ عبادت گزاروں کے سردار اور دیکھنے والوں کی خنگی چیٹم ہیں سلام ہو آپ پر اے مجمہؑ بن عَلِيّ بَاقِرَ الْعِلْمِ بَعُدَ النَّبِيّ اَلسَّلامُ عَلَيْكَ يَا جَعُفُرَ بُنَ مُحَمَّدِ الصَّادِقَ الْبَآرُ الْآمِيْنَ علیٰ کہ آپ بعد از نبی علم پھیلانے والے ہیں سلام ہو آپ پر اے جعفر ؑ بن محمہؑ کہ آپ راسٹگو خوش کر دا را ما نتدا رہیں ٱلسَّلاَمُ عَلَيُكَ يَا مُوْسَى ابُنَ جَعُفَرِهِ الطَّاهِ رَ الطُّهُرَ ٱلسَّلاَّمُ عَلَيُكَ يَا عَلِيَّ بُنَ مُوْسَى سلام ہو آپ پر اے مویٰ " بن جعفر" کہ آپ باک ہیں باک شدہ سلام ہو آپ پر اے علی " بن مویٰ " الرِّضَا الْمُرُتَظَى اَلسَّلاَمُ عَلَيُكَ يَا مُحَمَّدَ بُنَ عَلِيَّ التَّقِيَّ السَّلاَّمُ عَلَيُكَ يَا عَلِيَّ بُنَ کہ آپ ہیں رضا والے بہندید ہ سلام ہو آپ پر اے محمدٌ بن علیٰ کہ آپ پر ہیز گار ہیں سلام ہو آپ پر اے علیٰ بن

مُحَمَّدِ وِ النَّقِيَّ النَّاصِحَ الْآمِيْنَ اَلسَّلاَّمُ عَلَيْكَ يَا حَسَنَ بُنَ عَلِيَّ اَلسَّلاَمُ عَلَى الْوَصِيّ محمرُ کرآپ باصفا خیرخواہ اما نتدار ہیں سلام ہوآپ ہرا ہے حسنٌ بن علیّ اور سلام ہوان امام پر جوان کے قائمقام ہوئے مِنُ مِبَعُدِهِ ٱللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى نُوْرِكَ وَ سِرَاجِكَ وَ وَلِيَّ وَلِيَّكَ وَ وَصِيَّ وَصِيَّكَ وَ حُجُّ كُ ا ہے معبو د! رحمت فر ماا پنے نور پر جو تیرا جراغ تیرے ولی کے وارث تیرے وصی کے جانشین اور تیری مخلوق پر جمت ہیں عَـلَى خَلْقِكَ ٱلسَّلاَّمُ عَلَيُكِ يَا بنُتَ رَسُوُلِ اللَّهِ ٱلسَّلاَّمُ عَلَيُكِ يَا بنُتَ فَاطِمَةَ وَ خَدِيْكُ سلام ہو آپ پر اے رسول خداً کی دختر سلام ہو آپ پر اے فاطمہ زہرا و خدیجہ الکبری کی دختر ٱلسَّلاَّمُ عَلَيُكِ يَا بِنُتَ آمِيُرِ الْمُؤْمِنِيُنَ ٱلسَّلاَّمُ عَلَيُكِ يَا بِنُتَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْ سلام ہو آپ پر اے مومنوں کے امیر کی دفتر سلام ہو آپ پر اے حسن و حسین کی دفتر اَلسَّلاَمُ عَلَيُكِ يَا بِنُتَ وَلِيَّ اللَّهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيُكِ يَاۤ اُخُتَ وَلِيِّ اللَّهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيُكِ يَا عَجْ سلام ہو آپ پر اے دوست خدا کی دختر سلام ہو آپ پر اے دوست خدا کی ہمٹیر ہسلام ہو آپ پر اے دوست خدا کی وَلِيِّ اللَّهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكِ يَا بِنُتَ مُوسَى بُن جَعُفَر وَّ وَحُمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكِ پیوپی سلام ہو آپ پر اے موی میں جغر کی وخر خدا کی رضتہ ہو اور اس کی برکات سلام ہو آپ پر کر عَرَّفَ اللُّهُ بَيُنَنَا وَ بَيُنَكُمُ فِي الْجَنَّةِ وَ حَشَرَنَا فِي زُمُرَتِكُمُ وَ اَوُرَدُنَا حَوُضَ نَبِيّكُمُ حدا جنت میں ہمارے آپ کے درمیان شاسائی کرائے ہمیں آپ کے گروہ میں اٹھائے ہمیں آپ کے نبی کے حوض کوڑ پر وارد کرے وَ سَقَانَا بِكَأْسِ جَدِّكُمُ مِّنُ يَّدِ عَلِيّ بُنِ آبِي طَالِبِ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيْكُمُ ٱسْئَلُ اللَّهِ اورہمیں آپ کے نانا کے جام کے ساتھ علی بن افی طالبؓ کے ہاتھوں سیراب فرمائے خدا کی رحمتیں ہوں آپ پر خدا سے سوال کرنا ہوں کہ اَنُ يُسرِيَنَا فِيُكُمُ السُّرُورَ وَالْفَرَجَ وَ اَنُ يَجْمَعَنَا وَ إِيَّاكُمُ فِي زُمْرَةٍ جَدِّكُمُ مُّحَمَّدٍ صَلَّى وہ ہمیں آپ لوگوں میں سرت وخوشحانی دکھائے اور بیر کرہمیں اور آپ کو آپ کے نانا حضرت محم^{سل}ی اللہ علیہ و آلبہ کے گروہ میں استحا کرے اللُّهُ عَلَيْهِ وَ الِهِ وَ أَنُ لاَّ يَسُلُبَنَا مَعُرِفَتَكُمُ إِنَّهُ وَلِيٌّ قَدِيْرٌ اَتَقَرَّبُ إِلَى اللَّهِ بِحُبِّكُمُ وَ الْبَرَآئَةِ اورہم سے آپ کی معرفت واپس ندلے کہ وہ حاکم ہے قدرت والائمیں قرب الہی جا ہتا ہوں بواسطہ آپ کی محبت آپ کے ڈمنوں مِنُ اَعُدَآئِكُمُ وَ التَّسُلِيُمِ اِلَى اللَّهِ رَاضِيًا ، بِهِ غَيْرَ مُنْكِرٍ وَّلاً مُسْتَكْبِرٍ وَّ عَلى يَقِيُنِ مَآ اَتْلى سے بیزاری کے ہم خدا کی رضا پر راضی رہ کر بغیر دل ملک ہونے اور اکڑنے کے اور اس چیز پر یقین ہے جو محمد لائے

به مُستَمدًدٌ وَ بِهِ رَاُضِ نَظُلُبُ بِذَلِکَ وَجُهَکَ یَا سَیّدِیُ اَللَّهُمَّ وَ رِضَاکَ وَالدَّارَ الْاَجْ وَ الدَّارَ اللَّاجِ اللَّهُمَّ وَرِضَاکَ وَالدَّارَ اللَّاجِ وَ الدَّارَ اللَّاجِ اللَّهِ مُستَدِی اللَّهُمَّ وَرِضَاکَ وَالدَّارَ اللَّاجِ وَاللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ اللَّهُمُ اللَّهُ اللَّهُمُ ا

(۲) شريكة المحسين حضرت لمنب كى نيالت المال بك كوناري الملام كالليدى كهاجا سكتا ب كدوه معظمه بى بى جوعظمت مين عالمه غير معلّمه باورجواسلام بچانے اور پھيلانے مين شريكة الحسين باورجواس سلسله مين مصائب وشدائد برواشت كرنے مين ام المصائب ب-كتب زيارات مين ندان كى زيارت كى كوئى فضيلت ملتى باورندى زيارت كى كوئى كيفيت نظرات تى بى ع

بسوخت عقل ز حيرت كه اين چه بو العجبي است؟

بہرحال ان کی قبر مقدل پر اگر یہی معصومہ قم والی زیارت پڑھ دی جائے ہاں البتہ صرف جہاں ﴿ اَلسَّلاَمُ عَلَيْ كِ يا بنت هو مسى بن جعفہ ہو ہاں اس كى بجائے ﴿ اَلسَّلاَمُ عَلَيْ كِ يَا بنت على بن ابى طالب﴾ كهدویا جائے ۔ تو بعیر نہیں ہے كہ مناسب وموزوں ہو و اللّه العالم۔

ایصداح: -چونکداس مخدومه بی بی کیدفن میں بخت اختلاف ہے چنانچیوام میں مشہور شام ہے، مؤرخین میں مشہور مصر ہے اور محققین میں مشہور جنت التقیع مدینہ ہے لہٰذا اگر خداتو فیق و ہے تو ان تینوں مقامات پراس مظلومهٔ کربلاکی زیارت کی جائے اور پڑھی جائے ۔ واللّٰه الموفق۔

(۳) امام زمانہ کی والدہ ماجد ہزجس خاتون کی زیارت :۔اس معظمہ کی قبر شریف حضرت امام حسن عسکری الظیمائی ضرح مقدس کی پشت کی جانب واقع ہے۔اگر چداس معظمہ کی بھی کسی معصوم ہے منقول زیارت تو نظر قاصر ہے نہیں گزری ہاں البتہ یہاں وہ زیارت پڑھی جاستی ہے جسے سید ابن طاؤوں نے خاندانِ نبوت کی کا نواں کے لیے درج کیا ہے اور جسے سید شیرازی نے بھی ازباب تسائح اپنی کتاب الدعاء والزیارۃ بیل نقل کیا ہے۔جو بیہے:

جدري به الله عَلَيْكِ آيَّتُهَا السَّيدَةُ الزَّكِيَّةُ الطَّاهِرَةُ الُولِيَّةُ وَ الدَّاعِيَةُ الْحَفِيَّةُ اَشُهَدُ اَذَّكُمُ السَّلامُ عَلَيْكِ آيَّتُهَا السَّيدَةُ الرَّكِيَّةُ الطَّاهِرَةُ الُولِيَّةُ وَ الدَّاعِيَةُ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللللَّةُ اللَّهُ الللللِّهُ الللللْمُ اللل

وَ نَجَا مُصَدِّقُکِ وَ خَابَ وَ خَسِرَ مُكَذِّبُکِ وَ الْمُتَخَلِّفُ عَنُکِ اِشْهَدای لِی بِها ﴿ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ الله

الشَّهَا دَوَ لِلاَّكُونَ مِنَ الْفَآئِرِيْنَ بِمَعُرِفَةِ كِ وَ طَاعَةِ كِ وَ تَصُدِيُقِكِ وَ اتِبَاعِكُمُ ال آپ ميرى اس كابى ك كاه ربنا تاكرين آپ ك معرفت اور بيروى كرنے كى وج سے كامياب لوگوں يمن شامل موسكوں

وَالسَّلاَمُ عَلَيُكِ يَا سَيِّدِى وَابُنَةَ سَيِّدَتِى أَنْتِ بَابُ اللَّهِ الْمُؤْتِى مِنْهُ وَ الْمَاخُودُ عَنْهُ ﴿ اور آپ ہے علام ہو آے میری سردار کی بٹی میں آپ کا زائر بن کر آیا ہوں

اَتَیُّةُ کِ زَآئِـرًا وَ حَاجَاتِی لَکِ مُسْتَوُدِعَةً وَهَا اَنَا ذَا اَسْتَوُدِعُکِ دِیُنِی وَ اَمَانَتِی وَ خَوَاتِهُ اور اپنا دین و ایمان آپ کے سپرد کنا ہوں اُ

عَــمَــلِــى وَ جَــوَامِـعَ اَمَـلِــى إِلَى مُنْتَهَى اَجَلِـى وَ السَّلامُ عَلَيْكِ وَ رَحُمَةُ اللَّهِ وَ بَوَكَا يُّهُ آپ الله كا دروازه بين اور آپ پر سلام مو اور الله كى رُمتين اور بركاتين۔

(۴) جناب ڪيمه خاتون کي زيارت: ـ

بيه مخدره حضرت امام محمد تقى الطليعي كى دختر نيك اختر حضرت امام على نقى الطليع كى بمشيره اور حضرت امام

صن عسری الظیم کی عمد محتر مد ہیں جن کی قبر صفرت اما معلی نقی الظیم کی پائٹی کی طرف ہے۔ اگر چہاس معظمہ کی بھی کوئی منقولہ زیارت موجود نہیں ہے گریہاں بھی وہی زیارت پڑھی جاستی ہے جوابھی اوپر ہم نے ابن طاؤوں کے حوالہ سے نقل کی ہے یا پھروہ زیارت بھی پڑھی جاستی ہے جوان کی پھوپھی جناب معصومہ تم م کی زیارت کے سلسلہ میں واروہے۔ ہاں البتة اس میں جہاں ﴿اَلسَّلاَمُ عَسَلَيْکِ یہا بسنت صوسسی بسن جعفر ﴾ واردہ وہاں یہ پڑھا جائے: ﴿اَلسَّلاَمُ عَلَیْکِ یا بسنت محمد بن علی الوضا۔

جلهابل ايمان كى قبوركى زيارت كابيان

(۱) مؤمنین کرام کے قبور کی زیارت کرنے اور وہاں فاتحہ و درود پڑھنے کے ثواب کوائمہ طاہرین کے قبور مقدسہ کی زیارت کے برابر قرار ویا گیا ہے۔ چنانچہ جناب شخ ابن قولویہ نے بسند خود حضرت امام موکی کاظم اللہ است کی نیارت کے برابر قرار ویا گیا ہے۔ چنانچہ جناب شخ ابن قولویہ نے بسند خود حضرت امام موکی کاظم اللہ است کی دوایت کی ہے، فرمایا: جو شخص ہماری زیارت نہ کر سکے تو وہ صالح شیعہ مؤمنین کی زیارت کر سے تو اسے وہی ثواب ملے گاجو ہم سے نیکی و بھلائی مذکر سکے تو وہ ہمارے نیکو کار حبداروں سے صلہ و نیکی کرے اسے وہی تواب ملے گاجو ہم سے نیکی و بھلائی کرنے کا ملیا ہے۔ (کامل الزیارہ) حبداروں سے صلہ و نیکی کرے اسے وہی تواب ملے گاجو ہم سے نیکی و بھلائی کرنے کا ملیا ہے۔ (کامل الزیارہ)

(۲) حصرت امام رضالط کے منقول ہے ،فر مایا: جو شخص اپنے مؤمن بھائی کی قبر پر جائے اوراس پر ہاتھ رکھ کرسات ہا رسورہ اما انزلناہ پڑھے تو وہ قیامت کے دن فزع اکبر (بڑے نوف و ہراس) سے محفوظ رہے گا۔ (ایصناوعیون الاخبار)

(٣) صفوان جمال بیان کرتے ہیں کہ میں نے حضرت امام جعفر صادق الطبی کوفر ماتے ہوئے سنا کہ فر ما رہے مقول سے مقول کہ وہ جمعرات کے دن عصر کے وقت جنت البقیع میں صحابہ کی رہے ہے کہ حضرت رسول خدا گا کا دستور تھا کہ وہ جمعرات کے دن عصر کے وقت جنت البقیع میں صحابہ کی ایک جماعت کے ساتھ تشریف لے جاتے تھے اور تین بار فر ماتے تھے: ﴿اَلْسُلامُ عَلَيْتُكُمُ اَهُلَ اللّهِ يَا رِئُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّ

(۳) مروی ہے کی عبداللہ بن سنان نے حضرت امام جعفر صادق القلی کی خدمت میں عرض کیا کہ اہل ایمان
 کی قبروں پر کس طرح سلام کرما چاہیئے؟ فرمایا: کہو:

﴿ اَلسَّلاٰمُ عَلَى اَهُلِ اللِّيَارِ مِنَ الْمُوْمِنِيُنَ وَ الْمُسْلِمِيْنَ اَنْتُمُ لَنَا فَرَطُّ وَّ نَحُنُ علام ہو اہل قبرتان میں ہے مونوں اور سلمانوں پر آپ لوگ ہمارے پیش ہو ہیں اور

إِنْشَآءَ اللَّهُ بِكُمْ لا حِقُونَ،

انثا ءاللہ ہم بھی آللہ ہے آملیں سے۔

(۴) حضرت امام زین العابدین القلیلاے مروی ہے، فرمایا: جو محص قبرستان میں جائے اور بیدوعا پڑھے:

﴿ اَلَـٰكُهُ مَّ رَبَّ هَـٰذِهِ الْاَرُواحِ الْـفَانِيَةِ وَالْاَجُسَادِ الْبَالِيَةِ وَ الْعِظَامِ النَّخِرَةِ الَّتِي خَرَجَتُ اےمعبودا تو میں پروردگار ہے ان گزری ہوئی روحوں کا ان بوسیرہ جسموں کا اور ان کلی ہوئی بڈیوں کا جو دنیا ہے باہر

مِنَ اللَّهُ نُيَسَا وَهِمَى بِكَ مُسُوَّمِنَةً اَدُخِلُ عَلَيْهِمُ رَوُحًا مِنْكَ وَ سَلامًا مِنْكُيُّ وَ سَلامًا مِنْكُونُ اللَّهُ عَلَيْهِمُ رَوُحًا مِنْكُ وَ سَلامًا مِنْهُونُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِمُ رَوُحًا مِنْكُنُ دَا وَرَمِرَا عَلَمْ عَبَيْهِا فَلَا عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِمُ وَوُحًا مِنْكُنُ دَا وَرَمِرا عَلَمْ عَبَيْهِا فَلَا عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِمُ وَوُحًا مِنْكُونُ وَ اللَّهُ عَلَيْهُمُ وَلَا عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِمُ وَوَحُمَّا مِنْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِمُ وَوَحُمَّا مِنْكُونُ وَ اللَّهُمَا وَمِنْكُونُ وَمُ اللَّهُ عَلَيْهُمْ وَوَحُمَّا مِنْكُونُ وَ اللَّهُ عَلَيْهُمُ وَاللَّهُ عَلَيْهُمْ وَاللَّاللَّهُ عَلَيْهُمْ وَاللَّهُ عَلَيْهُمْ وَاللَّهُ عَلَيْهُمْ وَاللَّهُ عَلَيْهُمْ وَاللَّهُ عَلَيْكُونُ وَاللَّهُ عَلَيْكُونُ عِلَّا عَلَيْكُونُ عِلَا عَلَاللَّهُ عَلَيْكُونُ عِلَا عَلَيْكُونُ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهُمْ مَنْ وَاللَّهُ عَلَيْكُونُ عِلَى اللَّهُ عَلَيْكُونُ عِلَا عَلَيْكُونُ عِلَا عَلَيْكُمْ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُونُ عِلَى عَلَيْكُونُ عِلَا عَلَاكُمُ عَلَى عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُونُ عِلَا عَلَى عَلَى عَلَيْكُونُ عَلَيْكُونُ عَلَيْكُونُ عَلَيْكُونُ عَلَى عَلَيْكُونُ عَلَى عَلَيْكُونُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُونُ عَلَ

تو خداوند عالم اس کے نامہُ اعمال میں آدم سے لے کر قیامت تک تمام انسانوں کی تعداد کے برابر نیکیاں کھے گا۔ (مفاتیج) SIBTAIN.COM

(۵) حضرت امير المؤمنين الطيخ حضرت رسول خدا الله سے روايت كرتے ہيں ، فر مايا: جو محض قبر ستان ميں جائے اور د ہال بيد دعا يرا هے:

إِلَّا اللَّهُ يَا لاَ إِلْهَ إِلَّا اللَّهُ بِحَقَّ لاَ إِلٰهَ إِلَّا اللَّهُ إِغْفِرُ لِمَنْ قَالَ لاَ إِلٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَ احْشُرُنَا

اے لا اللہ الا اللہ والی ذات مجن لا اللہ الا اللہ کے بخش دے ان کو جنہوں نے پڑھا لا اللہ الا اللہ اور اٹھا ہمیں اس

فِي زُمْرَةِ مَنْ قَالَ لا َ إِلٰهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ عَلِيٌّ وَلِيُّ اللَّهِ

گروہ میں جنہوں نے پڑ ھانبیں معبود سوائے اللہ کے محمر خدا کے رسول ہیں علیٰ خدا کے دوست ہیں۔

و خداوند عالم اس کے نامہ کا عمال میں بچاس سال کی نیکیوں کا ثواب درج کرے گا در بچاس سال کے گنا ہوں تو خداوند عالم اس کے نامہ کا عمال میں بچاس سال کی نیکیوں کا ثواب درج کرے گا در بچاس سال کے گنا ہوں کا کفارہ قرار دے گا۔اوراس کے دالدین کے ساتھ بھی بہی سلوک کرے گا۔ (کتاب الدعا والزیارہ) یہ بھی بعض اخبار میں وارد ہے کہ حضرت امام جعفر صادق القیلا سے دریافت کیا گیا کہ جب ہم اہل ایمان کی قبور کی زیارت کے لیے جائیں تو وہاں کیار پڑھیں؟ فرمایا: بیدوعا پڑھو:

﴿ اَللّٰهُ مَّ جَافِ الْاَرُضَ عَنُ جُنُوبِهِمْ وَ صَاعِدُ اِلَيُكَ اَرُوَاحَهُمْ وَ لَقِهِمٌ مِّنُكَ رِضُوااً اے معبودا زمّن كواس كے كنادوں تك خالى كر دے ان كى روحوں كوا في طرف بلند كران كوا في خوشنودى سے بہرہ ور فرما

وَّ اَسُسِکِسُ اِلْیُهِمُ مِّسُنُ رَّحُمَۃِ کَ مَا تَسِسلُ بِہٖ وَحُدَتَهُمْ وَ تُسوُنِسسُ بِہٖ وَحُشَتَهُمُ اور اچی دحت کو ان کے ماتھ کر دے تاکہ تو ان کی خہاتی دور کر لے اور ان کے فوف کو دور کر دے

إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْؤُ.

ب فلك تو مرجيز پر قد رت ركھا ہے۔

بہرحال احادیث الل ایمان کے لیے صدقہ و خیرات کرنے کی بڑی تاکید وارد ہوئی ہے۔ نیز قبرستان میں جملہ عبرت حاصل کرنے اوران کے لیے صدقہ و خیرات کرنے کی بڑی تاکید وارد ہوئی ہے۔ نیز قبرستان میں جملہ الل ایمان کے لیے مشتر کہ طور پر سورہ تو حید گیارہ با رپڑ ھنا اوراس کا ثواب ان کوہدیہ کرنا بھی وارد ہے اور رہے کہ ایسا کرنے والے کوان سب الل ایمان کی تعدا دے ہرا ہر ثواب ملتا ہے۔ نیز کسی میت کی قبر پر ہاتھ رکھ کرتین بار یہ دعائیہ کلمات کہنے ہے اس کاعذاب فل جاتا ہے:

﴿ اَللّٰهُمَّ إِذِى اَسْتَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَ اللِّ مُحَمَّدٍ اَنْ لاَ تُعَذِّبَ هَذَا الْمَيِّ ﴾ (مجوء تُنْ شهيد) اعمودائين سوال كنا مول تحص بواسط مُرَّو آل مُمَّ كي يكان قبروالي بعذاب ذكر

یہ بھی وارد ہے کہ خداوند عالم اپنی قدرت کا ملہ ہے ان کی قبور کی زیارت کرنے والوں کی اوران کے لیے صدقہ و خیرات کرنے والوں کی ان کو فائدہ بھی لیے صدقہ و خیرات کرنے والوں کی ان کو اطلاع دیتا ہے جس ہے وہ خوش ہوتے ہیں اوراس ہے ان کو فائدہ بھی پہنچتا ہے اور شب جمعہ میں اس کی تا کیدمز بدوار وہوئی ہے اور بیے حقیقت ہمیشہ یا درکھی چاہیئے کہ جبیبا سلوک آئ جہم اپنے مرنے والوں ہے کریں گے وہی سلوک ہماری آئے والی تسلیس ہمارے مرنے کے بعد ہم ہے کریں گ

کیونکہ ﴿ کہما قیدین قیدان﴾ (لیمنی جیسا کرو گے و بیا بھرو گے) ایک نا قاتل انکار حقیقت ہے۔ سہ خواہی کہ روز حشر کنی خندہ بایدت امروز از مصیبت فردا گریستیں ہم اپنی اس کتاب مستطاب کے قار کمین اور اس سے استفادہ کرنے والے حضرات وخواتین سے

استدعا کرتے ہیں کہوہ از راہ کرم ہمیں ہماری حیات میں اور بعد ازممات بھی اپنی مخلصانہ وعاؤں میں یا در کھیں اور ہرگز فراموش نہ کریں۔

سه ہر كه خواند دعا طمع دارم زانكه من بندة گنهگارم يهال بيكاب منظاب خداكے فصوصی فضل وكرم سے اپنے اختتام كو پنجت ہے۔ وَالْحَـمُدُ لِلَّهِ اَوَّلاً وَ آخِرًا وَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى وَ سَلَّمَ عَلَى خَيْرِ خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ الطَّيِبِيْنَ الطَّاهِرِيُنَ۔

دعاہے کہ خداوند عالم آج ہے جمع قیامت کے طلوع ہونے تک تمام اہل ایمان کوخلوص نبیت کے ساتھ اس کتاب کے برڑھنے اوراس کے مطابق عمل درآ مدکرنے کی تو فیق عطافر مائے تا کہ اس کے لکھنے کا جوعظیم مقصد

قاده بوجه اتم واكمل عاصل موجائي SIBTAIN COM أفاده بوجه اتم واكمل عاصل موجائي SIBTAIN و الله العَالَمِين المعالمين المعالمين أنه قريب مُجِيبُ آمِين يَا رَبَّ العَالَمِين بِحَاهِ النَّبِي وَ الله الطَّاهِرِيُنَ۔

(بتاریخ ۹ جمادی الاولی ۱۲۵ میلاه بمطابق ۲۷ جولائی ۲۲ میروز منگل بوقت سواتین بج دن به کتاب متطاب بفضله تعالی اختیام پذیر بهوئی)۔

و الحمد لله واما الاحقر محمر حسيين الجهي عفي عنه

